

This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

- + *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + Refrain from automated querying Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

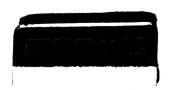
About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at http://books.google.com/

GIFT OF HORACE W. CARPENTIER



730 J24



Univ. of California

THE REKHÂGANITA

OR

GEOMETRY IN SANSKRIŢ COMPOSED BY SAMRÂD JAGANNÂTHA

VOLUME I. BOOKS I-VI.

UNDERTAKEN FOR PUBLICATION

BY

THE LATE

HARILÂL HARSHÂDARÂI DHRUVA.

B. A., LL. B., D. L. A. (SWEDEN), M. R. A. S. (LONDON AND BOMBAY),

CITY JOINT JUDGE AND SESSIONS JUDGE, BARODÂ,

Edited and carried through the press with a Critical Preface, Introduction, and notes in English

KAMALÂS'ANKARA PRÂNAS'ANKARA TRIVEDÎ, B. A.

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF BOMBAY, HEAD MASTER, BROACH
HIGH SCHOOL (FORMERLY PROFESSOR OF ORIENTAL
LANGUAGES, SÂMALADÂS COLLEGE, BHÂVANAGAB, AND ACTING PROFESSOR OF
ORIENTAL LANGUAGES, ELPHINSTONE AND DECCAN
COLLEGES).

1st Edition-300 Copies.

(Registered for copy-right under Act XXV. of 1867).

Bombay.

GOVERNMENT CENTRAL BOOK DEPÔT.

1901.

[All rights reserved].

Price 12 Rupees.

Bombay Sanskrit Series Ao. LXI.

TO MINÜ AMMONIAÜ

BOMBAY:

Printed at Javaji Dadaji's "Nirnaya-sagara" Press.



श्रीः

रेखागणितम्

सम्राड्जगन्नाथविरचितं

(प्रथमभागात्मकं षष्ठाध्यायपर्यन्तम्)

स्वर्गवासिमहाशयध्रवोपपदेन हर्पदरायात्मजेन हरिलालेन

संस्करणार्थमङ्गीकृतं

त्रिवे**द्युपंप**दधारिणा

प्राणशंकरसूनुना कमलाशंकरेण संशोधितं

स्वनिर्मिताङ्ग्लभाषाभूमिकाटिप्पणीभ्यां च सम्रुपेतम् ।

तश्च

मुम्बापुरीस्थराजकीयग्रन्थशालाधिकारिणा

"निर्णयसागरा"स्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा

शाके १८२३ वत्सरे १९०१ खिस्ताब्दे प्राकाश्यं नीतम्।

प्रथमा आदृत्तिः

मूल्यं द्वादश रूपकाः

455405

no vivid Alvacaliac

इदं पुत्तकं मोहमय्यां निर्णयसागरास्ये मुद्रणालये मुद्रितम् ।

UNIV. OF CALIFORNIA

अनुक्रमणिका.

	पृष्ठ.		58 .
प्रास्ताविकपद्यानि	9- 3	एकविंशतितमक्षे त्र म्	२७
परिमाषा	3- 6.	प्रकारान्तरम्	२७-९
प्रथमो ऽच्यायः	6-06	द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	२९-३०
प्रयमक्षेत्रम्	6- 9	त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	39
द्वितीयक्षेत्रम्	9-90	चतुर्वि शतितमक्षेत्रम्	३१-२
तृतीयक्षेत्रम्	90	प्रकारान्तरम्	३२
चतुर्यक्षेत्रम्	90-9	पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	३ ३
पश्चमक्षेत्रम्	99-3	प्रकारान्तरम्	3 3
प्रकारान्तरेण	92	षड्विंशतितमक्षेत्रम्	38-6
षष्ठक्षेत्रम्	93	प्रकारान्तरम्	३ ५
सप्तमक्षेत्रम्	93-8	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	ξ %−ξ
अष्टमक्षेत्रम्	98-9	अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	3 4-0
नवमक्षेत्रम्	94-6	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	३७-४९
प्रकारान्तरेण	98	अस्योपपत्तिक्रापकक्षे	त्राणि
दशमक्षेत्रम्	9 8-0	प्रथमक्षेत्रम्	३७
एकादशक्षेत्रम्	90	द्वितीयक्षेत्रम्	₹७–८
प्रकारान्तरेण	90-6	नृतीयक्षेत्रम् <u>नृ</u> तीयक्षेत्रम्	₹<,<
द्वादशक्षेत्रम्	96-5	नृतायसम्प् चतुर्थक्षेत्रम्	80-9
प्रकारान्तरेण	98	पश्चमक्षेत्रम्	89-2
त्रयोदशक्षेत्रम्	२०	षष्ठक्षेत्रम्	४ २−३
चतुर्दशक्षेत्रम्	२०-१	_{नठरानम्} सप्तमक्षेत्रम्	83-4
पबदशक्षेत्रम्	२१	· _	
षोडशक्षेत्रम्	२२-३	सप्तमक्षेत्रस्याष्टीप्रका	राः
सप्तदशक्षेत्रम्	२३	षष्ठः प्रकारः	84-8
अष्टादशक्षेत्रम्	43-8	सप्तमः प्रकारः	85-0
प्रकारान्तरम्	28	अष्टमः प्रकारः	83-6
ए कोनविंश तितमक्षेत्रम्	२५	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	86-8
विंशतितमक्षेत्रम्	२५-६	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	४९-५०
प्रकारान्तरम्	२६	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40

	28 .		 ਉਂਝੈ.
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40-9	षष्ठक्षेत्रम्	63
प्रकारान्तरम्	49	प्रकारान्तरम्	,,
त्रयब्रिंशत्तमक्षेत्रम्	49-2	सप्तमक्षेत्रम्	68
प्रकारान्तरम्	५२	प्रकारान्तरम्	,,
चतुब्रिंशत्तमक्षेत्रम्	47-3	अष्टमक्षेत्रम्	<8-4
प्रकारान्तरम्	५३	प्रकारान्तरम्	८५
पश्चत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	43-8	नवमक्षेत्रम्	८५-७
षट्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	48-4	प्रकारान्तरम्	64-6
सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	44	दशमक्षेत्रम्	८७ -९
अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	44-6	प्रकारान्तरम्	<- \
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	44	एकादशक्षेत्रम्	८९ –९१
चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	48-0	प्रकारान्तरम्	९०-९१
एकचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	५७	द्वादशक्षेत्रम्	९ १
द्विचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	40-6	त्रयोदशक्षेत्रम्	९१–२
त्रयश्रत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	46-9	चतुर्दशक्षेत्रम्	<i>९२</i> –३
चतुश्रत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	५९	प्रकारान्तरम्	**
पश्चनत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	ę o	तृतीयोऽष्यायः	९४-१ २६
षट्चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	"	प्रथमक्षेत्रम्	98
सप्तचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	६१-७८	द्वितीयक्षेत्रम्	९५
प्रकारान्तराणि सप्तदश	६२-७८	तृतीयक्षेत्रम्	٠, ٩५ <u>–</u> ६
अष्टचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	96	प्रकारान्तरम् प्रकारान्तरम्	*
द्वितीयोऽध्यायः	७९-९३	चतुर्थक्षेत्रम्	, 4 5 0
प्रथमक्षेत्रम्	७९	प्रकारान्तरम्	"
प्रकारान्तरम्	,,	पत्रमक्षेत्रम्	,,
द्वितीयक्षेत्रम्	49-60	प्रकारान्तरम्	36
प्रकारान्तरम्	60	षष्ठक्षेत्रम्	,,
तृतीय क्षेत्रम्	60-9	सप्तमक्षेत्रम्	96-9
प्रकारान्तरम्	د ٩	अष्टमक्षेत्रम्	९९- 90२
चतुर्यक्षेत्रम्	८१-२	प्रकारान्तरम्	909-2
प्रकारान्तरम्	,,	नवमक्षेत्रम्	902-3
पत्रमक्षेत्रम्	د ۶ –३	प्रकारान्तरम्	903
प्रकारान्तरम्	"	दशमक्षेत्रम्	8-1-8

	पृष्ठ.		पृष्ठं.
प्रकारान्तरम्	9 o 3 – 8	त्रयसिंशत्तमक्षेत्रम्	929-2
एकादशक्षेत्रम्	908	चतुक्षिंशत्तमक्षेत्रम्	922-8
प्रकारान्तरम्	,,	पश्चत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	928-4
द्वादशक्षेत्रम्	904	षट्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	924-6
प्रकारान्तरम्	,,	प्रकारान्तरम्	926
त्र योदशक्षेत्रम्	904-8	चतुर्थोऽध्यायः	930-83
प्रकारान्तरम्	908	प्रथमक्षेत्रम्	970
य तुर्दशक्षेत्रम्	900-6	प्रकारान्तरम्	,,
प्रकारान्तरम्	"	द्वितीयक्षेत्रम्	"
पत्रदशक्षेत्रम्	906-6	प्रकारान्तरम्	926
प्रकारान्तरम्	,,	तृतीयक्षेत्र म्	926-30
षोडशक्षेत्रम्	909-90	प्रकारान्तरम्	925-30
प्रकारान्तरम्	990	चतुर्थक्षेत्रम्	930
सप्तदशक्षेत्रम्	990-99	पत्रमक्षेत्रम्	939
प्रकारान्तरम्	,,	षष्ठक्षेत्रम्	939-2
श घ्यदशक्षेत्रम्	999	प्रकारान्तरम्	932
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	999-2	सप्तमक्षेत्रम्	,,
विंशतितमक्षेत्रम्	992	अष्टमक्षेत्रम्	933
एकविंशतितमक्षेत्रम्	993	नवमक्षेत्रम्	,,
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	,,	दशमक्षेत्रम्	433-4
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	8-516	प्रकारान्तरम्	938-4
चतु र्वि शतितमक्षेत्रम्	998-4	एकादशक्षेत्रम्	934-0
पश्वविंशतितमक्षेत्रम्	. 994	प्रकारान्तरम्	938-0
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	994-8	द्वादशक्षेत्रम्	930-6
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	998	प्रकारान्तरम्	,,
अ ष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	998-0	त्रयोदशक्षेत्रम्	936-89
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	996	प्रकारान्तरम्	938-89
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	995-6	चतुर्दशक्षेत्रम्	989-2
प्रकारान्तरम्	996-9	प्रकारान्तरम्))
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	999-20	पद्मदशक्षेत्रम्	985
प्रकारान्तरम्	920	षोडशक्षेत्रम्	185-3
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	920-29	पञ्चमोऽध्यायः	988-40

	93.		पृष्ठ.
परिभाषा	988-4	परिभाषा	101
प्रथमक्षेत्रम्	988	प्रथमक्षेत्रम्	909-3
द्वितीयक्षेत्रम्	985-0	प्रकारान्तरम्	902-3
तृतीयक <u>्षे</u> त्रम्	180-6	द्वितीयक्षेत्रम्	903-8
चतुर्थक्षेत्रम्	986	प्रकारान्तरम्	908
पश्चमक्षेत्रम्	935	तृतीयक्षेत्र म्	9-809
षष्ठक्षेत्रम्	985-40	प्रकारान्तरम्	905
सप्तमक्षेत्रम्	940-9	चतुर्थक्षेत्रम्	908-0
अ ष्टमक्षेत्रम्	949-8	प्रकारान्तरम्	900
नवमक्षेत्रम्	१५२-३	पबमक्षेत्रम्	906-9
दशमक्षेत्रम्	945-8	प्रकारान्तरम्	33
एकादशक्षेत्रम्	948-4	षष्ठक्षेत्रम्	909-60
द्वादशक्षेत्रम्	944-8	प्रकारान्तरम्	77
त्रयोदशक्षेत्रम्	948-0	सप्तमक्षेत्रम्	960-9
चतुर्दशक्षेत्रम्	940-6	अष्टमक्षेत्रम्	9 < 9 - 7
प्रकारान्तरम्	,,	नवमक्षेत्रम्	१८२-३
पश्चदशक्षेत्रम्	946	प्रकारान्तरम्	,,
षोडशक्षेत्रम्	946-8	दशमक्षेत्रम्	963-8
सप्तदशक्षेत्रम्	१५९–६१	प्रकारान्तरम्	"
प्रकारान्तरम्	969	एकादशक्षेत्रम्	968-4
अष्टादशक्षेत्रम्	161-5	प्रकारान्तरम्	१८५
प्रकारान्तरम् 	१६२	द्वादशक्षेत्रम्	9 64-6
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	१६२–६३	प्रकारान्तरम्	,,
विंशतितमक्षेत्रम्	1 É Í – R	त्रयोदशक्षेत्रम्	9 = 4 - 4
प्रकारान्तरम्	958	चतुर्दशक्षेत्रम्	960
एकविंशतितमक्षेत्रम्	968-4	पबदशक्षेत्रम्	966-5
द्वार्विशतितमक्षेत्रम्	9 = 4-6	प्रकारान्तरम्	,,
प्रकारान्तरम् 	9 ६ ६ – ७	षोडशक्षेत्रम्	966-60
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	· 9 & 0-c	सप्तदशक्षेत्रम्	950
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	१६८–९	अष्टादशक्षेत्रम्	999-2
पश्वविंशतितमक्षेत्रम्	१६९-७०	प्रकारान्तरम्	"
छो ऽध्यायः	१७ १— २०६	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	9 . 7

	28 .
विंशतितमक्षेत्रम्	953
एकविंशतितमक्षेत्रम्	"
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	993-8
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	984
चतुर्विश तित्मक्षेत्रम्	"
पचर्विश्च तितमक्षेत्रम्	986
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	998-0
सप्तर्विशतितमक्षेत्रम्	994-6
अद्यविंशतितमक्षेत्रम्	996-99
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	999-709
त्रकारान्तरम्	२००-२०१
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२०१-२
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२०२-३
अकारान्तरम्	२०३
द्वात्रिशत्तमक्षेत्रम्	२०३-५
प्रकारान्तरम् 	208-4
त्रयभिशत्तमक्षेत्रम्	२०५-६

Notes.		
Book I.	1- 64	
Book II.	65- 72	
Book III.	73- 88	
Book IV.	89-100	
Book V.	101-2	
Book VI.	103-118	
Appendix contain	ning the	
readings of V.	119-141	
Errata.	143-144	

Critical Notice of the Manuscripts of the Rekhåganita.

The edition of the Rekhåganita was undertaken for the Bombay Sanskrit Series by the late Mr. Harilâl Harshadarâi Dhruva B. A., L L. B., D. L. A. (Sweden), M. R. A. S. (London and Bombay), M. P. T. S., &c., &c., City Joint Judge and Sessions Judge, Baroda. He read a paper on the Rekhaganita at the VIII. International Congress of Orientalists, Stockholm and Christiania, which he attended as a Pandit Representative Delegate of His Highness, the Maharaja S'iyaji Rao Gaekwad He intended to publish the work in three volumes, the first volume to contain the text, the second to contain the English notes, and the third to contain Variae Lectiones. The matter for the 1st Volume was sent to the Curator, Government Central Book Depôt, Bombay, for publication and it was entrusted to the Nirnayasagar Press. But the press returned it to the author, as the figures for Propositions were in most cases wanting. The manuscript thus returned remained with him till his death. It is a matter of great sorrow that the eminent scholar was not spared by Providence to finish the work he began very zealously.

The manuscript, that was sent to the press and was returned for want of figures, was handed over to me by Mr. Dhruva's widow. I took it up and thought that the work would be soon ready as figures alone were wanting. To my great surprise, however, I found that it was a copy of a single manuscript. The copy was made by a S'Astrî of Amreli in Kâthiâwâd. 'संपूर्ण । समाप्तीयं प्रमा: । द्वयं स्वात् । संवत् १८८६ जातिक द्वरी ५ प्रतिकृतिरियं कृतेंद्र जिल्कांगा व्यवस्थानारमञ्जारमरेकीयुर्जर-वाकावाः संस्कृतिश्वकंण प्रमासपणनस्थेन ।। संवत् १९४६ आवादधुरी ५' is what is found at the end of the manuscript. On examining it minutely I found that it was incorrect on almost every page of it. It was now evident that I had not simply to supply figures, but to settle the text as

well. Thereupon I asked Mr. Dhruva's widow if she had any other manuscripts of the work with her, and she handed over to me two manuscripts. One of these breaks up at the end of the fifth book and is without figures. The second has figures here and there; but they are in most cases incorrect and without letters. This manuscript is also incomplete. It goes almost to the end of the third book and then begins with the 15th proposition of the tenth book and comes up to the end of the work. Thus neither of the two manuscripts was of great use to me. I then secured other manuscripts of the work and two very valuable editions of Euclid from England and settled the text and the figures with the help of these.

It is thus clear that Mr. Dhruva did not live to do anything more than get a manuscript of the work copied by an Amreli S'âstrî. It is a matter of regret that the work did not get through his scholarly hands. The collation of Mss. from different parts of India to settle the text, the construction of figures, the English notes, the Critical Notice of Manuscripts and the Introduction, all this being my work, the shortcomings of the present edition, whatever they may be, are wholly attributable to me.

The present edition is based upon the following manuscripts:—

Kârtika) Sudi 5" in the words of the writer. The Ms. extends over 144 double pages and a portion more. Each single page contains 29 lines on an average and each line contains an average of 25 letters. The copy is written in bold beautiful Devanâgarî characters, and the text contains some mistakes in writing......"

This Ms. I have designated D.

A Ms. obtained from Mr. Dhruva's widow. It begins with 'श्रीगणेशाय नमः । अयोक्रीदशाख्यं रेकागणितं खिक्यते । . This is the Ms. of which Mr. Dhruva says, "It is to Pandit Durgaprasada's find that we owe the discovery of Euclid, being the original author, whose Elements of Geometry Jagannatha Samrat translated. One of the Mss. lent to me by the Pandit has at the beginning a note thus, 'अथोक्रीदशाक्यं रेखागणितं किक्यते'." It is an incomplete Ms. It goes on regularly till about the end of the Third Book. The last line of the Ms. on page 66 is 'yes-राम्बरं झदरेला झजरेला संयोज्या पुनर्झचिद्वात् अववर्गवहवर्गयोः' to page 66 no page is wanting and all the pages are correctly numbered. After this page, there is a long gap and though the next page is numbered 67, it begins with the last portion of proposition 14, Book X. The first line on the page is, 'बात-स्वोऽक्षि वह वहं बजानियं भवति तदा वजं बहानियं भविष्यति कतः यहि मिकित चेत् तदा बहदारी. After this the Ms. goes on regularly to the end. The pages are correctly numbered up to the 70th page. From the next page they are numbered afresh, as one, two. three &c., and the last page is 65. The opening page of the Ms. has 'Laparonaya 124'. Thus there are in all 135 pages. Figures are given in the first 66 pages, but most of them are incorrect. In the last 69 pages no figures are given in Book X., though a vacant space is left for every figure, and the figures that are given here and there in the remaining books are quite incorrect. The Ms. has the following colophon:-

^{*} Baroda State Delegate p. VII. and VIII.

'शिस्पशास्त्रसिदं प्रोक्तं ब्रह्मणा विश्वकर्मणे । पारम्पर्ववशादेतदागतं घरणीतले ॥ ततुष्टिकं महाराज जयसिंहाज्ञया पुनः । प्रकाशितं मया सम्यक् गणकानन्दहेतवे ॥ श्रीमहाजाघिराजप्रसुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सन्नाष्ट्रगण्णाय इति समिभाक्तितेन प्रणीते । प्रम्थेऽसिन् नान्नि रेलागणित इति सुकोणाववोधप्रदात-र्यप्यायोध्येतमोहापष्ट इड विरतिं चल्नसंस्थो गतोऽभूत् ॥'

This Ms. is designated A. It is not quite correct.

III. This is the other Ms. I got from Mr. Dhruva's widow. It is a very neat and correct Ms., but it is incomplete. It goes to the end of the Fifth Book. It has no figures. It consists of 85 double pages and has ten lines on each page. This is probably the Ms., of which S'astrî Durgaprasada Dviveda, Professor, Sanskrit College, Jeypore, wrote to me as follows in reply to my letter to him requesting him for a loan of a Ms. of the work:—

'श्रीमत्सु विविधविद्याविद्यारदेषु सनमस्कृति कुशलोदन्तं चेदं वृत्तजातं विनिवेद्यते—चिराधिगतं यौप्माकीणं लेखरबमधिगत्य भूयानानन्दः प्रादुरभूत् ।
सद्यः साफल्यमधिगण्छतां भवदीयोऽयं विश्वजनीनो रेखागणितसंस्करणव्यापारभरः । इहाविर्भूयापि तत् पुसकं तिरोभावमधिश्रयदिव दश्यते । यतो यसतो
गवेचणे विद्वितेऽपि सकलप्रयोजनप्रयोजकं सक्षेत्राकृति पुसकं नोपल्ल्यते ।
उपल्ल्यमानान्यपि द्वित्राणि पुस्तकानि श्रुद्धिराहित्यादिदोषाकान्ततया न कार्यनिवाहकाणि । प्रथमं तावन्मदीयपुस्तकं (यस्य प्रारम्भतः पञ्च अध्याया भवदन्तिकं सिन्तः) शुद्धप्रायमपि क्षेत्रविकलमास्ते । द्वितीयं राजकीयं पूर्वपुस्तकमात्कम् । तृतीयं मच्छात्रस्य निकटे वर्त्तते तिद्वज्ञमातृकमपि न स्पृहणीयम् ।
पृतस्यां पुस्तकत्रव्यामप्याकृतयो नासते किं तु मद्म्यणें कतिपयाध्यायानामाकृतयो यायातथ्यगुणानाकान्ता वर्त्तन्ते । तदाकृतिपुस्तकमपि पञ्चमाध्यायावसानकं पुरा स्वर्गवासिनो श्रुवस्य निकटे प्रहितम् । तत्य रेखागणितपुस्तकेन सह
अवदन्तिकमधिगतं अवेत् ।"*

This Ms. is designated B.

IV. The fourth Ms. collated for the present edition belongs to the Government Sanskrit College, Benares, and was kindly

^{*} The letter is given in full to shew how difficult it is to secure a correct and complete Ms. of the work even from Jeypore, the place of its birth.

lent to me by Mr. Arthur Venis, M. A., Principal of the College. In reply to my letter of the 13th December 1898 he was good enough to send me the Ms. on the 24th idem. The note on the Ms. in the College Library is रेसागितं पण्डितराजजगन्नायदिर-चित्रमेकपुटकारमकं संपूर्णस्.

The Ms. begins as follows:-

श्रीगणेशाय नमः । श्रीशारदायै नमः । श्रीगुरवे नमः । श्री सिद्धिः । गजाननं गणाधिपं सुरासुरार्चितं सदा । समस्तमककामदं शिवासुतं सुसप्रदस् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्तिनस् । समस्तभूतिभूषितं नमामि विज्ञवारणम् ॥

symbolics &c. The verses dedicated to Ganes's are thus in this Ms. in a different form. It is a complete Ms. in a bookform on country-paper, and appears to be old as many pages are eaten by white ants on their border. Though the Ms. is incorrect, does not contain all the figures and those that are given are inaccurate, particularly in the latter portion, still it was of great use to me in filling up the omission of lines on many pages in Mr. Dhruva's Ms. sent to the press. The Principal was kind enough to allow me to keep it with me for a long time and I returned it to him on the 29th March 1901 after the whole text of my first volume and a part of the second volume were printed off.

This Ms. is designated K.

V. The fifth Ms. was obtained from His Highness, the Mahârâjâ's Sanskrit College, Trivandrum, through my friend Prof. S. Râdhâkṛishṇa Aiyar B. A., F. M. U., Principal of His Highness the Mahârâjâ's College, Puḍukoṭâ. This is a very neat Ms. in a book-form. But on comparing it with the above Ms., I found it an exact copy of it. It was not therefore of use for collation. It contains a few figures not found in the Benares Ms.

VI. Having learnt that there was a complete Ms. of the work in the library of His Highness, the Maharaja of Kashmir, deposited in the Raghunatha Temple, I applied to Dr. M. A. Stein, M. A., late Principal of the Oriental College, Lahore, for a loan of it and received the following reply from him:—

'I have duly received your letter of 27th ult. (i. c. November 1898) concerning the loan of the Jammu Ms. of the Rekhaganita which you desire to collate.

Your name and work are well known to me and it would be a pleasure to me to assist you in the scientific task you have undertaken in the place of the late Mr. Dhruva.

The Raghunatha Temple Library of H. H. the Maharaja of Jammu is not under my control, though the cataloguing of its Sanskrit Mss. has been prepared and published by me (Bombay 1894). I am not authorized to arrange for the loan of Mss. outside Jammu, though I myself am allowed to use works from the collection which was first arranged and catalogued by me at Lahore.

Certain Draft Rules regulating the loan of Mss. which were proposed with a view to facilitating access to the Library are still under consideration by the Durbar. I do not know whether and when they will be adopted.

In the meantime I would recommend only two courses. You might ask the Director of Public Instruction, Bombay, to apply officially for the loan of the Ms. through the Resident in Kâshmir, Sialkot. In this way alone there would be a chance of the Ms. being made available for your direct use......

I then adopted the course proposed in this letter, and the Hon. Mr. E. Giles M. A., Director of Public Instruction, was kind enough to apply to the Assistant Resident, Kashmir, for the loan of the Ms. The Assistant Resident forwarded the correspondence to the Vice-President, Kashmir State Council, and the reply from him was that His Highness expressed his inability to forward the original manuscript, but that a true copy could be furnished on payment of the wages of the copyist. Thus, notwithstanding all the trouble so kindly taken by the Hon. Mr. Giles, the Ms. was not made available for my direct use; and since I had to be satisfied with a copy, I did not think it advisable to get the copy of the whole Ms. as I learnt that it was incorrect and lacked figures like other Mss. of the work. I, however, got a true copy of 10th, 11th and 12th Books, the text of which, it was the most difficult to settle,

as the books are the hardest of the lot. Pandit Gangadhara P. Gokulachandra of the Raghunatha Temple, Jammu, who was mentioned by Dr. Stein in his letter to me as the proper person to get the work accurately copied, was then applied to and he was kind enough to secure me a copy of the 10th, 11th, and 12th Adhyayas.

This Ms. is designated J.

VII. The last and the most important Ms. collated is another Ms. in the Library of Government Sanskrit College, Benares. My attention to it was drawn by Mahâmahopâdhyâya Sudhâkara Dvivedî's article on Pandit Jagannâtha in his Gaṇakataranginî. I applied to the Principal of the College who wrote to me as follows in reply to my letter:—

वाराणसीस्पराजकीयसंस्कृतपाठशाकीयपुस्तकाक्ष्ये वर्तमानं जगन्नायसन्ना-जामाञ्चया किसितं रेसागणितपुस्तकं तु स्थकन्नये सण्डितं जीणं च। एवं स्थितेऽप्यत्वन्तावश्यके कथित्रत् सण्डशो गन्तुमईति न त्वेकदा सर्वे पुस्तकमिति विभाष्य पुनरप्यपेक्षितसण्डविषयकं पत्रं केक्यं भवित्ररिति॥

I replied to the Principal:-

श्रीवगन्नायसम्राजामाञ्चया छोकमणिनान्ना केसकेन किसिता रेसागणित-प्रतिरतिप्राचीनत्वादेवोपयुज्यतेतरां मम ।.....

I then received the whole Ms., part by part. It is a very important Ms. *It was copied for King Jayasimha himself by his order by the scribe Lokamani in the Samvat year 1784 (A. D. 1728), i.e. very shortly after the work was composed. The colophon of the Ms. runs as under:—

युगवसुनगम् (१७८४) वर्षे श्रुचिशुक्ते युगतियौ रवेवीरे । स्वक्रिज्ञक्तोकमणिः किछ सज्जाजामाञ्चया पुस्तम् ॥

It is thus the oldest Ms. that can be secured and I need not say that I had great satisfaction in securing it. It is wanting

^{*} Being copied by the orders of Samrâj about the time the work was composed as the colophon shews, it is probable, nay almost certain, that it was made under the orders of Jagannâtha Samrâj or the King himself. Jayasimha must have ordered out Jagannâtha Samrâj, his protege, to supply him with a copy and Jagannâtha, in his turn, must have directed Lokamani, probably his pupil, to do the work.

in a few pages. The remark on the last page clearly shews the pages that are wanting:—

'एतानि न सन्ति ३३।४६-५५।६९-७८।१८८-२१९। द्वितीयं पत्रत्रयम् ।'.

It contains 292 pages in all. It is a very correct Ms. and is nicely written in Devanâgarî characters. It contains all the figures very accurately drawn with letters distinctly marked. Having received it after the first nine books were printed off, I have given its varæ lectiones in the Appendix. From the 10th Book, they are put down in the foot-notes along with those of other Mss. I had great satisfaction in finding that the text settled for this edition and the figures constructed by me* corresponded with those in the Ms. Unfortunately the most important portion of the Ms., pages 188-219, dealing with the Tenth Book, Prop. 16 to Prop. 101, is lost. A few technical terms in the Fifth Book are in this Ms. explained in the margin. The words used in explaining them are fixed, fixe-दार, इबदाछि निम्नबति, तफुमाछे निम्नबति, अक्त निम्नबति, तर्कींबे निम्नबति, कछवे निश्चवति, and मुखावा निश्चवति. These are Arabic words and the work being copied within a few years of its compilation, they go to support the theory of the work having an Arabic work as its original.

The Ms. is designated V.

The two books which were of great use to me in the construction of some of the figures, particularly figures of the latter portion, were the well-known Gregory's edition of 1703 containing all the fifteen books in the Latin and the Greek and obtained from England through my pupil, Mr. Triumbakrão Jādavrão Desãi, Barrister at Law, and another excellent edition, published in London in 1570 by Mr. H. Billingsley. It is the first translation into English of Euclid's work as its title-page which runs as under shews:—

^{*} The difficulty of constructing figures will be understood, when it is borne in mind that most of the alternative proofs given by Pandit Jagannatha are not found in any English edition, that many intermediate steps in the proofs of Propositions are omitted, that no authorities are given and that the letters \mathbb{F} and \mathbb{F} occasion a deal of confusion on account of the carelessness of copyists.



'The Elements of Geometrie of the most auncient Philosopher Evelide of Megara.

Faithfully (now first) translated into the Englishe toung by H. Billingsley, citizen of London.

Whereunto are annexed certaine scholies, annotations and inuentions, of the best mathematiciens, both of time past, and in this our age.

With a very fruitfull Præface made by M. J. Dee, specifying the chief mathematicall scieces, what they are and wherunto commodious: where, also, are disclosed certaine new secrets mathematicall and mechanicall untill these our daies greatly missed.

Imprinted at London by John Daye.'

The Preface of Mr. Dee bears the year 1570. It has at its end the remark:—

Written at my poor house at Mortlake.

Anno. 1570. February 9.'

The Title-page is a beautiful one, having the ten pictures of Ptolomeus, Martinus, Aratus, Strabo, Hipparchus, Polibius, Geometria, Astronomia, Arithmetica and Musica and a motto Vvinere Virescit Veritas.

This valuable work contains 16 books. In the introductory remarks on the fourteenth book, it is said that Apollonius was the first author of the book, which was afterwards set forth by Hypsicles. Mr. Billingsley quotes from the Preface of Hypsicles to the 14th book in support of his statement. "Basilides of Tire (sayth Hypsicles) and my father together, scanning, and peysing a writing or booke of Appollonius, which was of the comparison of a dodecahedron to an icosahedron inscribed in one and the selfe same sphere, and what proportion these figures had the one to the other, found that Apollonius had fayled in this matter. But afterward (sayth he) I found another copy or booke of Apollonius, wherein the demonstration of that matter was full and perfect and shewed it unto them, whereat they much rejoysed. By

which wordes it semeth to be manifest that Apollonius was the first author of this booke, which was afterward set forth by Hypsicles. For so his own wordes after in the same preface seme to import." Billingsley gives the 14th book as set forth both by Hypsicles and Flussas, and the 15th book as set forth by Hypsicles and Campane and Flussas. The 16th book, which he says, is added by Flussas, contains 37 Propositions. Billingsley's edition of Euclid is a very important book. It is a big volume of 463 folios and was with great difficulty purchased from Messrs. Bernard Quaritch, 15 Piccadilly, through Mr. Edward Seymore Hale of Bombay. This book was of great use to me in settling figures of Propositions of the 10th book which is the hardest of all, as it deals with incommensurable quantities.

INTRODUCTION.

THE REKHÂGAŅITA: ITS CONTENTS.

The Rekhâganita or the Science of Geometry is a Sanskrit version of Euclid's Elements of Geometry by Samrat Jagannatha under the orders of Javasimha, king of Jeypore. It contains fifteen 'adhyayas' or books. The first four and the sixth books are devoted to plane geometry and the fifth deals with the laws of proportion which are utilized in the sixth book. The contents of these books are well-known and therefore need no detailed account. The seventh, eighth, and ninth books are purely arithmetical. As the subject-matter of the tenth book which treats of incommensurable quantities and of the eleventh and the succeeding books which are concerned with solid geometry cannot be clear unless the theory of numbers is explained, the intermediate three books, the seventh, eighth, and ninth, are devoted to the elucidation of the principles of numbers. A number () is defined as a multitude composed of units (Numbers are divided into even () and odd (विद्यम). Even numbers are subdivided into evenly-even (समसम) and evenly-odd (समविषम). Evenly-even numbers are those which, when divided by an even number, have an even quotient, as 8. Evenly-odd numbers are those which, on being divided by an even number, give an odd quotient, as 6. Odd numbers may be oddly-odd (विषमविषम), when they have an odd quotient, on being divided by an odd number, as 9. Numbers are further divided into prime numbers (प्रथमाङ), and composite numbers (योगाङ्क), and into commensurable (मिडित), and incommensurable (). A number produced by the product of two numbers, the multiplier (1915) and the multiplicand (तृष्य), is a plane or superficial number (क्षेत्रफ्छ). the two numbers (new and new) being called its sides or arms (). A superficial number, multiplied by a number, becomes a cube number (चनकड). The product of a number by itself is a square number (anis), and a number, multiplied by its square, becomes a cube number (). Numbers are further defined as proportional (सजातीय), when the second is the same multiple of the first as the fourth is of the third. Like plane numbers (सवातीयक्षेत्रफड़) and like cube numbers (सजातीयभूतफ्क) are those which have their sides proportional. Finally a perfect number (quite) is one which is equal to the sum of all its aliquot parts, as 6.* The Seventh Book demonstrates in general the most common properties of numbers, chiefly of prime and composite numbers, and partly treats of the comparison of one number with another. The enunciations of a few propositions will make this clear.† 'If of two numbers the less is continually taken from the greater until unity is left, the two numbers are incommensurable or prime to one another.' To find the greatest common measure of two or more quantities.' 'A small quantity is a part of a large quantity or of its multiple.' 'If two quantities be the same part of two other quantities. the sum of the first two shall be the same part of the sum of the other two.' 'If from two numbers two other numbers in the same ratio be taken, the remainders shall be in the same ratio.' 'The product of the multiplicand by the multiplier is the same as that of the multiplier by the multiplicand.' 'If there are small numbers in a certain ratio, such that smaller numbers in the same ratio cannot be found, then these numbers shall be prime to one another.' 'If a certain number is prime to another, its square also shall be prime to it.' 'If two numbers are incommensurable, their squares as well as their cubes shall also be incommensurable.' 'To find the least common multiple of two or more numbers.' 'To find the least common multiple which can be measured by many fractions.'t The book contains 39 propositions. The plane and solid numbers, their sides and proportion, the properties of square and cube numbers, the natures and conditions of their sides, and the mean proportional numbers of plane, solid square, and cube numbers form mainly the subject of the

[†] Props. 1, 2 and 3, 4, 5, 7, 16, 21, 25, 27, 34 and 36, and 39 respectively, Book VII.



^{*} The aliquot parts of 6 are 1, 2 and 3 and these together make up the number, 6. The numbers to which this property belongs are 6;28;496;3128; 33,550,336; 8,589,869,056; 137,438,691,328; and 2,305,848,008,139,952,128. All perfect numbers terminate with 6 or 28. Vide Chambers' 'Popular Educator.'

Eighth Book. To elucidate this a few propositions may be enunciated. * If in a certain series of numbers in a certain ratio, the first and the last are incommensurable, then these are the lowest numbers in the series in the same ratio.' 'To find the lowest numbers in a certain ratio.' 'The ratio of a plane or superficial number with another plane number shall be the product of the ratios of the sides of those plane numbers.' 'If in a certain series in a certain ratio, the first number measures the last number, then the first number shall also measure the second number.' 'If there are two square numbers and if there is a mean proportional number between them, the ratio of the square numbers to one another shall be equal to the square of the ratio of the sides of the square numbers.' 'The squares and cubes of those numbers which are in a certain ratio shall also be in the same ratio.' 'If a number falls between two numbers, and if the three numbers are in the same ratio, then the two numbers shall be like plane numbers.' 'If between two numbers there fall two other numbers so that the four numbers are in the same ratio, then the two numbers (between which two other numbers fall) shall be like solid numbers'. If three numbers be in one ratio, and if the first be a square number, the third shall also be a square number. 'If four numbers are in one ratio and if the first be a cube number, the fourth shall also be a cube number.' 'Two like plane numbers are in the ratio of their squares.' 'Two like solid numbers are in the ratio of their cubes.'* There are in all 27 propositions in this book. The Ninth Book continues the treatment of square and cube numbers, takes up odd and even numbers, not hitherto dealt with, and treats of their properties, as the following enunciations of some of the propositions will show. product of two like plane numbers is a square number. ' 'The square of a cube number is a cube number.' 'The product of two cubes shall be a cube.' 'A composite number, multiplied by a certain number, becomes a solid number.' 'If in a series beginning with unity, there be numbers in the same continual

Props. 1, 2, 5, 7, 11, 13, 18, 19, 20, 21, 26, and 27 respectively, Book VIII

proportion, the third number from unity is a square number and so are all forward, leaving one between, the fourth number from unity is a cube number and so are all forward, leaving two between, and the seventh number from unity is both a square and a cube and so are all forward, leaving five between.' If the given prime numbers measure a certain least number, no other prime number shall measure that least number.' 'If three least numbers be in the same ratio, then the sum of any two of them shall be incommensurable with the third.' 'If there be two incommensurable numbers other than unity, there shall be no third number in the ratio of these two.' To find a third number in the ratio of two numbers, if possible.' 'To find a fourth number in the ratio of three numbers, if possible,' 'The sum of any number of even numbers shall be even.' 'The sum of an even number of odd numbers shall be even.' 'The sum of an odd number of odd numbers shall be odd.' 'If an even number be taken from an even number, the remainder shall be an even number.' 'If an odd number be taken from an even number, the remainder shall be an odd number.' 'If an even number be taken from an odd number. the remainder shall be an odd number.' 'If an odd number be taken from an odd number, the remainder shall be an even number.' 'The product of an odd number and an even number shall be an even number.' 'The product of two odd numbers is odd.' 'An odd number measures an odd number with an odd quotient.' 'Numbers beginning with two in which each succeeding number is double of the preceding number shall be evenly even.' 'A number whose half is an odd number is an evenly odd number.' 'The number, which is not in the series beginning with two in which each succeeding number is double the preceding one and of which the half is not an odd number, is evenly-even and also evenly-odd.' 'In a series of numbers beginning with unity, in which each succeeding number is double of the preceding one, if the sum of the terms be a prime number, then the product of this sum and the last number shall be a perfect number." The book

^{*} Props. 1, 3, 4, 7, 8, 15, 16, 17, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 31, 34, 35, 36 and 38, Book IX.

comprises 38 propositions. The Tenth Book, which is generally considered as the hardest of all the books to understand, treats of lines and other magnitudes rational and irrational, but particularly of irrational magnitudes commensurable and incommensurable. Magnitudes (i. e. lines, superficies and solids) are called later or commensurable, if they have a common measure and are fare or incommensurable if they can not be measured by a common measure. If the squares of lines can be measured by the self-same area, the lines are Alegari or commensurable in power, and the lines whose squares are not measurable by the same area are fareaf or incommensurable in power. If there is a line supposed and laid before us, of any length we please, if this line thus first set forth is imagined to have such divisions and so many parts as we list, 3, 4, 5 and so forth, which may be applied to any kind of measure, inches, feet and such others, and if to this line thus first supposed and set forth be compared a number of lines, some of these will be commensurable and some incommensurable; and of commensurable lines some will be commensurable both in length and power and some commensurable in power only; and of incommensurable lines some will be incommensurable in length and some incommensurable both in power and length. The first line so set, to which and to the squares of which other lines and squares are compared, is called a rational line (अक्संजाहरेसा). Lines which are commensurable to this line. whether in length and power or in power only, are also rational; the square which is described on the rational right line supposed is rational; and the squares which are commensurable to this square are also rational. Thus the line which is first supposed and set forth, the lines which are commensurable to it, the square on it, and such superficies as are commensurable to the square are all rational and constitute what is called agazzifi. The rational line is the basis of most of the propositions of the tenth book from the tenth proposi-The line which is incommensurable to the first line supposed and set forth, the superficies which is incommensurable to the square (i. e. the square described on the rational line), and the line the square of which shall be equal to that superfiI. A medial line (special) is defined in Prop. 17. rectangle which has its sides commensurable in power only shall be irrational and is called a medial superficies. The line the square of which is equal to this figure is irrational and is called a medial line. Thus a medial line is an irrational line of which the square equals a rectangle contained by two rational lines commensurable in power only. Propositions from 17 to 35 treat of the properties of medial lines. It will be enough to note a few of these to shew their nature. * 'A line commensurable to a medial line shall also be a medial line. 'The difference between two medial superficies is irrational.' 'To find out two medial lines commensurable in power only, containing in power a rational or a medial superficies.' 'To find out two medial lines incommensurable in power, the squares of which, added together, make a medial superficies and twice the rectangle of which is rational.'*

II. A binomial line () is the next irrational line. It is treated first in Prop. 33. If the lines which are commensurable in power only be added together, the line so formed shall be irrational and is called a binomial line. Thus a binomial line is an irrational line composed of two rational lines commensurable in power only. It is made up of two parts or names, of which one is greater than the other. The square of one part is therefore greater than that of the other. This line is divided into six classes, viz., the first binomial line (प्रथम बोगरेखा), the second binomial line (हितीय बोगरेखा) and so forth. The first three binomial lines (प्रथम, दितीय and उतीय बोगरेखा) are formed when the square of the greater line exceeds that of the less by the square of a line which is commensurable in length to it, viz., the greater; and the last three kinds of binomial lines (चतर्थ, प्रस्त, and वह सोगरेका) are formed when the square of the greater part exceeds the square of

^{*} Props. 19, 20, 21, 22 and 31 respectively.

the less by the square of a line incommensurable in length to it, viz., to the greater part. Propositions from 45 to 50 show how these lines are found out.

- III. A first bimedial line (प्रयमस्ययोगरेखा) is defined in Prop. 37 as an irrational line composed of two medial lines, commensurable in power only, containing a rational superficies.
- IV. A second bimedial line (द्वितीयमध्यक्षेत्र) is an irrational line composed of two medial lines, commensurable in power only and containing a medial superficies. Prop. 38 teaches how to form this line.
- V. A greater line (which is taught in Prop. 39, is an irrational line composed of two lines which are incommensurable in power, the squares, of which, taken together, make a rational superficies and twice the rectangle contained by which makes a medial superficies.
- VI. A line containing in power a rational and a medial superficies (करणीयता अस्या वर्गोऽक्ट्रसंज्ञाहेक्षेत्रअध्ययेकाक्षेत्रयोगेत्राहेक्ष्रित्रअध्ययेकाक्ष्रित्रयोगेत्राहेक्ष्रित्रअध्ययेकाक्ष्रित्रयोगेत्र होत्रस्ति) is next taken up in Prop. 40. It is an irrational line composed of two lines which are incommensurable in power, the squares of which added together make a medial superficies, but the superficies which they contain is rational.
- VII. A line containing in power two medial superficies (scotton wear and superficies water and superficies which are incommensurable in power, the squares of which added together make a medial superficies, but the superficies which they contain is medial, incommensurable to that which is composed of the two squares added together. This line is taught in Prop. 41-

Propositions 42 to 69 deal with the properties of the above lines.

The next line taken up is

VIII. The residual line (specient). The method of forming the line is taught in Prop. 70. It is an irrational line which is left when from a rational line given is taken a rational line commensurable to the whole in power only.

Like a binomial line it has also six varieties. The first three kinds (प्रथम, द्वितीय, and तृतीय अन्तरंखा) are formed when the square of the whole line made up of the residual line and the line joined to it exceeds the square of the line joined by the square of a line commensurable to it in length; and the last three kinds (चतुर्थ, पश्चम and चन्न अन्तरंखा) are formed when the square of the whole line made up of the residual line and the line joined to it exceeds the square of the line joined by the square of a line incommensurable to it in length. Propositions 82 to 87 teach how to find these lines.

- IX. A first medial residual line (प्रथममध्यान्तरोखा) is an irrational line which remains, when from a medial line is taken away a medial line commensurable to the whole in power only and the part taken away and the whole line contain a rational superficies. Proposition 71 deals with it.
- X. The next proposition treats of the second medial residual line (द्वितीयसभाग्तरचा) which is an irrational line which remains, when from a medial line is taken a medial line commensurable to the whole in power only and the part taken and the whole line contain a medial superficies.
- XI. A less line (at a taught in Prop. 73, is an irrational line which remains, when from a right line is taken a line incommensurable in power, the square of the whole line and the square of the part taken together make a rational superficies, and twice the rectangle contained by them makes a medial superficies.
- XII. A line making with a rational superficies the whole superficies medial (अक्रूसंजाई योगमध्यरेखा) is an irrational line which remains, when from a right line is taken a right line incommensurable in power to the whole line and the square of the whole line and of the part taken together make a medial superficies and twice the rectangle contained by them is rational. This is treated of in Prop. 77.
- XIII. The last irrational line is taken up in the next Prop. (78). It is a line making with a medial superficies the whole superficies medial (महत्त्वांगजनह्वें आ). It is an irrational

line which remains, when from a right line is taken a right line incommensurable to it in power, the squares of the whole line and of the part taken together make a medial superficies, and twice the rectangle contained by them makes up a medial superficies incommensurable to the first medial superficies.

The Tenth Book is the longest of the elements and contains in all 109 propositions.

Thus in the first ten books is taught whatever is requisite and necessary to the knowledge of all superficial figures of any sort whatever. The remaining books are concerned with solid figures (चनक्षेत्र), such as cubes, cones (शक्क), Pyramids (स्वीफळक्षवनक्षेत्र), cylinders (समतल्यसक्षयक्षिक्षवक्षक्कृष्टवेत्र), prisms (छेदितवनक्षेत्र), spheres (गोलक्षेत्र) and parallelepipeds (समानान्तरचरातळ्चनक्षेत्र or चनक्सक्षेत्र). The eleventh book contains 41 propositions and propositions, 24th to the end, treat of the properties of parallelepipeds.

The Twelfth Book sets forth the properties of pyramids, prisms, cones, cylinders and spheres, and compares pyramids to pyramids and prisms. Likewise are compared cones, cylinders and spheres; and to prove the properties of these bodies it is first established that like polygons inscribed in circles and the circles themselves are to one another as the squares of their diameters. The enunciations of a few propositions will clearly shew the nature of the book.* 'Every pyramid having a triangle as its base may be divided into four parts, of which two are equal and similar pyramids and the other two are equal prisms greater than half the whole pyramid.' 'Pyramids having triangles as their bases and of the same altitude are to one another as their bases.' 'Every prism can be divided into three equal pyramids having triangles as their bases.' 'If two pyramids having triangles as their bases be similar, they shall be in the treble ratio of that which their like sides have.' 'A cone is a third part of a cylinder having the same base and altitude with it.' 'Like cylinders and cones are in the treble ratio of that in which the diameters of their circles (bases) are.' 'Spheres

^{*} Props. 3, 5, 6, 8, 9, 10, and 15, Book XII.



are in the treble ratio of that in which their diameters are.' There are in all 15 propositions in the book.

The Thirteenth Book teaches the most wonderful properties of a line divided by an extreme and mean proportion, the composition of the five regular solids, a tetrahedron, a cube, an octohedron, an icosahedron, a dodecahedron (व्युक्तककारक, जनहरू, अन्दर्क, अन्दर्क, विश्वतिक्रककृतक्षेत्र, समभुजद्वादशककारक respectively), the method of inscribing them in a sphere and a comparison of the solids to one another and to the sphere in which they are inscribed. The book contains 21 propositions.

The Fourteenth Book which comprises ten propositions treats of the comparison and proportion of the five regular solids.

The Fifteenth Book, which is the last book in our text, deals with the inscription of the five regular bodies within one another. It teaches how to inscribe an equilateral cone in a cube, an octohedron in an equilateral cone, or in a cube, a cube in an octohedron, and a dodecahedron in an icosahedron.

The striking features of the Rekhâganita.

Having thus given a *resume* of the contents of the Rekhâganita, let me next point out the striking features of the work as compared to English editions of Euclid.

- 1. Definitions, Postulates, and Axioms are called परिभाषा or Terminology.
- 2. Axioms are given before Postulates and the last three Axioms are placed after the Postulates.
- 3. The Twelfth Axiom has a simpler form. It is defined as follows:—

If two straight lines which are not parallel be produced in the direction in which the distance between them is greater, the further they are produced, the greater the distance between them; while if they are produced in the direction in which the distance is less, the further they are produced, the less the distance between them till at length the two straight lines meet together, and then the distance between them goes on increasing.

- 4 This form of the 12th Axiom necessitates the introduction of the following propositions preliminary to the 29th Proposition of the First Book:—
- (1) Of all the straight lines that can be drawn from a given point on a given straight line, the perpendicular is the shortest.
- (2) The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes equal angles with the perpendiculars.
- (3) The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes right angles with the perpendiculars.
 - (4) The opposite sides of a rectangle are equal.
- (5) If two perpendiculars be drawn to a line and a straight line be drawn across the perpendiculars, of the four angles made by the line with each perpendicular, the alternate angles shall be equal, the exterior angle shall be equal to the interior and opposite angle upon the same side of the line and the two interior angles upon the same side of the line shall be together equal to two right angles.
- (6) If the four angles formed by the intersection of two lines be not right angles, then a perpendicular on one of the lines shall meet the other line in the direction of the acute angle.
- (7) If a straight line falls upon two other straight lines and if the interior angles on one side are less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only.
- 5. In the proof of propositions throughout the book, no authorities are given anywhere. For the sake of conciseness a few intermediate steps, which may be understood without being mentioned, are omitted.



6. Most of the propositions have one or more alternative proofs given for them. The following propositions have alternative proofs:—

Book I.

5, 9, 11, 12, 18, 20, 21, 24, 25, 26, 32, 33, 34, 47.

Of these 18th and 20th Propositions have two alternative proofs; and Prop. 47th is proved in seventeen ways by describing squares in different ways. In each of these seventeen alternative proofs there are three diagrams caused by the equality and the inequality of the sides that contain the right angle.

Book II.

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 14.

Of these Propositions 9 and 10 have two alternative proofs. Book III.

3, 4, 5, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 30, 31, 33, 36.

Prop. 30 has three alternative proofs.

Book IV.

1, 2, 3, 6, 10, 11, 12, 13, 14.

Propositions 10th and 13th have two alternative proofs.

Book V.

14, 17, 18, 19, 20, 22.

Proposition 22nd has two alternative proofs.

Book VL

1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11, 12, 15, 18, 29, 31, 32.

Propositions 9 and 10 have two alternative proofs.

Book VII.

7, 13, 28.

Book X.

1, 12, 64, 65.

Book XII.

9, 13.

Book XIII.

15.*

7. The number of propositions and their order in some Adhyâyas is different.

In Book III. our text has 36 propositions, propositions 11 and 12 being included in proposition 11 as under:—

'If two circles touch one another internally or externally, the straight line which joins their centers being produced shall pass through the point of contact.'

In Book V. propositions 12 and 13 in the Sanskrit text are found to be propositions 13 and 12 respectively in Bil's edition.

Book I. Prop. 20, 21, 34.

Book III. Prop. 8, 4, 9, 10, 11, I2, 13, 17.

Book VI. Prop. 2, 4, 5, 6.

Book VII. Prop. 7, 28.

The following are found in Bil.

(I. 5), (I. 12), (I. 20 one alternative), (I. 25), (V1L 13).

Book I.

Prop. 11 is only a particular case.

Prop. 24 contains three cases.

Prop. 25 gives the direct proof.

Book III.

Prop. 8 gives a common proof to Propositions 7 and 8.

Prop. 9 gives the direct proof found in recent editions of Euclid.

Prop. 30 gives the converse of the 1st part of the Proof.

Book IV.

Prop. I. is the converse of Prop. I.

Digitized by Google

^{*} Of 110 alternative proofs in all the books taken together, the following are Reductio ad Absurdum:—

In Book VI. the order of most of the propositions is different as below:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition and Greg.'s edition.
9	13
10	11
11	12
12	9
13	10
18	19
19	20
20	18
23	24
24	26
25	23
26	25
31	32
32	31

Propositions 27,28 and 29, which are omitted in recent editions of Geometry, are found in the Rekhâganita and Bil.'s and Greg.'s editions.

In Book VII. the Rekhâganita has 39 propositions and Bil's edition has 41 propositions. Of the two additional propositions in the English text, proposition 20 is noticed in the Sanskrit text as corollary to proposition 19 and proposition 22, which is enunciated as follows in Bil's edition, finds no place in the Sanskrit text:—

'If there be three numbers, and other numbers equal unto them in magnitude, which being compared two and two are in the self-same proportion and if also the proportion of them be perturbate, then of equality they shall be in one and the same proportion.'

This proposition is omitted, perhaps because it answers to the 25th proposition of Book V, The following shews the difference in the order of propositions in the two texts:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
20	21
21	24
22	23
23	25
and so on till 28 which	h becomes 30 in the English text.
29	33
30	34
31	31
32	32
33	35
34	36
and so on till the	

In Book VIII., propositions 16 and 17 in Bil.'s edition are in the Sanskrit text given as corollaries to propositions 14 and 15 respectively, and 26th and 27th propositions in the Rekhâganita appear as corollaries to Prop. 25 in Bil.'s edition. Thus the total number of propositions in both the works is the same 27.

In Book IX. the Rekhâganita contains 38 propositions, while Bil.'s edition has 36. Propositions 30 and 31 are not found in Bil.'s edition; but they are mentioned there and attributed to Campane.

The difference in the order of propositions is shown below:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
14	20
15	14
16	15
17	16
18	17
19	18
20	19
26	27
27	26
32	30
33	31

and so on till the end.

In Book X. Bil's edition contains 9 propositions more than the Rekhåganita. These are propositions 7, 8, 13, 16, 24, 112, 113, 114, and 116. They are enunciated as under:—

Prop. 7

'Magnitudes incommensurable have not that proportion, the one to the other, that number hath to number.'

Prop. 8 Converse of the above.

Prop. 13

'If there be two magnitudes commensurable, and if one of them be incommensurable to any other magnitude, the other also shall be incommensurable unto the same.'

Prop. 16

'If two magnitudes incommensurable be composed, the whole magnitude also shall be incommensurable unto either of the two parts components; and if the whole be incommensurable to one of the parts components, those first magnitudes also shall be incommensurable.'

Prop. 24

'A rectangle parallelogram, comprehended under medial lines commensurable in length, is a medial rectangle parallelogram.'

Prop. 112

'The square of a rational line applied unto a binomial line maketh the breadth or other side a residual line, whose names are commensurable to the names of the binomial line and in the self same proportion; and moreover that residual line is in the self same order of residual lines that the binomial line is of binomial lines.'

Prop. 113

'The square of a rational line applied unto a residual maketh the breadth or other side a binomial line, whose names are commensurable to the names of the residual line, and in the self same proportion; and moreover that binomial line is in the self same order of binomial lines that the residual line is of residual lines.'

Prop. 114

'If a parallelogram be contained under a residual line and a binomial line, whose names are commensurable to the names of the residual line and in the self same proportion, the line which containeth in power that superficies is rational.'

Prop. 116

'Now let us prove that in square figures the diameter is incommensurable in length to the side.'

There are thus nine additional propositions in Bil.'s edition; but there are two propositions in the Rekhâganita which are not found as propositions in the English text. They are 27th and 29th. 27th proposition is mentioned in Bil.'s edition at the end of the 31st proposition and the 29th proposition is given as a corollary to the 32nd proposition. The difference in the number of propositions in the two books is thus reduced to seven, the Sanskrit text comprising 109 and the English text 116 propositions in all.

The difference in the numbering of propositions is as follows:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
7	9
8	10
9	11
10	12
11	15
12	14.
13	17
14	18
and so on up to 19tl	which is 23rd in Bil.'s edition.
20	26
21	27
22	28
2 3	25
24	. 29
25	30
26	31
27	Mentioned at the end of 31st Prop.
28	32
29	Cor. to 32
30	33
31	34 ·
32	35
and so on up to 108t	h which is 111th in Bil.'s edition.
109	115

In Book XI. Bil's edition has one proposition, 38th, which is wanting in the Rekhaganita. It is enunciated as below:—

'If a plane superficies be erected perpendicularly to a plane superficies, and from a point taken in one of the plane superficies be drawn to the other plane superficies a perpendicular line, that perpendicular line shall fall upon the common section of those plane superficies.' Propositions 32nd and 35th in the Rekhâganita appear as 2nd cases of propositions 31st and 34th respectively. Thus the Sanskrit text has in all 41 propositions, while the English text has 40 propositions.

. The following shews the difference in the order of proposi-

Rekhâganita.	Bil.'s edition
32	2nd case of 31
33	32
34 ···	34
35	2nd case of 34
36	33
37	35
. 38	36
39	37
40	39 .
41	40

In Book XII, 6th, 13th, and 14th propositions in Bil.'s edition do not find a place in the Sanskrit text. They are enunciated as under:—

6th Prop.

'Pyramids consisting under one and the self-same altitude and having poligonon figures to their bases are in that proportion, the one to the other, that their bases are.'

13th Prop.

'If a cylinder be divided by a plane superficies being parallel to the two opposite plane superficies, then as the one cylinder is to the other cylinder, so is the axe of the one to the axe of the other.'

14th Prop.

'Cones and cylinders consisting upon equal bases are in proportion the one to the other as their altitudes.'

Thus while the Sanskrit text has 15, the English text has 18 propositions in all.

The difference in the order of propositions is noticed below:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.		
6	7		
7	9		
9	10		
10	12		
12	15		
13	16		
14	17		
15	18		

In Book XIII. the Sanskrit text has three propositions more than Bil.'s edition. These are the 3rd, 4th, and 6th propositions. Of these Prop. 3rd is noticed in Bil.'s edition as a theorem added by M. Die. The order of the propositions in both the texts varies as under:—

Rekhâgaņita.	Bil.'s edition.
5	3
7	5
8	4
9	6
10	7
11	12
12	9
13	10
14	8
15	11
16	13
17	15
18	14
19	16
20	17
21	18

In Book XIV. Flussas has twenty propositions, while the

Rekhâganita has only ten; and there is no agreement in the order of propositions as shown below:—

Rekhaganita.	Flussas.
2	3
3	4
4	5
9	7
10	2

Propositions 1, 6 and 8 agree in both.

Proposition 5th in the Rekhaganita is noticed by Hypsicles after the 3rd Prop.; but no proposition in Bil.'s edition answers to the 7th Prop. of our text.

In Book XV. I find nothing in Bil.'s edition to correspond to Prop. 1 in the Sanskrit text. The order of the other propositions is as shown under:—

Rekhåganita. Bil.'s edition.	
2 .	1
3 .	2 after Hypsicles.
4	3
5	4
6	5

8. Prop. 7th Book I. in the Rekhâganita is enunciated in a very ingenious way as under:—

'The straight lines drawn from the extremities of one straight line (on the same side of it) can meet in one point and never in another.'

This enunciation is very like the one found in Bil.'s edition:—

'If from the ends of one line be drawn two right lines to any point, there can not from the self-same ends on the same side be drawn two other lines, equal to the two first lines, the one to the other, to any other point.'

Whether the Rekhaganita is an original work or a translation.

The next question that suggests itself for consideration is whether the Rekhaganita is an original work or a translation. The subjects treated in the different books, the number of propositions in each of them, the very order in which they are given, the method of proof adopted in them, and the fact that the author flourished, as we shall see further on, in the eighteenth century, leave not a shadow of doubt that the work is not original, but a translation. Nay, if there is any doubt on the matter, it is removed by one of the Mss. in my possession which says 'अथोक्रीदशास्यं रेखागणितं किस्पते.' It must also be noted that if the work were original, the letters in the diagrams illustratting its propositions would be in the order of the Sanskrit alphabet, either w, w, w &c. or w, w. a &c. But the lettering is Greek or Arabic, both being Phœnician in character. It is thus unquestionably settled on the above grounds that the work is not original, but a translation.

But if it be not an original work, how are the following introductory stanzas to be explained:—

> अपूर्व विहितं शासं यत्र कोणाववोधनात् । क्षेत्रेषु जायते सम्यम्युत्पिर्काणिते यथा ॥ शिल्पशास्त्रीतदं भोकं त्रह्मणा विश्वकर्मणे । पारम्ययवशादितदागतं धरणीतछे ॥ तिद्विष्टिसं महाराजजयसिंहाञ्चया पुनः । प्रकाशितं सवा सम्यग् गणकानम्बहेतवे ॥

These verses would lead the reader to either of the two conclusions, that the Rekhâganita was an original work or that the author was a plagiarist. That the work is not original is clear from the above causes. That it is not easy to charge the author with plagiarism is evident from the fact that in the introductory stanzas to his other work, 'Siddhânta-samrâj' he clearly says that it is a translation of an Arabic work, 'Mijâsti'.

Digitized by Google

'भ्रम्यं सिद्धान्तसम्राजं सम्राद् रचयति स्फुटम् । तुष्टये श्रीजयसिंहस्य जगकाथाद्वयः कृती ॥ अरबीभाषया प्रम्थो मिजास्तीनामकः स्थितः । गणकानां सुबोधाय गीर्वाण्या प्रकटीकृतः ॥'

How then is this inconsistency to be explained? The problem, it must be confessed, is not easy of solution. The only possible solution seems to be that knowing as the author must have done that the science of Geometry (Require) was first cultivated in India and thence imported to Greece and other countries, and that it was in his time completely lost, he gave it a divine origin to inspire his people with greater respect for it. This incidentally lands us into the question

Whether Geometry was first discovered in India or in Greece.

This is no place to enter into an exhaustive treatment of the subject, nor is it possible to arrive at an incontrovertible solution of the question in the present state of our knowledge. Suffice it to say that a nation to which the world owes the ingenious invention of numerical symbols and the decimal notation, a nation which made great advances in Algebra and Arithmetic, and a nation which made independent astronomical observations, arrived at a fairly accurate calculation of the solar year of 360 days with an intercalary month every three years. was acquainted with the phases of the moon, and had made observations of a few of the fixed stars*—a nation so far advanced in the cultivation of mathematics and astronomy cannot be supposed to be completely ignorant of the elements of geometry. It will not be amiss to quote the views of a few western scholars on this subject:--" Though no date can be fixed to the commencement of geometry in India, yet the certainty which we now have that algebra and the decimal arithmetic have come from that quarter, the recorded visits of the earlier Greek philosophers to Hindustan (though we allow weight rather to the tendency to suppose that philosophers visited India than to the strength of the evidence

^{*} Vide 'Imperial Gazetteer of India' Vol. VI, pp. 104-6 by W. W. Hunter.



that they actually did so) together with very striking proofs of originality which abound in the writings of that country, make it essential to consider the claim of the Hindus or of their predecessors to the invention of geometry. waiving the question whether they were Hindus who invented decimal Arithmetic and Algebra we advance that the people that first taught those branches of science is very likely to have been the first that taught Geometry and again seeing that we certainly obtained the former two either from or at least through India, we think it highly probable that the earliest European geometry also came either from or through the same country." 'In Geometry, the points of contact between the S'ulva Sûtras and the work of the Greeks are so considerable that according to Cantor, the historian of Mathematics. borrowing must have taken place on one side or the other. In the opinion of that authority, the S'ulva Sûtras were influenced by the Alexandrian geometry of Hero (215 B. C.) which he thinks, came to India after 100 B. C. The S'ulva Sûtras, are, however, probably far earlier than that date, for they form an integral portion of the S'rauta Sûtras and their geometry is a part of the Brahmanical theology, having taken its rise in India from practical motives as much as the science The prose parts of the Yajurvedas and the of grammar. Bráhmanas constantly speak of the arrangement of the sacrificial ground and the construction of altars according to very strict rules, the slightest deviation from which might cause the greatest disaster.'† 'Whatever conclusions we may arrive as to the original source of the first astronomical ideas current in the world, it is probable that to the Hindus is due the invention of algebra, and its application to astronomy and geometry.'1 'For whatever is closely connected with the ancient religion must be considered as having sprung up among the Indians themselves, unless positive evidence of the strongest kind point to a contrary conclusion.' The geometrical pro-

Digitized by Google

Vide the article on 'Geometry' Penny Cyclopædia, Vol. XI.

[†] Vide 'History of Sanskrit Literature' by A. A. Macdonell, p. 424.

[#] Monier Williams' 'Indian Wisdom' p. 184.

[§] Dr. G. Thibaut on the S'ulva Sûtras. Vide 'Journal of the Asiatic Society of Bengal,' 1875, p. 228,

position, the discovery of which the Greeks ascribed to Pythagoras, was known to the old Achârvas, in its essence at least.* It should not at the same time be ignored that Herodotus, the well known Greek historian, attributes the invention of the science to the Egyptians. 'Herodotus, the earliest authority on the subject, assigns the origin of the art to the necessity of measuring lands in Egypt for the purposes of taxation in the reign of Sesostris about 1416-1357 B. C. (Hero. B. IL. Chap. 109). This is probable as not only resting on such authority, but also because a priori we should expect the necessity of measuring lands to arise with property in land and to give birth to the art. Of the state of the science, however, among the Chaldeans or Egyptians, we have no record.'+ The fact is that very minute rules are laid down in the Taittirîya Samhitâ and the Brâhmanas for the arrangement of the sacrificial ground and the construction of altars and in the Baudhayana and Apastamba for the shape of the bricks required for the construction of altars! and that the S'ulva Sûtras which form the 30th section of the Kalpa Sûtra of Apastamba and which are assigned by Dr. Thibaut to high antiquity§ teach geometrical principles for the construction of altars for the S'rauta sacrifices and contain a number of geometrical rules, such as that of finding the

^{* &#}x27;Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1875,' p. 232.

[†] Chambers' Encyclopædia. p. 700.

^{‡ &#}x27;किं च तत्तत्कतुक्रियाकाण्डमस्तावे तत्तत्त्रमाणप्रमितानासुवावचरचनाचातुर्वचर्याचणानां सुरुवस्त्रादिप्रसिद्धानां नानाविषकुण्डवेदिकादीनां तचैव कास्तायनभीतस्त्रभाष्यादिप्रथितानां सुक्षुवकूर्वेडापात्रीपुरोडासपात्रीशृतावदानाश्चुपवेषान्तर्थानकटप्राक्षित्रहरणवक्वतंविद्यात्राणां निर्माणमञ्जिपवांकोचनयापि गणितविषासद्भावः स्कृदं प्रतिकल्लति ।' Introduction to केत्रजिति by S'åstri Durgåprasåda Dviveda.

^{§ &#}x27;Besides the quaint and clumsy terminology often employed for the expression of very simple operations—for instance in the rules for the addition and subtraction of squares—is another proof of the high antiquity of these rules of the cord.' 'Journal of the Asiatic Society of Bengal 1875,' p. 271.

value of a diagonal of a square in relation to its side, of turning a square into a circle and of turning a circle into a square.* Indeed the science of Geometry like the science of Grammer formed a part of the Brahmanical theology and "it is not likely that the exclusive Brahmans should have been willing to borrow anything closely connected with their religion from foreigners."† Thus there is a strong probability that the science of Geometry was invented in India. It was, however not cultivated in India; because the construction of altars which originated the science fell into disuse owing to the rise of Buddhism and the worship of images.

The Rekhâgaṇita, a translation of the Arabic work on Geometry by Nasir eddin.

It being settled that the Rekhaganita is not an original work the next question that naturally requires solution is to decide the original of which it is a translation. This proved a very difficult task. None of the English editions of Geometry that are available to us, neither the celebrated Gregory's edition in the Latin and the Greek, nor the excellent edition of Billingsley, the very first version of Euclid in English, contain any of the striking characteristics of the Rekhaganita noted before. Help was sought from some of the Professors of Mathematics. But replies were received from all that they were sorry not to be able to help me in the matter. Knowing that the Arabians were the most zealous cultivators of the Greek sciences of Astronomy and Geometry between the 9th and 14th centuries and that the British Museum might be possessing copies of the Arabic versions of Euclid, I consulted the Secretary of the Oriental Department of the British Museum, London, about the original of the work, informing him of some of the cha-

[†] Vide p. 424, 'History of Sanskrit Literature' by A. A. Macdonell.



^{* &}quot;चतुरत्रं मण्डलं चिकीर्वन्मध्यादंसे निपाल तत्पार्शतः परिलिक्य तत्र बद्तिरिक्तं अवित तला तृतीयेन सह मण्डलं परिश्चित्रेत्समासविधिः।

मन्दछं बहुरशं विकीर्षत् विष्कंमं पश्चदश्चमागात् कृत्वा द्वावुद्धरेच्छेपः करणी । "

racteristics of the Sanskrit work; but he too wrote to me that he could not trace the original.* I then addressed Mahâmahopådhyava Sudhakara Dvivedi, Professor of Mathematics. Government Sanskrit College, Benares, and author of Ganakatarangini and other works, requesting him to let me know whether he had any arguments in support of what he advanced in the Ganakatarangini-'अरबीमापातः संस्कृते जगन्नायकृतो युक्केदास्य-बम्बस्याप्यनबाडो रेखागणितनामा प्रसिद्धोऽस्ति यत्र पञ्चदशाध्यायाः सन्ति ।'-In reply the S'astri wrote to me that he had an Arabic work which seemed to him to be the original of the Rekhaganita and on my requesting him to lend me the work, he was good enough to send it to me. The Arabic work+ contains all the fifteen books. On comparing it with the Rekhaganita I find in it all the striking features of the latter noticed above. The fortyseventh proposition of the First Book is proved in seventeen ways. The book contains all the propositions preparatory to the 29th Prop. of the first book that are found in the Sanskrit text. No authorities are given in the proof of propositions. There is not a shadow of doubt that this Arabic work is the original of the Rekhaganita. The work does not mention the name of the author, but the Preface, which runs as under. makes it clear that the author is the same scholar that has composed 'Majisti':-

BRITISH MUSEUM,

LONDON: W. C.

March 2, 1899.

DEAR SIR,

I am afraid that we can not help you in your search for the original of the Rekhâganita. We have nothing in Arabic which appears to be at all likely, and we do not possess a copy of James Williamson's work.

Yours faithfully,

(Signed) ROBERT K. DOUGLAS.

- † I found another Arabic work containing all the fifteen books with Prof. Isfahâni, but it contains no alternative proofs and is not the original of the Rekhâganita.
- ‡ Perigal's 'Messenger of Mathematics' New Series, Vol. III. p. 104 contains alternative proofs of Book I. Prop. 47.

Digitized by Google

^{*} The following is the reply received:-

صفحه اول

الحمد لله الذي منه الابتداء واليه الانتهاء وعنده حقايق الابناء و ويده ملكوت الاشياء وصلوته على محمد وآله الاصفياء وبعد فلما فرغت من تحرير المجطى رائتان احرركتاب اصول الهندسته و الحساب المنسوب الى اقلبدس الصورى بايجاز غيرمخل واستقصى في ثبت مقاصده استفصاء غير مخل واضيف اليه مايلبق مهمما استفدته من كتب اهل هذاالعلم واستنبطته بقريحتي وافرزما يوجد من اصل الكتاب في نسختي الحجاج وثابت عن المزيد عليه اما بالاشارة الى ذالك اوباختلاف الوان الاشكال وارقامها فقلمت ذالك متوكلاً على الله أنه حسى وعلمه تقى اقول الكتاب يشتمل على خس عشرة مقاله مع الملحقتين بآخره وهي اربعماته وثمانية وستون شكلافي نسخه الحجاج وبزيادة عشرة اشكال في نسخه ثابت وفي بعض امواضع فى الترتيبِ ايضاً بينهما اختلاف وانا رقمت عدد اشكال المقالات باالحمرة لثابت حرافى اذالحجاج اذاكان مخالفاله

صفحه دوم

المقالة الاولى « سبقه واربعون شكلا وفي نسخه ثابت بزيادة شكل وهو شكل مــه هـ وقد جرة العادة ــ بتصديرها بذكر حدود و اصول موضوعة وعلوم متعارفة يحتاج اليها في بيان الاشكال ١٢

Digitized by Google

The following is the English rendering of the passage, supplied to me kindly by Professors Isfahâni and Sanjânâ of the Bhâvanagar College:—

Praise be to God from whom is the beginning (of every thing) and unto whom is the end (of every thing). He possesses the truths of all events and in His hands are the sources of all things. And the blessings of God be on Muhammad and his chosen family.

After I had finished the composition of the "Majisti" (Almagest), I thought it right to compose (edit) the book which contains the principles of number and calculation attributed to Euclides of "Sur" with a brevity not injurious; also to inquire into its object and design with thorough investigation, and to add to it what I found worthy from amongst those (principles) which I had gathered from the writings of experts in this science or had discovered by my ingenuity; also to improve upon the texts of the two editions of Hajjaj and Sabit by giving hints either about additional points or about the differences between their descriptions of Propositions or their Proofs.

Then I commenced it, depending upon the help of God, Who is every thing to me and in Whom I place my confidence.

1 assert that the book (of Euclides) contains 15 chapters with two more at the end of it and that it contains altogether 468 Propositions in the edition of Hajjaj, and 10 more in that of Sabit; and that in some places there are differences as to their order and even arrangement (of proof); and I have taken down the number of Propositions in the (several) chapters as are (to be found) in the edition of Sabit, pointing out the difference wherever Hajjaj does not agree with him.

First chapter—Propositions 47, and in the edition of Sabit one more Proposition and that is the 45th and it is customary to prefix to these a statement of definitions and a description of established principles (axioms) and well-known subjects (postulates), needful to the exposition of the Propositions.'

The Preface states that the author undertook the work on

Geometry after having finished 'Majisti' and that he has drawn upon the works of *Hajjaja and Sabit,† but mostly followed Sabit in whose works there are fifteen chapters and 478 propositions, Hajjaja's work containing 468 propositions. It will be noticed that the Rekhâganita contains 478 propositions in all. Siddhântasamrâj is, as Pandit Jagannâtha himself says, a translation of Majisti.

भरबीभाषया प्रन्थो मिजास्तीनामकः स्थितः। गणकानां सुबोधाय गीवांष्या प्रकटीकृतः॥

The author of the Arabic works seems to be Nasir eddin Mohammed Ben Hussein Al Thussi, a Persian Astronomer, who died A. D. 1276.‡ Jagannâtha thus seems to have translated both the astronomical and the geometrical works of the same Arabic author Nasir.

Cultivation of the Science of Geometry.

It will not, I believe, be out of place to give a brief survey

^{*} Hajjaja Bin Usuf Bin Matar was an inhabitant of Kufa (near Bagdad). He translated Euclid in two vols. One of which was named Haruni after his patron Harunal rashid, and the other Mamuni after his patron Mamunal rashid son of Harunal rashid. This is described by the philosopher Hunain bin Ishak. These two vols. are commented upon by Sabit bin Kurrah Herani (inhabitant of Hera). Hajjaja's works are also commented upon by Abu Usman Damishki.

[†] The astronomer Thabet ben Korrah was one of the translators or rather perhaps revised the translation of Honein ben Ishak, who died A. D. 873. There is a manuscript in the Bodlein Library purporting to be the translation of the latter edition by the former.' Penny Cyclopædia Vol. XI.

[‡] He was a Persian. He translated Euclid into Arabic. 'The same author (D' Herbelot) gives the names of the Arabic versions, one of which, that of Nasir eddin, the most celebrated of all, was printed at the Medicean press of Rome in I594'. Penny Cyclopædia Vol. XI. 'Nasir died aged about 70. He also wrote a work on Geography. He went to Tartary and won the friendship of Hulaku, surnamed, Ilkhan, the brother of the reigning prince of Tartary. Hulaka was prevailed upon by Nasir to give up the invasion of Constantinople and to invade Persia. Hulaku overran Persia, fixed his seat at Marajha in Azerbijan where he collected men of science, built an observatory and placed Nasir at the head of both. The instruments there used are described from an Arabic manuscript. The tables made at this observatory are called the Ilchanic Tables from the name of their author's patron. They enjoyed great reputation in the East. The Ilchanic tables, according to Delambre differ from those of Ptolemy only in the correction of some of the mean motions.' Vide the article on 'Majisti', Penny Cyelopædia.

of the rise and development of the science of Geometry among the Greeks. According to Proclus, a commentator on Euclid's 'Elements', the art was brought from Egypt to Greece by Thales. He and Pythagoras founded the earliest schools of geometry in Greece in the 6th century B. C. Pythagoras was the first that gave geometry the form of a deductive science and discovered the 47th proposition of the 1st book and other Pythagoras was followed by Anaxagoras propositions. Ænopides, Hippocrates of Chios and others. Plato was the next to advance the science. "Over his Academy at Athens, he placed the celebrated inscription, 'Let no one ignorant of Geometry enter here', thus recognizing it as the first of the sciences and as the proper introduction to the higher philosophy."* Many of his pupils cultivated the science. One of them. Euxodus generalized the results of his studies at the Academy in a treatise. Aristotle also wrote a work on Geometry and it was from one of his pupils Endemus that Proclus took most of Aristæus is reputed to be the instructor of Euclid in Geometry.† It is not known where Euclid was born-He flourished in the reign of Ptolemy, the son of Lagus (323-284 B. C.). "He put together the Elements and arranged many things of Endoxus and gave unanswerable demonstrations of many things which had been loosely demonstrated before him." It is said that Ptolemy asked him an easy method of studying geometry, to which he replied that there was no royal road to learning. He belonged to the Platonic sect. He opened a school at Alexandria. Besides the Elements which are commented upon by Campanus, Proclus, Pappus, Pelitarius and others, he is said to have written the following works:-

- 1 A treatise on Fallacies, preparatory to geometrica reasoning.
- 2 Four books of Conic sections.
- 3 On Divisions.
- 4 On Porisms in three books.
- 5 Locorum ad Superficiem.

[·] Chambers' Encyclopædia, p. 700.

[†] Vide Chambers' Encyclopædia, p. 700,

[‡] Penny Cyclopædia, Vol. XI.

All these books are lost. The following exist and are mentioned in Gregory's edition:—

- 6 On Optics and Catoptrics.
- 7 On Astronomical Appearances.
- 8 The Division of the Scale and Introduction to Harmony.
- 9 A Book of Data.*

The science of Geometry was continued to be cultivated by the Greeks even after they were subdued by the Romans. Romans, however were completely ignorant of the science of mathematics, and only one Roman, Boethius, who flourished at the end of 5th and the beginning of the 6th century, was acquainted with the science. He translated the first Book of Euclid. "The rise of the Mohammedan power in the 7th c. and the rapid and desolating consequences which followed further hastened the extinction of the Greek sciences. time now came when those who devoted themselves to science were everywhere branded as magicians and exposed to popular fury. It was in these times that fortunately for civilization an asylum was found for the spirit of inquiry in Arabia. An acquaintance with the science of the Hindus prepared the Arabians for the reception of the writings of the Greek astronomers and mathematicians and the dispersion of the scientific coteries of Alexandria gave to Bagdad many preceptors in the learning of the west. In little more than a century after it took place the Arabians were the most zealous patrons and cultivators of Greek science and from the 9th to the 14th centuries they produced many astronomers, geometricians, &c. through them the mathematical sciences were again restored to Europe towards the close of the 14th c., being first received in spain and Italy."† The movement was aided by the Renaissance in the 16th century, but so great was the reverence of scholars for the name of Euclid that no improvement was made in it till the times of Kepler and Descrates.

Pandit Jagannâtha and his works.

Very little is known of the author besides the fact that he was



^{*} Vide Penny Cyclopædia, Vol. XI.

[†] Chambers' Encyclopædia, p. 700.

natronized by Javasimha II., better known as Savai Jayasimha, king of Jeypur, who ruled forty-four years (A. D. 1699-1743). We know this from what the author himself says in the Preface and also at the end of every 'adhyava'. There is a tradition noticed by Mahamahopadhyaya Pandit Sudhakara Dvivedî in the Ganakatarangini that to falsify what Persian and Arabic scholars in the court of king Aurangzebe said, that the Sanskrit Pandits could not master Persian or Arabic, king Jayasimha of Jeypur, who was sent by Aurungzebe in 1672 to fight Sivaji, brought Pandit Jagannatha, who was then only 20 and who was thoroughly proficient in Sanskrit, to his country to teach him Persian and Arabic. He acquired a thorough knowledge of both the languages in a short time. He composed the Rekhâganita and the Sidhântasamrâj. They are both translations of Arabic works as is shown before. The Siddhantasamrai contains thirteen Adhyavas, one hundred and forty one Prakaranas and one hundred and ninety-six Kshetras. It contains both verse and prose. Jagannatha seems to have translated the 'Majisti' in verse. He explains it in prose and in the course of his explanations, quotes the views of the Arabic scholars. Miriâ. Ulukavega and others and of the Emperor Mahomed Shah.*

[&]quot;पुनः समरकंदनगरेऽक्षांकैः ३९।३७ युते बलुक्वेग्रेन वेथेनोपरुग्धा क्रांतिः १३।३०।१७."

[&]quot;अत्र जमशीदेन रीतिः प्रदक्षिता सा यथा।"

[&]quot; अस्य मिर्जोत्तुरवेगोक्तप्रकारेणांश्रद्वयस्य पूर्णज्या निकास्वते।"

[&]quot;अब मिजोल्लग्वेगल द्वितीयः प्रकारः ॥" and in many other places.

[&]quot; अथात्र यथास्परेसामिरेव सिष्यति तथा वतितमाविद्दसंज्ञैः ॥"

[&]quot; अत्रोपपत्तिः श्रीमहाराजाधिराजजयसिंहदेवैनिकाशितास्ति सा यथा ॥"

[&]quot; इन्द्रप्रस्थे अवन्तां तथा काइयां सवाईजयपुरे च सर्वत्र वज्ररचना कृता। पूर्व प्राचीनिमानित्तर्तिकर्ता मतमञ्जूचेन वंत्रैर्महनद्यत्रवेषं कृत्वा निश्चयः कृतः तदनन्तरं समरकंदनगरे उस्कवेगनाज्ञा वंत्रेर्महनस्त्रवेषं कृत्वा निश्चयः कृतः। ततो वर्षसतत्रवानन्तरं श्रीमहाराजाधिराज जयस्तिहमशुवर्याणामाज्ञ्या वंत्ररचना जाता। पूर्व ववनैर्जानुस्त्रहस्त्रकं नाम गोस्नाररपर्यावं
धातुमयं वंत्रं कृत्वा वेषः कृतः तत्रावं दोषः यद्मातूनामतिभारतया क्रांतिष्ट्रतं कदंबस्थानाज्ञभति तस्य नम्रतया वेषं कृत्वा निश्चयः कृतः त्रिज्ञत्तरस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रा अधुद्धता भवति। एवं दसं
सदा श्रीमहाराजाधिराजजयस्तिहदेवैनवीनया युक्ता अवप्रकाक्षयंत्रं कृतम्। अस्य कर्तन्यता
वज्राच्यावे द्रष्टवा।"

[&]quot; फिरंगदेशे शीमहाराजाधिराजैभैहं सदशरीकामा ववनः प्रेषितः स्थितः तेन स-हैकद्वीपे गस्वाऽश्वांका ४।१२ निश्चितास्ते दक्षिणाः ॥"

[&]quot; तथा सहसदसेहदीनामा यवन अग्रे हीपेचु प्रेवितः ॥"

Many of the proofs given in the work are those found out by king Jayasimha himself. The following are the opening stanzas of the work:—

गजाननं गणाधिपं सुरासुराचितं सदा । समस्तमक्तकामदं किवासुतं सुक्तप्रदम् ॥ १ ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्तिनम् । प्रशस्तमृतिभूवितं नमामि विश्ववारणम् ॥ २ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाम्बुरुहं सुरेशै-वैन्धं समस्तजनसेवितरेणुगम्बम् । वाग्देवतां निलिखमोहतमोषहर्षी वन्दे गुरु गणितसास्त्रविसारदं च ॥ ३ ॥

श्रीगोविन्दसमाङ्गयादिविश्वधान् बृन्दाटवीनिर्गतान् यस्तत्रैव निराकुरूं श्रुचिमनोभावः स्वक्षक्तयानवत् । म्खेण्क्रन् मानसमुद्रतान् स्वतरसा निर्जितः श्रूमण्डके जीयात् श्रीजवसिंहदेवनृपतिः श्रीराजराजेश्वरः ॥ ४ ॥

करं जनार्दनं नाम तूरीकृत्य स्वतेजता । आजते दुःसहोऽरीणां वया प्रैप्मो दिवाकरः ॥ ५ ॥

> राजाभिराजो जयसिंहदेवो वो मस्त्यदेशाभिपतिश्व सङ्गाद । श्रीरामपादाम्बुजसक्तवित्तो यज्वा सदा दानरतः खुबीखः ॥ ६ ॥

गोळादिवज्रेषु नवीनयुक्ति-प्रचारदक्षी गणितागमज्ञः । सत्यप्रियः सत्यरतः कृपालु-स्तिग्मप्रताषी जयति क्षमाबाज्ञः॥ ७ ॥

वेनेडं वाजपेयाधैर्मेडादानानि घोडशः। दत्तानि द्विजवर्षेम्यो गोप्रामद्विपवाजिनः॥ ८॥

स धर्मपाको गणितप्रवीणान् ज्योतिर्विदो गोळविचारदश्चान् । कारूंस्तवाङ्ग्य चकार वेथं गोकादिवश्चैर्धुसर्वां च मानाम् ॥ ९ ॥ तेन श्रीजबसिंहेन प्रार्थितः शास्त्रसंविदा । करोति श्रीजगन्नाथः सम्राट् सिद्धान्तसुत्तमम् ॥ १०॥*

अथ वेघोपयोगीनि यञ्चाणि प्रोच्यन्ते ।

नाडीयमं गोख्यमं दिगंशास्यं तथैव च । दक्षिणोदिग्मित्तसंत्रं वृत्तपद्यांशकं तथा ॥ ११ ॥ यम्रं सम्राडिति स्थातं यम्राणामुत्तमोत्तमम् । जयप्रकाशं तद्वच सर्वयम्रशिरोमणि ॥ १२ ॥

Rekhâganita was the name given to the translation of the Arabic work of Nasir eddin by Jagannâtha himself. Both the Rekhâganita and the Siddhântasamrâj were composed by Pandit Jagannâtha at the direction of king Jayasimha who was so much pleased with the Pandit at their composition that he is said to have presented him with grants of many villages.

King Jayasimha II. or Savâi Jayasimha.

King Jayasinha, who was our author's patron, was a flower of the Hindu princes of Hindustan. He had a fervent love for mathematics and astronomy and did more than any other prince to promote the cultivation of astronomical and mathematical studies. As a statesman and legislator he was equally famous. He removed his capital from Ambér to Jayapûra which was founded by him in 1728 and which became the seat of science and art. "Jeipoor is the only city in India built upon a regular plan, with streets bisecting each other at right angles. The merit of the design and execution is assigned to Vidyadhara, a native of Bengal, one of the most eminent coadjutors of the prince in all his scientific pursuits, both astronomical and historical." The king was highly esteemed for his mathe-

प्रम्बं सिद्धान्तसम्राजं सम्राद्ध रचयित स्फुटम् । तुष्ट्ये श्रीजयसिंहस्य जगन्नाथाङ्कयः कृती ॥ अरबीभाषया प्रम्थो मिजास्तीनामकः स्थितः । गणकानां सुबोधाय गीर्षाण्या प्रकटीकृतः ॥

[†] Vide Col. Tod's 'Rajasthana, Vol. II. pp. 356-59.



Mahâmahopâdhyâya Sudhâkara Dvivedî has the following verse in place of the 10th verse and also an additional verse as under:

matical knowledge. He constructed a set of observatories at Delhi, Jayapûra, Oojein, Benares, and Mathura and instruments invented by him were used there for astronomical observations. He corrected the Tables of De la Hire which were published in 1702 by his observations at different observatories for seven years. The inaccuracies of these tables were in his opinion due to instruments of inferior diameters. "The Raiput prince might justly boast of his instruments. With that at Delhi he in A. D. 1729 determined the obliquity of the Ecliptic to be 23°, 28' within 28" of what it was determined to be the year following, by Godin. His general accuracy was further put to the test in A. D. 1793 by our scientific countryman, Dr. W. Hunter, who compared a series of observations on the latitude of Oojein with that established by the Rajpoot prince. difference was 24" and Dr. Hunter does not depend on his own observations within 15". Jeysing made the latitude 23°, 10' N.; Dr. Hunter, 23°, 10', 24" N. From the results of his varied observations Jeysing drew up a set of tables, which he entitled Zeij Mahomedshahi, dedicated to that monarch. By these all astronomical computations are yet made, and almanacks constructed."*

"When we consider that Jeysing carried on his favourite pursuits in the midst of perpetual wars and court intrigues, from whose debasing influence he escaped not untainted, when amidst revolution, the destruction of the empire, and the meteoric rise of the Maharattas he not only steered through the dangers, but elevated Ambér above all the principalities around, we must admit that he was an extraordinary man."† "His name throughout Râjputânâ and also in Mâlva is to this day held in the highest veneration by all classes of the Hindu population. The Marwari Sâvkârs hold it as an article of faith that good fortune will attend their dealings if they take the name of Jayasingh along with that of their gods in their morning orisons."!

^{*} Col. Tod's 'Râjasthâna' Vol. II., pp. 356—59.

[†] Vide Col. Tod's Râjasthâna Vol. II. pp. 346-369.

[†] Vide 'Journal of the Asiatic Society of Bengal' Vol. IV. pp. 938-48.

The prefatory verses of the Rekhaganita and the Siddhantasamraj have both historical allusions. The protection which the king is described to have afforded to the learned Brahmans of Vrindavana refers to the persecutions of the Brahmans of Mathura by Aurangzebe by whose orders many temples were destroyed. The removal of the 'people-grinding impost' (st unit and the profess to the repeal of the odious Jaziya which was imposed by Aurangzebe and for the repeal of which king Jayasimha II. is given by Col. Tod the credit of having written the most fiery letter of remonstrance.*

Nothing now remains but to acknowledge my gratitude to my friend, Prof. S. Rådhåkrishna Aiyar B. A., Principal Mahårajå's College, Pudukotå, who read over the translation of some of the alternative proofs to see whether there was anything mathematically wrong in them and Prof. K. J. Sanjånå, Prof. Isfahåni, Mahåmahopådhyåya Sudhåkara Dvivedî and other gentlemen who helped me in various ways.

HAWÂDIÂ CHAKALÂ, Surat, 10th May 1901.

K. P. TRIVEDÎ.

Digitized by Google

^{*} Mr. Orme attributes the authorship of the letter to Jasvantsimha of Marwar.

UA Calc

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः॥

गणािषपं सुरार्चितं समस्तकामदं नृणाम् । प्रशस्तभूतिभूषितं सारामि विष्नवारणम् ॥ १ ॥

लक्ष्मीनृतिहचरणाम्बुरुहं सुरेशै-र्वन्दं समस्तजनसेवितरेणुगन्धम् । वाग्देवतां निखिलमोहतमोपहन्नीं वन्दे गुरुं गणितशास्त्रविशारदं च ॥ २ ॥

श्रीगोविन्दसमाह्वयादिविबुधान् वृन्दाटवीनिर्गतान् यस्तत्रैव निराकुलं शुचिमनोभावः स्वर्भेस्यानयत् ।

म्लेच्छान् मौनसमुन्नतान् स्वतरसा निर्जित्य भूमण्डले जीयाच्छ्रीजयसिंहदेवनृपतिः श्रीराजराजेश्वरः ॥ ६ ॥ करं जनार्दनं नाम दूरीकृत्य स्वतेजसा । श्राजते दुःसहोऽरीणां यथा श्रैष्मो दिवाकरः ॥ ४ ॥

येनेष्टं वाजपेयाचैर्महादानानि षोडश । दत्तानि द्विजवयेंम्यो गोमामगजवाजिनः ॥ ५ ॥ तस्य श्रीजयसिंहस्य तुष्टौ रचयति स्फुटम् । द्विजः सम्राङ् जगन्नायो रेखागणितमुत्तमम् ॥ ६ ॥

9 A. begins the work as follows:—ओं श्रीगणेशाय नमः। अयो-क्रीदश्चास्यं रेखागणितं लिख्यते । तत्रास्मिन् प्रन्ये &c. K. begins it thus:—श्रीगणेशाय नमः । श्रीसारदाये नमः । श्रीगुरने नमः । ओं सिद्धिः । गजाननं गणाधिपं गुराग्रुरार्चितं सदा । समस्तभक्तकामदं शिवाग्रुतं गुखप्रदम् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्त्तिनम्। समस्तभृतिभूषितं नमामि विव्रवारणम् ॥ लक्ष्मीनृसिंह् &c.

२ 'अक्ता. ३ दर्प' K.

अपूर्व विहितं शासं यत्र कोणावबोधनात् । क्षेत्रेषु जायते सम्यग्व्युत्पत्तिर्गणिते यथा ॥ ७ ॥ श्चिल्पशास्त्रमिदं प्रोक्तं ब्रह्मणा विश्वकर्मणे । पारम्पर्यवशादेतदागतं धरणीतले ॥ ८ ॥ तद्विच्छिनं महाराजजयसिंहाज्ञया पुनः । प्रकाशितं मया सम्यग् गणकानन्दहेतवे ॥ ९ ॥

९ विदितं D. २ This and the next verse are omitted in B.

अथ रेखागणितं प्रारभ्यते ।

तेत्रास्मिन् मन्थे पश्चदशाध्याया अष्टसप्तत्युत्तरचतुःश्चतं क्षेत्राणि सन्ति । तत्र प्रथमाध्यायेऽष्टचत्त्वारिंशत् क्षेत्राणि प्रदर्श्यन्ते ॥

तत्र आदौ परिभाषा।

यः पदार्थो दर्शनयोग्यो विभागानर्दः स बिर्नेदुशब्दवाच्यः । यः पदार्थो दीर्घो विस्ताररहितो विभागार्दः स रेखाशब्दवाच्यः । येच विस्तारदैर्घ्याभ्यां भिद्यते तद् धरातळक्षेत्रसंग्रं भवति । अस रेखापि द्विविधा । एका सरला अन्या वका ।

अथ सरलरेखालक्षणम् ।

यसां न्यस्ता विन्दवोऽवलोकिताः सन्त एकविन्दुनाच्छादिता इव दृश्यन्ते सा सरला रेखा श्रेयान्यथा कुटिला ।

अथ धरातलक्षेत्रमपि द्विविधम्।

एकं जलवत् समं द्वितीयं विषमम् । तद्यथा । विकृत् लिखित्वा स्त्रं निःसारयेत् तद्यदि सर्वत्र संलैंगं स्यात्तदा तद् धरातलं समं वेयमन्यया विषमम् ।

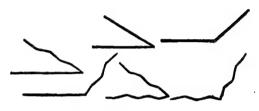
अथ कोणलक्षणम्।

घरार्तले रेखाद्वययोगात् सै्च्युत्पचते सैव कोणः । स च द्विविधः समो विषमश्च।तौ यथा। समानरेखायां लम्बयोगा-दुत्पन्नी कोणी प्रत्येकं समकोणी भवतः रेखे च मिथो लम्बरूपे स्तः।

९ अयोझीदश्चास्यं रेखागणितं लिस्यते । D. २ अय प्रन्ये D. ३ शक्लानि D. K. ४ बिन्दुर्वाच्यः D. A. K. ५ बिन्दारदैर्ध्ययोर्थद्भियते तद्धरातलं तदेव क्षेत्रम् । D. K. ६ K. has यत्र in the beginning and omits तद् before घरातलं. ७ अमं भवति D. ८ धरातल A. B. ९ या सूच्युत्पवते स कोनः । K. D.

तत्र समकोणान्यूनोऽल्पकोणो भवति । समकोणादधिकोऽधिककोणो भवति । समातिरिक्तो विषमकोणो भवति । इह समकोणः सरंहरेसाभ्यामेव भवति ।

विषमकोणः सरलरेखाभ्यां सैरलकुटिलरेखाभ्यां कुटिलरेखाभ्यां च भवति ।

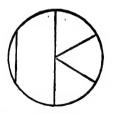


अथ क्षेत्रलक्षणम्।

तेत्र धरातलं रेखया रेखाम्यां रेखामिनी वृत्तं क्षेत्रसंग्नं भैवति । तच वृत्तकोदण्डज्यस्रचतुरस्रादिभेदेन वैहुभेदं ज्ञेयम् ।

अथ वृत्तलक्षणम्।

समधरातले निन्दुं कृत्वा तस्मात् समानि सूत्राणि सर्वतः कृत्वा चक्राकारा कुटिला रेखा कार्या सा समानान्तरेण निन्दुतः सूत्राणां स्पर्श करिष्यति सैव वृत्तसंज्ञा भवति।



तदाकान्तं धरातलं वृत्तक्षेत्रं भवति ।

९ K. omits सरलकुटिलरेखाभ्यां. २ D. omits तत्र. ३ श्रमुच्यते D. ४ बहुविधम् D. ५ तस्मादेव बिन्दुतः सर्वाणि सूत्राणि या स्प्रशति कुटिल रेखा तदृत्तं श्रेयम् । D. तस्मात् समानि सूत्राणि या स्प्रशति कुटिल रेखा तदृत्तं श्रेयम् । K.

विन्दुश्च केन्द्रसंज्ञः।

केन्द्रोपरिगतं सूत्रमुभयतः पालिसंलमं व्याससंज्ञं स्थात् । व्याससूत्रं वृत्तक्षेत्रस्य समानं भागद्वयं करोति ।

या रेखा केन्द्रगा स्यात् किं च पालिलग्ना स्यात् तदुभयतः खण्ड-द्वयं विषमं भवति सा रेखा चापकर्णसंज्ञा पूर्णज्यासंज्ञा च भवति ।

अथ सरलरेखाकृतानि क्षेत्राण्युच्यन्ते ।

तेत्रादौ त्रिभुजमुच्यते ।

तर्त् त्रिविषम्। एकं समत्रिबाहुकम्। द्वितीयं समक्किबाहुकम्। तृतीयं विषमत्रिबाहुकम्।



पुनस्तत्कोणैरिप त्रिभुजं त्रिविधं भवति । तद्यथा । यस्मिन्नेकः समकोणोऽन्यौ न्यूनकोणौ तत् समकोणत्रिभुजं ज्ञेयम् ।



यसैकोऽधिककोणोऽन्यौ न्यूनौ सासाद् अधिककोणत्रिभु जं हेयम्।



⁹ सध्यविन्दु: for विन्दुब K. २ भवति D. K. ३ भवति D. K. ४ इसानि D. ५ A. and B. omit आदी. ६ तत्रिभुजं B.

यस्य चे त्रयोऽपि न्यूनकोणास्तन् न्यूनकोणात्रिभुजं स्थात्।



अथ चतुर्भुजम् ।

यस्य बाहुचतुष्टयं सर्मोनं कोणचतुष्टयर्मा कोणं समच तुर्भुजं ज्ञेयम् ।	पे समानं —	तचतुरसं	सम-
काण तनपतुनुज सप्त्।			

यस्य कोणचतुष्टयं समानं	सन्मुखबाहुद्वयं	च मिथः	समानं तद्वि	-
षमचतुर्भुजम् आयतसंज्ञम् ।				

यस्य कोणचतुष्टयं विषमं भुजचतुष्टयं च समं तद् विषमकोणसमचतुर्भुजं ज्ञेयम् ।

⁹ D. omits च. २ भवेत् D. K. ३ B. adds क्षेत्रम्. ४ D. K. add अथ च after समानं. ५ D. adds अथ च after समानं and omits च. ६ K. has भायतं च श्रेयम्. D. has श्रेयम् and B. च भवति after this.

यस्य कोणचतुष्टयं विषमं भुजचतुष्टयं च विषमं तद् विषमकोण-विषमचतुर्भुजं शेयम् ।

अय समानान्तरालरेखालक्षणम् ।

या रेखा प्रथमनिःसारितरेखया कदापि न मिलति सा समाना-म्तरा रेखा भवति ।

यो सरला रेखा सैकयैवान्ययुक्ता सती सरला मविष्यति न द्विती-यादिरेखायोगेन दर्शनम् ।

श्रय यस्यैकराशेः समाना ये ये राश्ययत्ते मिथः सर्वेऽपि समानाः । ये राश्ययो मिथः समानास्ते समानराश्चित्रमाणयोगवियोगाभ्यां समाना एव ।

यदि च राश्यः समाना न भवन्ति ते समानराशियोगवियोगा-भ्यामपि समाना न भवन्ति ।

वे³ राञ्चयः समानयोगवियोगाभ्यां समाना भवन्ति तेऽपि पूर्वे समाना एव सन्ति ।

ये च राञ्चयः समानराञ्चियोगवियोगाभ्यां समाना न भवन्ति तेऽपि पूर्व समाना न सन्ति ।

ये राश्य एकादिगुणितान्यराशिसमाना भवन्ति ते सर्वे समाना एव। यः कोऽपि राशिः खखण्डादिषक एवास्तीति प्रसिद्धम् । चिद्धं रेखा धरातलं वृत्तं क्षेत्राणि च प्रसिद्धानि सन्ति । रेखायां धरातले चिद्धं रेखा च कर्त्तुं शक्यत इति सर्वे प्रसिद्धम् । एवं चिद्धादिप रेखा कर्त्तुं शक्यते ।

⁹ D. K. omit the whole portion from this to व्यासार्थसि-तेन इतं कर्तुं शक्यते. २ B. adds रेखाया: ३ B. adds च. ४ तेऽपि A.

अब चिह्नं चिह्नोपरि रेखायां चान्या समाना रेखा धरातलं स्वस-मानधरातले च तिष्ठति ।

रेखाद्वयस्य संपात एकचिह्न एव भवति । धरातलद्वयसंपात एकरेखायामेव भवति । ये च चिह्ने तयोरुपिर सरलैका रेखा योजियतुं शक्यते । या च सरलरेखा सा वर्धियतुं शक्यते । चिह्नोपर्यभीष्टरेखाव्यासार्धमितेन वृत्तं कर्त्तु शक्यते । यावन्तः समकोणास्ते सर्वेऽपि समानाः । सरलरेखाद्वयं धरातलं व्याप्तुं न शकोति । कुटिलरेखाद्वयमथवा कुटिलसरलरेखाद्वयं धरातल्यमावृणोति ।

यद्रेलाद्वयं समानान्तरं न भवति किन्तु विषमान्तरं भवति तत्र यस्मिन् प्रदेशे बह्वन्तरं भवति तिह्शि विधितयो रेलयोरन्तरमुत्तरोत्तरम-धिकमेव भवति यत्र च खल्पमन्तरं तिह्शि विधितयो रेलयोरन्तरमुत्तरो-त्तरमल्पमेव भवति यावद्रेलाद्वयसंयोगस्तदनन्तरमन्तरं विधिष्णु भवति ।

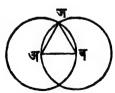
यत्र कोणशब्दस्तत्र सरलरेखाकृत एव कोणो ज्ञेयः । यत्र रेखाशब्दस्तत्र सरलैव रेखा ज्ञेया । यत्र च मूमितलर्शेब्दस्तत्र जलसमीकृतमेव भूतलं ज्ञेयम् ।

इति परिभाषा ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् । तेत्र यदा समन्त्रभुजं क्षेत्रं कर्तव्यमस्ति । र्तत्र अबरेसा च ज्ञातास्ति तदुपरि त्रि-

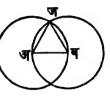
भुजं क्रियते।

तथ्या ।



१ A. omits रेसा. २ D. begins it with अथ. ३ K. inserts भवति after अन्तरं. ४ A. and B. omit तत्र. ५ D. omits तत्र. ६ अव निर्देश रेसा तदुपर &c. D. and A.

अं केन्द्रं कृत्वा अबव्यासार्धेन हत्तं कार्यम्। एवं बं केन्द्रं कृत्वा बअव्यासार्धेन द्वितीयं वृत्तं कार्यम्। यत्र वृत्तद्वयसंपातस्तत्र अचिहं कार्यम्। तेत्र अजरेला बजरेला च कार्या।



एवमत्र अवजित्रमुजं समान्त्रिमुजं जातम् ।

कुतः।

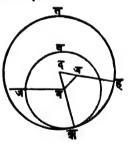
अत्र अबरेखा अजरेखासमानास्ति । यतो बजवृत्तस्य व्यासा-र्घमस्ति । पुनर्बजरेखा बजरेखासमानास्ति अजवृत्तस्य व्यासार्ध-त्वात् । पुनर्बजं अजसमानं जातं अबदुत्यत्वात् । तसाद्धजरेखात्रयं मिश्रः समानं जातम् ।

अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

तैत्रैकाभीष्टा रेखा कृतास्ति तदन्यत्रकृतविन्दुतस्तचुल्या रेखा कर्तव्यास्तीति।

तत्र बिन्दुः अचिहं कल्पितं रेखा बजं कैल्पितम् ।

अचिहात् बचिहपर्यन्तं रेखा कार्या । अबरेखोपरि समत्रिभुजं अबदं कार्यम् । ब-केन्द्रकं बजेन वृत्तं जझवसंग्लं कार्यम् । द-ब रेखा दीर्घा वृत्तपालिमिलिता झसंलमा च कार्या । पुनर्द्शन दकेन्द्रकं हझतवृत्तं कार्यम् । दश्चरेखा दीर्घा वृहद्वृत्तपालिह-संलमा कार्या ।

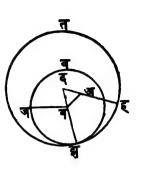


तत्र अहरेला बजरेलया समाना जाता।

कुतः।

⁹ B. and D. omit द्वितीयं. २ D. has ततः for तत्र. ३ D. K. omit तत्र. ४ D. K. omit कल्पितम्. ५ A. and B. पुनरज्ञ. ६ A. B. omit it.

दहरेखादझरेखयोः समानत्वमस्ति । तत्र दअरेखा दबरेखासँमानास्ति । तस्मात् अहरेखा बझरेखा चै समाना जाता। पुँनर्बझ रेखा बजरेखा चै समानास्ति । तस्मात् अहरेखा बजरेखासमानास्तीति सिद्धम् ॥

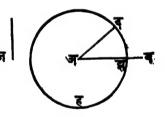


अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

यत्र बृहद्रेखा छघुरेखा च ज्ञातास्ति तत्र छघुरेखातुल्यं खण्डं बृहद्रेखातः भिन्नं कर्त्तव्यमस्तीति चेत्।

तदा बृहद्रेखा अबसंज्ञा छघुरेखा जसंज्ञा कल्पिता।तत्र अचिहात् अदरेखा जसमाना निष्काशनीया पूर्वोक्तप्रकारेण।

पुनः अकेन्द्रं कृत्वा अदेन दहझवृत्तं कार्यम् । इदं अबरेखातः अदरेखासमानां अझरेखां पृथक् करोति । तस्मात् अझ रेखा जरे-खासमाना जाता ॥



अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

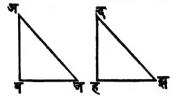
यंत्र त्रिभुजद्वयमस्ति तत्रैकत्रिभुजस्य मुजद्वयं तदन्तर्ग-तकोणश्च द्वितीयत्रिभुजस्य भुजद्वयेन तदन्तर्गतकोणेन च समानं भैवति तदा प्रथमत्रिभुजस्य शेषकोणद्वयं तृतीय-

१ •रेखासमानास्ति D. २ D. K. omit अस्ति. ३ omitted in D. K. ४ omitted in D. K. ६ तस्मादिष च A. B. ७ D. K. omit इति चेत्. ८ पूर्वोक्तप्रकारेण पृथक् कार्या. A. B. ९ शक- अम्. D. K. १० D. omits यत्र त्रिभुजदूरमस्ति । ११ D. adds यदि after समानं.

मुजश्च द्वितीयत्रिभुजस्य कोणाभ्यां तृतीयभुजेन च समानं भवति ।

तत्र प्रथमत्रिभुजं अवजं द्वितीयत्रिभुजं दहसं अवं दहसमं अजं

द्श्रसमं च कल्पितं अकोणद्कोणौ अ च समौ कल्पितौ।तदा बजं हृश्समं भविष्यति बकोणह्कोणौ समानौ जकोणझ्कोणौ च समानौ भविष्यतः । क्षेत्रं च क्षेत्रसमानं भविष्यति।



अत्रोपपत्तिः ।

तत्र अबरेखा दहरेखायां न्यस्ता अकोणो दकोणे न्यस्तः अजं दशोपिर च न्यस्तम्। एवं कृते बजं हशोपिर खास्यित यतो रेखाद्वयं सरलम् । बजकोणो हशकोणयोः स्थास्यतस्तदा क्षेत्रं क्षेत्रसमानं भविष्यति ॥

अथ पञ्चमं क्षेत्रम् ।

तत्र यस्य त्रिभुजस्य भुजद्वयं समानं तस्य तृतीयभुजोपरि संख्यकोणद्वयं समानं भवति । अथ भुजद्वयं स्वमार्गवृद्धं सत् तृतीयभुजाधःसमुत्पन्नकोणद्वयमपि समानं भवति ।

यया अवजित्रभुजे अबं अजसमानमस्ति तदा अबजकोणअजबकोणौ समानौ भविष्यतः । पुनः अबरेखाँ द्रपर्यन्तं हपर्यन्तं अजरेखा च वर्षिता । ततः समुत्पनौ बजहकोणजबदकोणौ बजरेखाधः- स्थितौ समानौ भवतः ।

अत्रोपपत्तिः ।

बदरेखायां झचिन्हं कुर्यात् । जहरेखायां बझरेखासमाना जव-

१ A. B. add इति after भविष्यति. २ K. शक्छम्. ३ D. inserts र्धनीया.



रेला पृथक् कार्या। बवरेला अझरेला च कार्या। अजझित्रमुजे अववित्रमुजे जअमुजः अझमुजः अकोणश्च बअमुजेन अधमुजेन अकोणेन कमेण समानाः। जझमुजः ववमुजः एतौ समानौ जातौ। अजझकोणअबवकोणौ च समानौ जातौ। झकोणवकोणाविप समानौ जातौ। पुनः जबझित्रमुजे बजवित्रमुजे च बझमुजः झजमुजः झकोणः कमेण



जवभुजेन ववभुजेन वकोणेन समानाः । तदा जबझकोणः बजन्वकोणः इमौ द्वौ समानौ जातौ । पुनः झजबकोणः वबजकोणः इमौ समानौ जातौ । पतौ अजझकोणअववकोणयोः शोधितौ । शेषौ अजबअबजकोणौ समानौ भवतः। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरेण पश्चमं क्षेत्रम्।

तत्र अवरेखायां दिचन्हं कार्यम् । अदरेखातुल्या अहरेखा भिन्ना

कार्या। ततो दहरेला दजरेला इबरेला च कार्या।

अद्जन्निमुजे दअमुजः अजमुजः अ-कोणश्च अहबत्रिमुजस्थेन हअमुजेन अ-बमुजेन अकोणेन कमेण समानः। ततो ब

बहरेला दजरेला पैरस्परं समाना जाता। अबहकोणः अजदकोणश्चेताविष समानी जातो। एवं बदहित्रभुजे दबमुजः बहमुजः
दबहकोणश्च दहसित्रभुजस्य जहमुजेन जदभुजेन हजदकोणेन
समानः। पुनः बदहकोणजहदकोणो परस्परं समानी स्तः। बहदकोणः जदहकोणश्च पैरस्परं समानः। पुनः बद्जकोणः बहुजकोणश्चेताविष समानी। एवं बद्जित्रभुजे बद्भुजः दज्भुजः बद्जकोणश्च वहजित्रभुजस्य जहमुजेन हबभुजेन जहबकोणेन च समानः। ततो
अबजकोणअजबकोणो समानी जाती। तदेवमभीष्टी कोणो सिद्धी॥

⁹ च मिय: A. B. २ मिय: A. B.

अथ पष्ठं क्षेत्रम्।

तत्र यस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयं समानं तत्कोणसंबन्धि भु-

जद्वयमपि समानं भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र अबजित्रभुजे बजकोणी स-मानौ । अबं अजमि सेमानम् । यदि ब

मुजद्वयं समानं न भवति एको भुजोऽधिकः स्यात्तदा अधिकभुजः अजं कल्पितः । बआसमानं जदं भिन्नं कृत्वा बदरेला कार्या । अ-जबित्रमुजे अवभुजो बजभुजः अबजकोणः दबजित्रमुजस्य दज-भुजेन जबभुजेन दजबकोणेन समानः । एवं बृहित्रभुजं लघुत्रिभुज-समानं जातम्।तिददमनुपपन्नम् । बृहत्क्षेत्रं लघुक्षेत्रेण कथं समानं भवि-ष्यति । तसात् अजं अबं समानम् । तदेवमुपपनं कोणद्वयसाम्ये तत्सक्तभुजद्वयसाम्यं भवतिति ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ।

तत्रैकरेखोभयपार्श्वयोनिःस्तं रेखाद्वयं यत्र मिलितं ति । न्हादम्यत्र तद्गेखाद्वयसंपातो न भवति कदापीति।

अत्रोपपत्तिः ।

अबरेसाप्रान्ताम्यां अजरेसा बजरेसा च निःसता जिन्हे तयो-बोंगो जातः । अथ यदि तत्समानमन्यद्रेसा-द्वयमन्यत्र चिन्हे मिलति इति कल्प्यते तदा अजरेसातुल्या अदरेसा बजरेसातुल्या बदरेसा दिचिन्हे मिलिता स्यात् । पुनर्द-

⁹ समानं भवति A. B. २ आजरेखातुल्यः A. B. ३ साम्यमपि D. ४ D. omits इति at the end. ५ D. K. have रेखाद्वयं निःसतं. ६ मिलनं न भवति D. K.

जरेला निष्कास्या। तदा अजदकोणः अदजकोणेन समानः स्यात्।

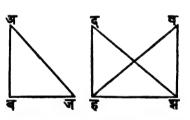
कुतः । अजअदयोः समानत्वात् । अय च बजदकोणः अजदकोणादल्पोऽस्ति । तदा बजदकोणः अदजकोणादल्पो भवि-ष्यति । पुनः अदजकोणः बदजकोणाद- अ

ह्योऽस्ति । बजदकोणः बदजकोणादत्यन्तमस्यः स्यात् । इमौ तौ समानौ स्तः । कुतः । बदबजभुजयोः साम्यात् । तस्मादिदमनुपपमं यतः समानौ कोणौ विषमौ जातौ । तदेवमुपपनं जचिन्हादन्यत्र भुजयोगो न भविष्यतीति ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम्।

यस्य त्रिभुजस्य भुजत्रयमन्यत्रिभुजस्य भुजैः समानं भवति तदा तस्य कोणत्रयमपि अन्यत्रिभुजकोणैरवश्यं समानं भ-विष्यति।

तत्रैकं त्रिभुजं अवजं द्वितीयं दहशं च किल्पतम्। अत्र अव-भुजः दहभुजसमानः अजभुजस्तु दश्भुजेन समानः बजभुजः हश्चेन च समानः किल्पतः।



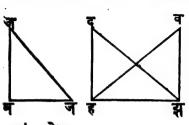
यदा भुजत्रयं समानं जातं तदा अकोणः दकोणेन समानः बको-णस्तु हकोणेन समानः जकोणो झकोणेन समानो भविष्यति । कुतः । बजभुजं हझभुजे स्थाप्यते क्षेत्रं क्षेत्रे च स्थाप्यते तदा शेषौ अवअजो भुजौ दहदझभुजयोः स्थास्यतः । यदि न स्थास्यत-स्तदा भिन्नौ तिष्ठतः । यथा वहवझौ कल्पितौ ।

तेत्रेयमनुपपत्तिः।

⁹ बतो D. २ तत्रेयमुपपत्तिः A. D.

दहदझरेले इझरेलोमयपान्ताम्यां निःसते दचिन्हे मिलिते वहव-

शरेखे पूर्वरेखासमाने प्रान्ताभ्यां निःसते बचिन्हे मिलिते। इदम-नुपपन्नम् । इदं सप्तमक्षेत्रे प्रति-पादितमस्ति । तस्मात्रिअजं त्रिमु-जोपरि स्थास्यत्येव । कोणा अपि कोणसमाना भवन्त्येव । तदेवसुपपन्नं यथोक्तम् ॥



अथ नवमं क्षेत्रम् ।

तत्र कोणस्य समानभागद्वयकरणं प्रदर्श्यते ।

तद्यथा बअजकोणः कल्पनीयः । बअभुजे दचिन्हं कृतम् । त-

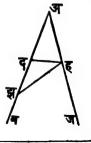
तुल्यमेव द्वितीयेऽपि भुजे हचिन्हं कार्यम्। दह-रेलाकार्या। दहरेलोपरि दशहं समत्रिभुजं कार्यम्। अझरेखा कार्या। इयं रेखा अकोणस्य समं माग-द्वयं करोति ।

यतो दअझत्रिमुजे हअझत्रिभुजे दअमुजः हअभुजश्च मिथः समानः। दझभुजहझभुजौ समानौ । अञ्च उभयोरेक एवास्ति । उभयो-

बिमुजयोर्भुजाः समानाः।कोणा अपि समाना भवन्ति । तस्मात् झअ-दकोणझअहकोणौ समानौ जातौ । तदेवमुपपनं यथोक्तम् ॥

यदि झिचिन्हं रेखयोरन्तर्गतप्रदेशमध्ये भवति रेखोपरि वा रेखाया

बहिन मैवति तदेयमुपपत्तिरुपपना भविष्यति। अथ श्नचिन्हं रेखयोरन्तः प्रदेशमध्ये ऽवश्यं भविष्यति कुतः । यदि मध्ये न भविष्यति तदा रेखायां बहिर्वा भविष्यति। तदैतादृशं क्षेत्रं स्यात्तदृर्शनम् । तत्र झदहकोणझहदकोणौ समानौ भविष्यतः। जहदकोणः बदहकोणेन समः । झचिन्हं यदि

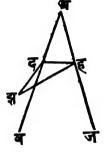


⁹ D. inserts अत्र after कोण:. २ भवेत D. K.

बद्भुजे पतित तदा दृहज्जवृहत्कोणः दृहङ्गवृहत्कोणसण्डं च इमी समानी जाती । इदमनुपपन्नम् ।

यदि झचिन्हं बद्भुजाद्वहिर्भविष्यति तदा झदहकोणः बदहको-

णान्महान् भविष्यति। दहजकोणादिप भविष्यति। यतो बदहकोणो दहजकोणश्चेमौ समौ स्तः। झदहः महान्कोणः दहझकोणेन समोऽस्ति। पुनः दहझकोणसण्डं दहजकोणान्महज्जातम्। तदि-दमनुपपन्नम्। येतः सण्डं कोणादिषकं न भवि- श्र ष्यतीति। तसात् झिचन्हं भुजयोर्भष्य एव भवि-ष्यति।।



पुनः प्रकारान्तरेण कोणस्यार्द्धकरणम् ।

तत्र द्वरेसायां झिचिन्हं कार्यम् । दझरेसातुस्यं हवं पृथकार्यम् ।

झहवदरेखे कार्ये । संपातः तसंज्ञः कल्पनीयः । अतरेखा कार्या । इयं अकोणस्य समानं भाग-द्वयं करोति ।

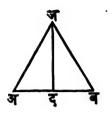
अत्रोपपत्तिः।

तैत्र पश्चमक्षेत्रकिथतोपपत्या झहदकोणः व-दहकोणश्चेतौ समानी जातौ । दतं हतं समा-नम् । दअतित्रभुजं हअतित्रभुजं समानम् । तसात् अकोणस्य भागद्वयं समानं जातम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् । तत्र यद्रेखायाः समानं भागद्वयमपेक्षितं भवति । तदा तद्रेखोपरि समत्रिभुजं कार्यम् ।

⁹ D. omits it. २ यत् सण्डं कोणाद्धिकं भविष्यतीति K. ३ D. K. omit from तत्र to 'पपत्या.

यथा अबरेखोपिर समं अबजं त्रिमुजं कृत-मस्ति । पुनस्तत्र जकोणस्य जदरेखया समानं मागद्वयं कृतं तदा जदरेखा अबरेखाया अपि समानं भागद्वयं करिष्यति ।



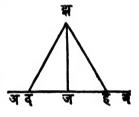
अत्रोपपत्तिः ।

अद्जित्रिमुंजे अजमुजः जद्मुजः अजद्कोणश्च द्जबित्रिमुज-स्थेन वजमुजेन जद्मुजेन वजद्कोणेन च समानः । तस्मात् अदं वदं द्वयमि समानम् । तदेवमुपपन्नं रेखायाः समानं मागद्वैयकरणम् ॥

अधैकादशं क्षेत्रम् । तत्रैकरेखायामभीष्टचिन्हाल्लम्बो निष्कासेनीयोऽस्ति ।

यथा अबरेसायां जिनन्हं दत्वा तसाहम्बो निकासनीयोऽस्ति । तद्यथा ।

अबरेसायां दिचन्हं देयम् । जदतुल्यं जहं कार्यम् । दहरेसायां समित्रमुजं दझहं कार्यम् । पुनः झजरेसा कार्या । इयमेव रूँ-



अत्रोपपत्तिः ।

म्बरूपा जाता ।

दश्रजिभुजस्य भुजत्रयं ह्झजस्य भुजैः समानमस्ति । झजद-कोणझजहकोणौ जिचन्हस्य समानौ । तस्मात् जस्य द्वौ कोणौ स-मकोणौ जातौ । झजरेखा लम्बो जातः । तदेवमुपपन्नं चिन्हालम्ब-करणम् ॥

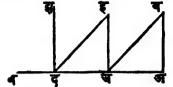
अथ प्रकारान्तरेण ।

तत्र अबरेखायां अचिन्हालम्बकरणं चिकीर्षितमस्ति । तत्र अब-

१ ° इयम् D. २ ° श $^\circ$ K. ३ निष्कासितोऽस्ति D. निष्काशितोऽस्ति. K. ४ सम्बः D. K. ५ पुनः D. ६ A. B. add तदानयनं निरूप्यते । K. adds तदानयनं.

रेखायां जिन्हं कार्यम्। पुनः जअसमानं जदं कार्यम्। जिन-

न्हात् जहरुम्बेः कार्यः । दिबन्हात् दश्गरुम्बेः कार्यः । अजहकोणस्य जबरेखया खण्डद्वयं समानं कार्यम् । पुर्नेः जदशकोणस्य दहरेखया च



खण्डद्वयं समानं कार्यम् । तेदा जहरेखादहरेखयोयोगे हचिन्हं जातम् । पुनः दहरेखातुल्या जयरेखाँ पृथक् कार्या । पुनः अवरेखाः च कार्या । इयं लम्बरूपा जाता ।

अत्रोपपत्तिः ।

अजवित्रभुजे अजभुजः जवभुजः अजवकोणश्च जदहित्रभुजे जदमुजेन दहभुजेन जदहकोणेन समानः । वअजकोणश्च हजद-कोणेन समानो जातः । पुनैः हजदः समकोणोऽस्ति । वअजको-णोऽपि समकोणः । ततः अवरेसा लम्बो जातः । अयमेवाऽमीष्टः ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

तत्राभीष्टचिन्हात् अभीष्टरेखायां लम्बंनिष्कासनं कर्त-ध्यमस्ति।

यथा जिन्हात् अबरेखायां लम्बो निष्कौसितोऽस्ति । तद्यथा ।

अबरेखाद्वितीयदिशि दिचिन्हं का-र्यम् । जं केन्द्रं कृत्वा जदव्यासार्द्धेन इद्शं वृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तं अबरे-खायां ह्झचिन्हे संपातं करिष्यति । पुनः ह्झरेखायाः वचिन्हे समानं खण्ड-

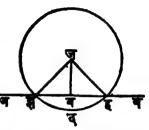


द्वयं कार्यम् । पुनः जवरेखा कार्या । अयमेव लम्बः ।

⁹ D. omits it. २ A. B. add व. ३ A. B. add व. ४ D. omits it. ५ एवं जहरेका दहरेक्योगेंगः हविहे जातः । A. B. ६ A. B. insert जविदात्. ७ D. omits it. ৫ B. has इदमेवाभीष्टम् ॥ ९ शक्लम् K. १० लम्बः कर्त्तव्योऽस्ति A. B. ११ ०क्षि K. १२ इवं K.

अत्रोपपत्तिः ।

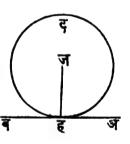
जहरेला जझरेला कार्या। जहव-त्रिमुजे जझवित्रमुजे जहं जझं समानम्। उमयं चे वृत्तस्य व्यासार्द्धतुल्यमस्ति। हवं वझं उमयं समानं पूर्वकृतमस्ति। जवं-उमयोक्षिमुजयोर्भजोऽस्ति। तसात हजव-



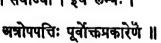
स्य त्रयो मुजाः जझवस्य मुजत्रयेण समाना जातौः । हवजकोणो जवझकोणेन समानो जातैः । वस्य कोणद्वयं समकोणं जातम् । जवं च लम्बो जातः । हॅदमेवाभीष्टमस्माकम् ॥

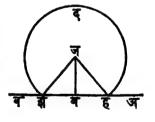
पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबरेखायां इचिन्हं कार्यम् । इजरेखा संयोज्या । पुनः जं केन्द्रं कृत्वा जहव्यासा-द्वेन वृत्तं कार्यम् । तत् इद्संग्नं भवति । वृत्तस्याद्यन्तौ इचिन्हे भवतः । तदा जह-रेखा लम्बो जातः । एतस्योपपत्ति तृतीयाध्याये व वक्ष्यामः ॥



हचिन्हे यदि वृत्तस्थान्तो न भवति किं च झचिन्हे भवति तदा हझरेसायां वचिन्हे सण्डद्वयं समानं कार्यम् । जव-रेसा संयोज्या । इयं लम्बः ।



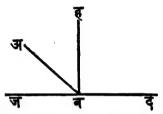


⁹ D omits च. ২ omitted in D. ২ omitted in D. ४ इद-मेनस्थाकमिष्टम्। ५ K. adds द्वादशक्षेत्रे देया।

अय त्रयोदशं क्षेत्रम् ।

तत्रैकरेखोपरि अन्यरेखायोगः कार्यः तत्र रेखोभयदिशि जातं यत् कोणद्वयं तत् समकोणद्वयं भवति अथवा कोणद्व-ययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति ।

अथ अबरेखायां जदरेखाया योगः कृतस्तेन अबजकोणः अबदकोणश्च इमौ समुत्पन्नौ ।



अबरेसा यदि लम्बस्तदा द्वौ समकोणो जातो। यदा अबरेसा लम्बो न भवित तदा बिचन्हात् बहुलम्बः कार्यः। तदा कोणत्रयं भ-वित अबजं एकः अबहं द्वितीयः हबदं तृतीयः। अर्थं द्वितीयकोणः प्रथमकोणेन युक्तः कृतश्चेत् तदा हबजः हबदश्चेतौ द्वौ समकोणो भविष्यतः। अर्थे द्वितीयकोणे तृतीयकोणश्चेद्योज्यते तदा अबज अब-दकोणो यथास्थितौ भवतः। तस्मादेतत्समकोणद्वययोगः समकोणद्वय-त्वस्यो जातः। इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं दिग्द्वयतः समागतं तदन्यरेखाचिन्हे यदि योगं करोति तत्र तद्रेखाद्वययोगात्समकोणद्वयं भवति वा कोणद्वययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति तदा निष्कांसितरे-खाद्वययोगात् सरलैकरेखा भवति ।

Digitized by Google

⁹ omitted in D. २ A and B. omit द्वितीयकोणे. ३ ०क्षि K. ४ K. and B. add रेखाद्वयमन्यरेखया विन्हे योगं करोति यथा रेखान्ता- मामेकत्र योगो भवति तत्रोत्पन्नं कोणद्वयं द्वी कोणी समकोणी अथवा द्वयोगोंगः समकोणद्वयसमानः रेखात्रयाणां मध्ये मिलितं रेखाद्वयमेका सरस्र रेखा भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

जबबदरेले अबरेलायां बचिन्हे मिलिते जाते । जबअकोणः

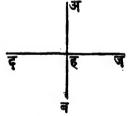
दबअकोणः एतौ समकोणद्वयसमानौ जाँतौ।
तदा जबदरेखा सरला एका रेखा जाता।
यदि सरला न भवति तदौ जबहरेखा
सरला रेखा भवति। तत्रै जबअः इबअः इर्पे

जांती । तदा जबअकोणः दबअकोणः एताविष कोणौ द्वयोः सम-कोणयोस्तुल्यौ भवतः । पुनस्तयोजीबअकोणश्चेच्छोध्यते तदा हबअ रुषुकोणः दबअबृहत्कोणश्चेतौ समानौ स्याताम् । एतदनुपपन्नम् । यतस्तौ प्रत्यक्षं रुषुमहान्तौ । तस्माद्रपपन्नं जबदरेसा सरलास्तीति ॥

अथ पञ्चदशं क्षेत्रम् ।

तत्र रेखाद्वयसंपातादुत्पन्नं कोणचतुष्टयं तेषु परस्परसन्मुखं कोणद्वयं समानं भवति ।

यथा अबरेसाजदरेसाभ्यां हचिन्हे सं-पातः कृतः। तत्र जहबकोणअहदकोणौ पर-स्परसन्मुस्तो समानौ स्तः। कृतः। बहजकोण- द् जहअकोणयोयोंगः समकोणद्वयतुस्योऽस्ति। पुनर्जहअकोणअहदकोणयोयोंगोऽपि समको-



णद्वयसमानोऽस्ति । जहअकोणश्चोमयोः कोणयोर्मिलितोस्ति स दूँरी-कियते चेत्तदा बहुजकोणअहदकोणाविष शेषौ समानौ स्तः । तदा रेखाद्वयसंपातात् उत्पन्नं कोणचतुष्टयं चतुर्भिः समकोणैः समानं जातम्। इदमेवास्माकिमष्टम्।

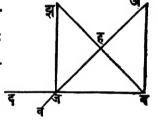
⁹ omitted in D. २ omitted in D. ३ omitted in D. ४ omitted in D. ५ D omits इति. ६ दूरीकृता तदा D. K.

अथ च यसिश्चिन्हे यावत्यो रेखा मिलितास्तत्रोत्पना ये को नास्ते चतुर्मिः समकोणैः समाना भवन्ति ॥

अथ षोडशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजस्यैको भुजः स्वमार्गवृद्धः कार्यः ततस्त्रिभुजा-द्वहिरुत्पन्नकोणः त्रिभुजान्तर्गतस्वपार्श्वस्थितान्यकोणाभ्यां प्रत्येकादिधकोऽस्ति ।

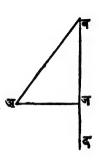
यथा अबजित्रमुजे बजमुजः द्प-र्यन्तं नीतः । तत्र त्रिमुजाद्वहिरूत्पनः अजदकोणः त्रिमुजान्तर्गतअकोणात् ब-कोणाच प्रत्येकादिषकोऽस्ति ।



अत्रोपपत्तिः ।

तत्र अजभुजस्य हचिन्हे सण्डद्वयं समानं कार्यम्। बहरेसा च कार्या। बहरेसा विद्धता बहसमाना झपर्यन्तं नेया। जझरेसा च कार्या। तदा अबहित्रभुजं जातम्। एवं हजझित्रभुजं जातम्। तत्र बहभुजः हझभुजेन समानः। अहभुजश्च हजभुजेन समानः। बहअकोणः झहजकोणेन समानः। तस्मात् बअहकोणः हजझकोणेन समानो जातः। तदा अजदबिहर्गतकोणः अजझकोणादिषकोऽस्ति। अकोणादप्यिकः। पुनः अजभुजः विचन्हपर्यन्तं नेयः। तदा बजवकोणः बकोणादिषकः। बजवकोणश्च अजदकोणश्चेतौ समानौ जातौ। अजदकोणोऽपि बकोणादिषको जातः। इदमेवास्माकमभीष्टम्।

अनेन इदमपि ज्ञातमेकचिन्हादुत्पन्नं रेखाद्वयं तृतीयरेखया यदि योगं करोति तदा तत्रोत्पन्नेकदिकोणद्वयं कदापि समानं न भवति । दिगन्न चिन्होत्पन्नरेखातो प्राधा । यथा अचिन्हात् अवरेला अजरेला च नि-सता बदरेलायां बजचिन्हे मिलिता । तदा अ-बजकोणअजदकोणो चैकदिश्युत्पन्नो समानी न भवतः । यतो रेलान्नययोगेन अबजन्तिभुजं जातम् । अजदकोणः त्रिभुजाद्वेहिःस्थः अब-जकोणादिषकोऽस्ति । इदं पूर्वेक्षेत्रे प्रतिपा-दितमस्ति । तस्मौदुक्तमेवोपपन्नम् ।



अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजस्य कोणद्वययोगः समकोणद्वययोगादल्पो भ-षति ।

यथा अवजित्रमुजे वजकोणौ सम-कोणद्वयाच्यूनौ स्तः।

कुतः ।

बजमुजः दपर्यन्तं नेयः । अजद-कोणअजबकोणयोयोंगः समकोणद्वय-समानोऽस्ति । अजदकोणस्तु बको- **4 3 2**

णादिवर्कः । पुनर्वकोण अजबकोणयोर्योगः समकोणद्वयाच्यूनोऽस्ति । एवमन्यकोणेष्वपि ज्ञेयम् । तदेवमुपपत्नं यथोक्तम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजे बृहद्भुजसन्मुखः कोणः लघुभुजसन्मुखकोणा-न्महान् भवति ।

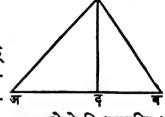
⁹ दृहिस्थं क्षेत्रं K. २ पूर्वे च प्रतिपादितमस्ति K. ३ इदमेवास्माकम-भीष्टम् ॥ D. ४ After this A adds वोडशे उक्तम् । ५ अनेन प्रकारेण D. K. ६ omitted in D.

यथा अबजित्रमुजे अबभुजः अजभुजान्महानस्ति । तस्माजाकोणः

बकोणादिधको भविष्यति।

कृतः।

यदि अबभुजे अजतल्यं अदं पृथक कियते जदरेखा च कियते तदा अदज-कोणअजदकोणी समानी भवतः। अ- ज

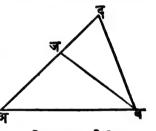


दजकोणस्तु अवजकोणान्महानस्ति । अजदकोणोऽपि महानस्ति । पुनः अजबकोणोऽपि अजदकोणाद्धिकोऽस्ति। तस्मात् अजबकोणः अबजकोणादतिमहान् जातः। तदेवमुपपन्नम्।

पुनः प्रकारोन्तरम् ।

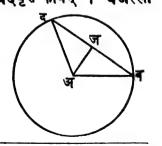
अजरेला दपर्यन्तं नेया। अबतुल्यं अदं च कार्यम्। दबरेला

च कार्य। तत्र अबदकोण अदबकोणौ समानौ स्तः। अबद्कोणस्तु अबजको-णान्महानस्ति । अद्बकोणोऽपि अब-जकोणान्महानस्ति । पुनः अजबकोणः अदबकोणादिधकोऽस्ति । तस्मात् अ- ज



जबकोणः अबजकोणादतीव महान् जातः । तदेवमुपपन्नं यैथोक्तम् ॥ पुनः प्रकारौन्तरम् ।

अं केन्द्रं कृत्वा अबव्यासार्द्धेन बदवृत्तं कार्यम् । बजरेला वृत्तलमा दपर्यन्तं नेया । अदरेखा च कार्या । अबदत्रिभुने बकोण-दकोणौ समानौ स्तः। अजबकीणश्च अद्बकोणाद्धिकः । अबद्कोणाद्प्य-धिकोभविष्यति । इद्मेवेष्टमस्माकम् ॥

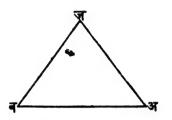


९ °रेण D. K. २ D. omits it. ३ "न्तरेण D. ४ अजबकोणो महानस्ति अद्बक्तोणात् अबद्कोणाद्प्यधिकः K. D.

अर्थेकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजे योऽधिककोणस्तत्सन्मुखभुजोऽपि महान् भ-वति योऽल्पकोणस्तत्सन्मुखभुजोऽपि लघुर्भवति ।

यथा अबजित्रभुजे जकोणः ब-कोणान्महानस्ति । तस्मात् अबभु-जोऽपि अजभुजान्महान् भविष्यति । कुतः ।



यदि अबभुजः अजभुजान्महान्

न भवति तदा तत्समो वा तक्यूनो वा भविष्यति।यदि समस्तदा बज-कोणौ समानौ भविष्यतः । जकोणस्तु बकोणादिषकोऽस्ति । पुनः अबभुजः अजभुजात् यद्यल्पोऽस्ति तदा बकोणः जकोणादिषकः स्यात् । जकोणस्तु बकोणादिषकः कल्पितोऽस्ति । तस्मात् अबभुजः अजभुजादिषको भविष्यतीत्येतदेवेष्टम् ।

अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

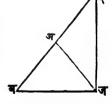
तत्र त्रिभुजस्य भुजद्वययोगः तृतीयभुजादिधकोऽस्तीति निरूप्यते ।

यथा अवजित्रभुजे अवअजयोगः वजादिघकोऽस्ति । अत्रोपपत्तिः।

बअमुजः दपर्यन्तं वर्द्धनीयः। अदः अजसमानः कार्यः। दज-रेसा च कार्या। तत्र बजदकोणः अजदकोणा- ∕ाद

दिषकोऽस्ति । अजदकोणश्च अदजकोणेन तु-ल्योऽस्ति । बजदकोणोऽपि बदजकोणादिध-कोऽस्ति । तसात् बद्युजः बजयुजादिषको

जातः ॥



⁹ D. K. have कुतः for अत्रोपपत्तिः।

पुनः प्रकारान्तरेण प्रदर्शते ।

तत्र अकोणस्य अदरेखया समानं खण्डद्वयं कार्यम्। तदा अदज-

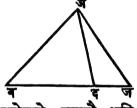
कोणः दअवकोणादिषकोऽस्ति । दअव-कोणश्च दअजकोणेन तुल्योऽस्ति । त-स्मात् अदजकोणः जअदकोणान्महा-ज्ञातः । तदा अजभुजः जदभुजान्म- व ह ज हान् भविष्यति । पुनः अदबकोणः दअजकोणादिषकोऽस्ति । द-अजकोणश्च दअवकोणेन तुल्योऽस्ति । तदा अवभुजः बदभुजा-न्महाञ्जातः । तसादिषकयोर्द्वयोर्योगस्तृतीयादिषको जातः । इदमेव-

पुनैः प्रकारान्तरम् ।

मसाकमभीष्टम् ॥

तत्र अवअजयोगः बजादिषको यदि न भवति तदा तत्तुल्यो भ-

विष्यति वा न्यूनो भविष्यति। पुनः बदं बअ-तुल्यं पृथक् कार्यम् । अदरेखा संयोज्या। तदा जदरेखातुल्यं शेषं जअतुल्यं भविष्यति अथवाधिकं भविष्यति । यदि तुल्यं भविष्यति



तदा जअदकोणबअदकोणो जदअबदअकोणयोः समानो मिव-ष्यतः । पुनः जदअबदअकोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ स्तः । तदा जअदकोणबअदकोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ भविष्यतः । इदमनुपपन्नम् । त्रिभुजस्यैककोणो समकोणद्वयतुल्यो न भवति ॥

यदि जदरेला जअरेलायाः अधिका तदा जअदकोणः जदअ-कोणादिषकः स्यात् । तिई जअबकोणः बदअकोणजदअकोणयो-योंगादिषकः स्यात् । एतौ द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ । बअजकोणः समकोणद्वयादिषको जातः । इदमेनुपपन्नम् ।

⁹ D. omits this sentence. २ पुनः प्रकारान्तरेण विश्वतितमं क्षेत्रम् । तृतीयप्रकारेणाह ॥ D. पुनः प्रकारान्तरेण विश्वतितमं क्षेत्रं तृतीयं चाह । K. ३ D. omits from इद° to भवति. K. omits from त्रिभु° to भवति. ४ B. inserts मिलिता after कोणो. ५ इदं वाधितम् ॥ D. K.

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजैकभुजोभयप्रान्तात् निःसृते रेखे त्रिभुजान्त-मिलिते तद्भुजयोयीगः त्रिभुजशेषभुजयोगाक्यूनोऽस्ति अथ चान्तर्गतभुजरेखायोगोत्पन्नकोणः त्रिभुजशेषभुजद्भययोग-कोणादिधकोऽस्ति ॥

यथा अबजित्रमुजे बजमुजोभयपान्तानिः सते बदजदरेले दिन-

न्हे मिलिते स्तः । बद्जद्योगो बअजअ-योगान्यूनोऽस्ति । पुनर्बद्जकोणो बअज-कोणादिषकोऽस्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

तत्र बदरेसा हपर्यन्तं नेया । बअ- ब ब्रिंग्जयोगो बहादिषकोऽस्ति । पुनर्हजरेसा बअअहरेसायां युक्ता कार्या । हजं बहेऽपि युक्तं कार्यम् । तदा बअअजयोगो बहु- हजयोगादिषको जातः । पुनरिप दहहजयोगो दजरेसाया अधि- कोऽस्ति । पुनर्बदं दहहजे युक्तं कार्यम् । दजेऽपि युक्तं कार्यम् । तिर्हि बहहजयोगो बददजयोगादिषको भविष्यति । तस्मात् बअअजयोगो बहहजयोगादिषकोऽस्ति । तसात् बअअजयोगो बहहजयोगादिषकोऽस्ति । पुनर्बदजकोणो दहजकोणादिषकोऽस्ति । दहजकोणोऽपि बअजकोणादिषकः । तसात् बदजकोणो बअजकोणाद्यन्तमिको जातः । इदमेवासाकमभीष्टम् ॥

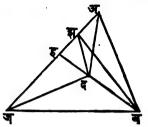
पुनर्द्वितीयप्रकारेणोच्यते ।

तत्र बददजयोगो बअअजयोगाद्यदि न्यूनो न भवति तदा स-मानोऽथवाधिकः स्यात् । तत्र बददजरेखयोरन्यतरेका रेखा बअ-अजरेखयोरन्यतरेकरेखाया अल्पास्ति वा न वा । यद्यल्पास्ति तदा जदं जअरेखाया अल्पमस्तीति कल्पनीयम् ।

⁹ मविष्यति A. B. २ पुनरेकविंशतितमं क्षेत्रं. D.

बद्बअरेखयोरन्तरतुल्या अझरेखा भिना कार्या । तदा झचिइं

हिचिहे न पतिष्यति । यदि पतिष्यति तदा वअअहयोगो बदसमानः स्यात् । बअअहयोगो तदा बहरेखातः न्यूनो भविष्यति इति बाधितम् । यतो भुजद्व-ययोगस्तृतीयभुजादिधकोऽस्ति । पुन- क



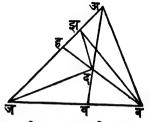
श्रीचिहं हजरेसायामपि न पतिष्यति । यदि पतिष्यति तदा बआअह-योगो बहरेसातः अत्यल्पः स्यात् । इदं बाधितम् । तिर्हं झचिहं अह-रेसायां भविष्यति । पुनर्श्नदरेसा कार्या । श्रबरेसा च कार्या । बदरेसा बआअझरेसायोगतुल्या बझादिधकास्ति । तदा बझदकोणः बदझ-कोणादिधको जातः । बदं बआअझयोगेन तुल्यं स्थितं तिर्हं जदं ज-झेन तुल्यमिषकं वा स्थास्यति । तस्मात् जझदकोणः जदझकोणेन तुल्यो वाधिकः स्यात् । यदि जदं जझेन तुल्यं स्यात् जझदकोणश्च जदझकोणेन तुल्यः स्यात् । यदि जदं जझादिधकं स्यात् तदा जझदकोणो जदझकोणादिधको भविष्यति । तदनन्तरं बझजकोणो बदझकोणजदझकोणयोगान्महान्स्यात् । इदं बाधितम् । यतो बदझकोणजदझकोणयोगींगः समकोणद्वयादिधकोऽस्ति । ततो बझजकोणोऽपि समकोणद्वययोगादिधको जातः । इदं बाधितम् । त्रिमुजैककोणस्य समकोणद्वययोगादत्यल्यत्वात् ।

पुँनः जद्भुजः जअभुजादल्पो न भिवष्यति बदरेसा बअरेसायाश्च अल्पा न भिवष्यति चेत् तदा समाना वा अधिका भिवष्यति । तत्र अदरेसा कार्या । यथा पूर्वमुपपत्त्या साधितं तथात्रापि साध्यते । तद्यथा। बअजकोणः बद्धजद्भकोणयोर्योगेन समानः अथवाऽधिकः स्यात् । पक्षद्वयेऽपि ईदमनुपपन्नम् । यतः बद्धजद्भकोणयोर्योगः

९ यदा A. B. २ इदं बाधितम् । K.

समकोणद्वयादिधको ऽस्ति । बञ्जजकोणस्तु त्रिभुजस्यैककोणोऽस्ति ।

अयं समकोणद्वयादिषको जात इति बाधितम् । त्रिमुजे कोणद्वययोगः सम-कोणद्वयाच्यून एव भवतीति नियमो-ऽस्ति । तस्मात् बद्दजरेखायोगो बआअजरेखायोगाच्यूनोऽस्ति ।



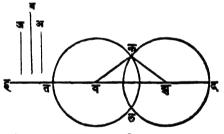
अय अदरेखा वपर्यन्तं नेया । तत्र बदवकोणः बअदकोणादिध-कोऽस्ति । जदवकोणश्च जअदकोणादिधकोऽस्ति । तसात् बदज-कोणः बअजकोणादिधकः सिद्धः । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रैकं त्रिभुजं कर्जुमपेक्षास्ति तत्र त्रयो भुजास्तथा कल्प-नीयाः यथा भुजद्वययोगस्तृतीयभुजादधिको भवति ।

ते च त्रयो भुजाः अ-बज्जसंजाः जेयाः ।

तत्र प्रथमं दहरेला कार्या । दहरेलायां दझ-



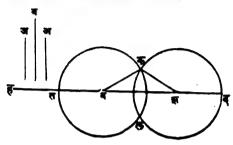
रेखा अरेखातुत्या पृथक् कार्या । झवरेखा च बरेखातुत्या पृथक् कार्या । वतरेखा जरेखातुत्या पृथक् कार्या । पुनझकेन्द्रं कृत्वा झद-व्यासार्द्धेन दकलवृत्तं कार्यम् । वकेन्द्रं कृत्वा वतव्यासार्द्धेन तकल-वृत्तं कार्यम् । तदा वृत्तद्वयसंपातः कचिन्हे भवति । पुनः कझ कवरेखा च कार्या । तत्र कझवत्रिभुजमस्माकमभीष्टं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

कझभुजः झदतुल्योऽस्ति । झदं अतुल्यमस्ति । कझं अतुल्यं

१ कर्त्तव्यमित्यपेक्षास्ति D. K.

जातम् । **झव**भुजश्च बतुल्योऽस्त्येव । पुनर्वकभुजः वततुल्योऽस्ति । वतं जतुल्यमस्ति तस्मात् वकं जतुल्यं जातम् ।



अथासाभिर्यदुक्तं तिस्रो रेखास्तादृशा अपेक्षिताः यासु रेखाद्वय-योगस्तृतीयरेखाया अधिको भवतीति किमर्थमुक्तमिति चेत्तत्र पूर्वोक्तोप-पत्त्या रेलाद्वययोगस्तृतीयरेलाया अधिकोऽस्तीति प्रतिपादितमेव । अत एव वृत्तद्वयसंपातो भवति । कुतः । अरेखाबरेखायोगः जरेखाया य-द्यधिको न भवति तदा वतरेखा वदरेखातुल्या भविष्यति अथवा-थिका भविष्यति । तस्मात् **कत्**लवृत्तं **कद**लवृत्तं स्वान्तःपाति करि-ष्यति। अथ दिचिन्हे तदा संलग्नं भविष्यति यदा वतं वदसमानं स्यात्। तदा दिचिन्हात् परतो भविष्यति यदा वर्तं वदादिधकं स्यात् । पुनः संपातो न भवति । यदि बरेखाजरेखायोगः अरेखातोऽधिको न स्या-त्तदा कदलवृत्तं कतलवृत्तं स्वान्तर्गतं करिष्यति । कुतः । दश्ररेसा **झत**समाना चेत्तदा दकलवृत्तं तचिन्हे लगिष्यति । यदि द्र**झं झता**त् अधिकं स्यात् तदा दकलवृत्तं तिचिन्हात् परतो भविष्यति । वृत्तद्वयसं-पातस्तदापि न भविष्यति । पुनः अरेखाजरेखायोगः बरेखाया अधिको न भविष्यति तर्हि झवरेखा वतरेखाझदरेखायोगतुल्याधिका स्यात् । तदापि संपातो न भविष्यति । एवं तदैकं वृत्तं अन्यद्वत्तं स्वान्तर्गतं न करिष्यति किं तु वृत्तद्वयं भिन्नं भिन्नं स्थास्यति यद्य-धिकस्तदेति ॥

Digitized by Google

⁹ K. adds द्वाविशतितमं क्षेत्रम् after इति.

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्र अभीष्टरेखाया अभीष्टचिद्गोपरि कल्पितकोणतुल्यः कोणः कर्तव्योऽस्ति ।

तैत्करणप्रकारो यथा।

अबरेखोपरि अचिह्ने जकोणतुल्यः कोणः कर्तव्योऽस्ति । तत्र

प्रथमं जकोणस्य मुजद्रयोपिर दह-चिद्द्रदं कार्यम् । दहरेला कार्या । अबरेलोपिर अवझित्रमुजं जदहित-मुजतुल्यं कार्यम् । तत्र अवरेला जहतुल्या अझरेला जदतुल्या वझरेला दहतुल्या च कार्या । तत्र अकोणो



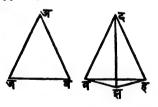
दृहतुल्या च कार्या। तत्र अकोणो जकोणतुल्यो जातः। इदमे-वास्माकमभीष्टम् ।

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

तत्राभीष्टत्रिभुजस्य भुजद्वयं अन्यत्रिभुजभुजद्वयसमान-मस्ति तत्र प्रथमत्रिभुजस्य भुजद्वयसंबन्धिकोणो द्वितीयत्रिभु-जभुजद्वयजनितान्तर्गतकोणादिधकश्चेदस्ति तदा प्रथमस्य तृ-तीयभुजः द्वितीयस्य तृतीयभुजान्नियमेन अधिकः स्यात् ।

यश एकं अबजित्रमुजं द्वितीयं दह्रमत्रिमुजं चास्ति । तत्र अब-

मुजो दह्म जतुल्योऽस्ति अजभुजश्च दश्म मुजतुल्यः। तत्र अकोणो दको-षादिषकोऽस्ति। तदा बजमुजो हश्नै-मुजादिषकः स्यादेवेत्यत्र कि चित्रम्।



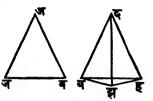
अत्रोपपत्तिः ।

दहरेसाया दिचेहे हदवकोणो बअजतुल्यः कर्तव्यः। तत्र दव-

⁹ omitted in D. २ भवति K. ३ अधिको जातः तदा A. B.

रेसा अजरेसातुत्या कर्त्तव्या । हबरेसा च कार्या । अथ हबरेसा

वजरेसातुत्यास्ति । पुनर्वझरेसा कार्या । तदा दवझित्रमुजे दवभुजो दझभुजश्चेमौ समानौ । दवझकोणो दझवकोण एतौ समानौ स्तः ।

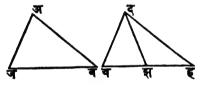


पुनईझवकोणो दझवकोणादिषकोऽस्ति । हवझकोणश्च दवझ-कोणादल्पः । एवं इझवकोणो हवझकोणादिषकोऽस्ति । हवसु-जोऽपि इझसुजादिषको जातः । पुनईवसुजो बजसुजतुल्योऽस्ति । तसात् बजसुजो हझसुजादिषको जात इति सिद्धम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् । २४

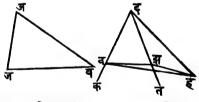
एवं पूर्वीक्तप्रकारेणोपरिस्था इवरेखा न चेत्तदा इवरेखा दश्लरे-

स्तायां संपातं करिष्यति वा हृझरेस्तायां पतिष्यति वा हृझ-रेस्ताया अघः पतिष्यतीति प-कारत्रयेण तस्याः संस्था जाता।



प्रथमप्रकारस्तु पूर्वे कथितः । द्वितीयप्रकारे तु हझरेला हवरेलायाः स्वण्डं भविष्यति । तदा हवरेला हझरेलायाः अधिका जाता ।

तृतीयप्रकारे तु तकपर्यन्तं द-झदवरेले कार्ये । झवरेला च कार्या । तदा तझवको-णकवझकोणो तुल्यो भवि-



ष्यतः । एवं हझवकोणः तझवकोणादिषकः । हवझकोणस्तु कवझकोणान्यूनः । तदा हवभुजः हझभुजादिषकः स्यात् ॥

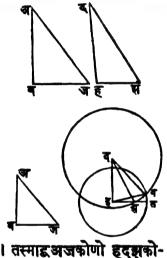
१ ॰रेण चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् । D. K.

अय पश्चविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रैकस्य त्रिभुजस्य भुजद्वयं द्वितीयत्रिभुजस्य भुजद्वयेन समानं प्रथमस्य तृतीयभुजश्च द्वितीयस्य तृतीयत्रिभुजादधि-कस्तदा प्रथमत्रिभुजस्य समानभुजद्वयोत्पन्नकोणो द्वितीयत्रि-भुजस्य भुजद्वयान्तर्गतकोणादधिकः स्यात्।

यथा एकं अवजित्रभुजं द्वितीयं दहझत्रिभुजं तत्र अवभुजो दह-

मुजेन तुल्यः । अजमुजो दझमुजेन तुल्यः। बजमुजोऽपि हझमुजादिषकः। तदा बअजकोणो हदझकोणादिषकः स्यात् । यदि अधिको न स्यात् तदा तुल्यो भविष्यति वा न्यूनो भविष्य-ति । यदि तुल्यस्तदा बजमुजो हझ-मुजतुल्यः स्यात् । इदं वाधितम् । अश्व च यदि न्यूनस्तदा बजमुजो हझाक्यूनः स्यात् । इदमेपि वाधितम् ।



यतो बजभुजो हझ्भुजादिषकोऽस्ति । तस्माद्धअजकोणो हदझको-णादिषको जात इति सिद्धम् ॥

युनः प्रकारान्तरम् ।

दं केन्द्रं कृत्वा दझ्य्यासार्द्धेन झववृत्तं कार्यम् । हझं तपर्यन्तं नेयम् । हतं बजतुल्यं कार्यम् । पुनः हं केन्द्रं कृत्वा हतव्यासार्द्धेन तववृत्तं कार्यम् । वृत्तद्वयसंपातो विचन्हे भैवति । दवरेसा हवरेसा च कार्या । तदा हद्वित्रभुजस्य त्रयो भुजाः बआजित्रभुजस्य भुजत्रयेण समाना जाताः । हद्वकोणश्च हदझकोणादिधिक इति सिद्धम् ।

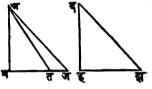
९ इदमनुपपन्नम् । A, B, २ इदमप्यनुपपन्नम् । A, B, ३ प्रकारान्तरेण । D, प्रकारान्तरमाह । K, \forall K, omits भवति.

अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्र एकस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयमेको भुजश्चान्यस्य त्रिभु-जस्य कोणद्वयेनैकमुजेन च समानश्चेच्छेषौ मुंजी शेषकोणश्च तुल्यावेव भविष्यतः क्षेत्रं क्षेत्रसमानं च भविष्यति।

यथा अवजत्रिभुजे दहझत्रिभुजे च अकोणो दकोणतुत्यः। बको-

णश्च हकोणतुल्यः। अवभुजदहभुजौ च तुल्यो कल्पितौ । अथवा बजभुज-हझ्मुजी च तुल्यी कल्पितौ। अथवा अजभुजद्रमुजो च तुल्यौ कल्पितौ । यदि अवमुजदहमुजौ तुत्यौ कल्पितौ तत्र बजभुजहझभुजौ यदा



समानौ स्तरतदास्माकमभीष्टमेव स्यात् । यदि तुत्यौ न भवतस्तदे-

दमनुपपन्नम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बतं इझतुत्यं कार्यम् । तअरेखा च कार्यो । एवं अतबत्रि-भुजं दझहत्रिभुजं च तुत्ये भवतः। पुनः तअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ भविष्यतः। पुनर्जअवकोणझदहकोणौ तुल्यौ स्थितावेवं।तस्मात् जअबकोणतअबकोणौ तुल्यौ स्याताम् । इदं बाँधितम् । कुतः । एककोणस्य द्वितीयकोणखण्डत्वात् ॥

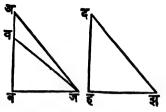
अथ बजहझभुजो यदि तुल्यो भवतस्तदा बअभुजहृद्भुजो तुल्यो भवतः वा अतुल्यौ स्तः । तत्र यदि तुल्यौ तदास्माकमभीष्टमेव सिद्धम्।

यद्यतत्यौ तत्रेदं द्षणम् ।

^{9 °}भुजकोणी A. B. २ सिद्धम् । A. B. ३ °स्तत्रेदं दूषणम् । कृतः D. K. तदेवमुपपन्नम् । B. ४ A. B. omit the portion from पुनः to स्थितावेव. ५ इदमतुपपन्नम्. A. B.

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बवं दहतुस्यं कार्यम् । ज-वरेला च कार्या। एवं तत्र जवबत्रि-मुजं झदहत्रिमुजं चैते तुल्ये स्या-ताम् । जवबकोणझदहकोणाविष



तुल्यौ स्याताम् । पुनर्जअबकोणस्तु **झदहको**णतुल्यः स्थितः । तसा-ज्जवबकोणजअवकोणौ तुल्यौ भविष्यतः । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र यदि अबरेला दहरेलोपरि कियते तदा अजमुजो दझमु-

जोपरि स्थास्यति बजमुजश्च ह्झमु-जोपरि स्थास्यति । यतः अकोणो दकोणतुल्यः कल्पितः बकोणश्च हकोणतुल्यः अबं दहतुल्यं च कल्पि-तमेवास्ति । एवं तत्र जकोणो झकोणे



तमेवास्ति। एवं तत्र जकोणो झकोणे स्थास्यति। त्रिमुजं च त्रिमुजोपरि स्थास्यति।

पुनर्यदि बजमुजो झहमुजतुल्यः कल्प्यः बकोणो हकोणोपिर स्थाप्यः अबरेला हदरेलायां स्थाप्या तदा जिन्हं झिनिहे पितिष्यति । तदा दकोणः अकोणोपिर स्थास्यति । यदि न स्थास्यति तदाऽन्यिसिश्चिहे पितष्यति । यथा बनिहे पिततस्तदा जवबकोणो जअबकोणतुल्यो मिष्यति । इदमनुपपनम् । तसात् बकोणो हकोणे अकोणो दकोणे च स्थास्यति । तदा द्वौ त्रिमुजौ समानौ जातौ । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयोरन्यरेखायां संपातः कृतः तत्रैककोणो द्वितीयदिक्संबन्धिकोणश्चेतौ तुल्यौ यदि भवतः तदा रेखा-द्वयं समानान्तरालकं भवति ।

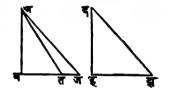
⁹ B. inserts एवं अजद्शयोस्तुस्यत्वकल्पनेऽपि सिध्यति after इदम-

अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र एकस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयमेको भुजश्चान्यस्य त्रिभु-जस्य कोणद्वयेनैकभुजेन च समानश्चेच्छेषौ भुंजौ शेषकोणश्च तुल्यावेव भविष्यतः क्षेत्रं क्षेत्रसमानं च भविष्यति ।

यथा अवजित्रभुजे दहझत्रिभुजे च अकोणो दकोणतुल्यः। बको-

णश्च हकोणतुत्यः। अवभुजदहभुजी च तुत्यो कल्पितो। अथवा वज्रभुज-हझभुजी च तुत्यो कल्पितो। अथवा अज्ञभुजदझभुजो च तुत्यो कल्पितो। यदि अवभजहहसभ्जो तत्यो कल्पितो



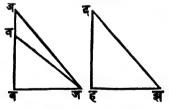
यदि अवभुजदृह्भुजौ तुत्यो कित्यतौ तन्न बज्जभुजहृझ्भुजौ यदा समानौ स्तरतदासाकमभीष्टमेव स्थात् । यदि तुत्यौ न भवतस्तदे-दमनुपपन्नम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बतं इझतुल्यं कार्यम् । तअरेखा च कार्या । एवं अतबन्नि-भुजं दझहन्निभुजं च तुल्ये भवतः । पुनः तअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ भविष्यतः। पुनर्जअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ स्थितावेवं। तस्मात् जअबकोणतअबकोणौ तुल्यौ स्याताम् । इदं बाँधितम् । कुतः । एककोणस्य द्वितीयकोणखण्डत्वात् ॥

अथ बजहझभुजौ यदि तुल्यो भवतस्तदा बअभुजहद्भुजौ तुल्यो

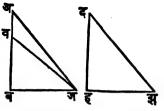
भवतः वा अतुल्यौ स्तः । तत्र यदि तुल्यौ तदास्माकमभीष्टमेव सिद्धम् । यद्यतुल्यौ तत्रेदं दूषणम् ।



९ °सुजकोणी A. B. २ लिद्धम् । A. B. ३ °लात्रेदं बूषणम् । कृतः D. K. तदेवसुपपन्नम् । B. ४ A. B. omit the portion from पुनः to स्थितावेव. ५ इदमनुपपन्नम्. A. B.

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बवं दहतुस्यं कार्यम् । ज-वरेसा च कार्या । एवं तत्र जवबन्नि-भुजं झदहत्रिभुजं चैते तुस्ये स्था-ताम् । जवबकोणझदहकोणावपि

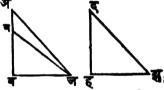


तुल्यौ स्याताम् । पुनर्जअबकोणस्तु **झदहको**णतुल्यः स्थितः । तसा-ज्जवबकोणजअवकोणौ तुल्यौ भविष्यतः । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र यदि अबरेखा दहरेस्रोपरि कियते तदा अजमुजो दशमु-

जोपरि स्थास्यति बज्रमुजश्च ह्झ्मु-जोपरि स्थास्यति । यतः अकोणो दकोणतुल्यः कल्पितः बकोणश्च हकोणतुल्यः अबं दहतुल्यं च कल्पि-त्येवास्ति । एवं तन जकोणो सकोणे



तमेवास्ति। एवं तत्र जकोणो झकोणे स्थास्यति। त्रिभुजं च त्रिभुजोपरि स्थास्यति।

पुनर्यदि बजमुजो झहमुजतुल्यः कल्प्यः बकोणो हकोणोपिर स्थाप्यः अबरेला हदरेलायां स्थाप्या तदा जिन्हं झिनिहे पितिष्यति । तदा दकोणः अकोणोपिर स्थास्यति । यदि न स्थास्यति तदाऽन्यसिश्चिहे पितष्यति । यथा विनिहे पिततस्तदा जवबकोणो जअबकोणतुल्यो मिष्यति । इदमनुपपनम् । तसात् बकोणो हकोणे अकोणो दकोणे च स्थास्यति । तदा द्वौ त्रिमुजौ समानौ जातौ । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयोरन्यरेखायां संपातः कृतः तत्रैककोणो द्वितीयदिक्संबन्धिकोणश्चेतौ तुल्यौ यदि भवतः तदा रेखा-द्वयं समानान्तरालकं भवति ।

⁹ B. inserts एवं अजव्झयोस्तुस्यत्वकल्पनेऽपि सिध्यति after इदमनुपपन्नम्

यथा अबरेखायां जदरेखायां हझरेखा संपातं करोति। तत्र अ-

हझकोणो दझहकोणेन स-मानो यदि जातस्तदा अब-रेखा जदरेखा च समाना-न्तरा भवति ।



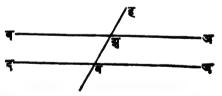
यि च रेखे समानान्तरे न भवतस्तदा उभे रेखे बर्दिते विचन्हें मिलिप्यतः । तत्र वहझत्रिमुजं भविष्यति । एवं त्रिमुजाद्वहिस्यः अहझकोणस्त्रिमुजान्तर्गतः हझवकोणश्चेतौ तुल्यौ स्याताम् । इदमनु-पपन्नम् । तस्मादेखाद्वयं समानान्तरकं भवतीति सिद्धम् ॥

अथाष्टाविशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्र रेखाद्वयेनान्या तृतीया रेखा संपातं करोति तदा बहि-र्गतकोणोऽन्तर्गतद्वितीयरेखासमीपस्थकोणसमो भवति वान्त-र्गतैकदिक्कोणद्वययोगः समकोणद्वयसमानो भवति तदा रे-खाद्वयं समानान्तरं स्यात्।

यथा अबरेखया जदरेखया च हझवरेखा संपातं करोति । तत्र हझ-

बकोणो बहिर्गतः स्रवदको-णोऽन्तर्गतश्च समानौ कल्पि-तौ । पुनर्बझवकोणझवद-कोणौ युक्तौ द्वाभ्यां समको-



णाभ्यां समानौ कल्पितौ । तदा अवरेखा जदरेखासमानान्तरा भ-विष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र ह्झबकोणः अझवकोणसमानोऽस्ति । झवदकोणस्यापि स-मानः । अझवकोणझवदकोणावपि समानौ । तदा अबरेखा जद-रेखासमानान्तरा जाता । पुनरपि बझवकोणअझवकोणयोर्योगः द्वयोः समकोणयोः समानोऽस्ति । बझवकोणझवदकोणावपि द्वयोः समकोणयोः समानौ । तस्मात् अझवकोणझवदकोणौ समानौ जातौ । अबरेखाजदरेखे च समानान्तरे जाते। इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

अस्योपपन्तिरष्टभिः क्षेत्रैज्ञीयते तत्प्रथमक्षेत्रं निरूप्यते ।

एकाऽभीष्टरेखा कार्या। तदुपर्यभीष्टं चिह्नं कार्यम्। त-स्माद्रेखापर्यन्तमभीष्टा रेखा नेयाः तासु या लम्बरेखा सा सर्व-रेखाभ्यो न्यूना भवति।

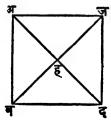
यथा अचिहं बजरेखा च कल्पिता । अचिहात् अबलम्बश्च कृतः। अयं लम्बः सर्वरेखाभ्यो न्यूनोऽस्ति। अत्रोपपत्तिः ।

अनिहात् अजरेला कार्या । तत्र अवजित्र- व जे जे अं जातम् । अवजकोणश्च समकोणो जातः । अजबकोणो न्यूनको-णोऽस्ति । अवभुजश्च अजभुजान्यूनोऽस्ति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ द्वितीयक्षेत्रम्।

तत्रैकस्यां रेखायां यदि लम्बद्धयं समानं भवति तदा तयो-मैस्तकलग्नाऽन्या रेखा कार्या। एवमत्र लम्बरेखासंपातजनितौ कोणौ परस्परं समानौ भवतः।

यथा समानौ अबलम्बजदलम्बौ बदरेखायां म् पतितौ । तन्मस्तकलमा अजरेखा कृता । तत्र कोणद्वयं समुत्पन्नम् । तत्र बआजकोणदजअ-कोणौ समानौ भविष्यतः ।



अत्रोपपत्तिः ।

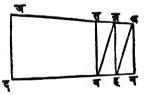
अदरेखा बजरेखा च कार्या । अनयोई चिद्दे संपातो जातः । एवं अबदित्रभुजे अबभुजः बद्भुजः अबद्को-णश्च द्वितीयत्रिभुजस्य जद्बस्य जद्भुजद्ब-भुजजद्वकोणेः समानः । अद्भुजबजभुजो च समानौ । अद्बकोणजबद्कोणाविष स-मानौ जातौ । एवं इबद्त्रिभुजे इद्द्वकोणह- व

बदकोणी समानी। तर्हि बह्भुजदह्भुजी च समानी जाती। पुनः अह्मुजजह्भुजी च समानी जाती। तस्माद् अह्जित्रिभुजे अहभुजः हज्मुजश्च समानी जाती। पुनः हअजकोणहज्जअकोणश्चेताविष समानी जाती। दअबकोणबजदकोणी पूर्व समानी स्थिती।
तस्मात् बअजकोणदजअकोणी समानी जाताविति सिद्धम्। इदमेवास्माकमभीष्टम्॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायां लम्बद्धयं समानं भवति तदा तयोर्मस्तक-लग्नान्या रेखा कार्या एवं तयोर्लम्बरेखान्यरेखासंपातजनिती कोणौ समकोणौ भविष्यतः।

यथा दबरेलायां अबरेला जदरेला च लम्बी जाती । अजरेला च कृता । तत्र बअजकोणदजअकोणी समानावुत्पन्नी समकोणी च जाती ।



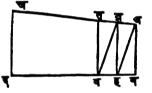
कुतः।

यदि द्वौ समकोणी न भवतः तदोभाविधककोणी अथवा न्यून-कोणौ भविष्यतः। तत्र यद्यधिककोणौ तदा अचिहात् अहलम्बः

⁹ D. and A. omit अन्यरेखा. १ तदा न्यूनाधिको भविष्यतः । D.

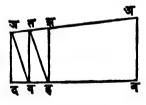
अजरेलायां नेयः। अयं लम्बः अवजदरेलयोरन्तराले पतिष्यति। तदा अहदकोणः अवहित्रभुजस्य बहिर्गतः स्यात्। अयं अवहकोण्णादिषको जातः। अवहकोण्णादिषको जातः। अवहकोण्णादिषको जातः। अवहकोण्णादिषकोणोऽस्ति। तस्मात् अहदकोणः अधिककोणो जातः। पुनर्हिचिहात् ह्झलम्बो हदरेलायां नेयः। अयं लम्बः अहजदरेलयोरन्तराले पतिष्यति। तत्र ह्झजकोणोऽप्यधिककोणो भविष्यति। पुनर्झचिहात् झवलम्बः झजरेलोपिर कार्यः व-चिहात् वतलम्बश्च वदरेलायां कार्यः। अनेनैव प्रकारेणान्ये लम्बा अपि कार्यः। अझतचिह्नेम्यो बदरेलायां निःसता एते लम्बा अब-झहतवसंज्ञका ज्ञेयाः। एते पूर्वस्मादुत्तरोत्तरमिका भवन्ति। सर्वेभ्यो

न्यूनः अबलम्बः । कुतः । यतो अबह-त्रिमुजे बकोणः समकोणोऽस्ति । हको-णश्च न्यूनकोणोऽस्ति । अबमुजश्च अह-मुजाक्यूनः । एवं अहझत्रिमुजे अः सम- र

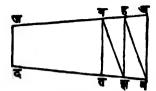


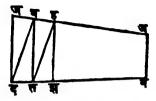
कोणोऽस्ति । झः न्यूनकोणश्चास्ति । अह्भुजो हझ्भुजान्यूनो जातः । एवं हुझ्भुजो झवभुजान्यूनो जातः। झवभुजोऽपि वत्रभुजान्यूनः। अन्वभुजः अह्भुजान्यूनोऽस्ति । अह्भुजो हझान्यूनः । पुनर्हझ्भुजो झवभुजान्यूनः। इत्थं रेखा उत्तरोत्तरमिका भवन्ति । अजरेखाया बदरेखायाः सकाशादन्तरं जदिश्यिकं भवति अदिश्यन्तरं न्यूनं भवति।

अय च दजअकोणोऽप्यधिककोणोऽस्ति।
एवं अजरेखायाः बदरेखायाः सकाशादन्तरं अदिश्यधिकं भवति। प्रथमं साधितं
अदिश्यन्तरं स्वल्पमस्तीत्यनुपपन्नम् । विस्थाणत्वात् ॥



यदि च अजकोणी न्यूनकोणी मवतः तदापि पूर्वीक्रप्रकारेण लम्बाः





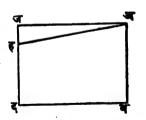
कार्याः । अजरेलायां बिचिहाल्लम्बस्यारम्भः कार्यः । एते लम्बा अब-जदरेलान्तर्गता भवन्ति । ते च अबहृझवतसंज्ञा उत्तरोत्तरं न्यूना एव भवन्ति । अजरेला जदिशि बदरेलायाः निकटे भवति अदिशि दूर-स्थिता च भवति । पुनर्दचिद्दाल्लम्बाः कार्याः । एवं पूर्वभकारेण अजरेला अदिशि बदरेलाया निकटे भवति जदिशि दूरस्थिता च भवति । एव-मेकरेला एकस्यां दिशि दूरस्थिता भवति तस्यामेव च निकटस्थिता भव-तीत्यनुपपन्नम् । विलक्षणत्वात् । तस्मादुमी अजकोणी समकोणी भवत इति सिद्धम् । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ चतुर्थक्षेत्रम् ।

तत्र समकोणस्य चतुर्भुजस्य परस्परसन्मुखं भुजद्वयं स-मानं भवति ।

यथा अबजदसमकोणचतुर्भुजे अबभुजजदभुजौ तुल्यौ स्तः।

यदि च समी न स्तस्तदा एको अजोऽधिकः स्यात्।स जद्भुजः कल्पितः। अथ दज-रेखायां अबतुल्यं दहं पृथकार्यम्। अह-रेखा च कार्या। एवं तत्र बअहकोणदहअ-कोणी समकोणी भवतः। यतो अबहदी



लम्बी समानी स्तः । बआजकोणदजअकोणी समकोणी कल्पितौ । तसात् बआजकोणो बआहकोणश्चेतौ समानी जातौ । सआहकोणश्च बआजकोणस्य लण्डमस्ति । इदमनुपपन्नम् ।

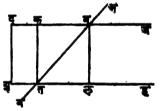
एवमेव अजदकोणः अजहत्रिमुजान्तर्गतः अहदकोणश्च त्रिमु-जाह्रहिर्गतः एताविष समानौ स्थाताम् । इदमप्यनुपपन्नम् । तसात् अवजदमुजावेव समानावित्युपपन्नम् । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायां लम्बद्धयं कार्यमन्या रेखा लम्बद्धये यथा संपातं करोति तथा कार्या तत्रोत्पश्चं प्रतिलम्बं कोणचतुष्टयं तत्र लम्बस्यैकदिश्युत्पन्नः कोणः द्वितीयलम्बस्यान्यदिश्यु-त्पन्नेन कोणेन समः स्यादेवमेकलम्बस्य बहिर्गतकोणो द्विती-यकम्बस्यान्तर्गतकोणेन च समः पुनरेकलम्बस्यान्तर्गतकोणो द्वितीयलम्बस्यान्तर्गतकोणश्चानयोयोंगः समकोणद्वयेन स-मानः।

यथा झदरेलायां इझजदलम्बी पतितौ । तत्र अबरेलया संपातः

कृतः । पुनर्वतिचिक्कयोद्वतकोणहतव-कोणौ समानौ स्तः। अवजकोणो बहिः-स्यः अतहकोणोऽन्तर्गतश्चेतौ समानौ स्तः। हतवकोणजवतकोणयोयोंगः स-मकोणद्वयेन समानोऽस्ति ।



अत्रोपपत्तिः ।

तत्र तझरेलावदरेले यदि समे तदा तयोः कोणचतुष्टयं सम-कोणमेव स्यात् । तदास्माकममीष्टसिद्धिरेव ।

यदि तझरेला वदरेला समाना न भवति किं तु वदमिषकं स्यात् तदा दवरेलायां झततुल्या दकरेला पृथकार्या । कतरेला च कार्या । कवतुल्या तल्लरेला पृथकार्या । वल्लरेला कार्या । एवं तत्र वलतक-समकोणं चतुर्भुजं जातम् । वलतित्रमुजे वलभुजो लतभुजो लको-णश्च वकतित्रमुजस्थेन तकमुजेन कवमुजेन ककोणेन च समानः । पुनः कवतकोणः वतलकोणश्चेतौ समानौ जातौ । एवं तवककोणः अवज्ञकोणेन समः । अवज्ञकोणवतहकोणौ समानौ । पुनः जवत-कोणअवज्ञकोणयोर्योगो द्वयोः समकोणयोः समानः । पुनः जवत-कोणो वतहकोणश्च एतावपि द्वयोः समकोणयोः समानौ जातौ । इद-मेवासाकमभीष्टम् ।

तदेवं सिद्धं या रेखा लम्बद्धयोर्मध्ये एकसिंछम्बे लम्बरूपा भवति सा द्वितीये लम्बेऽपि लम्बरूपा भवत्येव ॥

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥

यत्र रेखाद्वयसंपातेन समुत्पन्नकोणचतुष्टयं तद्यदि सम-कोणं न भवति तदैकरेखोपरिस्थापितलम्बो न्यूनकोणदिशि द्वितीयरेखया संपातं करिष्यति ।

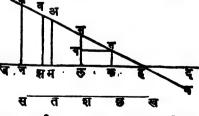
यथा अबरेसाजदरेसासंपातो इचिहे जातः । अहजकोणश्च न्यूनकोणो जातः । जहबकोणोऽधिककोणो जातः । तत्र जदरेसायां झवलम्बो निष्काश्यः । अयं लम्बः अदिशि अबरेसायां संपातं करिष्यति ।

अत्रोपपत्तिः।

अहरेलायां तिचहं कार्यम् । तकलम्बो जदे कार्यः । अयं लम्बो झहचिह्नयोर्मध्ये पतिष्यति वा झचिहे पतिष्यति वा झचिहाद्वहिः पतिष्यतीति विचार्यम् ।

यदि झहमध्ये पतति तदाऽन्या रेखा कार्या । तस्या हकतुल्या

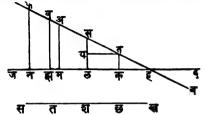
विभागाः कार्याः । तत्र याव-न्तो विभागा हुझे भवन्ति तेभ्योऽधिका विभागाः कार्याः । ते च सततशराद्यक्षसंज्ञ-का भवन्ति । अहरेसायां



इततुल्यं तसं सअं अफं समानं कार्यम् । पुनः सअफचिहेम्यः

सललम्बजमलम्बफनलम्बा जदरेखायां कार्याः । तिचहात् तयलम्बः सललम्बोपरि कार्यः । एवं हतकत्रिभुजे हतककोणः तसयकोणश्चेतौ

कोणौ समानौ । पुनः हकत-कोणतयसकोणौ समानौ । हत्तभुजः तसभुजेन समानः । यतल्लकावेतौ भुजौ समानौ । लकः हकश्चेतावपि समानौ



जातौ । एवं लमः मनश्चेतौ समानौ जातौ । एवं हनस्य यावन्तो विभागाः परस्परं समाना भवन्ति खसविभागतुल्याश्चेव भवन्ति । पुनः हनरेलाखसरेले च समाने । खसमिषकं हम्नात् । हंनमिषकं हम्नात् । एनः फनलम्बो झहचिहाद्वहिर्जातः । वझलम्बः फनह-त्रिमुजान्तर्जातः । पुनः वझलम्बो विद्वतः फह्मुजे संपातं करोति । पुनः अवरेलायाः संपातं करिष्यति । इदमेवासाकमभीष्टम् ॥

पुनः तकलम्बो झिचिहे यदा भविष्यति तदा वझतकावेकत्र भवि-ष्यतः । तदा संपातोऽपि भविष्यत्येव । यदि तकलम्बो झहचिहाद्ध-हिर्भविष्यति तदा वझलम्बः तकहत्रिभुजान्तर्भविष्यति नियमेन च संपातं करिष्यतीति । इदमेवासाकमभीष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र द्वयो रेखयोस्तृतीया रेखा संपातं यदि करोति तदा-न्तर्गतौ द्वौ कोणावेकदिकौ द्वयोस्समकोणयोर्यदा न्यूनौ भवतस्तदा रेखाद्वयं तस्यामेव दिशि संपातं करिष्यति।

यथा अवरेखायां जदरेखायां ह्झरेखया संपातः कृतोऽिस्त । तत्र अह्झकोणोऽन्तर्गत एकदिकेको जझहकोणोऽन्तर्गत तिहक एव द्वितीयश्चेतौ द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोर्न्यूनौ स्तः । अतः अवरेखा जदरेखाया अजदिशि संपातं करिष्यति ।

⁹ A. B. K. omit हनमधिकं हज्ञात्।

अत्रोपपत्तिः ।

कथितकोणयोर्मध्ये एकः कोणः समकोणोऽस्ति वाऽधिककोणोऽस्ति वा न्यूनकोणोऽस्ति । यद्येकः समकोणस्तदा द्वितीयो न्यूनकोणः स्यात्।

तत्र रेखाद्वयं कोणदिश्यवश्यं मिलिष्यति । यद्येककोणोऽिषककोणस्स च अहझकोणः किल्पतः । अ

पुनः हिचिन्हात् अबोपिर हवल
च्वादयः झिचिहाच अबोपिर झत
लम्बोदयः कार्यः । एवं तझलम्बहवलम्बयोईझरेखया संपातः कृतः ।

तदा वहझकोणतझहकोणौ समानौ भवतः । अहझकोणहझजकोणौ समकोणद्वयाभ्यां न्यूनौ स्तः । पुनः अहबकोणः समकोणोऽिस्त । तेन वहझकोणहझवकोणौ मिलितौ चैकसात्समकोणान्यूनौ भविष्यतः ।

तदा हझतकोणो हझवकोणश्चेकसात्समकोणान्यूनौ जातः । पुनः

अतझकोणः समकोणोऽिस्त तदा अबरेखाजदरेखे अजदिशि मि
लिष्यतः ।

पुनर्यदि द्वी कोणी न्यूनी भवतस्तदा इचिहात् जदरेसोपरि

हवलम्बोदयः झचिहात् जदरेखोपरि झतलम्बः कार्यः। तत्र जझहकोणो झहवकोणश्चेतयोयोंगः जझतकोणस-मोऽस्ति। यतो जझतकोणः समको-

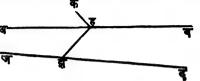


णोऽस्ति । पुनः जझहकोणझहवकोणयोर्योगः एकः समकोणः । एतौ कोणौ अहझकोणजझहकोणयोः शोधितौ । शेषं अहवकोणो न्यूनकोणो जातः। जवहकोणः समकोणश्चावशिष्टोऽस्ति । तेन अबरेखा-जदरेखायोगः अजदिशि भविष्यति ।

प्रकारान्तरम् ।

यदि द्री कोणी अहझ जझ हसंज्ञी न्यूनी तदा हचिहात् हझ-

रेखोपरि हकलम्बोदयः । तदा कहञ्जकोणः समकोणः स्यात हञ्जकोणश्च न्यून-



कोणः स्यात् । तदा हकरेखा झजरेखयोर्थोगो जदिशि भविष्यति । पुनः हअरेखा झजरेखयोर्योगोऽपि जदिशि भविष्यति ॥

अय सप्तमक्षेत्रस्य प्रकारान्तरमष्टभिः क्षेत्रैरुच्यते । तत्र पञ्चक्षेत्राणि पूर्वोक्तान्येव ज्ञेयानि । षष्टमुच्यते ।

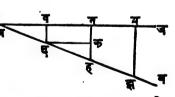
तत्र न्यूनकोणसंबन्धैकभुजस्य समाना अभीष्टा विभागाः कार्याः । तत्र चिह्नानि कार्याणि । चिह्नेम्यस्तत्कोणसंबन्धि-द्वितीयभुजे लम्बाः कार्याः । एते लम्बा द्वितीयभुजस्यापि स-माना विभागाः करिष्यन्ति ।

यथा वआजकोणो न्यूनकोणोऽस्ति । तस्य अवसुजस्य अददह-इम्नविभागाः समानाः कृताः । पुनः दहम्नचिद्देभ्यो अजसुजोपरि दवहतम्यलम्बा निष्कासिताः । एतैर्लम्बैः अजसुजस्य अववतत्व-संज्ञा विभागाः समानाः कृताः ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र हदरेखायाः दिचहोपरि हदककोणः अकोणसमानः कृतः।

दकरेसया च हतरेसायाः कचिहे संपातः कृतः। पुनः अवद्त्रिभुजे जे दकहित्रमुजे अकोणो हदककोणे-न समः। अद्यकोणश्च दहकको-



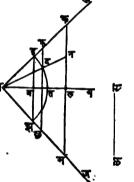
णेन समः। अद्युजश्च दह्युजेन समः। तस्मात् अवयुजो दक्कयुजेन समानो भविष्यति । अथ अवद्कोणः समकोणो यद्यस्ति दक्हको-णेन तुल्योऽप्यस्ति तदा दकहकोणोऽपि समकोणो जातः । तेन दक- तवसमकोणचतुर्भुजं जातम् । दकभुजो वतभुजेन तुल्यो जातः । अवभुजोऽपि वतभुजेन तुल्यो जातः । एवं तयभुजः अवभुजेन तुल्यो मिविष्यति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

तत्रैककोणस्य भुजद्वयान्तश्चिहं यदा भवति तदा तचि-हस्पृष्टा रेखा भुजद्वयसमानसंलैग्ना कर्त्तु शक्यते ।

यथा दिचिह्नं अबजकोणस्य अबबजभुजयोर्मध्येऽस्ति । तत्र

बकेन्द्रं कृत्वा बद्तुत्येनार्द्रव्यासेन हदझ-चापं कार्यम्। हझरेखा च कार्या। पुनः हब-झकोणस्य बबरेखया विभागद्वयं कार्यम्। द्वौ विभागौ न्यूनकोणौ भवतः। हबबित्रभु-जे झबबित्रभुजे च हबभुजो बबभुजो ह-बवकोणो झबभुजेन बवभुजेन झबबकोणे-न च समानः। पुनः बबहकोणो बबझकोण-श्रैतौ समानौ जातौ। तेनैतौ कोणौ समकोणौ

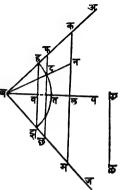


जातौ।पुनः बवरेला यचिद्वपर्यन्तं कार्या। इयं रेला हदझचापे तिचिद्वे संपातं करिष्यति। बवरेला च द्वचादिगुणिता तथा विद्वता कार्या यथा बवतरेलयाऽधिका भवति। सा रेला अससंज्ञा अन्यत्र कल्प्या।पुनः बअभुजे एकादिगुणितबहुतुल्या विभागाः कार्याः। ते च बहहक-संज्ञाः कल्पिताः। पुनः हकचिद्वाभ्यां बयरेलोपरि हवलम्बः कल्ल्ल्स्य कार्यः। एतौ लम्बौ बयरेलायाः बववल्रविभागौ समानौ करिष्यतः। एतौ विभागौ असविभागाभ्यां समानौ जातौ। तेनैतौ मिल्लितौ विभागौ बतादिधकौ भविष्यतः। तसात् कल्ल्ल्म्बो बतरेलायाः

९ •समानां लगा D. A. K. omit भुजद्वयसमानसंलगा. २ ज्ञेया for अन्यत्र कल्प्या K.

बहिः पतिष्यति । पुनः बजभुजात् बकतुल्यं बमं पृथकार्यम् । सम-

रेखा कार्या । एवं बकलत्रिभुजे बमल-त्रिभुने कबभुनो बलभुनः कबलकोणश्च मब्भुजेन बल्भुजेन मबलकोणेन समा-नोऽस्तीति । बलककोणबलमकोणौ स-मानौ भविष्यतः । पुनः बलककोणः समकोणोऽस्ति । बैलमकोणोऽपि समको-णोऽस्ति । तेन कलमरेखा सरलाऽस्ति । पुनः बदरेखा नपर्यन्तं कार्या। दचिद्वोपरि

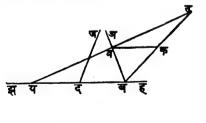


नदरेखायाः दनलकोणेन समः नदफकोणः कार्यः । तदा फद-कमरेखे समानान्तरे जाते । पुनः फदरेखा बैकनत्रिभुजाद्यथा बहिर्गता भविष्यति तथा विद्वता कार्या । बक्रमुजस्य फचिहे बमभुजे छचिह्ने च संपातं करिष्यति । फदछरेखा च दचिह्नगता अव-बज्ञभुजयोः संलग्ना जाता । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथाष्ट्रमक्षेत्रम् ।

तत्र रेखाद्वयोपर्येका रेखा यदा संपातं करोति तदा तदन्त-र्गतकोणद्वययोरेकदिक्कयोर्योगो यदि द्वयोः समकोणयो-र्न्यूनो भवति तदा रेखाद्वयं तिहत्येव संपातं करिष्यति ।

यथा अबजदरेखे तद्वपरि वृतीया रेखा बदसंज्ञा संपातं करोति। तत्र अबदकोणो जदबकोण-श्चानयोर्योगो द्वयोः समकोण-योर्न्यनोऽस्तीति कल्पितम् । तदा रेखाद्रयं अजिदिश्येव सं-पातं करिष्यति ॥

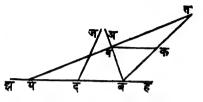


omitted in D. A. B. K have wan.

अत्रोपपत्तिः ।

बदरेला उभयत्र हिचह्मचिहपर्यन्तं दीर्घा कार्या । बआरे-

स्तायां बदतुल्या बवरेला पृथ-कार्या। तत्र अबदकोणो जद-बकोणयुक्तो द्वयोः समकोणयो-र्न्यूनोऽस्ति । अबहकोणयुक्तो इस्मि



द्वयोः समकोणयोः समानः । तेन अबहकोणो जदबकोणादिभिकः । पुनर्बिचिह्नोपिर बबरेखायाः सकाशात् जदबकोणतुल्यः वबतकोणः कार्यः। तबब्रह्मरेखे बकोणसंबिन्धभुजे ये तयोः संपातं कुर्वती विचि-ह्याता तबयरेखा कार्या । ततः तबबकोणो वबदकोणादिभिकः स्यात् । पुनर्विचिह्नोपिर अबदकोणतुल्यो बवककोणः कार्यः । तत्र बकरेखा तथा विद्वता कार्या यथा तबरेखायां किचिह्नोपिर संपातं करोति । तदनन्तरं अबजदरेखासंपातो भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

वबरेखायां बदरेखां स्थापयेत् तदा दजरेखा बकरेखायां स्था-स्यति । बअरेखा वकरेखायां च पतिष्यति । तस्मात् अबरेखा जदरे-खयोः संपातो भविष्यति ॥ इत्यष्टौ क्षेत्राणि समाप्तानि ॥

अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥

समानान्तररेखयोर्थि तृतीया रेखा संपातं करोति तन्नै-ककोणोन्तर्गतोऽभीष्टिदिश्युत्पन्नो द्वितीयरेखान्तर्गतकोणश्च द्वितीयदिकः एती समानी भवतः। एवं बहिर्गतकोणो द्वि-तीयरेखाया अन्तर्गतकोणेन समानो भवति। एवमेकदिक-मन्तर्गतकोणद्वयं द्वयोः समकोणयोः समानं भवति।

यथा अबरेखायां जदरेखायां ह्झवरेखया संपातः कृतोऽस्ति ।
तत्र अझवकोणदवझकोणश्चेतौ समौ कोणौ भविष्यतः । अथ यदि
समानौ न भविष्यतः तदा अझवकोणोऽधिककोणः कल्पितः। पुनः बझवकोणस्य अझवकोणेन योगः ज

तत्र प्रथमयोगः द्वयोः समकोणयोः समानः द्वितीययोगादि धिको भ-वित । तदा द्वितीययोगः द्वयोः समकोणयोर्न्यूनो जातः । यथा अब-जदरेखयोः हझवरेखया संपातः कृतः तत्र बझवकोणदवझकोण-योयोंगो द्वयोः समकोणयोर्न्यूनो जातस्तदा अबरेखाजदरेखे बददिशि मिलिष्यतः ।

पुनः हझबकोणो हवदकोणेन समानोऽस्ति । कुतः । हझबको-णअझवकोणयोः समानत्वात् ।

पुनः बश्चवकोणदवश्चकोणयोर्योगो द्वयोः समकोणयोः समानो-ऽस्ति । कुतः । बश्चवकोणअश्चवकोणयोगस्य द्वयोः समकोणयोः समानत्वात् । पुनः दवश्चकोणअश्चवकोणौ समानौ जातौ । इदमे-वासाकिमिष्टम् ॥

अथ त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यावत्यो रेखा एकरेखायाः समानान्तरा भवन्ति ता रेखाः परस्परं समानान्तरा एव भविष्यन्ति ।

यथा अबरेखा जदरेखा च हझरेखायाः समानान्तरास्ति तदा अब-रेखा जदरेखा च परस्परं समानान्तरा मविष्यति । <u>इ म</u> अत्रोपपत्तिः । <u>ज क</u> वतकरेखया तिस्रणां रेखाणां संपातः

¹ This sentence is omitted in A. B.



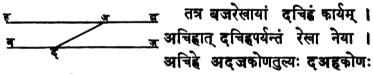
कृतः। तत्र अबरेखा ह्झरेखा च परस्परं समानान्तरास्ति तदा अवतकोणझत-वकोणश्चेतौ समानौ भविष्यतः। पुनः जदरेखा हझरेखा च समानान्तरास्ति

तदा दकतकोणोऽन्तर्गतो **झतवकोणो बहिर्गतश्चेतौ समानौ भवि-**ष्यतः । तदा अवककोणदकवकोणौ समानौ जातौ । तदा अबरेखा जदरेखा परस्परं समानान्तरा जाता ॥ इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्राभीष्टरेखायाः कियदन्तरे चिह्नं कृत्वा तद्गतसमा-नान्तररेखा कर्षुं चिकीर्षितास्ति।

यथा बजरेसाया अचिइगता रेसा समानान्तरा कर्चव्यास्ति ।



कार्यः । पुनर्हे अरेखा झपर्यन्तं नेया । तदा हझरेखा जबरेखायाः समानान्तरा जाता । इदमेवेष्टम् ॥

अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्रेष्टत्रिभुजस्यैको भुजो वर्द्धनीयः पुनस्तत्रैव यो बहिः स्थितः कोणः स सन्मुखान्तर्गतकोणद्वययोगेन समानो भ-वति । अन्तर्गतकोणत्रययोगोऽपि द्वयोः समकोणयोः समानो भवति ।

यथा अबजित्रभुजे बजभुजो दपर्यन्तं वर्द्धितः तत्र अजदकोणो

बहिःस्थः बअकोणद्वययोगेन समानोऽस्ति। यतो जिचहात् बअरेखायाः समानान्तरा जहरेखा कार्या। तत्र अजहकोणो बअज-कोणन तुल्यो जातः। हजदकोणश्च बको- द



णेन तुल्यो जातः। तदा अजदकोणो बहिःस्थः बअकोणद्वययोगेन तत्यो जातः।

पुनः अजदकोणः अजबकोणयुक्तो द्वयोः समकोणयोः समानोऽस्ति । तदान्तर्गतकोण-त्रययोगो द्वयोः समकोणयोः समानो जातः । द इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र अचिहात् बदरेखायाः समानान्तरा अझरेखा कार्या । तदा झअबकोणो बको-णेन तुल्यो जातः। पुनः झअजकोणः अजद-कोणेन तुल्यो जातः । तदा अजदकोणः अबकोणयोस्तल्यो जातः ॥ इदमेवेष्टम् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं समानं समानान्तरं चास्ति तदप्रयोः संल-ग्ना रेखा कार्या एवं द्वितीयाग्रयोः संलग्नरेखायास्तद्रेखाद्वयं समानं समानान्तरं भवति ।

यथा अबरेखाजदरेखे समाने समा- अ नान्तरे च स्तः । तदा तदमयोः अज-रेखाबदरेखे च कृते । एते रेखे समाने क्

अत्रोपपत्तिः ।

बजरेला कार्या। तदा अबजित्रभुजे बजदित्रभुजे च अबभुजो बजभुजः अबजकोणध्य दजभुजो बजभुजो दजबकोणश्चेते यथा-क्रमेण समानाः स्युः। तदा अजभुजो बदभुजेन समानो जातः। पुनः अजबकोणः दबजकोणश्चेतौ समानौ स्तः। ततः अजभुजो बदभुजेन समानान्तरो जातः। इदमेवास्माकमिष्टम्॥

पुनः प्रकारान्तम् ।

अदरेखा बजरेखायां हचिहे संपातं यथा करोति तथा कार्या । तत्र अहबत्रिभुजे जहदत्रिभुजे च अहबकोणो

जहदकोणेन समानोऽस्ति । पुनः अबहकोणः दज-हकोणश्चेतौ समानौ स्तः । अबभुजो जदभुजसमा-नोऽस्ति । तदा अहभुजदहभुजौ समानौ जातौ ।

तदा बह्मुजजहमुजी च समानी जाती। पुनः अहजित्रमुजे बह-दित्रमुजे च अहमुजो हुजमुजः अहजकोणम्य दह्मुजेन बह्मु-जेन बहदकोणेन च यथाक्रमं समानः। एवं अजमुजबद्मुजौ समानौ जातौ। पुनः अजहकोणदबहकोणौ समानौ जातौ। तदा अजमुजो बद्मुजेन समानान्तरो जातः। इदमेवासाकिम्हम्॥

अथ चतुस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यस्य चतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजाः समानान्तरा भवन्ति तस्य परस्परसन्मुखं भुजद्वयं समानं भवति तथा परस्परसन्मुखं कोणद्वयं च समानं भवति तत्कर्णश्च क्षेत्रस्य समानं भागद्वयं करोति।

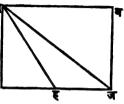
यथा अवजद्चतुर्भुजक्षेत्रस्य वदकर्णः कल्पितः। अत्रोपपत्तिः।

अदबकोणो जबदकोणेन समः । पुनः अबदकोणः जदबकोणेन समः । एवं अदबत्रिभुजे जबदित्र-भुजे च अदबकोणः जबदकोणश्चै-तौ समानौ स्तः । पुनः अबदकोणः जदबकोणश्चैतौ समानौ जातौ ।

बद्भुजश्चोभयोस्निभुजयोरेक एव । तर्हि अद्भुजबज्जभुजौ समानौ । अबभुजजद्भुजौ च समानौ । पुनः अकोणजकोणौ समानौ जातौ । अद्जकोणजबअकोणी च समानी। एवं ह्री त्रिभुजी समानी । तदा बदकर्णेन चतुर्भुजस्य भागद्वयं समानं कृतमित्युपपत्रम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

यदि अवभुजः जदभुजेन समानो न व स्यात् तर्हि जहभुजेन समानः स्यात् । तत्र अहरेसा कार्या । एवं अहरेसा बजरेसायाः समानान्तरा भविष्यति । पुनर्बजरेसा ह



अदरेखायाः समानान्तराखि । तदा अहरेखा अदरेखा समानान्तरा जाता । इदं नाधितम् ।

अथानेन प्रकारेण अदरेखा बजरेखायाः समाना भवति ।

यदि बअद्कोणः बजद्कोणेन समानो न भवति तदा बअह्कोणो बजद्कोणेन समानः स्यात् । तत्र अजरेखा कार्या । तदा बअज-कोणह्जअकोणौ समानौ । तदा जअह्कोणः अजबकोणेन स-मानो जातः । जअद्कोणः अजबकोणेन समानोऽखि । इदमप्य-नुपपनम् ॥ एवं बकोणो द्कोणेन समानोऽखि । पुनः अद्जितिभुजं अबजित्रभुजेन समानम् । इदमेवास्माकिमिष्टम् ॥

अथ पश्चत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र चतुर्भुजक्षेत्रद्वयं समानान्तरभुजमेकस्यां भूमावेक-दिशि च भवति द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्ये च भवति तच-तुर्भुजद्वयं समानं भवति ।

यथा अबजद चतुर्भुजं हवजझ चतुर्भुजं चैते द्वे चतुर्भुजे अझ-रेलाबजरेलयोर्भध्ये बजरेलोपरि स्तः ते अ<u>द</u>्द

च समाने स्तः।

अत्रोपपत्तः।

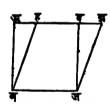
अद्भुजः ह्झ्भुजश्च बज्ञभुजेन समा-

नोऽस्ति तदा अद्भुजः ह्झ्भुजश्चेतौ ज द ह झ समानौ जातौ । पुनर्दहरेसा अदरे-स्तायां झहरेसायां च युक्ता कार्या । तदा हअवित्रभुजे झद्जित्रभुजे अह्भुज-झद्भुजौ च समानौ । पुनः अवभुजजद्भुजौ समानौ । पुनर्व-अह्कोणजद्झकोणौ समानौ । तदैते द्वे त्रिभुजे समाने जाते । पुनरनयोक्षिभुजयोः दवहित्रभुजं दूरीिक्रयते ववजित्रभुजं च योज्यते तदा अवजदचतुर्भुजं हवजझचतुर्भुजं चैते समाने भविष्यतः ।

इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथाऽसिन्सेत्रे हिन्हं अदाह्महिः पतिष्यति तदा बहुजदौ संपातं करिष्यतः । अथवा ह-चिह्नं दिन्हे पतिष्यति । अबअद्योर्भध्ये वा पतिष्यति । अनयोः प्रकारान्तरकृतक्षेत्रयोः प्रथ-मत्रिमुजे लघुत्रिभुजदूरीकरणं नास्ति त्रिभुज-योगः कर्त्तव्योऽस्ति । द्वितीयक्षेत्रे चतुर्भुजं युक्तं कार्यमेतावान् विशेषः ॥





अथ षट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

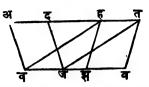
तत्र द्वे चतुर्भुजक्षेत्रे समानान्तरभुजे एकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्ये समानभूमिके यदा भवतस्तदा ते द्वे चतुर्भुजक्षेत्रे समाने भवतः।

यथा अवजदचतुर्भुजं ह्झवतचतुर्भुजं च अतववरेखयोर्मध्ये बजझवसमानभुजोपिर भवतस्ते च समाने अ द ह त एव भवतः।

अस्योपपत्तिः ।

बहरेखा जतरेखा च कार्या। एते रेखे समाने समानान्तरे च भवि-

ष्यतः । कथम् । बजरेखाहतरेले च समाने समानान्तरे च स्तः । पुनः अ-बजदचतुर्भुजं हबजतचतुर्भुजं चैते स-



माने स्तः।यतः अतरेखाबजरेखयोः समानान्तरयोर्मध्ये एकभुजोपिर तिष्ठतः । पुनईझवतचतुर्भुजं हबजतचतुर्भुजं चैते समाने । तदा अ-बजदचतुर्भुजं हझवतचतुर्भुजं चैते समाने जाते ॥ इदमेवासा-कममीष्टम् ॥

अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

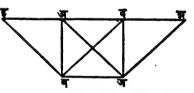
त्रिभुजद्वयमेकभुजोपर्येकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयो-र्मध्ये यदा भवति तदा तित्रभुजद्वयं समानं भवति।

यथा अवजित्रभुजं दबजित्रभुजं च बजभुजोपिर अदबजस-मानान्तररेखयोर्मध्येऽस्तीति । तसात्रिमुजद्वयं समानं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

बचिद्वात् जअरेखायाः समानान्तरा बहरेखा कार्या। पुनर्जिचि-

हात् बदरेखायाः समानान्तरा जझरेखा कार्या । पुनः अद-रेखा दिगृद्धये तथा वर्द्धिता कार्या यथा निष्कासितरेखा-



द्वयसंपातं करोति । तदा हबजअचतुर्भुजं दबजझचतुर्भुजं च बज-मुजोपिर समानान्तरयोह्झरेसाबजरेस्वयोर्मध्ये तिष्ठति । तदैते द्वे चतुर्भुजे समाने जाते । अनयोरद्वे द्वे त्रिभुजे समाने जाते । इद-मेनेष्टम् ॥

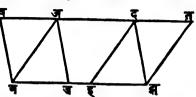
अथाष्टत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

द्धे त्रिमुजे समानभुजद्वयोपर्येकदिशि द्वयोः समाना-न्तररेखयोर्मध्ये यदा स्थातां ते द्वे त्रिभुजे समाने एव भवतः। यथा अबजित्रभुजं दहश्तिभुजं बजहश्समानभुजोपरि बझअ-

द्दसमानान्तररेखयोर्मध्येऽस्ति । तस्मात्ते समाने जाते ।

अत्रोपपत्तिः ।

बचिहात् जअरेखायाः स-



मानान्तरा बवरेखा कार्या । झिचिहात् हृदरेखायाः समानान्तरा झत-रेखा कार्या । अदरेखा दिग्द्वये विद्वता तथा कार्या यथा वतिचह्वयोः संपातं करोति । एवं बजअवचतुर्भुजं दृहझतचतुर्भुजं बजहझस-मानभुजोपरि समानान्तररेखयोर्मध्येऽस्ति । तदेते चतुर्भुजे समाने जाते । तदैतयोरद्धे त्रिभुजे समाने भवतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

त्रिभुजद्वयं समानमेकदिशि स्थितमेकभुजोपरि यदि भवति तित्रभुजद्वयं द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्यवर्त्ति भविष्यति।

यथा अबजित्रभुजद्बजित्रभुजे बजभुजोपरि स्थिते। पुनः अदरे-

स्वा कार्या।सा बजरेसायाः समानान्तरा मु

यदि समानान्तरा न स्यात् तदा अहरेसा बजरेसासमानान्तरा स्यात्। इजरेसा कार्या। तत्र हबजित्रभुजं

अवजित्रभुजेन समानम् । अवजित्रभुजं द्वजित्रभुजेन समानम् । तदा ह्वजित्रभुजं द्वजित्रभुजेन समानं जातं खण्डस्य साम्यात् । इदमनुपपन्नम् । तस्मात् अदरेखा वजरेखायाः समानान्तरा जाता । इत्युपपन्नम् ॥

अथ चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

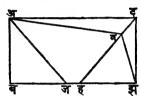
तत्र समानं त्रिभुजद्वयमेकरेखायां समानभुजद्वयोपरि भवति तित्रभुजद्वयं द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्यवर्ति भवति।

यथा अबजित्रभुजं दह्मत्रिभुजं बज्रमुजह्मभुजयोरुपरि बझ-रेखायामस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अदरेला कार्या । इयं रेला बझरेलायाः समानान्तरास्ति । यदि

समानान्तरा न स्यात् तदा अवरेखा समा-नान्तरा स्यात् । वझरेखा कार्या । तदा वहस्रत्रिभुजं दहझत्रिभुजं चैते समाने स्यातां स्वखण्डस्य समत्वात् ।



इदमनुपपन्नम् ॥

अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

चतुर्भुजं त्रिभुजं चैकदिश्येकभुजोपरिस्थितं द्वयोः समा-नान्तररेखयोर्मध्यवर्षि भवति तदा चतुर्भुजं त्रिभुजाद् द्विगुणं भवति ।

यथा अबजद्चतुर्भुजं हबजित्रभुजं बजभुजोपरि अहबजस-मानान्तररेखयोर्मध्यवर्त्यस्ति । तस्मात्रिभुजाद्विगुणं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

अजरेला कार्या । एवं अवजदचतुर्भुजं अवजित्रभुजाद्विगुणमिता।

पुनः अबजित्रभुजं हबजित्रभुजेन समान- अ मिल । तदा अबजदचतुर्भुजं हबजित्रभु-जाद्विगुणं जातम् ।

जाहूगुणं जातम् ।

चतुर्भुजं त्रिभुजं च द्वयोः समयोर्भुजयो- ज

रुपरि स्थितमेकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्यवर्ति भवति तदापि

चतुर्भुजं त्रिभुजाद्विगुणं भवति ॥

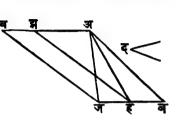
अथ द्विचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् । तत्रैकं त्रिभुजं ज्ञातमस्ति एककोणश्च ज्ञातोऽस्ति ताभ्यां

९ स्थातां च खण्डस्य समानत्वात् D.

तादृशचतुर्भुजिचिकीर्षास्ति यस्य फलं ज्ञातित्रमुजफलसमं स्यात् यस्य च कोणः कल्पितकोणसदृशः स्यात् ।

यथा अत्र त्रिभुजं अवजं कोणो दसंज्ञश्चास्ति । तत्र वजभुजो

हिनिहेऽद्वितः कार्यः । अहरेला । देया । हजरेलायां हिनिहोपरि द-कोणतुल्यः जहझकोणः कार्यः । अनिहात् बजरेलायाः समाना-न्तरा अवरेला कार्या । इयं झनिहे



संपातं करिष्यति । पुनर्जिचिहात् झहरेखायाः समानान्तरा जवरेखा कार्यो । इयं च अवरेखायां विचेहे संपातं करिष्यति । तदा झहजव-चतुर्भुजं समानान्तरभुजं अहजत्रिभुजाद्विगुणं जातं अबजित्रभुजस-मानं जातं झहजकोणश्च दकोणतुल्यो जातः । इत्युपपन्नम् ।।

अथ त्रयश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र चतुर्भुजद्वयं समानान्तरभुजं समानान्तरभुजमहच्चतु-र्भुजमध्यवित चेद्भवति यस्य च बृहच्चतुर्भुजकर्णरेखायाः एकं पूर्विदिशि द्वितीयमपरिदिशि चकर्णरेखासंलग्नं भवति तयोरेकः कोणो बृहच्चतुर्भुजकोण एव भवति एतादृशं चतुर्भुजद्वयं मिथः समानं भवति ।

यथा अतझहचतुर्भुजं झकजवचतुर्भुजं च अबजदचतुर्भुजम-ध्यवर्ति बदकर्णस्योभयदिशि स्थितं कर्णस्य झचिहे ज् लग्नम् । तदाऽनयोः अकोणजकोणौ बृहचतुर्भु-जस्य द्वी कोणौ स्तः । तस्मादेतौ समानौ जातौ ॥ व अत्रोपपत्तिः ।

तबकझचतुर्भुजं हझवदचतुर्भुजं चैतौ समानान्तरभुजौ सः। पुनः अबद्त्रिभुजं बजद्त्रिभुजं बृहचतुर्भुजस्य समानं भागद्वयमस्ति । पुनः तबझ्त्रिभुजं बकझ्त्रिभुजं तबकझचतुर्भुजस्य समानं भागद्वय- मस्ति । पुनर्हश्रदत्रिभुजं शवदित्रिभुजं चैते हश्वदचतुर्भुजस्य समाने हे भागे स्तः ।

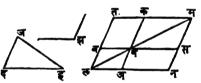
यदि अवदित्रभुजात् तवझित्रभुजं हझद- प्राप्त । एवं दवजित्रभुजात् वकझित्रभुजं झव- प्राप्त । एवं दवजित्रभुजात् वकझित्रभुजं झव- प्राप्त । एवं दवजित्रभुजात् वकझित्रभुजं झव- प्राप्त । शिषं झकजवचतुर्भुजं प्राप्त । इदमेवेष्टम् ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र कल्पितैकरेखायां कल्पितत्रिभुजे कल्पितैककोणे च ता-हशं चतुर्भुजं कल्पिते यस्य फलं त्रिभुजफलसमं स्यात् यस्यैक-कोणः कल्पितकोणसमश्च यस्यैकभुजश्च कल्पितरेखातुल्यः स्यात् ।

तत्र कल्पितरेसा अबरूपा त्रिभुजं जदहरूपं कोणस्तु झसंज्ञः ।

तत्र वबकतचतुर्भुजं कल्प नीयं त्रिभुजसमं पूर्वोक्तवत् यस्यैककोणः पूर्वकोणसमः कल्प्यः तथा यथा अबक-



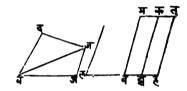
सर्वेकरेला भवति । पुनः अवोपिर लअववचतुर्भुजं समानान्तरभुजं कार्यम् । तत्र लबकणों दीघों देयः । तकरेलापि तथा दीघों कार्या यथा रेलाकणों मचिह्नोपिर लमों स्तः । पुनमेचिह्नात् कअरेलास-मानान्तरा मनरेला कार्या । पुनर्ल अरेला वबरेला च तथा दीघें कार्ये यथा नमरेलायां नसचिह्नोपिर संलमे साः । तत्र तनचतुर्भुजं समानान्तरभुजं जातम् । नवचतुर्भुजं तबचतुर्भुजं च तनचतुर्भुजं जस्य मध्ये द्वयं समानान्तरभुजं जातम् । तदा बनचतुर्भुजं अव-भुजोपिर बतचतुर्भुजसमं जातम् । बतचतुर्भुजं च पूर्व जदह-त्रिभुजसमं कल्पितम् । पुनः अवसकोणो ववककोणसमो जातः । पुनर्ववककोणो झकोणतुल्यो जातः । स प्रवेष्टः कल्पितः पूर्वम् ॥

अथ पश्चचत्वारिशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र कल्पितैकरेखोपरि चतुर्भुजं सैमानान्तरं तथा कर्त्तव्यमस्ति यथेष्टचतुर्भुजसमानं स्यात् तस्य च कोणः अभीष्ट-कोणसमानः स्यात् तस्यैकभुजः कल्पितरेखाश्चजसमानः स्यात् ।

यथा हतरेला कल्पिता अबजदं चतुर्भुजं कल्पितं छकोणश्च । ब-

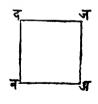
अबजदचत्रर्भजस्य जकर्णेन विभागद्वयं कार्यम् । पुनईतरे-सायां **झहतक**चतुर्भुजं **अव**ज-त्रिमुजसमं कार्यम् । हकोणो



लकोणसमः कार्यः । शक्ररेस्रोपरि वशक्रमचतुर्भुजं बजदत्रिभुजसमं कार्यम् । वझककोणो लकोणसमः कार्यः । एष कोणः हझककोणेन सार्द्ध समकोणद्वयेन समः । तदा हवरेला एका सरला रेला जाता। एवं तमरेखापि सरलाखि । तदा हमचतुर्भुजं समानान्तरभुजं हतरे-स्रोपरि अबजदचतुर्भुजेन समं हकोणस्तु लकोणेन समो जातः इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ षद्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् । तत्र एकस्यां रेखायां समकोणं चतुर्भुजं क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति।

यथा अबरेलायां अचिहात् अबतुत्यः अजलम्बः कार्यः। ब-चिह्नात् अजरेखासमानान्तरा अबतुत्या बदरेखा कार्या। जदरेला संलमा कार्या। अदचतुर्भुजं समा-नान्तरभुजं समभुजं समकोणं जातम् । इदमेवास्मा-कमिष्टम् ।



१ समानान्तरभुजं D.

अथ सप्तचत्वारिशत्तमं क्षेत्रम्।

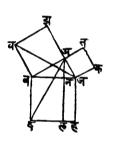
तत्र समकोणत्रिभुजस्य कर्णवर्गो भुजद्वयस्य वर्गयोगेन तुल्यो भवति ।

यथा अवजित्रभुजे अः समकोणोऽस्ति बजकर्णस्य वर्गः वअअ-जभुजयोर्वर्गयोगतुल्योऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

त्रिमिर्भुजैः समकोणं समचतुर्भुजं चतुर्भुजत्रयं कार्यम् । कानि

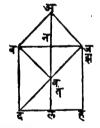
तानि चतुर्भुजानि एकं बदहजं द्वितीयं बव-शअं तृतीयं अतकजम् । बअशं बंअजं एतौ द्वौ समकोणौ स्तः । तदा शअजमेका सरला रेखा जाता । एवं बअतमेका सरला रेखा जाता । पुनः अचिहात् बदरेखायाः समानान्तरा अलरेखा कार्या। इयं रेखा त्रिभु-

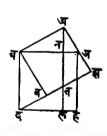


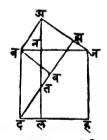
जान्तरे पितष्यित । कुतः । दबअकोणः समकोणादिधकोऽस्ति । तदा बअछकोणो बअजकोणान्यूनोऽस्ति । तस्मादियं रेखा बजरेखायां न-चिद्दे संपातं करिष्यित । पुनिरयं रेखा बहचतुर्भुजस्य बछं जलं चतु-र्भुजद्वयं करिष्यित । ततो वजरेखा अदरेखा च संयोज्या । वजबित्र-भुजे बअदित्रभुजे वबभुजो बजभुजो वबजकोणः अबभुजबद्दभुज-अबदकोणेन समानोऽस्ति । तदैतौ त्रिभुजौ समानौ जातौ । पुनर्व-जबित्रभुजं झबचतुर्भुजस्याद्भमस्ति । अनेन प्रकारेणापि बअदित्रभुजं बलचतुर्भुजस्याद्भमस्ति । तदा झबचतुर्भुजं बलचतुर्भुजेन समानं जातम् । एवं तजचतुर्भुजं जलचतुर्भुजेन समानं जातम् । तदा बजवर्गः बआअजभुजयोर्वर्गयोगेन समानो जातः । इदमेवास्माकम-मीष्टम् ।

प्रकारान्तरेणाह ॥

तत्र त्रिभुजं कर्णस्य च चतुर्भुजं पूर्वकृतमेव स्थापितं अरुरेसा च यथावस्थिता स्थापिता । पुनर्बझरूपं अबस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपिर स्थाप्यम् । ततो बअभुजः जअभुजतुल्योऽथवाऽिषकोऽथवा न्यूनः स्यात् । तदा क्रमेण झचिहं जचिहे पितष्यित वा अजरेसाया बिहः पितष्यित अथवा अजरेसायां पितष्यित । पुनर्दवरेसा संयोज्या । तत्र अबवकोणो जबदकोण एतौ समकोणौ स्तः । पुनर्जबवकोणो द्वयोः समकोणयोः शोध्यते । तदा शेषं अबजकोणो वबदकोणश्चैतौ समानौ भवतः । पुनः अबं बवतुल्यमस्ति बजं बदतुल्यम् । अबजकोणो वबदकोणश्चैतौ समानौ जातौ । पुनर्बवदकोणो बअजकोणसमकोणसमानो जातः। तदा दवझरेसा एका सरला रेसा जाता । अबरेसायाः समानान्तरा च जाता । तया अलरेसायां तचिहे संपातः कृतः। नअजकोणो जवअकोणेन समानोऽस्ति। पुनः अझवः समकोणोऽस्ति । तदा तचिहं वचिहे भविष्यति । पुनर्दतजं सरलैका रेसा



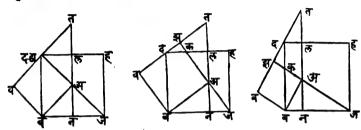




मविष्यति यदा अबं अजतुत्यं भविष्यति । अथवा तनिहं वनिहे न भविष्यति अथवा अन्यचिहं भविष्यति । पुनर्यदा अबं अजादिषकं स्यात् तदा तनिहं झवरेखोपरि पतिष्यति वा झबरेखाया बहिः पति-ष्यति । एवं क्षेत्रत्रयेऽपि बअझवक्षेत्रं बअतद्क्षेत्रं समानं भविष्यति । एवं बअतद्क्षेत्रं बनलद्क्षेत्रं समानं भविष्यति तदा बअझवक्षेत्रं बनलद्क्षेत्रसमानं भविष्यति । पुनः अनेन प्रकारेण अजभुजस्य चतुर्भुजं जलचतुर्भुजसमानं भविष्यति ।

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

तत्र कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपरि पातनीयम्। अबभुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजाद्वहिः पातनीयम्। जअरेला कार्या सा दचिहे संपातं करिष्यति



यदा अवअजो समौ स्तः। अथवा सा जअरेखा दहरेखायां किचिहे संपातं करिष्यति यदि अवं अजादिधकं स्यात्। अथवा दबरेखायां किचिहे संपातं करिष्यति यदि अवं अजाक्यूनं स्यात्।

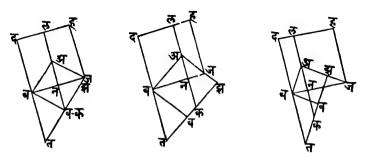
एवं प्रकारत्रयेऽपि अबोपिर बवलम्बो निष्काइयः। दिचहात् बवोपिर दवलम्ब उत्पादः। पुनः अकरेला तथोत्पाद्या यथा दवरे-लायां झिचिहे संपातं करिष्यति। दवबत्रिमुजे अबजित्रमुजे दब-भुजो बजमुजतुल्यः। वकोणः अकोणतुल्यः। दबवकोणो जबअ-कोणतुल्यश्चास्ति। तदा अबबवमुजौ तुल्यौ स्याताम्। अबझवक्षेत्रं अबमुजस्य समचतुर्मुजं समकोणं भविष्यति त्रिमुजाहृहिः पतिष्यति। पुनर्वदरेला अल्डरेला च तथा वर्द्धनीया यथा तचिहे संपातं करिष्यति। तदा दबअतक्षेत्रं अबवझसमचतुर्मुजसमकोणक्षेत्रेण समानं जातम्॥ पुनर्दबअतक्षेत्रं दबनलक्षेत्रसमानमस्ति। तदा अबमुजस्य समचतु-र्मुजसमकोणक्षेत्रं दबनलक्षेत्रसमानं जातम्॥

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

अब्भुजसमकोणचतुर्भुजक्षेत्रं त्रिभुजोपर्युत्पाद्वनीयम् । तत्र झचिहं

१ कार्यम् A. B. २ कार्यम् A. B. ३ कार्यम् A. B.

जिचहं भविष्यति यदा भुजद्वयं समानं भविष्यति वा अजभुजा-



द्विः पितष्यित यदा अवं अजादिषकं स्यात् वा अजोपिर पित-ष्यित यदा अवं अजादृनं स्यात् । पुनर्नअजकोणो जवअकोण-जुल्यः स्यात्ततो अनरेखा उत्पाद्या यथा झवभुजे किचिहे संपातं किर-ष्यित । तदा किचिहं विचिहं भविष्यित यदि अवं अजसमानं वा झवोपिर पितष्यिति यदि अवं अजादिषकं स्यात् वा झवाद्विः पितष्यित यदा अवं अजान्यूनं स्यात् । ततो द्वरेखा झकरेखा च उत्पाद्या यथा तिचहे संपातं किरिष्यिति ।

एवं अबजित्रभुजे अकझित्रभुजे च अबभुजो बअजकोणः अ-बजकोणश्च अझभुजेन अझककोणेन झअककोणेन च समानस्तदा अकं बजसमानं जातम् । दबसमानं च बतं अकसमानं जातम् । अतंक्षेत्रं दनक्षेत्रेण समानं जातम् । अबवझसमकोणसमचतुर्भुजे-नापि समानं जातम् । तदा दनक्षेत्रं अबभुजस्य समकोणचतुर्भुज-क्षेत्रेण समानं जातम् ॥

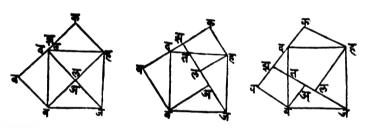
अनेन प्रकारेण अजभुजस्य समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं जलचतु-र्भुजक्षेत्रेण समानं भविष्यति । पुनः अजभुजस्य समकोणचतुर्भुजक्षेत्रं अबजित्रभुजोपरि पातनीयं वा अबजित्रभुजाद्वहिः पातनीयम् । ईदमेवास्माकिमष्टम् ॥

९ अतक्षेत्रेण दनक्षेत्रं समानं जातम् D. K. २ इदमेवेष्टम् A. B.

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

पूर्वप्रकारेषु अल्डरेखया कर्णचतुर्भुजस्य भागद्वयं कृत्वा उपपत्तिरुक्ता । अधुना कर्णचतुर्भुजस्य भागद्वयमकृत्वेवोपपत्तिरुच्यते ।

तत्र कर्णचतुर्भुजं त्रिभुजोपर्युत्पाद्यम् । जअभुजस्तथा वर्द्धनीयः यथा चतुर्भुजस्य तिचिह्नं संपातं करोति।यदि तिचिह्नं दिचिह्नं पति तदा अवअजभुजौ समानौ स्याताम् । यदि तिचिह्नं दह्मभुजे वा दबभुजे पति तदा अवअजभुजौ न्यूनाधिकौ स्याताम्। पुनर्दिचिहात् अजभुजोपरि द्रमुलम्ब उत्पाद्यः। पुनः अयं लम्ब उभयत्र वर्द्धनीयः। पुनस्तल्लम्बोपरि विचिहात् हचिहात् लम्बद्धयं ववहकसंज्ञं उत्पाद्यम् । जझरेस्वायां हचिहात् हल्ललम्बः कार्यः। तदा हल्ललम्बः अचिह्ने पतिष्यति



हल्अब एका सरला रेसा भविष्यति यदा अवअजभुजौ समौ स्या-ताम् । हल्लम्बो अचिहात् अन्यत्र चिह्ने पतिष्यति यदा द्वौ भुजौ न्यूनाधिकौ स्याताम्। अवजित्रभुजे वबदित्रभुजे कदहित्रभुजे लजह-त्रिमुजे च बजमुजः बद्दभुजः दहभुजः हजभुजस्वेते समानाः। अव-कल्कोणाः समानाः। शेषकोणा अपि समानाः। एतानि चत्वारि त्रिभु-जानि समानानि । पुनः अवसेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । एतत् अवभुजस्य वर्गोऽस्ति । लक्कसेत्रमपि समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । इदं अजभुजस्य वर्गोस्ति । एते द्वे समकोणसमचतुर्भुजं बह्कोत्रसमकोणसम-यतुर्भुजसमे स्तः।

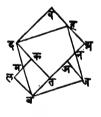
अत्रोपपत्तिः ।

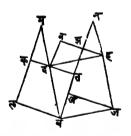
बदवित्रभुजदकहित्रभुजयोयींगः अबजित्रभुजहरुजिभुजयो-गसमः। शेषक्षेत्रं प्रथमित्रभुजद्वयेन चेद्योज्यते तदा प्रथमसमकोण-समचतुर्भुजद्वयं स्यात्। यदि द्वितीयित्रभुजद्वयेन योगः क्रियते कर्णस्य समकोणसमचतुर्भुजं स्यात्।।

प्रकारान्तरेणाइ ।

अबअजी द्वी भुजी यदाऽिषकन्यूनी स्तः अबभुजोपिर समकोणसमचतुर्भुजं न पात्यते यथा अजभुजस्य समकोणसमचतुर्भुजं अजोपिर
न पातितं तदा बअभुजस्तथा वर्द्धनीयो यथा जहभुजे निचिह्धे
संपातं करोति । पुनर्हिचिह्यात् दिचिह्याच बअरेखायां हझदतलम्बा उत्पाद्यौ । हझरेखा वर्द्धनीया । पुनर्दिचिह्यात् हझरेखायां
दवलम्ब उत्पाद्यः । तकरेखा तबरेखातुत्या कार्या । पुनः कलरेखा
तबरेखासमानान्तरा कार्या । एषा रेखा दबरेखायां मचिह्ये
संपातं करिष्यति । पुनर्बचिह्यात् कलरेखायां बल्ललम्ब उत्पाद्यः । तदा
अबजिन्नभुजं तदबनिभुजं वदहनिभुजं चैतानि समानि स्यः । लतं

समकोणसमचतुर्भुजं दशं समकोणसमचतुर्भुजं चैते अज्ञमुजस्य बञ्जमुजस्य वर्गह्रपे स्तः। पुनर्रुबम-त्रिमुजं अज्ञनत्रिमुजं च मिथः समानमस्ति । द-





मकत्रिभुजं इनझित्रभुजं च समम् । तदा स्वमित्रभुजदबतित्रभु-जयोर्योगः स्रतक्षेत्रसमकोणसम्चतुर्भुजइनझित्रभुजयोर्योगोऽस्ति । स्ययं बनजित्रिभुजेन समः । वदहित्रभुजं प्रथमयोगे योज्यते तदब-त्रिभुजं द्वितीययोगे योज्यते पुनर्दतनहृक्षेत्रं द्वाभ्यां चेद्योज्यते यदा

⁹ D. K. inserts तत्र after स्त:. २ °तनीयं D.

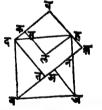
अवमजादिषकमिता। दनतहक्षेत्रस्य एकं खण्डं योज्यमपरं हीनं कार्य यदा अवमजादृनमिता। तदा द्वे समकोणसमचतुर्भुजे कर्णस्य सम-कोणसमचतुर्भुजस्य समे भैवत इत्युपपन्नम् ।

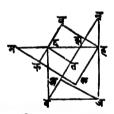
पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदैक भुज चतुर्भुजं द्वितीय भुज चतुर्भुजं पातनीयं भवति तदा पूर्वोक्त-प्रकारेण क्षेत्र मुत्याद्यम् । पुनर्वकं वहतुल्यं कार्यम् । कलहल्रेस् वस्वद-समानान्तरे कार्ये क्रमेण । पुनर्त्वथा वर्द्धनीये यथा लचिहे संपातं क-रिष्यतः । तदा कल्लरेसा दहरेसायां मचिहे मिलिष्यति ।

थर्थे त्रयाणां त्रिभुजानां साम्यात् इलअजयोः साम्यात् कोणानां साम्याच इलमत्रिभुजं जअनित्रभुजं पैरस्परं समानं जातमिति निश्चित्म । पुनर्दकइझसमत्वेन दकमत्रिभुजं इझनित्रभुजमन्योन्यसम-मिति निश्चितम् । तदा दवहित्रभुजमलहित्रभुजयोर्योगः वलचतुर्भुज-

हनझित्रभुजयोगोऽस्ति । अयं योगो बनजित्रभुजेन समः। दवहित्रभुजं प्रथम-योगेन युक्तं कार्यं तदब-





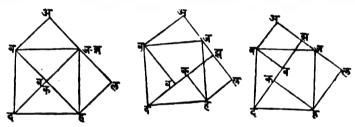
त्रिभुजं द्वितीयेन योज्यं हृदतनक्षेत्रं द्वयोयोंगयोर्थुकं कार्यं यदि अबं अजादिषकं स्यात्।यदि न्यूनं तदैकं खण्डं पूर्वयोगे योज्यं द्वितीयं खण्डं न्यूनं कार्यम् । तदा बल्डचतुर्भुजं बतचतुर्भुजं च दजचतुर्भुजेन समानं जार्तमिति सिद्धम् ॥

१ स्तः D. K. १ एवं A. B. ३ समत्वाच D. ४ मिथः D. ५ थो-ज्यते A. B. ६ चेथोज्यते A. B. ७ ० श्रेयोज्यते A. B. ८ D. K. omits इति शिद्धम्.

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र यथाकर्णचतुर्भुजं त्रिभुजे न पतित एक्सुजस्य च चतुर्भुजं त्रिभुजे पतित तथा क्षेत्रं कार्यम् ।

यथा अवभुजस्य अञ्चवचनुर्भुजं त्रिभुजे पैतितं तदा झिचिहं जिचिहे पतिष्यित यदि भुजद्वयं समं स्यात् । यदि भुजद्वयं न्यूनाधिकं स्यात् तदा झिचिहं अजभुजे पतिष्यित वा बिहः पतिष्यित । पुनदेव-रेखा कार्या । तत्र पूर्वोक्तप्रकारेण निश्चीयते दवझ एकासरका रेखा जातेति । पुनः हचिहात् तद्वेसायां अझरेसायां च हक्कम्बो हल्र छन्



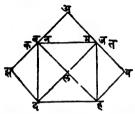
म्बश्च उत्पाद्यः । तदा हक्वब एका सरला रेला भविष्यति यदि मुजद्वयं समं स्मात् । यदि न्यूनाधिकं स्मात् तदा हकलम्बो झवबदमध्ये
भविष्यति । पुनश्चतुश्चिमुजसमत्वेन हकहलसमत्वेन च ईदं निश्चितं
कलक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं अजमुजस्म जातमिति । पुनः अबजत्रिमुजलजहित्रभुजयोयोगस्म कदहित्रभुजयबबदित्रभुजयोगसमत्वेन
शेषक्षेत्रद्वययोगेन इदं निश्चितं जातं द्वयोर्भुजयोश्चतुर्भुजे कर्णचतुर्भुजेन समे स्तः ॥

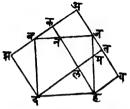
पुनः प्रकारान्तरम् ॥

तैत्र कस्यापि भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपिर न पततीतीष्टं यदा तदा त्रिभुजं कार्यम् । कर्णस्य चतुर्भुजं च कार्यम् । भुजद्वयं वर्द्धनीयं च ।

⁹ पातितं B. २ A. B. omit it. ३ A. B. add निश्चिता after it. ४ सिद्धं A. B. ५ °स्पास्ति D. K. ६ निश्चीयते D. K. ७ यदेदमिष्टं D. K.

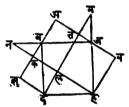
पुनर्दिचिद्वात् हिचिद्वात् दृश्चलम्बो हवलम्बश्च तद्वयोपर्युत्पाद्यः । दत-रेसा हकरेसा भुजयोः समानान्तरा कार्यो । एतद्वयं लिचिद्वे संपातं





करिष्यति जहरेलायां जबरेलायां मिचहे निचहे च संपातं करिष्यति। तदा वकनिचहानि एकत्र मिलितानि स्युः जतमिचहानि चैकंभूमिलि-तानि स्युः यदि भुजद्वयं समं स्यात्। एति बहत्रयेण त्रिभुजं स्यात् यदि न्यूनाधिकं भुजद्वयं स्यात्। पुनः अबजित्रभुजझदबत्रिभुज-

छद्हत्रिभुजवजहत्रिभुजानां समत्वं निश्चि-तम्। पुनर्झछक्षेत्रं छवक्षेत्रं च भुजद्वयस्य सम-कोणसमचतुर्भुजं जातम् । बक्तजतयोः सम- नर् त्वेन कोणानां समत्वेन च बक्तनत्रिभुजजत- हा मित्रभुजे समे जात इति निश्चितम्।



अनेनैव प्रकारेण दमहत्रिभुजं हनजित्रभुजं सममित । मलह-त्रिभुजं क्षेत्रद्वये हीनं चेत् कियते तदा शेषं नलमजक्षेत्रं दलहित्रभु-जेन समं स्यात् । जवहित्रभुजेनापि समं स्यात् । मवहतक्षेत्रबकन-त्रिभुजयोगस्यापि समानः स्यात् । दलहित्रभुजं दश्चवित्रभुजं चैते समे पूर्वक्षेत्रद्वयेन योज्यते । पुननेबदलक्षेत्रं मलहित्रभुजं च पूर्वक्षेत्र-द्वयेन योज्यते तदा कर्णस्य चतुर्भुजं भुजद्वयस्य चतुर्भुजेन समं स्यात्।।

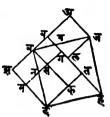
पुनरपि प्रकारान्तरम् ।

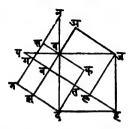
असिन्नेव प्रकारे एकभुजस्य चतुर्भुजं द्वितीयोपरि पतिष्यति तदा भुजद्वयं समं चेंचिहिं स्पष्टमेव । यदि भुजद्वयमिषकं न्यूनं वा तदा

⁹ वैकन्न A. B.

अबभुजो वर्द्धनीयः । असिन् द्विहात् ह्विहात् द्शलम्बह्वलम्बी

कार्यो । हचरेसा बज-रेसा च यचिहे संलगा कार्या । पुनर्दचिह्नात् दतलम्बो हचरेसायां अ बचिह्नात् बक्रस्म्बः





दतरेसायां जिन्हात् जललम्बः हबरेसायां च कार्याः । पुनर्दमं दक्तुल्यं झिदिशि कार्यम् । मनसगरेसा दकसमानान्तरा कार्या । इयं रेसा दबरेसायां निन्दे बकस्य सिन्दे हवस्य गनिदे संपातं करि-ष्यति । ततो अबजिन्नभुजं लहजं तहदं झदबं दबकं एतानि समानानीति निश्चितम् ।

पुनः कमक्षेत्रं झतक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं भुजद्वयस्याखि ।
पुनः मद्जलयोः समत्वेन कोणानां समत्वेन च मदनित्रभुजं लजयत्रिभुजं च परस्परं समानं जातिमिति निश्चितम् । पुनर्वसववयोः साम्येन कोणानां सामान्येन च बनसित्रभुजं बवयित्रभुजं परस्परं समानं
जातम् । तदा मनदित्रभुजबदकित्रभुजयोर्योगः मकचतुर्भुजबवयत्रिभुजयोगोऽस्ति । अयं योगो हजयित्रभुजेन समानोऽस्ति । पुनर्झदबत्रिभुजं प्रथमेन युक्तं कियते तदहित्रभुजं च द्वितीयेन युक्तं कार्यम् ।
बदतयक्षेत्रं द्वेयोर्युक्तं कार्यं यदि अबमजादिषकं स्यात् । न्यूनं चेचिहि एकं खण्डं योज्यं द्वितीयं न्यूनं कार्यम् । तदा मकक्षेत्रं झतक्षेत्रं
समकोणसमचतुर्भुजं बहक्षेत्रेण समकोणसमचतुर्भुजेन सममित्युक्तपकारेषु अन्येऽपि प्रकाराः संभवन्ति ते विस्तरभयादुपेक्षिताः ॥

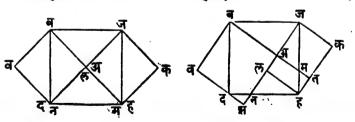
पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदि भुजानां चतुर्भुजानि स्वस्वभुजोपरि पतन्ति तदाष्ट्रधा क्षेत्रसंस्था

⁹ चेयुक्तं कियते A. B. २ चेदृद्वयोर्योजनीयं A. B.

स्वात्। तद्यशा। प्रथमप्रकारे यथा कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे पति तादशं क्षेत्रं कृत्वा बआजअभुजो वर्द्धनीयो यथा कर्णचतुर्भुजे मचिहे नचिहे च संपातं करिष्यतः। मचिहं नचिहं च हचिहे दचिहे क्रमेण पतिष्यित यदि भुजद्वयं समानं स्यात्। अथवा भुजद्वयोपिर पतिष्यित यदि न्यूनाधिकं स्यात्। पुनः दचिहात् हचिहात् दश्रुलम्बो हत्ललम्बः उमयोरुपर्युत्पादः। पुनरेतद्वयं वर्द्धनीयम्। बचिहाज्जचिहात् बवल्लम्बो जकलम्बश्च कार्यः। यथा वचिहे कचिहे मिलति। यदा भुजन्द्वयमिकं न्यूनं स्यात् तदा बआभुजः आजाभुजादिषकः कल्पितः। पुनहचिहात् हललम्बो जझरेलोपिर कार्यः। अयं लम्बः अचिहात् अन्यत्र पतिष्यति यदा भुजद्वयं न्यूनाधिकं स्यात्। यदा द्वी भुजो समानौ स्यातां तदा अचिहे पतिष्यति।

पुर्नेलकं अवक्षेत्रं च समकोणसमचतुं भुंजं स्यात् बैदरेखावर्गतुल्यं च यदा भुजद्वयं समं स्यात् । यदा न्यूनाधिकं स्यात् तदा अकक्षेत्रं अवक्षेत्रं समकोणसमचतु भुंजं मिवष्यति। लक्षेत्रं च समकोणविषमच-तुर्भुजं मिवष्यति । पुनः अबजित्रभुजं कहजित्रभुजं लहजित्रभुजं वबदित्रभुजं चैतानि समानानि स्युः । पुनः अजमित्रभुजं लहन-त्रिभुजं च समानं कोणसमत्वात् अजभुजलहभुजयोः समत्वाच । तदा जमहनौ समौ मिवष्यतः । महनदौ च समानौ स्याताम्।

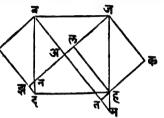


हमतित्रभुजं दनझत्रिभुजं च समानं भविष्यति । पूर्व अजमत्रिभुजं लहनत्रिभुजं सममासीत् । अस्मिन् द्वये लअहमक्षेत्रं योज्यते तदा

९ °र्छक अबदेत्रे A. B. २ °वे स्थातां A. B. ३ बह A. B. K.

नअमहक्षेत्रं स्रहजित्रिभुजसमं स्यात्। हजकित्रभुजस्यापि समं स्यात्।
मजकतक्षेत्रनद्शतिभुजयोगस्यापि समं स्यात्। असिन्द्रये अवजत्रिभुजं ववदित्रभुजं योज्यते तदा नअमहक्षेत्रअवजित्रभुजयोगः
मजकतक्षेत्रदनशितुभुजववदित्रभुजयोगसमो जातः। पुनरुभयो-

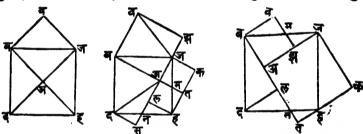
देवअनक्षेत्रेण अजमित्रभुजेन च योगः कार्यः । तत्र प्रथमात् वहवर्गो क भविष्यति द्वितीयात् अवअकौ द्वौ स-मकोणचतुर्भुजौ भवतः।इष्टं च स्यात्।



अनेनैव प्रकारेण बअन्यूनत्वेऽपि स्यात् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

यदा कर्णस्य चतुर्भुजं अवसंज्ञैकचतुर्भुजं च त्रिभुजोपिर पतित भुजद्वयं समं च स्यात् तदा मदिष्टं प्रकटमेवं । कुतः । उत्पन्नत्रिभु-



जानां समत्वात् । एतेषु त्रिभुजद्वययोगः भुजवर्गतुल्यः । चतुर्णी त्रिभु-जानां योगः कर्णवर्गतुल्यो भवति ।

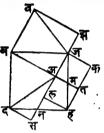
यदि अवं अजादिषकं स्यात् तदा तस्य चतुर्भुजं कार्यम् । जअ-रेखा वर्द्धनीया । यथा दह्रभुजे निचहं स्पृष्ट्वा बहिर्गच्छति तथा कार्या। दिचहात् इचिहात् दसलम्बो हललम्बस्तस्यां रेखायां कार्यः। जैचिहात् जकलम्बः अजरेखायां कार्यः। पुनर्हचिहात् हकलम्बः

९ ॰ बोत्पर्श त्रिभुजानां समस्वात् A. B. २ जिन्हि कि निहात् जिक्कम्बः &. A. B.

जैकलम्बोपरि कार्यः । पुनर्बे अरेखा वर्द्धनीया यथा जह्भुजे मचिह्नं स्पृष्ट्वा अस्मिँहम्बे तचिह्ने मिलति । अकक्षेत्रं समकोणचतुर्भुज-मस्तीति पूर्वोक्तप्रकारवत् निश्चितम् ।

पुनर्जवरेला दअरेला च कार्या । अजहलयोः समत्वात् अजम-कोणलहनकोणयोः समत्वाच अमजत्रिभुजं लहनत्रिभुजं समानं

जातमिति निश्चितम् । पुनरुभयोर्छअमहक्षेन त्रयोगादिति निश्चितं नअमहक्षेत्रं लजह त्रिभुजेन समानमस्ति । हजकत्रिभुजेनापि समानम् । पुनर्जमहनयोः समत्वात् मह-नद्शेषौ समानौ जाताविति निश्चितम् ।

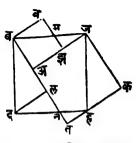


असाँ मुजसमत्वात् कोणयोः साम्याच दसनित्र भुजहमतित्र भुजयोः समानत्वं जातिमिति निश्चितम् । पुनर्दव अकोणजववकोणयोः समानत्वात् वदवजयोः समानत्वाच ववव अयोः समानत्वात् दव अत्र भुजजववित्र भुजयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द असकोणजवश्च शेषकोणयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द असकोणजवश्च शेषकोणयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द व अस्ये जववश्च भुजजवश्च त्रिभुजयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द व असौ जववश्च योः समानौ दसनित्र भुजं हमतित्र भुजेन समानं स्थितं तदा दव अनक्षेत्रं हमतित्र भुजमनयोयोगः जववश्च क्षेत्रेण समानः । पुनः मजतकक्षेत्रं हयोर्युक्तं कार्यम् । तदा दव अनक्षेत्रं हजकित्र भुजतुलयन अमहक्षेत्र मेतह्यं वा तत्तुल्यं दव महक्षेत्र मिप जववश्च क्षेत्र मजकति क्षेत्र भागनित्वं । पुनर्व मजति भुजं हयोर्युक्तं कार्यम् । तदा कर्णवर्गः भुजद्व यवर्ग समः स्थात् ।

यदा अबभुजः अजादूनोस्ति तदा न्यूनभुजो वर्द्धनीयः यथा

१ एतसम्बोपरि A.B. २ A.B. omit उमयोः. ३ °योगानिश्चीयते A.B. ४ A.B. omit भुजसमत्वात्. ५ °हजकत्रिभुजं नअमहक्षेत्रमि एतेषां योगरूपं त्वमहक्षेत्रं A.B.

दहरेखायां निचह्नलमं सत् बहिर्गच्छति दिचिह्नात् हिचिह्नाच अस्योपिर दललम्ब-हतलम्बो कार्यो । तहरेखा च वर्दिता कार्या । जिचहात् अस्योपिर जकलम्बः कार्यः । तदेति निश्चितं अवजित्रभुजं

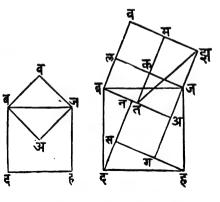


कहजित्रभुजं दलवित्रभुजं च समानमित । पुनः अकक्षेत्रं समको-णसमचतुर्भुजमित । दलनित्रभुजं बवमित्रभुजं च समानमित । पुनर्नहमजो समौ स्तः । पुनर्नतहित्रभुजं मजझित्रभुजं च समा-नमित । पुनर्वदनित्रभुजमझजित्रभुजयोयोगः कहजित्रभुजनतह-त्रिभुजववमित्रभुजानां योगेन तुल्यः । पुनः शेषक्षेत्रं द्वयोर्थुकं कार्यम् । तदा कर्णवर्गः भुजद्वयर्गतुल्यः स्यात् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

त्रयाणां भुजानां चतुर्भुजानि त्रिभुजे पतन्ति । यदा भुजद्वयं समानं स्यात् तदा भुजद्वयस्य चतुर्भुजे समाने स्यातामिष्टं च प्रकटीभवि-ष्यति।यदा चैको भुजो न्यूनाधिकोऽस्ति यथा अबं अधिकमस्ति तदा

पूर्वीक्तप्रकारेण चतुर्भुजं कार्यम् । जकरेखा छचिन्हपर्यन्तं वर्द्धनीया । तकरेखा
मचिन्हपर्यन्तं च कार्या ।
दचिन्हात् दनलम्बः अबरेखायां कार्यः । हचिन्हात्
हसलम्बः दनरेखायां कार्यः।
जअरेखा च वर्द्धनीया यथा



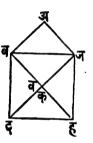
इसरेखायां गचिन्हे लगा स्यात् । तदां जदचतुर्भुजस्य चत्वारि त्रिसु-

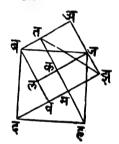
जानि समानि उत्पत्सन्ते। तानि च पूर्वोक्तप्रकारेण समानि स्युः। नगचतुर्भुजं शेषं स्यात्। एतच अबअजभुजयोरन्तरवर्ग एव। पुन-स्तझरेसा कार्या। तदा अलक्षेत्रस्य अमक्षेत्रस्य च चत्वारि त्रिभुजानि भविष्यन्ति। पूर्वोक्तचतुर्णी त्रिभुजानां समानि स्युः। शेषं कवचतुर्भुजं नगचतुर्भुजस्य समं स्यात्। तदा जदचतुर्भुजं अबचतुर्भुजस्य अकचतुर्भुजस्य समानमस्तीति निश्चितम्। इदमेवेष्टम्॥

प्रकारान्तरम् ।

भुजद्वयस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे पतति कर्णस्य चतुर्भुजं न पतति ।

यदा भुजद्वयं समानं चेत् तदा पूर्वोक्तप्रकार एव पर्य-वसनः। यदा अवभुजोऽ-विकोऽस्ति तदा चतुर्भुजं कार्यम् । वदरेसा कार्या। कहरेसा च कार्या। तत्र





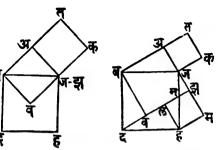
दबझरेला सरला एका रेला जातेति निश्चितम्। हकतरेलाप्येका सर-लाखि । पुनर्जकरेला वर्द्धनीया लपर्यन्तम् । तदा जदचतुर्भुजस्य च-त्वारि त्रिभुजानि मविष्यन्ति । मध्ये कवचतुर्भुजं च भविष्यति । पुनः तझरेला कार्या । तदा अलक्षेत्रस्य अमक्षेत्रस्य च चत्वारि त्रिभुजानि समानि मविष्यन्ति । उपरितनचतुर्णो त्रिभुजानामपि समानि भवि-ष्यन्ति । कवचतुर्भुजं द्वयोयोज्यते तदेष्टं स्फुटं स्यात् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

एक भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे पति । यदा भुजद्वयं समानं स्यात् तदा स्पष्टमेव । यदि अबं अधिकं स्यात् तदा चतुर्भुजं कार्यम् । दव-रेखा लग्ना कार्या। तदा दवझरेखा सरलैका रेखा जातेति निश्चितम् ।

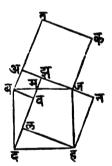
९ A. B. add this sentence. २ A. B. read this sentence as समानि च स्थ:. ३ D. omits this.

पुनः अजरेसा वर्द्धनीया।
तस्यां हचिहात् हमलम्बः
कार्यः। हललम्बश्च दझोव परि कार्यः। अवजित्रमुजं वबदित्रमुजं लदहित्रमुजं मजहित्रमुजं चैद



तानि समानि जातानि । लमचतुर्भुजमकचतुर्भुजस्य समानमस्ति । पुनर्लहनित्रभुजं दलहित्रभुजेन जमहित्रभुजेन च युक्तं कार्यम् । तदा दनहित्रभुजं लमचतुर्भुजजनझित्रभुजयोगेन अकचतुर्भुजेनापि जनझित्रभुजयुक्तेन समानं जातम् । बदवित्रभुजं प्रथमेन युक्तं कार्यम् । अवजित्रभुजं द्वितीयेन युक्तं कार्यम् । शेषक्षेत्रं द्वाभ्यां युक्तं कार्यम् । तदेष्टमस्मदीयं प्रकटं स्यात् ।

पुनर्यदा अबं न्यूनं स्यात् तदा चतुर्भुजं कार्यम् । द्वरेखा लमा कार्या । पूर्वोक्तप्र-कारेणैवेदं निश्चीयते दहजमक्षेत्रं झजम-त्रिभुजेन सार्द्धं अकचतुर्भुजेन समानमस्ति । पुनः बदमत्रिभुजं अवचतुर्भुजेन मजझ-त्रिभुजेन समानमस्तीतीष्टं प्रकटं जातम् ॥

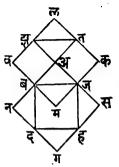


पुनः प्रकारान्तरम् ।

कस्यापि भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे न पतित तथा चतुर्भुजं कार्यम् । वझरेखाकतरेखे दीर्घे कार्ये यथा लचिह्नलमे स्याताम् । पुनर्वबरेखा कजरेखा दीर्घा कार्या मचिह्नलमा स्यात् । तदा कवचतुर्भुजं भुज-द्वययोगस्य चतुर्भुजं जातम् । पुनः अबरेखा अजरेखा वर्द्धनीया ।

१ युक्तं सत् A. B.

दिनिहात् हिनिहात् द्वयोरुपरि दनलम्बः हसलम्बद्ध कार्यः। पुनर्लम्बौ वर्द्धनीयौ यथा गिनिहे लग्गौ साः। अवजित्रभुजं नदबित्रभुजं गदहित्रभुजं सहजित्रभुजं चैतानि समानि स्यः। नसचतुर्भुजं वकचतुर्भुजेन समानम्। पुनर्शतरेसा कार्या। झलतित्रभुजं झअतिनि मुजं वअजित्रभुजं वमजित्रभुजं चैतानि

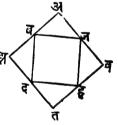


चत्वारि समानि जातानीति निश्चितम् । पूर्वोत्पन्नानां चतुर्णी त्रिमु-जानामपि समानि । एतचतुष्टयं द्वाभ्यां चतुर्भुजाभ्यां शोध्यम् । शेषं वअचतुर्भुजं अकचतुर्भुजं बहचतुर्भुजस्य समानमस्ति । इदमेवास्म-दिष्टम् । एवमष्टौ प्रकारा उपपन्नाः ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

कर्णस्य चतुर्भुजं तथा कार्य यथा त्रिभुजे न पतति । अवअज्ञभुजौ च

वर्द्धनीयौ । दिचिह्नात् हृचिह्नात् द्वयोरुपरि दृश्लस्यः हृवलस्यश्च कार्यः । पुनर्लस्यौ वर्द्ध-नीयौ यथा तिचिह्ने लग्नौ स्तः । तदा अतच- अत् तुर्भुजं भुजद्वययोगस्य चतुर्भुजं जातम् । च-त्वारि त्रिभुजानि च समानि जातानि । यः क-



श्चिदिष त्रिभुजद्वययोगो भुजयोघीतसमो भवति । चैतुणी योगः भुज-द्वयघातद्विगुणोऽस्ति । अयमतचतुर्भुजात् भुजद्वययोगवर्गात् भुजद्वय-द्विगुणघातयोगरूपः शोध्यः । शेषं बहचतुर्भुजं भुजद्वयवर्गयोगसमं स्यात् । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपरि कार्यम् । दचिहात् दश्चलम्बः अवो-

૧ A. and B. have चतुर्णा योगः अतःचतुर्भुजात् शोध्यः । शेषं सह-चतुर्भुजं°

परि कार्यः। हचिह्नात् हत्ररुम्बो दझरेखायां कार्यः। जअभुजो वर्द्धनीयः तचिद्वपर्यन्तम् । भुजद्वयान्तर-वर्गरूपचतुर्भुजं मध्ये उत्पन्नम् ।

ज व

एवं चत्वारि त्रिभुजानि समानि जातानि । एतेषां

मध्ये यः कश्चित्रिभुजद्वययोगो भुजद्वयघातसमानोऽस्ति । चतुर्णौ त्रि-भुजानां योगः द्विगुणेन भुजद्वयघातेन समोऽस्ति । अयं भुजान्तरवर्ग-युतः भुजद्वयवर्गसमः स्यात् । यतोऽस्मिन् वअचतुर्भुजं युक्तं क्रियते तदा दजचतुर्भुजं भुजद्वयवर्गयोगसमानं भवति ॥

अथाष्टचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यदा त्रिभुजस्यैकभुजवर्गः शेषभुजद्वयवर्गसमानः स्यात् तदा शेषभुजद्वयमध्यकोणः समकोणः स्यात् ।

यथा अबजित्रिभुजे बजवर्गः अबअजयोः वर्गयोगसमानस्तदा आः समकोणो जातः।

कुतः ।

अदलम्बः अजरेसायां अबतुत्यः कार्यः । जदरेसा लगा कार्या । तदा दजवर्गजववर्गी समी स्तः । दजजबी समी स्तः । तदा अबजित्रमुज-अदजित्रभुजयोः कोणी भुजी च समी स्याताम् ।



तदा जअबकोणो जअदकोणेन समः स्यात्। तदा जअबः समकोणो भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राङ्ग जगन्नाथ इति समिधाख्यातनाम्ना प्रणीते । प्रन्थेऽस्मिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं चादिमः संगतोऽभूत् ॥ इति रेखागणिते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

९ °णा भुजाब समाः स्युः। A., B.

अथ द्वितीयोऽध्यायः प्रारभ्यते ॥

तत्र चतुर्दशक्षेत्राणि सन्ति ।

तत्र रेखाद्वयधातशब्देन समकोणचतुर्भुजक्षेत्रमुच्यते ।

तत्र प्रथमं क्षेत्रम्।

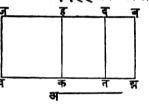
तत्रैकरेखाद्वितीयरेखाघातः प्रथमरेखाया द्वितीयरेखाख-ण्डानां च घातेन तुल्यः स्यात् ।

यथा अरेलाबजरेलाघातः द्वितीयरेलायाः बददहहजलण्डानां

अरेखायाः घातेन समानोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

पुनर्व**झ**लम्बो बजरेखायां अतुत्यः _। कार्यः । समकोणबवचतर्भुजं कार्यम् ।



एतत् क्षेत्रं अरेखाबजरेखाघातरूपं जातम् । पुनर्दतरेखा हक-रेखा च बझरेखायाः समानान्तरा कार्या। एते द्वे रेखे अरेखासमे जाते । बतक्षेत्रं दकक्षेत्रं हक्क्षेत्रं च अरेखाघातो बददहहजखण्डस्य जातः। एतेषां योगो बक्क्षेत्रं भवति ।

प्रकारान्तरम् ।

बददहृजलण्डानां ^अयोगो बजरेला भवति । एतत्लण्डअरेल-योघीतयोगः अरेलासँकलबजरेलाघात एव स्यात् ।

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ।

तंत्र रेखा स्वखण्डैः पृथक् गुणिता तद्योगः रेखावर्गसमः स्यात् ।

९ शक्लानि K. २ °घातेन K. ३ योगेन A. B. °संपूर्ण D. K. ५ तत्र रेखा निजलण्डगुणा सती रेखावर्ग एव स्थात् । A. B.

यथा अबरेखा अजजबखण्डाम्यां गुणिता तैद्योगो अबवर्गतत्यो

भवति । उपर्वेत्तिः । अबरेखोपरि अहसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । जङ्गरेखा अदरेखायाः समानान्तरा दे कार्या । अदरेला अबरेला च समानास्ति । अझक्षेत्रं जहस्रेत्रं च अर्बरेसातुत्याया अदरेसाया अजजबयोर्घातोऽस्ति । एततक्षेत्रद्वययोग एव अबरेखाया वर्गः । इदमेवेष्टम् ॥ प्रकारान्तरम् ॥ दरेला अबरेलातुल्या कार्या । तदा दरेलाघातः अबरेलाघातः अबरेखावर्गोऽस्ति । अयं दरेखाअबरेखाखण्डयो-र्घातत्रस्यो जातः ॥ अथ तृतीयं क्षेत्रम्। तत्र रेखानिजैकखण्डघातः खण्डघातगुणरूपखण्डवर्गयोग-तुल्यो भवति। यथा अबरेलाबजरेलाघातः बजवर्गअजजबघातयोगतुल्योऽस्ति । कर्तैः । बजरेखोपरि जहसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। अद्क्षेत्रं संपूर्ण कार्यम् । तदा अझरेखा जदरेखापि जबरेखासमास्ति । तदा अहक्षेत्रं अबबजयोघीतत्रल्यमस्ति । इदमेव क्षेत्रं जबवर्ग- इ

१ अबनर्गतुल्या स्यात् । A. B. २ D. K. have पुनः for उपपत्तिः. ३ A. B. omit this sentence. ४ अबरेखातुल्यअद्ररेखाघातअज्ञज्ञब्ख-ण्डरेखयोघाततुल्योऽस्ति । A. B. ५ रेखायां A. B. ६ रेखायाः खण्डद्वयोघां-सतत्खण्डवर्गयोगतुल्यो भवति । A. B. ७ अत्रोपपत्तिः A. B.

समजहस्रेत्रअजजवधातसमअद्क्षेत्रयोयींगतुल्यम् । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

दरेला जबरेलातुल्या कल्प्या । दरेलाअबरेलयोर्घातः अबरेला-बजरेलयोर्घातः । अबरेलाबजरेलयोर्घातोऽपि अ ज व दरेलाअजरेलाघातदरेलाजबरेलाघातयोर्योगेन समः । द्वयोर्घातयोर्मघ्ये एको घातः अजजबयोर्घातोऽस्ति द्वितीयो जबवर्गोऽस्ति ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

तत्र रेखावर्गः स्वखण्डयोर्वर्गयोगेन द्विगुणतत्खण्डघात-युतेन समो भवति।

यथा अबरेखायाः जिचिहे खण्डद्वयं कृतमस्ति । अस्यां अबरे-खायां अइसमकोणसमचतुर्भेजं कार्यम् । जझरेखा अदरेखासमाना-

न्तरा कार्या। बदरेखा लग्गा कार्या। इयं रेखा जझ-रेखायां विचन्हे संपातं करिष्यति । विचन्हात् व- त तकरेखा अबरेखासमानान्तरा कार्या। तदा ज-वबकोणः अदवकोणेन समः स्वात्। अदवकोणः



अवदकोणेन समोऽस्ति । तदा जवरेखा जबरेखासमाना जाता । तदा जकक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । इदमेव बजरेखाया वर्गः ।

अनेनैव प्रकारेण तझक्षेत्रं अजरेखाया वर्गः। अवक्षेत्रं अजजबरे-खयोघीततुल्यमस्ति । वहक्षेत्रमेतत्क्षेत्रसमानमस्ति । तदा अबवर्गरूपं अहक्षेत्रं अजरेखावर्गसमं तझक्षेत्रं जबरेखावर्गसमं जकक्षेत्रं अजज-बघातसमं अवक्षेत्रं अजजबघातसमं वहक्षेत्रं चैतेषां चतुर्णी योगतु-ल्यमस्ति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ द्वितीयः प्रकारः ।

अबअजयोर्घातः अजवर्गस्य अजजबघातयोर्थोगस्य च तुल्योऽस्ति ।

पुनः अबबजयोर्घातः बजवर्गअजजबयोर्घाततुल्यः । तदा अब-अजयोः अबबजयोर्घातयोगः अबवर्गरूपः अजवर्गेण जबवर्गेण च अजजबयोर्द्विगुणघातेन तुल्योऽस्ति ॥

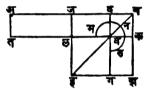
अथ पद्ममं क्षेत्रम् ।

अभीष्टरेखायाः खण्डद्वयं समानं पुनस्तस्या एव खण्डद्वयं न्यूनाधिकं यदा भवति तदा खण्डद्वयधात एकखण्डरे-खार्चान्तरवर्गयुक्तोऽर्द्वरेखावर्गेण तुल्यो भवति ।

यथा अबरेला जिचेहे अदिता कृता दिचेहे लण्डह्रयं च कृतं तदा अददबयोर्घातजदवर्गयोगो जबवर्गेण तुल्यो भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

जबरेस्रोपरि दबरेस्रोपरि जझसेत्रं दकक्षेत्रं च समकोणसमचतुर्भुजं का-



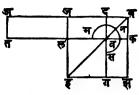
र्यम् । बहकर्णः कार्यः । द्वरेखा कवरेखा च दीर्घा कार्या गिचिह्नलिह्नपर्यन्तम् । तिचिह्नपर्यन्तमपि जतक्षेत्रं पूर्णं कार्यम् । तदा जवक्षेत्रं वझक्षेत्रं च समानमस्ति । द्कक्षेत्रं द्वयोर्थुक्तं कार्यम् । तदा जकक्षेत्रं जतक्षेत्रमपि द्झक्षेत्रस्य समानं स्यात् । पुनर्जवक्षेत्रं द्वयोर्थुक्तं कियते । तदा अवक्षेत्रं मनसक्षेत्रसमानं स्यात् । पुनर्ज्ञगक्षेत्रं द्वयोर्थुक्तं कियते । तदा अददबघातसमअवक्षेत्रज्ञदवर्गसम-लगक्षेत्रयोर्थोगः जववर्गसमजझक्षेत्रज्जल्यो जातः । इदमेवास्माक-मिष्टम् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अदद्बयोर्घातो जबद्बघातरूपअजद्बधातजद्दबघाततुल्यो-ऽस्ति । पुनरूभयोः समयोर्घातयोर्जदवर्गी युक्तः कार्यः । अनेन किं

१ कार्य खण्डद्वयं च न्यूनाधिकं कार्य D. K. १ °घात एकखण्डार्द्धरेखा-न्तरकार्योगांगः A. B.

जातम् । अदद्बघातो जद्दवर्गोऽनयो-योगो जबद्बघातो जद्द्बघातो जद्दवर्गम्बैतेषां त्रयाणां योगेन समः। पुनर्जद्द्बघातो जद्दवर्गोऽनयोयोगो



जबजद्घातेन तुल्यः । पुनर्जबजद्घातो जबद्बघातोऽनयो-योंगो जबवर्गेण समः । तदा अद्द्बघातो जद्वगोंऽनयोयोंगो जबवर्गेण समानो जातः ।

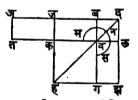
अथ षष्ठं क्षेत्रम्।

तत्रैका रेखांद्विता कार्या रेखायामभीष्टा रेखा योज्या रेखायोगोऽभीष्टरेखया गुण्यस्तत्र रेखार्द्धवर्गो युक्तः कार्यः अयं रेखार्द्वाभीष्टरेखायोगस्य वर्गेण समो भवति ।

यथा अवरेला जिचेहेऽदिता कृता । अस्यां बदरेला योजिता । अथ अदबदयोघीतो बजवर्गोऽनयोयींगो जदवर्गसमानो जातः ।

अत्रोपपत्तिः ।

जदोपरि बदोपरि जझक्षेत्रं बलक्षेत्रं समकोणं समचतुर्भुजं कृत्वा तत् क्षेत्रं संपूर्ण कार्यम् । जतक्षेत्रं जवक्षेत्रसमानं वझक्षे-



त्रस्यापि समानम् । जलक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । अलक्षेत्रं मनसक्षेत्रेण समानं जातम् । पुनः कगक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । अलक्षेत्रं अदद-लघातरूपमथवा अदद्वघातरूपं कगक्षेत्रं च जववर्गसममनयोयोंगो जम्मक्षेत्रेण जद्वर्गरूपेण समानो जातः । इदमेवासादिष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम्॥

अदबद्घातः अबबद्घाततुल्यस्य द्विगुणजवबद्घातस्य बद-षर्गयुक्तस्य समानः । जबवर्ग उभयोः समयोर्युक्तः कार्यः । एतेन किं बातम् । अदबद्घातो जबवर्गोऽनयोर्योगो द्विगुणजबबद्घातो जबवर्गश्च बद्वर्गश्चैतेषां योगेन तु जद्वर्गतुल्येन समानो जातः ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया वर्गो रेखेंकंखण्डवर्गश्चानयोर्योगो द्विगुणरे-खातत्खण्डघातो द्वितीयखण्डवर्गश्चानयोर्योगेन समः।

यथा अबवर्गबजवर्गयोर्योगः अबबजयोद्धिगुणघातअजवर्गयो-योगेन समोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः।

स्ति । पुनस्तवक्षेत्रमुभयोयोंज्यम् । तदा लमनक्षेत्रं जकक्षेत्रं तवक्षेत्र-मेतेषां योगोऽथवा अहक्षेत्रं जकक्षेत्रं अववर्गेण जववर्गेण कमेण सममनयोयोगो द्विगुणअववजघाततुल्यं द्विगुणं अकक्षेत्रं अजव-र्गतुल्यं तवक्षेत्रमनयोयोगेन समः । इदमेवास्माकिमिष्टम् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अववर्गः अजवर्गजबवर्गद्विष्मसण्डघातयोगेन समः । पुनर्जब-वर्ग उभयोयोज्यः । तदा अववर्गजबवर्गयोयोगो द्विगुणजबवर्गद्विगुण-अजजबघातअजवर्गयोगेन समः । जबवर्गअजजबघातयोगः अवजबघातेन समः । तदा अवजबवर्गयोयोगो द्विगुणअबजब-घातअजवर्गयोगसमः॥

अथाष्टमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया अभीष्टं खण्डद्वयं कार्य रेखास्वकीयैकखण्ड-गुणा चतुर्गुणा चापरखण्डवर्गयुता सती रेखाप्रथमखण्डयोग-वर्गतुल्या भवति ।

९ एकखण्ड $^{\circ}$ D. २ रेखातत्खण्डघातद्विगुणः A. B. द्विगुणो रेखातत्खण्ड $^{\circ}$ भातः K. ३ द्विमञ्जात्स्वभातयोगेन A. B.

यथा अबरेखा तस्याः खण्डद्वयमेकं जबं द्वितीयं अजम् । अबरेखायां जबतुल्यं बदं योज्यम्। अब- ^म

जबघातश्चतुर्गुणः अजवर्गयुक्तः अद्वर्गतुल्यो जातः। अत्रोपपत्तिः ।

अदरेखायां अहक्षेत्रं समकोणं समचतुर्भुजं कार्यम् । दझकर्णः कार्यः । जवरेखा बतरेखा च अझरेखायाः समानान्तरा च कार्या यथा एतद्वयं दझरेखायां कल्लचिह्नयोः संपातं करिष्यति । पुनराभ्यां चिद्वाभ्यां कमनरेखा लसगरेखा अदरेखायाः समानान्तरा कार्या । जकक्षेत्रं बनक्षेत्रं फसक्षेत्रं कगक्षेत्रं चैतानि चत्वारि समकोणसमच-तुर्भुजानि जातानि समानि स्युः। एतेषां योगः चतुर्गुणितजकक्षे-त्रसमानः । पुनः अफक्षेत्रं मछं सहं छतं एतानि समानानि । एतेषां योगः चतुर्गुणितअफक्षेत्रसमः। तदा खशयक्षेत्रं चतुर्गुणितअकक्षेत्र-समानम् । अकक्षेत्रं तु अबबकघातरूपमस्ति । अबजबयोरपि घा-तोऽस्ति । अजनगेतुत्यसवक्षेत्रेण युतं खराथक्षेत्रं अदनगेतुत्यअह-क्षेत्रेण समानं जातम् । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ॥

अबबजयोर्घातः अजजबघातजबवर्गयोगेन तुल्यः। चतुर्गुण-अजजबघातः द्विगुणअजजदघातेन तुल्यः । चतुर्गुणजबवर्गो जद-वर्गेण समानः। तदा चतुर्गुणअबजबघातो द्विगुणअजजदघात-जदवर्गयोगेन तुल्यः । पुनः अजवर्ग उभयोर्योज्यः । तदा चतुर्गुण-अबजब्धातअजवर्गयोयोंगो द्विगुणअजजद्धातअजवर्गजद्वर्गयो-गेन तुल्यः । योगस्तु अदवर्गीऽस्ति ।

अथ नवमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया अभीष्टं खण्डद्वयं कार्ये तत्र खण्डद्वयवर्ग-योग एकखण्डरेखार्द्धयोरन्तरस्य द्विगुणवर्गेणार्द्धरेखाया द्वि-गुणवर्गयुतेन समानः।

यथा अबरेला जिचहोपरि अद्विता कृता दिचहोपरि सण्डद्वयं कृतम् । तत्र अद्वर्गद्ववर्गयोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजद्वर्गयोयीं-गत्रत्योऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

जिचहात् जहरूम्बः अजरेलातुल्यः कार्यः । पुनः अहरेला बह-रेला च कार्या । दिचिहात् दझरेला जहरेलायाः समानान्तरा कार्या । श्रचिद्वात् शवरेला दजरेलायाः समानान्तरा कार्या । अश्वरेला **क**मा

फार्या । अजहत्रिभुजे बजहत्रिभुजे अज-भुजबजभुजी जहभुजेन समानी स्तः जिचहस्य कोणद्वयं समकोणमस्ति । अहज- अ-

कोणः समकोणार्द्धो जातः । बहजकोणोऽपि समकोणार्द्धो जातः ।

अहझकोणः समकोणो जातः । एवं बदझत्रिभुजे बकोणः समकोणा-र्द्धमिस्त । बद्शकोणः समकोणोऽस्ति । तदा बझदकोणोऽपि समको-णार्द्ध जातः । बदशद्भुजौ समानौ जातौ। एवं हवश्विभुजे हवभुज-**झव**भुजी समानी स्तः । अजहजयोः समत्वेन अहवर्गो द्विगुणअज-वर्गेण समानो जातः । एवं ह्यावर्गो द्विगुणझववर्गेण समानो जातः । झववर्गस्तु जदवर्गतुल्योऽस्ति । तदा अहवर्गहझवर्गयोगः अझव-गोंऽस्ति । अयं अझवर्गः अदवर्गदझवर्गयोगतुल्योऽस्ति । अदवर्ग-दश्वर्गयोगः अदवर्गदबर्गयोगेन तुल्यः। एते सर्वेऽपि द्विगुणअ-जनगृद्धिगुणजदनग्योगेन तुल्याः सन्ति । इदमेनासाकमिष्टम् ॥

मकारान्तरम् ॥

अदरेलायां बदरेलायां दझक्षेत्रं दसक्षेत्रं ^ल च समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । जवरेला ^श जदरेलायास्तुल्या पृथकार्या । अहरेला कार्या। सनरेला वर्द्धनीया लिचिह्रपर्यन्तम् । वफरेला जछरेला च अझरेलायाः समानान्तरा कार्या । शगकखरेखा अबरेखायाः समानान्तरा कार्या।

वलक्षेत्रं दसक्षेत्रं च समानं जातमिति निश्चितम् । दमक्षेत्रं जतं लगं शफं एतानि चत्वारि समानि । एवं अ व ज द ब नकक्षेत्रं खर्छं मगं कफं एतान्यिप समानानि । ल जशक्षेत्रखर्छक्षेत्रयोयोंगे पद्मक्षेत्राणि सन्ति । श तानि च अजवर्गजदवर्गयोगतुल्यानि । शे- झ फ छ इ षाणि पद्मक्षेत्राणि पूर्वपद्मक्षेत्रसमानि सन्ति । एतानि दशक्षेत्राणि

षाणि पश्चक्षेत्राणि पूर्वपञ्चक्षेत्रसमानि सन्ति । एतानि दशक्षेत्राणि मिथो मिलित्वा दश्चवर्गदसवर्गयोगतुल्यानि सन्ति । तदा अदवर्ग-दबवर्गयोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोगतुल्यो जातः । इदमे-वासिदिष्टम् ।

मकारान्तरम् ।

अजरेसायाः सकाशात् जहं जदतुल्यं पृथक्कार्यम् । तत्र द्विगुण-अजजह्वातअहवर्गयोयोगः अजवर्गजहवर्ग- अहं जदत्व व योयोगेन तुल्यः । तत्र जहं जदतुल्यं अहं दबतुल्यमस्ति । तदा द्विगुणअजजद्वातद्ववर्गयोयोगः अजवर्ग-जदवर्गयोयोगेन तुल्योऽस्ति । पुनः अजवर्गजदवर्गयोयोगो द्वयो-योज्यते । तदा द्विगुणअजजद्वातअजवर्गजदवर्गद्ववर्गाणां योगः अदवर्गद्ववर्गरूपोऽस्ति । अयं द्विगुणअजवर्गद्विगुणजद्वर्गयोगेन तुल्यो मवति ॥

दशमं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायामपररेखा युक्ता कार्या तत्र सर्वरेखाया वर्गो योज्यरेखावर्गयुतः पूर्वरेखार्द्धवर्गेण द्विगुणेनाऽवशिष्टरेखायो-ज्यरेखावर्गेण द्विगुणेन समानोऽस्ति ।

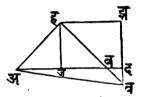
यथा अबरेखायां बदरेखायोगः कृतः । पुनः अबरेखा जिचेदे पर्दिता कृता । तत्र अदवर्गबदवर्गयोयोंगो द्विगुणअजवर्गद्विगुण-जदवर्गयोयोंगेन तुल्योऽस्ति ।

^{9 °}या उपरि A. B. ९ °स्तोपरि A. B. F.

अत्रोपपत्तिः ।

जिचहात् जहलम्बः अजतुल्यः कार्यः। अहरेला हबरेला च युक्ता कार्या । दिचहात् दझरेला जहरेलाया समानान्तरा कार्या । हचि-हात् हङ्गरेखा जदरेखायाः समानान्तरा कार्या। एते रेखे झचिह्ने संल-मे स्तः। हबरेला झदरेला दीर्घा कार्या यथा विचेहे संपातं करिष्यति । पुनः अवरेखा संयोज्या । अजहत्रिभुजे बजहत्रिभुजे च अजं बजं हुजं एतानि समानि सन्ति । जस्य कोणद्वयं समकोणमस्ति तदा अहजकोणोऽर्द्धसमकोणोऽस्ति । बहजकोणश्चार्द्धसमकोणोऽस्ति अहबकोणश्च समकोणो जातः । दजहकोणस्तु पूर्वमेव समकोण आसीत्तदा झहजकोणोऽपि समकोणो जात एव । पुनः बहझकोणः

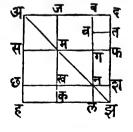
अर्द्धसमकोणो जातः । हझवकोणः स-मकोणो जातः। तदा झवहकोणो हझव-त्रिभुजेऽपि अर्द्धसमकोणो जातः । तदा हझभुजवझभुजी च समानौ जातौ



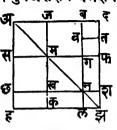
अनेनैव प्रकारेण बद्युजवद्युजी बवदत्रियुजे समानी सः। पुनः अजहजयोः समत्वेन अहवर्गो द्विगुणअजवर्गेण तुल्यो जातः। पुनहेववर्गो द्विगुणह्झवर्गेण समानः । द्विगुणजदवर्गेणापि समानः। तदा अहवर्गहचवर्गयोगः अववर्गतुल्यः । अयं अदवर्गदववर्गयो-गस्य अदवर्गद्ववर्गयोगस्यापि तुल्यः। अयं योगो द्विगुणअजवर्ग-द्विगुणजदवर्गयोयोंगेन तुल्यो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अदरेखोपरि बदरेखोपरि च दहक्षेत्रं दबक्षेत्रं च समकोणसमचतु-र्भुजं कार्यम् । तत्र अझकर्णः कार्यः । ज-चिह्नात् बचिह्नाच जकरेखा बलरेखा च अहरेखायाः समानान्तरा कार्या । मचिहात् नचिद्वात मसफरेखा नछशरेखा अदरे-खायाः समानान्तरा कार्या ।



दवक्षेत्रशलक्षेत्रे समाने जात इति निश्चितम् । पुनर्जसक्षेत्रं बमक्षेत्रं मछक्षेत्रं गखक्षेत्रं चैतानि समानीति नि-श्चितम्॥ एवं हि दगक्षेत्रं फनक्षेत्रं खहक्षेत्रं स नकक्षेत्रं चैतानि समानीति । पुनर्जसक्षेत्र-ত फकक्षेत्रयोयोंगः पूर्वक्षेत्रपञ्चक्षेत्ररूपोऽस्ति । एतद्वयं अजवर्गजदवर्गयोर्योगतुल्यमस्ति । शेषं पञ्चक्षेत्राणि एतत्पञ्चक्षेत्रसमानि सन्ति। एतानि सर्वाणि क्षेत्राणि दहक्षेत्रदबक्षेत्रयोर्थोगतुल्यानि सन्ति । ततः अदवर्गबदवर्गयोर्थोगः द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोयोगेन तुल्यो जातः।



पुनः प्रकारान्तरम् ।

अदरेखायाः बचिद्वे खण्डद्वयं कार्यम्।तदा द्विगुणो जबजद्यातो बद्वर्गयुक्तः अथवा द्विगुणअजजद्घात-बद्वर्गयोयोंगो जबवर्गजद्वर्गयोयोंगतुल्यो-

ऽस्ति । अजवर्गजदवर्गयोगेनापि तुल्योऽस्ति । पुनः जदवर्गयोयोगः पूर्वद्वयोयोज्यते । तदा अद्वर्गबद्वर्गयोयोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोर्थोगेन तुल्यो भवति ।

अथैकादशं क्षेत्रम्॥

तत्रैकरेखायास्तथा खण्डद्वयं कार्यं यथैकखण्डरेखयो-र्घातो द्वितीयखण्डवर्गः स्यात्।

यथा अबरेला कल्पिता । अस्योपरि अदसमकोणसमचतुर्भुज-क्षेत्रं कार्यम् । अजभुजो हचिहेऽद्वितः कार्यः । ^झ बहरेखा लगा कार्या। हुअरेखा तथा दीर्घा कार्या अ यथा इझरेखा हबतुत्या स्यात् । पुनः अझरेखायाः अवक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । अस्मात् क्षे- ह त्रात् अबरेखायाः तचिह्नोपरि तादशं खण्डद्वयं ज जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

हअभुजअवभुजयोर्योगः हबभुजादिषकोऽस्ति । हझभुजादप्य-षिकः । पुनः हअभुज उभयोः शोध्यः । तदा अझं अतमिप च अबान्यूनमित्ति । तस्मात् अवस्य तिचिद्वे सण्डद्वयं तथा जातम् ।

कथं जातमित्यत्रोच्यते ।

जअरेला इचिद्देऽदिता जाता । जअरेलायामझरेलाया योगः कृतः । तदा जझअझघातहअवर्गयोयोंगो हझवर्गेण समानोऽस्ति । इववर्गेणापि तुल्योऽस्ति । इअवर्गअववर्गयोयोंगेनापि तुल्योऽस्ति । पुन्हेअवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा जझझअघातो जझझवयोषितोऽपि झकक्षेत्ररूपः अववर्गसमअदक्षेत्रेण तुल्यो जातः । पुनः अकक्षेत्रं द्वयोः शोध्यम् । तदा अतवर्गसमं अवक्षेत्रं तदक्षेत्रसमानमविश्वष्टम् । तदा अतवर्गसमं अवक्षेत्रं तदक्षेत्रसमानमविश्वष्टम् । तदक्षेत्रं तवतकघातमस्ति अजतवघाततुल्यमपि च । तदा अवतवधातः अतवर्गसमानो जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अदं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । बदं हिचिहेऽद्वितं कार्यम् । हअरेखा कार्या । हझं हअतुल्यं कार्यम् । जझ-रेखा लगा कार्या । अनया अबरेखाया विचेहे तादशं सण्डद्वयं कृतम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

झतरेला बअरेलायाः समानान्तरा कार्यी । जअरेला तथा वर्द्धनीया यथा **झत**रेलायां त-

चिह्ने संपातं करोति । पुनर्वचिह्नाद् वकलरेला बदस्य समानान्तरा कार्या । तवक्षेत्रं वदक्षेत्रं मिश्रः समानम् । अलक्षेत्रमुभयोर्योज्यम् । तदा तलक्षेत्रं अदक्षेत्रं च समानं भविष्यति । बदस्य हचिह्नेऽर्धीक-रणाद् वझयोगाचेदं निश्चितं दश्रझचघातः अदक्षेत्रसमानोऽस्त्रीति जततक्षघातेनापि समः ।

अनयोपपत्त्या तकझबयोः समानत्वं निश्चितम् । तकतअरेखयोः समानत्वं च निश्चितम् । तदा वदक्षेत्रसमानं तबक्षेत्रमस्ति । तत् अब-बवघातोऽस्ति । अयं अववर्गतुल्योऽस्ति ॥

अथ द्वादशक्षेत्रम्।

यन्निभुजमधिककोणरूपमस्ति तत्कोणसन्मुखभुजस्य वर्गो-ऽवशिष्टभुजद्वयवर्गयोगादधिको भवति ।

यथा अबजित्रभुजस्य अकोणोऽधिककोणोऽस्ति। बिचिद्वाद् बदलम्बो विधितअजरेस्रोपरि कार्यः । बजवर्गो बअवर्गअजवर्गयोगादिधकोऽस्ति। कि-यानिधकः। द्विगुणअजअद्घाततुल्योऽधिकः।

अत्रोपपत्तिः ।

जदस्य अचिद्दे खण्डद्वयं जातम् । जदवर्गो दअवर्गअजवर्गद्विगुणअदअजघातयोगतुल्योऽस्ति । पुनर्बदवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः ।
एवं कृते बदवर्गदजवर्गयोगो बजवर्गतुल्योऽस्ति । बदवर्गदअवर्गयोगो बअवर्गतुल्योऽस्ति । अयं अजवर्गद्विगुणदअअजघातयुक्तः
कृतस्रेत् बजवर्गतुल्यो भवति । तदा बजवर्गो बअवर्गअजवर्गयोगाद्
द्विगुणदअअजघाततुल्योऽधिको जातः । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

अथ त्रयोदशक्षेत्रम्।

यस्य त्रिभुजस्य न्यूनकोणोऽस्ति तत्कोणसन्मुखभुजवर्ग इतरभुजवर्गयोगान्यूनो भवति ।

यथा अबजित्रमुने बकोणो न्यूनकोणोऽस्ति । अचिद्वात् अद-रूम्बो बजोपरि कार्यः । अजवर्गः अबवर्गबजवर्गयोगाद् द्विगुण-जबबद्घाततुल्यो न्यूनोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः।

जबस दिचहे सण्डद्वयं जातम् । तदा जबवर्गबदवर्गयोगो द्वि-

गुणजबबद्धातजदवर्गयोगसमानः । पुनः अद्वर्ग उभयोयोज्यः ।

तदा जबवर्गबद्वर्गअद्वर्गयोगो जबवर्गबअव-र्गयोगतुल्यः । अयं द्विगुणजबबद्धातजद्वर्ग दअवर्गयोगसमानः। जद्वर्गद्अवर्गयोगो जअ-वर्गसमानः। तदा जअवर्गो जबवर्गबअवर्गयो-



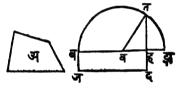
गाद् द्विगुणजबबद्याततुल्यो न्यूनो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्रैकं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रमन्यक्षेत्रसमानं कर्तव्य-मस्ति ।

यथा अक्षेत्रसमानं क्षेत्रं कर्तव्यमस्ति । तदा तत्क्षेत्रसमानमेकं

समकोणं क्षेत्रं कार्यम् । तद् ब-जदहक्षेत्रं भवति । पुनर्यदि बह-भुजहद्भुजौ समानौ स्यातां तदा क्षेत्रं सिद्धमेव । यदि समानौ न



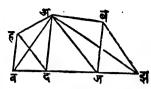
स्यातां तदा बहुभुजो वर्द्धनीयः । हुझं हृद्तुल्यं कार्यम् । बझ्च्यासेन बतझं वृत्तार्द्धं कार्यम् । दहरेखा तिचहुपर्यन्तं वर्द्धनीया । तदा हत-रेखा कर्तव्यसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजरूपा जाता ।

अत्रोपपत्तिः ।

बझरेला विचिद्वेऽदिता जाता हिचिद्वेऽस्या न्यूनाधिकं खण्डद्वयं जातमिला । तदा बहह्झघातवहवर्गयोगो बझवर्गसमानो भवति । उक्तप्रकारेणायं बझवर्गो वतवर्गसमानः । अयं वतवर्गश्च वहवरी-हतवर्गयोगसमानः । पुनर्वहवर्ग उमयोः शोध्यः । शेषं बहह्झघातो हतवर्गसमानो जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

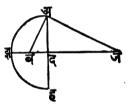
एकं त्रिभुजमभीष्टक्षेत्रसमानं कार्य यथा अबजदहक्षेत्रं कल्पि-तम्। अस्मिन् क्षेत्रे त्रिभुजानि कार्याणि तानि यथैकं अबजित्रभुजं अजदत्रिभुजं अदह्तिभुजमेतानि क्षे-त्राणि जातानि। पुनरेकं त्रिभुजं अवज-त्रिभुजअजद्तिभुजयोगसमानं कार्य-मुक्तप्रकारेण। तद्यथा। दजरेला वर्द्ध-



भूक्तिमकारण । तथ्या । द्जरखा वद्ध- प्राप्त । तथ्या । द्जरखा वद्ध- प्राप्त । विच्या । इमे रेखे सिच्ये संपातं करिष्यतः। पुनः अझरेखा कार्या । तदा अवजित्रभुज- अझजिभुजे समाने । तदा अझदित्रभुजं अवजित्रभुजअजदित्र- भुजयोगसमानं जातम् ।

पुनरनेनैव प्रकारेणान्यत्रिभुजं अझदत्रिभुजअदहत्रिभुजयोगसमानं कार्यम् । पुनरनेनैव प्रकारेण त्रिभुजं कार्य यावत्कल्पितक्षेत्रसमानं

स्यात् । पुनः समकोणसमचतुर्भुजं त्रिभुजस-मानं कार्यम् । यथा अबजित्रभुजे अचिहाद् अदलम्बो बजोपिर कार्यः । अयं लम्बो इ यावद् दहं बजार्द्वतुल्यं भवति तावत्पर्यन्तं वर्द्वनीयः। अह्वव्यासेन अझहवृत्तार्द्वं कार्यम् ।



इदं वृत्तं जबरेसायां झिचिह्ने संपातं करिष्यति । तदा दर्झं कर्तव्यसम-कोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजो जातः । यतो दझवर्गः अददह्रघातस-मानोऽस्ति । अयं अददह्रघातः अदबजाई घातसमानः । पुनः अदब-जाई घातिक्रभुजस्य क्षेत्रफलम् । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टचै द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राद्ध् जगन्नाथ इति समिभधाख्यातनाम्ना प्रणीते । मन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्थध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं संगतोऽभूद्वितीयः॥

इतिश्रीमञ्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते

द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

भथ तृतीयोऽध्यायः षद्त्रिंशच्छकलैर्युतः प्रारभ्यते ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥

तत्राज्ञातकेन्द्रस्य वृत्तस्य केन्द्रज्ञानोपायः क्रियते ॥

यथा अबदृत्तम् । तैत्पालौ दिचहजिचहे कृते । जदरेला च कृता । इयं रेला हिचिहेऽद्विता कृता । पुनर्हचिह्नादस्यां रेलायां हअलम्बः कार्यः । तथा पार्श्वद्वये लम्बो बर्द्धनीयो यथा वृत्तपालौ अ-चिह्ने बचिह्ने संपातं करोति । पुनः अबरेला धिचह्नेऽअद्विता कार्या तिच्चहमेव वृत्तकेन्द्रं स्यात् ।

अत्रोपपत्तिः ।

यद्येतत्केन्द्रं न स्यात् तिचन्हं केन्द्रं भैविष्यति। पुनः तजरेला हतरेला तदरेलाश्च कार्याः। तदा तजहित्रभुजस्य तदहित्रभुजस्य भुजाः परस्परं तुल्या भवन्ति। कोणा अपि समाना भविष्यन्ति। तत् तहजकोण-तहदकोणावपि समानो जातौ। एतत्कोणद्वयं समकोणद्वयं जातम्। पुनः अहजकोणअहदकोणौ पूर्वं समकोणावास्ताम्। एतदनुपपन्नम्। तदा वचिक्षमेव केन्द्रं नान्यत्॥

असादिदं निश्चितं यदि हे पूर्णज्ये तथा संपातं करिष्यतो यशा

चत्वारि समकोणक्षेत्राणि भविष्यन्ति । यैधेका पूर्णज्या द्वितीयज्यार्द्धे लमा भैवति समकोणक्षेत्र-द्वयं स्यात् तदेका पूर्णज्या केन्द्रलमा स्यात् । पुनरेतन्निश्चितमेकस्याः पूर्णज्याया अद्धीनिस्रतो लम्बः केन्द्रे संपातं करोतीति ।



अथ पूर्वकृतअबरेखायां विचन्हं केन्द्रं न स्यात् झं केन्द्रं स्यात् । तदा अबरेखा विचन्हेऽप्यद्विता भवति झचिन्हेऽप्येतदशुद्धम् ॥

१ तस्मिन् पाले D. तस्मिन् इत्तपाले K. २ इति कल्प्यते A. B. ३ A. B. add चेत. A. B. have पुनरेका &c. Y कार्यो A. B. ५ एतत्तदेव संभवित यदैका पूर्णज्या &c. B.

अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तपाली चिह्नद्वयलग्ना रेखा कार्या सा वृत्तान्तर्गतैव भवति न हि बोह्मगा।

यथा अवरृत्तपालौ जिचन्हद्चिन्हयोर्जदरेखा कृता तदेयं रेखा रृत्तान्तर्गतैव जाता ।

अत्रोपपत्तिः।

यदि वृत्तान्तर्गता न स्यात् तदा बहिर्गता भवति यथा जहदमस्ति । अस्य वृत्तस्य केन्द्रं निष्काश्यते । तत्र झिचिहं केन्द्रं चेल्लम्यते पुनः

झदशजरेले कार्ये। जहदरेलायां हचिह्नं कार्यम्। झहरेला कार्या। झदहकोणझजहकोणौ झदह-त्रिभुजे झजहत्रिभुजे च तुल्यौ स्तः। झहदकोणो अ झजहकोणादिषकोऽस्ति। तदा झहदकोणो झ-दहकोणादिषको भविष्यति। तदा झदरेला झबरे-खापि च झहरेलाया अधिका भविष्यति। इदं बा

स्वापि च झहरेसाया अधिका भविष्यति । इदं वाधितम् । अनेन प्रकारेण जदरेसा वृत्तपाळावपि न पततीति निश्चितम् । तदा जदरेसा वृत्तान्तर्गतैव स्थात् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्ते पूर्णजीबायां केन्द्रान्निस्तरेखा संपातं करिष्यति । यदि सा केन्द्रगा रेखा पूर्णज्यार्द्ध करोति तदा सैव लम्बः। यदीयं रेखा लम्बरूपा भवति तदा पूर्णज्याया अर्द्ध करि-ष्यस्येष ।

बशा अववृत्ते जदपूर्णज्यायाया झकेन्द्रानिस्तया झहरेखया सं-पातः कृतः । पुनर्जदं हचिह्ने तथैवार्द्धितं कृतं तदा झहं जदोपरि कम्बो जातः ।

⁹ बहिर्गता A. B.

अस्योपपत्तिः ।

झजरेला **झद**रेला च कार्या। झजहत्रिभुजस्य **झद**हत्रिभुजस्य च

भुजाः परस्परं समानाः सन्ति । कोणा अपि परस्परं समानाः सन्ति । तदा **झहजकोणझहद**कोणौ मिथ-स्तुत्यौ स्याताम्। तदैतौ द्वौ कोणौ समकोणौ जातौ।

पुनर्यदि **झहं** जदोपरि लम्बः कल्पनीयस्तदा ज

अत्रोपपत्तिः ।

श्रजहकोणश्रदहकोणौ मिथस्तुल्यौ स्तः । हचिहस्य कोणद्वयं समकोणद्वयमस्ति। श्रहरेखा श्रहजित्रभुजस्यापि भुजोऽस्ति श्रहदित्रभुज-स्यापि भुजोऽस्ति । तदैतित्रभुजद्वयस्य भुजाः कोणाश्च परस्परं समाना जाताः। तदा हजभुजहदभुजौ समानौ जातौ। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

यदि झहरेसा जदपूर्णजीवाया अर्द्ध करोति लम्बरूपा च न स्यात् तदा कल्प्यते हिचहात् जदपूर्णज्योपिर हवलम्बोऽस्ति। तदा हवरेसा-जदरेसासंपातेन द्वौ समं कोणौ जातौ । द्वितीयरेसाया हवरेस-यार्द्धमिप कृतम् । अनयोर्मध्ये जहाँ हे क्रिक्ट कापि केन्द्रे न गता । हैदं बाधितम् ।

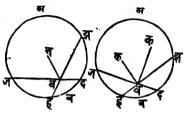
यदि झहरेसा जदपूर्णज्यायां लम्बो भवत्यद्धं न करोति तदा ज-दरेसाया अर्द्धं किचेह्रे भविष्यतीति कल्प्यते। तसात् किचेह्यत्तकरेसा झहरेसायाः समानान्तरा कार्या। तदैषा तकरेसा जदरेसायां लम्बो भविष्यति। यद्येकरेसा द्वितीयरेसायाः समकोणे संपातं करोत्यर्षे च करोति तत्र समकोणद्वयं जातमेकापि रेसा केन्द्रं न गैतेदं बाधितम्॥

⁹ इदमनुपपन्नम् A. B. २ °वेदमनुपपन्नम् A. B.

अय चतुर्थ क्षेत्रम्।

यदि हे पूर्णज्ये केन्द्रादन्यत्र संपातं करिष्यतस्ते हे अपि

रेखे संपातेऽद्धिते न भवतः । यथा जदपूर्णज्या हङ्गपूर्णज्या अववृत्ते विचिद्दे संपातं करिष्यति । अस्य वृत्तस्य केन्द्रं तिचिद्दमस्ति । अत्रोपपत्तिः ।



यदि विचिद्वे द्वयोरर्द्धे भवति तदा तवरेखा कार्या । इयं तवरेखा-द्वयोः पूर्णजीवयोर्लम्बो भविष्यति । तदा तवहसमकोणस्तवजसम-कोण एतौ मिथः समानौ स्याताम् । इदमशुद्धम् । तदिष्टं सिद्धम् ।

प्रकारान्तरम् ।

विद्यात् जदरेस्रोपरि वकलम्बः कार्यः । हझरेस्रोपरि वललम्बः कार्यः।तदैतौ लम्बौ केन्द्रे संपातं करिष्यतः।तदा विचिहं केन्द्रं स्यात् । केन्द्रं त्वन्यत्र कल्पितम्।तसादेतदशुद्धम्। असदिष्टमेव समीचीनम्॥

अथ पद्ममं क्षेत्रम् ।

यद्वृत्तद्वयं परस्परं संपातं करोति तयोः केन्द्रमेकत्र न स्यात् किं तु भिन्नं भिन्नं स्यादिति प्रतिपाद्यते ।

यथा अबरृत्तं जद्रृत्तं कल्पितम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

यदि द्वयोरेकं केन्द्रं स्यात् तर्हि इचिहे केन्द्रं कल्पितम् । इअ-रेसा कार्या हझदरेसा च कार्या । तदा हझरेसा इअ-

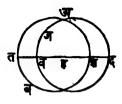
रेखासमाना स्यात्। कुतः। व्यासाद्धेत्वात् । हद-रेखा हअरेखापि समाना। अर्द्धव्यासत्वात् । पुनः इझरेखा हदरेखासमाना जाता । हअरेखायाः

समानत्वात्। एका रेखा द्वितीयरेखायाः खण्डमिता। तसाहूयोः केन्द्रं भिन्नं स्यात्। इदमेवासाकमिष्टम् ॥

९ मित्रं भित्रम् । K.

प्रकारान्तरम् ॥

झेहरेला वर्द्धनीया वेतपर्यन्तम् । तदा हझ-रेला हदरेलाया न्यूनास्ति । तदा हवरेलाया अपि न्यूना भविष्यति । हतरेलासमानास्ति । इयं हतरेला हवरेलाया अधिकास्ति । एतदशुद्धम्।



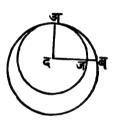
अथ षष्ठं क्षेत्रम्।

यष्ट्रचद्वयमेकस्मिश्चिहेऽन्तर्मिलति तष्ट्रचद्वयस्य केन्द्र-मेकत्र न भवति ।

यथा अबवृत्तं अजनुत्तम्।

अस्योपपत्तिः ।

यदि द्वयोः केन्द्रमेकमेव स्यात्तदा द्विहं केन्द्रं किल्पतम्। दअरेला कार्या। दजबरेला च कार्या। तदा दजरेला दबरेला च मियस्तुल्या मविष्यति। दअरेलातुल्यत्वात्। एतदशुद्धम्। अस्मदिष्टमेव समीचीनम्।



अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

यिश्वहं वृत्तान्तर्गतं केन्द्रादन्यत्र स्थितं भवति तस्मा-द्रेखा वृत्तपालिपर्यन्तं नेयाः । तासु मध्ये या रेखा केन्द्रं स्पृष्ट्वा वृत्तपालिगता सा रेखा सर्वाभ्यो रेखाभ्योऽधिका क्रेया। या केन्द्रसम्मुखा सा सर्वाभ्यो न्यूना क्रेया । महत्या रेखाया या रेखा निकटस्थिता भवति साधिका भवति । या न्यूनरेखानिकटस्थिता भवति सा न्यूना भवति । महत्या रेखाया अथवात्यल्परेखाया उभयदिशि तुल्यचापान्तरलग्ने रेखे समाने क्रेये ।

यथा अववृत्ते तं केन्द्रं हं कल्पितचिह्नम्। इतरेखा कार्या। ततः सो-

९ दृझ B. K. २ तपर्यन्तम् K.

भयदिशि अचिहपर्यन्तं द्चिहपर्यन्तं वर्द्धनीया । पुनर्हचिहात् हझरेला इयरेला इअरेला कार्या। तदा इजरेला हझरेलाया अधिकास्ति।

अत्रोपपत्तिः।

त्रझरेखा कार्या। इतरेखातझरेखायोगो इजतुत्यो इझरेखाया अधिकोऽित । अनेन प्रकारेण या काचित् रेखा तस्या इजरेखा अ-

विका भवति । पुनहृदरेला हअरेलाया न्यूना-िल्त । कथम् । तअरेला कार्या । तअरेलातुल्या तदरेला तहहअयोगान्यूनास्ति । पुनहृतरेलो-मयोः शोध्या । शेषं हदरेला हअरेलाया

न्यूना स्यात् । अनेन प्रकारेणान्यरेखाभ्योऽपि न्यूना स्यात् । पुन-इंझरेखा इवरेखाया अधिकास्ति। कथम् । यदि वतरेखा झतरेखा च योज्येते तदा इतझत्रिमुजे इतवित्रमुजे तझभुजतवभुजौ समानौ स्तः। तहभुज उमयोरेकोऽस्ति। इतझकोणो इतवकोणादिधकोऽस्ति। तदा इ-झरेखा इवरेखाया अधिका जाता। अनेन प्रकारेणान्यापि रेखा ज्ञेया।

यदि इतबकोणो इतअकोणस्य समानः क्रियते इबरेखा योज्यते तदेयं रेखा इअरेखायाः समाना भविष्यति । कृतः । इतबित्रमुजे इतअत्रिमुजे तबभुजतअभुजौ समानौ । इतभुज उभयोरेकोऽस्ति । इतकालेणहृतअकोणौ समानौ स्तः । तेन इबरेखा इअरेखायाः समाना जाता । अस्य रेखाद्वयस्य समाना रेखा कापि नास्ति । यदि मविष्यति सा इकरेखा कल्पनीया । तकरेखा कार्या । तदा तकइ-त्रिभुजबतइत्रिभुजयोर्भुजाः समाना मविष्यन्ति । तदा कतइबतइ-कोणौ समानौ स्तः । इदं वाधितम् । अस्माकिमष्टं सिद्धम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम्।

यश्चिहं वृत्ताद्वहिर्भविष्यति तश्चिहाद्रेखा वृत्तपाल्लिपर्यन्तं कार्याः । तत्र या रेखा वृत्ते संपातं करिष्यन्ति ताम्यो

⁹ कार्यो D. K. ३ कार्यो D. K. ३ भेवति A. B.

रेखाभ्यः केन्द्रगता रेखाधिका भविष्यंति । पुनरिधकरे-खाया या निकटा भवति सा दूरिस्थितरेखाया अधिका भ-वित । या रेखा वृत्तपालिपर्यन्तमात्रगता न तु भिष्वा गता-स्तासु मध्ये या केन्द्रसम्मुखा भवित सा सर्वाभ्यो न्यूना ज्ञेया। अस्या न्यूनरेखाया या निकटिस्थिता भवित सा दूरिस्थिताया न्यूना भवित । यद्रेखाद्वयमुभयदिशि समानचापे स्थितं तत्परस्परं समानं भवित ।

यथा अववृत्तं किल्पतं तत्र मकेन्द्रं जिचिह्नं किल्पतम् । जमदरेला कृता सा वृत्ते दविच्ह्नयोः संपातं करोति । पुनर्जहरेलाजझरेलाज-अरेलाः कार्याः । तदा जदरेला जहरेलाया अधिका स्यात् । यदि महरे-ला कियते तदा जममहयोगतुल्या जमदरेला जहरेलाया अधिका-िल्त । अनेन प्रकारेण सर्वाभ्यो रेलाभ्योऽधिका स्यात् । जहरेलापि जझरेलाया अधिका स्यात् । कथम् । यदि मझरेला कियते तदा जमहत्रिभुजे जमझत्रिभुजे महभुजमझभुजौ समानौ । जमभुज उभयोरेक एव । पुनर्जमहकोणो जमझकोणादिधकोऽिल्त । तदा जहभुजो जझभुजादिधको जातः ।

अनेन प्रकारेण जश्नरेला जअरेलाया अधिकास्ति । पुनर्जवरेलापि

जकरेखाया न्यूनास्ति। कथम्। यदि मकरेखा निष्काश्यते तदा जमरेखा जकरेखाकमरेखा-योगान्न्यूना स्यात्। पुनर्यदि मवरेखा मक-रेखा उभयोः शोध्यते तदा जवरेखा जकरे-खाया न्यूना स्यात्। एवमन्याभ्योऽपि न्यूना स्यात्। पुनर्जकरेखापि जलरेखाया न्यूनास्ति।



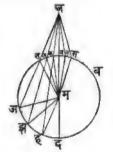
कथम्। यदि मलरेखां कुर्मस्तदा मकरेखाजकरेखायोगो मलरे-खालजरेखायोगान्न्यूनोऽस्ति । पुनर्मकरेखा मलरेखोभयोर्यथाकमं

⁹ अवित A. B. २ निष्कास्या K.

शोध्यते तदा जकरेला जलरेलाया न्यूना स्यात् । एवं जलरेला जतरेलाया न्यूना स्यात् ।

अय जमनकोणो जमककोणतुल्यः कार्यः । जनरेखा च कार्या ।

तदा जनरेखा जकरेखायाः समाना भविष्यति । कथम् । जमरेखा जमनत्रिभुजे जमकत्रिभुजे एकैव पतितास्ति । मनभुजमकभुजौ समानौ स्तः । पुनरनयोद्धीं कोणौ समानौ स्तः । तस्मा-जनरेखा जकरेखासमाना जाता । पुनरनयो रेखयोः समानाऽन्यारेखा न भविष्यति । यदि

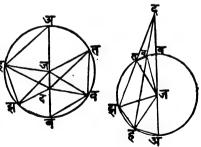


भविष्यति सा जसरेखा किल्पता । मसरेखां कुर्यात् । जमकत्रिभुजे जमसित्रभुजे कमजकोणसमजकोणौ समानौ स्याताम् ।
कुतः । उभयोक्षिभुजयोर्भुजानां समत्वात् । पुनः कमजकोणो नमजकोणेन समान आसीत् । तदा समजकोणनमजकोणौ समानौ जातौ ।
इदं वाधितम् । असादिष्टं सिद्धम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबवृत्ते जं केन्द्रमस्ति । दिचिह्नं कल्पितम् । अधिका रेखा केन्द्र-गता दअसंज्ञा ज्ञेया । या न्यूनरेखा केन्द्रगता न भवति सा दबसंज्ञा ज्ञेया । पुनरिषकरेखाया एकदिशि दहरेखा दश्चरेखा च कार्या ।

अहरेला इजरेला च कार्या।
तदा जअहकोणजहअकोणौ
समानौ जातौ। दहअकोणो
दअहकोणादिधकोऽस्ति। तदा
दअरेला दहरेलाया अधिकास्ति। पुनरिप हझरेला जझ-

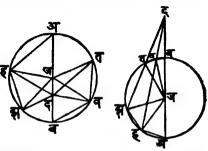


१ रेखां च कुर्मः, D. K. २ °रेखा च कार्या । A. B.

TO MINU AMMONIAS

रेखा च कार्या। तदा जहझकोणजझहकोणी समानी बाती। दहझकोण

एकतरकोणान्न्यूनोऽस्ति । दश्रहकोणोऽभिकोऽस्ति। तदा दहरेला दश्ररेलाया अधिका ह जाता। पुनर्दबरेलाया एक दिशि दबरेला दतरेला च कार्या। बबरेला बतरेला



लगा कार्या। तथा वजरेखा तजरेखापि च लगा कार्या। तदा जबव-कोणजवबकोणी समानी जाती। दववकोणो दववकोणान्न्यूनोऽखि। तदा दवं दवान्न्यूनं जातम्। अनेन प्रकारेण निश्चीयते दवरेखा दत-रेखाया न्यूनाखि। यदि दिग्द्रये द्वौ कोणो समानी कियेते तदा द्वयोः कोणयोद्वें रेखे समाने भविष्यतः। द्वयो रेखयोरन्या तृतीया रेखा समाना न भविष्यति। कुतः। द्वे रेखे एकदिशि समाने न भवतः॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ।

यचिहं वृत्तान्तर्भवति तद्गतरेखा अभीष्टा वृत्तपाछिलग्नाः कार्याः। तासु द्वाभ्यां रेखाभ्यामधिका यदि समाना भवन्ति तदा तिचहं तद्वत्तस्य केन्द्रं भवति।

यथा अवरृते जिन्हं किल्पितम् । जनरेसा जदरेसा जहरेसाः समानाः किल्पताः । बदरेसा बहरेसा च कार्या । पुनर्द्वयोरेसयो-झीचिन्हे विचिह्ने चार्द्धं कार्यम् । जझरेसा जबरेसा योजनीया । तदा जबझित्रभुजस्य जदझस्य भुजाः समानाः सन्ति । कोणा अपि निथः

समानाः सन्ति । तदा झस्य द्वी कोणी समानी नाती । तदा जझरेखा बदरेखाई लम्बो जातः । तसाज्जझरेखा केन्द्रगा मविष्यति । पुनरियं रेखा अतिचिद्वपर्यन्तं निष्कासनीया । अनेनैव प्रकारेण जवरेखा केन्द्रगा भविष्यतीति निश्चितम् । पुनर्जवरेसापि किचिह्नं लिच्ह्रपर्यन्तं निष्कास्या । तदा अतरेसा कलरेसा च केन्द्रगा जाता । इदं रेसाद्वयं जिच्हादन्यत्र संपातं न करिष्यति । तसार्ज्ञं केन्द्रं जातम् ॥

प्रकारान्तरम्॥

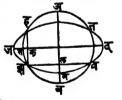
अवजद शृते हिचिहं किल्पतं हआह झह वरेखास्तुल्याः किल्पताः । तदा हिचिहं केन्द्रं जातम् । यदि हिचिहं केन्द्रं न भवति तदा तिचिहं केन्द्रं किल्पतम् । हतरेखा योज्या । इयं रेखा बचिह दचिह पर्यन्तं निष्कास्या । तदेयं हवरेखा यावत्यो हिचिहात् वृत्तपालि पर्यन्तं निष्का-

सिता रेखास्ताभ्योऽधिका भविष्यति । तिसो रेखा अस्या रेखाया एकदिशि द्वाभ्यां रेखाभ्यामधिकाः समाना जाताः । तत्रैकदिशि रेखाद्वयमपि समानं न भवति । तस्मादेतदशुद्धम् ।

अथ दशमं क्षेत्रम् । द्वे वृत्ते चिह्नद्वयादन्यत्र संपातं न करिप्यतः ।

यदि कुरुतस्तदा अबवृत्तद्जवृत्ते कल्पिते । अनयोईचिहे झ-चिहे वचिहे तचिहे संपातो जात इति कल्पितम् । हझरेला झवरेला

संयोज्या। अनयो रेखयोः कचिहे छचिहे चार्द्धे कार्यम् । एतचिह्नद्वयात् कद्वलम्बो छअलम्बश्च कार्यः। एतौ द्वौ लम्बौ प्रत्येकं केन्द्रगौ भविष्यतः। अनेन लम्बद्वयेन अब-



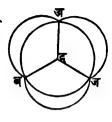
वृत्तस्य हसझचापझबवचापयोः पूर्णज्याया अर्द्ध द्जवृत्तस्य हजझ-चापझमवचापयोः पूर्णज्यायाश्चाद्धी कृतम् । तदा द्वयोः केन्द्रमेकं जातम् । इदमशुद्धम् ॥

मकारान्तरेणाह ॥

एकस्य वृत्तस्य केन्द्रं दं कल्पितम् । दअरेला दबरेला दजरेला

Digitized by Google

संयोज्याः। एता रेखाः समानाः। कुतः। केन्द्रात् कृतपालिपर्यन्तं गतत्वात्। एता एव तिस्रो रेखा द्वितीयकृते केन्द्रादन्यचिद्वानिस्ता कृत्तपालिप-र्यन्तं समानाः सन्ति। तदा द्विहं द्वितीय-कृतकेन्द्रं जातम्। इदं वाधितम्॥



अथैकादशं क्षेत्रम् ।

यदवृत्तद्वयमेकिचिह्ने संलग्नमन्तर्बिहर्वा संलग्नं तयोः केन्द्र-गतैकारेखा वृत्तसंपात एव लगित नान्यत्र ॥

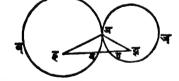
यथा अबवृत्तअजवृत्ते अचिद्दे संलग्ने स्तः । उभयोर्वृत्तयोः केन्द्रं

ह्झचिहे भवतः । ह्झरेखा संयोज्या वर्द्धनीया च । इयं रेखा यदि अचिहे न लगति तदा व-चिहे तचिहे संपातं करिष्यतीति कल्पनीयम् । अहरेखा अझरेखा च संयोज्या । यदि वृत्तद्वय-



मन्तः संरुमं तदा हझरेखाझअरेखयोर्योगो हअरेखाया अधिको भविष्यति । पुनर्हझरेखाझअरेखयोर्योगो हतरेखायाः समानोऽस्ति । हअरेखा हवरेखायाः समानास्ति । तदा हतरेखा हवरेखाया अधिका भविष्यति । इदमगुद्धम् ।

यदि वृत्तद्वयं बहिर्मिथः संलग्नं तदा अहअझरेखयोर्योगो हझरेखाया अ-धिको भविष्यति। एतद्धजद्वयं हवझ-



तयोगस्य समानमस्ति। इदं हवझतं हझादिषकं जातम्। एतदशुद्धम्॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

श्रं अववृत्तस्य केन्द्रं न भवति । अस्माद्वृत्तपालिपर्यन्तं श्राअरेखा श्रवरेखा च निःस्तािखा श्रवरेखा केन्द्रसम्मुखािख परं च न केन्द्रगा । इयं श्रअरेखाया न्यूना भविष्यति । श्रतरेखाया अपि न्यूना जाता । एतद्युद्धम् । अस्मिदिष्टमेव समीचीनम् ॥

Digitized by Google

अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

वृत्तद्वयस्य संस्पर्श एकस्मिन्नेव चिह्ने भवति नाम्यत्र ।

यथा अववृत्तजदवृत्तयोः संस्पर्श एकसिन् चिह्ने भवति । यदि
चिह्नद्वयोपिर संस्पर्श स्थात्तचिह्नद्वयं जिचहं दचिह्नं च भवति । उभयोर्वृत्तयोः केन्द्रे हङ्गसंग्ने कलिपते । हङ्गरेखा संयोज्या उभयत्र विद्वता च जिल्लामा । इयं जिचहे दिचहे च लिगिष्यति । तदा
हजरेखा हदतुस्या झजतुत्याया झदरेखाया न्यूना
भविष्यति । इदं वाधितम् ।

अथवा द्वे वृत्ते बहिः अचिह्ने बिचिह्ने मिलिष्यतः । तदा अवपूर्ण-ज्या लगा कार्या । इयमेकस्य वृत्तस्या-न्तर्गता द्वितीयस्य बहिर्गता भविष्यति । इदमगुद्धम् । असदिष्टं सिद्धम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

हिचहं अबवृत्तस्य केन्द्रमितः। पुनर्झिचिहं तस्य वृत्तस्य केन्द्रं न भ-वित । तस्मात् झजं झदात् अधिकं स्यात् । झकेन्द्रं जदवृत्तस्यास्ति । तदा झजझदौ समानौ जातौ । इदमशुद्धम् ।

पुनरिप विचिद्वं जदवृत्तस्य केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्हवरेला योज्या । इयं अचिद्वगा भविष्यति बचिद्वगा च । एतदशुद्धम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम्।

एकस्मिन्वृत्ते यावत्यः पूर्णज्याः समाः सन्ति तासामन्त-राणि केन्द्रात्समानानि भवन्ति । यासां केन्द्रादन्तराणि तुल्यानि भवन्ति ताः पूर्णजीवास्तुल्या भवन्त्येव ।

यथा अबरुत्ते जदपूर्णज्या हुझपूर्णज्या समास्ति । तस्य रृत्तस्य

⁹ भवति A. B.

विचेहं केन्द्रम् । केन्द्रात्तयोरुपरि वतलम्बवकलम्बी च क्रमेण कार्यौ ॥ तहेंती लम्बी समानी भविष्यतः ।

अत्रोपपत्तिः।

यदि वजवदवहवझरेला योज्यन्ते तदा वजदित्रभुजल वहझ-त्रिभुजल्य च भुजाः कोणाश्च समा भविष्यन्ति । तस्मात् वतजित्रभुजे वकहित्रभुजे जकोणह-कोणौ समानौ स्तः । तककोणौ समकोणौ भ-वतः । बजभुजवहभुजौ समानौ । तदा वत-भुजवकभुजौ च समानौ जातौ ।

पुनरप्येतौ द्वौ लम्बौ समानौ कल्यितौ तदा जदरेखा हझरेखा च समाने भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

यदि वतवर्गवकवर्गी तुल्यो स्यातां तद्यंतौ तुल्ययोर्वजवहवर्गयोः शोध्यौ शैषौ जतवर्गहकवर्गी समानौ भवतः । एतद्वयमपि समानम् । एतद्विगुणतापि समाना । इदमेवेष्टमसाकम् ॥

द्वितीयः प्रकारः ।

यदि जदहश्री समानी स्तः वतवकी समानी न भवतस्तदा कल्प्यते वकात् वतमधिकमस्ति । तदा जकोणो हकोणादिधिको भविष्यति । दकोणो झकोणादिधिको भविष्यति । तदा जवदकोणो हवझकोणा-न्यूनो भविष्यति । जववदी द्वी भुजौ हववझयोर्भुजयोः समानी भवतः । तदा जदरेसा हझरेसाया न्यूना भविष्यति । एतदशुद्धम् ।

यदि वतवको समानो भवतो जदह्झो समानो न स्यातां तदा तदकझावि समानो न स्याताम् । तदैतयोर्वर्गाविप समानो न भवतः । वतवकयोर्वर्गो समानो स्तः । अतो वदवझयोर्वर्गाविप समानो न मविष्यतः । जातो च समानो । तस्यादेतदशुद्धम् ॥

Digitized by Google

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्ते सर्वाभ्यो पूर्णज्याभ्यो बृहती पूर्णज्या ध्यासी भवति । या पूर्णज्या केन्द्राभिकटेऽस्ति सा दूरस्थितपूर्ण-ज्याया अधिकास्ति ।

यथा अववृत्तं कल्पितम् । तस्य जदं व्यासः कल्पितः । हझरेखा

केन्द्रनिकटे पूर्णज्या वतरेला दूरगा पूर्णज्या क-ल्पिता। कं केन्द्रमित । केन्द्रात्कळलम्बकम- अ लम्बो कार्यो।कळलम्बो न्यूनोऽस्ति। तदा कम-रेलायाः कनरेला कळतुल्या पृथक् कार्या। न-चिद्वाञ्चसगरेला जदरेलायाः समानान्तरा कार्य।



चिद्वाञ्चसगरेला जदरेलायाः समानान्तरा कार्या । सगरेला हझरे-लायास्तुल्या भविष्यति । कसरेला कगरेला कवरेला कतरेला च योज्या । तत्र कसगकयोगो जदतुल्यः सगादिधको भविष्यति हझा-दिष । पुनरिष सकगित्रभुजे वकतित्रभुजे कसकवकगकतभुजाः समानाः सन्ति । गकसकोणः तकवकोणादिधकोऽस्ति । तदा सगं हझतुल्यं वतादिषकं भविष्यति । हझं वतादिधकं जातम् । इदमे-वाऽसाकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अबरृतं किल्पतम् जद्व्यासः। हिचिहं केन्द्रम्। श्रवपूर्णज्या जदस्य समानान्तरा किल्पता । तत्र जिचहाल्लम्बः कार्यः । अस्यां पूर्णजीवायां एष लम्बो श्रचिहे नैव पैति-ध्यति । कुतः। यदि हृझरेला योज्यते तदा जझ-कोणौ हजझित्रमुजे समानौ मविष्यतः। तहींतौ द्वौ ब समकोणौ मविष्यतः। एतदशुद्धम् । झिचहवचिह्योर्मध्येऽपि न पित-ध्यति यथा जतम् । कुतः। तजहकोणः समकोणो भविष्यति । यदि

⁹ व्यासे. A. B. K. २ वास्पति. A. B. K. ३ वत: A. B.

इतरेला योज्यते कचिइपर्यन्तं वर्द्विता जकरेला युक्ता च कियते तदा हजककोणो हकजकोणसमः समकोणादिषको भविष्यति'। हतजकोणो वतज-कोणान्न्युनोऽस्ति हकजकोणाद्धिकोऽप्यस्ति



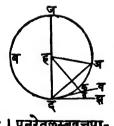
एतद्शुद्धम् । तदैष लम्बो बहिः पतिष्यति यथा जललम्बः। अनेनैव प्रकारेण दिचहाहमलम्बो बहिः पतिष्यति। जदरेखा लमतुल्या झवरे-स्ताया अधिका भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण झबरेखा अधिका भवि-ष्यति दुरगान्यरेखायाः यदि समानान्तरा भविष्यति।यदि समानान्तरा न स्यात्तदा समानान्तरा कार्या। पूर्वोक्तप्रकारेणेदमुपपत्रं स्यात् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ।

तत्र वृत्तव्यासप्रान्तानिष्कासितो लम्बो बहिर्गतो भवति। लम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये अन्या सरला रेखा भवितुं नाईति। व्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितो वृत्तान्तर्गतकोणो न्यूनकोणो भवति । तस्माद्धिकोऽपरो न्यूनकोणो सरलरेखाद्वयोत्पन्नो न भवति । पातजनितः कोणः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्यो न्यूनो भवति ।

यथा अववृत्तं जदव्यासः कल्पितः । दिचिहाल्लम्बः कार्यः । अयं लम्बो यदि वृत्तान्तर्गच्छति स लम्बः अचिह्ने आगत इति कल्पितः ।

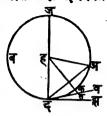
हकेन्द्रात् अचिइपर्यन्तं रेखा कार्या । तदा हदअ-कोणहअदकोणी समानी भविष्यतः । एतौ द्वी समकोणौ मविष्यतः । इदमग्रुद्धम् । त्रिभुजे कोणद्वययोगस्य द्विसमकोणसमत्वामावात् । तदा स छम्बो बहिः पतिष्यति । स लम्बो द्रझं कल्पितः । पुनरेतस्रम्बवृत्तपा-



⁹ D. inserts इदं वाधितम् after this. ३ °शितो. A. B.

ल्योर्मध्ये नान्या रेखा सरला भविष्यति । यदि भविष्यति तदा दवरेखा

कल्पिता। हिचिहात् द्वरेखायां हत्तलम्बः कार्यः। अयं हदरेखायां न पतिष्यति । कुतः। हदरेखा द्वरेखायां लम्बो न भवति । पुनर्बदिशायामपि न पतिष्यति । यदि बदिशायां पति त्रिभुजस्य



द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोरिषको भविष्यतः। तसात् अदिशि भविष्यति । पुनर्हतदित्रभुजे तकोणो दकोणादिषको भविष्यति । ततो हकुतुल्या हदरेखा हतादिषका भविष्यति । इदं बाधितम् । तसा-त्कोऽपि न्यूनकोणः कदहकोणादिषको न भविष्यति । पुनर्झदक-कोणान्न्यूनो न भविष्यति । कुतः । यद्यधिको न्यूनो वा भविष्यति तदा लम्बवृत्तपाल्योर्भध्ये सरला रेखा पतिष्यति ।

असात् क्षेत्रादिदं निश्चितं व्यासपान्तान्निसृतलम्बो वृत्तसंलमो गिन-ष्यित न वृत्तं भेत्स्यतीति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

द्वितीयः प्रकारः।

इष्टचिह्नादभीष्टरेखायां या गताः रेखास्तासु मध्ये या न्यूना सा लम्बो भवतीति पूर्वमस्माभिः साधितमस्ति । तस्मात् हचिह्नात् या रेखा दृष्म- पर्यन्तं गता मविष्यति सा वृत्ताद्वहिः पतिष्यति । कुतः । व्यासाद्वीद- धिकत्वात् । तदा दृष्मलम्बः वृत्तान्तर्न पतिष्यति । पुनरिष या रेखा दृष्मलम्बद् जन्यासयोर्मध्ये पतिष्यति सा वृत्तान्तर्गतैव भविष्यति । कुतः । यो लम्बो हचिह्नादस्यां रेखायां निष्कासनीयः स लम्बो न्यासा-द्वीक्यूनो भविष्यति । तस्मात्कािप रेखा दृष्मलम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये न पतिष्यति ॥

अथ पोडशं क्षेत्रम् । तत्रैकस्माचिद्वात् वृत्तपालिसंलग्ना यथा भवति तथा रेखा कर्त्तन्यास्ति ।

९ इत्तपाळिमात्रसंलमरेखाचिकीर्षास्ति । $f A.\ B.$, इत्तपाळिमात्रसंलमा f K.

यथा अचिहं बजवृत्तं किल्पतम्। वृत्तकेन्द्रं दिचहं किल्पतम्। पुनर्दकेन्द्रात् दश्रव्यासार्द्धेन अहवृत्तं कार्यम्। अदरेखा योज्या। इयं रेखा
बजवृत्ते झिचिहे संपातं किरिष्यति। पुनर्झिचिहात् झवलम्बः अदरेखायां
निष्कासनीयः। वदरेखा संयोज्या। इयं रेखा बजवृत्ते तिचिहे संपातं
किरिष्यति। पुनः अतरेखा योज्या। इयं अतरेखा बजवृत्तसंलमा गिमष्यति वृत्तभेदं न किरिष्यति। कुतः। अतदित्रभुजे वझदित्रभुजे दअभुजदत्तभुजौ वद्भुजद्झभुजयोः समानौ स्तः। दकोण
उभयोक्षिभुजयोरेक प्वास्ति। तसात् अतदकोणो

दत्तभुजो वद्भुजद्शभुजयोः समानी स्तः । दकाण उभयोक्षिभुजयोरेक एवास्ति । तसात् अतदकोणो ह वशद्समकोणेन तुल्यो जातः । तस्मादयमपि सम-कोणो जातस्तस्मात् अतलम्बो दतोपरि जातः । अयं लम्बो वृत्तलमो भविष्यति वृत्तं न मेत्स्यति ॥

प्रकारान्तरम् ।

अदरेला संयोज्या हचिइपर्यन्तं वर्द्धनीया। पुनः अहअझघाततुल्यं

समकोणसमचतुर्भुनं कार्यम् । अहरेखायां अव-रेखा तद्भुनतुल्या पृथकार्या । पुनः अकेन्द्रोपरि व अवव्यासार्द्धेन वतृत्तं कार्यम्। अतरेखा च संयो-ज्या। इयं रेखा वृत्तलमा मविष्यति । कुतः। तअवर्ग-तुल्यहुअअझ्मघाततद्वर्गतुल्यद्झवर्गयोर्योगो दुअ-

ी-भिन्न स-जातः । तस्मात्

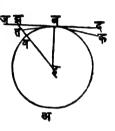
वर्गस्य समानोऽस्ति । तदा अतद्कोणः समकोणो जातः । तसात् अतरेखा वृत्ते छगिष्यति ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

वृत्तसंलग्नरेखायां केन्द्रात् वृत्तपालिरेखासंपातगता रेखा लम्बो भविष्यति । यथा अववृत्तं जद्रेला च हं केन्द्रं किल्पतं वसंपातः किल्पतः । तत्र बहरेला संयोज्या । इयं जदोपिर लम्बो भविष्यति । कुतः । यद्ययं रूम्बो न भविष्यति तिर्हं हुझं लम्बो भविष्यति । अयं लम्बो हृबतुल्य-ह्वरेलाया न्यूनो भविष्यति । इदमगुद्धम् । असिदिष्टं समीचीनम् ॥

अस्य द्वितीयः प्रकारः।

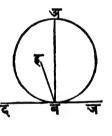
यदि इबलम्बो बजोपरि न मविष्यति तदा बिच्हात् बहोपरि तकलम्बः कार्यः स्यात्। ध्ययं लम्बोऽपि बिच्हे वृत्तपालौ लगिष्यति । पुनरयं पूर्वलम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये बज्जरेखाया वा बदरेखाया एकदिशि पतिष्यति । इदं बाधितम् ॥



अथाष्टादशं क्षेत्रम् ।

या रेखा वृत्तपालावेकस्मिश्चिद्वे लग्ना भवति ति**बद्वात्तस्यां** रेखायां निष्कासितलम्बरेखावश्यं केन्द्रगा भविष्यति ।

यथा अवरृतं जदरेला बिन्हं बअलम्बः किट्पतः । अयं लम्बो यदि केन्द्रगतो न भवि-ध्यति तदा हिन्हं केन्द्रं किट्पतम् । पुनईबरेला संयोज्या । इयं हबरेला लम्बो भविष्यति । पुनः अबरेलापि लम्बोऽस्ति । इदं बाधितम् । इष्टम- द स्माकं समीचीनम् ।



अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र केन्द्रकोणो वृत्तपालिकोणाद् द्विगुणो भवति यदि द्वौ कोणावेकचापस्थौ भवतः।

यथा अवजवृत्ते दं केन्द्रमस्ति तत्र बदजकोणो वअजकोणाद्दिगुणोऽस्ति । कुतः । यदि अदरेखा योज्यते हचिह्नपर्यन्तं दीर्घा च







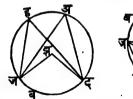
कियते तदा बद्हकोणो द्वअकोणद्अवकोणयोयोगस्य समानो-ऽस्ति।तसात् बअहकोणाद्विगुणो जातः। अनेनैव प्रकारेण हदजकोणो जअहकोणाद्विगुणो जातस्ततो बदजकोणो वअजकोणाद्विगुणो जातः। इदमेवासाकिमष्टम्।

तत्र अद्देश्ता अवअजयोर्मध्यगा स्याद्यशा पूर्वक्षेत्रम् । अन्यतरभुजे पतिष्यति वा द्वयोर्वहिः पतिष्यति तयोर्द्वयोरेतत्क्षेत्रद्वयम् ॥

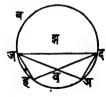
अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

वृत्तस्य खण्डे चेत्कोणाः संभवन्ति ते समा एव ।

यथा जअदकोणजहदकोणी अबवृत्ते जहअदखण्डे समानी भवतः । पुनर्झ केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्झदरेखा झजरेखा संयोज्या । तदा जझदकोणः प्रत्येककोणाहिगुणो जातः । तस्मात्तौ द्वौ कोणौ समानौ जातौ । इयमुपपत्तिस्तदैव स्याद्यदि खण्डं वृत्ताद्वीदिषकं स्यात् । यद्यधिकं न स्यात्तदैवं स्यात् । हजअकोणहदअकोणौ हज-







द्भवृत्तसण्डे वृत्तार्द्घादिधिके समानौ स्तः। वस्य सन्मुसकोणद्वयं समान्त्रमास्ति। तस्मात् अवदित्रभुजे हजवित्रभुजे दअवकोणजहवकोणौ समौ भविष्यतः। इदमेवास्माकिमष्टम्॥

अथ एकविंशतितमं क्षेत्रम्।

यच्चतुर्भुजं वृत्तान्तर्भवति तस्यैककर्णस्य कोणद्वययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति ।

यथा बअदकोणबजदकोणौ मिलितौ अजवृत्ते अबजदचतुर्भु-जस्य द्वयोः समकोणयोः समानौ स्तः।कृतः। यदि अजरेखा बदरेखा योज्यते तदा दअजकोणदबजकोणौ दअबजखण्डे समानौ भवि-

ध्यतः । अनेनैव प्रकारेण बआजकोणबद्जकोणौ बआदजलण्डे समानौ स्तः । तस्मात् दअबकोणो दबजकोणजदबकोणयोर्योगेन समानो जातः । पुनर्बजदकोणो द्वयोर्योज्यते । तदा दअबकोण-बजदकोणयोर्योगो बदजित्रभुजस्य त्रयाणामपि कोणानां योगेन समानः स्यात् । पुनिस्तभुजस्य त्रयाणां कोणानां योगः समकोणद्वययो-गत्रत्योऽस्ति । इदमेस्माकिमष्टम् ॥

अथ द्वार्विशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखोपरि वृत्तस्य सजातीये न्यूनाधिके द्वे खण्डे ए-कदिशि न भवतः।

यदि मवतस्तदा अबरेस्रोपरि न्यूनं अजबवृत्तसण्डमिकं अ-बद्वृत्तसण्डं सजातीयं कल्पनीयम् । पुनः अजबसण्डे हृचिहं कल्पितम् । अहरेसा संयोज्या । झचिह्नपर्यन्तं ट्र

विदिता च । पुनर्बहरेसा बझरेसा च संयो-जिता । तस्मात् अहबकोणो बहिः स्थितः ।

अझबकोणोऽन्तःस्थः । एतौ समानौ भविष्यतः । कुतः । वृत्तसण्ड-

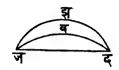
योः सजातीयत्वात् । इदं बाधितम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

समासु रेखासु यानि सजातीयानि वृत्तखण्डानि भवन्ति तानि समानि भवन्ति । यथा अबरेलायां जदरेलायां मिथः समानायां अहबवृत्तलण्डं

जझदृवृत्तखण्डं सजा-तीयं कल्पितम् । इदं द्वयं मिथः समानमस्ति।





कुतः।

यदि अबरेखा जदरेखोपरि स्थाप्यते वृत्तखण्डं च खण्डोपरि स्थाप्यते तदा निरन्तरं लग्नं स्थात् । यदि निरन्तरं न स्थात्तदा एकं खण्डमन्यखण्डाद्विर्गतमन्तर्गतं वा भविष्यति यथा जवदखण्डम् । तदा जझदखण्डं जवदखण्डं सजातीयं जदरेखायामेकदिशि न्यू-नाधिकं पतिष्यति । इदं वाधितम् । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् । एकि संपर्णकर्वे कर्णार्थिके किस्टीक

वृत्तखण्डोपरि संपूर्णवृत्तं कार्यिमीते चिकीर्पास्ति।

यथा अजबखण्डं कल्पितम् । पुनः अबरेसा दिचिहेऽद्विता कार्या । पुनर्दिचिन्हाहु अरेसायां दजलम्बः कार्यः । ज ज जिलेसा संयोज्या । पुनः अचिन्होपरि अजरेसायाः जअहकोणः अजहकोणतुल्यः अविन्होपरि कार्यः। पुनः अहरेसा जहरेसे च वर्द्धनीये यथा

कायः। पुनः आहरला जद्दरल च वद्धनाय यथा ह हचिह्ने संपातं करिष्यतः । तस्मात् हचिह्नं तस्य वृत्तस्य केन्द्रं जातम् । कृतः ।

यदि बहरेसा योज्यते तदेयं अहरेसासमाना भविष्यति । कुतः । बद्भुजअद्भुजयोः साम्यात् । पुनर्दह्भुज उभयोक्षिभुजयोरेक एवा-स्ति। दस्य द्वी कोणी समकोणी स्तः। अहरेसा जहरेसायाः समानास्ति । कुतः । अजहकोणजअहकोणयोः समत्वात् । हचिहात् अजब-वृत्तपालिपर्यन्तं हअरेसा हजरेसा हवरेसा च एताः समाना निष्पनाः। तसात् हं केन्द्रं जातम् । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

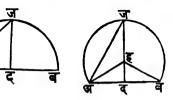
⁹ कार्यमस्ति D.

अथासिन क्षेत्रे अहरेखा वृत्तखण्डाह्रहिः पतिष्यति वा अद-

रेखायां पतिष्यति वा व-त्तखण्डान्तः पतिष्यति ।

प्रथमप्रकारस्य क्षेत्रं

दर्शितमैवशिष्टप्रकारयोरे-तत्क्षेत्रद्वयमस्तीति निश्चितम् ॥



अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम्।

तुल्ययोर्वृत्तयोः समानकोणानां समानि चापानि भवन्ति ते कोणाः केन्द्रगा वा वृत्तपालिगा भवन्तु ते समानचापेषु भवन्ति ।

यथा अबजवृत्तं दहझवृत्तं कल्पितम् । अकोणदकोणौ वा व-कोणतकोणी समानी कल्पिती। तदा बजचापह्रमचापौ समा-नौ भविष्यतः ।

कतः।

यदि बजरेसा हझरेसा

योज्यते तदैते द्वे समाने स्याताम् । कुतः । वबसुजवज्ञभुजत-ह्भुजत्रम्भुजानां समत्वात् वतकोणाविष समानौ । तसात् बअ-जवृत्तसण्डझदहवृत्तसण्डे सजातीये जाते। एते द्वे समरेसाद्वयस्थे चापे स्तरतसात्समाने जाते । शेषचापद्वयं समवृत्तद्वयस्य च समानं भविष्यतीत्यपपनं यथोक्तम् ॥

अथ पद्विंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र समानयोर्वृत्तयोः समचापोत्पन्नाः कोणाः समाना भवन्ति ते कोणाः केन्द्रलग्ना अथवा वृत्तपालिलग्ना भवन्ति।

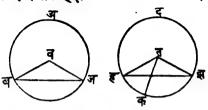
⁹ अवशेष⁰ D. K.

यथा अवजवृत्ते दहश्रवृत्ते वजचापं हश्चापं समानं कल्पितम् ।

द्वयोश्चापयोर्वकोणतकोणौ केन्द्रगतौ समानौ स्तः।

कुतः।

यदि न्यूनाधिकौ भवत-

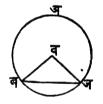


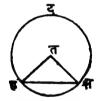
स्तदा हतककोणो वकोणतुल्यः कार्यः । हकचापं बजचापस्य समानं भविष्यति । तदा हझचापसमानमपि भविष्यति । इदं बाधितम् । तदेवं यथोक्तमुपपन्नम् ॥ अनेन प्रकारेण वृत्तपालिकोणा अपि समाना भवन्ति ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

समानेषु वृत्तेषु समानपूर्णजीवाचापानि समानि भवन्ति ।
.यथा अवजवृत्ते दहञ्जवृत्ते च वजपूर्णज्या हञ्जपूर्णज्या च समाना

कल्पिता । तदा बआजचाप-हदश्चापे समाने भविष्यतः । पुनर्बजचापहृश्चापे समाने भविष्यतः ।





अनयोर्ष्ट्र चार्चिहं तिचहं केन्द्रं किल्पतम् । बबरेखा वजरेखा तहरेखा तझरेखा संयोज्या । तदा वतकोणी वबजित्र भुजस्य तहझित्र-भुजस्य च समानी स्तः। कुतः। अनयोर्भुजानां . समस्वात्। तसाचापानि समानानि जातानि । इदमेवासाकिमष्टम् ।

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम्।

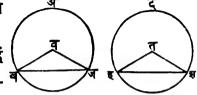
तत्र समानेषु वृत्तेषु समानचापानां पूर्णजीवाः समाना भवन्ति ।

Digitized by Google

यथा अवजवृत्ते दहझवृत्ते बजचापहझचापे समाने कल्पिते। तदा

बजपूर्णज्या हम्भपूर्णज्या समाना भविष्यति ।

अनयोर्वृत्तयोः केन्द्रं विचहं तिचहं कल्पितम् । वबजतहङ्ग-



त्रिभुजद्वयं किल्पतम् । अनयोर्भुजाः समाना भविष्यन्ति । वतकोणौ च समानौ भविष्यतः । वृत्तानां चापामां च समत्वात् । तसात् वजहमा-विष समानौ भविष्यतः । न्यासस्तु पूर्वोक्त एवेत्युपपन्नं मदुक्तम् ॥

अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र एकस्य चापस्यार्द्ध कर्नुमिष्यते।

यथा वश्रजनापं कल्पितम् । तत्र बजरेखा संयोज्या । इयं रेखा दिनिहेऽद्विता करणीया। असाम्बिहात् द्वजलम्ब उ-त्पाद्यः। अयं तचापं अनिहेऽद्वी करिष्यति । कृतः।

बअरेखा जअरेखा संयोजनीया। एते रेखे समाने मविष्यतः। कुतः। बद्रजद्मुजयोः साम्यात्। दअमुज उभयोरेक एव। दस्य द्वौ कोणौ समकोणौ स्तः। तसात् बअचापं जअचापं च समानं मविष्यति। यथोक्तमुपपन्नम्॥

अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

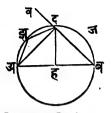
वृत्तखण्डपालौ यः कोणः स समकोणो भवति यदि खण्डं वृत्तार्द्ध भवेत् । यदि खण्डं वृत्तार्द्धादिधकं तदा न्यूनकोणः स्यात् । न्यूने खण्डेऽधिकः कोणः स्यात् ।

यथा अवजदवृत्ते अदवं वृत्तार्द्धे कल्पितम् । अस्य केन्द्रं इचिहं

Digitized by Google

कल्पितम् । वृत्तपालौ दिनिहं कल्पितम् । बद-रेसा अदरेसा च संयोजया । तदा अदबकोणः समकोणो भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।



दहरेला योज्या । तत्र अहदकोणो हदबकोणाहिगुणोऽस्ति । कुतः।हदभुजहबभुजो समानौ स्तः। बहदकोणो हदअकोणाहिगुणो-ऽस्ति।तसात् अहदकोणबहदकोणयोगः समकोणद्वयतुल्यो द्विगुणित-अदबकोणेन समानोऽस्ति । तसात् अदबकोणः समकोणो जातः॥

प्रकारान्तरम् ।

बकोणदकोणौ हदबत्रिभुजे समानौ सः । हदअत्रिभुजे दकोण-अकोणौ समानौ सः । तदा अदबत्रिभुजे बकोणअकोणयोगः अद-बकोणेन समानो जातः । तसादयं अदबकोण एकसमकोणो जातः ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

बदरेला बिचिइपर्यन्तं वर्द्धनीया । अदवकोणः अदबकोणेन समानो भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अदबकोणः दअबदबअयोगेन समानः । तत्र बवरेसायां अद-रेसा रुम्बो जातः । पुनरिष अबजदवृत्तसण्डं अधिकमस्त्यद्वेवृत्तात् । असिन् सण्डे अबदकोणो वा तजुल्योऽन्यकोणो वा न्यूनः कोणोऽस्ति । पुनः अदचापे झचिहं कार्यम् । अझरेसा दझरेसा च संयोज्या । अझदकोणः अझदबचतुर्भुजे बकोणेन सार्द्ध समकोणद्वयतुल्योऽस्ति । बकोणो न्यूनोऽस्ति । झकोणोऽधिको भविष्यति । अयमधिककोणो वृत्ता-द्वान्यूने अझदसण्डेऽस्ति ।

^{9. °}जिता. A. B. K.

प्रकारान्तरम् ।

अदबित्रभुजे यदि दं समकोणोऽस्ति तदा अबव्यासे एकं वृत्तं कार्यम् । तद्द्विहे पतिष्यति । यदि न पति-ष्यति तदा अदरेखा वृत्तपर्यन्तं कार्या । तंत्र अविहं कार्यं ततो बिचहपर्यन्तमेका रेखा योज्या । तदा त्रिभुजस्य बाह्यकोणोऽन्तःकोणश्चैकरूपः स्यात् । इदं बाधितम् ॥

अथैकत्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तपालिसंलग्ना एका रेखा कार्या। रेखावृत्तसंपात-चिह्नादपरा रेखा वृत्तान्तर्गता पालिसंलग्ना कार्या। इयं रेखा तस्य वृत्तस्य खण्डद्वयं करिष्यति। एतद्रेखापूर्वरेखयोर्यो द्वौ कोणौ जातौ तत्रैकतरः कोणो द्वितीयदिक्खण्डगत-कोणेन समानो भवति।

यथा अजवृत्ते दहरेला बिचिहे लगास्ति । बिचिहात् बझरेला नि-कासिता । अनया रेलया वृत्तस्य लण्डद्वयं कृत-मस्ति तत्रैकं लण्डं झअजबं संजातं द्वितीयं झ-तबसंज्ञम् । तदा झबदकोणो झअजबवृत्तलण्ड-पतितकोणेन तुल्यो भवति । पुनझेबहकोणो झतबलण्डगतकोणेन समानोऽस्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

बिचहवकेन्द्रयोवेबरेखा संयोज्या । इयं रेखा अचिहपर्यन्तं वर्द्ध-नीया । अझरेखा संयोज्या । अझबकोणअबदकोणौ समकोणौ स्तः । झअबकोणो झबदकोणश्च प्रत्येकं झबअकोणयुतः समकोणो भवति । तसादेतौ कोणौ समानौ जातौ ।

९ सचिहतचिहपर्यन्तमेका रेखा योज्या B.

पुनर्झतबखण्डे तिचिहं कार्यम्। तझरेखा तबरेखा संयोज्या। तदा झतबकोणो झअबकोणसहितो द्वयोः समकोणयोख्तुल्योऽस्ति। तसात् झतबकोणो झबहकोणेन तुल्यो जातः॥

प्रकारान्तरम् ।

झिचिहात् झजरेला दहरेलायाः समानान्तरा कार्या । जबरेला बवरेला च संयोज्या। इयं बवरेला किचिहपर्यन्तं वर्द्धनीया । बकरेला लम्बोऽस्ति दहरेलायां जझरेलायां च। अनेन लम्बेन झजरेलाया अर्द्ध कृतम् । झकरेला कजरेलासमानास्ति बकरेला उभयोरेकैवास्ति । तदा बझजकोणबजझकोणौ समानौ भविष्यतः । बझजकोणो झबदकोणसमानोऽस्ति । तसात् झजबकोणो झबदको-णेन समानो जातः ॥

अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

एकस्यां रेखायामेकं वृत्तखण्डं कार्यमिति चिकीर्पास्ति यथा वृत्तखण्डान्तोऽभीष्टकोणसमानः कोणो भवितुमर्हति ।

यथा अबरेखा जदहकोणः किल्पतः । अचिहे बअझकोणः किल्पतकोणतुल्यः कार्यः । अचिहात् झअरे- द
स्रोपरि अवलम्बः कार्यः । बचिहोपरि
अबवकोणो बअवकोणेन तुल्यः कार्यः ।
अबरेखा बवरेखा च वर्द्धनीया यथा व-

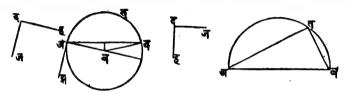
चिह्ने मिलिष्यतः । वं केन्द्रं कृत्वा बअव्यासार्द्धेन अववृत्तं कार्यम् । तदा अतबवृत्तसण्डं चिकीर्षितसण्डं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

झअरेखा **अवरे**खोपरि लम्बोऽस्ति । इयं वृत्तपाली लगिष्यति वृत्तं

Digitized by Google

न भेत्यिति । इयं रेखा यसिशिश्चे लग्नास्ति तसाश्चिहानिः स्त्तया अवरे-खया वृत्तस्य खण्डद्वयं कृतमिति । तत्रैकं खण्डं अत्वबसंज्ञमिति । तसिन् बआझकोणेन तुल्यः कोणो भिवतुमर्हति अदहकोणेनापि तुल्यो भविष्यति । जदहकोणो यदि न्यूनकोणोऽस्ति तदा अवलम्बः अझरेखाअबरेखयोबिहिः पतिष्यति । यथा उपरितनक्षेत्रे पतिसः ।



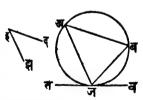
यदि सोऽधिककोणः स्यात् तदा अवलम्बः अझरेलाअबरेखयोर्मध्ये पतिष्यति । यदि स समकोणः स्यात् तदा अवलम्बः अबरेलोपरि पतिष्यति । पुनरेतस्य क्षेत्रस्य न्यासद्वयमेतादशम् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र अभीष्टवृत्तस्यैकं खण्डं पृथकार्यमिति चिकीर्षास्ति । कीदृशं खण्डमस्ति । यस्मिन् खण्डे कल्पितकोणेन तुल्यः कोणो यथा भविष्यति ।

यथा अबजवृत्तं दहझकोणः कल्पितः जिचहात् तजवरेला वृत्त-

पालिलमा कार्या । वजरेलाया जिन्होपरि वजबकोणो दहझकोणतुल्यः कार्यः। तदा र जबरेला वृत्तात् वअजलण्डं पृथकरि-ष्यति । कीदशमिदं लण्डम् । अत्र वज-



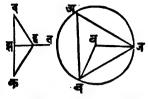
बकोणतुल्यः कोणो भवितुमहिति । तदेवसुपपन्नं यथोक्तम् ॥

मकारान्तरेणाह ।

कृतस्य केन्द्रं विचिद्धं कल्पितम्। कल्पितकोणो यदि समकोणः स्वात्

Digitized by Google

तदा जिन्हाद्यासरेखा निष्कासनीया । तदा व्यासो वृत्तस्य समानं खण्डद्वयं क-रिष्यति । यदा कल्पितकोणः समकोणो न भविष्यति तदा झहरेखा तिचिह्नपर्यन्तं



वर्द्धनीया। दहझकोणो दहतकोण एतयोर्द्धयोर्भध्ये एको न्यूनकोणः स्यात्। पुनर्हचिह्नोपिर हझरेखायाः सकाशात् झहककोणो दहझकोणेन तुल्यः कार्यः। हदरेखा हकरेखा च समाना कार्या। दकरेखा योजनीया। पुनर्जिचिह्नोपिर वजबकोणो हदककोणेन तुल्यः कार्यः। वबरेखा योजनीया। तदा वबजकोणो बजवकोणेन तुल्यः कार्यः। वबरेखा योजनीया। तदा वबजकोणो बजवकोणेन तुल्यो भविष्यति। अयं हकदकोणेन तुल्यो जातः। हकदकोणेन दुल्यो जातः। हकदकोणेन तुल्यो जातः। क्रं केन्द्रगतः कोणः जअबवृत्तखण्डान्तःपतितपा- लिगतकोणाद्विगुणोऽस्ति। तसादिसान् खण्डे दहझकोणेन तुल्यः कोणो भविष्यति। द्वितीयखण्डे दहतकोणतुल्यः कोणो भविष्यति। तदेवमुपपन्नं यथोक्तम्॥

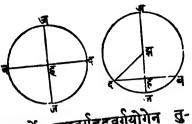
अथ चतुस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

वृत्ते द्वे पूर्णज्ये यदि संपातं कुरुतस्तदैकस्याः खण्डद्वय-घातो द्वितीयायाः खण्डद्वयघातेन तुल्यो भवति ।

यथा अबवृत्ते अजबदरेखयोः संपातो हिचहे जातस्तदा अह-हजघातो बहहद्घातेन समानो भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

यदि द्वे पूर्णज्ये व्यासरूपे भवतस्तदा प्रकटैवोपपत्तिः । पुनर्यदि तयोरेका व्यासरूपा द्वितीया पूर्णज्या लम्बवत्संपातं व्यास- रेतायां करोति तत्र अजव्यासो हाँ केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्झदरेखा संयोजिता । अहहजघातो झह-वर्गयुको झजवर्गतुल्यो भवति ।



भजवर्गो सद्वर्गतुल्योऽस्ति । सद्वर्गो सहवर्गहद्वर्गयोगेन तु-लोऽसि । पुनर्झह्वर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहहजधातो हदवर्गेण बहह्दघाततुल्येन समानो जातः ॥

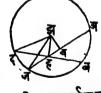
यदि बदरेसा छम्बवत्संपातं न करोति तदा श्रविहात् शतस्वो बदरेसोपरि कार्यः । अहहजघातो शतवर्गतहवर्गयोगतुत्येन
शहवर्गेण युक्तो शजवर्गेण समानो भविष्यति ।

ब्रह्मण युक्ता क्राज्यान त्या । ब्रज्जवर्गस्त झतवर्गतदवर्गयोगतुल्यझदवर्गेण स-मानोऽस्ति । पुनर्झतवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा

अहहजघातहतवर्गयोयोंगः तदवर्गतुल्योऽविशष्टः ज स्यात् । पुनरिष बहहद्घाततहवर्गयोगः तदवर्गेण तुल्योऽस्ति । पुनस्तहवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहहजघातो बहहद्घातेन तु-स्योऽविशिष्यते ॥

यदि कापि तयोर्व्यासरूपा न भवति तदा तयोर्मध्ये या अजरेला

सा द्वितीयार्द्धे यदि संपातं करोति तदा झिचहात् झवलम्बः अजरेखायां कार्यः। झजरेखा झदरेखा च संयोज्या। झतरेखा झहरेखायां पतिष्यति। तदा अहहजघातो वहवर्गयुक्तो वजवर्गेण समा-



नोऽस्ति । पुनर्झववर्गो द्वयोयोज्यः । तदा अहहजघातो वहवर्गझव-वर्गयोगेन झहवर्गतुल्येन युक्तो वजवर्गझववर्गयोगेन तुल्योऽस्ति ।

^{9 °}वशिष्टः A. B.

झजनर्गेणापि तुल्योऽस्ति । झजनर्गो झद्दनर्गतुल्यो झह्दर्गहृद्दर्गयो-योगेन समानोऽस्ति । पुनर्झहनर्मो द्वयोः शोध्यः । तदा अहह्जघातो बहहृद्घाततुल्येन हृद्दर्गेण समानोऽनशिष्यते ॥

यदि तयोर्मध्ये कापि व्यासरूपा न भवति नाप्येका द्वितीयरेखाया

अद्धें संपातं करोति नापि द्वितीयोपिर लम्बवत्स्यात् तदा झवलम्बझतलम्बी झहरेखाया एकदिशि भवतो वादिग्द्वये भवतः। तदा अहहज्ञघातो व-हवर्गयुक्तो वज्जवर्गेण समानोऽस्ति । बझवर्गो



द्वयोयों ज्यः । तदा अहह जघातो वह वर्गवस्नवर्गयोग तुल्य सह वर्गयुतः सन् वजवर्गवस्नवर्गयोग तुल्य सजवर्गेण समानः स्यात् । पुनरिष बहह दघाततह वर्गयोयोगः तद्वर्गसमानोऽस्ति । पुनस्त स्वागे द्वयोन्योज्यते । तदा बहह दघातः तह वर्गत स्वर्गयोग तुल्य सह वर्गेण युतः सन् तद्वर्गत स्वर्गयोग तुल्य सद वर्गेण समानो जातः । सद वर्गो स्वजवर्गेण समानः । पुनर्झह वर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहह जघातो बहह दघातेन तुल्योऽविशिष्यते ॥

अथ पश्चित्रंशत्तमं क्षेत्रम्।

तर्त्रं वृत्ताद्वहिःस्थितैकचिहादेका रेखा कर्णानुसारवृत्तपा-लिमात्रलमा कार्या द्वितीया वृत्तान्तर्गता ऊर्ध्वपालिलमा कार्या सा वृत्ताद्वहिःस्थितखण्डेन गुणिता सती प्रथमरेखा-वर्गेन तुल्या स्यात्।

यथा अबजवृत्तं दिचहं दजबरेला वृत्तगता द्वितीया द्वअरेला वृत्तपालिल्झा प्रथमा कल्पिता। तदा वददजघातो दअवर्गेण समानो भविष्यति।

९ तत्र वृत्ताद्वहिःस्थितैकचिकानिः स्रते ये रेखे तन्मध्ये यदोका रेखा वृत्तपालिमात्र-लगा भवति द्वितीया वृत्तान्तर्गता भवति तत्र या वृत्तान्तर्गता तस्या वृत्तबहिः-स्थितखण्डान्तःस्थितखण्डयोर्घातो पालिसंलगरेखाया वर्गो भवति । A. B.

यदि वृत्तगता रेखा केन्द्रगता भवति तदा हके-न्द्रं कल्पितम् । पुनः अहरेखा संयोज्या । तदा बद-दजधातो हजवर्गयुक्तो हदवर्गेण तुल्योऽस्ति । हद-वर्गस्तु दअवर्गअहवर्गयोगेन तुल्योऽस्ति । दअवर्ग-हजवर्गयोगेनापि तुल्यः । हजवर्गो हअवर्गतुल्योऽस्ति ।



पुनह्रेजवर्गी द्वयोः । शोध्यः तदा बददजघातो दअवर्गेण तुल्यो ऽवशिष्यते ॥

यदि केन्द्रगा न मवति तदा हदरेखा हजरेखासंयोज्या । हचिह्नात् बदरेखोपिर हझलम्बः कार्यः । तदा बददजघात-झजवर्गयोयोंगो झदवर्गेण तुल्योऽस्ति । पुनर्झहवर्गो द्वयोयोंज्यः । तदा बददजघातो हजवर्गेण झजवर्ग-झहवर्गयोगतुल्येन युक्तो झदवर्गझहवर्गयोगेन हदवर्ग-तुल्येन समानोऽस्ति । हअवर्गसमहजवर्गदअवर्गयोगे-नापि समोऽस्ति । पुनर्हजवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा बददजघातो दअवर्गतुल्यः स्थात् ॥

अथ पद्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र बिहः स्थिविहात् वृत्तपर्यन्तं द्वे रेखे कार्ये। तत्रैका वृत्तान्तर्गता द्वितीया पालिलग्ना कार्या। द्वितीया वृत्तस्य प्रथ-मपालिपर्यन्तं कार्या। तत्रान्तर्गता निजबिहः स्थखण्डेन गुणिता द्वितीयरेखावर्गतुल्या चेत् तदा द्वितीयरेखा वृत्तान्तर्गता नैव स्यात् किं च पालिलग्ना बहिर्गतैव भवति।

यथा अवजवृत्तं दिचहं दजबरेसा वृत्तान्तर्गता । दअरेसा द्वितीया कल्पिता । पुनर्दिचिहात् दहरेसा कार्या यथा वृत्तपालिलमा

स्यात् वृत्तान्तर्गता न भवति तथा कार्या । पुनर्झकेनद्रात् अपर्यन्तं रेखा संयोज्या । तदा बददज्ञघातो अ दअवर्गेण समानोऽस्ति । दह्वर्गेणापि समानः । तदा दअरेखा हदरेखासमाना जाता । झअरेखा झहरेखा-समानास्त्येव । पुनर्झदरेखा द्वयोरेकास्ति । तसात् ब

दअझकोणो दहझसमकोणेन समानो जातः । दअझकोणोऽपि समकोणो जातः । दअरेखालम्बो जातः अझरेखोपरि । तसात् दअ-रेखा वृत्तपालिसंलमा जाता न च वृत्तान्तर्गता । तदेवमुपपनं यथोक्तम् ।

प्रकारान्तरम् ।

झअरेला झजरेला संयोज्या झचिन्हात् बद्रेस्लोपरि झवलम्बः

कार्यः । तदा बददजघातजववर्गयोगो वदव-र्गेण समानोऽस्ति । पुनर्वझवर्गो योज्यः। तदा ब-ददजघातो जववझवर्गयोगतुल्यझजवर्गेण तत्स-मेन झअवर्गेण युतः सन् वदवर्गवझवर्गयोगतुल्य-झदवर्गेण समानोऽस्ति । बददजघातो दअवर्गेण



समानोऽस्ति । तसात् दअवर्गझअवर्गयोगो झदवर्गेण समानः । तसात् झअदकोणः समकोणो जातः । तसात् दअरेखा वृत्तपालि-लग्ना भविष्यति न वृत्तान्तर्गता । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्यै द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समभिधारूढितेन प्रणीते । मन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं संगतोऽभूत् तृतीयः ॥ इति श्रीमज्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते तृतीयाध्यायः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः षोडशक्षेत्रीनिरूप्यते । तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ।

वृत्तान्तरभीष्टरेखा तुल्या पूर्णज्या कर्तुमिच्छास्तीति परं चाभीष्टरेखा वृत्तव्यासादिधिका न भवति तथा कल्पनीया।

यथा अवजवृत्तं दहरेला कल्पिता । अस्मिन्वृत्ते बजव्यासः कार्यः ।

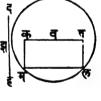
असात् दहरेलातुल्या झजरेला पृथकार्या । पुनर्ज-केन्द्रात् जझव्यासार्द्धेन अझववृत्तं कार्यम्। अजरे-स्ता संयोज्या। इयं पूर्णज्याऽभीष्टरेस्तातुल्या जाता ।



प्रकारान्तरम् ।

दहरेलाया झिचिहे अर्द्ध कार्यम् । वृत्तस्य वकेन्द्रं कल्पनीयम् । विचिद्वादुभयतः दझतुल्या वकरेला वतरेला

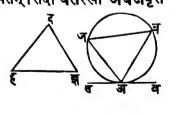
पृथकार्या । पुनस्तचिहात् कचिहात्तललम्बः कमलम्बश्च कार्यः । लमरेला संयोज्या । इयं **ळमरे**साऽमीष्टरेसातुल्या पूर्णज्या जाता । कुतः । तकतुल्यत्वात् दहुतुल्यत्वाच ॥



अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

वृत्तान्तिसमुजं कर्तव्यमस्ति यस्य त्रिभुजस्य कोणा अ-भीष्टत्रिभुजस्य कोणैस्तुल्या यथा भवन्ति।

यथा अवजवृत्तं दह्रमत्रिभुजं कल्पितम्। तदा वतरेखा अवजवृत्ते अचिह्ने संलग्ना कार्या। अचिह्नोपरि वअबकोणो हकोणतुल्यः कार्यः । तअजकोणो झकोणतुल्यः कार्यः । बजरेला संयोजिता । अवजत्रिभुज-मिष्टं जातम् ॥



⁹ सक्छे K. २ शकलम K. ३. शकलम K.

अत्रोपपत्तिः ।

अजबकोणो बअवकोणतुल्योऽस्ति हकोणतुल्योऽपि जातः । अबजकोणो जअतकोणतुल्योऽस्ति तदा झकोणतुल्यो जातः । शेषो बअजकोणो दकोणतुत्यः। इदमेवासाकमिष्टम्।

प्रकारान्तरम् ।

दन्यूनकोणस्य दहमुजदझभुजयोर्वचिद्वे तचिद्वेऽर्द्धे कार्यम् । विचिद्वतिचहाम्यां द्वौ लम्बौ निष्कास-

नीयौ तौ कचिह्ने मिलिष्यतः। पुनः कदरेला कहरेला कझरेला च संयो-ज्याः। एतास्तिस्रो रेखाः समाना भवि-

ष्यन्ति । तस्य वृत्तस्य छकेन्द्रं कल्पनीयम् । छअरेखा योज्या । लिचेडोपरि अलबकोणो दकहकोणतुल्यः कार्यः । पुनः अलजकोणो दक्शकोणतुल्यः कार्यः । शेषो बलजकोणो हक्शकोणतुल्यः स्यात्। पुनः अबरेला अजरेला बजरेला च संयोज्या । तदा अबजिन्रभुज-मसाकिमष्टं स्यात् ।

अन्नोपपत्तिः ।

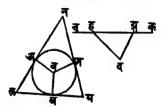
लअबकोणलबअकोणौ समानौ स्तः। कदहकोणकहदकोणौ समानौ । अलबकोणदकहकोणौ समानौ स्तः। तस्मात् अकोण-दकोणौ बकोणहकोणौ च समानौ जातौ। अनेनैव प्रकारेण शेषकोणा अपि समाना जाताः।

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ।

वृत्तोपरि तथा त्रिभुजं कस्पनीयं तथा तस्य कोणा अभीष्टत्रिभुजकोणतुल्या भवन्ति ।

९ शकलम् K.

यथा अवजवृत्तं दहञ्जत्रिभुजं कल्पितम् । हञ्जभुजः कचिइ-तचिद्वपर्यन्तं वर्द्धनीयः। वचिद्वं वृत्त-केन्द्रं कल्पितम् । वबरेखा योजिता । विचहोपरि बवअकोणो दहतको-णतुल्यः कार्यः। बवजकोणो दशक-



कोणतुल्यः कार्यः । बचिद्वात् अचिद्वात् जचिद्वाच तिस्रो रेखा वृत्तपा-लिलमाः कार्यास्तथा वर्द्धनीया यथा लिच्हनचिह्नमचिह्ने यथाकमं छ्याः स्युः । तस्मात् छमनत्रिभुजमिष्टं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

यचतुर्भुजमित्त तस्य चतुःकोणयोगः चतुःसमकोणतुल्यः स्यात्। अलबवचतुर्भजे अः समकोणो बः समकोणश्चास्ति तौ चेच्छोघ्येते तदा लकोणवकोणयोयोंगो समकोणद्वयतुत्यो जातो यथा दहतकोण-दहझकोणयोगो द्वयोः समकोणयोस्तुल्यः । अवबकोणो दहतकोण-तुल्यः । तस्मात् दहझकोणो छकोणतुल्यो जातः ।

अनेनैव प्रकारेण दश्चहकोणो मकोणतुल्यो जातः। तसात् शेषौ दकोषनकोणौ समानौ जातौ । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

प्रकारान्तरम् ॥

हकोणझकोणौ रेखाद्वयेनाऽर्द्धितौ कार्यौ । एते द्वे रेखे त्रिभुजान्त-स्तचिद्वे संपातं करिष्यतः । पुनस्तचिद्वात् हृझभुजोपरि तकलम्बः

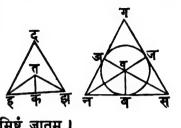
कार्यः । पुनर्वबरेखा कार्या । पुनर्वचि-द्वोपरि बवनकोणः कतहकोणतुंल्यः कार्यः । बिचहादेका रेखा पालिसंलमा कार्या । पुनरियं रेखा वनरेखा च व- ह

र्द्धनीया निचह्ने यथा संपातं करिष्यतः । तस्मात् बनवकोणः कहत-

٩ पको B.

कोणतुल्यो जातः। विचिद्दे नवसकोणो इतझकोणतुल्यः कार्यः। नव-

रेखा वर्द्धनीया यथा वसरेखोपरि सचिहे संपातं करोति । तसात् ब-सवकोणः कझतकोणतुल्यो जातः । पुनर्नचिहात् सचिहात् तथा द्वे रेखे कार्ये तथा वृत्तलमे स्तः । गचिहप- ह क झ र्यन्तं वर्द्धनीये । तसात् नसगत्रिभुजिमष्टं जातम् ।



अस्योपपत्तिः ।

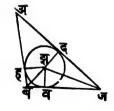
अवरेसा संयोज्या । वअरेसा वबरेसा समानास्ति । वनरेसा त्रिमुजद्वयेऽप्येकैव । अकोणबकोणौ समकोणौ स्तः । तसात् अनव-कोणबनवकोणौ समानौ जातौ । पुनः अनबकोणो दह्झकोणेन तुल्यो जातः । एवं जसबकोणो दझहकोणेन समानो जातः । तसा-देतौ दकोणगकोणौ तुल्यौ जातौ ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ।

त्रिभुजान्तर्वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

अबजित्रभुजं कल्पितम् । पुनर्बकोणजकोणौ रेखाद्वयेनाऽद्वितौ कार्यौ । तद्रेखाद्वयं झचिह्ने मिलिष्यति । पुनर्झचिह्नात् झदलम्ब-झहलम्बझवलम्बा भुजेषु कार्याः । एते त्रयो लम्बा मिथः समाना

भवन्ति । कुतः । अववकोणअवहकोणी अह-बित्रभुजे अवबित्रभुजे च समानौ स्तः । पुनर्व-कोणहकोणी समकोणी स्तः । अवभुजो द्वयो-स्त्रिभुजयोरेकैवास्ति । तसात् अहभुजअवभुजौ समानौ जातौ । एवं अवजित्रभुजे अदजिभुजे



भुजा मिथः समानाः । पुनर्झकेन्द्रं कृत्वा अन्यतमलम्बव्यासार्द्धेन दह्ववृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तमसाकिमष्टम् ।

९ शकलम् K.

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ।

यदि त्रिभुजोपरि वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजित्रमुजं कल्पितम् । अवभुजअजभुजयोर्दिचिहे हिचहे चार्द्ध कार्यम् । दझलम्बद्दझलम्बी कार्यी यथा झचिहे लग्नी स्तः ।







झअझबझजरेखाः संयोज्याः । एतास्तिसः समानाः स्युः । दबदअ-रेखयोः समत्वात् । दझभुजस्तूभयत्र एक एव । दकोणौ समकोणौ स्तः । एवं अझहत्रिभुने जझहत्रिभुने बोध्यम् ।

झचिहं केन्द्रं कृत्वा अन्यतमरेखां व्यासार्द्ध कृत्वा अवजवृत्तं कार्यम् । इदमेवासाकमिष्टम् ।

द्झलम्बह्झलम्बयोः संपातिसभुजाद्वहिः पतित । यथा पूर्ववृत्ते अथवा त्रिभुजान्तर्भवति वा भुजोपरि पतति ॥

अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।

वृत्तान्तः समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अबजदवृत्तं कल्पितं हकेन्द्रं च तदा वृत्तान्तः अजव्यास-बदव्यासयोः संपातः समकोणेऽस्ति । पुनः अबरेखाबजरेखाजदरेखाद अरेखाः संयोज्याः । तदेष्टं चतुर्भुजमुत्पन्नम् । कुतः । चतुर्णी त्रिभु-जानां भुजानां कोणानां च समत्वात् ॥



९ शकलम् K.

प्रकारान्तरम् ।

वृत्ते प्रथमं ह्झरेखा कार्या । पुनर्झचिहात् झवतरेखा वृत्तपालिलमा कार्या । झवं झतं प्रत्येकं झहतुल्यं कार्यम् । ह्वरेखा हतरेखा योज्या । तदा वकोणतकोणौ प्रत्येकमर्द्धसमकोणौ



जाती । वहतकोणः समकोणो जातः । पुनः अजरेखा संयोज्या । तदा अझजनापं वृत्तस्य चतुर्थोऽशो भविष्यति । तस्य पुनः अवपूर्ण-ज्याद्वजपूर्णज्ये अजपूर्णज्यातुल्ये कार्ये । पुनर्बदरेखा योज्या । तदेष्टं चतुर्भुजमुत्पन्नम् । कृतः । चतस्रो रेखाश्चतुर्णी पादानां पूर्णज्याः सन्ति । चत्वारः कोणाः समकोणाः सन्ति ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ।

वृत्तोपरि समकोणसमचतुर्भुजं कर्तव्यमस्ति।

यथा अवजदवृत्तं कल्पितम् । असिन् अजन्यासबद्व्यासौ समकोणे संपातं कुर्वन्तौ हृचिह्दकेन्द्रसंलमौ कार्यौ । न्यासयोः पान्तेभ्यश्चतस्रो रेखा वृत्तपालिलमाः कार्योः । एता रेखा झवतकचिह्देषु संपातं करिष्यन्ति । इदं समकोणसमचतुर्भुजिमष्टं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

झहक्षेत्रस्य भुजाः समानान्तराः सन्ति । अहबकोणाः समकोणाः सन्ति । अस्यैव क्षेत्रकोणाः समकोणाः सन्ति । झकोणस्य समकोणत्वात् । इदं क्षेत्रं समकोणस-मचतुर्भुजमुत्पन्नम् । हअहबरेखयोः समत्वात् । एवं शेषं क्षेत्रत्रयं समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । तसात् झकक्षेत्रमपि समकोणसमचतुर्भुजं जातम् ॥

९ शकलम् K.

अथाष्टमं क्षेत्रम् ।

तत्र समकोणसमचतुर्भुजान्तर्वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदचतुर्भुजं कल्पितम् । तसात् अवभुजअदभुजौ झचिह्नहचिह्न्योरिद्धितौ कार्यौ । हवलम्बझतलम्बौ कचिह्नसंलमौ
कार्यौ । तदेतस्य क्षेत्रस्य चत्वारि समकोणसमचतुर्भुजानि क्षेत्राणि भविष्यन्ति । तसात्
कहकझकवकताश्चतक्षो रेखाः समाना भविष्यन्ति । पुनः कचिद्वं केन्द्रं कृत्वा अन्यतमैकरेसाब्यासार्द्धेन वृत्तं कार्यम् । तदेष्टवृत्तं स्यात् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ।

समकोणसमचतुर्भुजोपरि वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदक्षेत्रं कल्पितम् । अजकर्णबदकर्णौ हचिद्दे संपातं

कुर्वन्ती कार्यी । तदा हअहबहजहदरेसाः समानाः सन्ति । कुतः । अस्य क्षेत्रस्य चतुर्णी भुजानां समत्वात् । अबजदस्याप्यष्टी कोणाः

समानाः सन्ति । पुनर्हकेन्द्रं कृत्वा अन्य-

तमरेखा व्यासार्द्धेन वृत्तं कार्यम् । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥ अथ दशमं क्षेत्रम् ।

एकं त्रिभुजं तादृशं कर्त्तव्यमस्ति यस्य द्वौ भुजौ समानौ स्यातां भूम्याश्रितौ कोणौ च मुखाश्रितकोणाद्विगुणौ स्याताम्।

यभा अवरेला कल्पिता । अस्या रेलायाः जिचहे तथा लण्डद्वयं

९ शकलम् K. २ व्यासाधे कृत्वा D. K.

कार्य यथा अवबजघातः अजनगंतुत्यः स्यात् । पुनः अकेन्द्रं कृत्वा अबव्यासार्द्धेन बहृदवृत्तं का-र्यम् । पुनः अजतुत्या बदपूर्णज्या कार्या। अद-रेसा कार्या। तसात् अबदित्रभुजिमष्टं जातम्।



अस्योपपत्तिः ।

जदरेला संयोज्या । अजदित्रभुजोपिर अजदिवृत्तं कार्यम् । बअबदरेले बिन्हानिसते स्तः तत्रैकया रेलया अजदिवृत्तमेदः कृतः
द्वितीया पार्लि स्पृष्ट्वेव गता । कृतः । अबवजघातः बद्दवर्गतुत्योऽस्ति ।
ततो बदरेला अजदवृत्तपार्लि स्पृष्ट्वेव गता तया वृत्तमेदो न कृतः ।
इयं यसिश्चिहे लमास्ति तस्मानिसता द्वारेला वृत्तं भित्त्वा गतास्ति ।
तया वृत्तस्य लण्डद्वयं कृतमित्ति । तस्मात् जअदकोणो बद्वकोणतुल्यो जातः । पुनर्जद्अकोणो द्वयोः कोणयोर्योज्यः । तदा बकोणतुल्यो बद्वअकोणो जद्वअकोणजअदकोणयोगतुत्यो जातः । अयं
योगो बजदकोणतुल्योऽस्ति । तस्मात् अजतुल्या बदरेला जदसमाना जाता । तेन जअदकोणजद्वअकोणो समानो जातौ । तस्मात्
बदम्स्याश्चितौ कोणौ अकोणाद्विगुणौ जातौ । इदमेवेष्टम् ।

अथवा प्रकारान्तरेणाह ।

अबद्तिभुजस्य अकोणो दजबित्रभुजस्य जदबकोणेन समानो-ऽस्ति । बकीण उभयोरेक एवास्ति । शेषं अदबकोणो दजबकोण-तुल्यो जातः । तसात् अजरेखातुल्या बदरेखा जदरेखासमाना भवि-ष्यति । अकोणो जदअकोणतुल्यो भविष्यति । अयं अकोणः पूर्वे जदबकोणतुल्यस्थितः। तसात् अबदकोणो अदबकोणः प्रत्येकं द्विगु-णितअकोणतुल्यो जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अबजन्न कार्य हकेन्द्रं कृत्वा । पुनरेतद्रृत्तपाली अचिहं कार्यम् ।

१ बकोण उभयोः संयोजितः K.

पुनः अचिहात् अदरेसा वृत्तपालिलमा निष्कास्या । इयं व्यासतुल्या

कार्या। दबहजरेला संयोज्या । पुनर्बकेन्द्रं कृत्वा बजार्द्धव्यासेन जझवं वृत्तार्द्धं कार्यम्। इदं वृत्तं बदरेलाया बिहर्गमिष्यति । कुतः । ज बवतुल्यबजरेलाया अदतुल्यत्वात् । इयं अदरेला बदरेलाया अधिकास्ति । पुनर्जदरेला विष्कपर्यन्तं निष्का-स्या। पुनर्दकेन्द्रं कृत्वा दअव्यासार्द्धेन अझचापं कार्यम् । इदं चापं जझवचापं झिबहे मेत्स्यति । कुतः । वबतुल्या दअरेला बदरेलाया अधिकास्ति । पुनर्झजझबझदरेला योजनीयाः । तत्र झबझदरेले मिथः समाने । कुतः । बजदअरेलयोः समानत्वात् । पुनर्झचिहात् झतलम्बो बजरेलोपरि निष्कास्यः । तसाद् दबरेला तिचहोपर्यर्द्धिता मविष्यति । झतजकोणः समकोणोऽस्ति । झबजकोणोऽधिककोणो

मिवष्यति । झजवर्गो झववर्गबजवर्गद्विगुणजववत्यातयोगतुल्यो-ऽस्ति । द्विगुणजववत्यातो जववद्याततुल्योऽस्ति । पुनर्बजवर्ग-जववद्यातयोगो जदजव्याततुल्योऽस्ति । दअवर्गतुल्यझववर्गो ज-दबद्यातसमानोऽस्ति । कुतः । अदरेखाया लघुवृत्तपालिसंल्यस्तात् । पुनर्दजजव्यातजददव्यातयोगो जदवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् जझवर्ग-जदवर्गो समानो जातौ । तसात् जझजदरेखे समाने जाते । पुनर्ज-झदकोणजद्झकोणाविष समानौ । झवदकोणतुल्यजद्झकोणः समानयोर्बजझकोणवझजकोणयोर्योगेन समानः । तसात् जझद-त्रिभुजस्य समयोर्भुजयोर्जझदकोणो जदझकोणः प्रत्येकं द्विगुणितज-

अथैकादशं क्षेत्रम् ।

अभीष्टवृत्तान्तः समानं पश्चभुजं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति । यथा अवजवृत्तं कल्पितम् । दशमक्षेत्रोक्तवत् त्रिभुजं कार्यम्।तद्

कोणतुल्योऽस्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

१ शकलम् K.

दह्झत्रिभुजं कल्पितम् । वृत्तान्तः अवजित्रभुजं कार्यं यथास्य त्रि-भुजस्य कोणा बहिःकल्पितित्रभुजस्यकोणैः समाना भविष्यन्ति । वृत्ता-न्तिसिभुजं अवजं कल्पितम् । पुनः अवजकोणः अजबकोणः प्रत्येकं ववरेखया जतरेखयाद्धितः कार्यः । पुनः अवरेखावजरेखाअतरेखा-तवरेखाः संयोज्याः । तसात् अतवजवं समपञ्चभुजं क्षेत्रं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

बअजकोणवबजकोणअबवकोणअजतकोणतजबकोणा मिथः

समानाः सन्ति । एतेषां चापानि समानानि पूर्णजीवाश्च समानाः । तसात्पञ्चभुजा अपि समाना जाताः । अस्य पञ्चभुजस्य यः कश्चित्कोणः पञ्चचापेषु स चापत्रये लग्नोऽस्ति । तसात्पञ्चकोणा अपि समाना जाताः ॥

प्रकारान्तरम् ।

तद्वृत्तस्य झकेन्द्रं कल्पयित्वा झअव्यासाद्धी कार्यम् । झिचिह्ने अझ-बकोणस्तादशत्रिभुजभूमितुल्यः कोणः कार्यः । झिचिह्ने बझरेस्नाया बझजकोणस्तादश एव कार्यः । पुनः झिचिह्ने जझरेस्नाया जझदकोण-

स्तत्कोणतुत्य एव कार्यः। पुनर्झचिहे दझरे-स्वाया दझहकोणः कार्यः। त्रिभुजस्य को-णत्रययोगः समकोणद्वयतुत्यो भवति । / त्रिभजस्य मुसकोण एकसमकोणस्य पञ्चमां- ह

शद्धयेन तुल्योऽस्ति । यः कोणोऽसाभिः कृतः स प्रत्येकं चतुर्गुणपश्चमां-शतुल्य एकस्य समकोणस्यास्ति । चतुर्णी कोणानां योगः समकोणत्रयस्य समकोणपश्चमांशस्य योगेन तुल्योऽस्ति । तसात् श्चेषः अझहकोण एकसमकोणस्य चतुर्गुणपश्चमांशतुल्यो जातः । तसात्पश्चकोणा अपि समाना जाताः । एतेषां चापानि पूर्णजीवाश्च समाना जाताः । यदि अववजजददहहअपूर्णज्याः संयोज्यन्ते तदा पश्चसमभुजसमकोणक्षेत्रं भवति । इदमेवास्माकमिष्टम् ।

अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तोपरि पश्चसमभुजसमानकोणं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति।

पूर्व वृत्तान्तः पञ्चसमानभुजसमानकोणं क्षेत्रं कार्यम्।पञ्चकोणेभ्यो वृत्तपालिलमा बहिः पञ्चरेखाः कार्याः। एताः पञ्चरेखा सवतकल-निदेषु मिलिता भवन्ति । पञ्चसमभुजक्षेत्रं जातम्।



अत्रोपपत्तिः ।

मकेन्द्रं कल्पितम् । केन्द्रात् दशस्य चिहेषु रेखाः संयोज्याः । तत्र सजझदरेखे समाने खः । पुनर्मजमदरेखे अपि समाने । मझरेखोन्मयोखिभुजयोरेकैव । मझजित्रभुजस्य मझदित्रभुजस्य कोणा मिथः समाना जाताः । झमजकोणो झमदकोणश्च प्रत्येकं जमदकोणस्यार्द्ध-कोणोऽस्ति । अयं जमदकोणो दमहकोणेन समानोऽस्ति । कुतः । जदचापदहचापयोः समानत्वात्। एवं दमवित्रभुजस्य वमहित्रभुजस्य कोणा मिशः समानाः । दमवकोणो दमहकोणस्यार्द्धमितोऽस्ति । तसात् दमवकोणो दमझकोणेन समानो जातः । दस्य कोणद्वयं समकोणद्वयमस्ति । मदभुजो द्वयोरेक एव । तसात् मदझिन्भुजस्य मदवित्रभुजस्य च भुजाः कोणाः समाना जाताः । एवं सर्वेऽपि भुजाः समानाः ॥

मकारान्तरम्।

मअरेखा कार्यो । अचिहात् अवझरेखा वृत्तपाछिलमा कार्या ।

९ शकलम् K.

अमरेलाया मिन्होपरि अमझकोणअमवकोणो दशमक्षेत्रोक्तित्रभुजमुलकोणतुल्यो कार्यो । मझ-रेला मवरेला च दीर्घा कार्या यथा झवरेलायां झवन्दियोः संपातं करिष्यति । तसात् झमव-कोणश्चतुणी समकोणानां पञ्चमांशो जातः । य अस्त पञ्चमतत्मककमळळमझकोणाः पूर्वकोणतुल्याः कार्याः । पञ्चकोणे-र्शृत्तस्य पञ्चसमविभागा भविष्यन्ति । पुनर्भुजा मवसमानाः कार्याः । पुनर्वतत्तककळळझरेलाः संयोज्याः । तसात्पञ्चित्रभुजानां भुजाः कोणाश्च मिथः समाना जाताः । एते सर्वे मिलित्वा पञ्चसमभुजसमान-क्षेत्रं जातम् । पुनर्मवमजमदमहळम्बाः कार्याः। एते लम्बा मअव्या-सार्द्धेन तुल्या जाता इति निश्चितम् । तसात्पञ्चसमभुजस्य भुजा वृत्त-पालिल्या जाता ईति निश्चितम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम्।

तत्र पश्चसमभुजस्य मध्ये एकं वृत्तं कर्तुमिच्छास्ति।

१ इत्युपपन्नम् D. K. २ शकलम् K.

पश्चसमभुजसमानकोणानामर्द्धमिता भविष्यन्ति। याभी रेखाभिरेते कोणा अद्भिता जातास्ता अपि समानाः स्युः। तस्मादेषां त्रिभुजानां भूमयः पश्च-समभुजस्य क्षेत्रस्य भुजरूपाः सन्ति । तेषां त्रिभुजानां भुजाः कोणाश्च मित्रः समानाः सन्ति । पुनर्जस्य द्वयोः कोणयोः समानत्वात् वमकोणयोः समकोणत्वेन झजभुजस्य एकभुजत्वेन झवलम्बझमलम्बौ सन्मानौ जाताविति निश्चितम् । एवं शेषलम्बा अपि समाना भविष्यन्ति । पुनर्झचिहं केन्द्रं कृत्वा एकलम्बार्द्वव्यासेन वतकलमवृत्तं कार्यम् । इदमभीष्टवृत्तं जातम् ।

अथ याभ्यां जकोणदकोणौ अद्धितौ कृतौ ते रेखे पञ्चसमभुजक्षे-त्रान्तर्मिलिष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

यदा जझरेला वर्द्धिता कृता तदा अवभुने संपातं कुर्वती न गिन-ध्यति । यदि संपातं करिष्यति तदा विचिद्दे संपातः कृत इति कल्पितम् । जबरेलादवरेला योजिताः । ह पुनर्जबवित्रभुने जदवित्रभुने जबजदौ भुनौ मिथः समानौ स्तः। जवभुनो द्वयोरेकैवास्ति । जस्य

द्वी कोणौ समानौ । तसाजाब अकोणो जदवकोणेन समानो जातः। जदहकोणेन समानः पूर्व स्थितः । इदम ग्रुद्धम् । पुनः अचिह्वोपरि सा रेखा न गमिष्यति । यदि गमिष्यति तदा जअरेखा द अरेखा वर्द्ध-नीया । प्रथमप्रकारेण निश्चितं जब अकोणो जद अकोणेन समानो जातः । एवं सा रेखा दहभुने संपातं न करिष्यति । हचिह्वेपि संपातं न करिष्यति । तसात्सा जङ्गरेखा अहभुने संपातं कुर्वती गमिष्यति । अनेनैव प्रकारेण दङ्गरेखा अबभुने संपातं करिष्यति । तसात् एते द्वे जङ्गदङ्गरेखे पञ्चसमभुनक्षेत्रस्थान्तः संपातं करिष्यतः ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

समीपस्थं भुजद्वयं प्रत्येकमर्द्धे कृत्वाऽर्द्धचिहात् वझत्रस्रुलम्बी कार्यौ १

एतौ द्वौ रुम्बौ पञ्चसमभुजक्षेत्रस्यान्तर्मिलिष्यतः । कुतः । वङ्गलम्बो बिद्धतश्चेत् पञ्चसमभुजक्षेत्राद्धहिर्गमिष्यति बज्जभुजे संपातं न करिष्यति । पुनस्तझलम्बः अहभुजे संपातं न करिष्यति । तसादेतौ रुम्बौ बआभुजे

मिलिष्यतः । अथवा बहिर्मिलिष्यतः । पुनर्झद्झ-

जरेला योज्या। पुनर्दवदत्तभुजयोः समानत्वेन झदस्य प्रक्रमुजत्वेन खत्योः समकोणत्वेन झद्वकोणझद्तकोणौ समानौ जाताबिति निध्वितम्। अनयोः कोणयोरन्यतरकोणः पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणार्द्धतुल्योऽितः। पुनर्शवजित्रभुजे झवदित्रभुजे झद्वकोणझज्वकोणौ
समानौ त्तः। तसाइझज्वकोणोऽिप पञ्चसमकोणसमभुजस्य क्षेत्रस्य कोणार्द्धेन तुल्यो जातः। पुनर्शदजित्रभुजे झज्बित्रभुजे जस्य द्वौ कोणौ
जबजदौ भुजौ च मिथः समानौ त्तः। झज्भुज उभयोरेक एवातिः।
तसात् जदझकोणः पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणाक्यूनोऽस्त्ययं जबझकोणन तुल्यो जातोऽथवाऽिषको जातः। इदमगुद्धम्। तसात्
तातुभौ लम्बावन्तर्मिलिष्यतः। पुनर्श्वचिद्दात् लम्बा भुजोपि निष्कासनीयाः। पते सर्वेऽपि लम्बाः समाना भविष्यन्ति। पुनत्वतो वृत्तं कार्यम्।

पुनरन्यः प्रकारः।

अबभुजो निचहपर्यन्तं निष्कासनीयः । पुनः अबरेस्रोपरि वृत्तसण्डं कार्यम्। जबनकोणतुल्यो वृत्तसण्डे कोणो भवितु-

महीति तथा कार्यम् । तत् सण्डं अझव जातम् । तस्य झचिहेऽद्धी कार्यम् । पुनर्झअरेसा झव- ह रेसा च कार्या । तदा झवअकोणो झअवको-

णश्चेतौ समानौ । अनयोर्योगो जबअकोणेन तुल्यः । तसात् प्रत्येकं पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणार्द्वतुल्यो जातः । तसात् झअहकोणो झबजकोण एताविप तस्य क्षेत्रस्य कोणार्द्वतुल्यौ जातौ । पुनर्झजरेखा झहरेखा च कार्या । त्रिभुजानां समानत्वं निश्चितम् ।

पुनर्झिचिहात् भुजेषु लम्बाः कार्याः । एते लम्बाः समानाः । पुनर्वृत्तं कार्यम् । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रंम् । पश्चसमभुजोपरि वृत्तं कर्त्तुं चिकीर्पास्ति ।

यथा अवजदहं पश्चसमभुनं किल्पतम् । पुनर्जकोणदकोणौ
रेस्नाभ्यामद्वितौ कार्यौ । तद्रेस्नाद्वयं झिचिह्ने मिलिष्यति । पुनर्झवझअझहरेसाः कार्याः । एतानि
त्रिभुजानि एते भुजाश्च समाना भविष्यन्ति ।
पश्चादेकं भुजं व्यासाद्वी कृत्वा वृत्तं कार्यम् ॥

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

प्रथमं अजरेखाअदरेखा संयोज्या । पुनः अबजत्रिभुजोपरि अबजवृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तं पञ्चसमभुजोपरि भविष्यति ॥

अत्रोपपत्तिः ।

पश्चसमभुजक्षेत्रे त्रीणि त्रिभुजानि भवन्ति । तसादस्य पश्चकोणाः घट्कोणैस्तुल्या भवन्ति । तत्रैककोण एकसमकोणेन समकोणपश्चमां- शयुतेन समानो जातः । तदा बअजकोणो बजअकोणश्च प्रत्येकं समकोणस्य पश्चमांशद्वयेन तुल्यो जातः । एवं हअदकोणोऽपि जअ- दकोणोऽपि । तसाद्वअदकोणश्चतुर्गुणितपश्चमांशेन तुल्योऽस्ति । अयं कोणो बजदकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । पुनः अबजकोणः अदजकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । पुनः अबजकोणः अजदकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । पुनः अबजकोणः अजदकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्यो जातः । तसाद्वृत्तं दिचिहे गमिष्यति । यदि दिचिहे न गमिष्यति अ- दरेसां मित्वा झिचिहे गमिष्यतीति कल्पितम् । झजरेसा कार्या । तदा अझजकोणः अदजकोणेन समानो जातः । तसात् अन्तस्थः कोणो

१ शकलम् K.

बहिःस्थकोणेन समानो जातः । अनेन प्रकारेणेदं निश्चितं वृत्तं हचि-ह्योपरि गमिष्यति ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ।

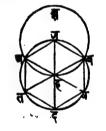
वृत्तस्यान्तः समषड्भुजं क्षेत्रं निष्कासनीयमिति चि-कीर्षास्ति ।

तत्र अबद्वृतं कार्यं जद्व्यासो हकेन्द्रं च कल्पितम् । पुनर्ज-चिह्नोपरि हजव्यासार्द्धेन अबझ्वृत्तं कार्यम् । अहरेखा बहरेखा संयोजनीया। एते रेखे वचिह्नतचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीये। पुनः अजजव-बववददततअपूर्णज्याः संयोजनीयाः। तदा समषड्भुजं क्षेत्रं जातम्।

अत्रोपपत्तिः ।

अहजत्रिभुजं बहजत्रिभुजं प्रत्येकं समत्रिभुजमस्ति । प्रत्येकक्षेत्रस्य

प्रत्यककोणः समकोणस्य द्विगुणिततृतीयांशेन तुल्योऽस्ति। तसात् दहतकोणो बहजकोणतुल्यो-ऽस्ति। अयमपि समकोणस्य द्विगुणिततृतीयांशेन तुल्योऽस्ति। तदा अहतकोणोऽनेन तुल्यो जातः। तसात् केन्द्रस्यापि षट्कोणाः समाना जाताः। प्रतेषां चापानि पूर्णज्या अपि समाना जाताः। इदमेवासाकिमष्टम्।



अनेन क्षेत्रेणायं निश्चयो जातो वृत्तंषष्ठांशस्य पूर्णज्या व्यासार्द्ध-तुत्या भवति ॥

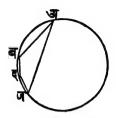
अथ षोडशं क्षेत्रम् ।

वृत्तस्यान्तः पञ्चदशसमभुजं समकोणं क्षेत्रं कर्त्तुमि-च्छास्ति।

तत्र अवपूर्णज्या पश्चसमभुजस्यैकभुजेन तुल्या निष्कासनीया ।

९ शकलम् K.

अजपूर्णज्या त्रिभुजस्यैकभुजेन तुल्या कार्या।
अबचापे त्रयः पश्चदशविभागाः पतिष्यन्ति।
बजचापे द्वौ पश्चदशविभागौ पतिष्यतः।
तदा अजचापे पश्च पश्चदशांशाः पतिष्यन्ति।
बजचापं दिचिहेऽदितं कार्यम्। तसात् बद-



चापं जदचापं प्रत्येकं वृत्तस्य पद्मदशमांशो जातः । पुनर्दजपूर्णज्या दबपूर्णज्या संयोजनीया। एवं सर्वेषु विभागेषु । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

इति श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधपदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरति संगतोऽभूचतुर्थः ॥ इति श्रीमज्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पश्चमोऽध्यायः प्रारभ्यते।

तत्र पश्चिविंशतिक्षेत्राणि सन्ति । तत्र प्रथमं परिभाषा निरूप्यते ।

यत्र प्रमाणद्वयं न्यूनाधिकमस्ति तत्र न्यूनं द्वितीयस्यांशो भवति महान् गुणगुणितलघुतुल्यो भवति ।

यदि बृहत्प्रमाणं निरवयवत्वेन निःशेषं करोति महत्प्रमाणं च रुष्विवयविघाततुल्यं भवति तत्रैको राशिर्द्वितीयराशेरंशो भवति वा गुणैगुणितद्वितीयतुल्यो भवति एतादृशं यत्र राशिद्वयं भवति तत्र निर्णेतिरित्युच्यते।

यंत्र निष्पत्तिर्भवति तत्रैकराशिरेकादिगुणितो द्वितीयराशेरिको भवति ।

येषां निष्पत्तिः सैमाना भवति ते राशयः सजातीया भवन्ति ।

यत्र राशिचतुष्टयमस्ति तत्र प्रथमराशिस्तृतीयराशिश्च केनचित्प्र-माणेन गुणितो द्वितीयराशिश्चतुर्थराशिरन्येन केनचित्प्रमाणेन गुणित-स्तत्र प्रथमघातौ द्वितीयघाताभ्यामधिकौ वा न्यूनौ वा समौ भवत-स्तदा ते राशय एकनिष्पत्त्युपिर सन्ति।प्रथमराशिनिष्पत्तिर्द्वितीयेन यथा भवति तथा तृतीयनिष्पत्तिश्चतुर्थेन। इयं निष्पत्तिः सजातीया ज्ञेया।

यदि प्रथमघातो द्वितीयघातादिषको भवेत् तृतीयघातश्चतुर्थाद-घिको न भवेत् तत्र प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिस्तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तेरिष-का भवेत् तत्राधिकनिष्पत्तिः संज्ञा ज्ञेया । विजातीया च ज्ञेया ।

यत्र चतुर्णी राशीनां मध्ये द्वितीयः प्रथमः कल्पते तत्र विलोम-निष्पत्तिर्भवति ।

९ शक्लानि K. २ लध्यवयिषातं B. ३ एकादिगुणिततुल्योभवति B. ४ निष्पत्तिर्भवति B. ५ तत्रैकराशिषाता द्वितीयराशेरिषका भवन्ति तत्रापि निष्पत्तिरूत्यते । B. ६ Ms. B. inverts the order.



यत्र प्रथमस्य प्रथमेन निष्पत्तिर्देश द्वितीयस्य द्वितीयेन निष्पत्ति-र्देश तत्र विनिमयनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमद्वितीययोगेन यदि द्वितीयस्य निष्पत्तिर्दीयते तत्र योग-निष्पत्तिर्देशा ।

प्रथमस्य प्रथमद्वितीययोर्योगेन निष्पत्तिर्दीयते तत्र विलोमयोग-निष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमद्वितीययोन्तरेण द्वितीयस्य निष्मतिर्दीयते तत्रान्तरनि-ष्पत्तिर्हेया ।

प्रथमस्य प्रथमद्वितीययोरन्तरेण निष्पत्तिर्दीयते तत्रान्तरविस्रोमनि-ष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र पक्किद्वये बहूनि प्रमाणानि सन्ति प्रत्येकं प्रमाणद्वयमेक-पक्किस्थं यस्यां निष्पत्तौ भवेत् द्वितीयपक्कौ तादृशं प्रमाणद्वयं त-स्यामेव निष्पत्तौ यदि भवेत् तत्रान्तरालस्थानि प्रमाणानि त्यक्त्वा आ-चन्तयोरेव निष्पत्तिरुंखते तत्र समाना निष्पत्तिर्ज्ञेया ॥

यत्र राशित्रयात्मकं पैक्किद्वयमस्ति तत्र प्रथमपक्कौ प्रथमप्रमाणस्य द्वितीयेन यथा निष्पत्तिरस्ति तादृश्येन द्वितीयपक्कौ प्रथमद्वितीवयो-रस्ति पुनः प्रथमपक्कौ द्वितीयपृतीवयोर्वा निष्पत्तिः सैव द्वितीयपक्कौ द्वितीयपृतीययोरियं यथाक्रमनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमपङ्को प्रथमद्वितीययोर्यादश्ची निष्पत्तिरस्ति तथा द्विती-यपङ्को द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तिर्भवति पुनः प्रथमपङ्कौ द्वितीय-तृतीययोर्निष्पत्तिः सैव द्वितीयपङ्कौ प्रथमतृतीयनिष्पत्तिर्भवति इयं कमरहिता निष्पत्तिर्देया ॥

इति परिभाषा ।

⁹ Ms. B. omits it. २ °ईखते B. ३ प्रमाणद्वय° B.

अथ प्रथमं क्षेत्रम् ।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रमाणे द्वितीय-प्रमाणं यावद्भुणं भवति तावद्भुणं चतुर्थप्रमाणं तृतीये भ-वति तत्र प्रथमतृतीययोगे द्वितीयचतुर्थयोगस्तद्भुणित एव भवति ।

यथा अवरेलायां यावत्यो हरेलाः प्राप्यन्ते तावत्यो यदि जद-रेलायां झरेलाश्च प्राप्यन्ते तदा अवजदयोगे हझयोगास्तावन्त एव प्राप्यन्ते ।

अत्रोपपत्तिः ।

अबरेसाया विविद्वे हतुल्यं भागद्वयं कार्यं जदरेसायास्तविहे झतुल्यं भागद्वयं कार्यम् । तदा अवजतयोगो हझयो- अ
गतुल्योऽस्ति । वबतदयोगो हझयोगेन तुल्योऽस्ति ।
तसात् अवजदयोगे हझयोगास्तावन्तो भविष्यन्ति व
विश्व अवरेसायां यावत्यो हरेसाः सन्ति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

षद्प्रमाणानि यत्र भवन्ति प्रथमप्रमाणे यदङ्कराणितं द्वि-तीयप्रमाणं भवत्येवं तृतीयप्रमाणे तद्गुणितचतुर्थप्रमाणं यदि भवति पश्चमप्रमाणे यद्गुणितं द्वितीयप्रमाणं भवति तद्गु-णितमेव चतुर्थप्रमाणं षष्ठप्रमाणे यदि स्थात् तदा प्रथमपञ्चम-प्रमाणयोगेंगे यद्गुणितं द्वितीयप्रमाणं स्थात् तृतीयषष्ठप्रमा-णयोगे तावद्गुणमेव चतुर्थप्रमाणं स्थात् ।

यथा अबप्रमाणे जप्रमाणं यद्गुणं स्यात् तद्गुणमेव अप्रमाणं दह-

Digitized by Google

⁹ शकलम् K. २ यहुणं D. K. ३ तहुणं D. K.

प्रमाणे स्यात् पुनर्बवप्रमाणे यद्गुणं जप्रमाणं स्यात् अत्र तद्गुणमेव अप्रमाणं हतप्रमाणे स्यात् तदा अवप्र-माणे यद्गुणं जप्रमाणं स्यात् तद्गुणमेव अप्रमाणं व दत्तप्रमाणे भवति ॥ अत्रोपपत्तिः । व ज त अ

अबप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितमेव झप्रमाणं दहप्रमाणे-ऽिस्त । पुनर्बवप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितं झप्रमाणं हतप्र-माणेऽिस्त । समानप्रमाणेषु समानानि प्रमाणानि योज्यन्ते तदा समान्येव भवन्ति । तस्मात् अवप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितमेव झप्रमाणं दत्रप्रमाणेऽिस्त । इदमेवास्माकिम्ष्टम् ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रमाणे यद्धुणितं द्वितीयं भवति तृतीयप्रमाणे तद्भुणमेव चतुर्थप्रमाणं भवति पुनः प्रथमप्रमाणं यद्भुणगुणितं तेनैव गुणकेन तृतीयं गुणनीयं प्रथमगुणनफले यद्भुणितं द्वितीयं स्थात् तद्भुणमेव चतुर्थप्रमाणं तृतीयगुणनफले स्थात् ।

यथा अप्रमाणे यद्भुणं बप्रमाणमस्ति तद्भुणमेव द्रप्रमाणं जप्रमाणे भवति इञ्चप्रमाणे यावन्ति अप्रमाणानि सन्ति मानित वत्रप्रमाणे तावन्त्येव जप्रमाणानि भवन्ति तदा इञ्चप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि सन्ति तावन्त्येव वत्रप्रमाणे दप्रमाणानि मवन्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

हञ्चप्रमाणस्य कि अप्रमाणतुत्या विभागाः | | | | | | | कार्याः । वतप्रमाणस्य लिचेहे जप्रमाणतुत्या विभागाः भवजं ६ ह व कार्याः । तदा अतुत्यहकप्रमाणे यावन्ति वप्रमाणानि सन्ति जतुत्य-

१ शकलम् К.

बलप्रमाणे तावन्त्येव इप्रमाणानि सन्ति । अतुत्यक्रझप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि तावन्त्येव दप्रमाणानि जतुत्यलतप्रमाणे भवन्ति । तदा इझप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि सन्ति वतप्रमाणे तावन्त्येव दप्रमा-णानि भविष्यन्ति । इदमस्यदिष्टम् ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

प्रथमप्रमाणस्य द्वितीयप्रमाणेन यथा निष्वत्तिः स्यात् तथा यदि तृतीयस्थापि चतुर्थेन स्यात् पुनः प्रथमप्रमाणं तृती-यप्रमाणं केनचित्समेनाङ्केन गुणनीयं तथा द्वितीयं चतुर्थे च केनापि समेनान्येनाङ्केन गुणनीयं तत्र प्रथमगुणनफलस्य द्वितीयगुणनफलेन या निष्पत्तिः सैव तृतीयगुणनफलस्य चतुर्थेन निष्पत्तिः स्यात्।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिः सैव जदयोर्भ-वति । अजौ केनचिदक्केन गुणितौ फलं हुझौ बदा-वाप्यन्येनाक्केन गुणितौ जातौ वतौ तत्र हृवयोर्था निष्पत्तिः सैव झतयोर्निष्पत्तिः स्यात् ।

अस्योपपत्तिः ।

ह्झयोर्षाता लमसंज्ञा वतयोर्घाता नससंज्ञा लमसंज्ञा अजयोर्षाता नससंज्ञा बद्योर्घाताः । पुनर्लमो नसयोरिषकावथवा न्यूनावथवा समौ भविष्यतः । तसात् यावन्तो घाता ह्झयोर्था-वन्तो घाता वतयोस्तत्र प्रथमौ द्वौ घातौ द्विती-यघाताभ्यामिषकावथवा न्यूनावथवा समानौ भवि-ष्यतो नत्वन्यथा । तसात् हप्रमाणवप्रमाणयो निष्पत्तिः सेव झप्रमाणतप्रमाणयोर्निष्पत्तिः स्यात् । इदमेवास्माकिष्टम् ॥

स व ह व ल न ज द झ त म स

९ शकलम् K.

अथ पञ्चमं क्षेत्रम् ।

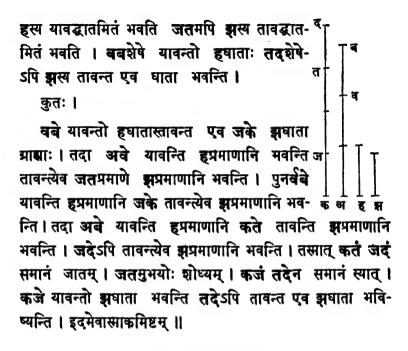
तत्र प्रमाणद्वयमध्ये एकं प्रमाणं गुणगुणितद्वितीयप्रमाणतुल्यमस्ति । अनयोर्द्वयोः प्रमाणयोर्मध्ये तादृशमेव
प्रमाणद्वयं शोध्यं शेषमपि तादृशमेव भवति । प्रथमशेषं
गुणगुणितद्वितीयशेषतुल्यं भवतीत्यर्थः।

यथा अवप्रमाणं गुणगुणितज्ञद्ममाणतुल्यमित । अनयोः प्रमाणयोः अहं जझं च शोधितम् । अहमपि तद्गुणगुणितजझतुल्यमित । हवशेषमपि तद्गुणितझदतुल्यमित ।
अत्रोपपितः ।
इसदं केनचिदहेन गुणितं जातं अतं हवसमानम् ।
तदा तहं तद्गुणकगुणितज्ञदतुल्यं भविष्यति । अवप्रमाणमपि तद्गुणगुणितमेवास्ति । तदा हतं अवं समानं ज्ञातम्।अनयोः अहं शोध्यम्।अतं हवेन समानं स्थात्।
इवमपि तद्गुणगुणितझदतुल्यं स्थात्। इदमेवास्थाकिमिष्टम् ॥ अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।
अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।

द्वे प्रमाणे अन्ययोर्द्वयोः प्रमाणयोर्गुणगुणितयोस्तुल्ये स्यातां तयोः प्रमाणयोरन्यं तद्धिन्नं तृतीयप्रमाणद्वयं गुणि-तद्वितीयप्रमाणद्वयतुल्यं शोधितं चेच्छेषमपि गुणितद्वितीयप्र-माणद्वयतुल्यमेव भवति ।

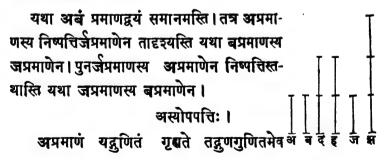
बया अबप्रमाणं जदप्रमाणं हप्रमाणस्य श्रप्रमाणस्य यावद्धातिमतं भवति । पुनः अवं अबात् शोधितम्। जतं जदात् शोधितम्। अवं

९ शकलम् K.



अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

यदि प्रमाणानि समानि सन्ति तत्रान्यप्रमाणेन सर्वेषां प्रमाणानां निष्पत्तिस्तुल्यैव भवति । अन्यप्रमाणस्यापि तै- निष्पत्तिस्तुल्या भवति ।



९ शकलम् K. २ सुस्यैवस्यात्तदा तानि प्रमाणानि समानानि भवन्ति। D. K.

सप्तमाणं प्राह्मम् । तत्र अवप्रमाणयोर्गुणघातौ दहतुल्यौ कलिपतौ । जप्रमाणस्यापि कियन्तो घाताः कल्पितास्तस्य फलं झं
कल्पितम् । एवं यदा दप्रमाणं झप्रमाणादिषकं वा न्यूनं समं वा
मविष्यति तदा इप्रमाणमपि तादृशमेव भवति । एवं हि झप्रमाणं
दप्रमाणात् इप्रमाणादिषकं न्यूनं वा समं भविष्यति तसानिष्पत्तिरेकैव जाता । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ।

तत्र प्रमाणद्वयमस्ति एकं लघु द्वितीयं बृहत्। तत्र बृह-स्रमाणस्य केनिचचृतीयप्रमाणेन निष्पत्तिरिधका भवति लघुप्रमाणस्य निष्पत्तिस्तृतीयप्रमाणेनाल्पा भवति । पुनः तृतीयप्रमाणस्याल्पप्रमाणेन निष्पत्तिर्महती भवति । तृतीय-प्रमाणस्य बृहस्रमाणेन निष्पत्तिर्म्यूना भवति ।

यथा अबं बृहत्प्रमाणं जं लघुप्रमाणं दं तृतीयप्रमाणमस्ति । तत्र

अवप्रमाणस्य दप्रमाणेन निष्पत्तिरघि-कास्ति जप्रमाणस्य दप्रमाणेन न्यूना मवति । पुनर्दप्रमाणस्य जप्रमाणेन निष्पत्तिरधिकास्ति । दप्रमाणस्य अवप्र-माणेन न्यूनास्ति । अस्योपपत्तिः ।

अस्यापपात्तः । तत्र अवपमाणे जतुत्यबह्ममाणं

पृथकार्यम् । अहप्रमाणह्वप्रमाणयो- ते हें में ने से चे प्रत्यत् खण्डं द्वितीयखण्डादिषकं न भवेत् तत् आहं कल्पितम् । एत-स्प्रमाणं तावत्पर्यन्तं एकादिगुणं कर्त्तव्यं यावद् दप्रमाणादिषकं स्यात् ।

१ शकलम् K.

तत्कलं झवं कल्पितम् । यदि अहममाणं दम्माणादिधकमेवास्ति तदा स्वेच्छया एकादिगुणितं माद्यं तदिप फलं झवं कल्पितम् । इबस्यापि ताबन्त एव घाता माद्याः। अस्य फलं वतं कल्पितम् । पुनेर्जस्य ताव-द्वाताः कल्पसंज्ञाः कृताः । तत्र तवकले समाने स्तः । अनयोः प्रेमाणं प्रत्येकमधिकमस्ति दममाणात् ।

पुनर्द द्विगुणं शासं तत्फलं मत्रमाणं किल्पतम् । पुनर्दप्रमाणं त्रिगुणं शासं तत्म नप्रमाणं किल्पतम् । एवं चतुर्गुणं पञ्चगुणं वा शासं
यावत्कलप्रमाणादिषकं त्यात् । तत्फलं सप्रमाणं किल्पतम् । नप्रमाणं
कलप्रमाणादिषकं नास्तीति किल्पतम् । वतप्रमाणादिषकं नास्ति ।
तदा दप्रमाणं नप्रमाणोपिर वर्द्धनीयं तदा सप्रमाणं जातं सवप्रमाणं
वतप्रमाणोपिर वर्द्धनीयं तदा स्रतप्रमाणं जातम् । पुनर्शवप्रमाणं दप्रमाणादिषकमासीत् । सतप्रमाणं च सप्रमाणादिषकं जातम् । सतप्रमाणं तावद्धणअवप्रमाणसमं यावद्धणं जप्रमाणं कलप्रमाणतुल्यम् ।
तस्मात् अवप्रमाणस्य जप्रमाणस्य च घाताः समानाः प्राप्ताः । अवधाता दघातेभ्योऽधिका जाताः । जस्य घाता अधिका न जाताः ।
तस्मात् अवप्रमाणनिष्पत्तिद्प्रमाणेनाधिका जाता । जप्रमाणस्य च
न्यूना जाता । पुनरि दघाता जघातेभ्योऽधिकाः सन्ति । अवधाताच्यूनाश्च । तस्माद् दस्य निष्पतिर्जप्रमाणेनाधिका जाता अवप्रमाणास्यूना
जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अय नवमं क्षेत्रम् ।

येषां प्रमाणानामन्यप्रमाणेन निष्पत्तिसुल्यास्ति तानि प्रमाणान्यपि तुल्यानि भवन्ति । एवमन्यप्रमाणस्य तैः प्रमाणीनिष्पत्तिस्तुल्यास्ति तदा तान्यपि प्रमाणानि तुल्यानि ।

९ जाप्रमाणस्थापि ताबन्तो घाता प्राह्माः । अस्य फक्षं क्रस्तं किल्पतम् । K. २ $B \ omits \ y्रमाणं. ६ शक्तम् <math>K$.

यथा अप्रमाणस्य जप्रमाणेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा वप्रय जप्रमाणेन । तदा अवप्रमाणे समाने जाते । पुन-रपि जप्रमाणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणेन तथास्ति यथा जप्रमाणस्य वप्रमाणेन निष्पत्तिरस्ति । तसादिपि च अप्रमाणवप्रमाणे समाने जाते ।

अस्योपपत्तिः ।

वदि ते द्वे प्रमाणे समाने न भवतः किं च न्यूबा-विके भवतस्तदा तकोर्निष्पत्तिरिप न्यूमाधिका स्मात् । पूर्व च निष्यत्त-यस्तुस्याः कव्यिताः । एतदशुद्धम् । असदिष्टं समीचीवव् ॥

अथ दशमं क्षेत्रेम्।

ययोर्द्रयोः प्रमाणयोर्मध्ये यस्यैकस्य प्रमाणस्य तृतीयप्रमा-णेन निष्पत्तिरधिकास्ति तस्रमाणमप्यधिकं भवति यस्य तृती-येन निष्पत्तिन्यूनास्ति तक्यूनम् । पुनस्तृतीयप्रमाणस्य तयो-र्मध्ये येन प्रमाणेन निष्पत्तिरधिकास्ति तस्रमाणं न्यूनं भवति येन प्रमाणेन निष्पत्तिन्यूनास्ति तस्रमाणमधिकं भवति ।

यथा अप्रमाणस्य निष्पत्तिजिप्रमाणेनाधिकास्ति वप्रमाणस्य निष्प-त्तिन्यूनास्तीति कल्पिता । तदा अप्रमाणं वप्रमाणादिधकं भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

यदि अप्रमाणं बप्रमाणेन समानमस्ति तदा अप्र-माणबप्रमाणयोर्निष्पत्ति जीप्रमाणेनैकरूपा भविष्यति । यदि अप्रमाणं बप्रमाणाच्यूनमस्ति तदा अप्रमाणस्य निष्पत्ति जीप्रमाणेन न्यूना भविष्यति । बप्रमाणस्य जप्र-माणेनाचिका भनिष्यति । अत्रैवं नास्ति । तस्तात् अप्रमाणं बप्रमाणाद-विकं जातम् ।

९ इदमेवास्माकमिष्टम् । D. K. २ शक्तम् K.

पुनरिप जपमाणस्य बप्रमाणेन निष्पत्तिरिषकास्ति । जप-माणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणेन न्यूनास्ति । तसात् अप्रमाणमिकमस्ति बप्रमाणतः ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि अप्रमाणं बप्रमाणतुल्यं स्यात् तदा जप्रमाणस्य निष्पत्तिः प्रमाणद्वयादप्येकरूपा स्यात् । यदि अप्रमाणं बप्रमाणाक्यूनमस्ति तदा जप्रमाणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणादिषिका मिवष्यति बप्रमाणाच न्यूना मिवष्यति । ऐवं च नास्ति । कुतः । जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणा-दिषका कल्पिताऽस्ति । तसात् अप्रमाणमिकं ब्रम्माणाज्ञातम् । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथैकादशं क्षेत्रम्।

या निष्पत्तय एकनिष्पत्तेसुल्याः सन्ति ता निष्पत्तयोः मिथसुल्याः स्युः ।

यथा अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बपमाणेन यथा जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्द-प्रमाणेन । पुनर्हप्रमाणस्य निष्पत्तिर्झप्रमाणेन तथास्ति यथा जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्दप्रमाणेन । तसात् । अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणेन तथास्ति यथा ह्रममाणस्य निष्पत्तिर्झप्रमाणेन ।

अस्योपपत्तिः ।

तत्र अप्रमाणजप्रमाणहप्रमाणानां एकरूपा घाता प्राह्माः । ते च

बा प्रमाणजप्रमाणहप्रमाणानां एकरूपा घाता प्राह्माः । ते च

वप्रमाणतप्रमाणकप्रमाणरूपा भवन्ति । वप्रमाणद्रप्रमाणक्षप्रमाणा-नामपि एकरूपा घाता प्राचाः । ते च लप्रमाणसप्रमाणनप्रमाणरूपा

९ अत्रैवं नास्ति B. २ शकलम् K. ३ प्रमाणात् B.

मवन्ति । अवयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा जदयोर्निष्पत्तिः । तदा वप्रमाणतप्रमाणे रूप्रमाणमप्रमाणयोरिषके भवतो वा न्यूने स्तः समे स्तो वा । पुनर्जप्रमाणदप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा हप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तिः । तदा तप्रमाणकप्रमाणे मप्रमाणनप्रमाणयोरिषके वा न्यूने वा समे भवतः । तसात् वप्रमाणकप्रमाणे रूप्रमाणनप्रमाणयोर्निष्पत्ति वा न्यूने वा समे भवतः । तसात् अप्रमाणवप्रमाणयोर्निष्पत्ति- इप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्ति-

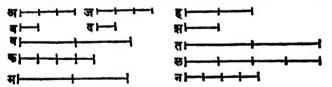
अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

तत्र या निष्पत्तिरन्यनिष्पत्तेसुल्या भवति अन्या नि-ष्पत्तिस्तृतीयनिष्पत्तेरिधका चेत् तदा प्रथमा निष्पत्तिरिप तृतीयनिष्पत्तेरिधका भविष्यति ।

यथा अप्रमाणवप्रमाणयोर्निष्यत्तिस्तथास्ति यथा जप्रमाणद्प्रमा-णयोः । पुनर्जप्रमाणद्प्रमाणयोर्निष्यतिर्हेप्रमाणञ्चप्रमाणनिष्यत्तेरिक्ष-कास्ति । तसात् अप्रमाणवप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्हप्रमाणञ्चप्रमाणनिष्यत्ते-रिषका मनिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

तत्र जप्रमाणहप्रमाणयोः कियन्तः समा घाता प्राचाः । तथैव



दप्रमाणझप्रमाणयोघीतौ प्राद्धाः । परं च ते घातास्तया प्राद्धा यथा जप्रमाणस्य घाता दप्रमाणापेक्षयाऽधिका भवन्ति । हप्रमाणस्य घाता झप्रमाणाद्यथा अधिका न भवन्ति तथा प्राद्धाः । वप्रमाण-तप्रमाणे जप्रमाणहप्रमाणयोघीताः कल्पिताः । पुनः कप्रमाणस्वप्रमाणे

१ शक्छम् K. २ ग्रेणकाः B.

द्रम्माणद्रावमाणयोधीतौ कस्पितौ। यथा चत्रप्रमाणे उद्द्रम्माणयोधीतौ द्वः तथा अप्रमाणस्य मप्रमाणयाता प्राधाः । पुनः कळप्रमाणे द्वन्नमाणयोथीवन्तो धौतास्तावन्त एव चप्रमाणस्य नप्रमाणयास्य व्याद्याः । अप्रमाणद्रप्रमाणयोभिष्यत्तिस्त्याद्वि वथा उप्रमाणद्रप्रमाणयोरिक्व । तदा मत्रमाणव्यमाणे नत्रमाणकप्रमाणाम्यामिके मवलो वा म्यूने वा समे स्तः । वप्रमाणं कप्रमाणाद्यिकवस्ति । तस्माणं उप्रमाणाद्यिकं नास्ति । तस्मात् मम्माणं नप्रमाणाद्यिकं गविष्यति तप्रमाणं उप्रमाणाद्यिकं नास्ति । तस्मात् मममाणं नप्रमाणवप्रमाण-योनिष्यत्ति स्वात् स्वप्रमाणवप्रमाण-योनिष्यत्ति हिप्रमाणद्वाप्रमाणयोनिष्यत्ते । इदमेवा-साकमिष्टम् ॥

अय त्रयोदशं क्षेत्रम्।

यत्र बहुनि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तत्र प्रथमप्र-माणस्य द्वितीयप्रमाणेन या निष्पत्तिः सेव सर्वेषां प्रथमप्रमा-णानां थोनस्य स्वस्वद्वितीयप्रमाणानां योमेन भविष्यति ।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अप्रमाणद्प्रया-णयोर्निष्पत्तिरस्ति पुनर्हप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथेवास्ति । तसात् अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथा जाता तथा अजहप्रमाणानां खेगस्य बद्दशप्रमाणानां योगेनास्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

^{9 °}र्गुणके B. २ गुणका B. ३ शकलम् K.

न्यूनताधिक्यं समस्वं च सर्वेषां वातानां वातेभ्य एकहरणेव स्वात् । यदि वप्रमाणं छप्रमाणादिषकमस्ति तदा वतकप्रमाणानां योगो छमनप्रमाणयोगादिषको मविष्यति । यदि तक्यूनं स्वात् हादा योगो योगाच्यूनः स्यात् । समस्वे समानः स्वात् । अप्रमाणक् वप्रमाणयोनिष्पत्तिस्तादृश्यस्ति यथा सर्वेषां प्रमाणानां योगस्य निष्पत्ति-योगेनास्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

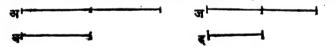
अब चतुर्दशं क्षेत्रम् ।

षदि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तत्र यदि प्रथमप्रमाणं तृतीयापेक्षयाऽधिकं स्वात् तदा द्वितीयप्रमाणं षतुर्थोदप्यधिकं स्वात्। यदि प्रथमं तृतीयापेक्षयाक्यूनमस्ति तदा द्वितीयं चतुर्थोक्यूनं भविष्यति। समं चेत्तदि समम्।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्यत्तिस्यथास्ति यथा अप्रमाणद्प्र-माणयोरस्ति । अप्रमाणं जप्रमाणादिषकं कल्पितं तदा वप्रमाणं द्वमाणादिषकं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अधिकप्रमाणस्य अप्रमाणस्य निष्यत्तिर्बप्रमाणेन यास्ति सा अपन् माणस्य या निष्यत्तिर्बप्रमाणेन तस्या अधिकास्ति । पुनर्जप्रमाणस्य निन



ख्यतिर्देशमाणेन तथास्ति यथा अग्रमाणस्य निष्यतिर्देशमाणेनास्ति ।
तसात् अप्रमाणस्य निष्यविर्देशमाणेन यास्ति सा अप्रमाणस्य निष्यतिर्वेप्रमाणेन यास्ति तस्या अधिकास्ति । तसात् अप्रमाणमधिकमस्ति
द्रप्रमाणात् । एवं साम्यं न्यूनत्वं च निश्चीयते । इदमस्रदिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

यदि अप्रयाणमिकमस्ति जप्रमाणात् बममाणमधिकं न चेत् इप्र-

१ शकलम् K.

माणात् तदेदं बपमाणं दपमाणाच्यूनं वा समानं भविष्यति । यदि
न्यूनं तदा जप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्जप्रमाणदप्रमाणयोर्निष्पत्तेरधिका भविष्यति । अप्रमाणबप्रमाणनिष्पत्तेरप्यधिका भविष्यति । तसात्
जप्रमाणं अप्रमाणादधिकं भविष्यति । अप्रमाणं जप्रमाणादधिकमेव
कल्पितमसाभिः । एतद्शुद्धम् । अनेनैव प्रकारेण समानमपि न भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम्।

तत्र प्रमाणानां या निष्पत्तिः सैव समगुणकगुणितानां प्रमाणानां निष्पत्तिर्भवति ।

यथा जङ्गप्रमाणे कल्पिते। तत्र जप्रमाणस्य घातः अवप्रमाणं कल्पितम्। अप्रमाणस्य घातः दहप्रमाणं कल्पितम्। जप्रमाणङ्गप्रमा-णयोनिष्पत्तिस्तथास्ति यथा अवदहप्रमाणयोः।

अस्योपपत्तिः ।

अवप्रमाणस्य विचहतिचह्योरुपरि जतुत्या विभागाः कर्तव्याः ।
दहप्रमाणस्य लिचहमिचहोपरि ज
झतुत्या विभागाः कर्तव्याः । तसात्
जझयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अवदलप्रमाणयोर्निष्पत्तिः । सैव
वतप्रमाणलमप्रमाणयोरस्ति । सैव तबप्रमाणमहप्रमाणयोरस्ति ।
एकस्यैकेन निष्पत्तिस्तादृश्यस्ति यथा योगस्य निष्पत्तियोगेनास्ति ।
तस्मात् जप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अवप्रमाणदृहप्रमा-

अय पोडशं क्षेत्रम् ।

तत्र चतुर्णी प्रमाणानां सजातीयानां प्रथमद्वितीययोनिचित्तिस्थास्ति यथा तृतीयचतुर्थयोरस्ति। ईदृशानां प्रमाणानां

णयोरस्ति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

१ चकलम् K. २ गुण° B.

प्रथमतृतीययोरिप निष्पत्तिस्तथास्ति यथा द्वितीयचतुर्थयो-रस्ति। तत्र प्रथमस्य निष्पत्तिस्तृतीयेन तथास्ति यथा द्वितीयस्य निष्पत्तिश्चतुर्थेन ।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोनिष्यत्तिर्ज्जममाणदप्रमाणनिष्यत्तेरतुल्या किल्पता तदा अप्रमाणजप्रमाणयोनिष्यत्तिरतया मविष्यति यथा बप्रमाणद्रमाणयोनिष्यत्तिभविष्यति ॥

अस्योपपत्तिः ।

तत्र अप्रमाणबप्रमाणयोरकरूपास्तुल्या घाता आधाः। ते च हप्रमाण-

भग्रमाणतुल्याः कल्पिताः । पुनर्जप्र
गाणद्रमाणयोरिप समाना घाता बार्मा विकास विकास

द्रप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्यथा वप्रमाणतप्रमाणयोरितः । तसादिष इप्रमाण-श्रप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्यथा वप्रमाणतप्रमाणयोरितः चेत् हप्रमाणं वप्रमाणा-दिषकं स्यात् तदा श्रप्रमाणं तप्रमाणादिषकं भविष्यति । यदि च हप्र-माणं वप्रमाणान्यूनमस्ति तदा श्रप्रमाणं तप्रमाणान्यूनं भविष्यति । यदि समानं स्यात्तदा समानं भविष्यति । तसात् इप्रमाणश्रप्रमाणे यावद्गुणितअप्रमाणबप्रमाणे स्तः । वप्रमाणतप्रमाणे यावद्गुणितज्ञप्र-माणद्प्रमाणे स्तः।तत्र प्रथमे प्रमाणे द्वितीयाम्यामिषके भविष्यतो न्यूने वा समे वा । तसात् अप्रमाणजप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्बप्रमाणद्प्रमाणयो-भविष्यति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रेम् । तत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तेषु प्रथमद्वितीययोस्ताहशी-

१ शकलम् К.

निष्यित्तरित यादशी तृतीयचतुर्थयोः। तत्र प्रथमद्वितीययो-रन्तरनिष्यत्तिद्वितीयप्रमाणेन तथास्ति यथा तृतीयचतुर्थयो-रन्तरस्य चतुर्थप्रमाणेनास्ति ।

यथा अबप्रमाणबहुपमाणयोर्निष्पत्तिर्जदप्रमाणदृश्चप्रमाणनिष्पत्ति-तुत्या कल्पिता । तदा अहप्रमाणहृबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथा जाता यथा जश्चप्रमाणश्चदप्रमाणयोर्निष्पत्तिरस्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

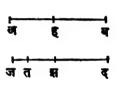
अहप्रमाणहबप्रमाणजञ्जप्रमाणञ्चदप्रमाणानामेकरूपा घाता प्राचाः।

ते च वतप्रमाणतकप्रमाण-**स्रम**प्रमा**णमन**प्रमाणतुल्याः ^भ कल्पिताः । तत्र वतप्रमाणं <u>।</u>-अहप्रमाणस्य यावद्रुणम-स्ति ताबदेव तकप्रमाणं 🕒 हबप्रमाणस्य गुणनप्रलम-स्ति । तस्मात् वकप्रमाणं अवप्रमाणस्य तावद्रुणमेव जातम् । एवं छनप्रमाणं जदप्रमाणस्य तावद्रुणमेव जातम् । तसात् वकप्रमाणलनप्रमाणे अवप्रमाणजद्ममाणयोरेकरूपे बावद्वुणे जाते। पुनईबप्रमाणझदप्रमाणयोः कसप्रमाणनगप्रमाणे एकऋपे यांवद्वुणे कल्पनीये । तदा कतं प्रथमप्रमाणं इबद्वितीयप्रमाणस्य याबद्वुश्रमस्ति ताबदेव मनं तृतीयप्रमाणं सदचतुर्थप्रमाणस्य यावद्वणमस्ति । पश्चमं कसप्रमाणं द्वितीयहब्यमाणस्य याबद्वुणमस्ति ताबदेव पष्ठं नगप-माणं श्रद्चतुर्थप्रमाणस्य तावद्गुणमस्ति । तस्मात् तसप्रमाणं इबप्रमा-णस्य याबद्धणमस्ति मगप्रमाणं इतद्यमाणस्य ताबद्धणमेवास्ति । त-सात् वक्रममाणलनप्रमाणे अवप्रमाणज्ञद्प्रमाणयोरेकरूपे याव-द्वुणे स्तः । तसप्रमाणमगप्रमाणे च इबप्रमाणझद्प्रमाणयोरप्येकरूपे गुणे स्तः । अवपमाणबहुप्रमाणयोर्निष्यत्तिस्तथास्ति यथा जदप्रमाण-

दश्यमाणयोरस्ति । तसात् वक्यमाणलन्यमाणे तसप्रमाणमगप्र-माणयोर्न्यूने वाऽिषके वा समे भवतः । पुनस्तकप्रमाणं मनप्रमाणं च द्वयोः शोष्यम्। तदा वतप्रमाणलमप्रमाणे कसप्रमाणनगप्रमाणयो-रिषके वा न्यूने समे वा भवतः । पुनर्वतप्रमाणलमप्रमाणे अहप्रमाण-जश्यमाणयोर्यावद्धातरूपे स्तः । कसप्रमाणनगप्रमाणे ह्वप्रमाणश्चद-प्रमाणयोरप्येकरूपे गुणे स्तः । तसात् अहप्रमाणह्वप्रमाणयोर्निष्यति-जश्यप्रमाणश्चदप्रमाणयोर्निष्यतिरिवंस्ति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अह्प्रमाणस्य निष्पत्तिई बप्रमाणेन या भवति तादशी जझप्रमाणस्य निष्पत्तिई-द्रप्रमाणेन यदि न भवति तदा तझप्रमाणस्य निष्पत्तिईद्रप्रमाणेन भवतीति कल्पनी-



यम् । पुनर्यथा अहममाणस्य निष्पत्तिस्तझप्रमाणेन तथा हबप्रमाणस्य निष्पत्तिझद्रममाणेन । पुनः अबस्य निष्पत्तिह्वेन जदझद्योर्निष्प-तितुल्यास्ति । ईयं कीदृश्यस्ति । यथा तद्रममाणस्य निष्पत्तिझद्रम-माणेन । तसात् जदतदी समानी जाती। इदं निष्तम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम्।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि भवन्ति तत्र प्रथमद्वितीययोनिणितः कीर्दंशी भवति यथा तृतीयचतुर्थयोभीविष्यति । तत्र
प्रथमद्वितीययोगस्य द्वितीयेन निष्पत्तिस्तथा भवति यथा
तृतीयचतुर्थयोगस्य चतुर्थेन भवति ।

⁹ From पुनः to भवतः omitted in B. २ °रैवास्ति B. ३ तस्मात् अवप्रमाणस्य निष्पत्तिः तृद्प्रमाणेन तथा हृबप्रमाणस्य निष्पत्तिः द्वाद्प्रमाणेन K. ४ तस्मात् अवप्रमाणस्य निष्पत्तिस्तद्प्रमाणेन तथास्ति हृबद्यद्योर्निष्पत्तितुः स्वास्ति B. ५ शक्सम् K. ६ तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तिसद्शी भवति B.

अस्योपपत्तिः ।

यधेवं न भवति तदा दश्रश्चवप्रमाणनिष्पत्तितुत्या कत्यिता । श्चार्यः प्रमाणं श्रहप्रमाणान्यूनं कत्यनीयम् । तदा अववजप्रमाणनिष्पत्तिद्वहहश्चनिष्पत्तितुत्यासीत् । इयं दववश्चनिष्पत्तितुत्यास्ति । दहप्रमाणं
दवान्यूनमस्ति । तदा हश्चप्रमाणं वश्चप्रमाणान्यूनं भविष्यति । इदं
वाधितम् । एवं श्वप्यमाणं हश्चप्रमाणादिषकं स्यात् । तदप्यग्चद्वमेव ।
तदेवगुपपनं यथोक्तम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबममाणवजममाणनिष्यत्तिर्दृहृझ्निष्यत्तितुत्यास्ति । तदा अव-दृहृनिष्यत्तिर्वजहृझ्गनिष्यत्तितुत्या मविष्यति । तसात् अजदृझ्निष्य-चिर्वजहृझ्गनिष्यत्तितुत्या मविष्यति । पुनः अजजवनिष्यचिर्दृझ्झह-निष्यतितुत्या मविष्यति ॥

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि तत्र लघुप्रमाणद्वयं बृहत्प्रमाणद्वयाच्छोध्यं शेषयोरिप निष्पत्तिः प्रमाणनिष्पत्ति-तुल्यैव भवति ।

यथा अवं जदं अहं जशं चत्वारि प्रमाणानि सन्ति । अवजद-निष्पत्तिः अहजशनिष्पत्तितुल्या कल्पितास्ति । अहं अवाच्छोधितं

९ शक्लम् K.

जशं जदाच्छोषितम्।
तत्र हवं श्रद्मवंशि- अ इं व ज शं व द

प्रम्। एवमनयोनिष्पत्तिः अबजदनिष्पत्तितुत्या नविष्यति ।
अत्रोपपत्तिः।

अवअहनिष्पत्तिर्ज्ञद्वज्ञ्ञानिष्पत्तितुल्यास्ति । पुनर्हवहअनिष्पत्ति-र्द्श्रम्जनिष्पत्तितुल्यास्ति । तदा वहद्ग्रानिष्पत्तिर्द्वश्रम्जनिष्पत्तितु-ल्यास्ति । तदा अवजदनिष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकमिष्टम् ।

प्रकारान्तरम् ।

इवसदिनिष्यत्तिः अइजझिनष्यितुल्या न भवति तदा इवसव-निष्यत्तितुल्या कल्पिता । तसात् अवजवनिष्यत्तिः अइजझिनष्यत्ति-तुल्या भविष्यति । अवजदिनष्यत्तिरेतत्तुल्यैव स्थितास्ति । तस्मात् अवनिष्यत्तिजेवेन जदेनापि अइजझिनष्यत्तितुल्यैव जाता । तदा जवं जदं समानं जातम् । इदं नाधितम् । इदमेवास्रदिष्टम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र द्विप्रकारकं प्रमाणद्वयं भवति तत्रैकप्रकारे प्रमाणानां या निष्पत्तिरस्ति सैव निष्पत्तिद्वितीयप्रकारे प्रमाणेषु यदि स्वात् तत्र प्रथमप्रकारयादिप्रमाणमन्त्यप्रमाणात् यद्यधिकं स्वात् तदा द्वितीयप्रकारेऽप्यादिप्रमाणमन्त्यप्रमाणादिषकं स्यात्। न्यूनत्वे न्यूनं स्यात्। समत्वे समं स्यात्।

९ °मुवंरितम् D. K. २ शक्लम् K.

त्तितुत्यास्ति । यदि अप्रमाणं	el	=
जप्रमाणाद्धिकं स्यात् तदा	₹	£
द्रप्रमाणं श्रप्रमाणादिषिकं	ज ├────।	
भविष्यति ।	•	

अत्रोपपत्तिः।

अ अधिकप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणेन भैवति । इयं दहनिष्पत्ति-तुल्यास्ति । इयं निष्पत्तिर्जन्यूनप्रमाणस्य बप्रमाणेन या निष्पत्तिर्झह-निष्पत्तितुल्यास्ति तस्याः अधिका जाता । तस्मात् दप्रमाणं झप-माणादिषकं जातम् ।

अनेन प्रकारेण यदि अप्रमाणं जतुल्यं स्यात् तदा द्रप्रमाणं झतुल्यं भविष्यति । न्यूने न्यूनम् ।

प्रकारान्तरम् ।

यदि द्रप्रमाणं झप्रमाणादिषकं न स्यात् तदा समानं भविष्यति वा न्यूनं भविष्यति । तत्र कल्पितं समानमस्तीति। तदा द्रप्रमाणस्य निष्य-तिर्हप्रमाणेन अवनिष्यतितुल्यास्ति। इयं कीहशी। यथा झस्य निष्य-तिर्हप्रमाणेन । इयं कीहशी। यथा जप्रमाणस्य निष्यत्तिवप्रमाणेन । तस्मात् अप्रमाणं जतुल्यं जातम्। कल्पितं अधिकम्। इदं वाधितम्।

पुनः कल्पितं दममाणं झप्रमाणान्यूनमस्तीति । तस्मात् अविनष्पत्तितुल्या दहनिष्पत्तिजेबनिष्पत्तितुल्यझहनिष्पत्तेन्यूना भविष्यति ।
तस्मात् अप्रमाणं जप्रमाणान्यूनं भविष्यति । इदं बाधितम् । तदेवेषुपपन्नं यथोक्तम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ।

यत्र प्रकारद्वयेन प्रमाणानि सन्ति यथा प्रथमप्रकारे त्रीणि प्रमाणानि द्वितीयप्रकारे च त्रीणि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमद्वितीययोर्थथा निष्पत्तिस्वथैव द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्विती-

⁹ B. omits भवति इयं. २ इदमेवास्माकमिष्टम् । D. K. ३ शकलम् K.

यतृतीययोर्याद्दशी निष्पत्तिस्तथैव द्वितीयमकारे प्रथमद्विती-ययोरिस्त । तत्रैतेषां प्रमाणानां प्रथमप्रकार आदिमप्रमाण-मन्तिमप्रमाणाच्चेदधिकं भवति तदा द्वितीयप्रकारेप्यादि-मप्रमाणमन्तिमप्रमाणादधिकं भविष्यति । न्यूनं चेत्तिहं न्यूनं स्यात् । समत्वे समं भविष्यति ।

दहश्रममाणानि सन्ति । तत्र अवप्रमाणयोर्निष्यचिह्नश्रमाणनिष्यस्या तुल्या चेत्पुनः बजप्रमाणयोर्निष्यचिद्देहप्रमाणयोर्निष्यस्या तुल्या चेत् अप्रमाणमधिकं चेज्जप्रमाणाचदा द्रप्रमाणं झप्रमाणादिषिकं भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

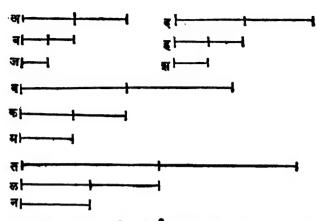
तत्र ह्झनिष्पत्तितुत्या अवनिष्पत्तिहृदनिष्पत्तितुत्याया जवनि-ष्पत्तेरिषकास्ति । तस्माह्ममाणं झप्रमाणादिषकमस्ति । एवं यदि अप्रमाणं जप्रमाणेन समं न्यूनं वास्ति तदा द्रममाणं झप्रमाणाझ्यूनं वा समं भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ द्वाविंशत्तमं क्षेत्रम् ।

प्रकारद्वये प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमप्रमाण-द्वितीयप्रमाणयोर्थथा निष्पत्तिस्तयेव द्वितीयप्रकारेऽपि प्रथम-द्वितीययोरप्यस्ति । पुनः प्रथमप्रकारे या द्वितीयतृतीययो-निष्पत्तिद्वितीयप्रकारस्यद्वितीयतृतीयनिष्पत्त्या तुल्या चेत् तत्र प्रथमप्रकारे या प्रथमतृतीययोनिष्पत्तिः सा द्वितीयप्र-कारस्थप्रथमतृतीयनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।

यथा प्रथमप्रकारे अबजपमाणानि द्वितीयप्रकारे दहझपमाणानि सन्ति । तत्र अबयोर्निष्पत्तिदेहनिष्पत्त्या तुल्या । बजयोर्निष्पत्तिहेझ-

९ शकलम् K.



निष्यस्या तुल्या । तत्र अजनिष्यत्तिर्दश्चनिष्यत्त्वा तुल्या भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

तत्र अद्प्रमाणयोरेकरूपा घाता श्राष्टाः । ते च वत्तुल्याः कलिपताः । बहुप्रमाणयोरिष कळतुल्या एकरूपा घाता श्राष्टाः ।
जञ्जप्रमाणयोरिष मनतुल्या एकरूपा घाता श्राष्टाः । अवप्रमाणयोनिष्पत्तिर्दृहप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति । तदा वकप्रमाणयोनिष्पत्तिः तळप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । बजप्रमाणयोनिष्पत्तिर्दृङ्गप्रमाणयोनिष्पत्त्या तुल्यास्ति । तदा कमप्रमाणयोनिष्पत्तिर्छनप्रमाणनिष्पत्त्या
तुल्या भविष्यति । तत्र वकमप्रमाणानि तस्त्रनप्रमाणानि च प्रकारद्वयेन
जातानि । एतेषामेकरूपा निष्पत्तिस्य जाता । तत्र वतप्रमाणयोर्मनप्रमाणाभ्यां न्यूनत्वं समत्वमाधिक्यं चैकरूपं स्यात् । तस्मात् अजप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्दृश्चप्रमाणनिष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

तत्र अवजप्रमाणानामेकरूपा घाता वक्रमप्रमाणतुल्या प्राह्माः ।
पुनः दहञ्जप्रमाणानामेकरूपा घाताः तलनप्रमाणतुल्या गृहीताः ।
तदा वक्रमप्रमाणानां निष्पत्तिः अवजप्रमाणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।
तलनप्रमाणानां निष्पत्तिर्दहञ्जप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।
पुनर्वमप्रमाणे तनप्रमाणाभ्यामिषके न्यूने वा समाने भविष्यतः । त-

स्मात् अद्प्रमाणयोर्निष्यत्तिर्ज्ञश्चप्रमाणनिष्यत्तितुल्या भविष्यति । तस्मात् अजनिष्यत्तिर्दृशनिष्यतितुल्या भविष्यति ।

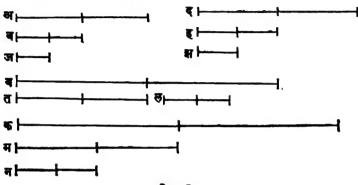
पुनः प्रकारान्तरम् ।

अवप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्द्दप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति। तस्मात् अद-प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्द्दप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । पुनर्बजप्रमा-णयोर्निष्पत्तिर्द्द्द्रप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति । तदा बहुप्रमाणयोर्निष्य-त्तिज्ञञ्जप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । तसात् अद्प्रमाणनिष्प-तिज्ञञ्जप्रमाणयोर्निष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । अजनिष्पत्तिः द्श्रनि-ष्यत्त्या तुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रापि प्रकारद्वयेन प्रमाणानि चेत् सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमद्वितीययोर्थथा निष्पत्तिद्वितीयप्रकारेऽपि द्वितीयतृती-ययोः सैव निष्पत्तिश्चेत् पुनः प्रथमप्रकारे द्वितीयतृतीययोर्था निष्पत्तिद्वितीयप्रकारेऽपि प्रथमद्वितीययोः सैव निष्पत्ति-भैविष्यति तत्र प्रथमप्रकार आद्यन्तयोर्था निष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारेऽपि सैवाद्यन्तयोर्निष्पत्तिभैविष्यति ।

सन्ति। तदा अवभगाणयोर्निष्यतिर्द्रश्नप्रमाणयोर्निष्यत्तितुल्यास्ति। बज-प्रमाणयोर्निष्यतिर्दद्रममाणनिष्यतितुल्यास्ति । तत्र अजप्रमाणयोर्नि-ष्यतिर्देश्गप्रमाणनिष्यतितुल्या भविष्यति ।



अस्योपपत्तिः ।

अबद्रमगणानामेकरूपघाता वतकप्रमाणतुल्या गृहीताः । पुनर्जह्मप्रमाणानामेकरूपघाता लमनतुल्या माद्याः । तसात् वत-प्रमाणनिष्पत्तिः अबनिष्पतितुल्या जाता । मनप्रमाणनिष्पतिश्च हम्नाणित्तृल्या जाता । तसात् वतयोर्निष्पत्तिर्मननिष्पत्या तुल्या जाता । तसात् वतयोर्निष्पत्तिर्मननिष्पत्या तुल्या जाता । पुनरपि बज्जनिष्पत्तिर्दृहनिष्पतितुल्यास्ति । तसात् तलनिष्पत्तिः कमनिष्पतितुल्या जाता । तस्मादपि च वतलप्रमाणानि कमनप्रमाणानि च प्रकारद्वये जातानीति सिद्धम् । येषां मध्ये वतप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्मनप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या जाता । तलप्रमाणयोर्निष्पत्तिः कमप्रमाणनिष्पत्तितुल्या जाता । तस्मात् वकप्रमाणे लनप्रमाणाभ्यामिष्ये भविष्यतो वा न्यूने समे वा । तस्मात् अज्ञप्रमाणयोर्निष्य-तिर्दृश्चप्रमाणयोर्निष्यतितुल्या जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

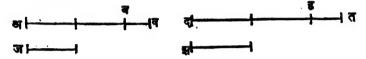
अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र षद् प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमद्वितीययोर्निष्यत्तिस्तृ-तीयचतुर्थयोर्निष्यत्तितुल्यास्ति चेत् पुनः पश्चमद्वितीययोर्नि-

१ शकलम् K.

ष्यतिः षष्टचतुर्ययोनिष्पत्तितुस्यास्ति । तत्र प्रथमपश्चमयोर्यो-गस्य निष्पत्तिद्वितीयप्रमाणेन यथास्ति तथा तृतीयषष्टयोर्यो-गस्य निष्पत्तिश्चतुर्थेन भविष्यति ।

अवनमानस्य निष्पत्तिजीनमाणेन ययास्ति दहप्रमाणनिष्पत्तिर्झप्र-माणेन तथास्ति । पुनर्ववप्रमाणनिष्पत्तिजीप्रमाणेन तथास्ति इतप्रमाणस्य



निष्यत्तिक्रीप्रमाणेन यथास्ति । पुनः अवप्रमाणस्य निष्यत्तिक्रीप्रमाणेन त्त्रथास्ति तथा दत्तप्रमाणनिष्यतिक्रीप्रमाणेन भविष्यति ॥

अस्योपपत्तिः ।

अब्प्रमाणस्य निष्पत्तिर्जप्रमाणेन तथास्ति यथा दह्ममाणस्य निष्पत्तिर्श्वप्रमाणेनास्ति । पुनर्जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बश्वप्रमाणेन तथास्ति यथा स्प्रमाणस्य निष्पत्तिर्हतप्रमाणेनास्ति । तस्मात् अब्प्रमाणनिष्य-त्तिववप्रमाणेन तथास्ति यथा दह्ममाणस्य निष्पत्तिर्हतप्रमाणेनास्ति । पुनः अवप्रमाणनिष्पत्तिर्ववप्रमाणेन तथास्ति यथा दतप्रमाणनिष्पत्ति- हतप्रमाणेनास्ति । पुनर्ववप्रमाणनिष्पत्तिजप्रमाणेन यथा हतप्रमाणनिष्पत्तिर्श्वप्रमाणेनास्ति । तस्मात् अवप्रमाणनिष्पत्तिजप्रमाणेन तथास्ति यथा दतप्रमाणनिष्पत्तिर्श्वप्रमाणेन। इदमेवास्मदिष्टम् ॥

अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रेम् ।

तत्र यदि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति । तेषां प्रथमं सर्वापेक्षयाऽधिकमस्ति चतुर्थे प्रमाणं सर्वापेक्षया न्यून-

९ पुनर्जाप्रमाणस्य निष्पत्तिश्रेष्वप्रमाणेन तथास्ति यथा दृहप्रमाणस्य निष्पत्तिक्र-प्रमाणेनास्ति । D. K. २ शक्तम् K.

मस्ति । तत्र प्रथमचतुर्थयोर्योगो द्वितीयतृतीययोगाद्धिको भविष्यति ।

यथा अबप्रमाणस्य निष्पत्ति ज्ञंदप्रमाणेन तथास्ति हप्रमाणस्य निष्पत्ति क्षेत्रमाणेन यथास्ति । तत्र अबप्रमाणं सर्वापेक्षयाधिकं कल्पितं क्षप्रमाणं सर्वापेक्षया न्यूनं कल्पितम् । तदा अबप्रमाणक्षप्रमाणयो-र्योगो ज्ञदप्रमाणहप्रमाणयोगापेक्षयाऽधिको भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समिषधारूढितेन प्रणीते । श्रन्थेऽस्मिनाझि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं पश्चमः संगतोऽभूत् ॥ इति श्रीमज्जगन्नाथसम्राङ्विरचिते रेकागणिते

पश्चमोऽष्यायः॥ ५ ॥

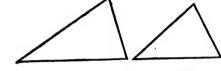
अथ षष्ठोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

तत्र त्रयिक्षेशत् क्षेत्राणि सन्ति ।

तत्र परिभाषा ।

येषां क्षेत्राणां कोणा मिथः समानाः सन्ति । अथ च कोणाश्रिता

मुजा एकरूपनिष्पत्तियु-क्तास्तानि क्षेत्राणि सजा-तीयानि मवन्ति ।



एकरूपनिष्पत्तिस्त्वे-

कसिन् क्षेत्रे एकमुजो द्वितीयमुजस्य यावान् विमागो द्वितीयक्षेत्रे एक-मुजो द्वितीयभुजस्य तावानेव विमागश्चेत् तदैकरूपनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र ययोः क्षेत्रयोः कोणाः समाना भवन्ति तत्रैकक्षेत्रस्यैकभुजस्य द्वितीयक्षेत्रस्यैकभुजेन यादृशी निष्पत्तिरस्ति तथा द्वितीयक्षेत्रे द्वितीय- भुजस्य प्रथमक्षेत्रद्वितीयभुजेन निष्पत्तिस्तादृश्यस्ति चेत्ते क्षेत्रे समाने भवतः।

अथ क्षेत्रस्य मुखाद् भूमिपर्यन्तं गतो लम्बः क्षेत्रलम्बसंज्ञो ज्ञेयः।

अधैकरेखायास्तादशं भागद्वयं कार्यं यथा संपूर्णरेखाया बृहत्खण्डेन यादशी निष्पत्तिरस्ति बृहत्खण्डस्य लघुखण्डेन तादशी निष्पत्तिरस्ति चेत् सा रेखा त्रैराशिकरूपा जाता ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् ।

ये द्वे क्षेत्रे समानान्तरमुजे उभयतस्तयोर्छम्बाः समाना-श्चेद् भवन्ति तत् क्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्मूमेर्निष्पत्तितुल्या भवति । तथैव द्वयोख्विमुजयोर्छम्बी समानी चेद्रवतस्तर्हि भुजयोर्नि-षात्तिर्मूमिनिष्पत्तितुल्या भवति ।

१ अकलम् is used for क्षेत्रम् throughout the book in K.

यथा इजक्षेत्रं जशक्षेत्रं च समानसम्बम्सि । एवं अबजित्रमुजं अजदित्रमुजं समानसम्बं कल्पितम् । तत्र चतुर्मुजयोर्निष्यत्तिर्वा त्रिभुजयोर्निष्यत्तिर्वे जभूमिजदभूमिनिष्यत्तितुल्या मविष्यति ।

अस्योपपत्तिः।

बदम्मिरुमयत्र वर्दिता कार्या । बजतुल्यं बवं वतं प्रश्वकार्यम् । जदजुल्यं दकं कलं प्रथकार्यम् । अवअतअकअलरेलाः कार्याः । पुनः अवजं अववं अवतं एतानि त्रिभुजक्षेत्राणि समानि सन्ति । त्रयाणां त्रिभुजानां योगिक्षगुणितअबज- क्षेत्रसमो भवति । जवं ववं वतं एता भूमयः

समानाः सन्ति । तिस्णां भूमीनां योमिक्कगुणितबज्जतुल्मोऽस्ति । पुनः अजदं अदकं ह व व ज द क ल
अकलं एतानि त्रिभुजानि समानानि सन्ति । एतेषां योगिक्कगुणित
अजदत्रिभुजतुल्योऽस्ति । जदं दकं कलं एतास्तिहो भूमयः समानाः सन्ति । तिस्णां भूमीनां योगिक्कगुणजदभूमितुल्योऽस्ति । तदा
अतजत्रिभुजं अलजत्रिभुजाद्यधिकमस्ति तदा तजभूमिलेजभूमेरिषका स्यात् । न्यूनं चेन्थूना स्यात्। समानं चेत्समाना स्यात् । तसात्
अवजस्य निष्पत्तिः अजदत्रिभुजेन तादृशी निष्पत्तिरस्ति यादृशी बजभूमेर्जद्भूम्याः । अनेन प्रकारेण क्षेत्राणां निष्पत्तिर्भूमिनिष्पत्तितुल्या
भविष्यति । इदमेवासाक्मिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

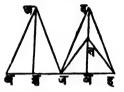
वेषां क्षेत्राणां निष्पत्तिर्भूमिनिष्पत्तेस्तुल्या स्यात् तानि क्षेत्राणि समानलम्बानि भवम्ति ।

यथा बह्भूमौ अबजित्रभुजं दजहित्रभुजं चास्ति । एतयोबिभु-जयोर्निष्पत्तिबेजभूमिजहभूम्योर्निष्पत्त्या तुल्या कल्पिता । तदा अझ-लम्बद्दवलम्बो मिथः समानौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

बदि समानो न साः तदा वतअझो समानो कल्पितो।पुनः तज-

रेखा तहरेखा संयोज्या। तदा अवजिञ्जन-तहजत्रिभुजयोर्निष्पत्तिर्वजजहभूम्योर्निष्पति-तुल्या स्यात् । तसात् **अवज**त्रिभुनस्य नि-**प्यतिर्देजह**त्रिमुजतजहत्रिभुजाम्यामेकरूपा



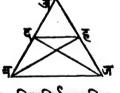
जाता । तसाद् दजहत्रिभुजतहजत्रिभुने समाने जाते । एतद्युद्धम् । तसादसदिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ।

यधेका रेखा त्रिभुजस्य भुजद्वयोपरि पतिता भूमिसमा-नान्तरा चेत्स्यात् तदैकरूपनिष्पस्या भुजद्वयस्य खण्डद्वयं करिष्यति । या रेखा एकरूपनिष्पस्या मुजद्वयखण्डं करोति सा रेखा भूमिसमानान्तरा भवत्येव।

वथा अवजत्रिभुजे दहरेला बजरेला समानान्तरा कल्पिता। वह-रेखा जदरेखा च संयोज्या । तदा दबहत्रिभुजदजहत्रिभुजे च स-

माने जाते । कुतः । समानान्तररेखागतत्वादे-कभूमिस्तताच । अदहत्रिभुजस्य निष्पत्तिरा-म्यां त्रिभुजाम्यां समानास्ति । अदहत्रिभु-बस्य निष्पत्तिदेबहत्रिभुजेन तथास्ति यथा अ- ^{म्}र द्भूमेर्निष्पत्तिदेवम्म्या अस्ति । अदहत्रिमुजस्य निष्पत्तिदेजहत्रिमु-जेन तथास्ति यथा अहमूमेर्निष्पत्तिईजम्म्या अस्ति। तसात् अदसण्ड-



पुनर्यदि अदखण्डदबखण्डयोर्निष्पत्तिः अहसण्डहजसण्डनि-ष्पत्त्या तुल्या कल्पिता तदा दहरेला बजरेलायाः समानान्तरा भवि-ष्यति । कुतः । अदभूमिद्बभूम्योर्निष्यतिः अदहत्रिभुजबहृदत्रि-**भुजनिष्यते**सुल्यास्ति । अहभूमिहजभूम्योनिष्यत्तिः अदहत्रिभुज-

दबसण्डयोर्निष्पत्तिः अहसण्डहजसण्डनिष्पत्त्या तुल्या जाता ।

Digitized by Google

दजहत्रिभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तस्मात् अदहत्रिभुजस्य निष्पत्ति-दबहृदजहत्रिभुजाभ्यामेकरूपा जाता । तस्मादेतित्रिभुजद्वयं समानं जातम् । तदा दहरेखा बजरेखासमानान्तरा जाता । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

यदि दहरेला बजरेलासमानान्तरा चेत् अदलण्डदबलण्डयो-र्निष्पत्तिः अहलण्डहजलण्डनिष्पत्तितुल्या न मवेत् तदा अहहझ-योर्निष्पत्त्या तुल्या कल्पिता। पुनर्बझरेला दझरेला संयोजिता। दबहित्रभुजदझहत्रिभुजे च समाने जाते इति निश्चितम्॥

पुनर्दहरेला बङ्गरेलासमानान्तरा भविष्यति इत्युपपत्त्या निश्ची-यते । तसात् बङ्गरेला बजरेला प्रत्येकं दहरेलायाः समानान्तराः

जाता । तसात् **बझरे**ला बजरेला मिथः समानान्तरा जाता। एते मिथः संलग्ने च जाते। एतदशुद्धम् ।

पुनरि अदद्बयोर्निष्यत्तिः अहह्जयोर्निष्यतितुत्यास्ति । ब-जरेलायाः दहरेला समानान्तरा न चेत्तदा दश्गरेला बजरेलायाः समानान्तरा कल्पिता । पूर्वोक्तप्रकारेण अदद्बयोर्निष्यत्तिः अश्गश्च अयोर्निष्यत्तितुत्यास्तीति निश्चितम् । तसात् अहह्जयोर्निष्यत्तिः अश्च-श्चजयोर्निष्यत्तितुल्या जाता । अहरेला अश्चरेलाया न्यूनास्ति । तदा हजरेला श्चजरेलाया न्यूना जाता । इदं वाधितम् । असद्क्तमेव समीचीनम् ॥

अय तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्रं त्रिभुजेऽभीष्टकोणस्य या रेखा तुल्यखण्डद्भयं करोति सा रेखा तत्कोणसन्मुखभुजस्य तथा खण्डद्भयं करिष्यति यथै-

Digitized by Google

१ तत्राभिष्टैकत्रिभुजे K.

तत्खण्डयोर्निष्पत्तिः शेषभुजद्वयनिष्पत्तेसुल्या स्यात् । पुन-रियं रेखा तस्य भुजस्यानया निष्पत्त्या यदि खण्डद्वयं क-रोति तदेयं रेखा तस्य कोणस्य खण्डद्वयं तुल्यं करिष्यति ।

यथा बअजित्रमुजे अकोणात् अदरेखा कृता । पुनर्दअरेखा ब-अजकोणस्य खण्डद्वयं करिष्यतीति कल्पितास्ति । तदा बददजख-ण्डयोर्निष्पत्तिबेअभुजअजभुजयोर्निष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

पुनर्जहरेसा जिचहात् दअरेसायाः समानान्तरा कार्या। बअरेसा तथा वर्धनीया यथा जहरेसायां हिचहे संपातं करिष्यति । तसात् बअदकोणबहजकोणौ समानौ भविष्यतः । पुनर्जअदकोणअजह-कोणौ समानौ भविष्यतः। तदा अहजकोणअजहकोणौ मिथः समानौ भविष्यतः। तदा अहरेसा च अजरेसातुल्या भविष्यति । तसात् बदसण्डजदसण्डयोर्निष्पत्तिस्तथा भविष्यति यथा अबरेसाअहरेस-योरस्ति । अजरेस्यापि तथास्ति। कुतः। अहरेसा अजरेस्योः समत्वात्।

पुनरिप बददजयोर्निष्पत्तिर्बअअजनिष्पत्तितुल्या यदा कल्पिता तदा कोणस्यापि द्वे खण्डे समाने भनिष्यतः । कुतः । बददजयोर्निष्प-

तिर्बे अश्रहिन ष्यतितुत्यास्ति । त-सात् ब अरेसाया निष्यत्तिः अहअ-जाम्यां समाना जाता । तसात् अहअजी समानी जाती । तदा ब-हजकोणतुत्यवअदकोणः अजहको- क

णतुल्येन जअदकोणेन समानो जातः। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

[🤊] कल्पिता. K.

प्रकारान्तरम् ।

दिचहात् दहलम्बः अवसुजोपि दश्गलम्बस साजभुजोपि कार्यः ।

तस्मात् वआजकोणस्य यदि सण्डद्वयं तुल्यं कल्प्यते तहाँतौ लम्बौ

समानौ भवतः । कुतः । अचिह्स्य कोणद्वयं समानमितः । हकोणश्रकोणावि समकोणौ स्तः । अदरेखा त्रिभुजद्वयेऽप्येकैवास्ति ।

तस्माह्हरेखा दश्गरेखा च वअदित्रभुजे जअदित्रभुजे च समानलम्बरूपा जाता । तस्मात् वअदित्रभुजेस्य निष्पत्तिर्जअदित्रभुजेन तथा

जाता यथा वअभुजस्य अजभुजेनास्ति । पुनरि अनयोक्षिभुजयोर्नि
ष्पत्तिर्वद्वयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तस्मात् वदद्जयोर्निष्पत्तिर्वअअजनिष्पत्तितुल्या जाता ।

यदि ताहशी निष्पत्तिः स्यात् तदा कोणस्य द्वे सण्डे समाने मिनष्यतः । कुतः । त्रिमुजयोर्निष्पत्तिर्बद्दजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । वअअजनिष्पत्तेरिष तुल्यास्ति । यदा
बअरेखा अजरेखा च मूमिः कल्पिता तदा अनयोस्मिभुजयोर्निष्पत्तिर्मृम्योर्निष्पस्या तुल्या भिष्यति ।
दहलम्बद्झलम्बौ च समानौ भवतः । अद्- ब द्वेष्ट्रिश्चकेव भविष्यति । तस्मात् हअद्कोणझअद्कोणौ समानौ भविष्यतः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

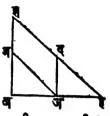
अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

ययोर्द्वयोस्त्रिभुजयोः कोणाः समाना भवन्ति तयोर्भुजयो-निष्पत्तिरेकैव भविष्यति । यः कोणस्तुल्यो भवति तदाश्चि-तभुजयोर्निष्पत्तिस्तुल्या भवतीति ज्ञेयम् ।

यथा अवजित्रभुजे दहजित्रभुजे बअजकोणजदहकोणौ समानी किल्पतौ । पुनवेजअकोणजहदकोणौ समानौ च किल्पतौ । पुनद् अवजकोणहजदकोणौ च समानौ किल्पतौ । तदा बजनिष्पत्तिर्ज्जह-

रेखया तथास्ति यथा धार्मनिष्पत्तिजीहरेखयास्ति आजनिष्पत्तिर्दहरे-खया बधास्ति । एतत्रिभुजद्वयं जहरेखायां स्थाप्यम् । बाजरेखा हद-

रेखा च वर्धनीया यथा झचिह्नलमा स्यात् । तदा अजरेखा झहरेखायाः समानान्तरा भवि-ष्यति । जदरेखा झबरेखायाश्च समानान्तरा भवि- म ष्यति । झजक्षेत्रमपि समानान्तरमुजं भविष्यति । तस्माद् बजनिष्यत्तिजहरेखायास्त्रथास्ति यथा व

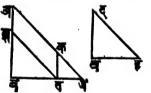


बअनिष्पत्तिः अझरेखगास्ति जदरेखयापि । पुनर्बजनिष्पत्तिर्ज्ञहरे-खया तथास्ति यथा झददहनिष्पत्तिः अजदृष्ट्गनिष्पत्तिरपि । तस्मात् बअजदयोर्निष्पत्तिः अजदृष्ट्योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमे-बास्माकमिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अवजित्रभुने दवहत्रिभुने अकोणदकोणी समानी कल्पिती ।

पुनर्बकोणवकोणौ समानौ कल्पितौ । उ जकोणहकोणौ समानौ कल्पितौ। यदि अवभुजदवभुजौ समानौ भवतस्तदा शेषभुजा अपि समाना भविष्यन्ति। प्रति-



ज्ञातमुपपनं भविष्यति । यदि अबद्वौ समानौ न भविष्यतस्तदा अवमधिकं किल्पतम् । पुनर्वदतुल्यं बझं पृथक् कार्यम् । पुनः अज्ञरेखायाः समानान्तरा झतरेखा कार्या । तसात् झवतित्रभुजदवहित्र-भुजे समाने भविष्यतः । पुनः अञ्चझविष्यत्तिजीतत्वविष्यतितुल्या भविष्यति । अबब्झिनिष्पत्तिजीबबतिष्यतितुल्या भविष्यति । पुनर्वझरेखा बद्दतुल्यास्ति । बतरेखा बह्दतुल्यास्ति । तसात् अबद्वनिष्यत्तिजीबह्वनिष्पत्तिज्ञल्या जाता । पुनः तकं बअसमानान्तरं कार्यम् । तदेवं निश्चितम् जवत्वनिष्यत्तिज्ञअअकनिष्यत्तिज्ञल्यास्ति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ।

ययोत्त्रिभुजयोर्भुजानां यथाक्रममेकरूपनिष्पत्तिरस्ति चे-त्तयोः कोणाः समाना भवन्ति ।

यथा अबजित्रभुजे दहझत्रिभुजे च अबदहिनिष्पत्तिः अजदझ-निष्पत्तितुल्या कल्पिता । बजहझिनष्पत्तितुल्यापि कल्पिता । तस्मा-त्कोणाः समानाः स्युः । कुतः । हिचहोपरि हझरेखाया झहवकोणो

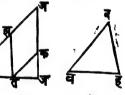
बकोणतुल्यः कार्यः । पुनर्झचिह्नोपरि ह्रझव-कोणो ज्वकोणतुल्यः कार्यः । द्वौ भुजौ वर्ध-नीयौ यथा विचह्ने मिलिष्यतः । तसात् अवज-त्रिभुजवहङ्गत्रिभुजयोः कोणाः समाना जाताः ।

बजह्झनिष्यत्तिर्बे अहवनिष्यत्तितुल्या भविष्यति । इयं बजहदनिष्यतितुल्याऽऽसीत् । तसाद् हदहवरेखे समाने जाते । अनेन प्रकारण झवझदरेखे समाने जाते । तसात् दहझत्रिभुजस्य वहझत्रिभुजस्य वहझत्रिभुजस्य अबजिभुजस्यापि कोणाः समाना जाताः। इदमेवासाकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ॥

चतुर्थक्षेत्रे प्रकारान्तरक्षेत्रमत्र ज्ञेयम् । अबजतिमुजं दवहत्रिभुजं

च कल्पितम्। एतयोर्भुजा यदि समानां भविष्यन्ति तदास्माकिमष्टं सिद्धम्। यदि समाना न भविष्यन्ति तदा अवं दवादिषकं कल्पितम्। वद्तुल्यं बझं व



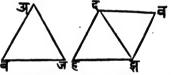
पृथकार्यम् । पुनर्वहतुल्यं बतं पृथकार्यम् । दहतुल्यं अकं पृथ-कार्यम् । झततकरेले संयोजनीये । तदा अवनिष्पत्तिदेवरेला-तुल्यझवरेलया यथा जवनिष्पत्तिर्वहरेलातुल्यवतरेलया भिव-ष्यति । तसात् अझझवनिष्पत्तिर्जततवनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् झतरेला अजरेलायाः समानान्तरा भविष्यति । अनेन प्रका-रेण तकरेला बअरेलायाः समानान्तरा भविष्यति । तदा अकरेला झतरेसे तुस्ये भविष्यतः । बझतित्रभुजस्य वदहित्रभुजस्य भुजाः समाना भविष्यन्ति । बझतित्रभुजस्य बअजित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति । तसात् बआजित्रभुजस्य वदहित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति ॥

अथ षष्ठं क्षेत्रम्।

द्वयोस्त्रिभुजयोरेकः कोणः समानोऽस्ति । तत्कोणसंब-न्धिनोर्भुजयोरेकैव निष्पत्तिरस्ति । तदा शेषकोणाः स-माना भवन्ति ।

यथा अवजित्रभुने दहझत्रिभुने अकोणदकोणौ समानौ क-लियता । अवभुजदहभुजयोर्निष्पत्तिः अजभुजदझभुजनिष्पत्तितुल्या कल्पिता । दझरेलाया दिचहोपरि झदवकोणः अकोणतुल्यः कार्यः । झचिहोपरि दझवकोणो जकोणतुल्यः कार्यः । द्वौ भुजौ वर्ध-

नीयौ यथा विचिह्ने मिलिष्यतः । अबजिभुजस्य द्वझित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति । तदा



अजद्श्रनिष्पत्तिः अबद्वनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । पुनरियं अब-दहनिष्पत्तिस्तुल्याऽऽसीत् । तसात् दवदहो समानौ जातौ । एवं दिनिष्क्षस्य द्वौ कोणौ अकोणतुल्यौ समानौ भविष्यतः । तसात् दह्श-त्रिमुजस्य वदश्रित्रभुजस्य बअजित्रभुजस्यापि कोणाः समाना जाताः। इदमेवासाकिमष्टम् ॥

द्वितीयः प्रकारः ।

बअअजभुजो हददशभुजाम्यां समानौ यदि भवतस्तदास्माकं प्रति-श्वातं सिद्धमेव । यदि समानौ न भवतस्तदा
बअअजभुजौ अधिकौ कल्पितौ । अतं
हहतुल्यं पृथकार्यम् । अकं दश्चतुल्यं पृथकार्यम् । तकरेखा योजनीया । तदा बअअतनिष्पत्तिजेअअकनिष्प- चितुत्या भविष्यति । बततअनिष्यत्तिर्जककअनिष्यत्तितुत्या भविष्य-ति । तसात् बजतकरेले समानान्तरे भविष्यतः । तदा बअजित्रभुजस्य तअकत्रिभुजस्य इद्शत्रिभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

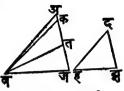
द्वयोखिभुजयोरेकैकः कोणः समानो भवति द्वितीय-कोणस्य भुजयोरेका निष्पत्तिरस्ति शेषस्तृतीयकोणः सम-कोणाक्यूनो भवतु वा मा भवतु द्वयोखिभुजयोस्तृतीय-कोण एकरूपोऽपेक्षितस्तदा शेषकोणाः सर्वेऽपि समाना भविष्यन्ति।

यथा अवजित्रभुजस्य दहझतिभुजस्य अकोणदकोणी समाने कल्पितो। अवदहभुजनिष्यत्तिर्वजहझनि-ष्यत्तितुल्या कल्पिता। पुनर्जकोणो झकोणः प्रत्येकसमकोणाच्यूनो भवति वा न भवति

तदा बकोणहकोणी समानी भविष्यतः। यदा न भविष्यतस्तदा बकोणोऽिषको भविष्यतिति किल्पतम्। पुनः अववकोणो हकोणतुल्यः कार्यः।
तदा ववअकोणो झकोणतुल्यो भविष्यति। तदा अवद्दृनिष्पत्तिबवह्झिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति। बज्रह्झिनिष्पत्तितुल्या किल्पताऽऽसीत्। तसात् ववबजरेले समाने भविष्यतः। ववज्रकोणवज्जवकोणौ समानौ भविष्यतः। पुनर्जकोणझकोणौ समकोणाक्यूनौ यदि
न भवतस्तदा द्वौ कोणौ समकोणद्वयान्यूनौ न जातौ। इदं वाधितम्।
यदि समकोणान्यूनौ भवतस्तदा अवबकोणो झकोणतुल्यः समकोणादिषको भविष्यति न्यूनः किल्पतोऽस्ति। इदं वाधितम्। तस्तात्
वकोणहकोणौ समानौ जातौ। जकोणझकोणाविष समानौ जातौ।
इदमेवास्माकिमिष्टम्।

पूर्वक्षेत्रे यदुक्तं जशकोणौ समकोणान्यूनौ भवतो वा न भवतन्त-

त्यायमाद्ययः । अवजित्रभुजं दहझत्रिभुजं सजातीयं न्यूनकोणं च कल्पितम् । पुनः अवभुजो बजभुजादिषकः कल्पितः । पुनर्ब-चिद्वात् बतलम्बः अज्ञभुजोपरि कार्यः । व



तसात् अतमिषकं स्यात् तजात् । पुनः तजतुल्यं तकं पृथकार्यम्। बकरेखा संयोज्या । तदेयं बकरेखा बजतुल्या भविष्यति । पुनः अ-बकत्रिभुने दहझत्रिभुने अकोणदकोणौ समानौ स्तः। अबरेखायाः दहरेलया निष्पत्तिसाथास्ति यथा बजतुल्यबक्ररेसाया निष्पत्तिर्हझनी रेखयास्ति । एते द्वे त्रिभुजे सजातीये न स्तः । कुतः । बकअकोणस्य समकोणादिभकत्वात् । इझदकोणस्य समकोणाच्यूनत्वात् ।

इदं यदुक्तं च न्यूनकोणो भवतु वा मा भवतु । इदं च नोक्तं न्यून-कोणो मनतु वाऽधिककोणो भवतु । कुतः । तत्र समकोणस्यापेक्षित-त्वात् ॥

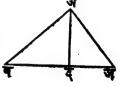
अथाष्ट्रमं क्षेत्रम् ।

यदि त्रिभुजे समकोणान्निःसृतलम्बस्तस्य कर्णोपरि गत-स्तदा त्रिभुजस्य द्वे सजातीये क्षेत्रे करिष्यति । एते त्रिभुजे बृहिश्रिभुजस्य सजातीये भवतः।

यथा अबजत्रिभुने असमकोणात् अदरुम्बो बजकर्णोपरि निष्का-श्वितः । तेन अबदत्रिमुजअजदत्रिभुजे सजातीये भविष्यतः । एते च अबज्जिभुजस्वापि सजातीये भवतः।

अस्योपपत्तिः ।

अबदत्रिमुने अबजत्रिभुने च क्षेत्रद्वयेऽप्येकएव बकोणोऽस्ति । पुनः अदबकोणजअबकोणौ प्रत्येकं सम-कोणौ सः । तसाद् बअदकोणबजअकोणौ शेषी समानी जाती । तस्मादेते हे त्रिमुजे सजातीये जाते। तदा दबबअरेखयोर्निष्पत्तिः



अबबजयोर्निष्पत्त्या तुल्या जाता । अदअजनिष्पत्तितुल्यापि जाता । एवं हि जअदजवअत्रिभुजे च सजातीये जाते । एनर्जअदबअदिनिभुजे च सजातीये जाते । एनर्जअदबअदिनिभुजे च सजातीये क्तः । कुतः । दिचह्रस्य द्वौ कोणौ प्रत्येकं समकोणौ क्तः । जकोणस्तु दअबकोणतुल्योऽस्ति । बकोणस्तु जअदिकोणतुल्योऽस्ति । एते द्वे सजातीये क्तः । जदअदिनिष्पत्तिर्दअदबनिष्पत्त्या तुल्या जाता । जअअबनिष्पत्तितुल्यापि जाता ।

असात्क्षेत्रादिदं निश्चितं लम्बः कर्णस्य खण्डद्वये त्रैराशिकरूपो-ऽस्ति । आबाधाद्भुजसैराशिकरूपोऽस्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयमध्ये एकान्या रेखा तथोत्पाद्या वथैतद्रे-खात्रयमेकनिष्पत्तिरूपं भवति ।

तत्र रेसाद्वयं अवं बजं कल्पितम् । एतद्रेसाद्वययोगे व्यासं कृत्वा

अद्जवृत्तार्द्वमुत्पाद्यम् । पुनर्वनिद्वात् बद्द-लम्बो वृत्तपालिसंलमः कार्यः । अयं लम्बः अबबजरेलाद्वयमध्ये एकनिष्पत्तिरूपो भवि-ध्यति।द्वलम्बः समकोणात्कर्णोपर्यागतस्तसात् अ

4 q

अबजबरेसाद्वयमध्ये एकनिष्पत्तिरूपस्तिष्ठति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

एकरेखा द्वितीयरेखोपरि पातनीया । बृहद्रेखां व्यासं कृत्वा वृत्ताद्धी कार्यम् । लघुरेखान्ताल्लम्बो वृत्तपालिसंलमः कार्यः । यसिश्चिह्चे लमल-चिह्नाद्रेखान्तपर्थन्तमन्या रेखा कार्या । इयं रेखाऽसादिष्टा । एतत्पूर्वी-किक्षेत्रेण स्फुटमेव ॥

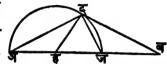
पुनः प्रकारान्तरम् ॥

रेसाद्वयान्तरमजं कल्पयित्वा वृत्तार्द्धे कार्यम् । तश्च आजदं क-ल्पितम् । पुनर्वचिद्वात् बदरेसा वृत्तपालिसंलमा कार्या । इयं रेसा अबबजरेसामध्ये प्कनिष्पत्तिस्पा भविष्यति ॥

अस्योपपत्तिः ।

दअदजदहरेखाः संयोज्याः। तदा अदजकोणबदहकोणौ प्रत्येकं समकोणौ खः। पुनईदजकोणो द्वयोः शोध्यः। तदा शेषौ जदब-कोणहदअकोणौ समानौ खः। पुनईदअकोणहअदकोणौ च स-

मानौ स्तः । तसात् बअदत्रिभुजे बद्जित्रभुजे च बकोणो द्वयोरेकको-णोऽस्ति । पुनः दअबकोणजदब- अ



कोणो समानो स्तः । तदा बद्अकोणबजदकोणावि समानो भवि-ध्यतः । तसात् अबबद्योनिष्यत्तिबद्बजनिष्यत्त्या तुल्या भविष्यति । असात्क्षेत्रादिदं निश्चितम् ॥

रेखाद्वययोगात् यो छम्ब उत्पन्नः स एव छम्बो रेखाद्वयमध्ये एक-निष्पत्तिरूपश्चेत्तदा रेखाद्वययोगं व्यासं कृत्वा यद्वृत्तार्द्धे कियते तद्वृत्तार्द्धे रूम्बान्तसंरुमं मविष्यति ॥

अथ दशमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं यस्यां निष्पत्तौ स्यात्तत्र तृतीया रेखा तिष्ठ-ष्यत्तिरूपा यदि कर्त्तुमिष्टास्ति ।

तदा तद्रेसाद्वयं अवं अर्जे कल्पितम् । एतद्रेसाद्वयात् अकोणः कार्यः । पुनः रेसाद्वयं वर्द्धनीयम्। बहरेसा अजतुल्या पृथकार्या च । बजरेसा संयोज्या । पुनर्हचिद्वात् हदरेसा बजरेसायाः समानान्तरा

कार्या । तस्माज्जदमिष्टरेखा भविष्यति । कुतः अवबद्दयोर्निष्पत्तिः अजजदिनिष्पत्तितुत्यास्ति इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

इष्टरेखाम्यां समकोणः कार्यः । असौ असंज्ञः । बजकर्णः कार्यः । एतत्कर्णोपरि बअजं वृत्तार्द्धे कार्यम् । जिचहात् बजरेखोपरि जद-

लम्बोऽपि कार्यः । पुनर्बअरेसा वर्द्धनीया यथा जदरेसायां दचिद्दलमा स्यात् । तस्मात् अदरेसा इष्टरेसा स्यात् । कुतः । जअलम्बो जसमकोणा-रकणीपर्यागतः । तस्मात् बज्जजयोर्निणतिः अजजदनिष्पत्तितुस्या मविष्यति ॥



पुनः प्रकारान्तरम् ॥

बृहद्रेसायां बआजं वृत्ताद्धं कार्यम् । बआपूर्ण-ज्या छघुरेसातुल्या कार्या । पुनः अचिहात् आह-रूम्बो बजरेस्रोपरि कार्यः । तस्मात् बहं इष्टरेस्ना व भविष्यति । इदं पूर्वोक्तप्रकारेण स्पष्टमेव॥

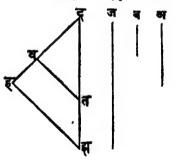


अधैकादशं क्षेत्रम्।

यत्र रेखात्रयं वर्त्तते तत्र यदि चतुर्थी रेखोत्पाद्या भ-वति सा कीहशी यथा प्रथमद्वितीयरेखयोर्निष्पत्तिरस्ति ता-हशी तृतीयचतुर्थरेखयोरिप निष्पत्तिः स्यात्।

यथा अवजं रेसात्रयं कल्पितम् । अन्यत्र दहरेसा दझरेसा च

कार्या। दिचिह्ने तयोयोंगे यथा हदझ-कोणो भविष्यति तथा योगः कार्यः। पुनर्दहरेखाया अतुल्या दवरेखा भि-न्ना कार्या। वहं बतुल्यं भिन्नं कार्यम्। हर पुनर्दझरेखाया जतुल्या दतरेखा प्र-थकार्या। वतरेखा संयोज्या। हचि-हात् हझरेखा वतरेखायाः समाना-

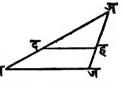


न्तरा कार्या । तस्मात् तझरेला चतुर्थीष्टा रेला जाता । कृतः । अतुल्यद्वरेलाबतुल्यवहरेलयोर्निष्यत्तिर्जतुल्यद्तरेलात्तझरेलयोर्निष्य-त्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

प्रथमरेला द्वितीयरेला अवअजसंज्ञा कल्पनीया । अचिहे उभयो-

योंगः कार्यो यथा बअजकोणो निष्पन्नो मनेत्। पुनर्बजरेखा संयोज्या । पुनस्तृती-या रेखा अदसंज्ञा कल्पनीया । इयं अबरे-खायां स्थापनीया। दिचिद्वात् दहरेखा बज- व



रेखायाः समानान्तरा कार्या । तदा अहरेखास्माकमिष्टा मनिष्यति ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

एकस्या रेखायाः कश्चन विभागः पृथकर्त्तव्योऽस्ति।

तत्र अवरेला कल्पिता । अस्यास्तृतीयांशो भिन्नः कर्त्तव्योऽस्ति । अजरेला अवरेलालमा निष्कासनीया अचिद्वात् यथा वआजकोण

उत्पन्नो मिवष्यति । पुनः अजरेखाया अद्दृह-इजसंज्ञा रेखाः समाना विमागा मिन्नाः कार्याः । पुनर्बजरेखा योज्या । पुनर्दचिद्वात् दृझरेखा जब-रेखायाः समानान्तरा कार्या । इयं अबरेखायास्तु-



तीयां भिनां करिष्यति । कुतः । अझअवनिष्यत्तिः अदअजनिष्यत्ति-तुल्यास्ति । अदं अजस्य तृतीयांशोऽस्ति । तसात् अझं अवस्य तृती-यांश्चो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

मकारान्तरं तृतीयांशकरणार्थम् ।

अबरेखा कल्पनीया । अजबित्रभुनं समानभुनं कल्पनीयम् । अन्कोणं बकोणं च रेखाम्यामर्द्धितं कृत्वा दिचिहे द्वयो रेखयोयींगः कार्यः । पुनः अदबकोणो दहरेखयाऽर्द्धितः कार्यः । अदहकोणो झदरेखया- भितः कार्यः । बदहकोणो दवरेखयार्धितः कार्यः । तसात् अबरेखाया आचिहे विचिहे च त्रयो विभागाः समाना जाताः ।

अत्रोपपत्तिः ।

यिक्षभुजं समानमुजं भवति तस्य यः किश्वत्कोणः समकोणस्य त्रि-भागद्वये समानो भवति । पुनर्दअबकोणो दबअकोणः प्रत्येकं समको-णस्य तृतीयांशो भवति । तदा अदबकोण एकसमकोणेन स्वतृती-यांशयुक्तेन समानो जातः । पुनः अदझकोणो बदवकोणः प्रत्येकं समकोणस्य तृतीयांशो जातः । झअदकोणो झदअकोण एतौ समानौ जातौ । तसात् झअरेसाझदरेसे समाने जाते । अनेन प्रकारेण बवरेसावदरेसे समाने जाते ।

पुनः अकोणद्कोणयोगो बद्कोणयोगश्च प्रत्येकः समकोणस्य

तृतीयांशद्वयेन समो भवति । झदवकोणः सम-कोणस्य तृतीयांशद्वयेन तुल्यो जातः । तदा द-कोणो झकोणो वकोणः प्रत्येकः समकोणस्य त्रि-भागद्वयं जातः । तसाद् दझरेखा झवरेखा वद- ज

द् ज झ ह व ब दवतुल्यमस्ति। तसाद्

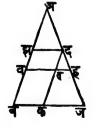
रेखा समाना जाता। अझं दशतुल्यमस्ति। बवं दवतुल्यमस्ति। तसाद् अझं शवं वबं एतानि खण्डानि समानि जातानि । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखाविभागनिष्पत्तितुल्या अन्यरेखाविभागाश्चिकी-षिताः सन्ति ।

तत्र अबरेखा कल्पिता । अजरेखाया दिचहहचिह्रयोरुपरि वि-

भागाः कल्पिताः । पुनरेतयो रेखयोः अकोणोपरि योगः कल्पितः । पुनर्बजरेखा संयोज्या । दिचिहात् हचिहात् दझरेखा हयरेखा च जबरेखायाः समाना-न्तरा कार्या । पुनर्दतकरेखा अबरेखायाः समाना-न्तरा कार्या । तस्मात् अबरेखाया झचिह्वचिह्यो-रुपरीष्टविमागा जाताः ।



अस्योपपत्तिः ।

तत्र अझझवयोर्निष्पत्तिः अददहिनिष्पत्तेस्तुत्यास्ति । झवववयो-रपि निष्पत्तिः तदतकिष्पत्तितुत्यास्ति । पुनर्दहहजयोर्निष्पत्तितुस्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

उभे क्षेत्रे समानान्तरभुजे भवतः। एनयोरेककोणः समानो भवति । प्रथमक्षेत्रस्यैकभुजस्य द्वितीयक्षेत्रस्यैकभुजेन सा नि-ष्पत्तिरस्ति या द्वितीयक्षेत्रे द्वितीयभुजस्य प्रथमक्षेत्रे द्विती-यभुजेन निष्पत्तिरस्ति । एतादृशं क्षेत्रद्वयं समानं भवति । पुनर्यदि क्षेत्रद्वयं समानमस्ति तदा भुजयोर्निष्पत्तिः पूर्वोक्त-वत् स्यात् ।

यथा अजक्षेत्रजझक्षेत्रयोः समानान्तरभुजयोः समानत्वेन कल्पि-तयोर्जकोणस्तुत्योऽस्ति । तत्र बजभुजज- अ हभुजयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजदभुजनिष्पत्ति- ब जुल्या भविष्यति । अत्रोपपत्तिः ।

अनयोः क्षेत्रयोर्बजभुजजहभुजावेकस्यां सरलरेखायां कल्पयेत् । अनेन प्रकारेण वजभुजजदभुजावेकस्यां रेखायां कल्पयेत् । पुनर्दह-क्षेत्रं पूर्ण कार्यम् । अजक्षेत्रज्ञझक्षेत्रयोर्दहक्षेत्रेण निष्पत्तिः समास्ति। अजक्षेत्रदहक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्बजभुजजहभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । पुन-जंझदहक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजदभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् बजभुजजहभुजयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजदभुजयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति।

पुनरप्युक्तक्षेत्रभुजयोनिष्पत्तिरुक्तप्रकारेण कल्पनीया। तदा क्षेत्रद्वयं समानं भविष्यति। कृतः। अनयोः क्षेत्रवोद्देहक्षेत्रेण निष्पत्तिर्यास्ति सैव तद्भुजयोरस्ति। उभयोः क्षेत्रयोरेकक्षेत्रेण निष्पत्तिः स्यात्। क्षेत्रद्वयं समानं जातम्। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम्।

समानयोई योस्त्रिभुजयोरेकः कोणो यदि समानो भवति तदा प्रथमक्षेत्रे तत्कोणसक्तभुजस्य द्वितीयक्षेत्रे तत्कोणसक्त-भुजेन या निष्पत्तिरस्ति द्वितीयक्षेत्रे द्वितीयभुजस्य प्रथमक्षेत्रे द्वितीयभुजेन सेव निष्पत्तिभीवष्यति । यदि भुजावस्यां निष्पत्तौ स्यातां तदा त्रिभुजद्वयं समानं भविष्यति ।

यथा समानयोः अबजित्रभुजजहदत्त्रभुजयोर्जकोणौ समानौ किल्पतौ । तत्र अजभुजजहभुजयोर्निष्पत्ति- क्रिज्ञभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति ॥ अत्रोपपत्तिः ।

अजमुजजहभुजावेकस्यां सरलरेखायां मिलितौ कल्पनीयौ ।
तथा बजभुजजदभुजावन्यस्यां सरलरेखायां मिलितौ कल्पनीयौ ।
बहरेखा योज्या । अबजित्रभुजदहजित्रभुजयोर्बजहित्रभुजेन निष्पत्तिस्तुल्या स्यात् । अबजित्रभुजजबहित्रभुजयोर्निष्पत्तिः अजमुजजहभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति । दहजित्रभुजबहजित्रभुजयोर्निष्पत्तिदैजभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति । तस्मात् अजभुजजहभुजयोर्निष्पत्तिदेजभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्या जाता । पुनरिष अनयोर्भुजयोर्निष्पत्तिरीदशी कल्प्यते तदेतित्रभुजद्वयं समानं भविष्यति । कुतः । एतित्रभुजद्वयं बजहित्रभुजेन सार्द्धमनन्तरोक्तैकनिष्पत्तावस्ति । तस्मादिदमसदिष्टं सिद्धम् ॥

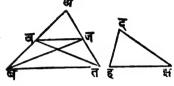
प्रकारान्तरम् ।

अवजित्र अवस्थात्र अकोणदकोणौ समानौ कल्पनीयौ। तत्र यदि अव अजदह भुजौ समानौ भवतस्तदास्मदिष्टं स्फुटमेव । यस्मात् त्रिभुजद्वयसाम्यात् अजभुजद्शभुजयोः साम्यं भविष्यति । कृतः । यदि अवभुजो दह्न भुजे स्थाप्यते कोणश्च कोणे स्थाप्यते । अज्ञुजो दक्क्षभुजे चेन पतित तदा न्यूनाधिको भविष्यति। पुनः अजन अजदझअजो यदि समानी स्यातां तदा सैन निष्पत्तिरुपपना भविष्यति ।

पुनरपि ते भुजा अस्यां निष्पत्तौ स्युस्तदा अज्ञभुजदश्भभुजौ समानौ

मविष्यतः । त्रिभुजद्वयमपि समानं भविष्यति ।

यदि च अवभुजदहभुजौ न्यू-माधिको स्यातां तदा अवभुजो-ऽधिकः कल्पनीयः । अ**बा**त् दह-तुल्यं अवं पृथकार्यम् । पुनर्वजरेखा



संयोज्या । तत्र यदि त्रिभुजद्वयं समानं भवति तदा दश्मभुजो अज-भुजादिषको भविष्यति । कुतः । यदि समानो वा न्यूनस्तदा दहझ-त्रिभुजं अबजित्रभुजान्यूनं भविष्यति । पुनर्दझतुत्यं अतं कल्पनी-यम् । पुनः तवरेखा जबरेखा च संयोज्या । तसात् अवतित्रभुजं दह्रमत्रिभुजेन समानं भविष्यति । अबजित्रिभुजेनापि समानं भवि-ष्यति । असात् अवजित्रभुजं शोध्यते तदा वबजित्रभुजवतज-त्रिभुजे समाने अवशिष्यतः । तस्मात् वजरेला बतरेलायाः समाना-न्तरा भविष्यति

यदि निष्पत्तिद्वयं समानं भवति तदा दहतुल्या अवरेला अबरे-स्वातो न्यूना भवति तदा दझरेखातो अजरेखा न्यूना भविष्यति।पुनः क्षेत्रं संपूर्णं कार्य । तत्र निष्पत्तिद्वयसाम्येन वबजत्रिभुजवतजत्रिभुजे समाने जाते इति निश्चितम् । पुनः अवजित्रभुजं योज्यम् । तदा त्रिभुजद्वयस्य साम्यं प्रकटं भविष्यति ॥

अथ षोडशं क्षेत्रम् ।

तत्र ताहरारेखाचतुष्टयं चेद्भवति तत्र यदि प्रथमरेखा-द्वितीयरेखानिष्पत्तिस्तृतीयचतुर्थरेखानिष्पत्तितुल्या भवेत् । तदा प्रथमचतुर्थरेखाघातः द्वितीयतृतीयरेखाघाततुल्यो भ-

त्रिमुजद्वयं समानं न भविष्यति K.

वति । यदि प्रथमचतुर्थरेखाघातो द्वितीयतृतीयरेखाघा-ततुल्यो भवति तदा प्रथमरेखाद्वितीयरेखानिष्पत्तिस्तृती-यचतुर्थरेखानिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अबरेसाजदरेसाहरेसाझरेसाः कल्पिताः । पुनः अचि-हात् जिचहात् अवलम्बजकलम्बो कि विकास्यो । पुनः झातुल्यहतुल्यो निष्कास्यो । पुनः अतक्षेत्रं जलक्षेत्रं च संपूर्णं कार्यम्। ज

तुल्यजकरेखाझतुल्यअवरेखयोर्निष्पत्तितुल्या चेत्तदा क्षेत्रद्वयं समानं भविष्यति । यदि क्षेत्रद्वयं समानं भवेत्तदैतेषां भुजाः पूर्वोक्तनिष्य-तितुल्या भविष्यन्ति । तसात् कल्पितरेखा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । इदमेवाऽसाकमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

ताहशास्तिस्रो रेखाश्चेद्भवन्ति यासु प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिर्द्वितीयतृतीयनिष्पत्तितुल्या चेद्भवति तदा प्रथमतृतीययोर्घातो द्वितीयरेखावर्गसमो भवति । यदि प्रथमतृतीयघातो द्वितीयवर्गतुल्यश्चेत् तदा प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिर्द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अबजास्तिसो रेसाः किल्पताः । पुनर्बरेसातुस्या दरेसा कार्या । प्वं तत्र चतसो रेसा भविष्यन्ति । यदि अरे- क्षाः विष्यति । स्वि अरे- क्षाः विष्यति । स्वि अरे- क्षाः विष्यति । स्वि अरेसाजरेसामिष्पत्तितुस्या व । अरेसाजरेसामातो बरेसाद- जाः विष्यति । बरेसावर्गतुस्यो भ- विष्यति । यदि अरेसाजरेसामातो बरेसावर्गतुस्य स्वरेसादरेसामातस- मानो भवेत् तदा अरेसाबरेस्वयोर्निष्पत्ति देरेसातुस्य स्वरेसाजरेसयोर्निष्पत्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम्।

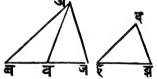
ये द्वे त्रिभुजे सजातीये भवतस्तदा तयोर्निष्पत्तिरेकत्रि-भुजस्य भुजस्य तादृशद्वितीयक्षेत्रभुजेन या निष्पत्तिस्तद्वर्गेण तुल्या भवति ।

यथा अवजिभुजदह्झित्रिभुजे सजातीये कल्पिते । तदाऽनयो-निष्पत्तिवेजभुजह्झभुजयोर्निष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ॥

अस्योपपत्तिः ।

बजभुजहङ्गभुजयोर्निष्यत्तौ बवं तृतीयं पृथकार्यम् । पुनः अव-रेखा संयोज्या । अववत्रिभुजे दह-

रेखा सयाज्या । अबवात्रमुज दह-झित्रमुजे बकोणहकोणौ समानौ भ-विष्यतः। अबभुजदहभुजयोर्निष्पत्ति-बिज्रभुजहझभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति ।



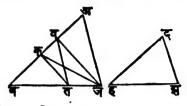
इयं हझ्भुजबवभुजनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । अववित्रभुजदहझ-त्रिभुजे समाने भविष्यतः । पुनः अवजित्रभुजस्य निष्पत्तिर्दहझ्तिभुज-तुल्यअववित्रभुजेन तथास्ति यथा बजस्य निष्पत्तिर्ववेनास्ति । इयं नि-ष्पत्तिर्वजहझ्ननिष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदि दहं अवसमानं भवति तदा त्रिभुजद्वयं समानं भवति । इदं सिध्यति । यदि समानं न भवति तदा न्यूनं भविष्यतीति कल्पिन्तम् । तदा वअभुजात् दहतुल्यं ववं पृथकार्यम् । पुनर्वतं हझन्तुल्यं पृथक् कार्यम् । पुनर्वकरेखेतद्रेखाद्वयनिष्पत्तौ पृथकार्या । पुनर्वजवतकजकतरेखाः संयोज्याः । वजवतनिष्पत्तेववकररेखानिष्पत्तिसाम्येन कतरेखावजरेखयोः समानान्तरभावित्वं निश्चितम् । पुनर्ववतित्रभुजवकजिन्नभुजयोः समानत्वमि निश्चितम् । पुनर्ववतित्रभुजं दह्झत्रिभुजस्य समानमस्ति । अवजित्रभुजकवजिन्नभुजयोर्निष्पत्तिः

अबकवभुजनिष्यतितुल्यास्ति । तसात् अवजित्रभुमदृह्झित्रिभुजयो-

निष्पत्तर्बअभुजबकभुजयोनिष्प-तितुल्या भविष्यति । इयं निष्प-त्तिबेअभुजबवभुजयोनिष्पत्तिवर्ग-तुल्या भविष्यति । बअभुजदह-



भुजयोरि निष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

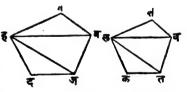
सजातीयपश्चभुजेषु क्षेत्रेषु तदिषकभुजक्षेत्रेषु वा त्रिभुजानि भवन्ति सजातीयानि च भवन्ति । तत्क्षेत्रयोर्निष्पत्तिस्तत्र-त्यसजातीयभुजनिष्पत्तिवर्गतुस्या भविष्यति ।

यथा अवजदहक्षेत्रभवतकलक्षेत्रे सजातीये कल्पिते । तत्र बहहजवललतरेखाः संयोज्याः । आभिर्द्वयोः क्षेत्रयोक्षिभुजानि सजा-तीयानि समानानि च जातानि ।

अस्योपपत्तिः ।

अकोणझकोणौ तुल्यौ साः । अबझवनिष्यतिः अहभुजझलभुज-निष्यत्तितुल्यास्ति । तसात् अबहित्रभुजं झवलित्रभुजं सजातीयं भवेत् । पुनईबजकोणः लवतकोणतुल्यः स्थास्यति । बहभुजवल-

भुजयोर्निष्पत्तिबेअभुजवझभुजनि-ष्पत्तितुल्यास्ति । बजभुजवत- हर् भुजनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् हबजत्रिभुजलवतत्रिभुजे एते द्वे



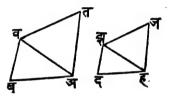
सजातीये भविष्यतः । एवं हजदत्रिभुजलतकत्रिभुजे सजातीये भवि-ष्यतः । सर्वसजातीयभुजानां च निष्पत्तिः समानास्ति । सर्वत्रिभुजानां च निष्पत्तिरेकैवास्ति । तसात् क्षेत्रयोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्प-त्तिवर्गो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

अभीष्टरेखायां तादृशं क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति यथान्यस्याभी-ष्टक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात्।

यथा अबरेला जदक्षेत्रं किल्पतम् । अस्य क्षेत्रस्य हङ्गरेलया त्रि-भुजद्वयं कार्यम् । पुनः अबरेलायां अचिह्नोपरि दहङ्गकोणतुल्यो बअ-वकोणः कार्यः । बचिह्नोपरि दकोणतुल्यो अबवकोणः कार्यः । द्वौ

भुजो तथा वर्द्धनीयो यथा विचिहे मिलतः । तसात् अबवित्रभुजदह-झित्रभुजे सजातीये मवतः । पुनः अचिहवचिह्रोपरि जहझकोणजझ-



हकोणतुल्यो द्वौ कोणौ कार्यो । भुजद्वयं तथा बर्द्धनीयं यथा तिबहे मिलति । तसात् तबक्षेत्रजदक्षेत्रे सजातीये भविष्यति । इत्येवेष्टम् ।

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम्।

एकक्षेत्रस्य यावन्ति सजातीयानि क्षेत्राणि भवन्ति ता-न्यपि मिथः सजातीयानि स्युः ।

यथा अक्षेत्रजक्षेत्रे बक्षेत्रसजातीये कल्पिते। तदा अक्षेत्रजक्षेत्रे अपि

सजातीये मविष्यतः । कुतः । अ-क्षेत्रजक्षेत्रयोः कोणा बक्षेत्रस्य कोणसमाः सन्ति । तस्मान्मिथः स-



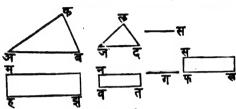
माना भविष्यन्ति । पुनः अक्षेत्रजक्षेत्रभुजा बक्षेत्रभुजैः सहैकनि-ष्पत्तिरूपाः सन्ति । तसाद्भुजानां निष्पत्तिरेकरूपा मिथो भविष्यति । तसाद् अक्षेत्रजक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । इत्येवेष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम्।

अभीष्टा रेखाः करपनीयाः। तासु रेखासु सजातीयानि क्षे-त्राणि कार्याणि। येषु क्षेत्रेषु क्षेत्रद्वयमेकरूपं भवति तथा का- र्याणि। यदि ता रेखा एकनिष्पत्तिरूपाः स्युक्तदैतानि क्षेत्राण्ये-कनिष्पत्तिरूपाणि स्युः । यदि च क्षेत्राण्येकनिष्पत्तिरूपाणि भवन्ति तदा ता रेखा अप्येकनिष्पत्तिरूपा भविष्यन्ति ।

यथा अबजद हुस्वतरेखाः कल्पिताः । कअबक्षेत्रलजदक्षेत्रे एकरूपे

कल्पिते । पुनर्महश्चक्षेत्र-नवतक्षेत्रे अन्यप्रकारके एकरूपे कल्पिते । अब-रेसाजदरेसानिष्पत्तौ तु-



तीया सरेखा कल्पिता । इझरेखावतरेखयोर्निष्पत्ती तृतीया गरेखा कल्पिता । यदि अबरेखाजदरेखानिष्पत्तिहृझवतयोर्निष्पत्तितुल्या चेत् तदा सजातीयबअकक्षेत्रलजदक्षेत्रनिष्पत्तिः अबरेखासरेखानिष्पत्ति- तदा अबरेखाजदरेखानिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तदा अबरेखाजदरेखानिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तसाद् अबरेखासरेखयोर्निष्पत्तिर्हझरेखागरेखानिष्पत्तितुल्याख्ति । तसाद् अबरेखासरेखयोर्निष्पत्तिर्हझरेखागरेखयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसाद् अबरेखासरेखयोर्निष्पत्तिर्हझरेखागरेखयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् कअबसेत्रलजदक्षेत्रनिष्पत्तिर्महझक्षेत्रनवतक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

पुनरि यदि क्षेत्राण्येकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति अवरेसाजदरेसानि-ष्पत्तिर्दृश्गरेसायतरेसानिष्पत्तितुत्या न भवित तदा अवरेसाजदरेसा-निष्पत्तिर्दृश्गरेसाफखरेसानिष्पत्तितुत्या कित्पता। पुनः फखरेसायां सफखक्षेत्रं महझक्षेत्रस्य सजातीयं कार्यम्। तसात् कअवक्षेत्रलजदक्षे-त्रयोनिष्पत्तिमहझसफखक्षेत्रनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । कअवक्षेत्रलज्जदक्षे-जदक्षेत्रयोनिष्पत्तिमहझनवतक्षेत्रनिष्पत्तितुत्या पूर्व कित्पतास्ति । तसात् सफखक्षेत्रनवतक्षेत्रं समाने सजातीयं च भविष्यतः। तसा-देतत्क्षेत्रद्वयं समानभुजं भविष्यति। ततः फखरेसा वतरेसासमाना भविष्यति। तसाद् अवरेसाजदरेसानिष्पत्तिर्दृश्गरेसावतरेसानिष्पत्ति-तुत्या भविष्यति। इदमेवेष्टमासीत्॥

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

एकस्मिन् समानान्तरभुजक्षेत्रे उदरगतकर्णोपरि यावन्ति समानान्तरभुजानि क्षेत्राणि पतन्ति तानि सर्वाण्यपि मिथः सजातीयानि भवन्ति ।

यथा तहक्षेत्रझवक्षेत्रे अजक्षेत्रमध्ये बदकर्णोपरि कल्पिते । तदेत-त्क्षेत्रत्रयं सजातीयं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

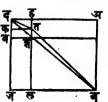
बजदित्रभुजे बजहज्ञयोर्निष्पत्तिर्बजकवस्यापि निष्पत्तिर्बदकद-योर्निष्पत्तेख्वत्यास्ति । बअदित्रभुजे बदकद-योर्निष्पत्तिर्बअतअनिष्पत्तितुत्यास्ति । बअक-श्र्योरपि निष्पत्तेख्वत्यास्ति । ततः अजक्षेत्र-श्रवक्षेत्रभुजयोर्निष्पत्तिरेकरूपा जाता । अ- ज व द नयोः कोणा मिथः समानाः स्युः । तसादेतत् क्षेत्रद्वयं सजातीयं जातम् । अनेनैव प्रकारेण अजक्षेत्रहतक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

एकस्मिन्समानान्तरभुजे क्षेत्रे एकं समानान्तरभुजं क्षेत्रं मध्ये पतितं चेद्रवति तदैतद्वयं सजातीयं चेद्रवति तदोभयोः कोण एक एव भवति । तदा द्वितीयं क्षेत्रं तत्कर्णापतितं भविष्यति ।

यथा हवक्षेत्रं अजक्षेत्रमध्ये पतितमस्ति । दकोण उभयोरेक एव कल्पितः । दझवं कर्णो भविष्यति । तदा हवक्षेत्रमस्य कर्णे पतिष्यति ।

यदि कर्णे न पतित तदा दतवं कर्णः कल्पितः।
पुनः तकरेखा अदरेखायाः समानान्तरा कार्या।
हक्करेखा लचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया। तसाद् हकक्षेत्रं अजक्षेत्रकर्णे पतितम्। तसाद् अद्भु-



जदह्मुजयोर्निष्पत्तिर्जदमुजदक्मुजयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । अद-मुजदह्मुजयोर्निष्पत्तिर्जदमुजदवमुजनिष्पत्तितुत्या कल्पिताऽऽसीत् । तसाद् दवदकभुजौ समानौ भविष्यतः। इदमसंगतम् । तसाद् दझवं कर्णो भविष्यति । इदमेवेष्टमस्माकम् ॥

अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम्।

यदि समानान्तरभुजक्षेत्रद्वयस्यैककोणश्चेत्समानो भवति तदा क्षेत्रद्वयनिष्पत्तिः क्षेत्रद्वयभुजनिष्पत्तिघाततुल्या भवि-

प्यति ।

यथा अजसेत्रज्ञससेत्रे जकोणः समानः कल्पितः । पुनर्बजभुजजवभुजौ सरलेकरेखायां कल्पितौ । हजभुजजदभुजौ सरलेकरेखोपिर
कल्पितौ । पुनर्द्वसेत्रं संपूर्णं कार्यम् । तत्र बजजवयोर्निष्पत्तिः कल्लयोखुल्या कल्पिता । दजजहयोर्निष्पत्तिर्रुमयोर्निष्पत्तितुल्या कल्पिता ।
तस्मात् कमयोर्निष्पत्तिः कलनिष्पतिल्मनिष्पत्त्योर्घाततुल्यास्ति । अजसेत्रज्ञतसेत्रयोर्निष्पत्तिर्वज्ञवयोर्निहिं

ष्पत्तितुत्यास्ति । कलरेलयोर्निष्पत्तेरिष तुत्यास्ति । तदा जतजङ्गक्षे-त्रयोर्निष्पत्तिर्दं जजहयोर्निष्पत्तितुत्यसमयोर्निष्पत्त्या तुत्याऽस्ति । तदा अजक्षेत्रजङ्गक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः कमयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । कमयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजवनिष्पत्तितुत्यकलनिष्पत्तिद्वजजहनिष्पत्तितुत्यसम् निष्पत्त्योर्घातरूपास्ति । तस्मात् क्षेत्रद्वयनिष्पत्तिर्भुजनिष्पत्तिषाततुत्यास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

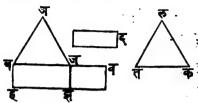
अथ षड्विंशतितमं क्षेत्रम् । तादृशैकक्षेत्रस्य चिकीर्षास्ति यत्क्षेत्रमन्यक्षेत्रेण समानं भ-वति तदन्यक्षेत्रस्य सजातीयं च भवति ।

यथा अबजक्षेत्रस्य सजातीयं दक्षेत्रेण तुल्यं क्षेत्रं कर्तुमिच्छास्ति ।

Digitized by Google

अथ बज्रभुजोपरि अबजक्षेत्रतुल्यं बझ्नक्षेत्रं समकोणसमानान्तर-

मुजं कार्यम् । ह्झरेला वर्द्धः नीया । पुनर्जझरेलोपरि झव-स्रोतं दक्षेत्रतुल्यं कार्यम् । ब- म् झस्रेत्रझवस्रेत्रे बवरेलाहझरे-



खान्तः पतिते स्तः । तसात् जवरेखा अवक्षेत्रस्य भुजो भवति ।

पुनर्बजजवरेखयोर्निष्पत्तिमध्ये तकरेखेकरूपनिष्पत्तौ कल्पिता । तकरेखोपरि तलकक्षेत्रं अवजक्षेत्रस्य सजातीयं कार्यम्।इदमेवेष्टम् । अन्नोपपत्तिः।

बजजबभुजयोर्निष्पत्तिमध्ये बझक्षेत्रझवक्षेत्रयोर्निष्पत्तिरस्ति । इय-मेव निष्पत्तिबजतकयोर्निष्पत्तेर्वर्गतुल्यास्ति । इयं निष्पत्तिः अबजक्षेत्र-छतकक्षेत्रनिष्पत्तितुल्यास्ति । अबजक्षेत्रं बझक्षेत्रेण समानमस्ति । तसात् तलकक्षेत्रं अबजक्षेत्रसजातीयं झबक्षेत्रेण तुल्यमस्ति । दक्षेत्रे-णापि तुल्यमस्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

अर्द्धरेखोपर्य्येकं क्षेत्रं समानान्तरभुजं कार्यं तद्रेखा इहत्ख-ण्डोपरि च समानान्तरभुजं क्षेत्रं तथा कार्य यथा द्वितीयक्षे-त्रस्य शेषभूतं क्षेत्रं प्रथमक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात् । तदार्द्धरे-खाजनितं क्षेत्रं महत्खण्डजनितक्षेत्रादिषकं भविष्यति ।

यथा अबरेसा किल्पता। जिचिहेऽदिता कृता। पुनर्जशक्षेत्रं जब-रेस्तायां किल्पतम्। ततो जहक्षेत्रं संपूर्ण मा स्व कृतम्। अबरेसायां महत्स्वण्डं अदं क-ल्पितम्। अस्पोपरि अकं क्षेत्रं तथा कृतं के स्व यथा तच्छेषं बकक्षेत्रं जशक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात्। तदा अमक्षेत्रं खक्करोत्रादिषकं मविष्यति।

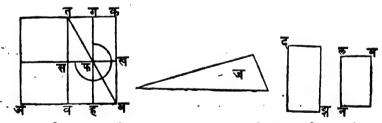
अस्योपपत्तिः ।

बमकर्णः संयोज्यः । तत्र हतक्षेत्रं तझक्षेत्रेण तुत्यमस्ति । तझ-क्षेत्रं झकक्षेत्रादिषकमस्ति । तदा हतक्षेत्रं झकक्षेत्रादिषकं भविष्यति । झकक्षेत्रं जकक्षेत्रेण तुत्यमस्ति । तसात् हतक्षेत्रं जकक्षेत्रादिषकं भविष्यति । तदा अतक्षेत्रं जकक्षेत्रे संयोज्यं तदा अकक्षेत्रं भवति । पुनरि अतक्षेत्रं हतक्षेत्रे योज्यं तदा अमक्षेत्रं भविष्यति । इदमर्द्ध-रेखाजनितं क्षेत्रमस्ति । इदमेव महत्खण्डजनितक्षेत्रादिषकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम्।

अभीष्टरेखाखण्डे तादृशं चतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यं ययाऽभीष्टक्षे-त्रेण समानं स्यात् । तद्दितीयखण्डोत्पन्नक्षेत्रमिष्टान्यक्षेत्रेण सजातीयं स्यात् । यज्ञस्यं क्षेत्रं कृतं तत्क्षेत्रमर्द्धरेखोत्पन्नक्षेत्रा-दिधकं न स्यात् । अर्द्धरेखोत्पन्नक्षेत्रमपीष्टक्षेत्रस्य सजातीय-मपेक्षितम् ।

यथा अबरेला कल्पिता । येन क्षेत्रेण तुत्यं कर्त्तुमिच्छास्ति तत्सेत्रं जक्षेत्रं कल्पितम् । इष्टसमानान्तरभुजं सजातीयं क्षेत्रं दश्गं कृतम् ।



अत्र अबरेसासण्डोपर्येकं समानान्तरभुजं जक्षेत्रतुत्यं क्षेत्रं कर्त्तव्य-मित्ति। तथा कार्ये यथा द्वितीयसण्डोत्पन्नं क्षेत्रं दझक्षेत्रसजातीयं स्यात्। पुनः अबरेसा विचिद्देऽद्विता कार्या। बचरेस्नोपरि दझक्षेत्रसजातीयं वकक्षेत्रं कार्यम्। पुनः अतक्षेत्रं पूर्णं कार्यम्। यदि अतक्षेत्रं जक्षेत्र-तुत्यं भवति तदाऽस्मदिष्टं सिद्धमेव। यदि अतक्षेत्रं जक्षेत्रादिषकं

Digitized by Google

स्यात् तदाऽस्यान्तरतुल्यं दझसजातीयं नमक्षेत्रं कल्प्यम् । दझक्षेत्रस-जातीये वकनमक्षेत्रे निथः सजातीये भविष्यतः । छकोणः तकोणतुल्यः कल्पितः । नलभुजो वतभुजसजातीयः । पुनः तसं लनतुल्यं पृथकार्यम् । तगं लमतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्गहरेला तवरेलायाः समानान्तरा कार्या । सफखरेला अवरेलायाः समानान्तरा कार्या । पुनर्वतकर्णो योज्यः । तसाद् अफक्षेत्रनिष्टमसाकम् ।

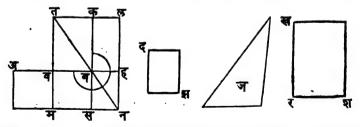
अस्योपपत्तिः ।

नमक्षेत्रतुत्यं सगक्षेत्रं वकक्षेत्रतुत्यअतक्षेत्रजक्षेत्रयोरन्तरसमान-मस्ति । तसाद् अफक्षेत्रतुत्यं सफखक्षेत्रं जक्षेत्रस्य समानं भविष्यति । तसाद् अबरेखाया अहलण्डोपरि जक्षेत्रतुत्यं अफक्षेत्रं जातम् । हबद्वितीयसण्डोप्युत्पन्नं हखक्षेत्रं दृझक्षेत्रस्य सजातीयं जातम् । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

मुजरूपकल्पितरेखान्तर्गतेष्टरेखोपरीष्टान्यक्षेत्रतुल्यं समा-नान्तरभुजं क्षेत्रं कर्जुमिच्छास्ति। अस्य क्षेत्रस्यैकमुजखण्डमि-ष्टरेखा भवति। इष्टरेखातो यावद्भुजोऽधिकस्तद्धिकमुजोपरि समुखनं क्षेत्रमिष्टान्यसमानचतुर्भुजसजातीयं भवति।

यथा अवरेसा कल्पिता। यस तुत्यं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति तत् जं



किल्पतम् । समानान्तरभुजसजातीयं क्षेत्रं दशं किल्पतम् । तत्र अब-रेखोपरि समानान्तरभुजं क्षेत्रं जक्षेत्रतुल्यं तथा कार्यं यथा अबरेखा-

Digitized by Google

तद्भुजलण्डं भवति । स भुजो यावान् अवरेखातोऽधिको भवति तदुत्पनं क्षेत्रं दशक्षेत्रसजातीयं भवति ।

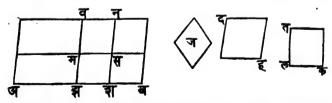
अश अबरेला विचहोपर्यदिता कार्या । बवरेलोपरि वकक्षेत्रं दशक्षेत्रसजातीयं कार्यम् । पुनः खशक्षेत्रं जक्षेत्रवक्षेत्रयोयोगतुल्वं कार्य दशक्षेत्रस्य सजातीयं च यथा भवति । पुनः खशक्षेत्रयक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । पुनः तकोणरकोणो समानो कल्पितो । पुनः तव- भुजरखभुजो सजातीयो कल्पितो । पुनः तवरेला तथा वर्द्धनीया यथा तमं रखरेलातुल्यं भवति । तकभुजोऽपि तथा वर्द्धनीयो यथा तलं रशातुल्यं भवति । पुनर्भचिद्दलचिद्दयोर्भनरेलालनरेलाअबरेलाकबरेलाकबरेलाः समानान्तरा कार्या । पुनः क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम्। तसाद् अनक्षेत्रः मिष्टं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

मलक्षेत्रं खशक्षेत्रतुत्यं जक्षेत्रवकक्षेत्रयोगतुत्यमस्ति। तसाद् अन-क्षेत्रतुत्यं वनकक्षेत्रं जक्षेत्रसमानं मविष्यति। इसक्षेत्रं दशक्षेत्रसजाती-यमविश्वष्टिमित्येवेष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबरेसोपरि समानान्तरमुजक्षेत्रं जक्षेत्रतुल्यं कर्तुमिच्छास्ति यथा अबरेसातद्भुजयोरन्तरे दहक्षेत्रसजातीयमेकं क्षेत्रमुत्पचेत । ततः अबरेस्य झिचहोपर्य्यद्विता कार्या । पुनर्वझरेसोपरि दहक्षेत्रसजातीयं



बवक्षेत्रं कार्यम् । पुनः अवक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । पुनः कर्त्तव्यक्षेत्रभुजो अबरेस्वातो न्यूनोऽपेक्षितोऽस्ति वाधिकः । यदि न्यूनोऽपेक्षितोऽस्ति तदा अक्षेत्रं अवक्षेत्रादिषकं न भवतीति निश्चयः । यदि जक्षेत्रं अवसेत्रतुल्यं चेतदोत्पन्नमेव । एवं न चेत्तदा अवसेत्रज्ञक्षेत्रान्तरं प्राह्मम् । यदि च भुजो अवरेखातोऽधिकोऽपेक्षितो भवति तदोभ-योयोंगो प्राह्मः । दहसेत्रसजातीयं तकक्षेत्रमन्तरतुल्यं योगतुल्यं वा कार्यम् । इदं क्षेत्रं बवक्षेत्रस्य सजातीयं भविष्यति । पुनर्लकोणदकोणौ समानौ कल्पितौ। तलभुजझवभुजौ सजातीयौ कल्पितौ तस्मात् लततुल्यं च वमं प्राह्मम् । एनर्भसरेखा नसरेखा ववसेत्रभुजस्य समानान्तरा कार्या । तदा असक्षेत्रमिष्टं जक्षेत्रतुल्यं म-विष्यति । असक्षेत्रभुजअवरेखयोरन्तरे यदुत्पन्नं शवसक्षेत्रं तद् दहक्षे-त्रस्म सजातीयम् ।

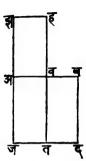
अथ यद्युत्पन्नं क्षेत्रं समकोणं समचतुर्मुजमपेक्षितं तदा अबरेक्षां द्विहेऽद्विता कार्या । यदि जक्षेत्रमद्वितरेक्षावर्गतुल्यं भवति मुजश्च रेक्षातो न्यूनोऽपेक्षितो भवति तदाईरेक्षोपिर समकोणसमचतुर्भुजक्षेत्र-मेवेष्टं भविष्यति । यदि तुल्यं न भवति तदा अबरेक्षाईवर्गजक्षेत्रान्त-रतुल्यमेकं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । पुनर्यदि भुजो रेक्षातो-ऽिषकोऽपेक्षितो भवति तदा द्वयोर्योगतुल्यं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । पुनर्यदि भुजो रेक्षातो-ऽिषकोऽपेक्षितो भवति तदा द्वयोर्योगतुल्यं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । पुनः समकोणसमचतुर्भुजेकतुल्यम् अबरेक्षाईतः पृथकार्यम् । तद् दहसंज्ञम् । यदि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यदि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यदि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यदि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यदा अहहबर्मातस्य दबवर्गन्तरं दहवर्गो भवति । अहहब्बधातस्य दहवर्गणान्तरं दबवर्गो स्यान्तरं दहवर्गो भवति । अहहब्बधातस्य दहवर्गणान्तरं दबवर्गो मविष्यति ॥

अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

इष्टैकरेखायास्तादशखण्डद्वयं कर्तुमिच्छास्ति यथा मह-त्खण्डं तद्वेखालघुखण्डयोर्मध्ये एकनिष्पत्तौ भवति । यथा अवरेखा कल्पिता । अस्यां समकोणसमचतुर्भुजं अद्दक्षेत्रं

Digitized by Google

कार्यम् । पुनः अजरेस्रोपिर समानान्तरभुजं अह-क्षेत्रतुत्यं झतारूयं तथा कार्य यथा अजरेसा तद्भुज-सण्डं स्यात् । अधिकरेस्रोपर्युत्पन्नं झवक्षेत्रं समको-णसमचतुर्भुजं भवति । तस्यात् अबरेसा वचिद्दो-परि इष्टविभागा भविष्यति ।



अस्योपपत्तिः ।

तत्र झतक्षेत्रं अद्षेत्रतुल्यमस्ति । तसात् झवक्षेत्रं द्वक्षेत्रतुल्यं मिविष्यति । झवक्षेत्रे वद्षेत्रे विच्हस्य कोणद्वयं समानमस्ति । तसात् तवसुजतुल्यअवसुजतुल्यअवसुजन्योर्निष्पत्तिः अवववयोर्निष्प-तितुल्या जातास्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

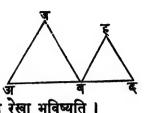
द्वयोखिभुजयोर्भुजद्वयं मिलितं सत्तथाकोणमुत्पादयति यथा प्रथमत्रिभुजस्य प्रथमभुजो द्वितीयत्रिभुजप्रथमभुजेन समानान्तरो भवति । त्रिभुजस्य द्वितीयभुजः प्रथमत्रिभुजस्य द्वितीयभुजेन समानान्तरितो भवति । समानान्तरभुजयोर्नि-ष्पत्तिरपि समाना चेद्रवति तदा तच्छेषभुजौ सरलैकरेखाप-तितौ भविष्यतः ।

यथा अबजित्रभुजबद्दृत्रिभुजयोर्बजभुजबह्भुजाम्यां जबह्-कोण उत्पन्नः । अजभुजश्च बह्भुजस्य समानान्तरः कल्पितः । जब-भुजश्च दृह्भुजस्य समानान्तरः कल्पितः । पुनः अजभुजबह्भुजयो-निष्पत्तिज्ञंबभुजदृह्भुजयोर्निष्पत्त्या समाना कल्पिता । तसात् अबदं सरला रेखा जाता ।

अस्योपपत्तिः ।

जकोणहकोणौ समानौ स्तः । यतः प्रत्येकं जबहकोणतुल्यौ स्तः।

कोणद्वयसंबन्धिभुजौ मिथ एकरूपनिष्पत्तौ स्तः । तसात् त्रिभुजद्वयं सजातीयं भवि-ष्यति । अकोणजकोणयोगतुल्यो जबद-कोणो जबअकोणेन साद्धे समकोणद्वय-तुल्यो भविष्यति । तसाद् अवदं सरहैका रेखा भविष्यति ।



प्रकारान्तरम् ॥

यदि सजातीयत्रिभुजद्वयमेककोणमुत्पादयति । तस्य कोणस्य भुज-द्वयं स्वसजातीयभुजद्वयस्य समानान्तरितं भवति । तत्र त्रिभुजद्वयस्य मूमी मिलित्वा सरलैकरेखा भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जकोणो जबहकोणेन तुल्योऽस्ति । अकोणश्च हबदकोणेन तु-ल्योऽस्ति । यदि जबअकोणः अकोणजकोणाम्यां योज्यते तदा त्रि-मुजस्य त्रयः कोणा भविष्यन्ति । अयं जबअकोणो जबहकोणहबद-कोणाम्यां योज्यते । तदा त्रिभुजस्य कोणत्रययोगतुल्यो भवति । त्रिभु-बस्य कोणत्रययोगः समकोणद्वयतुल्योऽस्ति । तदैतत्कोणत्रययोगोऽपि समकोणद्वययोगतुल्यो जातः । तसात् अवदं सरलैका रेखा भवि-प्यति । इद्मेवासाकमिष्टम् ॥

अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

यत् त्रिभुजं समकोणं भवति तद्भुजत्रयोपरि यत् क्षेत्र-त्रयं क्रियते तत्कर्णोपरितनक्षेत्रं समकोणसंबन्धिभुजद्वयक्षेत्र-योगतुल्यं भवति । कदा । यदि कोणसंबन्धिमुजद्वयक्षेत्रे कर्णक्षेत्रानुरूपे तत्सजातीये च भवतः।

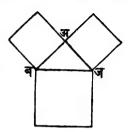
यथा अबजित्रमुजे अकोणः समकोणः कल्पतः । तदा बजक-**र्णक्षेत्रं बअ**भुजअज्ञभुजक्षेत्रयोयींगसमानं भविष्यति यदि एते क्षेत्रे सजातीये भवतः ।

अस्योपपत्तिः ।

बजकर्णोपरि यत्समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं भवति बअमुजोपरि

समकोणसमचतुर्भुजं च यद् भवत्यनयोर्निष्प-त्तिबीजवअनिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण यरिकचित्रिभुजादिक्षेत्रं बजकर्णे भवति बअभुजस्थेन तादृशक्षेत्रेण सजातीयं चेत्तदा तद्व्यनिष्पत्तिबीजवअनि-



ष्पत्तिवर्गतुत्या भविष्यति । तसाद् बजकर्णस्य समकोणसमचतुर्भुजं बअभुजस्य च समकोणसमचतुर्भुजमनयोर्निष्पत्तिर्बजकर्णस्यत्रिमुजा-दिक्षेत्रतादृशबअमुजक्षेत्रनिष्पत्तिरिव भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण बजकर्णसमकोणसमचतुर्भुजअजभुजसमकोणसमचतुर्भुजयोर्निष्पत्ति । तसाद् बजकर्णक्षेत्रअजभुजक्षेत्रनिष्पतितुत्या भविष्यति । तसाद् बजकर्णस्थसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य बअभुजअजभुजक्षेत्रसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य बअभुजअजभुजित्रभुजादिक्षेत्रयोर्निष्पतितुत्या भविष्यति । बजकर्णस्थसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रयोर्गने समानं भवति । तसाद् बजभुजअजभुजसमकोणसमचतुर्भुजयोर्योगेन समानं भवति । तसाद्

प्रकारान्तरम् ॥

अचिद्वात् अदलम्बो निष्कासनीयः । बजक्षेत्रस्य निष्पत्तिर्वअ-क्षेत्रेण बजवअनिष्पत्तिर्वगतुल्यास्ति । बज-बअनिष्पत्तिवर्गो बजबद्दनिष्पत्तितुल्यः । त-साद् बजक्षेत्रस्य वअक्षेत्रेण निष्पत्तिर्वज-बदनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एवं बजक्षेत्रजअक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वजज-अनिष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । बजजअनिष्पत्तिवर्गो बजजद्दनिष्पत्तितु- स्योऽस्ति । तसाद् बजक्षेत्रजअक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्बजजदयोर्निष्पतितु-स्या भविष्यति । तसाद् बजस्य क्षेत्रस्य वअअजक्षेत्रयोगेन निष्पत्ति-र्बजस्य निष्पत्तिर्बदजदयोगेन या भवति तत्तुल्या भविष्यति । बजं बदजदयोगतुल्यमस्ति । तस्मात् बजस्य क्षेत्रं वअअजक्षेत्रयोगतुल्यं भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

द्वयोः समानवृत्तयोः केन्द्रस्थकोणयोः पालिस्थकोणयोर्वा निष्पत्तिस्तद्धापनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अवजवृत्तद्ह्ञसृवृत्तयोः अकोणद्कोणौ पालिगतौ वकोण-तकोणौ केन्द्रगतौ कल्पितौ । तस्माद् बजचापहृञ्चचापयोर्निष्पत्तिः अकोणद्कोणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । वकोणतकोणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अवजवृत्ते जकचापं कलचापं बजचापसमानं पृथकार्यम् । दहझ-वृत्ते झमचापं मनचापं हझचापसमानं पृथकार्यम् । पुनर्वकरेखा वल-रेखा तमरेखा तनरेखा संयोज्या । तस्माद् बजचापं जकचापं कल-चापं गुणगुणितबजचापतुल्यमित । बवलकोणो गुणगुणितबवजको-णतुल्योऽित । एवं हझचापं झमचापं मनचापं गुणगुणितहझचापतु-ल्यमिति। हतनकोणो गुणगुणितहतझकोणतुल्योऽित । यदि बलचापं हनचापादिषकं स्यात्तदा बवलकोणो हतनकोणादिषको मविष्यति ।

यदि बलचापं हनचापं समं वा हनचापान्यूनं वा स्याचदा बवल-कोणो हतनकोणसमानो वा हतन-कोणान्यूनो वा मविष्यति । तसाद् बज्जचापहृङ्गचापनिष्यत्तिर्बकोणतको- णनिष्पित्ततुल्या भविष्यति । अकोणदकोणनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टचै द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । अन्येऽस्मिनाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात- र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति षष्ठकः संगतोऽभूत् ॥ ६ ॥

इति श्रीजगन्नायसम्राड्विरचिते रेसागणिते षष्टोऽध्यायः समाप्तः॥ ६॥

CALFORNA

NOTES.

BOOK I.

Definitions.

Page 3. चरातकक्षेत्रस्=A superficies. It is further on called चरातकस् and divided into सम or plain superficies and विषम or crooked superficies.

Euclid does not seem to have mentioned crooked superficies. 'Euclid leaves out here to speak of a crooked and hollow superficies, because it may easily be understood by the definition of a plain superficies, being its contrary. And even as from one point to another may be drawn infinite crooked lines, and but one right line, which is the shortest, so from one line to another may be drawn infinite crooked superficies, and but one plain superficies, which is the shortest.' Bil.

समहोण=A right-angle. In the definition of समहोण, the word क्रम्== perpendicular is taken as one with which the reader is familiar, it being used in astronomical works well known to Sanskrit students in India.

Page 4. विषयकोण=An angle other than a right angle. It means either an acute angle (अस्पकोण), or an obtuse angle (अस्पकोण), made either by right lines (सरकरेखा), or by crooked lines (विषयरेखा), or by a right line and a crooked line.

bounded by a right line and a crooked line.

क्षेत्र=A figure. वृत्त=The circumference. वृत्तक्षेत्र=A circle.

Page 5. The circumference. This is the word generally used in the work for the circumference of a circle.

through the center, but meets the circumference on both the sides and divides the circle into two unequal parts.

Read केन्द्रवा न स्वात in the definition (vide the errata).



न्यूनकोण is synonymous with अस्पकोण and means an acute angle.

Page 6. आयत=An oblong, called a long figure by Bil.

Page 7. समानास्तर रेखा=Parallel lines. The definition omits the most important thing, that parallel lines must be in the same plane. Two lines may not meet even if produced on both the sides and may not still be parallel if they are not in the same plane.

After this definition we have axioms, postulates, and an explanation of certain words used in the work. In Bil's work, postulates are called Petitions or Requests and axioms, Common Sentences. 'The axioms are called in the original Common Notions.' Tod. p. 253.

पा सरका रेजा से "=When a straight line, joined with another is a straight line, it looks as one straight line, and not as joined with another straight line (i. e. the two straight lines form one straight line).

वे राज्य प्कादिगुणिता =Those quantities which are multiples (doubles, triples &c.) of the same quantity are equal to one another.

रेखायां घरातके चि°=Understand क्रमेण in the sentence. It is possible to take a point in a line and a line in a superficies.

Page 8. अब चित्रं चि°=A point coincides with a point, a straight line with another equal to it, and a superficies with another equal to it.

Here रेखा must be taken to mean सरका रेखा, as it is stated further on यत्र रेखा शब्दस्तत्र सरखेव रेखा श्रेया.

वे च चिद्वे त°=This is the First Postulate. The next two are the Second and Third Postulates.

सरकरेखाइयं च°=Two straight lines cannot enclose a superficies, but two curved lines or a straight line and a curved line can.

यहेबाह्रयं स°=If two straight lines that are not parallel be produced in the direction in which the distance between them is greater, the further they are produced, the greater the distance between them; while if they are produced in the direction in which the distance is less, the further they are produced the

less the distance between them, till at length the two straight lines meet together and then the distance between them goes on increasing.

परिभाषा=Technicality, Terminology.

Bil. gives six Petitions (postulates) as follows:—

- '1. From any point to any point to draw a right line.
- 2. To produce a right line finite straightforth continually.
- 3. Upon any center and at any distance to describe a circle.
- 4. All right angles are equal the one to the other.
- 5. When a right line falling upon two right lines, doth make on one and the selfsame side, the two inward angles less than two right angles, then shall these two right lines being produced at length concur on that part, in which are the two angles less than two right angles.
 - 6. That two right lines include not a superficies.

'It is supposed by some writers that Euclid intended his postulates to include all demands which are peculiarly geometrical, and his common notions to include only such notions as are applicable to all kinds of magnitude as well as to space magnitudes. Accordingly, these writers remove the last three axioms from their place and put them among the postulates; and this transposition is supported by some manuscripts and some versions of the *Elements*.' Tod. p. 253.

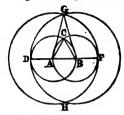
It will be noticed that our text places the last three axioms along with postulates, and the twelfth axiom has a much simpler form. This however, necessitates a series of propositions after the 28th proposition.

'Speaking generally it may be said that the methods which differ substantially from Euclid's involve, in the first place, an axiom as difficult as his, and then an intricate series of propositions; while in Euclid's method after the axiom is once admitted the remaining process is simple and clear.' Tod. p. 263.

Prop. I. p. 8-9.

Campanus shews how two other kinds of triangles, viz. an isosceles triangle and a scalene triangle, can be described upon the given line.

Upon the given line A B, describe an equilateral triangle

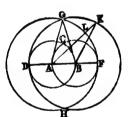


A B C. Produce A B both ways to meet the circumferences of the circles in D and F. From the center B at the radius B D, describe the circle D H G; and from the center A at the distance A F, describe the circle F G H. From the point G, where the two greater circles cut

one another, draw G A and G B to the points A and B. Then the triangle G A B shall be the isosceles triangle required.

B is the center of the circle A C F, therefore B A is equal to B F. Again because A is the center of the circle B C D, therefore A B is equal to A D. But A B has been shewn equal to B F, therefore A D is equal to B F. To each of these equals add A B. Therefore the whole B D is equal to the whole A F. But B D is equal to B G, both being the radii of the circle D G H; and A F is equal to A G, both being the radii of the circle F G H. Therefore A G is equal to B G and the triangle A B G is isosceles.

A scalene triangle may also be described upon the given line A B.



Take any point K in the circumference of one of the two greater circles, so that it may not be in one of the two sections and the line DF may not concur with it when it is produced on either side so as to meet the circumference. Draw the lines AK and BK. Then

A K B shall be the triangle required. The line A K shall cut the circumference of the circle F G H. Let it cut it in L. Now because A L is equal to A G, both being the radii of the circle F G H; and B G is equal to B K, both being the radii of the circle D G H; and A G has been shewn to be equal to B G; therefore A L is equal to B K, and therefore A K is greater than B K. Similarly B K may be shewn to be greater than A B. Therefore the triangle A B K is scalene.

Prop. 2 p. 9.

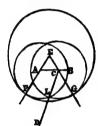
The point of may be joined with either end of the given line,

i.e. with either wor wa, the equilateral triangle was war may be described on either side of the line was or was and the two sides of the equilateral triangle may be produced in either direction. This will give rise to eight figures.

Prop. 3 p. 10.

The case in which one of the given straight lines cuts the other in one of the extremities is worth noting.

Let A B and C D be the two given straight lines, of which C D is the greater; and let C D cut A B in its extremity C. With the center A and radius A B, describe the circle B F.



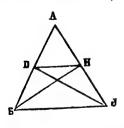
Upon A C describe an equilateral triangle A E C.* Produce E A and E C to F and G. With the center E and radius E F describe the circle G F. Again with the center C and radius C G, describe the circle G L, cutting C D in L. Now because E F is equal to E-G, because they are the radii of the circle F G, and their parts E A and E C are equal,

they being the sides of the equilateral triangle E A C, therefore the remainder A F is equal to the remainder C G. But A F is equal to A B, because they are the radii of the circle B F. Therefore C G is also equal to A B. But C G is equal to C L, both being radii of the circle G L; therefore A B is equal to C L. Therefore from C D, the greater, C L is cut off, equal to A B, the less, which was required to be done.

Prop. 5, p. 12.

Alternative proof.

Let ABJ be the given isosceles triangle. In AB, take any point D. From AJ, the greater, cut off AH, equal to AD,



the less (I. 3). Join DH, DJ, and HB. In the triangle ADJ, the sides DA and AJ and the angle A are respectively equal to the sides HA, AB and the angle Ain the triangle AHB. Therefore BH is equal to DJ, and the angle ABH to the angle AJD+

^{* (}L 1). + (I, 4).

Similarly in the triangle BDH, the sides DB and BH and the angle DBH are respectively equal to the sides JH, JD, and the angle HJD in the triangle HJD. Therefore the angles BDH and JHD are equal and the angles BHD and JDH are also equal to one another.* Therefore the angles BDJ and BHJ are equal.† Similarly in the triangle BDJ, the sides BD and DJ and the angle BDJ are equal to the sides JH and HB and the angle JHB in the triangle BHJ. Therefore the angles ABJ and AJB are equal.\$ Thus the required angles are proved equal.

This proof is given in Bil.'s edition and is attributed to Proclus.

Bil. also gives another demonstration invented by Pappus.

Let ABC be an isosceles triangle and let the side AB be equal to AC. Now understand this one triangle to be as

it were two triangles and thus reason. Because in the two triangles A B C and A C B, A B is equal to A C and A C to A B, and the angle B A C is equal to the angle C A B, for it is one and the same angle, therefore the base C B is equal to the base B C and the triangle A B C is equal to the triangle A C B; and

the angle A B C is equal to the angle A C B and the angle A C B to the angle A B C (I. 4).

Prop. 6 p. 13.

It may be noted that there will be another case in this proposition if the line equal to an an may be taken from the point an instead of from an. It may be then demonstrated as follows:—

Make अ द equal to अ व (I. 3). Join व द. Produce व अ to ह

^{* (}I. 4). † (3 Ax.). \$ Because the angles DBJ and HJB are equal (I. 4).



and make a g equal to a a (I. 3), and join a g.

Now in the triangles we want and we we, the sides we and we are equal to the sides greated and we want and the included angle we was equal to the included angle grew. Therefore the triangle we want is equal to the triangle grew (I. 4). The less equal to the greater, which we is absurd.

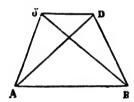
Prop. 7. p. 13.

In the enunciation the word पार्श is used in the sense of प्रान्त = extremities.

The proposition is enunciated and proved as follows:—

The straight lines drawn from the extremities of one straight line* can meet in one point and never in another.

From the extremities A and B (of the straight line A B),



are drawn the straight lines A J and B-J. They meet in J. If it be assumed that two straight lines equal to them meet in another point, then draw A D equal to A J and B D equal to B J, meeting it in D. Join J D.

Now the angle A J D is equal to the angle A D J,† because A J is equal to A D. But the angle B J D is less than the angle A J D. Then the angle B J D shall be less than the angle A D J also. Again the angle A D J is less than the angle B D J. Then the angle B J D shall be much less than the angle, B D J. But these angles are equal; because the sides B D and B J are equal. This is absurd, because two equal angles have become unequal. Therefore the straight lines A J and B J\$ cannot meet in any other point than in J.

In Bil.'s edition the proposition is enunciated as follows:-

If from the ends of one line be drawn two right lines to any point, there cannot from the self-same ends on the same side be drawn two other lines equal to the two first lines, the one to the other, to any other point.

^{*} Scil. on the same side of it. † (I. 5). \$ Or straight lines of equal length drawn from A and B.

Only the first case of the proposition, the one that is given in the Sanskrit text, is proved in Bil.'s edition. The other case in which the vertex of one triangle falls within another is attributed by Bil. to Campanus.

Bil. has the following note on this proposition:—

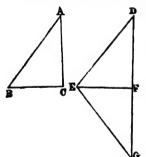
'In this proposition, the conclusion is a negation, which very rarely happens in the mathematical arts. For they ever for the most part use to conclude affirmatively and not negatively. For a proposition universal affirmative is most agreeable to sciences, as saith Aristotle, and is of itself strong and needeth no negative to its proof. But an universal proposition negative must of necessity have to its proof an affirmative. For of only negative propositions, there can be no demonstrations. And therefore sciences using demonstration conclude affirmatively and very seldom use negative conclusions.'

Greg.'s edition also gives only the case mentioned in the Sanskrit text.

Prop. 8.

Philo and others demonstrate this proposition without the help of the seventh proposition as follows:—

Let A B C and D E F be two triangles of which the sides A B



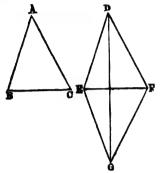
and A C are respectively equal to the sides D E and D F, and the base B C is equal to the base E F. Then the angle B A C shall be equal to the angle E D F. Place the two triangles A B C and D E F in one and the same plain superficies. Apply the triangle A B C to the triangle D E F in such a way that the base B C may coincide

with the base E F, the triangle D E F may be on the other side of the right line E F, and the vertex G may fall opposite to the vertex D. This can be done in three ways. Thus there arise three cases.

In the first case the line F G falls directly into the line D F. Now because D E is equal to E G, therefore the angle E D F is equal to the angle E G F (I. 5). Secondly let not F G fall directly, but make, with the line D F, an angle within the figure.

Join D G.

Now because D E is equal to E G, therefore the angle ED G



is equal to the angle E G D (I. 5). Similarly because D F is equal to F G, therefore the angle F D G is equal to the angle F G D (I. 5). Therefore the whole angle E D F is equal to the whole angle E G F.

Thirdly let F G make with D F an angle without the figure.

Join DG.

Now because D E is equal to E G, therefore the angle E D G

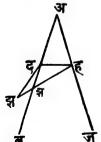


is equal to the angle E G D (I. 5). Again because D F is equal to F-G, therefore the angle F-D G is equal to the angle F G D (I. 5). But the whole angle E D G has

been proved equal to the whole angle E G D, and the part F D G to the part F G D. Therefore the remaining angle E D F is equal to the remaining angle E G F.

Prop. 9 p. 15.

An objection may be raised that the point at, the vertex of the



equilateral triangle द इत इत, may fall within the line en a or outside it. Both these objections are answered in the text.

The point of must be within the space included by the right lines of and of of.
Why? If it is not within this space, it must be on one of the lines or outside the space between the two lines as in the marginal figure. Then the angles of of of of the lines are of the marginal figure.

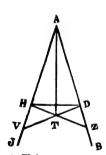
shall be equal.* But the angle we get is equal to the angle we get.† Thus if the point on the side we get, the whole angle get we and its part get are equal. This is absurd.

If the point we be outside the side wa, then the angle was shall be greater than the angle was. It shall also be greater than the angle as so, because the angles was and as we are equal. But the greater angle was is equal to the angle as w. Therefore the part as we is greater than the whole as who is absurd; because a part can not be greater than the whole. Therefore the point who within the space included by the two arms.

This objection is noticed in Bil.'s edition in the following words:—

'Here against this proposition may of the adversary be brought an instance. For he may cavil that the head of the equilateral triangle shall not fall between the two right lines but in one of them, or without them both.'

Alternative proof of Prop. 9.



In the line D B, take any point Z. Make H V, equal to D Z.\$ Join Z H and V D. Let T be the point where they intersect each other. Join A T. Then this shall bisect the angle A.

Proof of this.

As proved in Prop. 5, the angles Z H D and V D H are equal. Therefore D T is equal to H T.** Therefore the triangle D-

A T is equal to the triangle H A T." Therefore the Angle A is bisected.

Note that in this proposition it is not necessary that the equilateral triangle which is described on $\overline{\epsilon}$ should be described on the other side of it, remote from $\overline{\epsilon}$. It may be

^{*} The triangle BE E being equilateral. + (I. 5). ‡ (I. 5). ¶ 'An instance is an objection or a doubt, whereby is letted or troubled the construction or demonstration, and containeth an untruth or an impossibility: and therefore it must of necessity be answered unto and the falsehood there of, made manifest.' Bil. § (I. 3). ** (I. 6). " (I. 8).

described on that side of $\pi \in \mathbb{R}$ which is nearer to π . Then there arise three cases, of which one is given in the text as an alternative proof. The equilateral triangle $\pi \in \mathbb{R}$ shall coincide with the triangle $\pi \in \mathbb{R}$ if the sides $\pi \in \mathbb{R}$ and $\pi \in \mathbb{R}$ are equal to $\pi \in \mathbb{R}$, or shall fall without the triangle $\pi \in \mathbb{R}$ if the sides $\pi \in \mathbb{R}$ and $\pi \in \mathbb{R}$ if the sides $\pi \in \mathbb{R}$ and $\pi \in \mathbb{R}$ if the sides $\pi \in \mathbb{R}$ and $\pi \in \mathbb{R}$ be less than $\pi \in \mathbb{R}$. The first case is the one given in the text as an alternative proof. The second is as follows:—

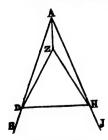
Let B A J be the given rectilineal angle. It is required to bisect it.



In AB, take any point D. Make AH equal to AD (I.3). On DH describe the equilateral triangle DZH (I.1). Join ZA and produce it to meet DH in V.

In the triangles DZA and HZA, the two sides DZ and ZA are equal to the two sides HZ and ZA, and the base DA is equal to the base HA. Therefore the angle DZA is equal to the angle HZA (I.8). Again in the triangles DZV and VZH, the two sides DZ and ZV are equal to the two sides HZ and ZV, and the angle DZV is equal to the angle HZV. Therefore the base DV is equal to the base HV(L4). Again in the triangles ADV and AVH, the two sides AD and AV are equal to the two sides HA and AV and the base DV is equal to the base HV. Therefore the angle DAV is equal to the angle VAH(I.8).

The third case is as under:-

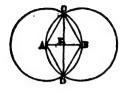


In this case the equilateral triangle DZH falls within the triangle ADH. In the two triangles ADZ and AZH, the angles DAZ and HAZ are equal (1.8).

Prop. 10 p. 16.

Another way of bisecting a given straight line is as under:—

Let A B be the given straight line. It is required to bisect it.



From the center A and the radius A B. describe the circle B C D, and from the center B and the radius B A, describe the circle A C D and join the intersectionpoints C and D. Join also A C, A D, B C and B D. Let C D cut A B in E.

In the triangles A C D and B C D the angle A C D can be proved to be equal to the angle B C D (I. 8), and then in the triangles A C E and B C E, the base A E can be proved to be equal to the base B E (I. 4).

Prop. 11 p. 18.

Alternative proof.

It is required to draw a straight line at right angles to w from the point w.

In the right line of a, take the point of. Make of a equal

to way. From the point and draw the straight line ar at right angles to ar a; and from the point a, draw g g at right angles to sq q. ♣ Bisect the angle of or by the right line

m a, and the angle m a m by the right line a s. § Then the point g is the point where the lines wg and gg meet. Again make we equal to get and join we. This shall be at right angles to a a.

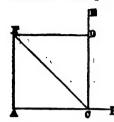
Proof.

In the triangle of of a, the arms of of and of a and the angle and are respectively equal to the arms are and are and the angle was in the triangle was. Therefore the angle ब अ क्रांड equal to the angle ह ज द \$ But ह ज द is a right angle. Therefore the angle was is also a right angle. Therefore the line was is at right angles to was, which was required to be done.

This alternative proof is simply a particular case of the proposition in which a straight line is drawn at right angles to a given straight line from a point within it, the point being one of the extremities of the given straight line.

^{* (}Preceding case). § (I. 9). ¶ (I. 3). \$ (I. 4).

Bil. mentions this case and proves it in almost a similar manner. His proof is as under:—



Let A B be the given right line and A be the given point in it. It is required to draw a straight line at right angles to A B from the point A.

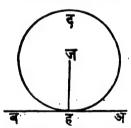
In AB, take any point C. From C draw CE at right angles to AB. From CE cut off CD equal to CA (I.3). Bisect the

angle A C D by the line C F (I. 9). From the point D draw D F at right angles to C E, meeting C F in F. Join F A. Then the angle at A is a right angle. Because D C is equal to C A and C F is common to the two triangles D C F and A C F and they contain equal angles at C, therefore the angle C D F is equal to the angle C A F (I. 4). But the angle C D F is a right angle (Con.); therefore the angle C A F is also a right angle. Q. E. F.

Prop. 12 p. 19.

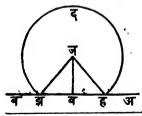
By अमीहरेबायास we should understand a straight line of unlimited length, to ensure that it shall meet the circle.

Alternative proof.



In the right line wa, take any point g. Join g w. Making we the center with the radius wa g, describe a circle g w. If the beginning and the end of the circle be in g,* then the line wa g is a perpendicular. The proof of this we shall give in the Third Book.†

If the circle does not end in , but stops with , then



bisect the line at in the point at.

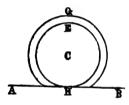
Join the right line at at. This is a perpendicular. The proof of this is as shewn before (i. e. as given in the first case in the text).

These two cases arise by not stick-

ing to the words 'अवरेखादितीयदिशि द्विहं कार्यम्' p. 18 l. 19-20; but by taking the point in the given right line.

Bil. notices both these cases:—'There may be in this proposition another case. For if it be so that on the other side of the line AB, there be no space to take a point in but only on that side wherein is the point C* &c. The first case where the circle touches the given right line is thus proved:—

'If it so happen that the circle which is described do not cut



the line but touch it, then taking a point without the point E, namely the point G, and making the center C, and the space C G, describe a part of the circumference of a circle, which shall of necessity cut the line A B.' Then the

case will be similar to the one in the text.

Prop. 13. p. 20, l. 13.

एतत्समकोणद्भयोगः=The sum of these angles made by right lines. समकोण is here equal to समरेखाजनितकोण.

Prop. 15. p. 21.

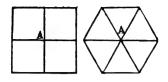
'Thales Milesius, the philosopher, was the first inventor of this proposition, as witnesseth Eudemius, but yet it was first demonstrated by Euclid.' Bil.

Bil. notes that the corollary to Prop. XV., namely if two straight lines cut one another, they make four angles equal to four right angles, gave great occasion to Pithagoras to find out the wonderful proposition, which is as under:—

'Only three kinds of figures of many angles, namely, an equilateral triangle, a right-angled figure of four sides, and a figure of six sides having equal sides and equal angles, can fill the whole space about a point, their angles touching the same point.'



^{*} Corresponding to win the text.



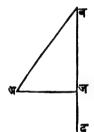


Prop. 16 p. 22.

After having proved the proposition the author makes the following remarks:—

From this it is also known that if two right lines drawn from the same point intersect a third right line, then the two angles formed on the same side of the lines shall never be equal. The direction here is to be taken from the lines drawn from the point.

From the point of are drawn the lines of and of of and



they meet the line a q in the points a and a. Then the angles was and was, formed in the same direction, shall not be equal. Because the triangle was is formed by the meeting of the three lines (wa, wa, and wa). The exterior angle was is greater than the angle was. This is proved. Therefore what is stated is proved.

This is in fact another way of putting prop. 16. Two corollaries follow this prop. as mentioned in Bil.

1. It is not possible that from one and the self-same point should be drawn to one and the self-same right line, three equal right lines.

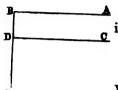


A B, A C, and A D, drawn from the same point A to the right line B D, can not be equal.

For if A B is equal to A C, the angle A B C shall be equal to the angle A C B (I. 5). Similarly if A B be equal to A D, the angle A B D shall be equal to the angle A D B (I. 5). But the angle A B D has been proved equal

to the angle A C B. Therefore the angle A C B is equal to the angle A D B or A D C. This is absurd (I. 16).

2. If a right line falling upon two right lines do make the outward angle equal to the inward and opposite angle, these right lines shall not make a triangle.



Though this is given as a Cor. by Bil., it is really the converse of the prop.

Prop. 17. p. 23.

This prop. may also be demonstrated without producing any side of the given triangle.



In B C, take any point D. Join A D.

The angle A D C is greater than the angle A B D'(I. 16) and so is the angle A D B greater than the angle A C D. Therefore the two angles A D B and A D C are together greater than the angles A B C and A C B. But the angles A D B and A D C are together

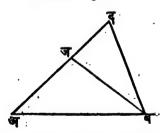
equal to two right angles (I. 13). Therefore the angles A B C and A C B are together less than two right angles.

Bil. mentions the following Cor. to this prop.:-

From one and the same point to one and the self-same right line can not be drawn two perpendicular lines.

Prop. 18 p. 24.

Alternative proof.



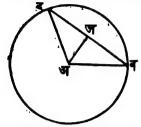
Produce the right line was to the point a. Make wa equal to was."

Join a w. The angles was and was are equal. But the angle was is greater than the angle was. Therefore the angle was.

Again the angle was is greater than the angle was under the angle was greater than the angle was under the control of the cont

^{* (}I. 8). + (I. 5). ‡ (I. 16).

Another alternative proof.

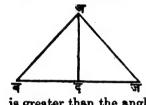


With the center ar and the radius er a describe the circle a z. Produce the line was to meet the circumference in g. Join ag g.

In the triangle of a s, the angles and are equal.* But the angle ar ar is greater than the angle

अदत्र Therefore it is also greater than the angle अवद. Q. E. D.

Prop. 20 p. 26. Alternative proof.



Bisect the angle w by the right line स इ.1 Then the angle क द ज is greater than the angle z = 3 But the angle Tay is equal to the angle द स ज. Therefore the angle स द ज is greater than the angle of at a. Then the side, of of shall be greater than the side of the Again the angle of the greater than the angle द आ जा! But the angle द आ ज is equal to the angle www. Therefore the angle war is greater than the angle war. Therefore the side was is greater than the side

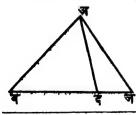
Note that in this alternative proof, the proposition is proved without producing any of its sides.

Therefore the sum of two greater sides is greater than

This alternative proof is noticed in Bil.'s edition.

This was what we wished.

Another alternative proof.



the third.

If the sum of war and was be not greater than a s, then it must be either equal to it or less than it. Make च द equal to ब स.** Join आ ह.

The remainder washall be either equal to a ar or greater than it.

^{* (}I. 5), † (I. 16), † (I. 9), \$ (I. 16), ¶ (Cons.), § (1. 19), || (I. 16), •• (I. 3).

be equal to it, the angles ज अ द and च अ द, shall be equal to the angles ज द अ and च द अ respectively.* But the angles ज द अ and च द अ are together equal to two right angles.† Therefore the angles ज अ द and च अ द shall be equal to two right angles. This is absurd. Because one angle of a triangle is not equal to two right angles.\$

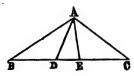
If the line आह be greater than the line आआ, the angle आ आह shall be greater than the angle आह आ." Then the angle आ आह shall be greater than the sum of the angles आह आ and आह आ. But these are equal to two right angles. Therefore the angle आ आ is greater than two right angles. This is absurd.**

In this alternative proof, which is reductio ad absurdum, it is assumed that one angle of a triangle can not be equal to two right angles. This follows from the 17th Prop. in which it is proved that any two angles of a triangle are together less than two right angles.

Bil. makes the following note on this proposition:-

'Epicurus and such as followed him derided this proposition, not counting it worthy to be added in the number of propositions of Geometry for the easiness there-of, for that it is manifest even to the sense. But not all things manifest to sense are straightway as manifest to reason and understanding. It

If possible, let A B and A C be together less than B C. Make B D equal to



A B and E C equal to A C (I. 3). Then the angles B A D and B D A are equal and so also are the angles E A C and E C A (I. 5). But the angle B D A is greater than the angle E A C (I. 16), and similarly the angle C E A is great-

er than the angle B A E and therefore also greater than B A D (I. 16). Therefore the angles B D A and C E A are together greater than the angles B A D and C A E. But they have been proved equal to them. This is absurd.

^{* (}I. 5). † (I. 13). \$ This case can be proved in another way also. The exterior angle অব্যা is greater than the interior and opposite angle অব্ব (I. 16). Similarly the angle ব্ৰা is greater than the angle অব্ব (I. 16). Therefore the angles অব্যা and অব্যা are together greater than the angles অব্যা and অব্যা are together greater than the angles অব্যা and অব্যা But they are equal to them (I. 5). This is absurd. "(I. 18).

§ (I. 18). ** The second case may also be proved as under:—

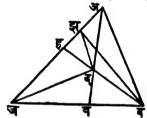
pertaineth to one who is a teacher of sciences by proof and demonstration to render a certain and undoubted reason, why it so appeareth to the sense and in that only consisteth science.'

Tod. has a similar note from Proclus. Vide Tod.'s 'Elements of Euclid.' p. 259.

Prop. 21 p. 27.

Alternative proof.

If the sum of q and q as be not less than the sum of q as

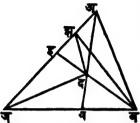


and so so, it must either be equal to it or greater than it. Now either of the two lines so so and so so is not less than either of the two lines so and so so. If it is, let it be assumed that so so less than so so. Cut off so so equal to the

difference between we and was. †Then the point we shall not coincide with the point we. For if it does, then the sum of we we and we shall be equal to we. Therefore the sum of we we and we shall be less than the line we. This is absurd, because the sum of the two sides of a triangle is greater than the third. Again the point we shall not fall within the line we we. For if it falls, then the sum of we and we shall be much smaller than we, which is absurd. Therefore the point we shall be in the line we. Join we and we we.

Now the line wa, which is equal to the sum of the lines wa and way, is greater than way. Therefore the angle way a

is greater than the angle a q w.* When a w is equal to the sum of w a and w w, then w w shall be equal to or greater than



ज झ. † Therefore the angle ज झ द shall be equal to or greater than the angle ज द झ. If ज द be equal to ज झ, then the angle ज द झ. If ज द be greater than ज झ, then the angle ज द झ. And greater than the angle ज द झ. And

then the angle way shall be greater than the sum of the angles way and way 3. This is absurd. Because the sum of the angles way and way is greater than two right angles, and the angle way a also shall be greater than the sum of two right angles. This is absurd, because one angle of a triangle is much less than the sum of two right angles.

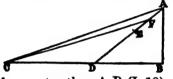
Now, the line अन् should be produced to the point स. Then the angle सन्द is greater than the angle सन्द ्रि and the angle सन्द न is greater than the angle ज सन्द ्रि Therefore the angle सन्द न is proved to be greater than the angle सन्द न . This is just what we wished.

Page 29 1. 2 अयं समकोणह्यादिको जातः-

If should rather have been put as अयं समकोणद्वयेव तुस्यस्तस्माद्-धिको वा जातः

^{* (}I. 18). † Because वद्+जद is equal to or less than अव+अज (by assumption). ¶ (I. 5 and I. 18). \$ Because the angle वस्र has been shewn to be greater than the angle वस्र. § (I. 16).

Note that if straight lines are drawn from both the extremities of a side of a triangle to a point within the triangle, then alone are they less than the other two sides of a triangle and contain a greater angle. If, however, one straight line is drawn from one extremity of a side of a triangle and the other from any point in the same side, to a point within the triangle, these two are not necessarily less than the other two sides of the triangle. They may sometimes be greater than the other two sides of the triangle and may sometimes contain a smaller angle.



Let A B C be a right-angled triangle. Take any point D in B C and join A D.

In the triangle ABD, AD Cut off DE equal to AB (I. 3).

is greater than A B (I. 19). Cut off D E equal to A B (I. 3). Bisect A E in F (I. 10) and join F C.

In the triangle A F C, A F and F C are together greater than A C (I. 20). But A F is equal to F E (Con.), therefore F C and F E are together greater than A C. To each of these unequals add E D or A B which is equal to E D. Then F C, F E, and E D are together greater than A C and A B. Q. E. D. Secondly, let A B C be an isosceles triangle of which the



base B C is greater than either of the two equal sides A B and A C. Make B D equal to A B (I. 3). Join A D. In A D, take

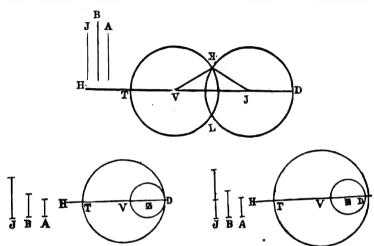
any point E. Join E C. Then the angle C E D shall be less than the angle B A C.

A B is equal to B D (Con.). Therefore the angle B A D is equal to the angle A D B (I. 5). But the angle A D B is greater than the angle C E D (I. 16). Therefore the angle B A D is also greater than the angle C E D. Much more therefore is the angle B A C greater than the angle C E D. Q. E. D.

Prop. 22 p. 29.

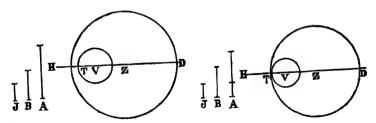
After having proved the Pro. the author observes as follows:-

If we are asked why the three given lines are so taken that any two of them are together greater than the third, we have to remark that it has already been demonstrated that the sum of any two sides of a triangle is greater than the third side. It is therefore that the two circles cut each other. If the sum of A and B be not greater than J, then the line V T shall be either equal to or greater than V D. Then the circle K T L shall make the circle K D L fall within itself. It will touch

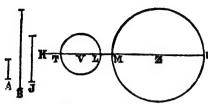


the circle K D L in the point D, when V T is equal to V D. It will go beyond D when V T is greater than V D. It will not meet the other circle again.

If the sum of the lines B and J is not greater than A, then the circle K D L shall make the circle K T L fall within it. Why? If D Z be equal to Z T, then the circle D K L shall touch the other circle in the point T. If D Z be greater than Z T, then the circle D K L shall pass beyond the point T. Then too the two circles shall not meet.



Again if the sum of the lines A and J be not greater than the line B, then the line Z V shall be equal to or greater



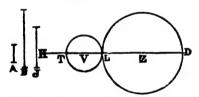
than the sum of the lines VT and ZD. Then too the circles shall not meet. Thus then one circle shall not make another fall within it, but

the two circles shall stand separate if V Z is greater than the sum of V T and Z D.

On this proposition Bill. observes as follows:—

'In this proposition the adversary per adventure will cavil that the circles shall not cut, the one the other (which thing Euclid putteth them to do).' He then proves that the circles must cut one another as follows:—

If the circles do not cut one another, they will either touch



one another or shall be distant, the one from the other. If possible let them touch one another. Then because T V is equal to V L and L Z to Z D, they being the radii

of the circles, therefore T V and Z D are together equal to V Z, that is, A and J are together equal to B, which they are not (Hyp.). Therefore the circles cannot touch one another.

Nor can they be distant from one another. If possible, let them be distant from one another. Then because T V is equal to V L and M Z is equal to Z D, they being the radii of the circles, therefore T V and Z D are together equal to V L and M Z. But V L and M Z are together less than V Z. Therefore T V and Z D are together less than V Z, which they are not (Hyp.). Therefore the circles shall not be distant from one another. They must therefore cut one another. Q. E. D.

Prop. 24 p. 31.

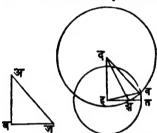
In this proposition there are three cases; for the line gramay fall either above gram or on it or under it. The first case is proved first and the second and third cases are given as an alternative proof; because Euclid gave only one case, viz., that in which grafalls above the line gram.

The third case may be proved without joining a st and producing a and a st to st and a. For a st and st st are together less than a a and a st (I. 21). But a st is equal to a a confidence a st is greater than st st. But st is equal to a st. Therefore a st is greater than st st. Q. E. D.

Prop. 25 p. 33.

Alternative proof.

With the center q, at the radius q q, describe the circle q q.



Produce g at to a. Make g a equal to a a.* Again with the center g and radius g a, describe the circle a a. The circles intersect one another in the point a. Draw the lines a a and g a. Then the three sides of the

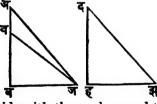
triangle ह द व are equal to the three sides of the triangle व अ आ.
The angle ह द व is equal to the angle व अ आ.† But the angle इ द व is greater than the angle ह द झ. Therefore the angle व अ आ is greater than the angle ह द झ. Q. E. D.

This is a direct proof and is similar to that of Mechanicus, mentioned by Bil., though it is less complicated than that of Mechanicus.

Prop. 26 p. 35.

Alternative proof.

If of a is placed on a s, then the side of a shall fall on the



side π and the side π as shall fall on the side π as. Because the angle π is assumed to be equal to the angle π and the angle π to the side π and the side π as shall cointain the side π as shall cointain the side π as shall cointain the side π and π and

cide with the angle w and the triangle with the triangle.

Again if the side was is assumed to be equal to the side was and the angle was be placed on the angle wand the line was on the line was, then the point was shall coincide with the point was.

^{* (}I. 3). + (I. 4).

Then the angle \mathbf{z} shall fall on the angle \mathbf{z} . If it does not fall on it, it shall fall on some other point, as on the point \mathbf{z} . Then the angle \mathbf{z} shall be equal to the angle \mathbf{z} and \mathbf{z} . This is absurd. Therefore the angle \mathbf{z} shall fall on the angle \mathbf{z} and the angle \mathbf{z} on the angle \mathbf{z} . Then the two triangles are equal. This is just what we wished.

Prop. 29 p. 37.

The proof of this proposition depends upon eight propositions. The first of these is as follows:—

Of all the straight lines that can be drawn from a given point on a given straight line, the perpendicular is the shortest.



Let w be the given point and w at the given straight line. From the point w, draw the perpendicular w w. Then this line shall be the shortest of all the lines.

Proof.

Draw the line of m from the point of. Then want is a triangle formed. The angle of m is a right angle. Then the angle of m is an acute angle. Therefore the side of m is less than the side of m.† This is just what we wished. Prop. II.

If two perpendiculars on a line be equal and if a straight line should be drawn on the top of these two perpendiculars, then the angles formed at the point where the perpendiculars meet the line at the top shall be equal.

Let equal perpendiculars we and we to be drawn on we. Let we we be drawn, joining their tops. There two angles are formed. These angles, we we and we we, shall be equal.

Proof.

Join wa and wa. They meet in g. Then in the triangle was, the sides wa and a and the angle was are equal to the sides wa and a wand the angle was in the triangle was. Therefore the sides was and was are equal, and the angles was and was are equal and the angles was and

^{* (}I. 17). † (1. 19).

[§] The enunciation may be better worded as follows:-

The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes equal angles with the perpendiculars.

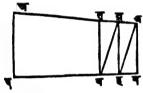
Thus in the triangle gag, the angles are equal. Then the sides are and gag are equal. Therefore the sides are are equal. Thus in the

triangle was at the sides was and sa are equal, therefore the angles sa and sa are equal. But the angles sa and sa are already been proved to be equal.

Therefore the angles a w w and a w w are proved equal. This is just what we wished.

Prop. III.

If two perpendiculars on a line be equal and if a straight line be drawn, joining their tops (free extremities), then the angles formed by this line with the perpendiculars shall be right angles.

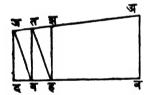


On the line q are drawn the perpendiculars m and m q and m m is also joined. Then the angles m m and q m m are equal§ and shall be right angles.

Why?

If these two angles are not right angles, then they shall be both obtuse angles or acute angles. If they are both obtuse angles, then from the point w, draw the straight line we at right angles to we w. I This straight line shall fall between we and we. Then the angle we a shall be the exterior angle of the triangle we we. This angle is greater than the angle we we was a right angle. Therefore the angle we we are is a right angle. Therefore the angle we was at right angles to we. Again from the point w, draw we want right lines we want and we want to be an obtuse angle, being greater than the interior and opposite angle we want. Again from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want from the point w, draw want right angles to we want right angles to

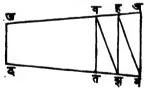
^{* (}I. 4). † (I. 6). ¶ (3. ax.). ‡ (I. 5). \$ (2. ax.). § (Prop. 11). (I. 11). ** (1. 16). " (1. 11). * (I. 16).

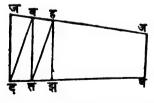


Again if the angle द ज का is also an obtuse angle, the distance of the line क ज from the line a द may be similarly shewn to be greater in the direction of st. But it has already been proved direction of st. This is

that the distance in the direction of equipment becomes less. This is absurd, being inconsistent.

If the angles at and at are acute angles, then also perpendi-





culars should be drawn as in the preceding case. The first perpendicular should be drawn from the point of on some These perpendiculars shall be between the lines some and some. These some and some than the preceding one. The line some shall be nearer the line of some and further from it in the direction of some

Digitized by Google

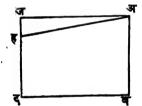
^{* (}I. 11). † (I. 17). ‡ (I. 19). § (I. 17). ¶ (I. 19). † In this case they are drawn to the opposite side.

Again perpendiculars should be drawn from the point \mathbf{z} . Thus in the way described above the line \mathbf{z} \mathbf{z} shall be nearer to the line \mathbf{z} \mathbf{z} in the direction of \mathbf{z} and further from it in the direction of \mathbf{z} . Thus one and the same line becomes further from and also nearer to another line in the same direction. This is absurd, being inconsistent. Therefore it is proved that the angles \mathbf{z} and \mathbf{z} are right angles. This is just what we wished.

Prop. IV.

The opposite sides of a right-angled quadrilateral figure are equal.

In the right-angled quadrilateral figure of a a and a a shall be equal. If they are not equal, one of



them must be greater than the other. Let we be the greater side. From it cut off grequal to we. Join we garden the angles was and we we shall be right angles. Because the perpendiculars we and greater equal. But the angles we want of we were are

assumed to be right angles. Therefore the angles य अ ज and य अ ह are equal. But the angle य अ ह is a part of the angle य अ ज. This is absurd. Similarly the exterior angle अ ह द of the triangle अ ज ह is equal to the interior angle अ ज द. This is also absurd. Therefore the sides अ य and ज द are equal. This is just what we wished.

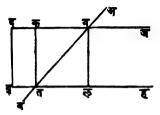
Prop. V.

If two perpendiculars be drawn to a line and a straight line be drawn across the perpendiculars, of the four angles made by the line with each perpendicular, an angle made in one direction (of the line) by one perpendicular shall be equal to the angle made in the other direction (of the line) by the other perpendicular, the exterior angle made by one perpendicular shall be equal to the interior angle (interior and opposite angle on the same side of the line) and the interior angles (on the

^{* (}I. 3). † (Prop. 1II.). ‡ i. c. the alterate angles shall be equal.

same side of the meeting line) made by the two perpendiculars shall be together equal to two right angles.

To the line at a are drawn the perpendiculars a st and st a



and the line we falls on them. Then the (alternate) angles द्वद्व and इत्व at the points द and त shall be equal, the exterior angle अवज shall be equal to the interior angle अवज्ञ (on the same side of the line are) and the sum of the

(interior) angles g a and maa (on the same side of the line may) shall be equal to two right angles.

Proof.

If the lines त झ and च द be equal, then the four angles formed by them (with झ द and च त) shall be right angles.*
Then what we wished to prove is evident.

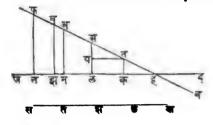
If the line π so be not equal to π π , but if π π be the greater of the two, then from π π , cut off π so equal to π π . Join π π . Cut off π so equal to π π . Join π π . Then π π π is a right-angled quadrilateral figure. † In the triangle π π π , the sides π π and the angle π and the angle π are equal to the sides π π π and the angle π in the triangle π π π . Therefore the angles π π π and π π π are equal. $\|$ Again the angles π π π and π π π are together equal to two right angles. Therefore the angles π π π are together equal to two right angles. This is just what was wished.

Cor. The line which is perpendicular to one of the two perpendiculars is also perpendicular to the other.

Prop. VL

If the four angles formed by the intersection of two lines be not right angles, then a perpendicular on one of the lines shall meet the other line in the direction of the acute angle.

The two lines of a and of a meet in g. The angle of g is



an acute angle. The angle of a sis an obtuse angle. Let the perpendicular sistematical and the direction of si.*

Proof.

In the line आह, take any point त. Draw the perpendicular त क on आह. †

Let it be considered whether this perpendicular shall fall between the points of and on the point of, or beyond the point of.

If it falls between m and m, take another line and divide it into parts equal to g . so that these parts may be more than those into which gran can be divided. Let them be state an शक, and छ स. In the line अ ह make तस, स अ and अ फ equal to g 7.8 From the points 47, 47, and 45 draw the perpendiculars सक, अस, and कुन on the line जह. From the point a. draw the perpendicular a w on the perpendicular स छ.।। Then in the triangle ह त इ, the angle ह त इ is equal to the angle a स य,\$ the angle & a is equal to the angle त य स, ** and the side ह त is equal to the side त स.++ Therefore ह क is equal to त य.# But त य is equal to छ क. §§ Therefore क क and was are equal. Similarly and mare equal. Thus all the divisions of g are mutually equal and are also equal to the parts of east. Therefore the lines and a star equal. But way is greater than g m. II Therefore g a is greater than gran. Therefore the perpendicular was a is beyond the points of and or; and the perpendicular of or is within the triangle on a g. Therefore the perpendicular a g, being pro-

^{*} সম্প্ৰ being an acute angle, and not in the direction of ব, সম্ব being obtuse. † (I. 12). ‡ Equal to মৃদ্ধ. § (I. 3). ¶ (I. 12).

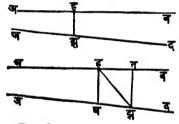
¶ (I. 12). \$ In the triangle ব ব ব (Prop. V.). ** They being right angles. †† (Con.). ‡‡ (I. 26). §§ (Prop. IV.). ¶¶ Because বাব is divided into a greater number of parts than হয়.

duced, meets the line w, w, that is, it meets the line w w. This is just what we wished.

Again if the perpendicular $\pi = \pi$ falls on the point π then $\pi = \pi$ and $\pi = \pi$ shall coincide. Then there shall of course be a meeting (of the perpendicular with $\pi = \pi$ in the direction of π). If the perpendicular $\pi = \pi$ is beyond the points $\pi = \pi$ and $\pi = \pi$, then the perpendicular $\pi = \pi$ shall be within the triangle $\pi = \pi$ and shall necessarily meet (the line $\pi = \pi$ in the direction of π). This is just what we wished.

Prop. VII.

If a straight line falls upon two other straight lines and if the interior angles on one side are less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only.



Let the line g st fall upon the two lines wa and wa, and let the interior angles wa st and wa st on the same side (of the line st st) be less than two right angles, then the line wa shall meet wa in the direction of wa and wa.

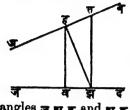
Proof.

Of the two angles mentioned above, one is either a right angle or an obtuse angle or an acute angle. If one is a right angle, the other shall be an acute angle. Then the two lines shall necessarily meet in the direction of the angles. If one angle is an obtuse angle, let ar gr be assumed as that angle. From the point g draw the perpendicular g q on w q and from the point st, draw the perpendicular st at on st at. Now a st falls upon the two perpendiculars and and a a. Then the angles a s and a s s are equal. But the angles a s s and same are less than two right angles, and the angle arga is a right angle. Therefore the angles arg and g m a are together less than one right angle. Therefore the angles g m and g m a are together less than one right angle. But the angle of a m is a right angle. Therefore the lines wa and was shall meet in the direction of wand wa.

^{* (}I. 12.). † (Prop. V.). ‡ (Hyp.). § (Cons.).



If both the angles be acute, then draw from the point g the



perpendicular grand the line argand from m draw the perpendicular mm on the line w z.* Now the angles w m z and make are together equal to the angle of stat, and because the angle war is a right angle! therefore the angles of H g and H g a are together equal to a right angle.

Take away these angles from the angles we mand we we Then the remaining angle of a is an acute angle. जवह is a right angle. Then the lines अ द and जह shall meet in the direction of ar and ar.

Alternative Proof.

If both the angles we say and we say be acute, then from the



point g draw the perpendicular g s on the line g sr. § Then the angle as mis a right angle, and the angle g sig is an acute angle.

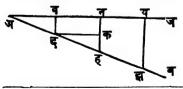
Then the lines & and wa shall meet in the direction of a. Therefore the lines w and w s shall also meet in the direction of sa.

An alternative proof of Prop. VII. is based upon eight propositions. Of these five are those given above.

Prop. VI.

If one of the arms of an acute angle be divided into as many equal parts as we wish and if from the points making those parts perpendiculars be drawn on the second arm of the angle, then these perpendiculars shall divide the second arm into equal parts.

Let a war be an acute angle.



Let one of its arms are be divided into equal parts ar &. द ह, and ह झ. From the points द, इ, and झ let the perpendiculars द्व, इत, and झय be Then these

[†] Because the angle ₹ ₹ 4 is equal to the angle ₹ ₹ ₹ * (I. 12). (Prop. V.). 1 (Cons.). § (I. 12).

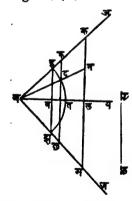
perpendiculars shall divide the arm आ ज into the equal parts, अ व, व त, and त य.

Proof.

Prop. VII.

If a point be taken within the two arms of an angle, it is possible to draw a line passing through that point, equally meeting the two arms.

Let द be a point within the two arms अव and व ज of the angle अवज. With the center व and the radius व द describe



the arc g q s. Join the line g s. Bisect the angle g a sub by the line a s. Both the parts shall be acute angles \$\frac{1}{2}\$ In the triangles g a and s a s, the sides g a and s a shall be acute angle g a are equal to the sides s a and a a and the angle s a s and a s are equal. Therefore the angles a s g and a s are equal.** Therefore they are right angles. Produce the line a s to the point s. Let this line meet the arc g s in the point s. Take a line representing the multiple of a s, such

that it may be greater than the line ब व त. Let that line be अ स drawn elsewhere. Divide the line ब अ into parts equal to

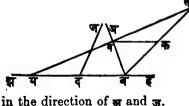
^{* (}I. 23). † (Con.). ‡ (Prop. V.). § (I. 26). ¶ (Prop. IV.). § (I. 10). \$ Because the whole is an acute angle. ** (I. 4).

we or its multiples. Let them be we and we. From the points g and s draw the perpendiculars g g and s s on the line a w. These perpendiculars shall divide the line w w into equal parts a and a s.* These parts are equal to the parts of a st. † Therefore the two parts together shall be greater than a n. Therefore the perpendicular a s shall fall beyond the line and. Cut off from the side a sa a requal to a sat and draw the line so m. Then in the triangles a so and a m so the sides a and a m and the angle a m are equal to the sides सद and इन्ह and the angle सदह. Therefore the angles इन्हs and s s s are equal. But the angle s s s is a right angle. Therefore also the angle a sa right angle. Therefore the line war is one straight line. T Produce the line war to m. At the point win the line a w, make the angle a w equal to the angle z = s. Then the lines we z and z z are parallel.\$ Produce the line & s so that it may go beyond the triangle a s q. Let it meet the side a s in or and a H in s. Thus the line was passing through the point a meets the arms ar and a or (equally, i. a making the angles a or and ब स द equal, they having respectively equal to the equal angles बहु and बम्ह). This is precisely what we wished.

Prop. VIII.

If a straight line falls upon two other straight lines and makes the two interior angles on the same side of it together less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only (in which are the angles which are together less than two right angles).

Let a a fall upon the two straight lines as and a a so that



स्वात आहे । (on the same side of the line बद) are together less than two right angles. Then the two lines (अ ब and जद) shall meet

in the direction of a and a.

Proof.

Produce the line wa on both the sides to the points wand wa. From wa, cut off a wa equal to wa. Now the angles wa wa and wa wa are together less than two right angles.† But the angles wa wa and wa wa are together equal to two right angles.‡ Therefore the angle wa wa is greater than the angle wa wa. At the point win the line way make the angle wa wa equal to the angle wa way. Wa wand was are the arms of the angle was). Through the point was (within the arms of the angle was), draw the line way meeting the two arms (was and was). Now the angle way was greater than the angle was. At the point wanke the angle was, equal to the angle was. Then the line was so that it may meet the line was in w. Then the lines way and way shall meet one another. Proof.

Place the line q = 0 on the line q = 0. Then the line q = 0 shall fall on the line q = 0 (or rather q = 0), and the line q = 0 shall fall on the line q = 0. Therefore the lines q = 0 and q = 0 shall meet.

Thus end the eight propositions.

The above propositions, some of which are very intricate, are necessitated by the particular form in which the twelfth axiom is given in the text. (Vide p. 3 of the Notes).

It will be seen that though it is stated in the text (p. 37 अस्पोपपित्रका: क्षेत्रज्ञायते) that the proof of the 29th Prop. depends upon eight propositions, only seven are given. The next eight Propositions, of which five are common, make up the alternative proof of the seventh. These seven propositions of both classes, go to prove the twelfth axiom as given by Euclid, on which rests the proof of the 29th Prop. Thus were arisen from the fact that there are eight propositions which make up the alternative proof of the seventh.

Digitized by Google

^{* (}I. 3). † (Hyp.). ‡ (I. 13). § (I. 23). ¶ (I. 16), तंव व being the exterior angle of the triangle यवष. ∥ (I. 23).

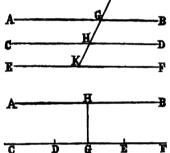
P. 48 Prop. 29.

L. 22. After अन्तर्गतकोणेन, understand एकदिकेन i. c. on the same side of the line.

P. 49 Prop. 30.

Bil. observes that the Prop. may be proved even by a principle only. For if the two straight lines concur on any one side, they should concur also with the middle line, and should not be parallel to it, which they are supposed to be.

The two parallel lines which are compared to one are in the



text placed in the extremes and the parallel to which they are compared is placed in the middle. But the Prop. can also be proved w by changing the position of the lines. Let A B and C D be both parallel to E F. Let G H K fall upon them. Now because either of the angles K H D and H G B T is equal to the angle HKE (I. 29.) for they are alternate angles, therefore they are (I. Ax.) Therefore A B is parallel

P. 50 Prop. 31.

equal to one another. to C D. (I. 28.) Q. E. D.

विकीविता is simply equivalent to इष्टा.

P. 50 Prop. 32.

सन्मुख=Opposite, not adjacent.

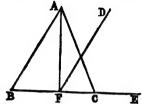
Alternative proof.

From the point w, draw wy, parallel to wat.* Then the angle sy a is equal to the angle at झ And the angle झाअ जा is equal to the angle अज इ.‡ Therefore the angle आ ज द is equal to the angles ar and इ. This was just what we wished.



^{* (}I, 31).

Bil. mentions another alternative proof as follows:— Let A B C be a triangle. Produce B C to E. In B C, take

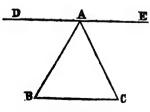


any point F. From F draw F D, parallel to A B (I. 31). Join A F. Now because F D is parallel to A B and A F meets them, therefore the alternate angles B A F and A F D are equal (I. 29). Again because D F is parallel to A B and B C

meets them, therefore the exterior angle DFC is equal to the interior and opposite angle ABF (I. 29). Therefore the whole angle A F C is equal to the angles F A B and A B-F. Similarly if from the point F a straight line be drawn parallel to CA, it may be proved that the angle AFB is equal to the angles FAC and ACF. Therefore the angles AFB and A F C are equal to the three angles of the triangle (A B C). But the angles AFB and AFC are together equal to two right angles (I. 13), therefore the three interior angles of the triangle A B C are together equal to two right angles. But the angles ACF and ACE are also together equal to two right angles (I. 13), therefore the angles A C F and A C E are equal to the three interior angles of the triangle A B C. Take away the common angle ACB. Then the remaining angle A C E is equal to the angles A B C and C A B. Q. E. D.

Endemus affirms that the latter portion of this theorem, viz., the three interior angles of a triangle are together equal to two right angles, was first found out by Pithagoras, who demonstrated it as follows:—

Let A B C be a triangle. Through the point A, draw D E,



parallel to BC. (I.31). Now because DE is parallel to BC, and AB and AC fall upon them, therefore the alternate angles are equal (I. 29). Therefore the angle DAB is equal to the angle ABC and the angle EAC is equal to the angle

A C B. To each of these equals, add the angle B A C. Then the angles D A B, B A C, and C A E, i. e. the angles D A B

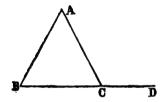
Digitized by Google

and B A E, are equal to the three interior angles of the triangle A B C. But the angles D A B and B A E are together equal to two right angles (I. 13). Therefore the three interior angles of the triangle A B C are together equal to two right angles. Q. E. D.

The converse of this Prop. can also be proved. It will be as follows:—

If the exterior angle of a triangle be equal to the two interior opposite angles, one of the sides of the triangle is produced and the line without the triangle is in the same straight line with the side of the triangle. And if the three interior angles of a rectilineal figure be equal to two right angles, the rectilineal figure is a triangle.

Let A B C be a triangle, and let the exterior angle A C D

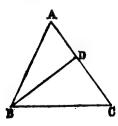


be equal to the two interior opposite angles, ABC and BAC. Then BC is produced to D and CD is in the same straight line with BC or BCD is one right line.

For since the angle ACD is equal to the two angles ABC and

BAC, add to each of these equals the angle ACB. Then the angles ACD and ACB are together equal to the three interior angles of the triangle ABC. But the three interior angles of the triangle ABC are together equal to two right angles (Hyp.), therefore the angles ACD and ACB are together equal to two right angles. Therefore CD is in the same straight line with BC(I.14).

Again suppose A B C to be a rectilineal figure, having only



three angles, at the points A, B, and C and these together equal to two right angles. Then A B C is a triangle. First A C is one right line. For in it, take any point D and join B D. Now in the triangles A B D and B C D, the three interior angles are together equal to two right angles (I. 32) and the angles at

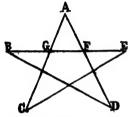
A, B and C are together equal to two right angles (Hyp.)

therefore the remaining angles, viz., A D B and C D B are together equal to two right angles. Therefore A D C is one right line (I. 14). Similarly A B may be proved to be one right line and so may B C be proved to be one right line. Therefore the figure A B C is a triangle. Q. E. D.

From this Prop. it is evident that every pentagon which is so described that each side of it intersects two of the other sides, has its five angles equal to two right angles.

Let A B C D E be such a pentagon as is required. Then all

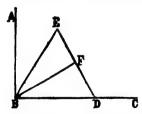
its five angles shall be together equal to two right angles.



Now the exterior angle A F G is equal to the two interior opposite angles at B and D in the triangle B F D (L 32). Similarly the exterior angle F G A is equal to the two in-

terior opposite angles at C and E in the triangle C G E (I. 32). But the two angles A F G and F G A together with the angle G A F are the three interior angles of the triangle A G F and are therefore equal to two right angles (I. 32). Therefore the four angles at the point B C D E together with the angle at the point A are together equal to two right angles. Q. E. D.

By the aid of this Prop. a right angle can be trisected.



Let A B C be a right angle. It is required to trisect it.

In B C, take any point D. Upon B-D, describe the equilateral triangle B-D E (I.1). Bisect the angle E B D by the line B F (I.9). Then the right angle A B C is divided into three

equal parts by the lines B E and B F.

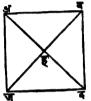
The triangle E B D is equilateral and therefore equiangular. The angle E B D is therefore two thirds of a right angle (I. 32). Therefore the remaining angle A B C is one third of a right

angle. But the angle E B D is bisected. Therefore the two angles EBF and FBD are, each, one third of a right angle. Q. E. F.

Prop 33 p. 51.

Alternative proof.

Join wa and was cutting each other in m. Then in the

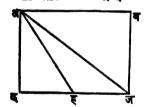


द triangles अहद and जहद the angle अहद is equal to the angle of and the angle of a is equal to the angle z z z, t and the side z z is equal to sa z. Then the side war is equal to दह and चहु to जहूं. Again in the triangles अह ज and बहु द, the sides अह and ई ज and

the angle was a are respectively equal to the sides was and ag and the angle ag g. Therefore the sides ag and बह are equal and the angles अजह and इवह are equals. Therefore the side was is parallel to the side was. This was exactly what we wished.

Prop. 34 p. 52.

Alternative proof.



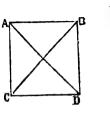
If the side we be not equal to we, let it be equal to जह. Draw the line we. This line shall be parallel to a sa. But the line च ज is parallel to च इ. Therefore the lines was and was are parallel. is absurd. Similarly the line wa shall be equal to the line a sa.

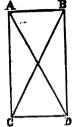
If the angle इ अ द be not equal to the angle इ ज द, let the angle a we be equal to the angle a we. Join was. the angles of of and of the argle of of the angle of of the is equal to the angle आ ज व **. But the angle ज अ इ is equal to the angle was. This too is absurd. Similarly the angle क is equal to the angle इ. The triangle अ इ ज is equal to the triangle was. This was exactly what we wished.

^{* (}I. 15). † (I. 29). ‡ (I. 26). § (I. 4). ¶ (I. 27). ** (I. 29), || (I. 28). \$ (I. 29).

This alternative proof is the indirect proof of the Prop.

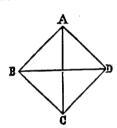
A parallelogram is either a square or an oblong or a rhmobus

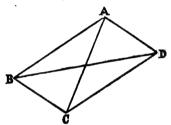




or a rhomboid. In a square and in an oblong, the diameters are equal. In the square and in the oblong ABDC, the diameters BC and AD may be shewn to be equal by applying Prop. 4 to the triangles ABC and ACD.

But in a rhombus and in a rhomboid, the diameters are not





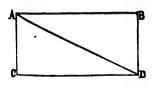
equal. In the rhombus and the rhomboid A B C D, the diameters A C and B D may be proved to be unequal by applying Prop. 24 to the triangles A B C and B C D.

Similarly it may be shewn that in a square and in a rhombus the diameters not only divide the figures into two equal parts, but they also bisect the angles. But in an oblong and a rhomboid, the diameters do not bisect the angles.

Bil. shews that the converse of this Prop. after Proclus is as follows:—

If a rectilineal figure whatever have its opposite sides and angles equal, then it is a parallelogram.

Let A B D C be a rectilineal figure, having its opposite sides



and angles equal. Then it shall be a parallelogram. Join AD. In the triangles ABD and ACD, the angles BAD and BDA may be proved to be respectively equal to the angles ADC and CAD(I.8).

Therefore A B is parallel to C D and A C to B D (L 27).

Prop. 35 p. 53-54.

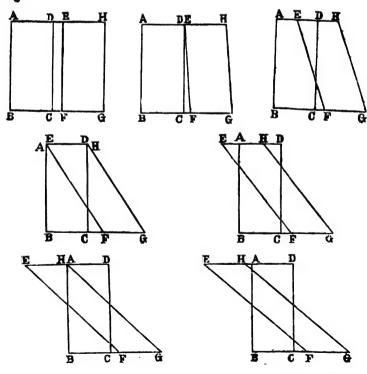
In the first case in which the point g falls outside as g, and as g and as g cut one another in g, from the two equal triangles as g and as g, first take away the triangle as g and then add the triangle as g, and the result will be the two parallelograms as g as g and g as g which are equal to one another.

In the second case the points g and g coincide. Here the parallelograms will be obtained simply by adding the triangle g g g to the equal triangles as g g and g g g.

In the third case in which the point g falls between w a and w a, the parallelograms will be obtained by adding the four-sided figure gaza to the equal triangles was and was.

Prop. 36 p. 54-55.

For this Prop. many figures are possible, such as the following:—



Digitized by Google

Prop. 38 p. 55-56.

With the help of this Prop. a triangle may be divided into two equal parts.

Let A B C be a triangle. It is required to divide it into

H A R

two equal parts. Bisect B C in D (I. 10) and join A D. Through A draw H A K parallel to B C (I. 33). Then the triangles A B D and A D C are equal (I. 38). Similarly by bisecting A B and A C in E and F and joining E C and F B, and drawing parallels through C and B to A B and A C the triangles E B C and A E C and the triangles A B F and B F C may

be proved to be equal.

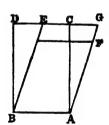
Prop. 39 p. 56.

This Prop. and the next one are the converse of Prop. 37 and 38 respectively.

In this Prop. what is stated with regard to triangles is applicable to parallelograms also.

If upon the same base and on the same side of it, there be two equal perallelograms, then they shall be between the same parallels.

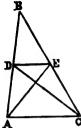
Upon the same base A B and on the same side of it, let



there be two equal parallelograms A B D C and A B E G. Then they shall be between the same parallels. If they are not between the same parallels, let one of them be set either within or without. Let the parallelogram B F which is equal to the parallelogram A B D C be set within the same parallel lines. Then B F shall be proved

equal to ABEG which is absurd (9 ax.). Therefore the parallelograms ABDC and ABEG shall be between the same parallels.

By the help of this Prop. it may be proved that if a right line divide two sides of a triangle into two equal parts, it shall be equidistant to the third side. Bil. mentions this as an addition of Campanus. Let A B C be a triangle and let the right line D E divide
the two sides A B and B C into two equal

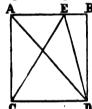


the two sides AB and BC into two equal parts in the points D and E. Then DE shall be parallel to AC. Join AE and DC. The triangles BDE and ADE are equal (I. 38) and so are the triangles BDE and CDE (I. 38). Therefore the triangles ADE and CDE are equal (I. Ax.). Therefore AC is parallel to DE (I. 39.). Q. E. D.

Prop. 41 p. 57.

This prop. has two cases; for the base being one, the triangle may have its vertex without the parallelogram or within. The first case is proved in the book. The figure for the second case is as under:—

The parallelogram A D is double of the triangle A CD (I. 34).

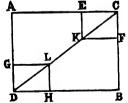


But the triangle A C D is equal to the triangle E C D (I. 37). Therefore the parallelogram A D is double of the triangle E C D. Q. E. D.

Prog. 43 p. 58-59.

This prop. has three cases only. The parallelograms about the diameter may either touch one another in a point or are severed from one another by a certain part of the diameter or cut one another. The first case is the one proved in the text. The second case is represented by the following figure:—

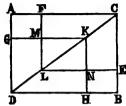
In this case the complements AGLKE and BFKLH



are not parallelograms. But they can be proved to be equal in the same way as in the case in the text.

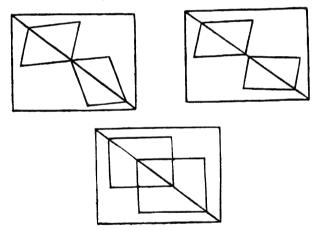
The following is the figure for the third case:-

In this case the parallelogram E F cuts the parallelogram G-



H. In this case the trapezium G M-L D may be proved to be equal to the trapezium L N H D and finally the complement A M to the complement E H.

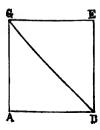
It may be noted that in each of the three cases the parallelograms about the diameter may not have one angle common with the whole parallelogram; still the demonstration in each of these cases will be the same. The following will be the figures for these cases:—

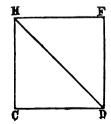


Prop. 46 p. 60.

Squares described on equal lines are equal.

Let A B and C D be equal. Then the squares E A and C F

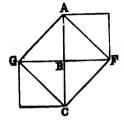




shall be equal to one another. The triangles ABG and CDH are equal (I. 4) and their doubles are equal. QED.

The converse of this is also true. If the squares be equal, the lines upon which they are described are also equal.

Let A F and C G be equal squares described upon the lines



AB and BC. Then the lines shall be equal. Put the lines AB and BC in such a way that they may form one straight line. Then FB and BG shall also be in one and the same straight line (I.14). Join AF, FC, CG, and GA.

The triangle A B F is equal to the triangle C B G (I. 34 and 7 Ax.). To each of these equals add the triangle B C F. Then the whole triangle A F C is equal to the whole triangle G F C, and they are upon the same base C F. Therefore C F is parallel to A G (I. 39). Again the alternate angles A F G and F G C are equal, each being half a right angle. Therefore A F is parallel to C G (I. 27). Therefore A F is equal to C G (I. 34). Now in the triangles A B F and C B G the angles B A F and A F B are equal to the alternate angles B C G and C G B respectively and the sides adjacent to these angles are equal, viz., G C and A F; therefore A B is equal to B C and G B to B F (I. 26). Q. E. D.

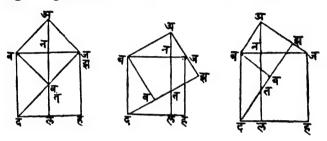
Prop. 47 p. 62.

Alternative proof.

In this case the triangle and the square on the hypotenuse are to be placed as in the above case; and the line was also is to be drawn as in the above case. But the square was on was is to be placed on the triangle. Now the side was may be either equal to or greater or less than was. Then in these cases will respectively coincide with we or fall outside was or in the line was. Join was. Now the angles was and was are right angles and therefore equal. Take away the common angle was from both. Then the remaining angle was is equal to the remaining angle was is equal to the remaining angle was is equal to was and was to was and the angle was is equal

^{*} In other words, the squares on we and we should be described on the same side as is the triangle we w. + Both being angles of squares.

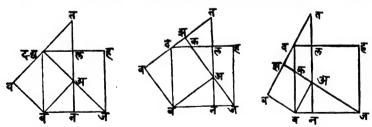




shall be one straight line. Or (i. e. in other cases) the point a shall not be on a or shall be another point (in other words, the two points shall not coincide with one another). If a we be greater than a s, the point a shall be on the line a w, or shall fall without the line a w (when a w is greater than a w). Thus in all the three figures the figures a w a a and a w a w shall be equal. Similarly the figures a w a a w a w a w a shall be equal. Then the figure a w a w a shall be equal to the figure a w a w a shall be equal to the grant a shall be equal to the quadrilateral figure a w.

Another alternative (p. 63).

In this case the square on the hypotenuse is to be placed on



the triangle (i. e. is to be described on the upper side of the

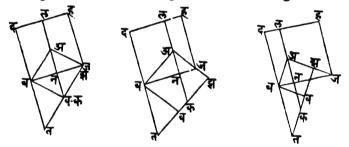
Digitized by Google

hypotenuse) and the square on the side wa is to be placed outside the triangle. Produce the line was. It will meet the point wife was sequal to was. Or it will meet the line was in wife was is greater than was. Or it will meet the line was in wife was is less than was.

Thus in all the three cases the perpendicular was is to be drawn on was, and from the point at the perpendicular at on the line was, and from the point at the perpendicular at on the line was, and the line was is to be so drawn that it will meet the line was in the point was. In the triangles at wand was the side was is equal to was, the angle was, therefore the sides was and was are equal, and the figure was, therefore the sides was and was are equal, and the figure was, which is the square on was and fall outside the triangle. Again produce the sides was and was so as to meet in the point was. Then the figure was was are equal to the square was. Therefore the square on was (was was) is equal to the figure was.

Another alternative (p. 64).

The square on a w is to be placed on the triangle. In this



case the point was shall coincide with w, if the two sides are equal, or fall outside the side w w if w w is greater than w w, or fall on w w if w w is less than w w. Now the angle w w w

^{**} One of the angular points of the square on WY.

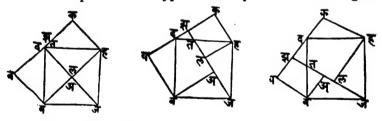
shall be equal to the angle of was,* Then produce the line of a so as to meet of a (or of war produced) in of. Then the point of shall coincide with of if of a is equal to of of fall on of of if of a is greater than of of, or fall outside of a if of of of of the or of the

Similarly the square on the side of of shall be equal to the figure of of. Again the square on of of should be placed on the triangle of of of outside the triangle of of outside the triangle of of outside the triangle of outside of outside the triangle of outside outsid

Another alternative (p. 65).

In the foregoing cases the proof was given by dividing the square on the hypotenuse into two parts by the line www. Now the proof shall be given without dividing the square on the hypotenuse into two parts.

Let the square on the hypotenuse be placed on the triangles.



^{*} From the right angles ব্ৰাজ and ৰ সাজ, take away the alternate angles ব্ৰাজ and ৰ সাল which are equal (I. 29), then the remaining angles আৰ স and ল সাজ shall be equal.

Digitized by Google

^{+ (} I. 26).

[‡] In the triangles अव ज and व व त, the angles अ and व are equal being right angles and the angles त व व and अव ज are equal, since each of them, plus व व ज is a right angle, and the side ज व is equal to व व, therefore व ज is equal to व त (I. 26). But व ज = द व .. द व = व त. But द व = व ज = अक .. व त = अक.

^{§ (} I. 86).

^{¶(}I. 35).

^{\$} And the square on # w outside the triangle.

Produce a se so that it may meet the square in the point a. If as a is equal to as as, the point a shall coincide with g. If as a and a g are unequal, the point a shall fall on a g or a g. From the point z, draw the perpendicular z z on the side z z. Produce this perpendicular on both the sides. Again on this perpendicular (produced) draw the two perpendiculars and g a from the points wand g*. From the point g, draw the perpendicular g s on the line s st. Then when the sides as and as a are equal, the perpendicular resishall meet the point wand res washall be one straight line. But if the two sides be unequal, the perpendicular ges shall fall on a point other than w (i. e. the points w and w shall not coincide). In the triangles was, ase, ase, and कजर, the sides व ज, व ह, द ह and ह ज are equal, the angles w, w, and w are equal, and the remaining angles are also equalt, therefore these four trangles are equal. fore the figure of a is a square. It is the square on or or. figure as a is also a square. It is the square on way. These two squares are equal to the square q g.

Proof.

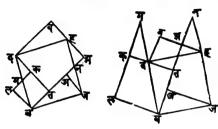
The sum of the triangles = = = and = = is equal to the sum of the triangles = = and = = and = is and if the rest of the figure be added to the first two triangles, then it would form the first two squares; and if it be added to the second two triangles then it would form the square on the hypotenuse.

^{* (} I. 12).

^{+(1.12).}

Another alternative (p. 66).

If the two sides of a and of of are unequal and the square on of



is not made to fall on the side was the square on was is not made to fall on was, then the side was should be so produced that it may meet was (or was produced) in the point w. From the

points g and g draw the perpendiculars g g and g g on the line ब अर्थ (or ब अ produced). Produce ह झ, and from the point ह draw the perpendicular z z on the line z z.* Make z z equal to at, and draw see parallel to at. This line (or this line produced) shall meet द व (or द व produced) in the point a. From the point a draw the perpendicular a so on the line so. Then the triangles was, as a, and a as shall be equals. The squares & and a st shall be the squares on at a and a st. Again the triangles as a mand as as are equal to one another and so are the triangles THE and THE. Then the sum of the triangles wan and and is equal to the sum of the square and the triangle ram. This (The square s-त + the triangle इ न जा) is equal to the triangle द न जा।. The triangle a z z is to be added to the first sum, a z a to the second sum, and the figure & a a to both the sums when a-इ is greater than आ आ, and one part (इत स putting स where इस meets इ ह) of the figure द न तह is to be added and the other (सन्ह) to be subtracted when आव is less than आवा.\$

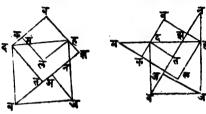
∴ कत+तव=जद(When जद ८ अज).

33

Then the two squares shall be equal to the square on the hypotenuse.

Another alternative (p. 67).

If the square on one side should fall into the square on the



other side, then make up the figures as in the above case. But must be made equal to must be made equal to must. Draw so and go parallel respectively to must and must. Produce

them so as to meet in the point w. Then the line www (or www produced) shall meet the line www (or www produced) in the point w.

Now the three triangles (आवा, वद्त, and वद्द) being equal, ह क and बाब being (consequently) equal, and the angles being equal, it is proved that the two triangles हक्ष and बाब व are equal to one another. Again द क and ह झ being equal, the triangles द क म and ह झ व are equal to one another. Then the sum of the triangles द बह and म कह is equal to the sum of the square ब क and ह ज झ. This sum (i. c. the latter sum) is equal to the triangle ब ब ब क. To the first sum (ब क + ह ज झ) add the triangle ब ब ब and to the second sum (ब ज ज) add the triangle ब ब ब and add the figure ह ब त व to both the sums if आ ब is greater than आ ज; but if आ ब is less than आ ज, then add one part (द त स, स being the point where द ह meets त झ) to both the sums and subtract the other part

^{*(}I.3). +(J.31).

Angles at ব and ছ are together equal to two right angles. From these take away ক ব ন and ক ছ ব which are each a right angle. Then < ল ব ক ল = < ল হ ল + < ল হ ল = < ল হ ল + < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল = < ল হ ল ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল = < ল হ ল

[§] Because the former sum is equal to the triangle ◀ ◀ 氣.

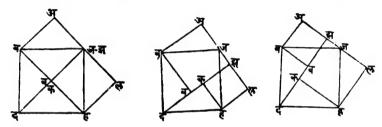
(স্বহু) from the same sums. Then the squares ষ্ণ and স্ব are equal to the square হ স্ক*.

Page 67 L. 18 पूर्वकोगे = पूर्वकियतोभययोगे = To both the sums mentioned before.

Another alternative (p. 68).

In this case the figures are to be so described that the square on the hypotenuse may not fall on the triangle and the square on one side may fall on the triangle.

As the square w w w on the side w w falls on the triangle.



Then the point whall coincide with the point when the two sides are equal. If the two sides are unequal, then the point whall either fall within the side was or without it. Join was. Then it can be proved as shewn before that was is one straight line. From the point was traight line. From the point was the perpendiculars was and wo on this line (was) and on wast (or was produced). Then was shall be one straight line when the two sides are equal. Then the two sides are unequal, the perpendicular was shall fall within was or was. Now the four triangles (was, was, was, and was, being equal, was and was being (consequently) equal, it is proved that the figure was is the square on the side was. Again the sum of the triangles was and was being equal to the sum of the triangles was and was being equal to the sum of the triangles

Digitized by Google

[°] व छ+इ न ज्ञेमंद व इ+इ द त न=व न ज्ञेमत द व+इ द त न.

[∴] व क+व त=व ज when अ व>अ ज.

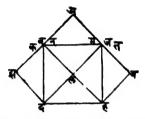
[∴] वे छ+व त=द् ज.

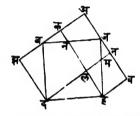
^{† (}I, 12).

proved that the squares on the two sides are equal to the square on the hypotenuse.

Another alternative (p. 68-9).

In this case it is desired that the square of none of the sides should fall on the triangle. Describe the triangle. Describe the square on the hypotenuse. Produce the two sides. From the points a and g, draw the perpendiculars a and g a on the two sides. Draw a and g a parallel to the two sides.





These two shall meet in the point wand shall meet the lines way and wa (or way and way produced) in the points wand wa. Then the points wand way produced) in the points wand wa. Then the points wand was and the points wand, was shall coincide with one another if the two sides (of the given triangle) are equal. If the two sides are unequal, each set of these three points shall form a triangle. Now the equality of the triangles way way way, way, and way is proved. Therefore the figures way and way are the squares on the two sides. Therefore the figures way and way are the squares on the two sides. Therefore that the triangles way and way are equal. Similarly the triangles way and way are equal. If the triangle way was

^{* (}I. 12). + (I. 31).

[📫] अ क=च व, अ क=क त=ह व=त व.:अ व—अ क=च व—त व.:व क=च त.

^{§ &}lt;अ ज द+ < न ज त= ⊥ angle.

< अंज च + < अ च ज = ⊥ angle.

^{∴ &}lt;म ज त= <अ व ज i. c. <क व न.

One angle in both is a right angle \therefore all the angles are equal.

^{¶ &}lt;वर्ष=<र्ष ह (I. 29). <वर्ष=श्च वर् (I. 29) < श्व वर्≕ <ह न अ as both make up a right angle with <न व क.

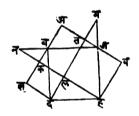
^{∴&}lt;देश ह=<ज ग ह.

Other angles and one side may be proved equal in both, so the triangle are equal (I. 26).

be subtracted from both the figures, then the remaining figure $q \approx q \approx 4$ shall be equal to the triangle $q \approx q \approx 4$. It shall also be equal to the triangle $q \approx q \approx 4$ (for the triangle $q \approx q \approx 4$). It shall also be equal to the sum of the figure $q \approx q \approx 4$. If the two equal triangles $q \approx q \approx 4$ and the triangle $q \approx q \approx 4$. If the two equal triangles $q \approx q \approx 4$ and the figure $q \approx q \approx 4$ and the triangle $q \approx q \approx 4$ be added to the two preceding figures, then the square on the hypotenuse shall be equal to the squares on the two sides.

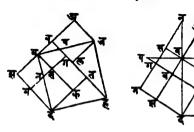
It may be noted that the latter part of the proof does not apply to the third figure in which as a is less than as as.

For the third figure the proof may be modified as under:-



Another alternative (p. 70.)

In this case if the square on one side falls on the other, then



if the two sides are equal, the case is clear. But if the sides be unequal, produce the side wa. On wa (or wa produced) draw the perpendiculars

दंझ and g a from the points द and g.* Let r a and a a (produced if necessary) meet in a. Again from the point a draw the perpendicular wa on way, from a, draw the perpendicular we on wa (or wa produced) and from wa draw the perpendicular of so on gra.* Make at a equal to a so in the direction of sa.† Draw the line ar ar ar parallel to z z.† This line shall meet the line a a (or a a produced) in the point a, Then it is certain that the triangles was, sor a, are, sor a, and a a sare equal. Therefore the figures and an are the squares on the two sides (of the given right-angled triangle). Again a r and me being equal and the angles being equal, the triangles सर न and छ ज व are proved equal. Again व स and व व being equal and the angles being equal, the triangles = = = and = = are equal to one another. Then the sum of the triangles are and a z = is equal to the sum of the four-sided figure z = and the triangle = = . This (the latter) sum is equal to the triangle : sq. . Again the triangle : st = should be added to the first sum and a z z to the second sum and the figure a a a to both the sums if a a is greater than a a: but if it be less, then one part (wat a, we being the point in which we meets a a) is to be added and the other (a a a) is to be sub-

^{* (}I. 12).

^{† (}L 3).

^{1 (}I. 31).

^{§ ∵ं △} व ने स = △व न था

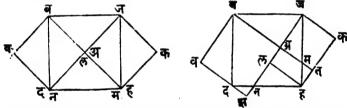
^{¶ :} सनद+वदक=ल अव+हेल अ=हे अब.

tracted. Then the squares are and are are equal to the square are.*

In the cases shewn above, other alternatives are possible but they are passed over through the fear of prolixity.

Another alternative (p. 70-1).

When the squares of the sides fall on themselves, then there are eight cases. In the first case, having drawn the figure in such a way that the square of the hypotenuse falls on the triangle, produce the sides a st and st so that they may meet the square on the hypotenuse in the points st and st shall fall respectively on st and st if the two sides are equal or shall fall on the two sides (produced if necessary) if the two sides are unequal. From the points st



and g, draw the perpendiculars g g and g a on both the sides thus produced.† Produce these two (perpendiculars g g and g a). From the points g and g, draw the perpendiculars g g and g s to that they may meet the produced perpendiculars in the points g and g. When the two sides are unequal, let g g be assumed to be greater than g g. From the point g draw the perpendicular g g on the line g g.† This perpendicular shall fall on a point other than g when the two sides are unequal, and shall fall on the point g when the sides are equal.

^{* # # 2 + 4 2 2 2 - # 4 + 4 4 4}

स स + व व य = इ ज य

स क्ष + व व य + झ द व + व द त य = ह ज य + त द ह + व द त य.

二有 七十五 有二有 至。

In the other case स क + बन स + झ द त + क त द - ब स क = ह ज स + त द-

[∴]म क+इ त=व ह.

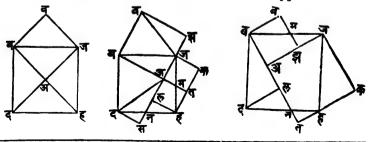
^{† (}I 12).

Now the figures as and as a are squares and equal to the square on the line as when the two sides are equal. When they are unequal, then the figures of and of a shall be squares and the figure as shall be right-angled, but shall have its sides unequal. Again the triangles of a a, a a a, a and The triangles and and are are equal as the angles are equal and the sides at a and a grare equal. Then wa and was shall be equal. Therefore are and are shall be equal. Therefore the triangles g at a and g a st shall be equal. The triangles was a has already been proved equal to the triangle = = =. If to these two the figure = = = be added, then the figure was shall be equal to the triangle mr and also to the triangle r a s and consequently to the figure at at a and to the triangle at a st. If to these two be respectively added the triangles was and was, then the figure of a st together with the triangle at a shall be equal to the figure # # # together with the triangles # # and बहर. Again add to both the figure ह स अ ज and the triangle अ ज म. Then from the first sum will arise the square च z and from the second the squares of and ar a. This was just what was wished.

In the same way it may be proved when we is less than we w.

Another alternative (p. 72-3).

When the square of the hypotenuse and one square, named of a, fall upon the triangle, and when the two sides are equal, then what I wish to prove is evident. Why? Because the triangles that are formed are equal. Of these, the sum of the two triangles is equal to the square on a side and the sum of the four triangles is equal to the square on the hypotenuse.



[#] ∵∆इसत=∆नदझ.

But if a w is greater than w w, then describe the square of it. Produce of a so that it may cut the line of in of and go out. From the points a and a draw the perpendiculars a and a sa on that line. From the point s, draw the perpendicular ss on the line sa s. Again from the point s draw the perpendicular w on the perpendicular w s.* Again produce the line was that it may cut we in the point wand meet the perpendicular in a. The figure was may be proved to be a square as before. Join of a and a st. st of and a st being equal and the angles of of and of of the being equal, the triangles of of and a r a are proved equal. Then by adding to these equals the figure as at at it is proved that the figure न अ स ह is equal to the triangle as a rand consequently to the triangle FUE Again TH and TH being equal, the remaining parts स इ and स द are equal. Owing to this equality of the sides and the equality of the angles, the triangles द स स and द स द are equal. Again the angles & a sq and sq a being equal and ब द and द ज being equal and द द and द आ being equal, the triangles & a and a a a are equal. Again the remaining angles war and war being equal and the angles wand w being right angles and the sides at a and a to being equal, it is proved that the triangles of a st and of a st are equal. इव and क्स स are equal to ज व and व झ. The triangle इस न is equal to the triangle way, then the sum of the figure way-अ ज and the triangle ह स त is equal to the figure ज व ज जा. To each of these add the figure at a st. Then the figure a st च and the triangle g ज क or its equivalent, the figure ज स स हा: in other words, the figure z a m r is equal to the figures a a -झ and म ज इ त. Again add the triangle च स ज to these equals. Then the square of the hypotenuse shall be equal to the squares of the two sides.

If the side was is less than was, then produce the smaller side so that it may cut the line as in a and go out. From a and g draw on it the perpendiculars as and g at. Produce a and from a draw on it the perpendicular as at.

^{* (}I. 12).

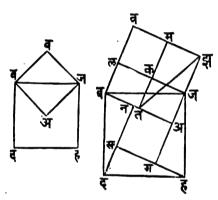
[†] As proved before.

^{1 (}I. 12).

certain that the triangles अवज, कहज, and दक्ष are equal. Therefore अक is a square. The triangle दक्ष न is equal to the triangle न तह is equal to the sum of the triangles कहज, न तह, and न न न. Add the remaining figure to both these equals. Then the square on the hypotenuse shall be equal to the squares on the two sides.

Another alternative (p. 74-5).

The squares on the three sides fall on the triangle. If the



on the triangle. If the two sides be equal, then the squares on the two sides shall be equal and what is desired to be proved is evident. But if one side is greater or smaller than the other, as we greater than we see that the describe the squares as mentioned before. Produce we to we and to we to we. From the point

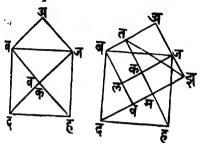
द, draw the perpendicular द न on आ । a and from द draw the perpendicular द न on द न. Produce ज अ so as to meet द न in ज. Then there shall be four triangles of the square ज द. They shall be equal as shown in the preceding cases. ज ज shall be the remaining figure. It shall be the square on the difference of the sides ज न and ज ज.† Join त ज. Then the figures ज क and ज ज shall be divided into four triangles. These four triangles shall be equal to the four triangles first spoken of. The remaining square क न shall be equal to the square ज ज. Thus the square ज न is proved equal to the squares ज न and ज ज. This was just what was wished.

^{* (}I. 12).

[†] Both सन and न आ are equal to अ ब— आ जः ्रन=अव and र्स=अं अं and बन=अं ज. Thus सन being equal to न अ, the figure नग is a square on अव—अज.

Another alternative (p. 75).

The squares on the two sides fall on the triangle, but the

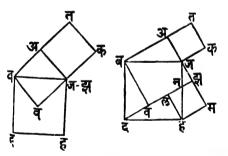


square on the hypotenuse does not fall on it. When the two sides are equal, it comes to the above-mentioned case. When the side we is greater than we see, then describe the squares. Join we and some. Then it is clear that

Produce ज क to छ. Then the square ज द shall be divided into four triangles and the square ज क shall be between them. Again join त झ. Then the figures आ छ and आ म shall be divided into four equal triangles, and these four triangles shall be equal to the above mentioned four triangles. If to both these the square क च be added, then what was desired to be proved shall be evident.

Another alternative (p. 75-6).

The square of one side falls on the triangle. When the two



sides are equal, the case is evident. If water is greater than we wanted, then describe the squares. Join was. Then it is clear that was is one straight line. Produce we wan. On it draw the perpendi-

cular ह स.† Draw the perpendicular ह क on द स.† The triangles ज ज ज, ज ज द ह, कार्य म ज ह are equal. The square क म is equal to the square क क.‡ To the triangles द क ह and ज म ह, add the triangle क ह ज. Then the triangle द ज ह is equal to the

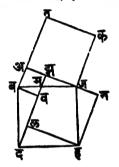
^{*} वव=छ ज and व छ=क ज ∴व छ=छ:क.

^{† (} I. 12).

^{‡ ∵}रु इ=अ अ and रु ह=म इ.

square and together with the triangle and an or to its equivalent, i. c. the square and together with the triangle and and to the the first of these equals add the triangle and and to the second, and and add the remaining figure (and and) to both these equals, then what was desired to be proved would be evident.

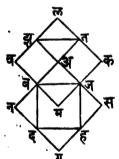
But if w w is less than w w, then describe the squares. Join



सह. In the above-mentioned manner it may be proved that the figure इह सम together with the triangle समा is equal to the square समा together with the triangle समा together with the triangle समा समा Therefore what was desired to be proved is evident.

Another alternative (p. 76-7).

Describe the squares in such a way that the square of none



to the square च इ. Join झ त. The triangles झ छ त, झ च त, व झ झ, and च झ झ are equal. They are also equal to the abovementioned four triangles. From both the squares take these

^{*} कन is a square and equal to अंक. यह जस+स जझ=स कहन ज (∵ ए सह=हन ज)+न जझ=कन=सक.

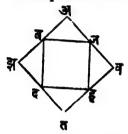
[†] ववद्=अवजः ∴ववद्+ववम=अवज+ववमः ∴वद्म्=अव+यजः

^{‡ (}I. 12).

four triangles. The remaining squares $q \neq q$ and $q \neq q$ shall be equal to the square $q \neq q$. This was just what was wished. Thus eight cases are proved.

Another alternative (p. 77).

The square on the hypotenuse should be so described that it

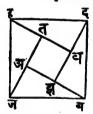


may not fall on the triangle. Produce we and we we. From the points we and we were drop perpendiculars we we and we we on both.* Produce the perpendiculars so as to meet in which the square we we is the square on the sum of the two sides (we wand we we), and the four triangles are equal. The sum of any

two of these triangles is equal to the rectangle of the two sides. The sum of the four triangles is equal to double the rectangle of the two sides. From the square at a, take away double the rectangle of the two sides. The remaining square at shall be equal to the sum of the squares of the two sides.† This was just what was wished.

Another alternative (p. 77-8).

The square on the hypotenuse should be described on the



triangle. From the point of draw the perpendicular of on of of. From of draw the perpendicular of on of of. Produce of of to a square which is equal to the difference of the two sides. Thus the four triangles are equal. The sum of any two of

these triangles is equal to the rectangle of the two sides. The sum of the four triangles is equal to double the rectangle of

[§] अव=र श. अज=र्ष=शय, अय—अज=र्श—र्ष. ∴अश=श्रव ∴ शंत is a square on अय—अष,



^{• (}I. 12).

[†] $(A T) = (AB + AJ)^2 = (AB)^2 + (AJ)^2 + 2AB$. AJ. Subtract 2AB. AJ from both these equals.

 $[\]therefore (AT)-2AB\cdot AJ=(AB)^2+(AJ)^2.$

^{‡ (} I. 12).

the two sides. This together with the square on the difference of the two sides is equal to the sum of the squares on the two sides. Because if to this the square a sq is equal to the sum of the squares on the two sides.

Prop. 48 p. 78.

The prop. may be proved indirectly also as under:-

Let A B C be a triangle in which the square on A C is equal to the squares on A B and B C. Then A B C shall be a right angle.

For if it be not a right angle, let it be an obtuse angle. From B draw B D at right angles to B C (I. 11). Make B D equal to A B (I. 3) and join D C. Then the square on D C is equal to the squares on D B and B C (I. 47) and consequently to

the squares on AB and BC, because DB is equal to AB (Cons.). Therefore DC is equal to AC (1Ax.). This is absurd (I. 24), because the angle ABC is greater than the angle DBC.

Digitized by Google

 ⁴ Triangles = 2AB·AJ.

⁴ Triangles + $(AB-AJ)^2 = 2AB\cdot AJ + (AB)^2 + (AJ)^2 - 2AB\cdot AJ = (AB)^2 + (AJ)^2$.

BOOK II.

Prop. I. p. 79.

Alternative proof.

The line a sa is made up of the parts a a, a s, and s s.

Therefore the sum of the rectangles contained by the parts of this line and the line a must be equal to the rectangle contained by the line and the whole line a a.

This alternative proof is based upon general principles.

Prop. II. p. 80.

Alternative proof.

Make the line a equal to the line at a. Then the rectangle contained by the lines and at a is equal to the square on the line www. This is equal to the rectangles contained by the line and the parts of the line a ...

Prop. III. p. 80-1.

गुज्रूपसण्ड-निजेकसण्ड mentioned before. The rectangle is the product of the whole two which is the multiplicand and a part of it (निजैक्सपड) which is the multiplier (गुजरूप). Mss. A. and B. read तत्त्वण्ड for गुणरूपसण्ड. तत्त्वण्ड-निजैक्सण्ड (the aforesaid part).

Alternative proof.

Let the line z be equal to z z. The rectangle contained by g and sq g is equal to that contained by sq g and T. But the rectangle contained by आब and बजा is equal to the sum of the ₹ rectangles contained by the lines and as

Digitized by Google

^{*} द=अव. ∴ द. अव≕(अव). 8 But द, अव=द्. अज+द्. जव. ∴(अव) = अब, अज+अब, जब.

and and a a. Of these two rectangles one is the rectangle contained as a and as a and the second, the square on as a.*

The alternative proofs of Prop. 2 and Prop. 3 show that they are particular cases of Prop. 1.

Prop. IV. p. 81-2.

On this prop. Bil. has the following note:-

'This proposition is of infinite use chiefly in surd numbers. By help of it is made in the addition and subtraction, also multiplication in Binomials and residuals. And by help hereof also is demonstrated that kind of equation, which is, when there are three denominations in natural order, or equally distant, and two of the greater denominations are equal to the third being less. On this proposition is grounded the extraction of square roots. And many other things are also by it demonstrated.

Alternative proof.

The rectangle w w. w w is equal to the sum of the square

on set as and the rectangle set as a set Again the rectangle wa. was is equal to the square on was and the rectangle was a wat Then the sum of the rectangles of a. of of and अ व. व ज, which is equal to the square on w w, s is equal to the squares on w w and

ज and twice the rectangle आ ज. ज व.

Prop. V. p. 82-3.

Alternative proof.

म

The rectangle of a. a is equal to the rectangle of a. a a, that is, to the rectangle ज ज. इ च and the rectangle of a. a. To both these equal rectangles add the square on sq. Then what is the result? The rectangle आ इ. इ व and

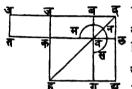
^{*} इ=ज व. इ. अ व=ज व. अ व. But अ व=अ ज+ज व. ∴इ. अ ज+इ. ज व= ख व. अव. ∴ज व. अज+(ज व)²=ज व. अव. or अव. ज व=अज. ज व+(ज व)². + (IL 3). ‡ (IL. 3). § (IL 2). ¶ (II.1).

the square on square equal to the rectangles square, and square on square on square. But the rectangle square and the square on square equal to the rectangle square. Also the rectangles square and square on square on

Prop. VI p. 83.

Alternative proof.

The rectangle wa q. wa q is equal to the rectangle wa q. wa q.



सं which is equal to twice the rectangle ज स. § द द and the square on द द. To both these equals add the square on ज द. What is the result? The rec-सं tangle क द. द द and the square on ज द

are equal to twice the rectangle ज व. व द and the squares on ज व and व द, which (i.e. twice the rectangle ज व. व द and the squares on ज व and व द) are equal to the square on ज व.॥

Prop. VII. p. 84.

Alternative proof.

The square on was is equal to the squares on was and was and twice the rectangle was was \$ To both these equals add the square on was. Then the squares on was and was are equal to twice the square on was, twice the rectangle was.

on was and the rectangle was. was are equal to the rectangle

```
* (IL 8). † (II. 2).

‡ जद. इव=अज. इव+जद. इव (II. 1).
= जव. दव+जद. इव (∵अज=जव).
∴ अइ. इव+(जद)²=जव. इव+जद. दव+(जद)².

But जद. दव+(जद)²=जव. जद(II. 3) and जव. जद+जव. दव
=(जव)²(II. 2);
∴ अद. दव+(जद)²=(जव)².

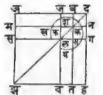
§ ∵अव=2जव. ¶ (II. 3). ∦ (II. 4).

$(II. 4).
```

आ ब. ज ब.* Therefore the squares on आ ब and ज ब are equal to twice the rectangle आ ब. ज ब and the square on आ ज.+

Prop. VIII. p. 84-5.

The rectangle अ ब. ब ज is equal to the rectangle अ ज. ज व



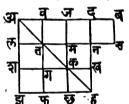
and the square on sq. But four times the rectangle sq sq. sq is equal to twice the rectangle sq sq. sq sq. and four times the square on sq sq is equal to the square on sq sq. Therefore four times the rectangle sq sq. sq sq is equal to twice the rectangle

भा जा जा द and the square on जा द. To both these equals add the square on आज. Then four times the rectangle आज. जा व and the square on आज are equal to the sum of twice the rectangle आज. जा द and the squares on आज and जा द. But the sum is the square on आज.!

Prop. IX. p. 85-87.

Another alternative.

On आ द and ब द describe the squares द झ and द स.\$ Cut off



जब equal to जद.** Join आह. Produce the line सज to the point छ. Draw ब फ and ज छ parallel to the line आह, and श ग क ख parallel to आ ब ††

The figures व स and द स are equal.\$\$ Also the four figures

```
* (II. 3).
† (সৰ)<sup>9</sup>=(সত)<sup>2</sup>+(ত্ৰ)<sup>2</sup>+<sup>2</sup>সতা, তাৰ (II. 4).
```

(अव) -- (अव)

but (ज व)2+अ ज. ज व=अ व. ज व (II. 3).

^{\$\$:} The line अ व=व व (because अ ज=ज व and व ज=ज द).



 $[\]therefore 2(374)^2 + 23733, 374 = 2374. 374.$

[∴](अव) $^2+$ (अव) $^2=$ (अअ) $^2+$ 2 अव. जव.

^{‡ (}II. 3). § ∵जर्=²जब, or जब=ॄा जद्. ॄ ∵जर्=²जब ∴(जर्)²=4 (जवं)².

[∥] अव. व ज=अ ज. ज व+(ज व)² (II. 3).

^{∴4} সৰ. ৰ জ=4 সে জ. জৰ+4 (জৰ) 3 ; but 4 সং জ. জৰ=2 সং জ. জৰ, আৰ, and 4 (জৰ) 2 =(জৰ) 2 ∴ 4 সৰ. ৰ জ=2 সং জ. জৰ্+(জৰ্) 2 . Add (সং জ) 2 to both ∴ 4 সৰ. ৰ জ+(সং জ) 2 =2 সং জ. জৰ্+(জৰ্) 2 +(সং জ) 2 ; but (সং জ) 2 +(জৰ্) 2 +2 সং জ. জৰ্=(সেৰ্) 2 (II. 4) ∴ 4 সং ৰ. ৰ জ+(সং জ) 2 =(সং 2).

^{\$(}I. 46). **(I. 3). †+(I. 31).

दम, जत, खन and झन्द are equal. Similarly also the figures जक, सम, जन, कन and कन्द are equal. The sum of the figures जन, and सम, makes up five figures and they are equal to the squares on अज and जन. The remaining five figures are equal to the preceding five figures. The ten figures together make up the squares द स and द स. Therefore the squares on अन्द and द व are equal to twice the squares on अन्द and द व what we required.

Another alternative.

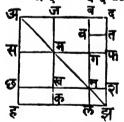
From the line wa, cut off wag equal to wa. Then twice the rectangle was. wag and the square on was and wag. Of these wag is equal to wag and wag is equal to a wag are equal to the squares on was and the square on a war are equal to the squares on was and wag. Add the squares on way and wag to both. Then twice the

Add the squares on wa and a z to both. Then twice the rectangle was. a z and the squares on was, a z, and z z, which are equal to the squares on wa z and z z, are equal to the sum of twice the square on was and twice the square on a z.

Prop. X. p. 87-89.

Alternative proof.

On अद and बद describe the squares दह and दव. § Draw



म छ, and न स are equal. Similarly the figures द् न, फ न, स इ and न क are also equal. But the sum of the figures ज स and फ क makes five of the preceding figures and is equal to the squares on अ ज and ज द; the remaining five figures are equal to these five figures; and all these figures are equal to the sum of the figures द इ and द ब. Therefore the sum of the squares

^{* (}I. 3), † (II. 7). ‡ ∵(জাৰ)² = (জাজ)² + (জাৰ)² + ² জাজ. জাৰ (II. 4), § (I. 46). ¶ (I. 31).

on आ द and ब द is equal to twice the square आ and twice the square on आ द.

Another Alternative.

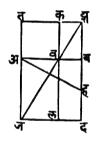
Divide the line ज द into two in the point स.* Then twice the rectangle ज व. ज द and the square on व द व द or twice the rectangle अ ज. ज द and the squares

on ज ब and ज द and consequently equal to the squares on आ ज and ज द. To both these equals add the sum of the squares on आ ज and ज द. Then the sum of the squares on आ द and ज द shall be equal to the sum of twice the square on आ ज and twice the square on ज द.

Prop. XI. p. 89-91.

Describe the square of द.§ Bisect of a in the point g.¶ Join

the line ह आ. Make ह झ equal to ह आ.|| Join ज झ.\$ By this line आ च is divided into two such parts (as are required) in the point च.



Proof.

Draw the line ज त parallel to the line च आ.**
Produce the line ज आ so that it may meet the
line ज त in the point त. Again from the point
च draw the line व क स parallel to व द.†† The

figures त ब and ब द are equal to one another. To both these add the figure अ छ. Then the figure त छ is equal to the figure अ द. ब द being bisected in ह and ब झ being joined to it, it may be proved that the rectangle द झ. झ ब is equal to the figure अ द, §§ and consequently to the rectangle ज त. त इ. ¶¶

```
* Scil. and produce it so that ज == अ ज.
                                                      + (II.7).
‡ 2 জ ৰ. জ ৰ+(ৰ ৰ )²=(জ ৰ )²+(জ ৰ )² ( II. 7 ); but জ ৰ=জ জ.
∴ 2 সালা, আৰু+( ৰ ব্)²=(সালা) ²+(জাৰ্)². Add to both (সালা)²+(লাৰ্)².
∴ 2 জা আ. আহ্+(ৰহ্)²+(জাআ)²+(আহ্)²=৫ (জাআ)²+2 (আহ্)²; but
      (अह्)<sup>2</sup>=(अज)<sup>2</sup>+(जह)<sup>2</sup>+2अज. जद्(II. 4).
∴ (अद)<sup>2</sup>+(वद)<sup>2</sup>=2(अज)<sup>2</sup>+2(जद).<sup>2</sup>
                                                              ¶ (I. 10).
                                              § (I.46).
                                            ** (I. 81).
                                                              tt (I. 31).
               $ Scil. meeting अ व in व.
| (I. 3.).
                 §§ ∵ द 新. 東 व+(व 更)2=(更 東)2 (II. 6).
11 (I. 43).
                        =(अह)2∵हॹ=अह(Con.).
                        =(अव)2+(वह)2(I.47).
```

Take away (वह)² from both these equals. ∴दह, हव=(अव)²=अद. पुष ∵अद has been proved equal to त छ. By this proof the equality of त क and झ व is settled and the equality of the lines त क and त आ is also proved.* त व has been proved equal to व द. व द is the rectangle आ व. व व and this is equal to the square on आ व.†

It will be easily noticed that this Prop. gives a geometrical construction for the solution of a particular quadratic equation. The solution is required in the construction of a regular decagon.

On this Prop. depends the demonstration of the well-known 10th prop. of the 4th Book. Many uses of a line thus divided will be found in Book XIII.

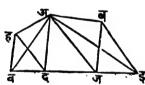
Prop. XIII. p. 91-92.

Generally three cases of this prop. are given; Euclid gives only the first case and the second and third cases are supplied by Simson. Vide Tod. p. 270.

Prop. XIV. p. 92-93.

Alternative Proof.

Describe a triangle equal to the given figure. Let w a a a-



ह be the figure. In this figure make triangles, thus one triangle is आ व ज, another is अ ज द, and the third अ-दह. These are the triangles formed. Again form a triangle equal to the sum of the triangles आ व ज and अ-

ज द in the way mentioned. Thus:—Produce the line द ज. From the point द draw the line द झ, parallel to the line अ ज.! These lines shall meet in the point झ. Again draw the line अ झ. Then the triangles अ द ज and अ झ ज are equal. Therefore the triangle अ झ द is equal to the sum of the triangles अ द ज and अ ज द.

^{॥ (}I. 37) : they are upon the same base अज and between the same parallels ज ज and अज.



^{* ∵}ब्झ. इंब=जत.तक; but ब्झ=जत (I. 34).

[∴]इ व=त क; but इ व=त अ (I. 34).

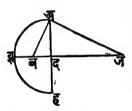
[∴]त क=त अ.

^{† :}त व is the square on अ व, त क and त अ being proved equal.

^{1 (}I. 31).

Again in the same way describe another triangle equal to the sum of the triangles was a and was. Proceed to describe a triangle in the same way so long as it may be equal to the assumed figure. Now a square equal to the triangle should be described. Thus:—

In the triangle अ व ज, draw from आ the perpendicular आ द



on a w.* Produce this perpendicular so far as a w may be equal to half of a w. With w w as diameter, describe the semi-circle w w w. This circle shall meet the line w a in the point w. Then a whall form a side of the square which is to be described. Because the square on a w is

equal to the rectangle sq q, q g.† This rectangle sq q, q g is equal to the rectangle contained by sq q and half sq sq is the area of the triangle. This is just what we wished.

'By the aid of this Prop. we may determine a line such that the square on that line is equal in area to any given rectilineal figure or we can square any such figure. As of two squares that is greater which has a greater side, it follows that now the comparison of two areas has been reduced to the comparison of two lines.

The problem of reducing other areas to squares is frequently met with among Greek Mathematicians. We need only mention the problem of squaring the circle.

In the present day the comparison of areas is performed in a similar way by reducing all areas to rectangles having a common base. Their altitudes give them a measure of their areas.' Ency. Bri. p. 376.

^{† ∵}By completing the circle and producing श्रद to meet the circumference in H, it can be proved as in Book III. Prop. 3 and Prop. 35, that श्रद²= श्रद. द म and श्रद. द स = अद. द ह ∴श्रद²= अद. द ह.



^{* (}I. 12).

BOOK III.

Prop. I. p. 94.

L. 18-19. omit समकोणक्षेत्रद्वयं स्यात्. It is omitted in V. and B. From this prop. it follows that if two chords intersect each other so as to form four right-angled figures and if one of them bisects the other (in other words, if one chord bisects another at right angles), then one of the chords passes through the centre. It also follows that a perpendicular issuing from the extremity of half a chord passes through the centre.

Prop. III. p. 95-96.

Alternative proof.

If the line of g bisects the chord of g, but is not perpendicular to it, let it be assumed that

from the point ξ , ξ a is the perpendicular to the chord ξ . Then by the meeting of the two lines ξ and ξ a two right

angles are formed and ξ also bisects the other line and still neither of the two passes through the centre. This is absurd.*

If the line $\pi \xi$ is a perpendicular on the chord $\pi \xi$ but does not bisect it, then let it be assumed that $\pi \xi$ is bisected in the point ξ . From this point ξ draw the line $\pi \xi$ parallel to the line $\pi \xi$. Then this line $\pi \xi$ shall be perpendicular to the line $\pi \xi$. One line bisects another at right angles and yet neither of them passes through the centre. This is absurd.

Prop. IV. P. 97.

Alternative proof.

From the point a draw the perpendicular as on the line

wa and a so on the line a sa. Then these two perpendiculars shall meet at the centre. Then the point a shall be the centre of the circle. But the centre is elsewhere. Therefore this is incorrect. What we wish to prove is alone proper.

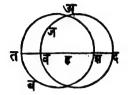
^{* (}Cor. 1st. Prop.) † (I. 81). ‡ (I. 29). § (I. 11).

[¶] Because it is assumed that the two chords জ q and 夏爾 bisect each other. Perpendiculars passing through the point of intersection of the chords must pass through the center (Cor. Prop. I). ② (Hyp.).

Prop. V. p. 98.

Another alternative (p. 101-2.)

Produce the line of to a and a. Now of it is less than of

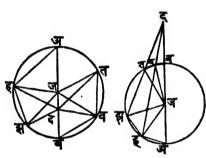


and therefore shall be also less than the line z = 1t (z = 1) is equal to z = 1. But z = 1 is greater than z = 1. This is absurd.

Prop. 8, p. 99-102.

Another alternative (p. 101-2).

In the circle of a is the centre. a is assumed as a point



(within or without the circle other than the centre). The greatest line passing through the centre is a set. The smallest line not passing through the centre is a set. In one and the same direction of the greatest line draw the lines a set and

दश्न. Join the lines सह and हज. Then the angles ज सह and ज ह अ are equal. Therefore the angle द ह आ is greater than the angle द अ ह. Therefore the line द आ is greater than द हा। Again draw the lines ह झ and ज झ. Then the angles ज ह झ and ज झ ह are equal. The angle द ह झ is less than one of them (ज ह झ) and the angle द झ ह is greater than one of them (ज झ ह). Therefore द ह is greater than द झ. Again on one side of the line द च draw the lines द च and द त. Join च च and च त and also च ज and त ज. Then the angles ज च च and ज च च are equal. Therefore the angle द च च is less than

^{*} Because the radii ह द and ह द are equal.

[†] Because 5 is assumed as the center of both the circles.

[‡] ছ being equal to ছ ব and less than ছ ব, ছ ব is also less than ছ ব. This is absurd.

§ (I.5).

¶ Because the angle ব ছ আ is greater than the angle ব ছ আ.

|| (I. 19).

\$ Scil. therefore the angle ব আ হ is greater than ব ছ আ.

** (I. 19).

†† (I. 5).

the angle $\mathbf{q} = \mathbf{q}$. Therefore $\mathbf{q} = \mathbf{q}$ is less than $\mathbf{q} \in \mathbf{q}$. Similarly $\mathbf{q} = \mathbf{q}$ may be shewn to be less than $\mathbf{q} \in \mathbf{q}$. If on two sides \mathbf{q} two equal angles are made, then the two sides subtending the two angles shall be equal; and there shall be no third line equal to these two. Why? Because two lines on one side cannot be equal.

This alternative proof is a common proof of the 7th and 8th propositions.

Prop. 9 p. 102-3.

Two Proofs are given, one, direct and the other, indirect. The direct proof is as under:—

Let 3 be the point in the circle at a and let 3 a, a a and a-



ह be equal. Join ब द and ब ह and bisect the lines in the points झ and ब.\$ Join ज झ and ज द. Then the sides of the triangles ज-ब झ and ज द झ are equal. Then the angles also are equal to one another. Therefore the two angles at झ are equal. Then the line ज झ bisects the line ज द at right angles.

Therefore \mathfrak{A} \mathfrak{A} shall pass through the centre. Produce this line to the points \mathfrak{A} and \mathfrak{A} . Similarly it may be proved that the line \mathfrak{A} passes through the centre. Produce the line \mathfrak{A} also to the points \mathfrak{A} and \mathfrak{A} . Then the lines \mathfrak{A} and \mathfrak{A} shall pass through the centre. These two lines shall not meet in a point other than \mathfrak{A} . Therefore \mathfrak{A} is the centre of the circle.

This direct proof is found in some recent English editions of Geometry.

Prop. 10. p. 103-4.

This is proved in two ways. One of them (the second) is found in all English works. The other is as under:—

^{* (}I. 19). When the point ব is outside the circle, ব ব may be shewn to be less than ব্ৰ as follows:—জব+ব্ৰ>জব+ব্ৰ (I. 20). but জব=জব: ব্ৰ>ব্ৰ. or ব্ৰ<হ্ব.

⁺ Of the line passing through the center.

[†] Scil. at the center.

^{§ (}L4).

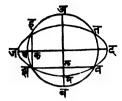
[¶] Of the greatest or the shortest line.

^{\$ (} I. 10).

^{| (}I.8).

^{** (}Cor. III. 1).

Two circles cannot cut one another in more than two points.



If they do, then let the two circles be अ-ब and इ ज. Let them cut one another in the points इ, झ, च, and त. Join इ झ and झ ब. Bisect them in the points क and ऊ.* From these two points draw the perpendiculars क इ and ऊ अ.† These two perpendiculars shall pass through the

centre. By these two perpendiculars the chord of the arcs gray and mag of the circle are and the chord of the arcs gray and mag of the circle are are bisected. Then the two circles have the same center. This is absurd.

Prop. 11. p. 104.

Propositions 11 and 12 in English books are given as one in the text.



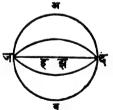
झ is not the centre of the circle आ व. । From this are drawn two lines झ अ and झ व to the circumference of the circle. The line झ व is opposite the centre, but it does not pass through the centre. Therefore it is less

than $x \in \mathbb{R}$. Therefore it is also less than $x \in \mathbb{R}$. This is absurd. What we wished to prove was alone proper.

Prop. 12 p. 105.

Alternative proof.

g is the centre of the circle of g. Then g cannot be the



center of that circle. Therefore भ ज is greater than भ र.** भ is the centre of the circle ज र. Therefore भ ज and भ र are equal. This is absurd.††

^{*(}I, 10). †(I, 11). ‡(Cor. III. 1). §(III. 5).

[¶] Because it is the center of the smaller circle N W and these two circles cannot have the same center (III. 6). || (III. 7).

^{\$} Because \$\ \mathbf{n}\ \math

^{** (}III. 7).

[†] Because 新 写 has already been proved to be greater than 新 写.

Again let a be the centre of the circle of a. Join the line ga. This shall pass through the points of and a.* This is absurd. Prop. 13 p. 106.

Alternative proof.

If ज द and ह झ be equal, but व त and व क be not equal, then



let a n be greater than a s. Then the angle s shall be greater than s and the angle a shall be greater than s.† Then the angle s a z shall be less than the angle s z z. The two sides s a and a z are equal to the two sides s a and a z. Then s z shall be less

than g . This is absurd.

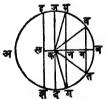
If द त and द क are equal, but ज द and ह झ be not equal, then त द and क झ shall not also be equal. Then their squares also shall not be equal. But the squares of द त and द क are equal. Therefore the squares of द द and द झ shall not be equal. But they are equal. This is absurd.

Prop. 14 p. 107-8.

Two proofs are given, of which one is almost the same that is found in English books. They are as under:—

First proof.

Let sq a be the given circle, and sq a its diameter. The chord



हुझ is nearer to the center than बत, which is more remote. इ is the center. From the center draw the perpendiculars क स and क म.

The perpendicular क स is less than क म. || From क म (the greater) cut off क न equal to क स (the less). \$ Through the point न draw the

line न स न parallel to ज द.** The line स न shall be equal to



^{* (}III. 11).

^{+ (}I. 25).

^{1 (}I. 32 and 3 Ax.)

^{§ (1. 24).}

[¶] Because they are halves of 爾袞 and 夏蘩 (III. 3) and halves of unequals are unequal.

[্]বা ই ম being nearer the center than ব ন.

^{8 (1.3).}

^{** (} I 31).

the line $\xi \xi \xi$.* Join $\xi \xi \xi$, $\xi \xi \eta$, $\xi \xi \eta$ and $\xi \xi \xi$. Then the sum of $\xi \xi \eta$ and $\eta \xi \xi$, which is equal to $\xi \xi \xi$, shall be greater than $\xi \xi \eta$, and (consequently) greater than $\xi \xi \eta$. Again in the triangles $\xi \xi \xi \eta$, and $\xi \xi \xi \eta$, the sides $\xi \xi \eta$, $\xi \xi \eta$, and $\xi \xi \eta$ are equal. But the angle $\eta \xi \xi \eta$ is greater than the angle $\eta \xi \xi \eta$. Therefore $\xi \eta \eta$, which is equal to $\xi \xi \eta$, is greater than $\xi \eta \xi \eta$ is proved to be greater than $\xi \eta \xi \eta$. This was just what we required.

Second proof.

Let sq = be the given circle sq tits diameter, and g its center.



Let the chord \mathbf{x} \mathbf{z} be parallel to the chord \mathbf{z} . On it (\mathbf{x} \mathbf{z}) drop a perpendicular from the point \mathbf{x} . This perpendicular shall not meet the chord in the point \mathbf{x} . Why? Because if \mathbf{z} \mathbf{x} is joined, the angles \mathbf{x} and \mathbf{x} in the triangle \mathbf{z} \mathbf{x} \mathbf{x} shall be equal. Then these two shall be right angles. This is absurd. Nor

^{*(}III. 13). † I. 20). ‡ ∵ 夏斯=初 ¶ (I. 24). ¶ (I. 12). ¶ (I. 5). \$ (I. 17).

^{**} It being equal to the alternate angle সাবায় or সভায়, as ব and ভ will coincide when the perpendicular from সা on হাৰ falls between হা and ব as সাব.

†† (I.5).

‡‡ Because হাসাব is a right angle.

^{§§} জৰ is parallel to বৰ and জন falls upon them, therefore the angles ছ জন ন and জনৰ are together equal to two right angles (I. 29). But ছ জন is a right angle; therefore জনৰ is also a right angle. Thus ছনজ is less than a right angle, being less than ৰ নজ, and greater than an obtuse angle, being greater than ছক জ (I. 16).

fore the perpendicular shall fall outside as \overline{a} \overline{a} . Similarly the perpendicular \overline{a} \overline{a} from \overline{a} shall fall outside. The line \overline{a} \overline{a} , equal to \overline{a} \overline{a} , shall be greater than \overline{a} \overline{a} . In the very same manner the line \overline{a} \overline{a} shall be greater than another line, more remote (from the center), if it be parallel to it. If it be not parallel, it should be made parallel. This may be proved in the manner shewn above.

Prop. 14. p. 108-9.

स्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितो वृत्तान्तर्गतकोणः = The angle within the circle between the diameter and the circumference.

प्रान्तजनित: कोण: = The angle formed between the diameter and the perpendicular drawn to it from its extremity, the angle at the point of contact.

Alternative proof (p. 109).

It has already been proved by us that of the lines drawn



from a given point on a given straight line, the perpendicular is the least. Therefore whatever line is drawn from the point g on g st shall fall outside the circle. Why? Because it shall be greater than half the diameter (g g in this case). Therefore the

perpendicular \mathbf{q} \mathbf{q} shall not fall within the circle.* Again whatever line shall fall between the perpendicular \mathbf{q} \mathbf{q} and the diameter \mathbf{q} \mathbf{q} shall necessarily fall within the circle (like \mathbf{q} \mathbf{q}). Why? Because the perpendicular that shall be drawn from the point \mathbf{q} on this line (\mathbf{q} \mathbf{q}) shall be less than half the diameter (\mathbf{q} \mathbf{q}).† Therefore no line shall fall between the perpendicular \mathbf{q} \mathbf{q} and the circumference.

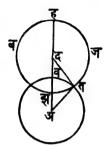
^{*} All the lines from ₹ on ₹ * falling outside the circle, ₹ * must fall outside.

[†] Because $\xi \xi$ is not a prependicular on this line and therefore greater than any perpendicular from ξ on this line, But $\xi \xi$ is equal to $\xi \xi$. Therefore the perpendicular from ξ on this line shall be less than $\xi \xi$. But ξ is a point on the circumference. Therefore the perpendicular must meet the line ($\xi \xi$) within the circle, and therefore $\xi \xi$ shall fall within the circle.

Prop. 16. p. 110.

Alternative proof.

Join the line of and produce it to g. Describe a square



equal to the rectangle of gr. or gr. w g cut off w g equal to a side of the square.+ From the center as and radius as a describe the circle a. Join was. This shall be the tangent required. Why? The sum of the rectangle gray. ar gr which is equal to the square on wat and the square zn which is equal to the square a & is equal to the square on a square fore the angle

Therefore was touches the circle. अ स द is a right angle.॥ Prop. 17. p. 110-1.

Alternative proof (p. 111).

If g a is not a perpendicular on a sa, then from the point a draw the perpendicular as on as. Then this perpendicular also shall touch the circumference in the point , and it shall fall between the first perpendicular and the circumference on one side of a st or ■ a. This is absurd.

The line of argument adopted is as under:—If to gra, a radius, a st, a tangent drawn from the point of contact a be not perpendicular, let a a be drawn perpendicular to it. there are two tangents from , which is absurd. (III. 15).

Prop. 22 p. 113.

The prop. teaches us that there cannot be two unequal similar segments on one line on the same side of it.

It can alse be proved that there cannot be two unequal similar segments on one line on the opposite sides of it.

^{| (} L. 48). \$ (III. 15 Cor.).



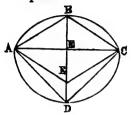
^{* (}II. 14). + (L 3).

[‡] Because it is equal to अ व and अ व is equal to अ त.

[§] द झ being equal to त द.

[¶] ह अ अ श + (द श)²=(द अ)² (Π . 6); but ह अ. अ श = (अ वं)² and (द श)²=(द- π); 2 \therefore (अ व) 2 + $(\pi$ द) 2 = $(\xi$ अ) 2 \therefore (अ π) 2 + $(\pi$ द) 2 = $(\xi$ अ) 2 .

If possible let there be two unequal similar segments A B C



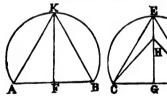
and A D C on the same line A C and on the opposite sides of it, and let A D C be the greater of the two. Bisect A C in E (I. 10), and from E draw E B and E D at right angles to A C (I. 11). Join A B, B C, A D and C D. The segment A D C being greater than

the segment A B C, the perpendicular D E is greater than the perpendicular B E. From D E cut off E F equal to E B (I. 3). Join A F and C F. The triangles A B E and A E F are equal and so are the triangles B E C and E C F (I. 4). Therefore the angle A B E is equal to the angle A F E and the angle E B C to the angle E F G. Therefore the whole angle A B C is equal to the whole angle A F C (2 Ax.). But the angle A F C is greater than the angle A D C (I. 21). Therefore the angle A B C is also greater than the angle A D C. But it is equal to it, as the segments are similar (Hyp.). This is absurd. Therefore there cannot be two unequal segments &c. Q. E. D.

Prop. 23 p. 113-4.

The prop. is proved in another way as follows by Pelitarius:—

Let the similar segments A B K and C D E be upon equal



straight lines A B and C D. Then, they shall be equal. For, if they are not equal, let CED be the greater. Bisect A B and C D in F and G respectively (I. 10) and

from F and G draw F K and G E at right angles to A B and C D respectively (I. 11). Join A K, K B, C E and E D. Then the segment C E D being greater than the segment A K B, the perpendicular G E is greater than the perpendicular F K. From G E cut off G H equal to F K (I. 3). Join C H and H D. In the triangles A K F and C G H, the angle C H G may be shown to be equal to the angle A K F and similarly the angle D H G may be proved to be equal to the angle

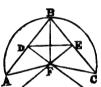
Digitized by Google

BKF(I.4). Therefore the whole angle CHD is equal to the whole angle AKB (2Ax.). But the angle CHD is greater than the angle CED (I.21). Therefore also the angle AKB is greater than the angle CED. But they are equal, because the segments are similar (Hyp.). This is absurd. Therefore similar segments of circles on equal chords must be equal. Q. E. D.

Prop. 24 p. 114-5.

Another proof.

Let A B C be the circumference of the given segment. In

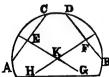


it take any three points A, B, and C. Join A B and B C. Bisect them in the points D and E (I. 10) and from D and E draw D-F and E F at right angles to A B and C D respectively (I. 11). Join D E. Then as the angles B D F and B E F are right

angles (Cons.), and D E divides them, the angles made by D-E with the two perpendiculars are less than two right angles. Therefore the perpendiculars shall meet (12 ax.). Let them meet in F. Now because D F bisects A B at right angles, the center of the circle is in the line D F (III. 1 cor.). For the same reason the center of the circle is in E F. Therefore F, the intersection of the two lines is the center of the circle.

Compane gives another way to find out the circle, which is almost the same as above:—

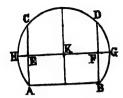
Let A B be the given segment. In it take only two lines A-



C and B D. Bisect them in E and F respectively (L 10) and from E and F draw E G and F H at right angles to A C and B D (I. 11). Let the perpendiculars cut one another in K. Then

the center of the circle is in either of the perpendiculars E G and F H (III. 1 cor.). and therefore, the intersection of the two lines is the center.

But if E G and F H do not cut one another but form one



straight line as G H, then too the center of the circle shall be in both the perpendiculars E G and F H (III. 1 cor.). therefore K, the bisection point of G H, is the center.

Prop. 28 p. 116-7.

म्यासः = Construction.

Prop. 30 p. 117-8.

वृत्तसण्डपाकी यः कोण:-The angle in a segment.

Alternative proof (p. 119).

In the triangle of a a, the angle of is a right angle. With of of



as diameter describe a circle. It shall pass through the point \mathbf{z} . If it does not pass through it, let it be otherwise. Produce \mathbf{z} \mathbf{z} to meet the circumference

in a. Join a. Then the exterior and interior angles of the triangle shall be equal.* This is absurd.

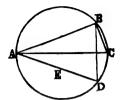
This alternative proof is the converse of the first part of the Prop.

Another way of putting the converse of the first case is as follows:—

If a right-angled triangle be inscribed in a circle, the side opposite to the right angle shall be a diameter of the circle.

[•] The angle আৰু ৰ, the exterior angle of the triangle ৰ বাছ is a right angle (Hyp.) and the angle আ বাৰ is a right angle, being an angle in a semi-circle.

Let the right-angled triangle ABC be inscribed in the



circle A B C; then the side A C, which is opposite to the right angle A B C, shall be a diameter of the circle.

For if it be not a diameter, let E be center of the circle. Join A E and produce it to meet the circumference in D. Join D B. Then the angle A B D is a

right angle, being an angle in a semi-circle. But the angle A-B C is a right angle (Hyp.). Therefore the angle A B D is equal to the angle A B C. This is absurd (9 Ax.). Therefore E is not the center of the circle. In the same way it may be shewn that no other point outside the line A C is the center. Therefore A C is a diameter of the circle. Q. E.D.

Prop. 31 p. 119-20

Alternative proof (p. 120).

From the point st* draw st st parallel to c st. Join st st.



shall be equal.|| But the angle इ. इ. ज is equal to the angle इ. च. क. Therefore the angle झ ज व is equal to the angle झ व इ.



^{*} Any point on the circumference.

^{† (}I. 31).

^{‡ 4} is the center of the circle.

[§] The angle কৰ is a right angle (III. 17) and is equal to the alternate angle ব ক ব (I. 29).

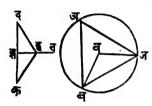
^{¶ (}III. 8).

^{| (}I.4).

Prop. 33 p. 121-22.

Alternative proof.

Let a be the center of the circle. If the given angle be a right angle draw the diameter from any point a on the circum-



ference. The diameter shall cut the circle into two equal parts. When the given angle is not a right angle, produce the line set to the point of the two angles are and are of one is an acute angle. At the point in the straight line set make the

angle st st sequal to the angle at start. Make st sequal to at the angle start. Join start. At the point start make the angle at start equal to the angle start. Then the angle at start had be equal to the angle at start. This (the angle at start had be equal to the angle start. But the angle start had center is equal to the angle start. Therefore the angle start had center is double of the angle at the circumference in the segment start. Therefore in this segment there shall be an angle equal to the angle start. In the other segment there shall be an angle equal to the angle at start. Q. E. D.

Prop. 34. p. 122-4.

There are five cases of this Prop:—

- (1) When the two chords are diameters,
- (2) When one of the two chords is a diameter and cuts at right angles the other chord that does not pass through the center;
- (3) When one of the chords passes through the center, but does not cut the other which does not pass through the center at right angles;

^{*} Each part shall thus be a semicircle, and the angle in a semicircle, being a right angle, shall be equal to the given angle.

^{† (}I. 23). ‡ (I. 8). § (I. 23). ¶ (I. 5). \parallel (I. 5).

^{\$ (}I. 32 and 3 Ax.),

- (4) When neither of the two chords passes through the center and when one of them bisects the other;
- (5) When neither of the two chords passes through the center and when one of them neither bisects the other nor cuts it at right angles.

The first three cases are very simple. The other two cases are as under:—

4th case.

If of the two chords neither is a diameter, then if the line



अ ज meets the other line (ब द) at the point of its bisection, from the point झ draw the perpendicular झ द on अ ज. Join झ ज and झ द. The line झ त (i. e. the perpendicular from झ on द द) shall coincide with झ इ.

Then the rectangle w. g. g. at together with the square on a g is equal to the square on a w.† To both these (equals) add the square on a g. Then the rectangle w. g. g. at together with the squares on a g and a g, which are equal to the square on a g.† is equal to the squares on a w and a g, and consequently equal to the square on a w.§ The square on a g, which is equal to the square on a g, is equal to the squares on a g and a g. || From these equals take away the square on a g. Then the rectangle w g. g w remains, equal to the square on g g which is equal to the rectangle w g. g w remains, equal to the square on g g which is equal to the rectangle w g. g w remains, equal to the square on g g

5th Case.

If of the two chords none is a diameter, nor does one meet



the other at its point of bisection, nor does it fall as a perpendicular upon the other, then the perpendiculars at a and at a fall on one side of the line at a or on two sides. Then the rectangle at a together with the square on a side of a square on a side of the square of the sq

^{* (} I. 12).

^{† (}II.5).

^{1 (}I. 47).

^{8 (1.47).}

^{[(}I. 47).

[¶] E being the bisection point of ₹ ₹.

^{\$ (}II. 5).

To both these (equals) add the square on a s. Then the rectangle as s. s a together with the square on a s, which is equal to the square on a s and a s. Again the rectangle a s. s a together with the square on a s is equal to the square on a s. To both these (equals) add the square on a s. Then the rectangle a s. s a together with the square on a s. Then the rectangle a s. s a together with the square on s s, which is equal to the squares on a s and a s. S is equal to the square on a s. But the square on s a square on s s and a s. Then the rectangle a s. s a could to the square on s s and a s. Then the rectangle a s a square on s s a square on s

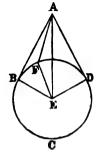
Prop. 35 p. 124-5.

The following three corrolaries follow from this Prop :-

- (1) If from a certain point without a circle there be drawn any number of lines cutting the circle, the rectangles contained by every one of them and its outward part are equal to one another.
- (2) If from a certain point without a circle two tangents be drawn, they are equal to one another.
- (3) From a point without a circle only two tangents can be drawn.

^{* (}I. 47). † (I. 47). ‡ (II. 5). § (I. 47). ¶ (I. 47). 以 表. 表面+(面表)²+(面面)²+(面面)²+(面面)²・

For if more tangents can be drawn, draw A B, A F, and AD



touching the circle. Then the angles ABE, AFE and ADE are right angles (III. 17). Therefore the angle AFE is equal to the angle ABE, which is absurd, because it is greater than ABE (I. 21).

Prop. 36 p. 125-6.

Alternative proof.

Join a w (gr is the center) and gr w. From the point gr



draw the perpendicular x = 0 on x = 0. Then the rectangle x = 0 a together with the square on x = 0 a is equal to the square on x = 0. Then the rectangle x = 0 a together with the square on x = 0 and x = 0, which is equal to the squares on x = 0 and x = 0, that is, together

with the square on x = x which is equal to the square on x = x, is equal to the square on x = x, which is equal to the squares on x = x and x = x. But the rectangle x = x is equal to the square on x = x. Therefore the squares on x = x and x = x are equal to the square on x = x. Therefore the angle x = x is a right angle. Therefore the line x = x touches the circle, and does not cut it. This was just what was wished.

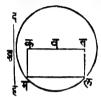
^{* (}I. 12). † (II. 6).
‡ (I. 47). § (I. 47).
¶ (Hyp.).
‖ वद्.द्ज+(जव)²=(वद)² (II. 6).
वद्.द्ज+(जव)²+(वज)²=(वद)²+(वज)².
∴वद.द्ज+(जज)²=(जद)².
but वद.द्ज=(द्ज)².
∴(द्ज)²+(ज्ञ)²=(ज्ञद)².
∴(द्ज)²+(ज्ञज)²=(ज्ञद)².
%((द्ज)²+(ज्ञज)²=(ज्ञद)².
%((III. 15).

BOOK IV.

Prop. I. p. 127.

Alternative proof.

Bisect the line a g in m.* Let a be the center of the circle.



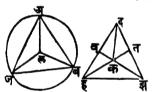
From a draw on both the sides the lines are and a a equal to a st.† From the points a and a draw the perpendiculars are and a st.‡ Join the line are. This line is a chord equal to the given line. Why?

Because it is equal to a s and therefore to a s.

Prop. II. p. 128.

Alternative proof.

Bisect the two sides a s and a st which contain the acute



angle \overline{q} in the points \overline{q} and \overline{q} . From the points \overline{q} and \overline{q} draw two perpendiculars (to the lines \overline{q} \overline{q} and \overline{q} \overline{q}) meeting in the point \overline{q} . Join the lines \overline{q} \overline{q} and \overline{q} \overline{q} . These

Proof.

The angles & wa and & aw are equal. II Also the angles & ag and & g are equal. II The angles was and a s g are

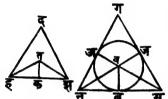
* (I. 10).	† (I. 3).	
‡ (I. 12).	§ (I. 34).	
¶ (L 10).	(I. 12).	\$ (I.4).
** (III. 1).	†† (I. 23).	
‡‡ (L 23).	§§ (I. 32 and 3 Ax.).	
¶¶ (L5).	(L. 4).	

equal.* Therefore the angles of and of and of are equal. Similarly the remaining angles may be shown to be equal.†

Prop. III. p. 128-30.

Alternative proof.

Bisect the angles at g and g by two lines. These two lines



shall meet in the point π . From the point π draw the perpendicular $\pi = 0$ on the side $\pi = 0$. Draw $\pi = 0$ is the center). At the point π make the angle $\pi = 0$ of equal to the angle $\pi = 0$. From

the point a draw the tangent. Produce this line and also a a so as to meet in a. Therefore the angle a a si sequal to the angle a si sequa

Proof.

Join आद. The side द आ is equal to द द. द न is common to both the triangles (न द आ and न द द). The angles at आ and द

^{* (}Cons.).

^{‡ (}I. 9). § (I. 12). ¶ (I. 23). || (III. 16).

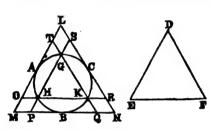
^{\$} The angles at \ and \ are equal (Cons.) and the angles at \ and \ are equal; because the angle \ is a right angle (III. 17) and the angle \ is a right angle (Cons.). Therefore the remaining angles at \ and \ are equal (I. 32 and 3 Ax.).

^{** (}I. 23).

are right angles.* Therefore the angle अनव and वनव are equal.† The angle अनव is equal to the angle द इस.‡ Similarly the angle ज सव is equal to the angle द इस. Therefore the angles द and ज are equal.

Pelitarius shews another way of describing a triangle about a circle equiangular to the given triangle.

In the circle A B C, inscribe the triangle G H K equiangu-



lar to the triangle DEF (IV. 2), so that the angles at G, H, and K may be respectively equal to the angles D, E, and F. Draw LM, MN, and NL respectively parallel to GH, HK, and KG and touching the circle

in the points A, B, and C respectively.§ These three tangents shall meet in the points L, M, and N, which can easily be proved by producing the lines G H, H K, and K G on both the sides until they cut the lines L M, L N, and M N in the points O, P, Q, R, S, and T. Then the triangle L M N, circumscribed about the circle, shall be equiangular to the given triangle. For it may be proved to be equiangular to the triangle G H K by the property of parallel lines. Therefore it is equiangular also to the triangle D E F.

Prop. IV. p. 130.

It follows that the three bisectors of the interior angles of any triangle meet in a point and this is the center of the circle inscribed in the triangle.

^{* (}III. 17).

 $[\]uparrow$ (वन)²=(वन)²+(वव)² (I. 47)=(वअ)²+(अन)² (I. 47).

 $[\]therefore (\vec{a} \vec{n})^2 + (\vec{a} \vec{n})^2 = (\vec{a} \vec{m})^2 + (\vec{m} \vec{n})^2;$ but $(\vec{a} \vec{n})^2 = (\vec{a} \vec{m})^2 \cdot (\vec{n} \vec{n})^2 = (\vec{m} \vec{n})^2 \cdot (\vec{n} \vec{n$

^{‡ ∴ &}lt;व न व = <क इ.स. <अ व व = 2 <व न व, <द इ.स = <2 के इ.स. <अ न-व = <द इ.स.

[§] Take a chord, bisect it, join the center with the bisection-point and produce the line to the circumference. From the point where it meets the circumference, draw a tangent. Then this shall be parellel to the chord.

Prop. V. p. 131.

The three straight lines which bisect the sides of a triangle at right angles meet in a point and this point is the center of the circle circumscribed about the triangle.

Prop. VI. p. 131-2.

Alternative proof (p. 132).

In the circle first draw the line g g (g is the center).



Through the point of draw the tangent of the Make of a and of a each equal to of of. Join of a and of a (meeting the circumference in the points of and of). Then the angles of and of are each half a right angle. Therefore the angle of of a fight angle. Join the line of of. Then the arc of of of one-fourth

of the circle. Draw the chords wa and द ज equal to wo, the chord of the arc was. Join wa. Then the required square is formed. How? The four sides (of the quadrilateral figure) are chords of the four quarters of the circle and the four angles are right angles.

Prop. IX. p. 133.

After this Prop. Pelitarius adds the following Prop.:-

A square circumscribed about a circle is double of the square inscribed in the same circle.

Let A B D C be the square circumscribed about the circle

B of which K is the center. Let E, F, G, and H

be the points of contact. Draw the diameters E G and F H. Join E F, F G, G H, and H E. Then there shall be inscribed in the circle a square E F G H (IV. 6). The square A BCD shall be double of the square E F G H. A B

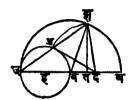
is equal to FH (I. 34). But the square of FH is double the square of which it is the diameter (I. 47). Wherefore the square of AB, that is, ABDC is double of EFGH. Q. E. D.

^{* (} III. 16).

Prop. X. p. 133-5.

Alternative proof.

Describe the circle of a with g as its center. Take any



point on the circumference. From the point of draw the tangent of a.* Make it equal to the diameter. Join the line of of the diameter. Join the line of of the describe the semi-circle of of of the diameter. This circle shall go outside the line of of the diameter. Why? Be-

cause the line a sa which is equal to a a is equal to a a. This line आह is greater than the line बह. Produce the line ज द to the point q. Again with the center q and radius q a describe the arc ar sr. This arc shall cut the arc ar sr ar at the point sr. Why? Because the line a se equal to a a is greater than a a. Join the lines say, say, and sag. Then sag and sag are equal to one another. Why? Because ब ज and द अ are equal-Again from the point m draw the perpendicular m a on the line दब.[†] Then the line दब shall be bisected in a.[‡] The angle इत ज is a right angle. Therefore the angle झ व ज is an obtuse angle. Therefore the square on m m is equal to the squares on क्रब and ब ज together with twice the rectangle ज ब. ब त.प Twice the rectangle ज ब. ब त is equal to the rectangle ज ब. ब द: and the square on a m and the rectangle m a. a c are together equal to the rectangle ज द. ज ब.॥ The square on झ ब, which is equal to the square on द आ, is equal to the rectangle ज द. व द.\$ Why? Because the line at a touches the smaller circle. The rectangles & sa. sa and sa &. & are equal to the square on

^{* (} III 16).

^{† (}I. 12).

[‡] The angles at ব being right angles and য় ব and য় ব being equal, ব ব may be proved equal to ব ব (I. 47).

^{§ (}I. I6).

^{¶ (}II. 12).

^{| (}II. 3).

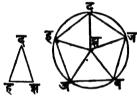
^{\$ (} III. 35).

जद.* Therefore the squares on ज झ and ज द are equal† . Therefore ज झ and ज द are equal. Therefore the angles ज झ द and ज द झ are equal.‡ But the angle ज द झ, which is equal to the angle झ व द,§ is equal to the sum of the equal angles ज झ and ज झ कार्य कार्य

Prop. XI. p. 135-37.

Alternative proof.

Taking as the center of the circle, draw any radius as



At the point of make the angle of of a country at the base of such a triangle (as is described by the preceding prop.). At the point of the line of the same sort. Again at the point

m in the line of m make the angle of m of equal to the same angle;** and at the point m in the line of m make the angle of m of the same sort). The three angles of a triangle are together equal to two right angles. The angle at the vertex of the triangle (described according to IV. 10) is equal to two fifths of a right angle. The angles made by us are (therefore) each four-fifths of a right angle. The sum of four (of these) angles is equal to three right angles plus one fifth

```
* (II. 2).
† (新河)<sup>2</sup>=(新河)<sup>2</sup>+(河河)<sup>2</sup>+2 河河, 河南(II. 12).
                                 +जब. बद्
   but (वज)2+जव. वद्=जद. जव(II. 3).
   ∴(श्रज)<sup>2</sup>=(श्रव)<sup>2</sup>+जद. जब.
              but श व=ज व=द अ∴(श व)2=(द अ)2
   ∴(शज)<sup>2</sup>=(दअ)<sup>2</sup>+जद्.जद.
       but (द अ)2 = ज द. ब द (III. 35).
   ∴(इज)<sup>2</sup>=जद्.वद्+जद्.जद=(जद्)<sup>2</sup> (II. 2).
‡ (I. 5).
                          § (I. 5).
                                                   ¶ (I. 32).
| (I. 23).
                  8 ( I, 23 ).
                                    ** (I. 23).
                                                       # ( I, 23 ).
11 (I. 32).
```

of a right angle. Therefore the remaining angle was is equal to four-fifths of a right angle.* Therefore all the five angles (at the point w) are equal. Their arcs and chords are also equal.† If the chords wa, was, was, as just what was wished.

Prop. XII. p. 137-8.

Alternative proof.

Draw the line are (ar is the center). Through the point



अ draw the tangent अ व आ. At the point म in the line अ म make the angles अ म आ and अ म व equal to the angle at the vertex of the triangle as described in prop. X.§ Produce the lines म स and म व so that they may meet the line स व in the points स and व. Therefore the angle स म व is equal to

one-fifth of four right angles. Again make the angles द म त, त म क, क म क and क म स (each) equal to the preceding angle (द म स). The circle shall be divided into five equal parts by the five angles. Make the sides equal to म द. Join द त, त क, क क and क स. Then the sides and the angles of the five triangles are equal to one another. These (the bases of the triangles) together make up a regular pentagon. Again draw the perpendiculars म द, म ज, म द, and म इ. These perpendiculars are equal to the radius म स. Therefore it is clear that the sides of the pentagon touch the circumference.

Prop. XIII. p. 138-41.

After the Pro. is proved it is shewn that the lines bisecting the angular points of the pentagon meet within the figure.

Now the lines by which the angles and a are bisected shall meet within the regular pentagon.

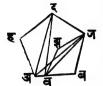
¶ (III. 15).

^{* (}I. 15 Cor. and 3 Ax.) † (III. 25 and 28).

^{‡ (}III. 16). § (I. 23).

Proof.

When the line of si is produced, it shall not go, meeting the



side आहा. If it does meet it, let it meet it in point a. Join the lines जा a and दव. Now in the triangles जा a and जा दव, the sides जा a and जा द are equal, the side जा aris common to both the triangles, and the two angles at ज are equal. Therefore the angle जा का is equal

to the angle war. But it is equal to the angle war. This is absurd. Again the line shall not pass through the point war. For if it does pass through it, then produce the lines was and war. It can been proved as in the first case that the angle war is equal to the angle war. Similarly the line shall not meet the line was shall pass meeting the side war. Therefore the line was shall pass meeting the side war. In the same way the line was may be shewn to meet the side war. Therefore these two lines was and was shall meet within the regular pentagon.

Alternative proof.

Bisecting the two adjacent sides† draw the perpendiculars



व स and त स from the points of bisection. These two perpendiculars shall meet within the regular pentagon. Why? The perpendicular व स, if produced, shall go out of the regular pentagon. It shall not meet the side व ज. Also the perpendicular त स shall not

meet the side wg. Therefore these perpendiculars shall meet on the side wg, or shall meet outside. Join wg and wg. Now because the sides and and are equal and wg is common and the angles at w and war right angles, it is proved that the angles wg and wg are equal. Either of these angles is half of an angle of a regular pentagon. Again in the triangles wg and wg at the angles wg and wg at

^{* ∴ &}lt;ज द ह= <ज द व, which is absurd (9 Ax.).

^{† (}I. 10). ‡ (I. 12).

श्रव=श्रत (I. 47) ∴ <श्रद्व= <श्रद्रत (I. 4).

Alternative proof.

Produce the side आ ज to the point ज. Again on the line आ ज draw an arc, having an angle equal to the angle ज ज ज. Let आ ज ज be the arc. Bisect it in the point ज.† Join जा आ and जा ज. Then the angles जा ज आ अ व का ज व का की Their sum is equal to the angle जा ज आ \$

Therefore each is equal to half an angle of a regular pentagon. Therefore the angles of a regular pentagon. Join of an are also equal to half an angle of a regular pentagon. Join of of, of of an angle of the triangles is clear. Again perpendiculars should be drawn on the sides from the point of. These perpendiculars shall be equal. Inscribe the circle. This was just what was wished.

^{*} I. e. equal to or greater than an angle of a regular pentagon. It shall be equal to it, if the point W is on W and greater than it, if W is outside W as in the figure.

^{† (}III. 29),

^{‡ (}I.5) : the chords 報 अ and 報 4 are equal (III. 28).

^{§ &}lt;जनग= < अझन (cons). ∴ <जनअ= <अनझ+ <न अझ. ∵ <जन
*+ <जनअ= 2 right angles and also the angles of अझन= 2 right angles.

Prop. XIV. p. 141-2.

Alternative proof.



First join was and wa. Then circumscribe a circle round the triangle was.* This circle shall go round the pentagon.

Proof.

A regular pentagon is divided into three triangles. Therefore the five angles of the pentagon are equal to the six angles of the triangles. Each of these is equal to one right angle plus one fifth of a right angle. Then the angles a w and a a w are each equal to two fifths of a right angle. Similary the angles g w z and w z z are each two-fifths of a right angle. Therefore the angle and is equal to four-fifths of a right This angle together with the angle a sa z is equal to two right angles. Again the angles of a sand of a sare together equal to two right angles. Therefore the circle (described about the triangle at a s) shall pass through the point ₹.|| If it does not pass through ₹, let it be assumed that it shall go through the point or cutting the line or or. Join or or. Then the angle अ अ ज is equal to the angle अ द ज. The interior angle is equal to the exterior angle. (This is absurd. Therefore the circle shall pass through a). Similarly it may be proved that it passes through g.

Prop XV. p. 142.

Bil. shews three other ways of inscribing a regular hexagon in a circle.

^{* (}IV.5).

 $^{+6 \}times 90^{\circ} = 540 \div 5 = 108^{\circ}$.

^{‡ ∵ &}lt;জাৰ আ=108° ∴ <জাতাৰ+ <তা জাৰ=72° (I. 32 and Az. 3). ∴ <জাতাৰ=86°.

^{§ &}lt;ब आ द= 4 × २०° = 72° + <ब ज द= 108° = 180°.

^{¶ &}lt; জাৰ জা (108°)+ < জাৰ জা (72°)=180°.

^{| (}converse of III. 21).

Let A B C D E F be a circle. In it inscribe an equilateral



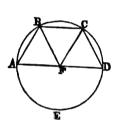
and equiangular triangle A C E (IV. 2). Therefore the arcs A B C, C D E, and E-F A are equal to one another (III. 27). Bisect each of these arcs (III. 29), and draw the right lines A B, B C, C D, D E. E F, and F A. Then the hexagon inscribed

shall be regular.

This method is ascribed to Orontius.

Alternative method.

Let A B C D E be the given circle. Let F be its center.

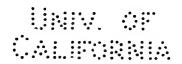


Draw any radius F A. Place A B equal to a radius in the circle (IV. 1). This then shall be a side of a regular hexagon which shall be inscribed in the circle. Join F B. Now because A B is equal to F A and it is also equal to F B, therefore the triangle A F B is equilateral and is

therefore equiangular. At the point F in the line BF make the angle BFC equal to the angle BFA or to FBA (I. 23). Join BC. Now because the triangle A-BF is equiangular, each of its angles is one-third of two right Therefore the angle A F B is one-third of two right angles. Therefore the angle B F C is also one third of two angles. right angles. Therefore the angles FBC and FCB which are equal to one another (I. 5) are each equal to one third of two right angles (I. 32 and 3 Ax). Therefore the triangle B-F C is equilateral and equiangular. Again make the angle C-FD equal to the angle BFA or BFC (I. 23). Join CD. Then the triangle F C D shall be equilateral and equiangular. Since the three angles at the point F are together equal to two right angles, A F D shall be one straight line (I. 14), and is

the diameter of the circle. If the other semi-circle be divided into as many equal parts as the semi-circle A B C D is divided into, it shall be divided into as many equilateral and equiangular triangles. Therefore A B is a side of equilateral hexagon. The hexagon is also equiangular. For half of the whole angle B is equal to half of the whole angle C.

Thus a radius of a circle is a side of a regular hexagon inscribed in it.



BOOK V.

Page 144.

प्रसाणहरूम् = Two magnitudes.

गुणगुणितसञ्जातस्य: = Equal to the less repeated a number of times; a multiple of the less.

निरवयवत्वेन नि:शेषं करोति = Divides (it) without a remainder; measures (it).

क्रम्बयम्बिभाततुस्यम् = A multiple of the less.

राशिद्वयम् = Two quantities.

निष्पत्तिः = Ratio.

विकोमनिष्यति:=Invertendo, by inversion; when in four proportionals, the second becomes the first, i. e. the second is to the first as the fourth is to the third..

Bil. calls it converse proportion by inversion.

Page 145.

विभिन्नविष्यति:=Permutando or alternando, by permutation or alternately; when in two ratios, the first term in the first ratio is to the first in the second as the second term in the first is to the second in the second, in other words, when there are four proportionals and the first is to the third as the second is to the fourth.

बोगनिक्पिः:=Componendo, by composition; when the first together with the second is to the second as the third together with the fourth is to the fourth.

Bil calls it proportion composed or composition of proportion.

विक्रोसयोगनिष्यत्तिः = is the reverse of योगनिष्यत्तिः, that is, when the first is to the first together with the second as the third is to the third together with the fourth.

अन्तरनिष्पत्तिः = Dividendo, by division; when the excess of the first above the second is to the second as the excess of the third above the fourth is to the fourth.

Bil. calls it proportion divided or division of proportion.

अन्तरविक्रोमनिष्पत्तिः is the reverse of अन्तरनिष्पत्तिः



equality of distance. Bil. calls it proportion of equality; when there is a number of magnitudes in one order (variable) and also as many other magnitudes in another order, and when the magnitudes are proportionals, when taken two and two of each order, and when it is inferred that the first is to the last of the second order of magnitudes as the first is to the last of the second order of magnitudes.

वयाकमनिष्यतिः = Ex æquali, or orderly proportion. Bil. calls it ordinate proportionality.

क्रमरहिता निष्पत्तिः = Bil. calls it inordinate proportionality. Prop. 3. p. 147.

प्रथमप्रमाणं यद्वणगुणितं तेनैव गुणकेन तृतीयं गुणनीयं = Equimultiples of the first and the third should be taken.

Prop. 12 p. 155.

This Prop. is given as Prop. 13 in Todhunter's Geometry (Vide p. 154-5.).

Prop. 13 p. 156.

This Prop. is Prop. 12 in Todhunter's Geometry (vide p. 154).

Prop. 25 p. 170.

श्वअज्ञतप्रमाणयोगो ह्योचींजनीयः = Add य अ + स त to both; i.e. to य व and त द. य व>त द∴य व+य अ+ऊ त>त द+य-अ+ऊ त∴अ व+च त>ज द+य-अ∴अ व+क्क्र-क द+इ-अ

BOOK VI.

Page 171.

एकरूपनिष्पत्तियुक्ताः = Proportional.

संजािवानि = Similar.

केन्द्रकः = The altitude of a figure.

त्रेराधिकरूपा = A straight line cut in extreme and mean ratio. Bil calls this line 'A line divided by proportion having a mean and two extremes.'

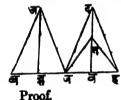
Prop I. p. 171-3.

Alternative proof (p. 172-3).

What is called alternative proof is really speaking the converse of Prop I.

Those figures which are to one another as their bases have equal altitudes.

The triangles अवज and द जह are on the base बह. The



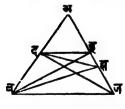
ratio of these triangles is assumed to be equal to that of their bases a m and m.
Then the perpendiculars as m and a shall be equal to one another.

If they are not equal, then let and an and an an be assumed to be equal. Join an and a a. Then the triangles and an and a a are as their bases a mand a a.* Thus the ratio of the triangle and an are is the same. Therefore the triangles and an are are equal. This is absurd. Therefore what we required to prove is alone correct.

Prop. II. p. 173-4.

Alternative proof (p. 174).

If the line q g be parallel to the line q m, but the ratio of



the parts of and a se be not equal to that of the parts of and a se, then let it be equal to that of of a se and a se. Join of an and a se. Then it is clear that the triangles a se and a se are equal.†

Therefore it can be ascertained by proof

^{* (}VI. I.). † (Alternative proof. VI. 1).

that $z \in z$ is parallel to $z \in z$. Therefore $z \in z$ and $z \in z$ are both parallel to $z \in z$ and therefore parallel to one another.† But they meet one another. This is absurd.

Prop. III. p. 174-6.

Alternative proof (p. 176).

From the point & draw the perpendicular & on the side &-



and and an on the side was. Then if the two parts of the angle and be assumed equal, then these perpendiculars shall be equal. Why? The two angles at the point ware equal; the angles at and ware right angles, and the side wa is common to both the triangles. Therefore the lines are and an are equals altitudes in the triangles was and

ज अ द. Therefore the triangles व अ द and ज अ द are as their sides व अ and ज अ श. Again these triangles are as to their sides व द and द जा।. Therefore the ratio of व द and द ज is equal to that of व अ and अ ज.

Again if the ratio be such, then the angle shall be bisected. Why? The ratio of the triangles is equal to that of a and a and also equal to that of a st and a st. When a st and a st are assumed as bases, the ratio of these triangles shall be equal to that of their bases. Therefore the perpendiculars a st and a shall be equal. The side at a is common to both the triangles. Therefore the angles and a st at a shall be equal.

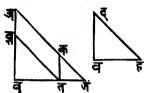
^{* (}I. 39). † (I. 30). ‡ (I. 12). § (I. 26). ¶ (VI. 1). \$ (Alternative proof VI. 1).

⁺ 新夏=新朝 (I. 47) and the angles at m are equal (I. 8).

Prop. IV. p. 176-7.

Alternative proof (p. 177).

In the triangles of a st and a a g let the angles of and a be



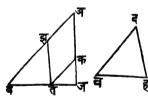
equal to one another, also the angles and and the angles and and the equal to one another. If the sides are and a and a second the equal, the remaining sides shall also be equal* and

what is promised to be proved shall be proved. But if wa and a set be not equal, let we be assumed to be greater. From it cut off a set equal to a s.† Draw the line set a parallel to a s.‡ Then the triangles set a and a set shall be equal.§ we shall be to set as a set to a s.¶ and we shall be set as as a to a s.¶ and we shall be set as a set to a s. Therefore we as is to a as a set to a s. Again if a se be drawn parallel to a set, it can be proved that we is to a a set as a set to a set. This is just what was wanted.

Prop. V. p. 178-9.

Alternative proof (p. 178-9).

In this case the figure is the same as in the alternative proof



of the fourth Prop. Let m a m and q a g be two triangles. If their sides are equal, what we wish is proved. If they are not equal, let m a be greater than q a. Cut off a m equal to a g, a m equal to a g

and we to ge. Join wa and as. Then the ratio of wa to ma which is equal to ge shall be equal to that of we to which is equal to ge. Therefore we shall be to we as as a to a s.** Therefore the line was shall be parallel to we we!

^{* (}I. 26). † (I. 3). ‡ (I. 31).

^{§ (}I. 26), the angle इत्त व is equal to the angle क ज त (I. 29) and consequently to the angle द इ व.

^{¶ (}VI. 2).

^{|| (} V. 18).

^{\$ (}I. 3).

^{** (}Converse of V. 18).

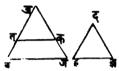
In the same manner as may be shown to be parallel to as.

Then as shall be equal to as.* The sides of the triangles as and as a shall be equal. The angles of the triangles as and as a shall be equal.† Therefore the angles of the triangles as an and as a shall be equal.

Prop. VI. p. 179-80.

Alternative proof (p. 179-80).

If the sides wa and wa sa be equal to g and a ga, then what



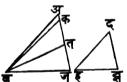
we promised to prove is proved. But if they are not equal, let we and we be greater (than grand qu). Cut off we equal to qual to qual to

Therefore a shall be to a sa as a sa to a s.

Therefore a shall be to a sa as a to sa. Therefore a a and a shall be parallel to one another. Therefore the angles of the triangles a sa a, a sa s, and g a shall be equal.

Prop. VII. p. 180-1.

In the preceding Prop. (Prop. VII. preceding figure) it is



said that the angles wand war may be less
than a right angle or not. This is what
we mean by it. Let the two triangles
war wand war be similar; and acuteangled. Let war be greater than war.

From the point a draw the perpendicular a a on a w.\$ Therefore a a is greater than a w.** Again cut off a se equal to a w.!! Again in the triangles as a sand a se and a se an

^{* (}I. 34). † (.I. 29).

^{‡ (}I. 3). § (Converse of V. 18).

^{¶ (}VI. 2). | (I. 29 and I. 4).

^{\$ (} I, 12). ** अव> वज∴ <अजव> <वअज(I. 18).

^{∴ &}lt;ज वत < the angle अ वत (I. 32 and 5 Ax.).

[∴] चत <अत(L 19). †† (I.3). ‡‡ (I.4).

अब is to द ह as ब क which is equal to ब ज is to ह झ. These two triangles are not similar. Why? Because the angle ब क आ is greater than a right angle, and the angle ह झ द is less than a right angle.

Thus the meaning is that both the remaining angles should be acute or obtuse. It will not do if one is acute and the other obtuse.

Again it is said, 'let the angle be either an acute angle or not.' It is not said, 'let it be an acute or an obtuse 'angle.' Why? Because a right angle is also desired.

In other words, समकोणास्यूनो भवतु मा वा भवतु = Each of the remaining angles may be either less or not less than a right angle or one of them may be a right angle. But if the expression न्यूनकोणो भवतु वाऽधिककोणो भवतु वा were used in place of 'समकोणास्यूनो भवतु मा वा भवतु', right angles would have been excluded, each of the remaining angles would, in that case, have to be taken as either acute or obtuse.

Prop. VIII. p. 181-2.

अस्मादोत्रादिदं निश्चितं &c. p. 182=From this Prop. it follows that the perpendicular (drawn from the right angle of a right-angled triangle) is a mean proportional between the segments of the base, and that each of the sides is a mean proportional between the base and the segment of the base adjacent to that side.

MINITA = Segments of the base.

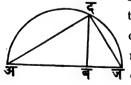
Prop. IX. p. 182-3.

This is Prop. XIII. in English books, in Bil. and in Greg.

Alternative proof (p. 182).

(Take two unequal lines). Let one line be placed on the other. Making the larger line a diameter, describe a semi-circle. From the end

of the smaller line draw a perpendicular meeting the circumference. Draw another line from the point where the per-

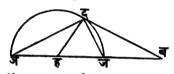


pendicular meets the circumference to the end of the line. This line shall be the required line. This is evident from the preceding figure of the proposition.

अवजा is the greater line and the smaller line being placed on अज stands as ज्ञान. Complete the figure as shewn in the text. Then जान is to जान as ज्ञान to आज (VI. 8 Cor.). Thus जान is the mean proportional between ज्ञान and ज्ञान or the smaller line.

Another alternative proof. (p. 182-3).

Assuming the difference of the two lines as w , describe a



semi-circle. Let it be a a z.
From the point a draw the tangent a z.* This line shall be a mean proportional between the

lines अन्व and बज.

Proof.

Join q w, q w, and q g.† Then the angles w q w and q q g are, each, a right angle.‡ From these take away the angle g q w. Then the remaining angles w q and g q w shall be equal. Also the angles g q w and g w q are equal. Therefore in the triangles w q and w q w, the angle w is common, and the angles w w and w w are equal. Then the angles w w and w w q shall also be equal.§ Therefore the ratio of w w to w w shall be equal to that of w w to w w.¶

From this proposition it follows that if the perpendicular drawn from the point where two lines meet be the mean proportional between the two lines, then the semi-circle that can be drawn with the sum of the two lines as diameter shall meet the end of the perpendicular.

Prop. X. p. 183-4.

This is Prop. XI. in English books, Bil. and Greg.

^{¶ (}VI, 4).



^{* (} III. 16).

^{1 (11}E. 30, and 17).

^{† 5} is the center of the circle.

^{§ (}I. 32 and 3 Ax.)

Alternative proof (p. 183-4).

Let a right angle be formed by the two given lines. Let it



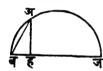
be w. Draw the hypotenuse w. Describe the semi-circle www. From the point we draw the perpendicular way on the line www.*

Produce the line www so as to meet the line way in the point w. Then way shall be the required line. How? Because the perpendicular way is drawn from the right angle won the hypotenuse. Therefore the ratio of

व अ to अ ज shall be equal to that of अ ज to अ द.†

Another alternative proof (p. 184).

Describe a semi-circle a sa sa on the greater line. Draw the



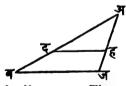
chord we equal to the smaller line. From the point we draw the perpendicular we on the line was: Then we shall be the required line. This is evident from what is stated above.§

Prop. XI. p. 184-5.

This is Prop. XII. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof (p. 185).

Let the first line and the second line be w w and w w. Let



them meet in the point of so that the angle of of may be formed. Join the line of of the third line. Let it be placed on of of. From the point of draw the line of of parallel to

‡ (I. 12).

the line a s. Then a s shall be the line we want. I

Prop. XII. p. 185-6.



^{* (}I, 11). † (VI. 8 Cor.).

[§] If জাতা is joined, ৰ সাত্ৰ shall be a right-angled triangle. Therefore ৰ তা shall be to ৰ জা as ৰ জা is to ৰ ই (VI. 8 Cor.).

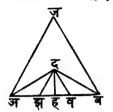
च अद्: द्व:: अह: हज (VI, 2)∴ अव: अद:: अज: अह (V. 18)

[∴] अवः अजः: अदः अहः (V. 16).

This is Prop. IX. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof of trisecting a line (p. 185-6).

Take a line w and upon it describe the equilateral triangle



अवस्तः* Bisect the angles अ and ब by lines meeting in the point इ.† Bisect the angle अवस्व by the line दह, and the angles अवस्व and बद्द by lines दह and दह.

Then the line अव is trisected in the points अवति व.

Proof.

An angle of an equilateral triangle is equal to two-thirds of a right angle. Therefore the angles a wa and a way are each one-third of a right angle. Then the angle are is equal to one right angle together with a third part of it. Again the angles a z m and z z a are each equal to one third of a right The angles st at a and st a are equal to one another. Therefore a sq and a s are equal to one another. Similarly the lines a and a are equal to one another. Again the sum of the angles of and of the angles of and of the angles of and of (= = =) is equal to two thirds of a right angle. Therefore the angle of a right angle. Then the angles 7, 57 and 3 are each equal to two thirds of a right angle. || Therefore the sides द झ, झ व, and व द are equal. But अ झ is equal to द झ and द द to द द. Therefore अ झ. झ द, and a are equal. This is just what we wanted.

It may be noted that though the enunciation states क्यान विभाग:, a particular case only, viz. तृतीयांशविभागकरणम्, is given in the book.

Prop. XIII. p. 186-7.

This is Prop. X. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XV. p. 188-9.

* (Ί.	1	١.
			٦٠.

^{† (}I.9).

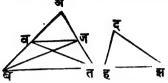
^{‡ (}I. 9).

^{§ (}I.6).

^{¶ (}I. 82 and 3 Ax.).

Alternative proof (p. 188-9).

Assume the angles अ and द of the triangles अ व ज and द ह झ



and a g be equal, then what we want is evident. Because the two triangles are equal. Be-

cause the two triangles being equal, the sides wa and a sushall be equal. How? If the side wa be placed on the side a sund the angle (w) on the angle (a), if the side wa does not fall on the side a su, then it must be greater or smaller. Therefore if the sides wa sund a sun be equal, then the same ratio shall be arrived at.

Again if the sides be in this ratio, then as an and a sa shall be equal and the two triangles shall also be equal.

But if the sides we and a ge be unequal, let we be the greater of the two. Cut off we equal to a ge from we. Join wa. Then if the two triangles be equal, then the side a must be greater than the side wa. Why? Because if it be equal to it or less than it, the triangle a ge whall be less than the triangle was. Again make wa equal to a m. Join the lines a wand a war and also to the triangle was. (Therefore the triangles was and was shall be equal to one another). From these take away the triangle was. Then there remain equal triangles was and was and was and was. Therefore the line was shall be parallel to a a.§

Again if the two ratios be equal, then the line we we, which is equal to we shall be less than the line we. Then the line we we shall be less than we we. Complete the figure. Then by the equality of the two ratios it is clear that the triangles we-

षु ∴ अवःववः: अजः चत्(VI, 2) ∴ अवः अव : अतःअजः(V. 18) ∴ अवः बृहः:बृह्ः अजः



^{* (}VI. 4). † (L 3). ‡ (L 3). § (I. 39).

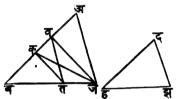
व ज and व त ज are equal.* Add the triangle क व ज. Then the equality of the triangles shall be evident.

Prop. XVIII. p. 191-2.

This is Prop. XIX. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof (p. 191-2).

If we be equal to we, the two triangles shall be equal.



This is evident. But if they are not equal, let \(\epsilon \) be less than \(\epsilon \) \(\e

the lines a w, a d, w w and w d. The ratio of a w to w d being equal to that of w a to w w, it is evident that the lines w d and w w are parallel. The equality of the triangles w d and w w is proved. But the triangle w d is equal to the triangle w d w d and w w is equal to that of w d to w w is equal to that of w d to w w is equal to that of w d to w

Prop. XIX. p. 192.

This is Prop. XX. in English books, Bil. and Greg.

Prop. XX. p. 193.

This is Prop. XVIII. in English books, Bil. and Greg.

Prop. XXIII. p. 195.

This is Prop. XXIV. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXIV. p. 195-6.

This is Prop. XXVI. in English books, Bil., and Greg.

¶ (VL 10).

^{* (}VI. 2 and I. 37).

^{† (}I. 26). ‡ (I. 3).

^{§ (1. 3).}

^{|| (}VL 2).

^{\$ (} VI, 15).

^{** .. △} वक्ष ज= △ दहहा.

H (VI. 1.).

Prop. XXV. p. 196.

This is Prop. XXIII. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXVI, p. 196-67.

This is Prop. XXV. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXVII. p. 197-98,

Propositions XXVII., XXVIII., and XXIX. are omitted in English books, 'as they appear now to be never required, and have been condemned as useless by various modern commentators.

They are given in Bil. and Greg.

If a parallelogram be described upon half the given line, and if upon a greater part of the line a parallelogram is so described that the figure on the remaining part of the line may be similar to it, then the figure on half the line shall be greater than that on the greater part.

Let we be the given line. Bisect it in . Apply the paral-

I lelogram was to the line wa. Complete the figure of g. Let of g be the greater part of the line ar w. On r it describe ar a so that the figure on

the remaining part, viz. a s. may be similar to sa s. Then the figure of a shall be greater than or .

Proof.

Join the diagonal = a. Now the figure = a is equal to a m.* an is greater than ma. Therefore mais greater than mas. But m s is equal to m s.+ Therefore m is greater than m s. Add at a to a s. The result is the figure at s. Again add wa to ga. The result shall be the figure was. This is the figure on half the line. This shall be greater than the figure on the greater part. This is just what was wished.

This Prop. contains a theorem relating to the theory of maxima and minima.

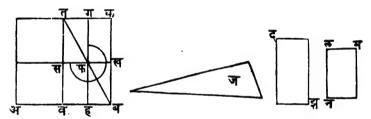
^{* (} I, 36).

'If a parallelogram is divided into two by a straight line cutting the base, and if on half the base another parallelogram be constructed similar to one of those parts, then this third parallelogram is greater than the other part.'

Prop. XXVIII. p, 198-9.

On a part of a given line to describe a parallelogram that shall be equal to a given rectilineal figure, so that the figure produced on the other part shall be similar to another given figure. The figure, to which the parallelogram is to be made equal, shall not be greater than the figure formed on half the line, which should be similar to the given figure.

Let sq a be the given line. Let sq be the figure to which



^{*} i. c. the parallelogram to which the defect of the parallelogram on the greater part of the given line is to be similar.

^{+ (}I. 10).

^{‡ (}VI. 20).

^{§ (}VI. 21).

^{¶ (}I. 3).

^{| (}I. 31).

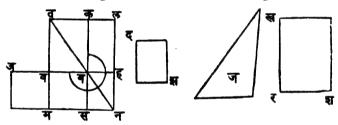
Proof.

सन, equal to न सन, is equal to the difference between अत, which is equal to च क, and ज. Therefore the figure स क स, equal to च क, shall be equal to ज. Therefore the figure क क is constructed on the part क ह of the line क व and is equal to ज. The figure ह ज, formed on the other part ह ज, is similar to the figure ह ज. This is just what we wished.

Prop XXIX. p. 199-201.

Upon a right line of which the given line forms a part to draw a parallelogram which shall be equal to a given rectilineal figure so that the figure on the excess of the line over the given line shall be similar to another equilateral quadrilateral figure.

Let we be the given line. Let we be the figure to which an



equal figure is to be drawn. Let \mathbf{q} \mathbf{q} be a similar parallelogram. It is required to apply to the line \mathbf{q} \mathbf{q} a parallelogram equal to the figure \mathbf{q} so that \mathbf{q} \mathbf{q} may become a part of a side of it. On the excess of that side over \mathbf{q} \mathbf{q} the figure described shall be similar to the figure \mathbf{q} \mathbf{q} .

Bisect we in at: On we describe the figure as similar to a signs. Describe the figure as equal to the sum of the figures we and as so that it may be similar to a sign. Then the figures as and as shall be similar to one another. Assume the angles and a to be equal and the sides as and a to be similar. Produce the side as so that as may be

^{ैं .:} काग=सह, add फार्च .: गर्य=सव=अस; add वर्फ

[∴] गव=सव=अस. Add वक

[:] সদ=the gnomon स প ব.

 $[\]dagger$ *I. e.* a parallelogram which shall be similar to the figure on the excess of the line over the given line.

^{‡ (}I. 10). § (VI. 20). ¶ (VI. 26). ∦ (VI. 21).

equal to τ w. Produce also the side τ so that τ so may be equal to τ w. Again from the points τ and τ draw τ and τ and τ parallel to τ and τ and τ . Complete the figure. Then τ shall be the figure required.

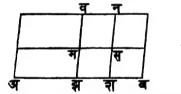
Proof.

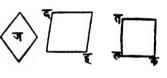
The figure π as is equal to the figure π and is equal to the sum of the figures π and π π . †Therefore (the gnomon) π π π , which is equal to π π , shall be equal to the figure π . This is what is wanted.

Alternative proof.

It is required to construct a parallelogram equal to the figure we on the line way so that on the excess of a side of it over we there may be formed a figure similar to we so.

Besict we in sat; On we st describe the figure we a similar to we. S Complete the figure we we. Now the side of the figure





which is to be constructed is either greater or less than wall it it be less, it is evident that the figure of must be greater than the figure of the figure of be equal to to wall, then the required figure is constructed. But if it is not so, let wall be the difference between the (required) figure and of. If the side is to be greater than the line wall, then take the sum of both (wall and of). Draw the figure of of similar to of of, equal to the difference or the sum (of wall and wall). This figure shall be similar to of of. Let the angles of and of be equal and the sides of of and of of of of the similar. Therefore make of of the sides of of of the similar. Therefore make of the sides of of the sides of of the sides of th

^{• (} I. 31).

[†] सङ=क सं =ज+वक; subtract वक. ∴सङ—वकः i. e. वनक=ज. Again because अस=वस (I. 36); but वस=क ह (I. 43). ∴अस=क ह, add वन. ∴ज-न=वनक.

^{‡ (}I. 10). § (VI. 20). ¶ (VI. 26). || (VI. 21).

equal to so a, and we to so so.* Draw the lines a so and we parallel to the sides of the figure way. Then the figure so shall be equal to so and the figure so st, which is formed on the difference between the side of the figure so so and the line so so, shall be similar to so.

If the figure to be constructed is required to be a square, then bisect as a in z. If the figure as is equal to the square on half the line bisected, and the side is less than the line, then on half the line there shall be the square required. But if the figure w is not equal to it, then describe a square equal to the difference between the square on half of wand w. If the side is required to be greater than the line, then describe a square equal to the sum of both (the square on half ar and 3). Again describe a square and cut off from half the line ... a portion equal to a side of the square. Let it be a . the side is less than half the line, then do so. But if it be greater, then add w to half the line. Then a figure equal to the rectangle w. . w shall be the required figure. Why? Because the difference between the rectangle at g. g and the square on washall be the square on was and the difference between the rectangle ag. g and the square ag shall be the square on z z.

Prop. 28 and 29 contain problems which may be said to be solutions of quadratic equations. They come to what follows:—

"To describe on a given base a parallelogram and to divide it either internally (Prop. 28) or externally (Prop. 29) from a point on the base into two parallelograms of which the one has a given size (is equal in area to a given figure) while the other has a given shape (is similar to a given parallelogram).

If we express this in symbols, calling the given base a, the one part x, and the altitude y, we have to determine x and y in the first case from the equations.

$$(a-x)y=k^{2}$$

$$\frac{x}{y}=\frac{p}{q}$$
• (1.3.).

 k^2 being the given size of the first, and p and q the base and altitude of the parallelogram which determine the shape of the second of the required parallelograms.

If we substitute the value of y we get

$$(a-x) x = \frac{pk^2}{q}$$
or
$$ax-x^2 = b^2$$

Where a and b are known quantities, taking $b^2 = \frac{pk^2}{q}$

The second case (Prop. 29) gives rise in the same manner to the quadratic

 $ax + x^2 = b^2$.

(Vide Encyclopædia Britannica p. 376).

Prop. XXX. p. 201-2.

'It leads to the equation $ax + x^2 = a^2$. It is only a special case of the last and an old acquaintance, the same problem as proposed in Book II. Prop. XI.'

Prop. XXXI. p. 202-3.

This is Prop. XXXII. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXXII. p. 203-4.

This is Prop. XXXL in English books, Bil., and Greg.



APPENDIX.

Collation of the Ms. (V.) of the Rekhåganita in the Benares Sanskrit College Library, the one copied by Lokamani under instructions from Jayasimha.

BOOK I.

The Ms. begins with सिद्धिः श्रीगणेशाय नमः and gives the following as the first two verses:—

गजाननं गणाघिपं सुरासुराचितं सदा । समस्तमककामदं शिवासुतं सुखप्रदम् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्तिनम् । प्रशस्तभूतिभूषितं नमामि विघ्नवारणम् ॥

- Page 1 L. 9 The Ms. notices श्रीगोविन्दसमाह्मयादिपुरुवान् as another reading.
 - " L. 11 The Ms. notices दर्पसमुमतान् as another reading.
- Page 2 L. 2 गणिते तथा ॥
 - " L. 5 तदुच्छिमं
- Page 3 L. 1 अथ रेखागणितम्।
 - " L. 2 अथ उकलीदप्रन्थो लिख्यते । अत्र प्रन्थे पबद्शाध्यायाः सन्ति अष्टसप्तत्युत्तरचतुःशतं शकलानि सन्ति ।
 - .. L. 3 शक्लानि सन्ति ॥
 - $,, \quad extbf{L.} \quad ext{5} \ ext{स बिन्दुर्वाच्यः ।}$
 - " L. 7 विस्तारदैर्घ्ययोर्थद्भियते तद्धरातलं देवक्षेत्रम् । तद द्विविधम् । एकं जलवत् समं द्वितीयं विधमम् ।
 - , L. 10-11 °बिन्दुनाच्छाद्यन्ते सा सरलान्यया कुटिला।
 - " L. 12-13 धरातलमपि समं विषमं च हेयम्। समं यथा। यत्र बिन्दून् &c.
 - " L. 15 The Ms. drops अन्यथा विषमम्।
 - " L. 17 स कोणः।
 - " L. 18 समकोणो विषमकोणख । अथ समकोणविषमकोणलक्षणम् । समानरेखायां &c.
 - " L. 19 लम्बरूपे भवतः ।

```
Page 4 L. 4 समकोणस्तु सरलरेसाभ्यामेव भवति ।
           L. 5 विषमकोणः सरलरेखाभ्यां क्रटिलरेखाभ्यां च भवति ।
           {f L}. 7 क्षेत्रसंज्ञमुच्यते ।
           L. 8 The Ms. drops तच.
           L. 11-12 सर्वतः कृत्वा तस्मादेव बिन्दुतः सर्वाणि सूत्राणि वा
                     स्पृशति कुटिला रेखा तद्वत्तं ज्ञेयम् ।
 Page 5 L. 1 मध्यविन्दु: केन्द्र°.
           L. 2 Hand for Runa.
    ,,
           L. 4 केन्द्रगा न भवति पालिसंलमा स्यात्-
           {f L}. 10 त्रिविधं त्रिभुजं
           L. 11 तत त्रिभुजं समकोष°
           L. 12 यत्रैको°.....तद्धिककोणं त्रिभुजं...
    ,,
Page 6 L. 1 The Ms. drops =.
                     °स्तम्यूनकोणं भवेत् ।
           {f L}. 3 अथ च कोणचतुष्ट्यमपि ।
           {f L}_{f c} 5 अथ व सन्भुखबाहुद्वयं मिषः समानं.
           L. 6 आयतं च क्रेयम्।
           L. 7 The Ms. drops ₹.
                     विषमकोणं सम°
Page 7 L. 1-2 विषमकोणं विषमचतुर्भुषं च ज्ञेयम् ।
           {f L}. 6 °बान्यरेस्तया युक्ता
   ,,
          {f L}_{f r} 7 °योगेन । दर्शनम्—
          L. 8-14
                  The word राशि is corrected into रेखा al-
                     through.
Page 7 L. 11-12 The Ms. drops च and अपि.
          {\bf L}. 13 वे च राशयः
          L. 16 ते पूर्वमपि
          L. 17 तेऽपि सर्वे
          L. 18 राशिः रेखा वा
          {f L}. 19 क्षेत्रं प्रसिद्धानि
Page 8 L. 1 The Ms. drops अथ.
```

चिह्नोपरि तिष्ठति.....रेखा तिष्ठति

L. 2 °धरातले तिष्ठतीति प्रसिद्धम् ।

Digitized by Google

Page 8 L. 5 ये चिहे भवतस्तयोहपरि सरलैकरेखा

- " L. 8 सर्वे समानाः
- . \mathbf{L} . $\mathbf{9}$ अथ सरल $^{\circ}$
- " L. 11 The Ms. has the words किन्तु विषमान्तरं भवति struck off.
 - ${f L}$. ${f 13}$ यत्राल्पमन्तरं भवति
- " L. 20 तत्र is dropped.

Page 9 L. 2 द्वितीय is dropped.

- " L. 4 a is dropped.
 - L. 5 एवमत्र is dropped.
 - L. 5 जातं समानत्रिभुजम् ।
- " L. 7 अत्र is dropped.
- " L. 8 °समानास्ति । कुतः । अज
 - , L. 9 पुनर is omitted.
- " L. 12 तत्र is dropped.
- .. L. 14 रेखा बजम ।
- .. L. 18 = is dropped.
- " L. 19 पुनर is dropped.

Page 10 L. 1 'द्शरेखासमानास्ति।

- " L. 2 तत्र is dropped; द्व रेखासमाना।
- " L. 3 च and पुनर are dropped.
- " L. 4 T is dropped.
- .. L. 8 इति चेत is omitted.
- .. L. 9 तत्र is dropped.
- .. L. 10 निष्कासनीया
- " L. 13 अझरेखामद्रेखासमाना
- " L. 16 चतुर्थशकलम् ॥
- " L. 19 यदि भवति

Page 11 L. 5 समानी for च समी

" L. 10-11 तत्र is dropped. न्यसेत् for न्यस्ता, न्यस्तः and न्यस्तम्.

Page 11 L, 12 तदा is omitted.

" L. 14 शकलम् for क्षेत्रम्. ४२

Page 11 L. 15 तत्र is dropped.
L. 16-17 अथ is dropped.
स्वमार्गवृद्धं कृतं सत्समुत्पन्नं कोर्ण
,, L. 20 अबरेखा वर्धनीया दृपर्यन्तंअतुरेखा वर्धता।
Page 12 L. 9 पुन: is dropped.
,, L. 13 तत्र is dropped.
,, L. 17 ₹ is dropped.
,, L. 20 एवं is dropped.
" L. 22-24 पुन: and एवं are dropped.
Page 13 L. 1 अय षष्ठक्षेत्रम्.
,, L. 5 तत्र is dropped.
$_{oldsymbol{,,}}$ \mathbf{L} . 8 कल्पितम् ।
" L. 10 एवं is dropped.
$_{\cdot,\cdot}$ $_{\cdot}$ $_{\cdot}$ $_{\cdot}$ $_{\cdot}$ 13 भवति ॥
" $ extstyle $
,, L. 15 रेखादूयं नि:स्रतं
$,, \qquad ext{L. 16}$ $^\circ$ द्वयमिल्रनं न भवति ॥
Page 14 L. 2-3 अथ च is dropped.
Page 14 L. 4 तदा is dropped.
,, L. 10 अयाष्टमशकलम् ।
" L. 21 तदा is omitted.
Page 15 L. 8 नवमक्षेत्रम् ।
" L. 17 अझमुभयो°
,, L. 21 भवेत् for भवति.
Page 16 L. 2 समी जाती।
,, L. 11 °द्धांकरणम् ।
" L. 12 तत्र is dropped.
,, L. 17 °क्षेत्रोक्तोपपत्या
$_{,,}$ $ m L.~21$ दशमक्षेत्रम् ।
Page 17 L. 9 °कादशक्षेत्रम् ।
,, L. 15-16 इयमेव लम्बः ।
Page 18 L. 12 प्रनः is dropped.
9 G I I

Page 18 L. 14 द्वादशशकलम्।

 ${
m L.}$ 17 निष्काशितो $^{\circ}$

Page 19 L. 4 = is dropped.

" L. 6-7 तस्मात् and जाताः are dropped.

" L. 8 जातः is dropped.

Page 20 L. 2-3 तत्र is dropped.

रेखाया उभयदिशि कोणद्वयं जातं तत्।

" L. 8 यदा is omitted.

" L. 10-11 अथ and तदा are omitted.

 ${f L}$. 12 द्वितीयकोणे is omitted.

 $_{,,}$ L. 18 निष्काशित $^{\circ}$

The enunciation of Prop. 14 is given as noted in the foot-page on p. 20 रेखाद्वयमन्यरेखया &c. and the enunciation in our text is noticed in the margin.

Page 21 L. 3 जातौ is dropped.

. L. 5-6 तदा and तत्र are omitted.

.. L. 8 जातौ is dropped.

,, L. 11 इति is dropped.

,, L. 20-1 अस्ति and स्तः are dropped. दूरीकृतस्तदा.

,, L. 22 जातम् is dropped.

Page 22 L. 1 = is omitted.

 $_{
m J}$ $_{
m L}$. $_{
m 5}$ $^{
m c}$ पार्श्वस्थितान्यसन्युखकोणाभ्या $^{
m c}$.

.. L. 8 and 12 तत्र is omitted.

, L. 12 च is dropped.

" L. 13 a is dropped.

.. L. 17-18 तदा is omitted.

Page 23 L. 7 इदमेवास्माकमभीष्टम् for तस्मादुक्तमेवोपपन्नम् ।

" L. 12 स्त: is omitted.

.. L. 14-15 अजदकोणः अजबकोणश्चानयोर्योगः

" L. 17 ब कोणः अजबकोणश्चानयोर्योगः

.. L. 18 अनेन प्रकारेण for एवम्. यथोक्तम् is dropped.

Page 23 L. 19 शक्लम् for क्षेत्रम्।

L. 20 तत्र is dropped.

Page 24 L. 4 यदि is dropped.

,, L. 5 कार्या for कियते.

.. L. 10 °प्रकारान्तरेण.

" L. 11-12 च is dropped. अवद्कोण: अद्वकोणश्रेती

,, L. 14-15 महानस्ति **अवज**कोणात्

,, L. 17 यथोक्तम् is dropped.

., L. 18 प्रकारान्तरेण.

Page 25 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

, ${f L}$. 18 कुतः for अत्रोपपत्तिः.

,, L. 20-21 = is dropped.

" m L. 23-24 $^{\circ}$ दिविकोऽस्ति ॥

Page 26 L. 9 The sentence beginning with तसाद° is omitted.

, L. 11 पुनर्विशतितमं क्षेत्रं तृतीयप्रकारेणाह् for पुनः प्रकारान्तरम् ।

" L. 12 तत्र is dropped.

 $,, \qquad \mathbf{L.} \; 13 \;$ भविष्यति वा ।

" L. 15 तदा is dropped.

 $_{p,p}$ L.~17 जअद्कोणः ब्रुट्कोणक्षेमी ।

" L. 18 पुनः is dropped. जद्भकोणः बद्भकोणवैतौ।

 ${f L}.~19$ जअव्कोणः खअव्कोणश्रेमौ कोणी.

" L. 20 The Ms. drops from त्रिमु° to भवति ।

 ${f L}$. 24 जातः is dropped इदं बाधितम् ।

Page 27 L. 21 पुनरेकविंशतितमं क्षेत्रं द्विती°.

 $Page 28 L. 4 तदा बस्थ अह्योगो बहु<math>^\circ$

,, L. 5 इदं बाधितम् ।

" L. 11 तिहै is omitted.

" L. 13 तुल्यः स्यायदि जदं जझेन तुल्यं स्यात्। पुनर्जझद्कोणो जदझकोणादिषकः स्यायदि जदं जझादिषकं स्यात्। तदनन्तरं

" L. 21 बेत and तत्र are omitted.

" L. 24 इदं बाधितम्. The Ms. notices इदमनुपपन्नम् also.

Page 29 L. 11-12 कर्त्तव्यमित्यपेक्षास्ति ।

तत्र त्रयो भुजाः कल्पनीयाः । भुजद्वययोगस्तृतीयभुजाद्धिको भवति यथा तथा कल्पनीयास्ते त्रयो भुजाः ।

 \mathbf{L} . 13 \mathbf{a} is dropped.

,, L. 18 पुनर् is dropped.

,, L. 20 तदा is omitted. अस्ति for भवति. पुनर् is dropped.

 \mathbf{L} . \mathbf{L} . \mathbf{L} 1 तत्र is dropped.

Page 30 L. 1 न and पुनर् are dropped.

" L. 3 अथ is omitted.

,, L. 4-6 भवति । इदं किमर्थमुक्तम् । पूर्वमुपपत्त्या साधितमस्ति रेखाद्वययोगस्तृ......प्रतिपादितमस्ति । अतः कारणा-

" L. 17 एवं is dropped.

" L. 19 इति is dropped.

Page 31 L. 11 भवति for कार्यम्

,, L. 18 चास्ति is omitted.

,, L. 19 अस्ति is dropped.

" L. 22 स्यादेव । अत्र किं चित्रम् ।

Page 32 L. 1 stay is dropped.

,, L. 7 एवम् and अस्ति are dropped.

" L. 8 अपि is dropped.

,, L. 10 अथ प्रकारान्तरेण चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ।

" L. 18-19 व्झव्चरेले कार्ये तकपर्यन्तम् । झवरेला च कार्या is dropped.

,, L. 20-1 तझवकोणः कवझकोण एतौ तुल्यौ.

., L. 22-3 एवम्, त and तदा are omitted.

Page 33 L. 2 = is dropped.

" L. 7 **প্রান্তা**ন্য ব্যব্

, \mathbf{L} . 18 पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

,, L. 19 **दझा**र्धव्यासेन.

Page 34 L. 1 षड्विंशं शकलम्। The Ms. also notices the reading of the text.

Page 34 L. 2 तत्र is dropped.

,, L. 4 भविष्यन्ति. च is dropped.

,, L. 7 कल्पती अथवा is dropped.

.. L. 8 = is dropped.

" L. 10 यदि अवभुजदह्भुजो तुल्यो कल्पितो is omitted.

.. L. 11-12 तत्रेदं दूषणम् । कुतः

.. L. 13 अत्रोपपितः is omitted.

,, L. 14 = is dropped.

., L. 19 ब्रुअभुजः हृद्भुजः एतौ.

Page 35 L. 7 The Ms. adds तस्माडुक्तमेव सिद्धम् after इदम-

 ${f L}$. 16 कल्पितः ${f for}$ कल्प्यः.

Page 37 L. 3 °स्माकमिष्टम् ।

Page 39 L. 13-14 असमकोणोऽस्ति । झन्यूनकोणखास्ति ।

Page 40 L. 10 चतुर्थ क्षेत्रम्।

, L. 20 **बअह**कोणस्तु.

Page 41 L. 12 अबरेखायाः.

.. L. 14 स्तः is dropped.

L. 19 तत्र is dropped.

L. 21 ft g is dropped.

Page 42 L. 6 द्वितीयलम्बेऽपि.

. L. 8-9 समकोणक्षेत्रं न भवति.

.. L. 24 अहरेखायाः.

In the figure on p. 42, the line अम is between वस and फन.

 ${
m Page}~{f 43~L}$. ${f 8}$ स्त्रमं मनश्रेती हकसमानी जाती.

Page 44 L. 8 कार्यः is dropped.

, L. 24 ज़िंदिश for अज़िंदिश

Page 45 L. 16 द्वहतझय एते लम्बा निष्काशिताः

Page 46 L. 4 सप्तमक्षेत्रम्।

. L. 6 रेखासमानभुजद्वयलमा

_ L. 19 **ৰস্ত**্ৰস্তান্

.. L. 20 हक चिहात्

Page 47 L. 11 **बकम**त्रिभुजा°

Page 48 L. 9-10 व्यविहात् रेखा कार्या

,, L. 17 संपातः कचिहे भविष्यति

 ${f L}$. $21 ext{-}22$ द्वितीयरेखायामन्तर्गत $^\circ$

Page 49 L. 8-9 अवजद्रेखायां

, $\mathbf{L.}~20$ भवन्ति

Page 50 L. 10 कर्तुं चिकीषास्ति।

. L. 19 °स्थितकोणः

" L. 25 °रेखा कृतास्ति

Page 52 L. 1 पुन: is dropped.

Page 53 L. 13 The Ms. inserts जातौ after समानी.

" L. 14 The Ms. drops ज्ञाबद्कोणः अज्ञब्कोणेन समा-नोऽस्ति।

Page 54 L. 3 'स्वया झहरेस्वया च

" L. 6 ° जदहकोणी

" L. 12 बहुजदी च

Page 55 L. 3 वैते is dropped.

 \dots L 18 निष्काशित $^\circ$

" L. 21 द्वे चतुर्भुजे समाने

" L. 23 अथाप्टत्रिशक्षेत्रम्

" L. 25 ते समाने एव भवतः

Page 56 L. 9 तदैते

Page 58 L. 5 कार्या for देवा

Page 59 L. 15-16 पूर्वोक्तवत् is omitted. अस्यैककोणः

" L. 18 अबोपरि is dropped.

 $_{,,}$ $_{L.}$ 21 स्त्रभरेखा बस्रेरेबे च

From p. 60 to L. 18 p. 61 missing.

Page 61 L. 18 पुनर is dropped.

 ${f L.}$ 19 एवं प्रकारेणापि

Page 62 L. 1 पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

" L. 2 पूर्वकृतमेव स्थापितं is dropped.

 $,, \qquad ext{L.} \quad 3$ यथावस्थितेव स्थापिता

" L. 4 तत्र for ततो

Page 62 L. 6 वा for अथवा

 $_{ extsf{,}}$ $extbf{L.}$ 11 एका सरला जाता ।

" L. 13 **अझवं** सम[°].

Page 63 L. 1 पुनः प्रकारान्तरम् ।

" L. 13 बदरेखा वर्धनीया अस्तरेखा च

Page 64 L. 12 जातम् is dropped.

Page 66 L. 10 पुनदे विहास ह विहास

Page 67 L. 3 स्तः for भवत इत्युपपन्नम् ।

,, L. 9 हलअजयोः समताच for हलअजयोः साम्बात्

" L. 20 इति सिद्धम् is dropped.

Page 68 L. 7 तत्र is dropped.

" L. 12 **अज**्ञुजस्यास्ति ।

,, L. 14 निश्वीयते for निश्वितं जातं

" L. 17 यदीदिमिष्टं for तत्र and इप्टं तदा is dropped.

Page 69 L. 1 पुनर is dropped.

" L. 13 चेत् is dropped.

" L. 18 पुनः प्रकारान्तरम् ।

Page 70 L. 7 कार्य: for कार्या:

Page 71 L. 1 प्रथमप्रकारो यथा

Page 73 L. 6 उभयो: is dropped.

 $_{
m J}$, $_{
m L}$, $_{
m 12-13}$ $^{\circ}$ कोणयोः समत्वात्

Page 74 L. 8 नेहमजी शेषभुजी समी स्तः।

Page 75 L. 1 तानि च पूर्वोक्तप्रकारेण समानि स्युः is dropped.

" L. 6 इदमेनेष्टम् is dropped.

,, L. 15-16 **इकत**रेखा सरलाप्येकास्ति ।

" L. 17 पुनर is omitted.

 ${f Page 76~L.~21}$ बहारेला कतरेला दीर्घा कार्या यथा छचिहलमा स्यात्।

 ${f Page 77~L.~20}$ °चतुर्भुजात् भुजद्वयवर्गभुजद्वयद्विगुणघातयोगरूपाच्छोध्यः ।

Page 78 L. 15 आचिहात् अव्लम्बः

,, L. 22 समिश्रारूढितेन प्रणीते । From P. 79 to L. 15 p. 93 wanting.

Page 93 L. 21 समिभारू बितेन प्रणीते ।

Page 94 L. 2 प्रथमशकलम्

,, L. 3 तत्र is omitted.

,, L. 4 तस्मिन् वृत्तपालौ for तत्पालौ.

.. L. 14 एतदशुद्धम् ।

.. L. 18-19 समकोणक्षेत्रद्वयं स्यात् is omitted.

Page 95 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्. Notices क्षेत्रम् also.

,, L. 8 निष्काष्यते

" L. 10 झबहरेखा for झहरेखा

" L. 14 **झबह**रेस्राया

Page 96 L. 7 झहं तदा जदस्य

 ${
m L.}~16$ समकोणी ${
m for}$ समं कोणी ।

,, L. 23-24 बधेकरेखया द्वितीयरेखायाः संपातः कृतः तत्र च सम-कोणद्वयं जातमेकापि रेखा केन्द्रोपरि न गता। इदं गाधितम्॥

Page 97 L. 3 The Ms. adds कदाचिदेका भवति after न भवतः।
... L. 17 स्थादिति प्रतिपादाते is omitted.

Page 98 L. 2 द्यारेखा वर्धनीया

, L. 14 **दश्ररेसा**यास्तुस्यत्वात्

" L. 16 सप्तमशकलम्

Page 99 L. 2 कार्याः for कार्या

 $_{
m s}, \qquad {
m L.} \,\, 12$ कार्या for योज्यते

 ${f L.}~15$ अथ for बदि. कर्त्तव्यः for कियते and कार्या for योज्यते.

$,, \qquad ext{L. } 23$ अथाष्टमशकलम्

Page 100 L. 10 कार्या for कार्याः; अधिका मवति । कथम् । यदि .. L. 19 निष्कास्यते

Page 101 L. 3 जनरेखा कार्या

 $_{
m o}$, $_{
m L.~10}$ भवति for भविष्यति

" .. मसरेखा कार्या

Page 102 L. 14 अथ नवमशकलम्

 ${f L}$. 18 **जब**रेखा**जद्**रेखा**जह**रेखाः

" L. 22-23 समकोणी जाती for समानी जाती

Page 103 L. 1 निकाच्या L. 24 पुनः प्रकारान्तरेणाह Page 104 L. 6 अथैकादशं शकलम् L. 25 तस्मादियं मञरेखाया Page 105 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम L. 20 अय त्रयोदशशकलम् Page 106 L. 3 अस्योपपत्तिः Page 107 L. 4 अधिका मवेत् Page 108 L. 2 कार्या for कियते L. 3 इदं वाधितम् is noted in the margin after ,, भविष्यति. L. 7 जाता for भविष्यति L. 11 निष्काधितलम्बो ,, L. 18 कल्पितम् ٠. Page 109 L. 12 अस्मान्यकलादिदं L. 14 द्वितीयप्रकारः L. 23 अथ षोडशशकलम् L. 24 इत्तपालिमात्रसंलमा Page 110 L. 5 संबोज्या for बोज्या L. 12 पुनः प्रकारान्तरम् L. 15 समकोणसमनतुर्भुवक्षेत्रभुवतुल्या for तद्भुवतुल्या. It is marginally noted. Page 111 L. 12 अवाद्यदशराकलम् L. 21 अथैकोनविंशं शकलम् Page 112 L. 7 शक्लम् for क्षेत्रम् The portion from इयग्रुपपत्तिसदेव स्यात् L. 12 P. 112 to वक्तरेखा वत L. 11 P. 127 is wanting in the Ms. Page 127 L. 16 अथ द्वितीयशकलम्

Page 128 L. 21 अथ तृतीयक्षकलम्
Page 129 L. 17 पुनः प्रकारान्तरम्
Page 130 L. 12-13 तस्माच्छेषी क्कोण

```
Page 131 L. 1 अथ पद्मसशकलम्
Page 133 L. 1 अष्टमशक्रम
            L. 9 ° व्यासार्धे कृत्वा
            L. 10 अथ नवसशकलम्
            L. 18 अथ दशमशकलम्
Page 134 L. 17 अथवा प्रकारान्तरेण
Page 135 L. 11 निष्काइय:
            L. 23 अयेकादशशकलम्
            L. 25 दशमशक्लोक्तवत
Page 136 L. 13 पुन: प्रकारान्तरम्
            L. 15 °स्तादशत्रिभुजस्य भूमित्रस्यकोणः कार्यः
Page 137 L. 3 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 138 L. 2 दशमशकलोक्त°
            L. 12 जाता इत्यूपपन्नम्
            L. 13 अथ त्रवोदशशकलम्
            {
m L.}~22 प्रत्येकमनयोः कोणः पश्च^\circ
Page 139 L. 23 अनेन प्रकारेण
Page 141 L. 2 इदमेवास्माकमिष्टम् is omitted.
            {f L}. 3 अथ चतुर्दशशकलम्
            L. 4 वृत्तिचिकीर्षास्ति is adopted and एकं वृत्तं कार्यम्
  "
                     is struck off.
Page 142 L. 3 अथ पन्नदशशकलम्
           L. 19 अनेन शकलेनायं
  "
           {
m L.}~21 अथ षोडशं शकलम्
Page 143 L. 13 समाप्त: is omitted.
Page 144 L. 2 विश्वतिशकलानि
           L.
                3 तत्र प्रथमशकलं निरूप्यते for तत्र प्रथमं परिभाषा
                     निक्रप्यते
           L. 6-7 from यदि बृहत्प्रमाणं to {}^{\circ}तुल्यं भवति omitted.
             The Ms. has in the margin (on p. 89 of
          the Ms.) प्रमाणस्य यवनभाषायामेकदार इति संज्ञास्ति ।
```

'त्रैराशिकस्य फलस्य निश्चवतिसंज्ञा।

Page 144 L. 20 °निष्पत्तिसंज्ञा क्षेया

Page 145 L. 11 प्रत्येकप्रमाणद्वय°

,, L. 12-13 तस्यां निष्पर्त्ता

" L. 17 यथा प्रथमपक्की द्वितीयतृतीययोर्निध्यत्तिः सेव

,, L. 20 अथ च for पुनः

,, L. 21 °तृतीययोर्या निष्पत्तिः

Several Arabic terms are used on the margin on pages 89 and 90 of the Ms. They are as follows:—

इबदालिनिझबति, तफ्झाले निझबति, अस्य अफ्तनिझबति संज्ञा ॥ ११ ॥

(The copyist seems to refer the reader to L. 11 of the Ms. in which the term विनमवनि-व्यक्ति occurs.),

तकांबेनिझबति १३ (referring to योगनिष्पत्तिः L.13), कलबेनिझबति १६ (referring to अन्तरविलोमनिष्पत्तिः L.16),

मुह्मावा १ (referring to L. 1 i. e. to def. 5 बन्न राशिचतुष्ट्य &c.)

(P. 90 मुंतजिमेनिझबति ५ referring to यथाकम-निष्पत्ति L. 5 P. 90.),

(P. 90) मुजतरेवनिश्चवति.

Page 146 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

 \mathbf{L} . 3 यहुणं भवति तहुणं

" L. 16 द्वितीयशकलम्

,, L. 18 त**हु**णितं चतुर्थप्रमाणं

Page 147 L. 11 तृतीयशकलम्

" L. 14 पुनर् is omitted.

.. L. 25 जतुल्य° is omitted in जतुल्यवलप्रमाणे.

Page 148 L. 4 इदमेवास्माकमिष्टम्

,,

 ${
m L.}$ 5 चतुर्थशकलम्

Page 148 L. 10 सैव तृतीयस्य चतुर्थेन स्थात L. 21 तत्र is omitted. Page 149 L. 1 पश्चमशकलम् L. 2 तत्र प्रमाणद्वयमध्ये is omitted. ٬ رو L. 3 मध्ये is omitted. L. 5 गुणगुणितं L. 10 हुब्समानम् is omitted. L. 11 तदा is omitted. L. 15 बष्टशकलम्. L. 17 तद्भिभतृतीयप्रमाणद्वयं Page 150 L. 14 सप्तमशकलम् L. 17 निष्पत्तिस्त्रल्येव and inserts on the margin " स्यात्तदा तानि प्रमाणानि समानानि भवन्ति Page 151 L. 10 प्रन: is omitted. ${
m Page} \,\, 152 \,\,\, {
m L.} \,\,\, 3 ext{-}4 \,\,$ जप्रमाणस्यापि तावन्तो घाता प्राह्माः । अस्य फलं वर्स्स कल्पितम् । L. 12 अस्ति for जातम ,, L. 20 नवसशकलम्. ,, Page 153 L. 9 इदमेवास्माकमिष्टम् for अस्मृदिष्टं समीचीनम् ${
m L.}~10$ दशमशकलम् ,, L. 14 मध्ये is omitted. L. 24 अस्ति for जातम् ,, Page 154 L. 3 बाप्रमाणात्. L. 11 अथेकादशशकलम् , Page 155 L. 4 वा after अधिक is omitted. L. 6 समे वा भवतः ,, L. 8 शकलम् for क्षेत्रम् L. 9 तत्र is omitted. ,, L. 21 कल्पित for कल्पिताः

Page 156 L. 6 भविष्यत: for स्त:

,,

L. 11 त्रयोदशशकलम्

Page 156 L. 16 तथा for तथेवास्ति L. 17 जाता is omitted. Page 157 L. 7 शकलम् for क्षेत्रम् L. 19-20 °र्दममाणाविकास्ति जन्माणस्य निष्पत्तिर्वप्रमायेन ,, यास्ति तस्याः । **अ**प्रमाणमधिक[°] Page 158 L. 1-2 बदि न्यूनं चेत् L. 7 शक्कम् for क्षेत्रम् L. 17-18 अवत्रमाणवस्त्रमाणगोः L. 23 षोडशशकलम् Page 159 L. 24 सप्तदशशकलम् Page 160 L. 2 °रन्तरस्य निष्पत्ति° ${f L}$. 20 मनततीयप्रमाणं Page 161 L. 14 Before पुन: अवस्य the Ms. inserts तसात अबप्रमाणस्य निष्पत्तिः तदप्रमाणेन तथा हवप्रमाणस्य निष्पत्तिः द्वादप्रमाणेन L. 17 शकलम् for क्षेत्रम् L. 19 तृतीयचतुर्ययोर्निष्पत्तिः । तत्र L. 20 निष्पत्तिर्भवति यथा Page 162 L. 1-2 "हज्जप्रमाणगोर्निष्यत्तिस्तुल्या कल्पिता । L, 17 शकलम् for क्षेत्रम् Page 163 L. 2 अवस्वेरितम् L. 3 ve is omitted. L. 7 तदा is omitted. L. 8 पुनः प्रकारान्तरम् L. 13 इदमेवास्माकमिष्टम् L. 14 शकलम् for क्षेत्रम् Page 163 L. 15-17 तत्र is omitted. L. 17 प्रथमप्रकारे आदिप्रमाणादन्त्यप्रमाणं ,, L. 18 °दित्रमाणादन्त्यप्रमाणमधिकं स्थात् ,, L. 21 तत्र is omitted. Page 164 L. 7-8 इयं जन्यूनप्रमाणस्य निष्पत्तिर्वप्रमाणेन झहनिष्पत्ति-त्रल्यास्ति तस्याः अधिकास्ति । तस्मात्

```
Page 164 L. 11 न्यूने न्यूनम् is omitted.
             L. 12 द्वितीयप्रकारान्तरम्
             {f L}. 15 हप्रमाणेन इयमबनिष्पत्ति^\circ
             L. 20-21 इदमेवास्माकमिष्टम् for तदेवसुप
             L. 22 शकलम् for क्षेत्रम
Page 165 L, 8 चेदथ बज
             L. 8-9 तुल्या चेत्तदा अप्रमाण°
             L. 15 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 166 L. 4 एकरूपधाता प्राह्माः
             {f L} 14 ^\circमेकरूपघाता
Page 167 L. 10 शकलम् for क्षेत्रम्
             L. 13 नेत् is omitted.
Page 168 L. 16 शहरूम् for क्षेत्रम्
Page 169 L. 17 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 170 L. 5 न्यूनं कृतम् ।
             L. 14 इत्येवेष्टम् is omitted.
Page 171 L. 1 बहाध्याय:
             L. 2 अत्र for तत्र; शक्लान for क्षेत्राणि
             L. 3 तत्र प्रथमशक्लम् for तत्र परिभाषा
             {f L}, {f 18} निष्पत्तिरस्ति तथा बृहत्सण्डस्य
              On the margin P. 107 the Ms. has प्रथमाइस
           द्वितीयाद्वतुल्यविभागा निष्पत्तिशब्दवाच्या
             {f L}. 20 प्रथमशकलम्
            L. 21 भवतः for उभयतः
             L. 22 तत्र for तत्
             L. 23 तत्र for तर्हि
Page 172 L. 20 पुनः प्रकारान्तरम्
Page 173 L. 3 भूम्योर्निष्पत्त्या
             L. 8 द्वितीयशकलम्
Page 174 L. 1 ° निष्पत्तेस्त्रस्यास्ति
             L. 22 तृतीयशकलम्
Page 175 L. 4 कल्पिता for कृता
                  4-7 The portion from पुनर्दे आरेखा बआजकोणस्य
   ,,
```

to अस्योपपत्ति:, with तदा (L. 5) omitted, is found in the Ms. after कोणी समानी भविष्यत: (L. 11).

Page 175 L. 11 तदा is dropped.

" L. 12 तदा and न are dropped.

Page 176 L. 11 यद्येताहशी

 $_{\rm L}$ 13 °निष्पत्त्यापि

,, L. 19 नतुर्थशकलम्

" L. 24 पुनर् before वज्राक्षकोण° is omitted.

Page 177 L. 2 करूवम् for स्थाप्यम्

 $,, \quad \mathbf{L.} \ 25 \ तदेव \ \mathrm{for} \ \mathbf{तदेव}$

Page 178 L. 1 पश्चमशकलम्

 $,, \quad ,, \quad ext{L. } 15$ पुनःप्रकारान्तरम्

Page 179 L. 1 झतरेसा तुल्या भविष्यति

,, ,, L. 5 शकलम् for क्षेत्रम्.

,, ,, L. 21 द्वितीयप्रकारः

Page 180 L. 4 सप्तमशकलम्

,, ,, L. 25 पूर्वशकले यदुक्तं

,, ,, L. ,, न्यूनी भवतो वा न्यूनी न भवत[े]

Page 181 L. 14 शकलम् for क्षेत्रम्

.. .. L. 18-19 निष्कासितः

Page 182 L. 7 असाच्छकलादिदं

.. .. L. 9 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 15-16 अस्योपपत्तिः । द्वअरेखा द्वारेखा च संयोज्या । अद्वाकोणः समकोणो भविष्यति । after भविष्यति

" " L. 17 तस्मादयं रेखाद्वयमध्ये

Page 183 L. 10 अस्माच्छकलादिदं

,, ,, L. 14 दशमशकलम्

" " L. 18 प्रथक् च कार्या

Page 184 L. 11 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 16 द्वि तयोर्योगः कार्यः यथा

Page 185 L. 8 शकलम् for क्षेत्रम्

,. ,, L. 13 种轫: is omitted.

Page 185 L. 15-16 तृतीयांशं भिन्नं करिष्यति ।

Page 186 L. 9 प्रत्येकं

,, ,, L.~10 झदचकोणोऽपि समं $^{\circ}$

,, ,, L. 12 प्रखेकं

Page 187 L. 1 अत्रोपपत्तिः

" " L. 5 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 25 उभयोः क्षेत्रयोरेकक्षेत्रेण निष्पत्तिसाम्यात् क्षेत्रद्वयं समानं जातम् ।

Page 188 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 18 कल्पते

" " L. 24 समत्वं for साम्यं

Page 189 L. 1 The MS. inserts त्रिभुजदूर्य समानं न भविष्यति after न्यूनाधिको भविष्यति.

" " L. 16 after भविष्यति the MS. inserts पुनर्बरेसाया वृद्दतुल्याऽवरेसाऽतरे-स्योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

Page 190 L. 23 बरेखावर्गतुल्योऽपि भविष्यति

Page 191 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 2-3 [°]रेकत्रिभुजमुजस्य

" " L.~22 बजबतनिष्पत्तिबवबकरेका $^\circ$

Page 192 L. 9 The Ms inserts समानानि before भवन्ति which begins the line.

" " L. 10 भवति for भविष्यति

The MS. has on the margin on p. 121 dealing with prop. 18 and 19 Book VI. बावन्ति प्रथमक्षेत्रे तावन्त्येव द्वितीयक्षेत्रे त्रिशुजानि तावन्त्येव भवन्ति ।

 ${f P}$ age 193 ${f L}$, 12 **तब**क्षेत्रज्ञद्क्षेत्रं सजातीयं भविष्यति

Page 194 L. 4 कवतंत्रसद्वेत्रे (These figures are rectangles in the MS.).

,, ,, L. 6 अन्यप्रकारजे

,, ,, $L.\ 11$ बकक्षेत्रलदक्षेत्रनिष्पत्तिः

" " L.~15 कबक्षेत्रलक्क्षेत्रनिष्पत्ति $^\circ$

Page 194 L. 20 कबक्षेत्रलढक्षेत्रयो°

" " ,, L. 21-22 कवक्षेत्रलहक्षेत्रयो°

Page 195 L. 18 तत्कर्णपतितं

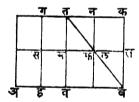
Page 196 L. 4 इदमेवेष्टम् ॥

Page 197 L. 11 'निष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति

 $\mathbf{Page} \ 198 \ \mathbf{L} \cdot \mathbf{17} \ \mathsf{तत्र} \$ अवरेखायाः खण्डोपर्ये $^\circ$

17-18 क्षेत्रमिष्टं कर्त्तव्यमस्ति तत् तथा कार्ये यथा

The figure for Prop. 28 in the MS. is as under:-



Page 199 L. 3-4 पुनस्तगं तनतुत्वं पृथक् कार्यम् । मसं स्नमतुत्वं पृथक् कार्यम्

" " L. 8 मगक्षेत्रं for सगक्षेत्रं

" " L. 9 हबाक्षेत्रं for सफबाक्षेत्रं

" " L. 10 हवसण्डोपरि for अहसण्डोपरि

" " " **हसा**क्षेत्रं for अफूक्षेत्रं

,, " " अहद्वितीय° for हबद्वितीय° असक्षेत्रं for हब्बक्षेत्रं

Page 199 L. 18 कर्तुमिष्यते तत्।

Page 200 L. 1 °खण्डं यथा भवति

Page 201 L. 4 पुनर्छकोणसकोणी

Page 201 L. 6 च before चमं is dropped.

,, ,, L. 9 सजातीयं जातम्

" " ,, L. 11 जिक्षेत्रमर्धरेखा°

 $_{,,}$ $_{,,}$ $_{,}$ $_{L}$. $_{18}$ योज्यं कार्यम्

Page 202 L. 14 समानान्तरितः

,, ,, ,, ,, द्वितीयत्रिभुजस्य द्वितीयभुजः

 ${f Page} \ 203 \ {f L.} \ 4-5 \ समकोणद्वयतुल्योऽस्ति ।$

तस्मात् जबअजबद्योः कोणयोयोंगः समकोणद्वयतुल्यो भविष्यति । तस्माद् अबदं &c.

Page 205 L. 4 बजज अक्षेत्रयोग°

" ,, L. 11-12 वकोणतकोणनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति

,, ,, L. 21 **हन**चापसमं वा

Page 206 L. 2 इदमेवास्मदिष्टम्

" " L. 8 समाप्तः is omitted.

ERRATA.

Page.	Line.	Incorrect.	Correct.
5	4	केन्द्रगा	न केन्द्रगा
17	11	दत्वा	दस्या
21	25	दूरीकृता तदा	दूरीकृतस्तदा
27	12	वहाद	वहाद
30	17	कृत्तं अन्य°	श्रुत्तमन्य [°]
31	14	भुजद्वयं अन्य [°]	भुजद्वयमन्य [°]
69	16	योज्यते	योज्येते
70	15	सामान्येन	साम्येन
72	6	वहवर्गो	बहवर्गो
75	5	अबचतु	अवचतु°
76	22	After कार्या	
104	23	अबवृत्तस्य	अव वृत्तस्य
106	7	समकोणी	समकोणी
108	17	अयं	अ यं
,,	21	समकोणी	समकोणी
109	3	अयं	सर्य
111	3	अयं	अयं
,,	16	अयं	अयं
117	4	अन यो°	अनयो°
,,	6	अनयो°	अनयो°
122	10	हकद्कोणेन	इदक् कोणेन
124	8	ब्रम्बर्गा	वस्वर्गी
128	22	तथा	यथा
133	17	°रेखा व्यासा°	°रेखाव्यासा°
138	9	पश्चसमभुजसम	ान° पद्मसम्भुजसमानकोण°
139	5	समकोणत्वेन	समकोणत्वेन
140	20	अश्व	अझबं
148	13-14	बद्ावा°	बदाव°

148	23	° द्य प्रमाणयो	खप्रमाणयो-
154	16	तस्मात् ।	तस्मात्
155	24	न	न
157	10	तृतीयापेक्षया प् यून°	तृतीयापेक्षया न्यून°
163	21	Name the line	not named द.
171	22	तत् क्षेत्र°	तत्सेत्र°
175	14	अहरेसा अज°	अह रेखा अज °
177	${f 2}$	for जहरेखायां	read वजहरेखायां
181	5	पुनः तज [°]	पुनस्तज
27	18	असमकोणात्	असमकोणात्
184		The line s she	ould be equal to aa.
187	13	read the line	प्रद.
189	12	জৰ	े तब
196	10	सरलै°	सरकै°
19 9	11	° सण्डो प्युत्पन्नं	[°] सम्डोपर्युत्पनं
204	7	°र्वजवस	°बजबस [°]

BOMBAY SANSKRIT SERIES.

Edited under the superintendence of Prof. A. V. Kathavate and Prof. S. R. Bhandarkar.

		, .	
	R	s. a.	p.
No. I.—Panchatantra, Books IV. and V. Edited, with			
Notes, by Dr. G. Bühler	0	4	0
No. II.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edited			•
and explained by Dr. F. Kielhorn. The Sanskrit			
Text and various Readings, Part I	0	8	0
No. III.—Panchatantra, Books II. and III. Edited,	_		
with Notes, by Dr. G. Bühler	0	4	.0
No. IV.—Pafichatantra, Book I. Edited, with Notes,	^	•	^
by Dr. F. Kielhorn	U	6	0
No. V.—The Raghuvanis's of Kâlidâsa, with the Commentary of Mallinâtha. Edited, with Notes, by S.			
P. Pandit, M. A. Part I., Cantos I.—VI	1	Ω	0
No. VI.—Målavikågnimitra: Sanskrit Play by Kåli-	•	U	•
dâsa, Edited, with Notes, by Shankar P. Pandit,			
M. A	2	2	0
No. VII.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edit-	-	-	•
ed and explained by Dr. F. Kielhorn. Part II.			
- •	0	8	0
No. VIII.—The Raghuvams'a of Kålidåsa, with the			•
Commentary of Mallinatha. Edited, with Notes,			•
by S. P. Pandit, M. A. Part II., Cantos VII			
XIII	0	12	٥
No. IX.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edit-			
ed and explained by Dr. F. Kielhorn. Part II.			
(Translation and Notes), Paribhâshâs ·XXXVIII.—			
LXIX	0	8	0
No. X.—The Das'akumâracharita of Dandin. Part I.			
Edited, with Critical and Explanatory Notes, by			
Dr. G. Bühler	0	8	0
No. XI.—The Nitis'ataka and Vairagyas'ataka of			
Bhartrihari, with extracts from two Sanskrit Com-			
mentaries. Edited, with Notes, by Kashinath			
Trimbak Telang, M. A. (copies not available.)			

	Rs.	2.	p.
No. XII.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edit-			•
ed and explained by Dr. F. Kielhorn, Part II. (Trans-			
lation and Notes), Paribhâshâs LXX.—CXXII	0	8	0
No. XIII.—The Raghuvains's of Kalidass, with the			
Commentary of Mallinatha. Edited, with Notes,			
by S. P. Pandit, M. A. Part III., Cantos XIV			
XIX	0	8	0
No. XIV Vikramånkadeva-Charita. Life of King			
Vikramāditya Tribhuvanamalla of Kalyāņa, com-			
posed by his Vidyapati Bilhana. Edited, with an			
Introduction, by Dr. G. Bühler (copies not available).			
No. XV.—Mâlati-Mâdhava: a Drama by Bhavabhûti.			
Edited, with Critical and Explanatory Notes, by			
Dr. R. G. Bhândarkar, M. A. (Second Ed. in the			
Press.)			
No. XVI.—Vikramorvas'iya: a Drama by Kâlidâsa.			
Edited with Notes, by Shankar P. Pandit, M. A.			
(Third Edition.)	2	0	0
No. XVII.—Hemachandra's Des'inàmamâlâ. Edited,			
with Critical Notes, a Glossary and a Historical			
Introduction, by Professor R. Pischel and Dr. G.			
Bühler, Part I. Text and Critical Notes, by			
Professor Pischel	1	0	0
No. XVIII.—Vyâkaraņa-Mahâbhâshya of Patañjali.			
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol. I. complete. Parts			
I, II & III	4	8	0
No. XIX. Ditto ditto by ditto. Vol. I. Part II.	1	0	0
No. XX. Ditto ditto by ditto. Vol. I. Part III.	1	0	0
No. XXI. Ditto ditto by ditto. Vol. II. Part I.	1	0	0
No. XXII. Ditto ditto by ditto. Vol. II. Part II.	1	0	0
No. XXIII. Väsishthadharmas'ästra. Edited, with			_
Notes, by Dr. A. A. Führer	0	8	0
No. XXIV.—Kâdambarî by Bâṇa and his son. Vol.			
I. Sanskrit Text, complete. Edited by Dr. P.			
Peterson	2	0	0
Do. Vol. II. Introduction and Notes, by do	4	8	0
No. XXVKirti-Kaumudi. Edited, with Notes, by			
Prof. A. V. Kâthavate. (copies not available.)			

	Rs.	a,	p.
No. XXVI.—Vyâkarana-Mahâbhâshya of Patanjali.			-
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol II. Part III	1	0	0
No. XXVIIMudrārākshasa, by Vis'ākhadatta, with			
the Commentary of Dhundiraja. Edited, with			
Notes, by K. T. Telang. (Copies not available.)			
No. XXVIII.—Vyakarana-Mahabhashya of Patanjali.			
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol. III. Part I	1	0	0
No. XXIXDo. do. of do. by do. Vol. III. Part II.	1	0	0
No. XXXDitto do. of do. by do. Vol. III. Part III.	1	0	0
No. XXXI.—Subhashitavali of Vallabhadeva. Edited			
by Dr. P. Peterson and Pandit Durgaprasada	2	8	0
No. XXXII.—Tarka-Kaumudi of Laugakshi Bhaskara.			
Edited by Professor M. N. Dvivedi (Copies not			
available.)			
No. XXXIII.—Hitopades's of Narsyana. Edited by			
Dr. P. Peterson	0	14	0
No. XXXIV.—The Gaudavaho, by Våkpati. Edited			
by Shankar P. Pandit, M. A	3	0	0
No. XXXV.—Mahânârâyana Upanishad. Edited by			
Colonel G. A. Jacob	0	7	0
No. XXXVI.—University Selections of Hymns from			
the Rigveda. Edited by Dr. P. Peterson (2nd Edi-			
tion.)	4	0	0
No. XXXVII.—S'ârngadharapaddhati. Edited by Dr.			
P. Peterson, Vol. I	3	0	0
No. XXXVIII.—Naishkarmyasiddhi, Edited by Col.			
G. A. Jacob	2	0	0
No. XXXIX.—A Concordance to the principal	_	•	
Upanishads and Bhagavadgîtâ, by the same author.	4	0	0
No. XL.—Eleven Atharvana Upanishads, with Dipikas,	•	•	·
by the same author	1	4	0
No. XLL.—A Handbook to the study of the Rigveda,	•	*	·
	1	8	0
		0	U
No. XLII.—The Das'akumāracharita of Dandin, Part			
II. (completing Dr.G. Bühler's Edition). Edited, with	^	ρ	^
Critical and Explanatory Notes, by Dr. P. Peterson,	0	8	0
No. XLIII.—A Handbook to the study of the Rigveda,			
by Dr. P. Peterson, Part II., comprising the	~	_	_
Seventh Maṇḍala, with the commentary of Sâyaṇa.	2	8	0

		Ks.	8.	р.
No.	XLIV.—Aphorisms of the Sacred Law of the Hindus, an Index of the Sûtras and the various Readings of the Hiranyakeshî-Dharmasûtra, by Dr.			
	G. Bühler, Part I	1	6	0
No.	XLV.—Råjatarangini. Edited by Pandit Durgå- prasåd. Part I., containing the first 7 (seven) Tarangas	1	8	0
No.	XLVI.—Patañjali's Yogasûtras. Edited, with the Scholium of Vyâsa and the Commentary of Vâchaspati, by Mahâmahopâdhyâya Râjârâm Shâstrî Bodas.	1	10	0
No.	XLVII.—Parâs'ara Dharma Samhitâ with the Commentary of Sâyaṇa-Mâdhavâchârya, Vol. I. Part I.			^
Ma	Edited by Pandit Vâman Shâstrî Islâmpurkar	2	$\frac{2}{0}$	0
	XLVIII.—Do. do. of do. by do. Vol. I. Part II. XLIX.—Nyâyakos'a. 2nd Edition. Edited by Mahâ-	2	U	U
140.	mahopâdhyâya Bhîmâchârya Zalkîkar	6	0	0
	L.—Apastamba Dharmasûtra, Part II. Edited by Dr. G. Bühler	1	2	0
	LI.—Râjataranginî. Edited by Pandit Durgâprasâd, Vol. II. Taranga VIII	1	4	0
No.	LII.—Mrichchhakatika, Vol. I. with two Commentaries and various readings, by Mr. N. B. Godbole	3	8	0
No.	LIII.—Navasâhasânkacharita, Part I. Edited by Pandit Vâman Shâstri Islâmpurkar		10	0
No.	LIV.—Rajatarangipi of Kalhana, Vol. III. Edited by Dr. P. Peterson		2	0
No.	LV.—Tarkasangraha of Annambhatta. Edited with the author's Dipika and Govardhana's Nyâya- bodhinî and Critical and Explanatory Notes, by			
No.	the late Rao Bahadur Y. V. Athalye LVI.—Bhatti Kâvya or Râvanavadha; Vol. I. Edited with the commentary Sarvapathina of Mallinatha		4	0
	by Mr. Kamalâshankar P. Trivedi &c	9	0	0
No.	LVII.—Do. Vol. II. Edited by do	6	0	0
No.	LVIII.—A second selection of Hymns from the Rigveda. Edited by Dr. P. Peterson	4	0	0
No.	LIX.—Parâs'ara Dharma Samhitâ with the commentary of Sâyaṇa-Mâdhavâchârya, Vol. II. Part I.			
	Edited by Pandit Vâman Shâstri Islâmpurkar	4	0	0
No.	LX.—Kumârapâlacharita by Hemachandra. Edited, with a commentary, by the late Mr. S. P. Pandit		8	0

THE REKHÂGANITA

OR

GEOMETRY IN SANSKRIT COMPOSED BY SAMRÂD JAGANNÂTHA VOLUME II. BOOKS VII-XV.

UNDERTAKEN FOR PUBLICATION

BY

THE LATE

HARILÂL HARSHÂDARÂI DHRUVA.

R. A., LL. B., D. L. A. (SWEDEN), M. R. A. S. (LONDON AND BOMBAY).

CITY JOINT JUDGE AND SESSIONS JUDGE, BARODÂ,

Edited and carried through the press, with Introduction, and brief notes in English

BY

KAMALÂS'ANKARA PRÂNAS'ANKARA TRIVEDÎ, B. A.,

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF BOMBAY, HEAD MASTER, NADIÂD HIGH SCHOOL (FORMERLY PROFESSOR OF ORIENTAL LANGUAGES, SÂMALADÂS COLLEGE, BHÂVANAGAB, AND ACTING PROFESSOR OF ORIENTAL LANGUAGES, ELPHINSTONE AND DECCAN COLLEGES).

1st Edition - 300 Copies.

(Registered for copy-right under Act XXV. of 1867).

Bombay.

GOVERNMENT CENTRAL BOOK DEPÔT.

1902.

[All rights reserved].

Price 9 Rupees.

Bombay Sanskrit Series Ro. LXII.

BOMBAY:

PRINTED AT JÂVAJÎ DÂDÂJÎ'S "NIRNAYA-SÂGARA" PRESS.

थीः

रेखागणितम्

सम्राड्जगन्नाथविरचितं

(द्वितीयभागात्मकं सप्तमाध्यायमारभ्य पश्चदशाध्यायपर्यन्तम्)

स्वर्गवासिमहाशयधुवोपपदेन हर्षदरायात्मजेन हरिलालेन

संस्करणार्थमङ्गीकृतं

त्रिवेद्युपपदधारिणा

प्राणशंकरसूनुना कमलाशंकरेण संशोधितं

खनिर्मिताङ्ग्लभाषाटिप्पण्या च सम्रुपेतम् ।

तच

मुम्बापुरीस्थराजकीयग्रन्थशालाधिकारिणा

''निर्णयसागरा''ख्यमुद्रणयन्त्राळये मुद्रयित्वा

शाके १८२४ बत्सरे १९०२ क्रिस्ताब्दे प्राकाश्यं नीतम् ।

प्रथमा आवृत्तिः

मूल्यं ९ रूप्यकाः।

इदं पुस्तकं मोहमय्यां निर्णयसागरास्ये मुद्रणालये मुद्रितम् ।

INTRODUCTION.

After the publication of the first volume and a major portion of the second volume I received a Ms. of the work in charge of the Anandas'rama Library of Poona through my friend, Prof. S'rîdhara R. Bhandarakar, M. A. It is found to coincide mostly with D. Its *Varce Lectiones* are given in Appendix II. The various readings of V. in Books VII., VIII. and IX. are given in Appendix I. and those of the remaining books in footnotes.

I had a mind to give a rendering of this volume into English in my English notes for the benefit of those readers who do not know Sanskrit. But as the idea did not meet with the approval of one of the Superintendents of the Series, who was consulted on the point, it was given up. The notes are consequently very brief, containing mostly as they do, English equivalents of technical Sanskrit terms.

Râipur, Ahmedâbâd, 28th March 1902.

K. P. TRIVEDI.

अनुक्रमणिका.

	28 .		মূছ.
तप्तमोऽध्यायः	9-20	षइविंशतितमक्षेत्रम्	96-9
परिभाषा	9-2	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	95
प्रथमक्षेत्रम्	२–३	अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	२०-१
द्वितीयक्षेत्रम्	3- 8	प्रकारान्तरम्	
तृतीयक्षेत्र म्	8-4	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	" २ १
चतुर्थक्षेत्रम्	4	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
पवासक्षेत्रम्	4	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	₹9–₹
षष्ठक्षेत्रम्	Ę	द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	१२
सप्तमक्षेत्रम्	Ę-0	त्रयस्त्रिशत्तमक्षेत्रम्	₹ ₹ –३
अकारान्तरम्	•	चतुर्विशत्तमक्षेत्रम्	२३-४
अष्टमक्षेत्रम्	9-6	पश्चित्रशत्तमक्षेत्रम्	28-4
नवमक्षेत्रम्	6	षदत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२५-६
दशमक्षेत्रम्	6 - 9	सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२६
एकादशक्षेत्रम्	\$	अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२६- ७
द्वादशक्षेत्रम्	90	एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	२७
त्रयोदशक्षेत्रम्	90-9	अष्टमोऽध्यायः	२८-४३
प्रकारान्तरम् ————————————————————————————————————	11	प्रथमक्षेत्रम्	२८
चतुर्दशक्षेत्रम्	99-8	द्वितीयक्षेत्रम्	२८-९
पश्चदशक्षेत्रम्	92	तृतीयक <u>्षेत्रम</u> ्	35
बोडशक्षेत्रम्	9 २–३	चतुर्यक्षेत्रम्	₹०-9
सप्तदशक्षेत्रम्	9.5	पत्रमक्षेत्रम्	39
अष्टादशक्षेत्रम्	9 3 – 8	षष्ठक्षेत्रम्	₹9-२
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	98-4	सप्तमक्षेत्रम्	33
विंशतितमक्षेत्रम्	9 ५−६	अष्टमक्षेत्रम्	37-3
एकविंशतितमक्षेत्रम्	9 €	नवसक्षेत्रम्	33
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	90	दशमक्षेत्रम्	\$ \$-8
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	90	एकादशक्षेत्रम्	₹ ४ −'4
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	90-6	द्वाद्शक्षेत्रम्	३५
पवार्वेशतितमक्षेत्रम्	96	त्रयोदशक्षेत्रम्	३५−६
			C

	पृष्ठ.	!	पृष्ठ.
चतुर्दशक्षेत्रम्	3 €	. अद्यदशक्षेत्रम्	५२
पश्चदशक्षेत्रम्	₹ € − ७	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	"
षोडशक्षेत्रम्	3-05	विंशतितमक्षेत्रम्	५३
सप्तदशक्षेत्रम्	३८	एकावेंशतितमक्षेत्रम्	"
अ ष्टादशक्षेत्रम्	₹८ -९	द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	43-8
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	\$ 5- 80	त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	48
विंशतितमक्षेत्रम्	¥•	चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	,,
एकविंशतितमक्षेत्रम्	80-9	पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	48-4
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	89-2	षड्विंशतितमक्षेत्रम्	44.
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	४२	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	,,
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	,,	अद्यविंशतितमक्षेत्रम्	,,
पबविंशतितमक्षेत्रम्	"	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	"
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	¥₹	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	4 ફ
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	"	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,,
नवमोऽध्यायः		द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
_	88-60	त्रयिवशत्तमक्षेत्रम्	48-0
प्रथमक्षेत्रम्	**	चतुक्षिंशत्तमक्षेत्रम्	40
द्वितीयक्षेत्रम्	,,	पद्मत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
तृतीयक्षेत्रम् ^९ -२	88-d	षद्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40-6
चतुर्थक्षेत्रम्	84	सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	46
पश्चमक्षेत्रम्	84-É	अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	५९-६०
षष्ठक्षेत्रम्	Rέ		
सप्तमक्षेत्रम्	"	दशमोऽध्यायः	६१-१ २६
अष्टमक्षेत्रम्	¥ ६ – ७	परिभाषा	69
नवमक्षेत्रम्	80	प्रथमक्षेत्रम्	€9 −₹
दशमक्षेत्रम्	80-6	प्रकारान्तरम्	६ २−३
एकादशक्षेत्रम्	86	द्वितीयक्षेत्रम्	£5-8
द्वादशक्षेत्रम्	¥८-%	तृतीयक्षेत्र म्	68-4
त्रयोदशक्षेत्रम्	89-40	चतुर्थक्षेत्रम्	£4-£
चतुर्दशक्षेत्रम्	40	पत्रमक्षेत्रम्	€€
पश्चदशक्षेत्रम्	40-1	षष्टक्षेत्रम्	ĘU
षोडशक्षेत्रम्	49	सप्तमक्षेत्रम्	६७−८
सप्तदशक्षेत्रम्	49-5	अष्टमक्षेत्रम्	45

	पृष्ठ.		पृष्ठ.
नवमक्षेत्रम्	£4-00	चत्वारिंश त्तमक्षेत्रम्	८९
दशमक्षेत्रम्	v 0	एकचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
एकादशक्षेत्रम्	9	द्विचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	"
द्वादशक्षेत्रम्	٧9-२	त्रिचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	90
प्रकारान्तरम्	७२	चतुश्रत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	
त्रयोदशक्षेत्रम्	٧ - ٤٧	परिभाषा	" \$0-9
चतुर्दशक्षेत्रम्	8	पश्चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	39
पश्रदशक्षेत्रम्	4-80	षदचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	59- 2
षोडशक्षेत्रम्	6.4	सप्तचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	९२
सप्तदशक्षेत्रम्	७५-६	अष्टचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	९ २–३
अष्टादशक्षेत्रम्	99	एकोनपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	43 27-4
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	3-00	पत्राशत्त्रमक्षेत्रम् पत्राशत्त्रमक्षेत्रम्	•
विंशतितमक्षेत्रम्	96	एकपवाशचमक्षेत्रम्	. "
एकविंशतितमक्षेत्रम्	48	द्विपश्राशत्तमक्षेत्रम्	5 3−8
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	49-60	विप्रवासासम् त्रिपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	९४–५ ९५–६
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	60	चतुःपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	56
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	69	पवपवाशत्तमक्षेत्रम्	\$ \$ \$ \
पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	د ٩- ٦ ;	षदपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	90
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	دع-ع	सप्तपन्नाशत्तमक्षेत्रम्	90-6
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	63	अष्टपश्चाशत्त्रमक्षेत्रम्	96-9
अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	,,	एकोनषष्टितमक्षेत्रम्	55
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	<3-8	षष्टितमक्षेत्रम्	99-900
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	C8-4	एकषष्टितमक्षेत्रम्	900
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	د لا	द्विषष्टितमक्षेत्रम्	900-9
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	८५-६	त्रिषष्टितमक्षेत्रम्	909
त्रयक्षिशत्तमक्षेत्रम्	د و	चतुःषष्टितमक्षेत्रम्	9 - 2
चतुक्षिंशत्तमक्षेत्रम्	٥-3٥	प्रकारान्तरम्	902-3
पश्रत्रिशत्तमक्षेत्रम्	60	पञ्चषष्टितमक्षेत्रम्	903
षट्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,	प्रकारान्तरम्	,,
सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	66	षदषष्टितमक्षेत्रम्	908
अष्टित्रंशत्तमक्षेत्रम्	33	सप्तषष्टितमक्षेत्रम्	,,
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	؛ وو	अष्टषष्टितमक्षेत्रम्	908-4

¥

पृष्ठ. शततमक्षेत्रम् 939-3 एकाधिकशततमक्षेत्रम् 122 922-2 व्यधिकशततमक्षेत्रम् त्र्यधिकशततमक्षेत्रम् 973 चतुरधिकशततमक्षेत्रम् पश्चाधिकशततमक्षेत्रम् 923-8 षडिकशततमक्षेत्रम् १२४ सप्ताधिकशततमक्षेत्रम् 928-4 अद्यधिकशततमक्षेत्रम् 934 नवाधिकशततमक्षेत्रम् 926 एकाद्द्योऽध्यायः १२७—५९ १२७–८ परिभाषा 926 प्रथमक्षेत्रम् द्वितीयक्षेत्रम् 935 **तृतीयक्षेत्रम्** " प्रकारान्तरम् 930 चतुर्थक्षेत्रम् 950-9 पश्चमक्षेत्रम् 933 षष्ठक्षेत्रम् 939-8 सप्तमक्षेत्रम् 935 अष्टमक्षेत्रम् 933 नवमक्षेत्रम् 455-8 दशमक्षेत्रम् 458 एकादशक्षेत्रम् द्वादशक्षेत्रम् 934 त्रयोदशक्षेत्रम् " चतुर्दशक्षेत्रम् ,, पश्चदशक्षेत्रम् 938 षोडशक्षेत्रम् " सप्तदशक्षेत्रम् 930 अष्टादशक्षेत्रम् " एकोनविंशतितमक्षेत्रम् 936

	78 .		98.
विंशतितमक्षेत्रम्	936-5	दशमक्षेत्रम्	907-8
एकविंसतितमक्षेत्रम्	138	एकादशक्षेत्रम्	908-4
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	980	द्वादशक्षेत्रम्	904-0
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	980-2	त्रबोदशक्षेत्रम्	900-6
चतुर्विश्व तितमक्षेत्रम्	987-3	चतुर्दशक्षेत्रम्	906-69
पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	983-8	पश्चदशक्षेत्रम्	969-2
षड्विंश तितमक्षेत्रम्	988-4	त्रयोदशोऽप्यायः	963-208
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	984-6	प्रथमक्षेत्रम्	963
अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	986	द्वितीयक्षेत्रम्	968
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्र म्	984-0	तृतीयक्षेत्रम्	968-4
त्रिशत्तमक्षेत्रम्	980-6	चतुर्यक्षेत्रम्	964
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	986-8	पश्चमक्षेत्रम्	964-6
द्वात्रिशत्तमक्षेत्रम्	985	वष्ठक्षेत्रम्	966
त्रयित्रशत्तमक्षेत्रम्	989-40	सप्तमक्षेत्रम्	964-6
चतुः ब्रिंशत्तमक्षेत्रम्	940-9	अष्टमक्षेत्रम्	964-6
पश्चित्रंशत्तमक्षेत्रम्	949-2	नवसक्षेत्रम्	966
षद्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	942-3	दशमक्षेत्रम्	966-8
सप्तर्त्रिशत्तमक्षेत्रम्	143-8	एकादशक्षेत्रम्	169-90
अष्ट्रिंश रा मक्षेत्रम्	944-8	द्वादशक्षेत्रम्	950
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	946-0	त्रयोदशक्षेत्रम्	989-2
चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	940-6	चतुर्दशक्षेत्रम्	999
एकचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	946-8	पत्रदशक्षेत्रम्	997-3
ब्रादशोऽध्यायः	960-65	प्रकारान्तर म्	158
प्रथमक्षेत्रम्	960	षोडशक्षेत्रम्	988-4
द्वितीयक्षेत्रम्	9 ६ ० – २	सप्तदशक्षेत्रम्	9 54-6
त् तीयक्षेत्रम्	१६२–३	अष्टादशक्षेत्रम्	996-6
चतुर्थक्षेत्रम्	१६३-५	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	
पश्चमक्षेत्रम्	954-6	विंशतितमक्षेत्रम्	२००–२
षष्ठक्षेत्रम्	988-0	एकविंशतितमक्षेत्रम्	
सप्तमक्षेत्रम्	960-6	•	२०२-४
अष्टमक्षेत्रम्	986	चतुर्दशोऽध्यायः	२०५–२१३
नवमक्षेत्रम् प्रकारान्तरम्	969-40	प्र थम क्षेत्रम्	२०५
प्रकारान्तरम्	900-3	द्वितीयक्षेत्रम्	२०५–६

Roy-E Digitized by GOOGLE २9६-29७

296-296

पश्चमक्षेत्रम्

षष्ठक्षेत्रम्

Appendix I. containing
the Vara Lectiones
of V. 1-4
Appendix II. containing
the Vara Lectiones
of the Ms. in charge
of the Ânandâs'rama
Library, Poona 5-8
Notes 9-15
Errata 16

ş

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः प्रारभ्यते ॥

तंत्रैकोनचत्वारिंशतक्षेत्राणि सन्ति।

अत्राङ्केर्गणितप्रकारा निरूपिताः॥

- १ अङ्को नाम रूपाणां समुदायः । तन्मते रूपेऽङ्कत्वाभावः। अन्ये तुः गणनायोग्यमङ्कं वदन्ति तन्मते रूपेप्यङ्कत्वमस्ति गणनायोग्यत्वात्।
- २ यत्र लघ्वक्को बृहदक्कादसकृत् शोधितः सैन् बृहदक्को निःशेषः स्यात् तदा लघ्वक्को बृहदक्कस्यांशोऽस्ति । बृहदक्को गुणगुणितल-ध्वकक्कयोऽस्ति ।
- ३ यस्य भागद्वयं समानं भवति स समाद्वो ज्ञेयः।
- ४ यस्य भागद्वयं समानं न भवति स विषमाङ्को ज्ञेयः ।
- ५ समाद्यो यद्येकेन हीनोऽधिको वा भवति सोऽपि विषमाद्यो ज्ञेयः।
- **१ समाङ्को** द्विविधः । एकः समसमः ८ । एकः समविषमः १ ।
- समसमो यथा । समाइः समेन हियमाणः समा लिब्धः प्राप्यते स समसमः ।
- ८ यः समाद्गः समेन हियमाणः विषमा रुब्धिः प्राप्यते स समविष-मो ज्ञेयः ।
- ९ अथ विषमविषमाङ्कलक्षणम् । विषमाङ्को विषमेण हियमाणः वि-षमा लब्धः प्राप्यते स विषमविषमाङ्कः । यथा नवाङ्कः (९) त्रि-भक्तः त्रयं प्राप्यते ।
- १० योऽङ्को रूपातिरिक्ताङ्केन निःशेषो न भवति स प्रथमोऽङ्को ज्ञेयः। यथैकादशाङ्कः।
- ११ यो रूपातिरिक्ताक्केन विभागाईः स योगाक्को ज्ञेयः ।

१ तत्र कर^o K. २ Omitted in K.

- १२ यावद्गी रूपातिरिक्ताद्वेन भक्ती निःशेषी भवतस्तावद्गी मिलित-संज्ञी ज्ञेयो ।
- १३ यावद्वावेकातिरिक्तः कोऽपि हरो निःश्चेषं न करोति तौ मिन्ना-द्वौ ज्ञेयौ ।
- १४ योऽद्भः स्वेनैव गुणितः फलं तस्यैव वर्गो भवति ।
- १९ योऽइः खवर्गेण गुणितः घनसंज्ञो भवति ।
- १६ गुण्याद्वगुणकाद्वयोघीतो गुणनफलं क्षेत्रफलं भवति ।
- १७ गुण्यगुणको भुजसंज्ञो भवतः।
- १८ क्षेत्रफलं केनचिदद्वेन गुणितं घनफलं भवति ।
- १९ यत्र प्रथमाक्को यद्गुणितो द्वितीयाक्कतुल्यो भवति तद्गुणगुणितस्तृ-तीयाक्क्ष्मतुर्थोक्कतुल्यो भवति तदा तेऽक्काः सजातीया भवन्ति ।
- २० क्षेत्रफलघनफले ते सजातीये भवतो ययोर्भुजावेकरूपौ सजा-तीयौ भवतः।
- २१ योऽइः खल्लियोगतुत्यो भवति स पूर्णसंज्ञो ज्ञेयः । यथा षट् ॥

॥ इति परिभाषा ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

ययो राश्योः परस्परं भाजितयोरन्ते रूपं शेषं स्यात् तौ राशी भिष्ठसंज्ञी ज्ञेयौ ।

यथा अबं वृहद्राशिः किल्पतः । जदं लघुराशिः किल्पतः । जदं अबमध्ये मुहुः शोधितं शेषं तअं तत् जदादूनमविशष्टम् । पुनस्तअं जदान्मुहुः शोधितं शेषं जवं तत् तआदूनं जातम् । एत तअमध्ये मुहुः शोधितं शेषं कअं रूपम् । तसात् अबजदराशी भिन्नो स्तः ।

अस्योपपत्तिः ।

यद्येतौ भिन्नौ न भवतः तदाऽन्यौ राज्ञी कल्पनीयौ । हम्रमुभयो-

Digitized by Google

रपवर्तनाङ्कः कल्पितः । हझेनापव- अ.क.त व रिंतं जदं निःशेषं मविष्यति । जदं ज.व... द बतमपि निःशेषं करिष्यति । इदमेव हझ-हझं अबमपि निःशेषं करोति । तसात् तआं निःशेषं करिष्यति । मिलितराश्योरपवर्जाङः तआं दवं निःशेषं करोति । तसात् हझं दवं निःशेषं करिष्यति । पूर्व हझं जदं निःशेषं चकार । तसात् जवमपि निःशेषं करिष्यति । जवं च तकं निःशेषं करिष्यति । तसात् हझं तकमपि निःशेषं करिष्यति । तआं निःशेषं पूर्व कृतवान् । तसात् कआं रूपं निःशेषं करिष्यति । इदमगुद्धम् । यतो रूपं निःशेषं को-ऽप्यद्वो न करोति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

तत्र मिलितराइयोरपवर्त्ताङ्को महदृद्धः कल्प्योऽस्ति येन भक्तौ मिलितराशी निःशेषौ भवतः ।

यथा अवजदौ मिलितराशी किल्पतौ । तत्र यदि जदं न्यूनराशिः अवं महदाशिं निःशेषं करोति तदा- अ व यमेव महदद्दोऽस्ति । यदि जदं अवं ज ... द व ज ... ह ... व ज ... ह व ज ... ह ... व ज ...

अस्योपपत्तिः ।

जझं अहं निःशेषं करोति । अहं च दझं निःशेषं करोति । त-सात् जझं दझमपि निःशेषं करिष्यति । जदमपि निःशेषं करिष्यति । जदं हवं निःशेषं करोति। तसात् जझं हवं निःशेषं करिष्यति। पूर्वे जझं अहं निःशेषं करिष्यति। तसात् जझं अवमपि निःशेषं करिष्यति।

इदं जझं महदद्वः कुतो जातः। अत्रोच्यते। यदि महान् न भवति तदाऽस्माद्धिकं बत्तमुभयोरपर्वत्तकं कल्पितम्। इदं हवं निःशेषं क-रिष्यति। अहमपि निःशेषं करिष्यति। दझमपि च निःशेषं करिष्यति। जदं निःशेषमकरोत्। तस्माज्जझमपि निःशेषं करिष्यति। कल्पितं च जझाद्धिकम्। इदमनुपपत्तम्। तस्माज्जझं विनाऽन्यः कश्चन महदद्व उभयो राश्योरपवर्त्ताद्वो न भविष्यति। इदमेवाऽस्माकिमष्टम्॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

अथ राशिद्धयाधिकमिलितराश्यपवर्त्तनार्थं मेहदङ्काः क-ल्पनीयः।

यथा अं बं जं त्रयो राशयः किल्पताः । मथमं अबराश्योरपर्वर्तनार्थ महद्द्वो दं कल्पनीयः । यदि दं अ
जं निःशेषं करोति तदाऽयमेव महद्द्वो व
हेयः। यद्येवं महद्द्वो न स्यात्तदा हं म- द ..
हदद्वः किल्पतः । अथ्यमं वं निःशेषं अ
करोति यो महद्द्व एतह्न्यं निःशेषं व
करोति दमपि स एवाद्वो निःशेषं करि- ज
द
व्यति । तसाद् हं महद्द्वो दं लध्वद्वं ह ..
निःशेषं करिष्यति । इदं वाधितम् ।

यदि दं जं निःशेषं न करोति तदैतद्वयनिःशेषकारको महद्द उत्पाद्यः । तद् हं कल्पितम् । इदं दं निःशेषं करिष्यति । अं बमिप निःशेषं करिष्यति । जमिप निःशेषं करिष्यति । तसाद्राशित्रय-निःशेषकारकोऽयं जातः । असादन्यो महद्दे न भविष्यति । यदि

९ °रपवर्शको K. २ महदङ्गकल्पनं कियते । K. ३ अवं D. ४ करिष्यति K.

भवति तदा झं कल्पितम् । इदं आं बं निःशेषं करोति । दं निःशेषं करिष्यति । जं निःशेषं करोति । तसात् हमपि निःशेषं करिष्यति । अयं हादिषिकोऽस्ति । इदमशुद्धम् । तसान्महदक्को हं भविष्यति ।

अथ चतुर्थं क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

लघुराशिर्महद्राशेरंशोऽस्ति वा गुणगुणितांशोऽस्ति । यथा जहं अवांऽशो वांऽशा भवति । यदि जहं अवं निःशेषं

यथा जदं अवां ऽशो वां ऽशा भवति । यदि जदं अवं निःशेषं करोति तदेदं तस्यांशो भवति । यदि अ व निःशेषं न करोति तदा विचहतिचहो - ज द पर्यस्य विभागाः कार्याः । यदि अव - अ व ह ... झ जदौ राशी भिन्नौ सासादा विभागा कार्याः । यदि मिलितराशयः स्युसादाऽनयोरैपवर्ता केन हुझेन तुस्या विभागा कार्याः । तदा प्रत्येकं जवं वतं तदं अवस्यांशा भविष्यन्ति । योगश्चांशा भविष्यन्ति ।।

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

राश्चिद्धयमन्यराशिद्धयस्यैकरूपांशो यदि भवति तदा तयो-योगो राशिर्भविष्यति ।

यथा अवं जद्स्यांशः कल्पितः। तथैव हमं वतस्यांशः कल्पितः। तसाद् अबह्मयोगो जदवतयोगस्य स एवांशो भविष्यति।

अस्वोपपत्तिः ।

जदस्य किनिहोपिर अबतुल्यिनगगः कार्यः । वतस्य लिनिहो-पिर हम्मतुल्यिनगगः कार्याः । तस्मात् जकवलयोर्योगो अबह्मयोगतुल्यो ज ... क ... द भिनष्यित । एवं कदल्लतयोर्योगोऽपि । ह म तस्मात् जदवतयोर्योगे अबह्मयोर्योग व ल ... त एकस्पो भिनष्यित । इद्मेनास्माकिमष्टम् ॥

९ °रषवर्त्तनाङ्केन K.

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यदि राशिद्धयं राशिद्धयस्य यावदंशो भवति तदा द्वयो-योंगो राशिद्धययोगस्य स एव यावदंशो भविष्यति ।

यथा अवं जदस्य यावदंशः कल्पितस्तदा हम्मं वतस्य तावदंशः कल्पनीयः। तसात् अवहश्योगोऽपि अ ... क ... व जदवतयोगस्य स एव यावदंशो ज द ह छ श भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

अवस्य किन्होपिर जदांशैस्तुल्या विभागाः कार्याः । हम्ने ल-निहोपिर वतांशतुल्या विभागाः कार्याः । अकं जदस्य हलं वत-स्य नैकांशो भविष्यति । तसात् अकहल्योगो जदवतयोगस्य स ए-वांशो भविष्यति । पुनर् अकं कवं हल्लस्यगेरेकरूपमस्ति । तसात् द्वयोयोंगो जदवतयोगस्य एकरूपा यावदंशा भविष्यन्ति । इदमेवा-साकिमष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥

राशिद्वयं तथा भवति यथैकराशिद्वितीयराशेरंशो भ-वति । अन्यराशिद्वयं तथा भवति यथैकराशिद्वितीयराशे-रप्येकोंऽशो भवति । न्यूनं तद्वाशिद्वयं पूर्वराशिद्वयमध्ये चेच्छोध्यते तदा शेषं शेषस्य स एवांशो भविष्यति ।

यथा अबं जदस्यांशः अहं जझस्य स एवांशोऽस्ति । अहं अबाच्छोधितं जझं जदाच्छोधितं तदा अ ह .. ब हवशेषं झदशेषस्य स एवांशो भविष्यति । ब ज म द

अस्योपपत्तिः ।

हवं जवस्य सोंऽशः कल्पितः बोंऽशः अहं जङ्गस्वास्ति । तसाद् अवं वङ्गस्य स एवांशो भविष्यति । जदस्यापि स एवांश आसीत्। वझजदे तुल्ये भविष्यतः । जझउभयोः शोध्यते । तदा वजं झद-समानमविश्वष्यते । तसात् हवं झदस्य स एवांशो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ॥

यदि हवं झदस्य स एवांशो न भवति तदा कल्पितं हवं झतस्य स एवांशोऽस्ति । तसात् अवं जतस्य भ ह .. ब स एवांशो भविष्यति । अवं जदस्यापि व ज झ... त. द स एवांश आसीत् । तसात् जदजते समाने भविष्यतः। इदमगुद्धम्॥ असादिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

तथा राशिद्धयं चेद्भवति यथैकराशिद्धितीयराशेर्यावदं-शो भवति । अनयोर्मध्ये तथा राशिद्धयं शोध्यं तत्रैकराशि-द्वितीयराशेर्यावदंशो भवति । तदा शेषं शेषस्य तादृग् याव-दंशो भविष्यति ।

यथा अबं जदस्य यावन्तोंऽशा भवन्ति तावन्त एव अहं जझ-स्यांशा यदि भवन्ति तदा हवं झदस्य तावन्त एवांशा अवशिष्टा भविष्यन्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

वर्तं अबतुत्यं कार्यम् । इदं जदांशानुसारेण कि विहे विभक्तं कार्यम् । अहं लि विहे जङ्गांशानुं- अ ह ह ... ह ... ह ह ... ह ह ह ह ह ह ... ह ...

१ °जुकारेण D.

वमं अलतुत्यं कल्पयेत्। तसाद् मकं शेषं झदस्य सोंऽशो भविष्यति योंऽशो वकं जदस्यास्ति। एवं लहतुत्यं तनं कल्पितम्। कनं शेषं झदस्य स एव भविष्यति तकं जदस्य योऽस्ति। अहतुत्यवमतने जझस्यांशो भवतस्तथा हवतुत्यमनं झदस्यांशो भविष्यति। इदमेवा-साकिमष्टम्॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

यद्यक्कृद्धयमिष्टाक्कृद्धयस्य तुल्यांशं भवति वा यावदंशतुल्यं भवति तदांशोऽपि अंशस्य स एवांशो भवति य इष्टाक्कृ इष्टा-क्कृत्यांशो भवति ।

यथा अवं जदस्यांशोऽस्ति हुझं वतस्य स एवांशोऽस्ति । तसात् अवं हुझस्य स एवांशो भविष्यति वा यावदंशा भविष्यन्ति यो जदं वतस्यास्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि जदस्य किनिहोपिर अबतुल्यिनिभागः क्रियते । वतस्य छिनिहोपिर हझतुल्यो निभागः क्रियते अ....ब तदा जकं वलस्य सोंऽशो भवति अ- ज क द थवा यावदंशो भवति यथा अबं हझ- ह स स्यास्ति । तसात् जदं वतस्य स ए- वांशो भविष्यति अथवा यावदंशो भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

यद्यक्कद्वयं अभीष्टाक्कद्वयस्य गुणगुणितांशतुल्यं भवति तयोर्यदि विनिमयः क्रियते तदा यावदंशा यावदंशानां स एवांशो भवति । अथवा यावदंशास्तथा भविष्यन्ति यथैको द्वितीयस्य ।

९ जझस्य यथा भवतस्तथा &c. K.

यथा अबं यावदंशा जदस्यास्ति हुझं तावन्त एव यावदंशा वत-स्यास्तीति।तसात् अबं हुझस्य स एवांशो भविष्यति अथवा तथा या-वेदंशा भविष्यन्ति यथा जदं वतस्यास्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

अवस्य किचिहोपरि जदांशतुल्या विभागाः कार्याः । ह्झस्य छ-चिहे वतांशतुल्या विभागाः कार्याः । प्रत्येकम् अकं कबं प्रत्येकं हल्ल-अः कः व जः ः द झयोः स एवांशो भविष्यति वा तथा यावदंशा भविष्यन्ति यथा अबं हझ-स्यास्ति । यथा जदं वतस्यास्ति । तस्यात् अबं हझस्य स एवांशो भविष्यति अथवा तथा यावदंशा भविष्यन्ति यथा जदं वतस्यास्ति । इदमेवास्याकिमष्टम् ॥

अथेकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यद्यद्वयमध्येऽङ्कद्वयमेकनिष्पत्तिरूपं शोध्यते तदा शेषे तिल्लापत्तिरूपे भविष्यतः।

यथा अञ्चलद्योर्मध्ये अहलझे शोध्येते । अवलद्योर्निष्पत्तिः अहलझतुल्या कल्पिता। तदा हवझद्योर्निष्पत्तिरेतन्निष्पत्तितुल्येव. भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

यतः अबं जदस्य स एवांशो वा यावदंशोऽस्ति यः अहं जझ-स्यास्ति । तस्मात् शेषं हवं झदस्य स एवांशो अ ह .. व षा यावदंशो भविष्यति । तस्मात् अनयोर्नि- ज म ... द ष्पत्तिः सैव निष्पत्तिर्भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

१ °को भविष्यति K. मा∙ २

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्गयो-गस्य द्वितीयाङ्गयोगेन सैव निष्पत्तिर्भविष्यति ।

यथा अवयोर्निष्पत्तिर्जदयोर्निष्पत्तितुल्या कल्पिता। तस्मात् अज-योगस्य वदयोगेन निष्पत्तिः अवनिष्पत्तितुल्या भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

योंऽशो वा यावदंशा अं बस्यास्ति स एवांशो वा यावदंशा जं द-स्यास्ति । यदि योगः क्रियते तदा अजं बद्धस्य स एवांशो वा यावदंशो भविष्यति का ज यथा अं बस्यास्ति । तसात् अजयोगवद-योगयोर्निष्पत्तिः अबतुत्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

यदि चतुर्णामङ्कानां मध्ये प्रथमद्वितीययोनिष्पत्तिस्तु-तीयचतुर्थयोनिष्पत्तितुल्या भवति । तयोर्यदि विनिमयः क्रियते प्रथमतृतीययोनिष्पत्तिद्वितीयचतुर्थयोनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अबनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुल्या कल्पिता। तदा अजनिष्य-त्तिबदनिष्पत्तितुल्या भविष्यति।

अस्योपपत्तिः । व ... अं बस्य स एवांशो वा यावदंशोऽस्ति ज यो जं दस्यास्ति । यदाऽनयोर्व्यत्यासः क्रियते

तदा अं जस्य स एवांशो वा यावदंशो भवति यो बं दस्यास्ति । त-स्रात् अजयोर्निष्यत्तिबेदनिष्पतितुल्या भविष्यति। इदमेवास्राकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अनेनैव प्रकारेण योगान्तरयोर्निष्पैत्तिनिश्चयः कार्यः । यथा अब-बजनिष्पत्तिदृह्ह्झ्निष्पत्तितुल्या कल्पिता । यद्यनयोर्योगः क्रियते वान्तरं क्रियते तदा धाः व ज द ... ह झ अजजबयोर्निष्पत्तिदृश्च्झ्रह्गिष्पत्तितुल्या भ-

अस्योपपत्तिः ।

यदि व्यत्यासः क्रियते तदा अवदहनिष्पत्तिवजहञ्चनिष्पत्ति-तुत्या भविष्यति । तसात् अजदञ्चयोर्निष्पत्तिवज्ञहञ्चनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अजवजनिष्पत्तिदृश्चहञ्चनिष्पतितुत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

यत्र द्विप्रकारकाङ्का भवन्ति तत्र यदि प्रथमप्रकारे प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिद्वितीयप्रकारे प्रथमद्वितीयनिष्पत्तितुल्या
भवति प्रथमप्रकारे द्वितीयतृतीयनिष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारे द्वितीयतृतीयनिष्पत्तिसमाना भवति तत्र यदि मध्यमनिष्पत्तिस्त्यज्यते तदा प्रथमप्रकारे आद्यन्तनिष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारस्याद्यन्तनिष्पत्तिसमाना भवति ।

यथा अवजम् एकप्रकारकाङ्काः कल्पिताः । दहझं द्वितीयमका-रकाङ्काः कल्पिताः । तत्र अवयोर्निष्पत्तिर्दह-निष्पत्तितुल्या कल्पिता । बजयोर्निष्पत्तिर्हझ- व निष्पत्तितुल्या कल्पिता । तसात् अजनिष्पत्ति- ज

अस्योपपत्तिः ।

र्दमनिष्यत्तित्रत्या भविष्यति ।

यदि निष्पत्त्या विनिमयः क्रियते तदा अद्योर्निष्पत्तिकहिनिष्पत्ति-

Ħ ..

९ °निंष्पत्तेनिं K. २ निष्पत्तिविनिमयः K.

तुत्या भविष्यति । बह्रनिष्पत्तिर्ज्ञश्ननिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अद्रनिष्पत्तिर्ज्ञश्ननिष्पत्तितुत्या भविष्यति । यदि व्यत्यासः क्रियते तदा अजनिष्पत्तिर्दृश्ननिष्पत्तितुत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि रूपं द्वितीयाङ्कं यावद्वारं निःशेषं करोति तावद्वारं तृतीयाङ्कश्चतुर्थोङ्कं निःशेषं करोति चेत्तत्र विनिमये कियम्मणे रूपं यावद्वारं तृतीयं निःशेषं करिष्यति तावद्वारं द्वित्वियं चतुर्थं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अबं कल्पितम् । एनमेकाङ्कस्तावद्वारं निःशेषं करोति याव-द्वारं जदं हम्नं निःशेषं करोति । तसादेका-क्को जदं तथा निःशेषं करिष्यति यथा अबं ज.. द हम्नं निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

ह्ममध्ये यावन्ति जदानि सन्ति तावन्ति अबमध्ये रूपाणि सन्ति । यावन्तो ह्मस्य कलचिह्नोपरि जदतुल्या विभागाः क्रियन्ते तावन्तः अबस्य वचिह्नतचिह्नोपरि रूपाइतुल्या विभागाः कार्याः । तसाद रूपं जदं तथा निःशेषं करिष्यति यथा प्रत्येकम् अववततः वानि हककलल्झान् निःशेषान् करिष्यन्ति । अपि च संपूर्णम् अवं संपूर्ण हम्मं निःशेषं करिष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

तत्र गुण्यगुणकयोघीतो वा गुणकगुण्ययोघीतस्तुल्यो भवति ।

यथा अवगुणनफलं जसंज्ञं कल्पितम्। पुनर्वअगुणनफलं दं कल्पितम्। जंदं च मिथस्तुल्यमस्ति।

१ एकाङ्ग K. २ एकं K. . . .

अस्योपपत्तिः ।

अ ..

रूपं बं निःशेषं तथा करोति यथा अं जं ज निःशेषयति । यतः अं बगुणितं जं कल्पितम् । द

पुनरेकम् अं तथा निःशेषं करोति यथा बं दं निःशेषयति । यतो बं अगुणितं दं कल्पितम् । यदि व्यत्यासः क्रियते तदैकं बं तथा निःशेषं करिष्यति यथा अं दं निःशेषं करोति । एकं बं निःशेषमकरोत् यथा अं जं निःशेषमकरोत् । तसाद् अं यावद्वारं जं निःशेषं करोति वावद्वारमेव दं निःशेषं करिष्यति । तसाद् अं यावद्वारं जं निःशेषं करोति वावद्वारमेव दं निःशेषं करिष्यति । तसाद् जं दं तुल्यं जातम् । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

यत्राङ्कद्वयं तृतीयाङ्केन गुण्यते तयोघीतयोर्निष्पत्तिस्तद-

यया वं अगुणितं दघातः कल्पितः । पुनर्ज अगुणितं हघातः कल्पितः । दहनिष्पत्तिवीजनिष्पत्तितुल्या जाता ।

अस्योपपत्तिः ।

एकम् अं तावद्वारं निःशेषं करोति यावद्वारं बं दं निःशेषं करोति । एवं हि एकम् अं तावद्वारं निःशेषं करोति यावद्वारं कं हं निःशेषं करोति । तसाद् बं दं तावद्वारं निः- ब ... शेषं करिष्यति यावद्वारं जं हं निःशेषं करोति । ज तसाद् बदनिष्पत्तिज्ञहिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । द यदि व्यत्यासः कियते तदा बजनिष्पत्तिद्दहिनिष्पत्ति- समाना भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

योऽङ्कः अङ्कद्वयेन पृथक् गुण्यते तदा तयोईयोरङ्कयोर्नि-षत्तिस्तद्वयनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।

१ एकं K.

यथा जं अगुणितं घातो दं कल्पितः । पुनर्जी बेन गुणितं

तश्च हं कल्पितः । तसाद् अबनिष्पत्तिर्दहनिष्पत्ति-

त्रत्या भविष्यति । अस्योपपत्तिः । यतो जम् अगुणितं दं जातम् । अं जगुणितं तदापि दं भविष्यति । एवं हि जं बगुणितं हं जातम् । बं जगुणितं तदापि हं भविष्यति । तसात् दहनिष्पिः अबनिष्पत्तित्तत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥ अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥ यत्र तथा चत्वारोऽह्या भवन्ति येषु प्रथमद्वितीययोर्निण-त्तिस्तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तिसमाना भवति । तदा प्रथम-चतुर्थघातो द्वितीयतृतीयघाततुल्यो भविष्यति । यदि चत्वा-रोऽङ्का भवन्ति तत्र प्रथमचतुर्थयोघीतो द्वितीयतृतीयघात-तुल्यश्चेद्भवति तदा प्रथमद्भितीयनिष्पत्तिस्तृतीयचतुर्यनि ष्पत्तिसमाना भविष्यति । यथा अवजद्चत्वारोऽहाः सन्ति तत्र अवनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्ति-तुस्यास्ति । तसाद् अदघातो बजघातसमानो भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

अम् दगुणितं घातश्च हं किल्पतः । वं जेन गुणितं घातो शं किल्पतः । पुनर् अजघातश्च वं किल्पतः । तसाद् अं जदाभ्यां गुणितं घातः वं हं जातः । व
तसात् जदनिष्पत्तिचेहनिष्पत्त्या तुल्या भिवघ्यति । पुनर् अं वं जगुणितं वं शं घातः कहिपतः । तसाद् अवनिष्पत्तिचेशनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । अवनिष्पत्तिजीदनिष्पत्ति-

⁹ अथोनविं° K.

समानास्ति । जदनिष्पत्तिश्च वहनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् वहनि-ष्पत्तिवंशनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् वनिष्पत्तिर्हेन श्नेन तुस्या जाता । तसात् हश्ने समाने जाते ।

पुनरिप **हं झं** समानं कल्पितम् । तसात् अबनिष्पत्तिर्जदनिः षत्तितुल्या भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

पूर्वप्रकारेण वझनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमानास्ति । वहनिष्पत्ति-जेदनिष्पत्तिसमानास्ति । वहनिष्पत्तिर्वझनिष्पत्तिर्मिथस्तुत्यास्ति । कुतः । हझयोस्तुत्यत्वात् । अतः अबजदनिष्पत्तिर्मिथः समाना भवि-ष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अनेन क्षेत्रेणेदमपि सिद्धम्।

यदि तादशास्त्रयोक्का भवन्ति येषु प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिर्द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तिसमाना भवति तत्र प्रथमतृतीयघातो द्वितीयवर्गतुल्यो
भवति । इदमपि ज्ञातम्। प्रथमतृतीयघातो यदि द्वितीयवर्गतुल्यो भवति
तदा प्रथमद्वितीयनिष्पत्तिर्द्वितीयतृतीयनिष्पत्तितुल्या भवति ॥

अथ विंशतित्मं क्षेत्रम् ॥ २० ॥

यत्र लघ्वक्का एकनिष्यत्ती तथा भवन्ति यथैतेभ्यो लघ्वक्कास्तिष्यत्ती न भवन्ति तदैतेऽक्कास्तस्यामेव निष्यती ये षृहदक्कास्तान् निःशेषान् करिष्यन्ति । यथाक्रमं लघ्वक्केषु लघ्वक्कास्ते महदक्केषु लघ्वक्काक्षिःशेषान् करिष्यन्ति । लघ्व-क्केषु ये महदक्कास्ते महदक्केषु महदक्काक्षिःशेषान् करिष्यन्ति ।

यथा अबजदे एकनिष्पत्तौ कल्पिते । हमं वतं तस्यामेव नि-षत्तौ लघ्वक्कौ कल्पितौ । तसात् हमं अबं यावद्वारं निःशेषं करि-ष्यति वतं जदं तावद्वारमेव निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

ह्झम् अबस्यांशोऽस्ति वा यावद्रुणितोंऽशोऽस्ति। यदि यावद्रुणि-तोंऽशो भवति तदा हझस्य कचिहोपरि हककझौ अब अबांशतुल्यो कल्पितौ। तैदैते एवांशा जदस्य जद्र भविष्यन्ति। तौ च बललतौ कल्पितौ। हकं ह .. क .. झ वलस्य तल्प्रमाणं भविष्यति यल्प्रमाणं हझं वतस्य भवति। तसात् हकबलो हझवतयोर्न्यूनौ भविष्यतः। हझवतयोर्निः ष्पितुल्यौ भविष्यतः। हझवत्तौ अस्यामेव निष्पत्तौ न्यूनाङ्कौ कल्पितौ। इदमशुद्धम्। तसात् हझम् अबस्यांशो भविष्यति। तदा वतं जद-स्यांशो भवति। न यावद्रुणितोंऽशः। तसात् हझं यावद्वारम् अबं निःशेषं करिष्यति तावद्वारं वतं जदं निःशेषं करिष्यति। इदमेवा-साकमिष्टम्॥

अधैकविंशतितमं क्षेत्रम्।। २१।।

ये लघ्यक्कास्तथैकनिष्पत्ती यदि भवन्ति यथान्ये तेम्यो लघ्यक्कास्तक्षिष्पत्ती न भवन्ति । तदा तेऽक्का भिक्षा भवन्ति । यथा अबी लघ्यक्कौ एकस्यां निष्पत्ती कल्पितौ । एतौ भिन्नौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि भिन्नो न स्तस्तदोभयोर्ज अपनर्तनं कल्पितम् । जं यानद्वारम् अं निःशेषं करोति तत्फलं हं कल्पितम् । पुनर् जं बं यानद्वारं निःशेषं करोति तत्फलं दं कल्पितम् । तसात् जं व ... हदाभ्यां गुण्यते तदाऽनयोर्घातः अं बं भनिष्यति । तसात् ज — हदनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तितुल्या भनिष्यति । एतद्वयं हं दम् अवयोर्न्यूनमस्ति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टमेन समी-चीनम् ॥

⁹ तदा वते त एवांº K.

अथ द्वार्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

भिन्नाङ्कावल्पोस्तस्तिश्विष्पत्तावन्यावल्पावङ्कौ न भविष्यतः।
यथा अवी द्वौ भिन्नाङ्कावल्पो कल्पितौ । एतन्निष्पत्तावन्यावङ्कावस्पौ न भविष्यतः। यदि अन्यावङ्कौ एतन्निष्पत्तावल्पौ
स्यातां तदा जदौ कल्पितौ । तसात् जं अं हतुल्यं निःशेषं करिष्यति । दं वं हतुल्यं निःशेषं करिष्यति । दं ज
अं जतुल्यं निःशेषं करिष्यति । हं वं दतुल्यं निःशेषं करिष्यति । तसात् अवौ मिलिताङ्कौ जातौ । पूर्व कलिसतौ तु भिन्नाङ्कौ । इदं वाधितम् । असदिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

द्वयोर्भिन्नाक्कयोरेकमक्कमन्यस्तृतीयोऽक्को निःशेषं करोति चेत्तदा तृतीयोऽक्को द्वितीयाक्केन सार्क भिन्नो भविष्यति।

यथा अबी ह्रौ भिन्नाङ्की किल्पती । जं तृतीयाङ्को यथा अं निः-शेषं करिष्यति तथा किल्पतः । तदा जबाङ्को भिन्नो भ-विष्यतः । व

अस्योपपत्तिः ।

ज ...

यदि जबाद्दी मिन्नी न भविष्यतः तदोभयोरपवर्तनार्थ दं कल्पितः । तसात् दं जं निःशेषं करिष्यति । जं अं निःशेषं करोति। तसात् दं अं निःशेषं करिष्यति । दं बमिप निःशेषं करोति। तसात् अबी मिछिताद्दी जाती । कल्पिती मिनाद्दी । इत्यगुद्धम् । तसादस्यदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यौ द्वावङ्की तृतीयाङ्काद्रिक्षी स्तस्तयोर्घातोऽपि तस्मा-चृतीयाङ्काद्रिको भवति ।

९ **जं बाङ्गादि**मो भविष्यति K.

यथा अबी जाङ्काद्रिको कल्पितो। अवयोर्घातो दं कल्पितः। तसा-दयं दाङ्को जाद्रिको भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

यदि दजावड़ों भिन्नों न भवतस्तदा द्वयोरपवर्तनाड़ों हूं किस्पत्तः ।
हाड़ो दाई झतुत्यं निःशेषं किरण्यतीति किस्पतः ॥
तसात् हझमातो दं भविष्यति । अं बेन गुणितं दं व...
जातमस्ति । तसात् हअनिष्यिचिक्कानिष्यिचुत्या द.....
भविष्यति । हं जैनिःशेषं करोति । तसात् हं अं हम्
भिनाडों भविष्यतः । तसात् हं अं हमू जातो । अस्यां

निष्पत्तावन्यौ ल्प्बद्दो न भवतः । एतावद्दो बङ्गो निःशेषौ करि-ष्वतः । तस्मात् हं वं निःशेषं करिष्यति। जं निःशेषं करोति । तस्मात् बजो मिलिताद्दो जातौ । कल्पितौ च भिष्नाद्दौ । इदमशुद्धम् ॥ तस्मा-दस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥ यद्येकाङ्को द्वितीयाङ्काद्विको भवति तदा तस्य वर्गोऽदि द्वितीयाङ्काद्विको भविष्यति ।

यथा अं बाद्भिनं कल्पितम् । जम् अञ्चलस्य वर्षः कल्पितः। तस्यात् जं बाद्भिनं भविष्यति ।

बस्योपपत्तिः।

द्भद्रअभद्दो तुन्यो कल्पितो । तसात् अं दं च बाद्रिनं भविष्यति । अभद्रदभद्रयोघीततुत्यं जमस्ति । व... तसात् जाद्दोऽपि बाद्रिनो भविष्यति । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ यदि द्वावङ्कावन्याभ्यामङ्काभ्यां प्रत्येकं भिन्नौ भवत-स्तदाऽऽद्याङ्कद्वयघातोऽन्यद्वयाङ्कघाताज्ञिन्नो भवति । यथा अं बगहरूयं कल्पितं तथा जदमन्याहरूयं कल्पितम् । प्रत्येकं अं वं जदग्रम्यां भिन्नमस्ति । अवयोर्घातो हं क-ल्पितः। जदयोर्घातो झं कल्पितः। तस्मात् ह्झा-विपि मिथो भिन्नी भविष्यतः। ज.. व.... अस्योपपत्तिः।

बतः श्रं वं मत्येकं जाद्वित्रमित । तसात् हमि जाद्वित्रं भवि-ध्यति। पुनर् श्रं वं मत्येकं दाद्वित्रमितः । तसात् हमि दाद्वित्रं भवि-ध्यति । तसात् जंदं मत्येकं हाद्वित्रं भविष्यति । तसात् झमि हा-द्वितं मविष्यति । ईदमसाकिमिटम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

यावङ्कौ भिन्नौ भवतस्तयोर्वर्गाविप भिन्नौ भविष्यतः । एवं तयोर्घनाविप भिन्नौ भवतः ।

यथा अबी भिन्नाक्की कल्पिती । अनयोर्वगीं जदी कल्पिती । इसी च वनी कल्पिती । तसादनयोर्वगीं जदी मिथो भिन्नी भवि-ष्यतः । इसी बनाविप मिथो भिन्नी भविष्यतः ।

वस्योपपत्तिः।

⁹ इदमेवा° K.

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

यावङ्की भिन्नी भवतस्तयोयोंगोऽपि प्रत्येकाङ्किन्नो भवि-च्यति । यदि योगः प्रत्येकाङ्किन्नो भविष्यति तदा तदङ्कयो-गयोरन्तरमपि भिन्नं भविष्यति ।

यथा अबबजी मिलाही कल्पिती । तस्मात् अ.....ब....ज अजम् अबाद्मिलं भविष्यति । द— अस्योपपत्तिः ।

यदि अजम् अबाद्भिन्नं न भवति तदोभयोरपवर्तनं दं कल्पितम्। एतत् दं बजस्याप्यपवर्तनं करिष्यति । तस्मात् अवबजी अभिन्नो भवतः । इदमग्रद्धम् ॥

अनेनैव प्रकारेण अर्ज बजाद्विनं भविष्यति ।

पुनरिप अजअबी भिन्नी कल्पिती तस्मात् अवबजाविप मिन्नी भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि अववजो भिन्नो न भवतस्तदोभयोरपवर्तनं दं कल्पितम्। तदा दम् अजस्याप्यपवर्तनं करिष्यति । तस्मात् अजअवो भिलितो भविष्यतः । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टमेव समीचीनम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

यदि अवबजी मिलिती किल्पती तदा अजवजाविप मिलि-ताही मिविष्यतः। यदि अजवजी मिलिताही न म- अ.....व...ज वतस्तदानयो रूपं विना कोऽप्यपवर्तको न भविष्यति। अवमपि रूपं विना न कोप्यपवर्तयति।तस्मात् अववजी भिन्नी मिनि-ष्यतः। इदमगुद्धम् ॥ पुनरि अजबजी मिलितौ कित्यौ अबबजावि मिलितौ भवि-ध्यतः । यदि मिलितौ न स्तस्तदाऽनयो रूपं विनाऽपवर्तको न मिन-ध्यतीति।अजमिप रूपं विना न कोऽप्यपवर्तयतीति।इदमशुद्धम् । इष्टमुपपन्नम् ॥

अथैकोनत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

योगाङ्कं प्रथमाङ्को निःशेषं करोति।

यगा अं योगाङ्कः किल्पतः। बम् अस्यापवर्तकं किल्पतम्। यदि बं प्रथमाङ्को भवति तदेष्टमस्माकं समीचीनम्। यदि बं अ.... प्रथमाङ्को न भवति तदा बस्यापवर्तकं जं किल्पतम्। ब., अनेनैव प्रकारेण जं प्रथमाङ्को भविष्यति। यद्ययं न स्था- तदाऽन्यः कल्पनीयः। एवं कोऽप्यस्यापवर्तनाङ्को भविष्यति। तदेव जं किल्पतम्। तस्मात् जम् अमपि निःशेषं करिष्यति। इदमेवेष्टम्॥

अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

योऽद्गः कश्चित् स प्रथमाङ्गो भवति । अथवा तस्यापवर्तकः प्रथमाङ्को भवति ।

यथा अं कल्पितम् । यदीदं प्रथमाद्यः स्यात्तदैविमष्टं जातम् । यदि प्रथमाद्यो न मवति तदा योगाद्यो भविष्यति । यो-गाद्यं प्रथमाद्यः निःशेषं करिष्यत्येव। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

्यमङ्कं प्रथमाङ्को निःशेषं न करोति तस्मात् प्रथमाङ्को भिक्को भवति।

यथा अं प्रथमाद्यः कल्पितः। यमद्रं प्रथमाद्यो निःशेषं न अ... करोति सोऽद्यो बं कल्पितः। तस्मात् अं बाद्रिकं भविष्यति।

⁹ तदैवं D.

अस्योपपत्तिः।

यदि द्वारपि भिन्नो न स्तस्तदैतयो रूपं विहासान्यः कश्चिदद्वोऽन्य-र्तनं करिष्यति । अं च प्रथमाद्वः कल्पितः । इद्मशुद्धस् ॥

अथ द्वात्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

प्रथमाङ्को यदि घाताङ्कं निःशेषं करोति तदा प्रथमाङ्क-स्तस्य घातस्यैकभुजमपि निःशेषं करिष्यति ।

यथा अं प्रथमाद्रः कल्पितः । बं घातफलाद्रः कल्पितः । घातफला-द्वस्य जदी भुजी कल्पिती । अं बं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तसात् अं जं निःशेषं करिष्यति वा दं निःशेषं करिष्यति । अस्योपपत्तिः ।

बदि अं जं निःश्वेषं करोति तदासदिष्टं समीचीनम् । बदि विःशेषं न करोति तदा अजौ मिथो मिनौ भविष्यतः । अ...
पुनर् अं बं हतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । ब..........
तस्मात् अं चेत् हेन गुण्यते तदा बं भविष्यति । ज..
जद्यातोऽपि बं भविष्यति । तस्मात् अजनिष्यति - ह....
देहनिष्यत्या तुल्या भविष्यति । अजौ तथा न्यूनाद्गौ स्तो यथाऽस्यां निष्यत्तावन्यौ न्यूनाद्गौ न भविष्यतः । तस्मात् अं दं निःशेषं करिष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ।

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्॥ ३३॥

ज्ञाताङ्कनिष्पत्तौ छष्वङ्कानायुत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ।

यथा अवजम् अद्याः किल्पताः। एतेऽद्या यदि मिश्रो मिनाः सन्ति तदास्यां निष्पत्तावेत एवाद्या लघवो भिवष्यन्ति । यदि मिलिताद्याः स्युस्तदैतेषामपवर्तको महदद्यो दं किल्पतः। पुनिरदं कल्पनीयं दं अं हतुल्यं निःशेषं करोति वं झतुल्यं निःशेषं करोति जं च बतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् हं झं वम् एतेऽद्यास्तस्यां निष्पत्तौ लघ्वद्या अविष्यन्ति।

विद व भवन्ति तदा तकछं तस्यां निष्यती छ
जक्का मिक्यन्ति । तः अं कः वं छं जं महस्यं व.....

निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तसात् अत्यातः ज......

व अविष्यति । दहषातः अमिता । तसात् इत
निष्यत्तिमेदनिष्यतिसमाना मिक्यिति । हं च ताद
विकमिता । तसात् में दादिषकं भविष्यति । अवजं क्र
निःशेषं करिष्यति । पूर्वमेतेषां निःशेषको बृहद्शो व
दे कल्पितः । इदमगुद्धम् । तसात् हं झं वं विना
ऽन्ये कष्वद्शा अस्यां निष्यत्तौ न भविष्यन्ति । इदमेवासाकिष्यस्य ॥

अथ श्रवांकाश्यमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

तत्र द्वाभ्यामङ्काभ्यां यो लष्यङ्को निःशेषको भवति ततुत्यादनं चिकीर्षितमस्ति ।

यथा अं बम् अङ्कद्वयं कल्पितम् । यद्येतयोर्भध्ये छध्वङ्को महद्द्वः निःश्चेषं करोति तदा महद्द्वः एवेष्टः । यदि न करोत्येंमौ च मिथो भिन्नो मवतस्तदा अं बगुणितं कार्यम्। तदा घातफर् जिमष्टं मिन्यति । अस्योपपत्तिः ।

जं अं वं प्रत्येकं निःशेषं करोतीति प्रकटमेवासि । यवन्यो रूप्यहो मनति तद् दं कल्पितम् । अवौ इतुल्यं झतुल्यमेनं ख...
निःशेषं करिष्यतः। तस्मात् अह्घातो दं भविष्यति। व...
तथा ब्ह्रस्वातोऽपि दं भविष्यति । तस्मात् अवनि- प्रतिक्रिहनिष्यितसमानाः भविष्यति । अवौ व्याक्रस्वा स्तो वथाऽस्यां निष्यत्तावन्यो रु- स्तिष्यति । वस्मात् अं झं निःशेषं करिष्यति । वं हे निःशेषे करिष्यति । पुनर्बम् अङ्गाभ्यां गुणितं जं दं जातम्। तस्मात् अङ्गान-

९ नि:श्रेषो K. २ D. inserts तदा.

व्यक्तिजैदनिव्यक्तित्वा भविष्यति । तस्मात् जं महदद्दो दं लघ्वद्वमपि निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तस्मात् जात् कोऽपि लघ्वद्वो न भविष्यति यं अबौ निःशेषं कुरुतः ।

यदि अबी मिलिता हो स्तरतस्मात् झहो तस्यां निष्यत्ती रूखहो किस्यती । तस्मात् अबनिष्यत्ति झहिनष्यतितुल्या भविष्यति । अहि-भातफलमथवा बझघातफलं च जं किल्पितम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

अबौ जं निःशेषं कुरुत इति प्रकटमेवास्ति। अयं लघ्वद्भः कुतोऽस्ति। यद्ययं लघ्वद्भो न भवति तदाऽस्मात् लघ्वद्भो दं कल्पितः। अगुम् अं

बतुस्यं निःश्वेषं करोति बं च ततुस्यं निःशेषं क-रोति । तस्मात् अवधातो दं भविष्यति । बतधा-तोऽपि दं भविष्यति । तस्मात् अबनिष्पत्तिः तवनि-ष्पत्तिसमाना भविष्यति । झहनिष्यत्तिसमाना आ-सीत् । तस्मात् झहनिष्यत्तिः तवनिष्यत्तिसमाना भविष्यति । अस्यां निष्यत्तौ झहौ छष्यद्वौ स्तः ।

स... इ... ज.....

ब—त—

तस्मात् झं तं निःशेषं करिष्यति । पुनर्बे झेन गुणितं खं जातं तेन गु-णितं दं जातम् । झतनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुल्या मविष्यति । तस्मात् जं महदद्दो दं रूष्वदं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथ पश्चित्रशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

यं लघ्यक्कमन्यौ कावप्यक्कौ निःशेषं कुरुतः सोऽक्कसाः स्यामक्काभ्यां निःशेषितमन्यां क्कं निःशेषं करिष्यति ।

यथा वतं लघ्यक्कः कल्पितः । अमुं अवजदाक्कौ निःशेषं कुरुतः । पुनरेतावक्कौ हझाक्कं निःशेषं कुरुतः । तस्मात् वताक्कोऽपि हझं निःशेषं करिष्यति ।

१ K. omits अन्य in अन्याई.

अस्योपपत्तिः ।

यदि वताको हमं निःशेषं न करोति तस्मिन् कझमवशिष्टं कल्पि-तम्। कझं वताच्यूनमवशिष्टम्। पुनर् अवजदौ हकं निःशेषं कुरुतः।

कुतः । वतनिःशेषकरणात् । वतेन हकस्यापि अ.. व निःशेषकरणाच । पुनर् अवजदौ हझं निःशेषं ज...द कुरुतः । तसात् कझमपि निःशेषं करिष्यतः । वतं व.....त रुष्यक्कम् अवजदौ निःशेषं चक्रतुः । वतं कझा-दिषकमस्ति । इदमशुद्धम् । असादिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथ षट्त्रिंशसमं क्षेत्रम्॥ ३६॥

ताहशो लघ्वङ्कः कल्पनीयो यं द्वाभ्यामधिका अङ्का निः-शेषं कुर्वन्ति ।

यथा अवजास्तयोऽद्वाः कल्पिताः । लघ्यद्वस्तु दं कल्पितः । अमुम् अवौ निःशेषं कुरुतः । यदि जाद्वोऽपि दं निःशेषं करोति तदायमेव लघ्यद्वः सिद्धस्तिमिरद्वैरपि निःशेषो भवति ।

अत्रोपपत्तिः प्रकटैव।यदि दाक्को लघुर्न भवति अ...
तस्मादन्यो लघ्वक्को हः कल्पितः। अमुम् अबौ निः- ज.....
शेषं करिष्यतः। तस्मात् हं दाक्कोऽपि निःशेषं करि- इ......
ध्यति । दं हाक्कादिषकमस्ति । इदमग्रुद्धम् ।

यदि जाको दं निःशेषं न करोति तदा पुनर्रुघ्वक्को निष्पादनीयो यं जदौ निःशेषं कुरुतः । सोऽक्कः हं कल्पितः। अयं लष्वक्को जातः । एनम् अवजदा निःशेषं कुर्वन्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

यस्मात् अवौ दं निःशेषं कुरुतो दाक्को हं निःशेषं करोति। तस्मात्

Digitized by Google

अबी हमि निःशेषं करिष्यतः । जाडोऽपि हं निःशेषं करिष्यति । तस्मात् हाडोऽपि अबजैनिः- ब... शेषो भैवति । अयं हाडः कुतो लघुस्तत्र युक्तिः । ज.... य्ययं लघुनं भवति तदा झाडो लघुः कल्पितः । ह........ एनम् अबजा निःशेषं कुर्वन्ति तस्मात् अबाविष निःशेषं कुरुतः । दाडोऽपि निःशेषं करिष्यति । जाडोऽपि निःशेषं करोति । तस्मात् जदाविप निःशेषं करिष्यतः । तस्मात् हाडोऽपि निःशेषं करिष्यति । हाडो झादिषकः। इदमशुद्धम्। तस्मादिष्टमस्माकं समीचीनम् ॥

अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७ ॥

यमक्कं यः कश्चनाक्कः निःशेषं करोति तत्र छिष्यस्तन्नाम-कांशो भवति ।

यथा अं बाक्को निःशेषं करोति । यावद्वारं बाक्को अं निःशेषं करोति तावद्वारं रूपं जाक्कं निःशेषं करोतीति क- ल्यितम् । तसात् यावद्वारं जम् अं निःशेषं करोति व तावद्वारं रूपं बाक्कं निःशेषं करिष्यति । तसाद्व्यं ज वस्य सोंऽशो भविष्यति योंऽशो जम् अअक्कस्यास्ति । रूपं बस्य बाक्कनामकोंऽशो जातः । तदा जम् अअक्कस्य सोंऽशो जातः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथाष्टत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८ ॥

यस्याइत्यांशो यन्नामको भवति तन्नामाइत्तमई निःशेषं करिष्यति।

यथा अध्यक्कस्य बमंशोऽस्ति । रूपं जस्य अ स एवांशोऽस्तीति कल्पितम् । तसात् बं जनामकं ज भविष्यति । रूपं जाङ्कं तथा निःशेषं करोति यथा '

९ भविष्यति K. २ °वासादिष्टम् K.

बाइः अं निःश्वेषं करोति । तसाद्व्यं बं निःशेषं तथा करोति यथा जाइः अं निःशेषं करोति । तसात् जाइः बंशंशनामकः अं निःशेषं करिष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥

तत्र यस्य बहवोंऽशाः प्राप्यन्ते तादृशो लघ्वङ्को निष्पाद-नीयोऽस्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

यद्ययं लघ्वद्दो न भवति तदा तो लघ्वद्दः कल्पितः । कल्पिता भंशाः तलघ्वद्दस्य भविष्यन्ति । एतल्लघ्वद्दनामसदृशाः अद्वा हद्झाः एनं निःश्लेषं करिष्यन्ति । लघ्वद्दो वात् लघुरस्ति । इदमनुपपन्नम् । ससात् व एवेष्टाद्वः । इदमेवाऽस्माकमिष्टम् ॥ ३९ ॥

श्रीमद्राजाधिराजम्भुवरजयसिंहस्य तुष्टी द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समिभघारूढितेन प्रणीते ।

प्रन्थेऽस्मिनाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदातर्थध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति सप्तमः संगतोऽभूत् ॥ ७ ॥

इति श्रीजगन्नाथसम्राह्विरचिते रेखागणिते

सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथाष्ट्रमोऽध्यायः प्रारम्यते ॥ ८ ॥ ॥ तत्र पञ्चविंशतिक्षेत्राणि सन्ति ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेवामाद्यन्ती भि-म्नाङ्की चेद्रवतस्तदा तस्यां निष्पत्ती तान् विनाऽन्दे छष्वङ्का न भविष्यन्ति ।

यथा एकस्यां निष्यत्तौ अवजदा लब्बद्धाः कल्पिताः । अदौ मिथो भिक्नौ कल्पितौ । तस्मादस्यां निष्पत्तावेते लब्बद्धाः सन्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

यधेते लघ्वद्रा अस्यां निष्यत्तौ न भवन्ति तदा तस्यां निष्यत्तौ तेभ्यो लघवोऽन्येऽद्रा हझवताः कित्यताः।
तस्यात् अदिनिष्यित्तिं विष्यत्तिसमाना भ- ह--विष्यति । अदौ यौ भिन्नाद्रौ तावस्यां नि- क्ष--- व--प्यत्तौ लघ्वद्रौ भविष्यतः । यावन्तोऽद्रा
अस्यां निष्यतौ भवन्ति तान् अदावेव निःशेषं करिष्यतः । तस्यात् अं हं निःशेषं करिष्यति । अं हादिषकमित्ति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

एक निष्पत्ती ये छघ्वक्का भवन्ति तेषामुत्पादन मिष्टमस्ति । यथा अवनिष्पत्ती चतुर्णा छघ्वक्का नामुत्पादन मिष्टमस्ति । अस्यां निष्पत्ती अबी छघ्वक्को कल्पिती। अवर्गः कार्यः । पुनर् अवधातः कार्यः । पुनर्ववर्गः कार्यः । फलानां च जदहसंज्ञा कार्या । पुनरेत- अयेण अं गुणनीयम् । बहु घातश्च कार्यः । प्तेषां फलानि इत्वत- कानि कल्पितानि ।

अस्योपपत्तिः ।

अम् अबाम्यां गुणितं फरूं जं दमुत्पन्नम् । तदा अबनिष्पिः

Digitized by Google

जदनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति। बम् अबाभ्यां
गुणितं फलं दहसंज्ञं जातम्। तसाद् दहनि- भ, २. ब, ३.
ज, ४. द, ६. ह, ९.
पतिः अबनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसा- झ,८.व,१२.त,१८.क२७.
देतत्रयमेकनिष्पत्तो भविष्यति। पुनर् अम् एत-

त्रयगुणितं झवतं निष्पनं तदप्येकनिष्पत्तौ जातम् । हगुणितम् अबं फलं तकसंत्रं जातम् । इदमपि पूर्वनिष्पत्तौ जातम् । तसाचत्वा-रोऽह्या एकस्यामेव निष्पत्तौ जाताः । एते लघ्वद्वा ये अस्यां निष्पत्तौ जाताः । कुतः । अवयोभिन्नाहत्वात् । जहौ ऐतेषां वर्गी झकौ घनौ त्रयाणामहानामाद्यन्तौ चतुर्णामप्याद्यन्तौ भिन्नौ पिन्नौ पतितौ । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

स्रोन क्षेत्रेणेदं सिद्धम् । ये लघवस्रयोऽद्वा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्तौ वर्गी भवतः । ये लघवश्चत्वारोद्धा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्तौ घनौ भवतः ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यावन्तो लघ्वङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्तौ भिन्नौ भवतः।

यथा अवजदा लघ्वङ्काश्चत्वार एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । तत्र अदौ भिन्नौ भैवतः।

अस्योपपत्तिः । अ. ४. व, १२. ज, १८. द, २७. अस्योपपत्तिः । इ, २. झ, ३.

अस्यां निष्पत्ती हुझी लघ्वद्वी व, ४. त, ६. क, ९. . गृहीती। पुनवेतकास्त्रयोऽद्वा लघवो

गृहीताः । पुनर्छमनसाश्चत्वारो लघ्वद्वास्तस्यामेव निष्पत्तौ गृहीताः । तस्मादेते अवजदतुल्या मविष्यन्ति । लसौ भिन्नौ स्तः । अदाविष भिन्नौ भविष्यतः । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

९ अं बं K. २ K. एते (एती ? or एतयो. ?) ३ मविष्यतः K.

अथ चतुर्यक्षेत्रम् ॥ ४ ॥

तत्र कल्पितबहुनिष्पत्तिषु छघूनामङ्कानामुत्पादनमिष्ट-मस्ति ।

यथा अबनिष्पत्तिजदनिष्पत्तिह्मनिष्पत्तयः कल्पिताः मद्बद्धयमस्यां निष्पत्तौ लष्ट्यद्वं भवति । अथ तं लष्ट्यद्व उत्पाद्यः यं बजौ निःशेषं करिष्यतः । तथैकोऽद्वो वम् उत्पाद्यो यम् अं तथा निःशेषं करिष्यति यथा बं तं निःशेषं करोति । पुनर्दे कं तथा निःशेषं करोति यथा जं तं निःशेषं करोति । पुनर्लः लघ्वद्व उत्पाद्यो यथा छं कही निःशेषं करिष्यतः । पुनर्नसौ ल्प्बद्दौ उत्पाद्यौ यौ वतौ तथा निःशेषं कुरुतो यथा कं लं निःशेषयति । झं मं निःशेषं तथा करोति यथा इं छं निःशेषयति। तसात् नसलमञ्जासास् निष्पत्तिषु उत्पना नाताः।

अस्योपपत्तिः ।

अबी वती क्रमेण तुल्यं निःशेषं करुतः । वती नसी तुल्यं निःशेषं कुरुतः । तसात् नसौ अ, ९, ब, ५, ज, ३, द, ४, इ, ५, झ, ६, अवनिष्यती भविष्यतः व, ६. त, १५. क, २०. ल, १०. म, २४. जदौ तकौ तुल्यं निःशेषं कु-न, ६. स, १५. रुतः । पुनस्तकौ सलौ निः-न, ६. स, १५. छ, २०. म, २४. शेषं कुरुतः । तसात् सछी जदनिष्पत्तितुल्यो जातौ । हझौ लमौ तुल्यं निःशेषं करिष्यतः। तसात् लमी हञ्चनिष्पत्तितुत्यौ भविष्यतः। तसात् नसलमा ल-ध्वञ्चा अस्यां निष्पत्ती जाताः । यदि लध्वञ्चा एते न भवन्ति तस्मात गफछखा रूघ्वद्भाः कल्पिताः। तसात् अबी गफौ तुल्यनिष्पत्तौ भवि-ष्यतः । पुनरबो लब्ब हो अस्यां निष्पत्ती स्तः । तसादेती गर्फ निः-शेषं करिष्यतः। अनेनैव प्रकारेण जदी फङी निःशेषं कुरुतः । हुझी छखी निःशेषं कुरुतः । तसात् बजी फं निःशेषं करिष्यतः । तं कष्वद्यं बजी निःशेषं करिष्यतः । तसात्तं फं निःशेषं करिष्यति । पुनस्तकनिष्पत्तिः फक्कनिष्पत्तितस्या भविष्यति । तसात कं छं

निःशेषं करिष्यति । हं छनिःशेषंमासीत् तसात् कही छं निःशेषं करिष्यतः । छः लघ्वद्वोऽस्ति यं कही निःशेषं करिष्यतः । तसात् छं जं निःशेषं करिष्यति । छं च लघ्वद्वोऽस्ति । इदमशुद्धम् । तसान् असलमा एव लघ्वद्वा भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

घातफलाङ्कस्य घातफलाङ्केन निष्पत्तिस्तद्भुजनिष्पस्यो-र्घातो भविष्यति ।

यथा अघातफलाइस्य जदौ भुजौ कल्पितौ । बघातफलस्य हुझौ भुजौ कल्पितौ । तसात् अवयोर्निथ, ६. ब, २०.
थनिः जहदझनिष्पत्त्योर्घातो भविष्यति । ७,१२.
अनयोर्निष्पत्त्योर्वतकं लघ्वद्वा प्राद्याः। त- ज, २. द, ३. ह, ४. झ, ५.
सात् जहनिष्पत्तिर्वतनिष्पत्तिसमाना भवि-

ष्यति । दश्ननिष्यत्तिस्तकनिष्यत्तिसमानास्ति । अनयोर्निष्यत्त्योर्घातो वकनिष्यत्तिरस्ति । दृह्घातो छः कल्पितः । तसात् वतनिष्यत्ति । दृश्गनिष्यत्ति । दृश्गनिष्यत्ति । दृश्गनिष्यत्ति । दृश्गनिष्यत्ति । दृश्गनिष्यत्ति । तसात् वकनिष्यत्ति । तसात् वकनिष्यत्ति । तसात् वकनिष्यत्ति । र्विष्यति । दृश्गनिष्यत्ति । र्विष्यति ।

अथ षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यदि बहवोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र यदि प्रथ-माङ्को द्वितीयं निःशेषं न करोति तदा कोऽप्यङ्कोऽग्रे निःशेषं न करिष्यति ।

यथा अबजदहमेकनिष्पत्तौ कल्पितम् । अं बं निःशेषं न करोति । तसात् कोऽपि कमपि निःशेषं न करिष्यति । यदि जदहनि-ष्मतौ अवता छष्यश्चा गृह्यन्ते

⁹ भी:शेषकमासीत K.

तदा शतौ भिन्नाङ्की भविष्यतः । शं च यदि रूपं नास्ति तदा श्रवनि-ष्यत्तिजैदनिष्यत्तेः समानास्ति । पुनर्जे दं निःशेषं न करोति तसात् शं वं निःशेषं न करिष्यति । रूपं च सर्वे निःशेषं करोति । पुनर्श्र तं निःशेषं न करिष्यति । तसात् शतनिष्यत्तिजैद्दनिष्यत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अय सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति आद्याङ्कोऽन्त्याङ्कं निःशेषं करोति तदा आद्याङ्को द्वितीयाङ्कमपि निःशेषं करिष्यति।

यथा अवजदं चत्वारोऽहा एकनिष्यत्तौ कल्पिताः । अं दं निःशेषयति तदा बमपि निःशेषयति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि वं निःशेषं न करिष्यति तदान्त्याद्ममपि निःशेषं न करि-ष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तावङ्कद्वयमध्यंगा भवन्ति तैयो-निष्पत्तौ यौ द्वावङ्को अन्यौ भविष्यतस्तयोरन्तर्गतास्तावन्त एवाङ्कास्तक्रिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

यथा अवयोर्मध्ये जदावद्दी पतिती । एते चत्वारः अजनिष्यती जाताः । अवयोर्निष्यत्ती हृझाव-न्याद्दी कल्पिती । अनयोर्मध्ये तथा द्वावद्दी पतिष्यतो यथेते चत्वारः आजनिष्यती भविष्यन्ति ।

९ ॰मध्यमा K. २ तक्रिष्पत्तौ K.

अस्योपपत्तिः ।

अजदबानां निष्पत्तौ वतकला लघ्यक्का गृहीताः । तसात् वलौ भिन्नौ मविष्यतः । अनयोर्निष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमानास्ति । हझनिष्पत्तेः समानास्ति । तसात् एतौ ह्रौ हझं तुल्यं निःशेषं करिष्यतः । पुनस्तथाक्कौ मनौ कल्पितौ यथा तं मं निःशेषं करिष्यति कं नमपि निःशेषं करिष्यति। तसात् वतकलनिष्पत्तौ हमनझा जाताः । अजदबानामपि निष्पत्तौ च जाताः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

यौ द्वी भिन्नाङ्की तयोर्मध्यगा यावन्तोऽङ्का एकनिष्यत्ती सन्ति तदा रूपतव्द्वयान्यतराङ्कयोर्मध्ये तावन्त एवाङ्का एक-निष्यत्ती भविष्यन्ति ।

यथा अबी हो भिनाहो किल्पितो । अनयोर्भध्ये जदावही क-ल्पितो । एते सर्वे एकनिष्पत्तौ सन्ति । पुनर्हझो लघ्वहो अजनिष्पत्तौ गृहीतो । पुनस्तस्यामेव निष्पत्तौ वतका लघवस्रयोऽहा गृहीताः । एवं लमनसास्तस्यामेव निष्पत्तौ गृहीताः । तस्मादेतेऽहा अजदबसमाना

भविष्यन्ति । हं हेन गुणितं फलं वं जातम् । पुनहेवधातो लं जातम् । तस्माद्रूपं हं निः-शेषं करिष्यति । हाक्को वं निःशेषं करि-ष्यति । वं लं तुल्यं निःशेषं करिष्यति ।

स, ८. ज, १२. द, १८ ब, २७ ह, २. झ, ३. व, ४. त, ६. क, ९. ल, ८. म, १२. न, १८. स, २७

अमिप निःशेषं करिष्यति । तस्मात् रूपअमध्ये च हवा एकनिष्यत्तौ द्वावद्वौ पिततौ । एवं रूपबयोर्मध्ये झकावद्वौ एकनिष्यत्तौ पिततौ । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

अङ्कद्वयस्य प्रत्येकाङ्करूपयोर्मध्ये एकनिष्पत्तौ यावन्तोऽङ्का पतिष्यन्ति तदा तयोरङ्कयोर्मध्येऽपि तावन्त एवाङ्का एकनि-ष्पत्तौ पतिष्यन्ति ।

मा॰ ५

Digitized by Google

यथा अवावद्रो कल्पितौ । सं रूपं कल्पितम् । अलयोर्मध्ये जदा-बद्दावेकनिष्पत्ती पतितौ वैशा लबयोर्मध्ये हृझावद्दावेकनिष्पत्तौ क-स्वितौ । सदा अवयोर्मध्येऽपि द्वावद्वावेकनिष्पत्तौ पतिष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

लज्योनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्तिसमानास्ति । लः जं जतुत्यं निःशेषयति।

तदा जः दं जतुत्यं निःशेषं करिष्यति।त-स्मात् दं जस्य वर्गो भविष्यति।पुनर्लः जं तथा निःशेषं करोति यथा दः अं निःशेषं करोति। तदा जद्यातः अं भविष्यति।

क्ष, ८. त, १२.क, १८. ब.२७. द, ४. ब, ६. झ, ९. ज, २. ह, ३. छ, १.

एवं हि झः हवर्गो भविष्यति । हझघातो वं भविष्यति । जहघातम् वमित्त । तदा दवझा एकनिष्पत्ते भविष्यन्ति । पुनर्जहौ वगुणितौ कार्यौ । फलं तं कं भवित । तस्मात् अतकवा एकनिष्पत्ते भविष्यन्ति । कुतः । जं दवाभ्यां गुणितं फलं अं तं दवनिष्पत्ते जातम् । जहनि-ष्पत्ताविष जातम् । पुनर्जहौ बगुणितौ फलो तकसंद्यं तस्मामेव निष्पत्तो जातम् । पुनर्ह बद्मगुणितं कं वं जातं वद्मनिष्पत्तो जहनिष्पत्ताविष । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यौ द्वौ वर्गी स्तस्तयोर्मध्ये यदि कोऽप्यङ्कस्तादृशो भव-ति यथैकनिष्पत्तौ त्रयोऽङ्का भवन्ति तदा तयोर्वर्गयोर्निष्पत्ति-र्भुजयोर्निष्पत्तिवर्गो भवति ।

यथा अबो वर्गी कल्पितो । अनयोर्भुजो जदो कल्पितो । अद-योर्घातः फलं हसंज्ञं भवति । तसात् अहनिष्प-तिर्जदनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । एवं हबनि-ष्पत्तिज्ञदनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् अव-मध्ये हं पतितम् । तसादेकनिष्पत्तो अहबा जाताः । अवनिष्पत्तिः

९ तथा K.

अहनिष्यत्तिवर्गतुस्या जदनिष्यत्तिवर्गतुस्या च जाता । इदमेवास्मा-कमिष्टम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

द्वयोर्घनयोर्मध्ये द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णा-मङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति तदा घनस्य स्वघनेन निष्पत्ति-र्भुजनिष्पत्तिघनतुल्या भवति ।

यथा अबौ वनौ कल्पितौ । जदौ च मुजौ कल्पितौ । जदाभ्यां हझबास्रयोऽष्टा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । तसाज्जह्वातः अं भविष्यति । दवघा-तश्च बं भविष्यति । पुनर्जदौ झगुणि-तौ कार्यो फलं तकौ कल्पितौ । तसात्

अतकवा अतिनष्पत्तौ जदनिष्पत्ताविष भविष्यन्ति । अवनिष्पत्ति-र्जदनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

येऽक्का एकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति तेषां बर्गा अप्येकरूपनि-ष्पत्तौ भवन्ति । तथा घना अप्येकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति ।

यथा अवजासयोऽद्वा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । दहसा एतेवां

वर्गाः किल्पताः । वतका घनाः अ, २. ब, ४. ज, ८. किल्पताः । यदि अं बेन गुण्यते द, ४. ल, ८. इ, १६. म, ३२. झ, ६४. तदा फल्ठं लसंज्ञं भवति । बं जेन व,८. न, १६. स, ३२. त, ६४. ग, १२८. फ, २५६. क, ५१९. गुणितं मं भवति । तसात् दल-

हमझा एतेऽङ्का एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । तसात् दहयोर्निष्पत्तिर्ह्झ-निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् वर्गा अप्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । पुनरपि अं छहाभ्यां गुण्यते तदा नसे फले भवतः । जं हमाभ्यां

१ हलाभ्यां D.

गुण्यते तदा फले गफे भवतः । तसात् धनसतगफका एते सप्ताङ्का एकरूपनिष्यत्तो भविष्यन्ति । तसात् धना अप्येकरूपनिष्यत्तौ भवि-ध्यन्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

ययोर्वर्गयोर्मध्ये एको द्वितीयवर्ग यदि निःशेषं करोति तदा तस्य भुजोऽपि द्वितीयस्य भुजं निःशेषं करिष्यति । यद्ये-काङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति तदा तस्य वर्गस्तद्वर्गे निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवर्गः कल्पितः । अस्य भुजो जः कल्पितः । द्वितीयो वर्गो वः कल्पितः । तस्य भुजो दः कल्पितः । यदि अः वं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जं दगुणितं हं भवति । आहवा जदनिष्यतितुत्या जाताः । आद्यो-ऽन्त्यं निःशेषं करोति । तसात् आः हं निःशेषं करिष्यति । तसाज्ञं दं निःशेषं करिष्यति । अ, ४. इ, ८. व, १६. ज, २. द, ४.

अही जदी चैकनिष्यती स्तः । यदि जः दं निःशेषं करोति तदा अः हं निःशेषं करिष्यति । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति ।

असादिदं निश्चितं यदि वर्गो वर्ग निःशेषं न करोति तदा अजो भुजं निःशेषं न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य वर्गोऽन्याङ्कवर्गे निःशेषं न करिष्यति ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यद्येको घनो द्वितीयघनं निःशेषं करोति तदा तस्य मुजो द्वितीयभुजं निःशेषं करिष्यति । यत्रैकाङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति तदा तस्य घनोऽपि द्वितीयघनं निःशेषं करोति।

Digitized by Google

यथा अं घनः कल्पितः । जं भुजः कल्पितः । बः अन्यघनः क-ल्पितः । दस्तस्य भुजः कल्पितः । यदि अः बं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जदाभ्यां हवझास्त्रयोऽहा एकनिष्पत्तावुत्पादिताः । पुनर्जदौ वगुणितौ फलं तं कम् । तदा अतकवा जदनिष्पत्तावुत्पत्स्यन्ते । अं वं निःशेषं करोति । तसात् आः तमपि निःशेषं करोति । जः दमपि निःशेषं करिष्यति ।

पुनर्जः दं निःशेषं कुर्यात् । तदा आः तं निःशेषं करिष्यति । तसात् आः बं निःशेषं करिष्यति । इदमे-वासाकमिष्टम् ॥ अ,८.त,१६.क,३२.ब,६४

अस्मादिदं निश्चितं यदि घनो घनं निःशेषं इ, ४. व, ८. झ, १६. न करोति तदा तस्य भुजोऽन्यभुजं निःशेषं

न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य घनो द्वितीयघनं निःशेषं न करिष्यति ॥

अथ षोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ययोः सजातीयघातफलाङ्कयोर्मध्ये यैद्येकाङ्कर्सथा पतित यथैतत्रयमेकनिष्पत्तौ भवति तदा घातफलयोर्निष्पत्तिर्या भवति सा सजातीयतद्भुजनिष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ।

यथा सजातीयघातफले अबकल्पिते । अभुजौ जदौ कल्पितौ । बभुजौ हझौ कल्पितौ । जहनिष्पत्ति-द्रिश्चनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यदि दं ज, २. द, ३. ह, ४. झ, ६. हगुणितं वमुत्पन्नमिति कल्प्यते तदा अववा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

९ करिष्यति K. २ तथा एकाङ्को यदि पतिति K.

अत्रोपपत्तिः ।

दं जहाम्यां गुणितं फले अवे जाते । अनयोर्निष्पत्तिर्ज्ञहनिष्प-चितुत्या मविष्यति । पुनर्हं दशाभ्यां गुणितं वबे उत्पन्ने । अनयोर्-निष्पत्तिर्द्दश्निष्पचितुत्या मविष्यति । जहनिष्पचितुत्यापि भविष्यति । अवनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । जहनिष्पत्तिवर्गतुत्याऽपि भविष्यति । ईदमेवाऽस्माक्तिष्टम् ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

सजातीययोर्घनफल्योर्मध्ये ताहशौ द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णामङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति घनफल्ख निष्पत्तिर्घनफल्रेन या भवति सा सजातीयभुजनिष्पत्तिघन-तुल्या भवति ।

यथा अबे सजातीये घनफले कल्पिते । अभुजा जदहाः कल्पि-ताः । बभुजा झवताः कल्पिताः। अ, ३०. न, ६०. स, १२०. ब, २४०.

जश्ननिष्पत्तिद्वनिष्पत्तितुल्यास्ति । इतनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । जं दगु-णितं कमुत्पन्तम् । शं वगुणितं ल- क, ६. म, १२. ल, २४. ज, २. द, ३. इ, ५.

ज, २. द, ३. इ, ५. झ, ४. व, ६. त, १०.

मुत्पनम् । तसात् कलौ सजातीयौ षातफलाङ्गौ भविष्यतः । अनयोर्भध्ये मः अङः पति तदा कमलास्तयोऽङ्गा जञ्जनिष्पचौ पतिष्यन्ति । पन्हेतौ मगुणितौ नसानुत्पनौ । एतयोर्निष्पत्तिर्हृतनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । जञ्जनिष्पत्तितुत्यापि भविष्यति । अनयोर्निष्पत्तिः कमल-निष्पत्तितुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तितुत्याप्यस्ति । तसात् अनसवाध-त्वारोऽङ्गा जञ्जनिष्पचौ भविष्यन्ति । अवनिष्पत्तिः अननिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषननुत्या भविष्यति । इदमेवास्णकिमष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये कश्चिदङ्कः पति । यद्येतेऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघातफले भविष्यतः ।

१ इदमेवास्मदिष्टम् K.

यथा अवयोर्भध्ये जः कल्पितः । एते त्रयोऽपि एकनिष्पत्तौ क-स्पिताः । पुनर्रुध्यश्चावस्यां निष्पत्तौ

दहीं प्रामी। एती अजी तुल्यं निःशेषं इ, र. ज, १२. ब, १८.

करिष्यतः । पुनर्दः अं झतुल्यं निःशेषं

करोति। हः वं वतुल्यं निःशेषं करोतीत्यपि कल्पितम् । तसात् दश-घातः अं मविष्यति । हवधातो वं मविष्यति । तसात् अवी घातौ मविष्यतः । पुनरपि दवधातो जमस्ति । हश्चघातोऽपि जमस्ति । तसात् अवी सजात् विष्यति । तसात् अवी सजातीयधातफले भविष्यतः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वयोरङ्कयोर्भध्ये द्वावङ्कौ पततः । यद्येते चत्वारोऽप्यङ्का एकनिष्यत्तो भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

यथा अवयोर्मध्ये जदौ पतितौ । अजदवा एते चत्वारो यद्येक-निष्पचौ भवन्ति तदा अबौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

ह्झबासयो छव्यद्वा अजनिष्यतो गृहीताः। तसात् हवौ सजा-तीयघातफलाद्वौ भविष्यतः। इस्य भुजौ कलौ कल्पितौ। वस्य त, २४. स, ७२. भुजौ मनौ कल्पितौ। तसात् ह, १. झ, ३. ब, ९. क, १. छ, १. म, ३. म, ३. म, ३. म, ३. म, ३.

मविष्यति । ह्झिनिष्पत्तिसमानापि मविष्यति । ह्झवम् अजदनिष्पत्ता-वस्ति । तसात् ह्झवम् अजदं तुल्यं निःशेषं करिष्यति । कल्पितं त-तुल्यं निःशेषं करोति । एवं हि ह्झवा जदबनिष्पत्तौ सन्ति । त-सात् ह्झवा जदबं तुल्यं निःशेषं करिष्यन्ति । कल्पितं च सतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् इतघातः तगुणितकळघाततुत्यः अं किल्पितम् । वसघातफळं बम् । तत् सगुणितमनघाततुत्यमित । तसात् अबौ धनफळाद्दौ जातौ । पुनस्तसौ वगुणितौ फळे दबौ भवतः । तसास्तसौ दबनिष्यतौ जातौ । कमनिष्पत्तावपि । तसात् अबौ सजातीयघन-फळाद्दौ जातौ । इदमेवासाक्मिष्टम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

तत्र ये त्रयोऽङ्का एकिनिष्पत्ती यदि भवन्ति तत्र प्रथ-माङ्की वर्गो यदि भवति तदा तृतीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति।

यथा अवजास्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अं वर्गोऽस्ति । तदा जमपि वर्गो भविष्यति । कुतः । दहझा रुध्वद्वा अवजनि-

ष्यत्तौ गृहीताः। तसात् दश्गौ वर्गौ भवि-ष्यतः। पुनः बम् अभुजः कल्पितः। तं दभुजः कल्पितः। कं श्रभुजः कल्पितः।

द, ४. ह, ६. झ, ९.

व, ४. क, ३. त. २. ल. ६.

तसात् दञ्जनिष्पत्तिः अजनिष्पत्तिस-

माना भविष्यति । दशौ भिनाशौ स्तः । तसादेतौ अजं निःशेषं करिष्यतः । यदि वर्गो वर्ग निःशेषं करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं करिष्यति । तसात् तं वं निःशेषं करिष्यति । पुनः कं छं तथा निःशेषं करोतीति कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तवर्गववर्गयोर्निष्पत्तिः कवर्गर्थोर्निष्पत्तिः सर्वग्रेखवर्गयोर्निष्पत्तिः सर्वग्रेखवर्गयोर्निष्पत्तिः सर्वग्रेखवर्गयोर्निष्पत्तिः सर्वप्रति । कवर्गः समस्ति । दअनिष्पत्तिः स्वर्गः समस्ति । दअनिष्पत्तिः सर्वातः सर्वग्रेखनिष्पत्तिः । तस्तात् जं लवर्गो भविष्यति । इदमेवास्माकिष्टम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

ये चत्वारोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्क-श्चेत् घनो भवति तदा चतुर्थोङ्कोऽपि घनो भविष्यति ।

१ एकरूपनिष्पत्ती K.

यथा अवजदाश्चंत्वारोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः। अ: घनः कंल्पितः। तदा दोऽपि घनो भविष्यति। अस्योगपत्तिः।

इस्वताश्चलारो छव्दद्दा अबजदिनण्यो प्राद्याः । तसात् इतौ घनौ भविष्यतः । अभुजो स्टं इ-मुजः कं तभुजो नं कल्पितः । स्त, ४४. व, ९६. ज, १४४. द, २१६. तदा इतिनष्पत्तिः अदिनष्पत्ति- इ, ८. झ, १२. व, १४. त, १७. क, २. न, ३. स, ६. समानास्ति । इतौ च भिनाद्दो

स्तः । तसात् इतौ अदौ निःशेषं करिष्यतः । यदि हं घनः असंज्ञ-घनं निःशेषं करोति तदा कभुजो लभुजं निःशेषं करिष्यति । पुनः कल्पितं नः सं तथा निःशेषं करोति यथा कः लं निःशेषं करोति । तसात् कलनिष्यत्तिनसनिष्यतेः समाना भविष्यति । कलघनयो-निष्यत्तिनसघनयोनिष्यत्तिसमाना भविष्यति । कस्य घनो हं लघनः अं नघनः तम् । हअनिष्यत्तिस्तदनिष्यत्तिसमानास्ति । तसात् दः सघनो भविष्यति । इदमेवीस्माकिमष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥ यावङ्कौ वर्गद्वयनिष्यती स्तस्तयोर्मध्ये यद्येकाङ्को वर्गो भवति तदा द्वितीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति ।

यथा अबी जदवर्गयोर्निष्पत्ती कल्पिती। यदि अः वर्गो भवति तदा बमपि वर्गो भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

जदी वर्गों स्तः । अनयोर्मध्ये तथा एकाङ्कः पतिष्यति ययैतत्रयमेक-निष्पत्तौ भविष्यति । एवम् अवयोर्मध्ये एकाङ्को भविष्यति । एते त्रयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ पति- अ, ४. ब, ९. ष्यन्ति । अः वर्गोऽस्ति । तस्मात् बः वर्गो भविष्यति । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

 $[\]gamma$ इदमेबास्मदिष्टम् K.

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

यौ द्वावङ्कौ घननिष्पत्तौ भविष्यतस्तयोर्मध्ये यद्येको घनो भवति तदा द्वितीयोऽपि घनो भविष्यति ।

यथा अबी जद्घनयोर्निष्पत्ती कृष्टिपती । तयोर्यदि अं घनस्तदा बाऽद्वोऽपि घनो भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः।

जदी घनौ स्तः । अनयोर्मध्ये तथा द्वावद्वौ पतिष्यतो यथैते चत्वारोऽद्वा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति। एवं हि अवयोर्मध्ये द्वावद्वौ तथा पतिष्यतो यथैतेऽपि चत्वारोऽद्वा अ, ६४. द, २१६.
एकनिष्पत्तौ स्युः । अः घनोऽस्ति। तस्मात् वः घनो
जातः । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥ २६ ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यावङ्कौ द्वयोर्वर्गयोर्निष्पत्तौ भवतस्तदैतौ घातफलाङ्कौ सजातीयौ भवतः।

यथा अबो जदवर्गयोर्निष्पत्तो कल्पितौ । अबो सजातीयौ घात-फलाहौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

अ, १८. ब, ३२.

ज, ९. ६, १६

जदयोर्मध्ये तथैकाइः पतिष्यति यथैते त्रयोऽप्ये-कनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । एवम् अवमध्येऽपि । तसात् अवौ सजातीयौ धातफलाइौ भविष्यतः ॥

अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

यावङ्कौ द्वयोर्घनयोर्निष्पत्तौ स्तस्तदा तावङ्कौ सजातीयः घनफलाङ्कौ भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः क्षेत्रन्यासश्च पूर्वोक्तवत् ज्ञेयः ॥ अ, ८. ६, २७.

९ भविष्यतः K.

अथ पद्विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥

यौ घातफलाङ्को सजातीयौ भवतस्तौ द्वयोर्वगयोर्निणत्तौ भवतः।

यथा अवौ घातफलाही सजातीयी कल्पिती। एती द्वयोर्वर्गयो-

अस्योपपत्तिः।

स,६.ज,१२.ब,२४०

एकाङ्को जसंज्ञकः अबयोर्मध्ये पतिष्यति । एते त्रयोऽप्यङ्का एकरूपनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । यदि दहझास्रयो लष्वङ्का अजबनिष्पत्तौ गृद्धन्ते तदा अबनिष्पत्तिदृश्चवर्गयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥ यो घनफलाङ्को सजातीयो भवतस्तौ द्वयोर्घनयोर्निष्पत्तौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

जदौ अवयोर्मध्ये पतितौ। एते चत्वार एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति। पुनर्यदि हझवताश्चत्वारोऽहा अजदबानां निष्पत्तौ लघवो गृ- अ, १६. ज, २४. द, ३६. ब, ५४. ह, ८. झ, १२. व, १८. त, २७. बन्ते तदा अवनिष्यतिहेतघ-

नयोर्निष्पत्त्या समाना भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥ २७ ॥ श्रीमद्राजाधिराजम्भुवरजयसिंहस्य तुष्ट्री द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समभिधारूढितेन प्रणीते । मन्थेऽस्मिनाझि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-

र्यध्यायोऽध्येतुमोहापह इह विरतिं चाष्टमः संगतोऽभूत्॥ ८॥

इति श्रीजगन्नाथसम्राड्विरचिते रेकागणिते अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८॥ यथा अवावद्रों कल्पितौ । लंहपं कल्पितम् । अलयोर्मध्ये जदा-बद्दावेकनिष्पत्ती पतितौ वैवा लबयोर्मध्ये हृझावद्वावेकनिष्पत्तौ क-स्वितौ । तदा अवयोर्मध्येऽपि द्वावद्वावेकनिष्पत्तौ पतिष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

लजयोर्निष्पत्तिजीदनिष्पत्तिसमानास्ति । छः जं जतुत्यं निःशेषयति । तदा जः दं जतुत्यं निःशेषं करिष्यति । त-

स्मात् दं जस्य वर्गो भविष्यति। पुनर्लः जं तथा निःशेषं करोति यथा दः अं निःशेषं करोति। तदा जदघातः अं भविष्यति। ट.त,१२.क,१ट.ब.२७. द,४.व,६.झ,९. ज,२.ह्,३. छ,१.

एवं हि इः हवर्गो मिवष्यति । हङ्गानतो वं मिवष्यति । जहवातम्य वमस्ति । तदा दवङ्गा एकनिष्पत्तौ भिवष्यन्ति । पुनर्जहौ वगुणितौ कार्यौ । फलं तं कं भवति । तस्मात् अतकवा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । कुतः । जं दवाभ्यां गुणितं फलं अं तं दवनिष्पत्तौ जातम् । जहनिष्णत्ताविष जातम् । पुनर्जहौ वगुणितौ फलौ तकसंज्ञं तस्यामेव निष्यत्तौ जातम् । पुनर्छ वङ्गागुणितं कं वं जातं वङ्गानिष्पत्तौ जहनिष्णताविष । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यो द्वी वर्गी स्तस्तयोर्मध्ये यदि कोऽप्यङ्कस्तादृशो भव-ति यथैकनिष्पत्ती त्रयोऽङ्का भवन्ति तदा तयोर्वर्गयोर्निष्पत्ति-र्भुजयोर्निष्पत्तिवर्गो भवति ।

यथा अबी वर्गी कल्पिती। अनयोर्भुजी जदी कल्पिती। जद-योर्घातः फछं हसंज्ञं भवति। तसात् अहनिष्य-चिर्जदनिष्पचिसमाना भविष्यति। एवं हबनि-ज, २. ६, ३. ष्पचिर्जदनिष्पचिसमाना भविष्यति। तसात् अव-मध्ये हं पतितम्। तसादेकनिष्पत्ती अहबा जाताः। अवनिष्पचिः

⁹ तथा K.

अहिनिष्पत्तिवर्गतुत्या जहिनिष्यत्तिर्वगतुत्या च जाता । इदमेवासा-किमष्टम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

द्वयोर्घनयोर्मध्ये द्वावङ्की यदि तथा पततो यथा चतुर्णा-मङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति तदा घनस्य स्वघनेन निष्पत्ति-र्भुजनिष्पत्तिघनतुल्या भवति ।

यथा अबी घनी कल्पिती । जदी च मुजी कल्पिती । जदाभ्यां ह्झबास्रयोऽहा एकनिष्पत्ती मिवष्यन्ति । तसाज्जह्वातः अं भविष्यति । दवघा-तस्राज्जह्वातः अं भविष्यति । दवघा-तश्च बं भविष्यति । पुनर्जदी झगुणि-तौ कार्यो फलं तको कल्पिती । तसात्

अतकवा अतनिष्पत्तौ जदनिष्पत्तावपि भविष्यन्ति । अवनिष्पत्ति-र्जदनिष्पत्तिघनतुत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

येऽङ्का एकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति तेषां वर्गा अप्येकरूपनि-ष्पत्तौ भवन्ति । तथा घना अप्येकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति ।

यथा अवजासयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । दहसा एतेवां

वर्गाः किल्पताः । वतका घनाः किल्पताः । यदि अं बेन गुण्यते द, ४. छ, ८. इ, १६. म, ३२. झ, ६४. तदा फलं लसंज्ञं भवति । बं जोन व,८. न, १६. स, ३२. त, ६४. ग, १२८. फ, २५६. क, ५१९. गुणितं मं भवति । तसात् दलन

हमझा एतेऽङ्का एकनिष्पत्ते भविष्यन्ति । तसात् दहयोर्निष्पत्ति हझ-निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् वर्गा अप्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । पुनरपि अं छैहाभ्यां गुण्यते तदा नसे फले भवतः । जं हमाभ्यां

१ ह्ळाभ्यां D.

गुण्यते तदा फले गफे भवतः । तसात् वनसतगफका एते सप्ताङ्का एकरूपनिष्यत्तो भविष्यन्ति । तसात् घना अप्येकरूपनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

ययोर्वर्गयोर्मध्ये एको द्वितीयवर्ग यदि निःशेषं करोति तदा तस्य भुजोऽपि द्वितीयस्य भुजं निःशेषं करिष्यति । यद्ये-काङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति तदा तस्य वर्गस्तद्वर्गे निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवर्गः कल्पितः । अस्य भुजो जः कल्पितः । द्वितीयो वर्गो वः कल्पितः । तस्य भुजो दः कल्पितः । यदि अः वं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जं दगुणितं हं भवति । अहवा जदनिष्यतितुत्या जाताः । आद्यो-ऽन्त्यं निःशेषं करोति । तसात् अः हं निःशेषं करिष्यति । तसाज्ञं दं निःशेषं करिष्यति । अ, ४. ह, ८. ब, १६. ज. २. इ, ४.

अही जदी चैकनिष्यत्ती स्तः । यदि जः दं निःशेषं करोति तदा अः हं निःशेषं करिष्यति । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति ।

असादिदं निश्चितं यदि वर्गो वर्ग निःशेषं न करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य वर्गोऽन्याङ्कवर्ग निःशेषं न करिष्यति ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यद्येको घनो द्वितीयघनं निःशेषं करोति तदा तस्य मुजो द्वितीयभुजं निःशेषं करिष्यति । यत्रैकाङ्को द्वितीयाङ्कं निः-शेषं करोति तदा तस्य घनोऽपि द्वितीयघनं निःशेषं करोति।

Digitized by Google

यथा अं घनः किल्पतः । जं भुजः किल्पतः । बः अन्यघनः क-स्पितः । दस्तस्य भुजः किल्पतः । यदि आः बं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जदास्यां हवझास्त्रयोऽहा एकनिष्पत्तावुत्पादिताः । पुनर्जदौ वगुणितौ फलं तं कम् । तदा अतकबा जदनिष्पत्तावुत्पत्त्यन्ते । अं वं निःशेषं करोति । तसात् अः तमपि निःशेषं करोति । जः दमपि निःशेषं करिष्यति ।

पुनर्जः दं निःशेषं कुर्यात् । तदा आः तं निःशेषं करिष्यति । तसात् आः बं निःशेषं करिष्यति । इदमे-वास्माकमिष्टम् ॥ अ,८.त,१६.क,३२.ब,६४

असादिदं निश्चितं यदि घनो घनं निःशेषं इ, ४. ब, ८. झ, १६. न करोति तदा तस्य भुजोऽन्यभुजं निःशेषं

न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य घनो द्वितीयघनं निःशेषं न करिष्यति ।।

अय षोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ययोः सजातीयघातफलाङ्कयोर्भध्ये येद्येकाङ्कस्तथा पतित यथैतत्रयमेकनिष्पत्तौ भवति तदा घातफलयोर्निष्पत्तियो भवति सा सजातीयतद्धजनिष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ।

यथा सजातीयघातफले अबकल्पिते । अभुजौ जदौ कल्पितौ । बभुजौ हुझौ कल्पितौ । जहनिष्पत्ति- क्ष्मिति कल्पितौ । यदि दं ज, ६. व, १२. व, १४. ह्र, १० ह्रगुणितं वमुत्पन्नमिति कल्प्यते तदा अवबा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

९ करिष्यति K. २ तथा एकाङ्को यदि पतिति K.

अत्रोपपत्तिः ।

दं जहाम्यां गुणितं फले अवे जाते । अनयोर्निष्पत्तिर्ज्जहिनिष्प-तितुत्या भविष्यति । पुनईं दशाभ्यां गुणितं वबे उत्पन्ने । अनयोर्-निष्पत्तिर्द्शनिष्पतितुत्या भविष्यति । जहनिष्पत्तितुत्यापि भविष्यति । अवनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । जहनिष्पत्तिवर्गतुत्याऽपि भविष्यति । ईदमेवाऽस्माकनिष्टम् ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

सजातीययोर्घनफलयोर्मध्ये तादृशौ द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णामङ्कानामेकैनिष्यत्तिर्भवति घनफलस्य निष्यत्तिर्घनफलेन या भवति सा सजातीयभुजनिष्यत्तिघन-तुल्या भवति ।

यथा अबे सजातीये घनफले कल्पिते । अभुना जदहाः कल्पि-

ताः । बभुजा भवताः कल्पिताः। जझनिष्पत्तिद्वनिष्पत्तितुल्यास्ति । इतनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । जं द्गु-णितं कमुत्पन्नम् । झं वगुणितं ल-

स, ३०. न, ६०. स, १२०. ब, २४०. क, ६. म, १२. ल, २४. ज, २. द, ३. इ, ५. झ, ४. ब, ६. त, १०.

मुत्पन्नम् । तस्मात् कलौ सजातीयौ धातफलाङ्कौ भविष्यतः । अनयोर्नध्ये मः अङ्कः पति तदा कमलास्त्रयोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ पतिष्यन्ति । पुनर्हतौ मगुणितौ नसावुत्पनौ । एतयोर्निष्पत्तिर्हतनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । जञ्जनिष्पत्तितुत्यापि भविष्यति । अनयोर्निष्पत्तिः कमल-निष्पत्तितुत्याप्यत्ति । तस्मात् अनसवाध-त्वारोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । अबनिष्पत्तिः अननिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिषन-तुत्या भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये कश्चिदङ्कः पति । यद्येतेऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघातफले भविष्यतः ।

⁹ इदमेवास्मदिष्टम् K.

यथा अबयोर्मध्ये जः कल्पितः। एते त्रयोऽपि एकनिष्पत्तौ क-लिताः। पुनर्रुध्वद्वावस्यां निष्पत्तौ

दही प्राची । एती अजी तुल्यं निःशेषं व, ८. ज, १२. व, १८.

करिष्यतः । पुनर्दः अं झतुल्यं निःशेषं

करोति। हः वं वतुल्यं निःशेषं करोतीत्यपि कल्पितम् । तसात् दश्-षातः अं भविष्यति । हषधातो वं भविष्यति । तसात् अवौ षातौ भविष्यतः । पुनरपि दवषातो जमस्ति । हश्चषातोऽपि जमस्ति । तसात् अवौ सजातीयधातफले भविष्यतः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये द्वावङ्कौ पततः । यद्येते चत्वारोऽप्यङ्का एकनिष्यत्तौ भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

यथा अवयोर्मध्ये जहाँ पतितौ । अजदवा एते चलारो यधेक-निष्पत्तौ भवन्ति तदा अवौ सजातीयधनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

हश्रवासयो छव्यद्वा अजनिष्यतो गृहीताः । तसात् हवौ सजा-तीयघातफलाद्वौ मविष्यतः । हस्य भुजौ कलौ कल्पितौ । वस्य त, २४. ज, ७२. द, २१६. ब, ६४८. भुजौ मनौ कल्पितौ । तसात् ह, १. झ, ३. व, ९. क, १. छ, १. म, ३. व, ३. कमनिष्यत्तिकिननिष्यत्तिसमाना

भविष्यति । इझिनिष्पत्तिसमानापि भविष्यति । इझवम् अजदिनिष्पत्ता-विस्ति । तस्मात् इझवम् अजदं तुल्यं निःशेषं करिष्यति । कल्पितं त-तुल्यं निःशेषं करोति । एवं हि इझवा जदबनिष्पत्तौ सन्ति । त-स्मात् इझवा जदबं तुल्यं निःशेषं करिष्यन्ति । कल्पितं च सतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् इतघातः तगुणितकळघाततुत्यः अं किल्पित्म। वसघातफळं बम् । तत् सगुणितमनघाततुत्यमस्ति । तसात् अबौ धनफळाडौ जातौ । पुनस्तसौ वगुणितौ फळे दबौ भवतः । तसास्तसौ दबनिष्पत्तौ जातौ । कमनिष्पत्तावपि । तसात् अबौ सजातीयघन-फळाडौ जातौ । इदमेवासाक्मिष्टम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

तत्र ये त्रयोऽङ्का एकिनिष्पत्ती यदि भवन्ति तत्र प्रथ-माङ्की वर्गो यदि भवति तदा तृतीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति।

यथा अवजास्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अं वर्गोऽस्ति । तदा जमपि वर्गो भविष्यति । कुतः । दहशा लघ्वहा अवजनि-

ष्यतौ गृहीताः। तसात् दशौ वर्गौ भवि-ष्यतः। पुनः वम् अभुजः कल्पितः। तं दभुजः कल्पितः। कं श्रभुजः कल्पितः। तसात् दश्चनिष्पत्तिः अजनिष्पत्तिस-

थ, १६. ब, २४. ज, ३६. द, ४. ह, ६. झ, ९. व, ४. क, ३. त, २. ल, ६.

माना भविष्यति । दशौ भिन्नाशौ स्तः । तसादेतौ अजं निःशेषं करिष्यतः । यदि वर्गी वर्ग निःशेषं करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं करिष्यति । तसात् तं वं निःशेषं करिष्यति । पुनः कं छं तथा निःशेषं करोतीति कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्यति । कछनिष्यतिसमाना भविष्यति । तवर्गववर्गयोर्निष्पत्तिः कवर्गछवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तवर्गो दमस्ति । ववर्गः अमस्ति । कवर्गः श्रमस्ति । दअनिष्पत्तिश्रीजनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् जं छवर्गो भविष्यति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

ये चत्वारोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्क-श्चेत् घनो भवति तदा चतुर्थोङ्कोऽपि घनो भविष्यति ।

९ एकरूपनिष्पशौ ${f K}$.

यथा अवजदाश्चंत्वारोऽहा एकनिष्यत्तौ कल्पिताः। अ: घनः कल्पितः। तदा दोऽपि घनो भविष्यति। अस्योपपत्तिः।

इश्वताश्चतारो छवडा अबजदनिष्यतौ प्राद्याः । तसात् हतौ धनौ भविष्यतः । अभुजो छं ह-भुजः कं तभुजो नं कल्पितः । अ, ६४. ब, ९६. ज, १४४. द, २१६. स्वता हतनिष्पत्तिः अदिनिष्पत्ति- ह, ८. झ, १२. व, १४. त, २७. क, २. न, ३. स, ६. समानास्ति । हतौ च भिनाहौ

स्तः । तसात् इतौ अदौ निःशेषं करिष्यतः । यदि हं बनः असंज्ञ-षनं निःशेषं करोति तदा कमुजो लमुजं निःशेषं करिष्यति । पुनः कल्पितं नः सं तथा निःशेषं करोति यथा कः लं निःशेषं करोति । तसात् कलनिष्यत्तिनसनिष्यतेः समाना मविष्यति । कल्प्यनयो-निष्यत्तिनस्यनयोर्निष्यत्तिसमाना भविष्यति । कस्य घनो हं लघनः अं नघनः तम् । इअनिष्यत्तिस्तदनिष्यत्तिसमानास्ति । तसात् दः सचनो मविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥ यावङ्कौ वर्गद्वयनिष्यती स्तस्तयोर्मध्ये यद्येकाङ्को वर्गो भवति तदा द्वितीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति ।

यथा असी जदवर्गयोर्निष्पत्ती कल्पिती । यदि अः वर्गो भवति तदा बमपि वर्गो भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः।

जदौ वर्गों स्तः। अनयोर्मध्ये तथा एकाङ्कः पतिष्यति यथैतत्रयमेक-निष्पत्तौ भविष्यति। एवम् अवयोर्मध्ये एकाङ्को भविष्यति। एते त्रयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ पति- अ, ४. ब, ९. ष्यन्ति। अः वर्गोऽस्ति। तस्मात् बः वर्गो भविष्यति। इदमेवास्मदिष्टम् ॥

 $[\]gamma$ इदमेवास्मदिष्टम् ${f K}$.

अथ नवमाध्यायः प्रारम्यते ॥ ९ ॥ तत्राष्ट्रिंशत् क्षेत्राणि सन्ति ॥ १८ ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

द्वयोः सजातीयघातफलाङ्कयोघीतो वर्गो भवति।

ं यथा अबौ सजातीयघातफलाह्रौ कल्पितौ । अबघातो जः क-ल्पितः । असौ वर्गो जातः ।

अस्योपपत्तिः ।

स, ६. च, ५४. द, ३६. ज, ३२४.

यदि अवर्गो दं किल्पतस्तदा अवनिष्पत्ति- रेप्ट्रिंग्य प्रकाइस्तया दिजनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तत्र प्रत्येकाइस्योर्गध्ये एकाइस्तया पतिष्यति यथा त्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ पतिष्यन्ति । दं वर्गोऽस्ति । तस्मात् जं वर्गोऽपि भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ द्वितीयं दोत्रम् ॥ २ ॥

ययोरङ्कयोघीतो वर्गी भवति तावङ्कौ सजातीयघातफ- छाङ्कौ भविष्यतः।

यथा अवयोर्घातो जवर्गः कल्पितः । एतौ सजातीयघातफलाहौ भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

अवर्गो दः कल्पितः । दजवर्गयोर्निष्पत्तिः अबनिष्पत्तितुत्यास्ति । एतौ सजातीयघातफलाङ्कौ भविष्यतः॥

अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितम्।

म, ४. व, ९.

वर्गो वर्गगुणितो वर्गो भवति । अवर्गगुणितो क्रिंगे क्रिंगे वर्गो भवति । येन गुणितो वर्गो वर्गो भवति स चाङ्कोऽपि वर्ग एव भविष्यति । यदि वर्गो न भवति तदा सोऽप्यञ्चोऽवर्ग एव ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥ घनवर्गो घनो भवति । यथा अ: घनः कल्पितः । अस्य वर्गो ब: कल्पितः । जः भुजः कल्पितः । भुजवर्गो दः कल्पितः । रूपअप्रमाणयोर्मध्ये जदौ तथा पिततौ यथैते चत्वारोऽक्का व, १६. द, ४.
एकनिष्पत्तौ पितष्यन्ति । रूपअप्रमाणनिष्पत्तिः क, ३२. ज, १.
अवनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अवयोर्मध्ये तथा
वकौ पितष्यतो यथैते चत्वार एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । अं घनोऽस्ति ।
तसात् वमपि घनो भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

घनयोघीतो घनो भवति।

यथा अबी घनी कल्पिती। अनयोर्घाती जः कल्पितः। असा-विष घनो मिविष्यति। कुतः। अवर्गो दः कृतः। अयं घनो मिविष्यति। अवघनयोर्निष्पत्तिर्द्जनि- अ, ८, ब, २७, ष्पत्तिसमाना मिवष्यति। दः घनोऽस्ति। तसात् जोऽपि घनो मिवष्यति। इत्यसाकिमिष्टम्॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम्॥ ५॥

घनः केनाप्यक्केन गुणितः सन् घनो भवति तदाऽसायक्को-ऽपि घनो भवति ।

यथा अ: घनो बगुणितो जं घनो जातः । तसात् ब: घनो भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अप्रमाणस्य वर्गो दं घनो भविष्यति । अवयोर्निष्पत्तिर्देजघन-योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति। अप्रमाणं घनोऽस्ति। त-सात् वः घनो भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥ भ, ८. ४, २७. इ, ६४. ज, २१६.

घनोऽघनगुणोऽघन एव भवति । यदि घनः केनाप्यक्केन गुणोऽघनो भवति तदा सोऽप्यक्कोऽघनो भविष्यति ॥

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यस्याङ्कस्य वर्गो घनो भवति स घनो भविष्यति । यथा अं अद्भः कल्पितः । अस्य वर्गो बं घनः कल्पितः । तसात् अमि घनो भविष्यति । अन् ८. ब, ६४. ज, ५१६

अस्योपपत्तिः ।

यदि अं बेन गुण्यते जं घनो भविष्यति । अबयोर्निष्यत्तिर्बज-घननिष्यत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अं घनो भविष्यति । इदमे-वासाकमिष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

योगाङ्कः केनचिदङ्केन गुणितः सन् घनफलाङ्को भवति ।
यथा अं योगसंज्ञाकः कल्पितः । एनं दः हृतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् अं दहघातफलं भविष्यति ।
एतत् बेन गुण्यते तदा जं भविष्यति ।
इदं जं घनफलाङ्को भविष्यति । कुतः । दं
हगुणितं अं जातम् । पुनर् अं बगुणितं जं जातम् । तसात् जः
घनफलाङ्को जातः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

रूपादयोऽङ्का एकनिष्पत्ती यावन्तः स्युः रूपादेकान्त-रितास्तृतीयादयोऽङ्का वर्गाः स्युः । रूपाद् क्र्यन्तरिताश्चतुर्था-दयो घना भवन्ति । रूपात्पश्चान्तरिताः सप्तादयो वर्गा घनाश्च भवन्ति ।

यथा रूपादयः अवजदह्या एकनिष्पत्ती कल्पिताः । तसात् बः वर्गो भविष्यति । कुतः । यतो रूपं अं तथा निःशेषं करोति यथा अं बं निः- द, ८१. इ, २४३. झ, ७२९. स्रेषं करोति । तसात् अवर्गो बः भवि-ष्यति । अनेनैव प्रकारेण दं वर्गो भविष्यति । पुनर्जः घनोऽस्ति । कुतः । अबघातोत्पन्नत्वात् । एवं हि झोऽपि घनः । कुतः । यतो रूपनिष्पत्तिर्जेन तथास्ति यथा जनिष्पत्तिझेनास्ति । तसात् झः वर्गो जातः घनोऽपि जातः । एवमग्रेऽपि । इदमस्रदिष्टम् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

रूपादयोऽङ्का यद्येकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र यदि रूपाद् द्वितीयोऽङ्को वर्गो भवति तदा सर्वेऽङ्का वर्गा भवन्ति। यदि रूपाद्वितीयाङ्को घनो भवति तत्र सर्वे घना भविष्यन्ति।

यथा अबजदा रूपादयः कैंहिपताः । यदि आः वर्गी भवति बश्च

वर्ग एवास्ति । तसाज्जोऽपि वर्गो भविष्यति । यतो बजयोर्निष्पत्तिः अबयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । एवममेऽपि ।

१. अ, ४. ब, १६. ज, ६४. द, २५६. १. अ, ८. ब, ६४. ज, ५१२. द, ४०९६.

पुनरिष यदि आः घनो भवति । तस्य वर्गो वः घनो भविष्यति । रूपाचतुर्थो जः घन एवास्ति । दोऽपि घनः । यतः जदनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तितुल्यास्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

रूपादयो यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र रूपाद्दि-तीयोऽङ्कश्चेद्वर्गो न भवति तत्र द्वितीयस्थानं द्वितीयस्थानं विना वर्गा न भवन्ति । यदि च रूपाद्वितीयोऽङ्को घनो न भवति तदा तृतीयतृतीयस्थानं विना घना न भविष्यन्ति ।

बथा अबजदह्झा एकरूपनिष्पत्तौ किल्पताः । यदि अं वर्गो न भवति तदा जमपि वर्गो न स्यात् । यदि वर्गो भवति तदा बजनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमा- १, ४, ६, १२, ४, ज, ८ नास्ति । तसात् जं वर्गश्चेत् अं वर्गो भवि-ष्यति । इदमशुद्धम् ।

अनेनैव प्रकारेण हमिप वर्गो न भविष्यति । पुनरिप यदि अं घनो न भवति तदा बमिप घनो न भविष्यति । यदि बं घनो भवति तदा बजनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् अमपि घनो भविष्यति । इदमग्रुद्धम् । एवमग्रेऽपि । इदमे-बास्मदिष्टम् ॥

अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

रूपादयोऽङ्का यद्येकनिष्पत्तौ भवन्ति तदा तेषु लघ्वङ्क-स्तदङ्कतमाङ्कतुल्यं महदङ्कं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवजदहा एकनिष्यतौ कित्यताः । जः हं निःशेषं करो-तीति कित्यतम् । तस्मात् जः हं बतुत्यं निःशेषं करिष्यति । कृतः । जदहास्तयोद्वा र, ८, ६, २४३. एकनिष्यतौ तथा सन्ति यथा रूपं अं वं च एकनिष्यतौ सन्ति । रूपं वं निःशेषं तथा करोति यथा जः हं निःशेषं

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

करोति । तसात् जः हं बतुत्यं निःशेषं करिष्यति । एतदेवेष्टम् ॥

रूपादयोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तत्र यदि प्रथमाङ्को-ऽन्त्याङ्कं निःशेषं करोति तदा स एवाङ्को रूपाद्वितीयाङ्कं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवजदा एकरूपनिष्पत्ती कल्पिताः । हं प्रथमाद्रः क-ल्पितः । अयं दं निःशेषं करोति । तसात् १. ४, ४, व, १६. हं अमपि निःशेषं करिष्यति । ज, ६४. द, १५६.

यदि हं अं निःशेषं न करोति तदा ह, २. त, ८. व, ३२ अही भिन्नाद्वी भविष्यतः । अस्यां नि-

ष्पत्ती च लघ्व हो भविष्यतः । पुनर्हः दं झतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तसात् हझघातो दं भविष्यति । अजघातोऽपि दमस्ति । तसात् हअनिष्पत्तिर्जझनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । हंअं जझं क्रमेष तुल्यं निःशेषं करिष्येति । पुनर्हे जं वतुल्यं निःशेषं करोतीति क-

⁹ हथी जही K. २ करिच्यतः K.

ल्पितम् । इअनिष्यत्तिबेवनिष्यत्तिसमानास्तीति निश्चितम् । तस्मात् इं बं निःशेषं करिष्यति । हं बं ततुल्यं निःशेषं करिष्यतीति कल्पि-तम् । पुनर्हअनिष्यत्तिः अतनिष्यत्तिसमानास्तीति कल्पितम् । तदा इः अं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

रूपादयो यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती पतन्ति तेषु यदि रूपाद्वितीयोऽङ्कः प्रथमो भवति तेषु मध्ये महदक्कं तैरङ्के-विना कोऽपि निःशेषं न करिष्यति ।

यथा अवजदम् एकरूपनिष्यत्तौ कल्पितम् । अः प्रथमाद्यः कल्पि-तः । तदा दं महदद्वम् अवजं हित्वा कोऽपि निःशेषं न करिष्यति ।

यदि करिष्यति तदा हः करिष्यतीति कल्पितम् । हः प्रथमाङ्को न भविष्यति । यदि भविष्यति तदाऽसौ अं

निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तसात् इ: योगाङ्को भविष्यति । तं प्रथमाङ्को निःशेषं करिष्यति । स प्रथमाङ्को आदिसो

१ स्म, ५. ब, २५. ज, १२५. द, ६२५. इ---- व--- झ---

ह— व— श— क— त—

मविष्यति । असौ कं भविष्यतीति कल्पितम् । कं दं निःशेषं करिष्यति । तदा अमिप निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तसात्सोऽइः अ एव भविष्यति नान्यः । कल्पितं च हः दं झतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् अज्ञघातो झह्घातसमानो भविष्यति । अहनिष्पत्ति- झंजनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अः हं निःशेषं करोति । तसात् झं जं निःशेषं करिष्यति । झं च अवजाद्भित्रमस्ति । कुतः । यतो हः दं झतुल्यं निःशेषं करोति । हं च अवजाद्भित्रमस्ति । पुनर्झः प्रथनाञ्चो नास्तीति निश्चितम् । झम् अं विना कोऽपि निःशेषं न करोति । पुनर्झः जं वतुल्यं निःशेषं करोति । वम् अवाद्भित्रमस्ति । प्रथमाङ्को नास्ति । अगद्भित्नोऽइस्तं निःशेषं न करिष्यति । कल्पितम् । वं वं निःशेषं करोतीति निश्चयः कार्यः । वम् अवाद्भित्रमस्ति । प्रथमाङ्को नास्ति । आद्भित्नोऽइस्तं निःशेषं न करिष्यति । कल्पितं वं वं ततुल्यं निःशेषं

करिष्यंतीति । निश्चितं तं अं नास्ति । खतयोषीती समस्ति । ख-वर्गोऽपि समस्ति । तस्मात् अवनिष्यचिस्तअनिष्यचिसमाना मनि-ध्यति । अं वं निःशेषं करोति । तम् अं निःशेषं करिष्यति । इदमशु-दम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

यावस्तः प्रथमाङ्काः कल्प्यन्ते तैर्विनान्येऽपि प्रथमाङ्का भविष्यन्ति ।

अथ पश्चवशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

कस्पितप्रथमाङ्का यदि कमपि छध्यङ्कं निःशेषं करिष्य-न्ति तदा तं उध्यङ्कं तदन्यः प्रथमाङ्को निःशेषं न करिष्यति।

यथा अं लब्बहः करियतः । बजदाः प्रथमाङ्कास्तं निःश्लेषं कु-र्वन्तीति कल्पितम् । तदान्ये प्रथमाङ्का एनं निःश्लेषं न करिष्यन्ति । यदि करिष्यन्ति तदा अ, ३०. हः शतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । इन्नातः अतुल्यो भविष्यति । वः

प्रथमाद्भः अं निःशेषं करोति। तसात्तस्यैकभुजमपि निःशेषं करिष्मति।

तसात् हं निःशेषं न करिष्यति । झं निःशेषं करिष्यति । एवं जदा-वपि । तसात् बजदा झं निःशेषं करिष्यन्ति । झं आत् न्यूनमस्ती-त्यशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अय पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

त्रयो लघ्वक्का यद्येकरूपनिष्यत्ती भवन्ति तदा तेषां मध्ये द्वयोद्वयोयोंगस्तृतीयाङ्कात् भिन्नो अविष्यति ।

यथा अवजा लघ्वहा एकनिष्यत्ती कल्पिताः । पुनर्दहह्मी लघ्वह्नी अत्यां निष्यत्ती गृहीती । एती भिन्नी स्तः । दहवर्गश्च अन्मस्ति । इसवर्गो जमस्ति । दहह्मघाती अनस्ति । प्रत्येकं दहद्मी हम्नाद्विनी स्तः । ह... ह... स. तसात् दहद्मघातः अवयोगतुल्यो ह्मा-द्विनो भविष्यति । तस्य वर्गाद्वि भिन्नो भविष्यति । एवं बजयोगः आद्विनोऽस्ति । पुनर्दहह्मी द्माद्विनो स्तः । दहह्मघातश्च दम्नाद्विनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च दम्नाद्विनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च दिगुणदहह्मघातदहवर्गह्मवर्गयोगतुल्यश्चास्ति । तस्य वर्गश्च दिगुणदहह्मघातदहवर्गह्मवर्गयोगाद्विनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च स्त्रात्व दहह्मघातदहवर्गम्भहवर्गयोगाद्विनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च स्त्रात्व वतुल्यो दहह्मघातः अजयोगतुल्यत्व दहह्मवर्गयोगाद्विनो भविष्यति । तन्सात् बतुल्यो दहह्मघातः अजयोगतुल्यात् दहह्मवर्गयोगाद्विनो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥ रूपाद् व्यतिरिक्ती थी भिन्नाङ्की भवतस्तयोस्तृतीयाङ्क-स्तिभ्यत्तौ न भवति ।

यथा अबौ भिनाही कल्पिती । अनंगोर्निष्पत्ती तृतीयाहो न भवति । यदि भवति तदा जस्तृतीयाहो तस्मामेव नि-ष्पत्ती कल्पितः । तस्मात् अबनिष्पत्तिर्वजनिष्पत्ति-ज--तुल्या भविष्यति । अबौ अस्यां निष्पत्ती लघ्वहो स्तः ।

⁹ K. has one द्वयोः.

तसात् बर्ज निःशेषं करिष्यतः । तसात् आः बं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथाष्टादर्श क्षेत्रम् ॥ १८॥

तत्र यावन्तोऽङ्का एकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्ताङ्कौ यदि भिन्नौ भवतस्तयोर्भध्ये कोऽपि रूपो न भवति तदान्त्या-ङ्कार् द्वितीयोऽङ्कोऽग्रेऽस्यां निष्पत्तौ नोत्पत्स्यते।

यथा अवजा एकरूपनिष्यत्ती कलिपताः । अजी मिन्नी यदि भवतोऽनयोर्भध्ये कोऽपि रूपो न भवति तदा जाद् द्वितीयोऽद्वः अबनिष्यत्ती न भवि- इ— ध्यति । यदि भवति तदा जदनिष्पत्तिः अब- निष्पत्तितुल्या कलिपता । तसात् अजनिष्पत्तिर्बद्निष्पत्तितुल्या भवि- ध्यति । अजी ल्य्वद्वौ अस्यां निष्पत्तौ स्तः । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति । जमपि निःशेषं करिष्यतीत्यशुद्धम् । असादिष्टं समी- चीनम् ॥

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥ द्वयोर्निष्पत्तौ तृतीयाङ्कनिष्पादनमिष्टमस्ति यदि संभवः

स्यात्।

यथा अबी अभिनाही किल्पती । बवर्गी जः किल्पतः । यदि जः जं निःशेषं करोति द्रतुल्यमिति अ, ४. ब, ६. द, ९. ज, ३६. किल्पतम् । तसात् दस्तृतीयाहो म- अ, ६. व, ४. द— ज, ९६. विष्यति । कुतः । अद्घातो बवर्ग- तुल्यजसमोऽस्ति । तसात् अवनिष्पत्तिविद्यनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यदि अः जं निःशेषं न करोति तदा तृतीयाङ्कोऽस्यां निष्पत्तौ न भिन्यति । यदि भवति तदा दृतुत्यः कल्पितः । तसात् अद्घातो जातुत्यो भविष्यति । तसात् अं जं निःशेषं करिष्यति । इदमशु- द्वम । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥ यत्राङ्कत्रयमेकनिष्पत्तावस्ति तत्र निष्पत्ती चतुर्थाङ्कोत्पा-दनमिष्टमस्ति यदि ततुरपादनं संभवति ।

यथा अवजा अद्वाः किल्पताः । अजी भिनाद्वौ न भवतः । तसात् वं जेन गुणितं दं जातम् । आ दं अ, ८. च, १२. इतुल्यं निःशेषं करोतीति किल्पतम् । तसात् ज, १८. इ, २७. इ: चतुर्थोद्वो भविष्यति । यतः अह्वातो इत्रिष्यति । अवनिष्यति । अवनिष्यति ।

यदि आः दं निःशेषं न करिष्यति तदा अ, २०. व, ३०. वतुर्थोक्को न भविष्यति । यदि भविष्यति तदा अ, ४५ ६— इः कल्पितः । तसात् आह्रघातो दतुल्यो भवि- द, १३५०. ध्यति । तसात् आः दं निःशेषं करिष्यतीत्यग्रद्धम् । असादिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥ यावन्तः समाङ्कास्तेषां योगः समाङ्को भवति ।

यथा अवं बजं जदं समाद्वाः किल्पताः । एतेषां योगः अदोऽपि समाद्वो मिविष्यति । कुतः । प्रत्येकस्य समाद्ध-स्यार्द्धं मवति । अद्बीङ्कानां योगो योगार्द्धं मवति । तसात् अदस्यार्द्धं जातम् । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

समतुल्यविषमाङ्कयोगः समो भवति ।

यथा अवं बर्ज जदं दहं विषमाद्वाः कल्पिताः । एतेषां योगः समाद्वो भविष्यति । कुतः । यदि प्रत्येकविषमाद्वात् रूपं पृथक् कि-यते तदा समाद्वः शेषो भविष्यति । रूपाणां योग एकः समाद्वो भवि- ष्यति । समाज्ञानां योगय समाज्ञ एव यवति । तस्मात् अहं समाज्ञो मविष्यतीत्यसाक्रमिष्टम् ॥

अथ त्रयोविशतितमं शेषम् ॥ २३ ॥ विषमतुल्यविषमाङ्कयोगः विषमाङ्को भवति ।

यथा अववजजदा विषमाइतुस्या विषमाझाः किस्पिताः । एतेषां योगो विषमाझो मविष्यति । कुतः । यदि जदात् दहतुल्यं रूपं पृथक् कियते तदा जहं समाझोऽविशिष्यते । अजं समाझोऽस्ति । कुतः । समतुल्यविषमाइयोगत्वात् । तसात् अहमपि समाझो भविष्यति । दहं रूपमस्ति । तसात् अदं विषमाझो भविष्यति । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यदि समाङ्कात् समाङ्कः पृथक्तियते तदा शेषः समाङ्को भवति ।

यथा अनसमाद्वात् वर्जं समाद्वः प्रथक्तियते । तदा अर्जं स-माद्वोऽवशिष्यते । कुतः । यदि नजादी अनाद्वीत् अ..... ज....व शोध्यते तदा अजार्द्वमनश्चिष्यते । तस्मात् अज-स्यादी जातम् । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥ यदि समाङ्कात् विषमाङ्कः पृथक्रियते तदा शेषं विषमाङ्को भवति ।

यथा अवसमाद्वात् बजनिषमाद्वः पृथक्तियते । तदा शेषं आजं निषमाद्वो मनिष्यति । कृतः । बजात् अदं रूपतुल्यं पृथक्तियते । शेषं दवं समाद्वोऽनिश्चअवात् द्वं शोध्यम् । आदं समाद्वोऽनिश्चिते । जदं च रूपमिता । तसात् शेषं आजं विषमाश्री भविष्यति । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ षर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ विषमाङ्कात् समाङ्कः पृथक्रियते तदा शेषं विषमाङ्कोऽव-शिष्यते ।

यथा अबिविषमाङ्कात् अबसमाङ्कः प्रथिक्षयते तदा आजं शेषं विषमाङ्को भविष्यति । कुतः । यदि बद्रुरूपं अबे योज्यते तदा अदं समाङ्को भविष्यति । दज्जश्च विषमाङ्कोऽस्ति । तसात् अजः विषमाङ्को भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

विषमाङ्कात् विषमाङ्कः पृथिकियते तदा शेषं समाङ्को भ-

यथा अवविषमाद्वात् वजविषमाद्वः प्रथक्तियते । तत्र अजः शेषं समाद्वोऽविशिष्यते । यदि अववजयोर्वद्रूपं प्रथक्तियते । शेषः अजं समाद्वः स्वात् । इदमेषा-स्नाकमिष्टम् ॥

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥ विषमाङ्कसमाङ्कघातः समाङ्को भवति । यथा अं विषमाङ्को बं समाङ्कः । अनयोर्घातो ॥

जः समाद्गो भविष्यति । कुतः । समतुल्यविषमाद्ग- जः. योगः समो भवति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथोनित्रशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥ विषमाङ्कयोघीतो विषमाङ्को भवति । यथा अवथोविषमाङ्कवोषीतो जः विष- स

माद्वी भवति । कुतः । विषमतुल्यविषमाद्वयोगो ज..... विषमो भवति । इदमेवेष्टम् ॥

अय त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३०॥ विषमाङ्कः समाङ्कं समतुल्यं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अं विषमाद्वी बसमाद्वं जतुल्यं निःशेषं करोति । तदा जं समाद्वी भविष्यति ।

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

विषमाङ्को विषमाङ्कं विषमाङ्कतुल्यं निःशेषं करोति।

यथा आः बं जतुत्यं निःशेषं करोति । तदा
जः विषमाद्गो मविष्यति । यदि न भविष्यति तदा ब...........
समाद्गः कल्पनीयः । तसात् अजयोषीतो बतुल्यः ज.....
समाद्गो भविष्यति । इदमगुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ द्वात्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥ १ समार्के केलिकोर्च हरोति वटा वस्तार्व

विषमाङ्कः समाङ्कं चेन्निःशेषं करोति तदा तस्यार्ग्रमि निःशेषं करिष्यति ।

यथा आः बर्जं निःशेषं करोति । तदा बद्युल्यं बजार्द्धमपि निःशेषं करिष्यति । कुतः । आः बर्जं हश्चतुल्यं अ... निःशेषं करिष्यतीति कल्पितम् । तसात् हश्चं ब.....द....ज समाद्दो भविष्यति । अस्य अर्षे हवं कल्पितम् । हः व । श

अथ त्रयिक्षशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥ यो विषमाङ्क इष्टाङ्काद्रिक्षो भवति तदा तद्विगुणाङ्कादः पि भिक्षो भविष्यति ।

तसात् अ: बजार्धे ष्टवसमं निःशेषं करिष्यति। इदमेवासाकिमष्टम् ॥

यथा अ: जदाद्विनोऽस्ति । तद्विगुणात् हजादपि भिन्नो भवि-ष्यति ।

यदि न भवति तदा कल्पितं बम् उभयोरपर्वतनं भ... करोतीति । अयं च विषमाङ्कोऽस्ति । जदमपि ज.... द.... ह निःशेषं करिष्यति । तसात् अं जदं च मिलिताङ्को भविष्यतः । इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्खिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

क्र्यादिद्विगुणोत्तरा अङ्काः समसमाङ्का भविष्यन्ति ॥

यथा आः द्याङः किल्पतः । द्विगुणा बजदाः किल्पताः । एते समाङ्काः सन्तीति प्रकटमेर्वं चास्ति । एतेषामादिः आः द्विमि- व, २ तोऽस्ति । स एव प्रथमाङः। एतसादिषकाङ्क एनं कोऽपि निः- व, ४ शेषं न करिष्यति । योऽङ्क एतेष्वन्यतमाङ्कं निःशेषयत्यसा- ज, ८ द, १६ वेतेष्वन्यतमाङ्कतुल्यमेव निःशेषं करिष्यति । तसात् प्रत्येकं समसमाङ्को जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चितिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥
यस्याङ्कस्यार्द्ध विषमाङ्को भवति स समविषमाङ्कः स्यात् ।
यथा अवस्यार्द्धम् अजं कल्पितम् । अजं अवं वारद्वयं निःशेषं करोति । अयं समसमाङ्को न भविष्यति ।
यदि भविष्यति तदाऽस्यार्द्धं समाङ्को भविष्यति । तस्मादयं समविषमाः
हो जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ षट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥ योऽङ्को क्र्यादिद्विगुणेषु मध्ये न भवति यस्यार्द्ध विषमाङ्कश्च न भवति सोऽङ्कः समसमः समविषमश्च भवति ।

⁹ वास्ति K.

भा॰ ८

यथा असम्। अस्यार्थम् आजं कल्पितम्। अयं सम इति प्रकटमेवास्ति। अर्धभावात् । समसमः कृतोऽस्ति । अर्द्धस्य सम-त्वात् । समविषमः कृतोऽस्ति । यतोऽस्यार्द्धार्द्धकर-णेनान्त्यार्द्धे रूपं विना विषमो भवति । स विषमो रूपातिरिक्तोऽस्ति यतो द्यादिद्विगुणाङ्केम्यो नोत्पन्नोऽस्ति। स विषमाङ्क एनं कल्पितं सम-तुल्यं निःशेषं करिष्यति । इदमेवाऽस्माकमिष्टम् ॥

अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्यत्तौ भवन्ति प्रथमतुल्यं द्वितीया-चिदि पृथिक्रियते अन्त्याच पृथिक्रियते तदा द्वितीयक्षेषस्य प्रथमाङ्केन तथा निष्पत्तिभीवष्यति यथान्त्यक्षेषस्य अवाच-ङ्करोगेन यथास्ति ।

बथा अबं जदं झवं तनम् एते एकरूपनिष्यत्तौ सन्तीति कल्पितम्। अबतुल्यं जदात् दहं पृथकार्यम्। पुनरबतुल्यं मनं तना- ज... ह...... द
तपृथकार्यम् । तसात् जहअबयोनिष्पत्तिस्तमस्य झवजदअबानां योगेन या निष्पत्तिस्तन्त्यास्ति।

अत्रोपपत्तिः ।

जदतुल्यं छनं तनात्पृथकार्य । झवतुल्यं कनं च पृथकार्यम् । तसात् तनकनयोर्निष्पत्तिः कनछननिष्पत्तितुल्यास्ति । छनमनयोरपि निष्पत्तितुल्यास्ति । तककनयोर्निष्पत्तिः कछछननिष्पत्तिसमानास्ति । छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्यज्ञह्अव-निष्पत्तिसमस्य कनछनमनयोगतुल्यझवजदअवयोगेन निष्पत्ति-सत्तुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथाष्टर्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८ ॥

रूपादयोङ्का द्विगुणोत्तरा द्विमितनिष्पत्तौ यदि भवन्ति सरूपाणामेतेषां योगः प्रथमाङ्को यदि भवत्यस्य योगस्यान्त्या-इस्य च घातः संपूर्णोङ्को भवति ।

यथा रूपादयोद्वा अवजदा द्विमितनिष्पत्तौ कल्पिताः । एतेषां योगो हृतुल्यः प्रथमाङ्कः कल्पितः । तसात् हृद्योर्घातो स्वतुल्यः संपूर्णाद्वो भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

हादयो अवजदनिष्पत्तितुल्याः तकलमा अङ्गा प्राज्ञाः । तसात् अदिनष्पत्तिर्हमनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् हदयोर्घातः अमयोर्घात-तुल्यो भविष्यति । तसात् अमयोर्घातो झवतुल्यो भविष्यति । अः द्विमितः। तसात् झवं मात् द्विगुणं भविष्यति । तसात् मं झवम् एत-

योर्निष्पत्तिर्लमयोर्निष्पत्तितुल्या मविष्यति । पुनहेतुल्यं कसं तकात्
पृथकार्यम् । पुनहेतुल्यं वगं
स्रवात् पृथकार्यम् । तसात् तसहनिष्पत्तिर्झगस्य निष्पत्तिर्मलतकहयोगेन या भवति तत्तुल्या
भविष्यति । तसं हतुल्यमस्ति ।

१, अ, २. ब, ४. ज, ८. द, १६. ह, ३१. झव, ४९६. ह, ३१. ६२. त ३१स ३१० ल, १२४. म,२४८. झ-४६प ल-फ-फ-

तसात् झगम् एतदङ्कयोगतुल्यं भविष्यति। हतुल्यं गवं रूपअबजद-योगेन तुल्यं भविष्यति। तसात् झवं रूपअबजदहतकलमयोग-तुल्यं भविष्यति। अङ्केषु प्रत्येकं झवं निःशेषं करोति। तसात् झव-मेतद्भागतुल्यं भविष्यति। एतैर्विनाऽन्येन विभागो न लभ्यते। यदि लभ्यते तदा नविभागः कल्पितः। अयं फतुल्यं निःशेषं करोति। त-सात् फनयोषीतो झवो भविष्यति। एवं हद्यातो झवतुल्यो भवि- ष्यति । तसात् इफिनिष्यतिनेदिनिष्यिति व्या भविष्यति । अव-जदमध्ये नो नास्ति । तसात् दं निःशेषं न करिष्यति । हः फं निःशेषं न करिष्यति । हः प्रथमाङ्कोऽस्ति । तसात् हफौ भिनाङौ भविष्यतः । तसात् फः दं निःशेषं करिष्यति । अः प्रथमाङ्कोऽस्ति । तसात् दम् अवजं विना कोऽपि निःशेषं न करिष्यति । तसात् फः तन्मध्ये कोऽपि भविष्यति । स च वः कल्पितः । पुनर्बद्योर्निष्पति-हस्त्योर्निष्पत्तितुल्यास्ति । हद्योर्घातो बस्त्योर्घाततुल्यो भविष्यति झवतुल्यश्च । तसात् वं स्तृत्यं झवं निःशेषं करिष्यति । वः झवं नतुल्यं निःशेषमकरोत् । तसात् नस्त्रौ एकरूपौ भविष्यतः । क-लिपतौ तु भिन्नौ । इदमशुद्धम् । तसात् झवं विना कोऽपि विमागो न भविष्यति । अयं स्वस्वविभागयोगतुल्यो जातः । संपूर्णाङ्ग्य जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥ ६८ ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टचे द्विजेद्रः श्रीमत्सम्राङ् जगन्नाथ इति समिषारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति नन्दतुल्यो गतोऽभृत् ॥९॥

> इति श्रीजगन्नायसम्राड्विरचिते रेकागणिते नवमोऽध्यायः समाप्तः॥ ९॥

अथ दशमाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १० ॥ ॥ तत्र नवोत्तरशतमितानि क्षेत्राणि सन्ति ॥ तत्रादौ परिभाषा ।

- रेखाणां क्षेत्रफलस्य घनफलस्य वा यौनि प्रमाणानि निःशेषकार-काणि प्राप्यन्ते तानि मिलितप्रमाणौन्युच्यन्ते ।
- २ यानि प्रमाणानि निःशेषाणि न भवन्ति तानि भिन्नप्रमाणानि स्युः।
- श्वासां रेखाणां वर्गाः केनचित् क्षेत्रफलेन निःशेषा भवन्ति ता रेखा मिलितवर्गाभिषाः स्युः ।
- यासां रेखाणां वर्गा एवं न भवन्ति ता रेखा भिन्नवर्गाभिधाः स्युः ।
- ९ अथैकेष्ट्री रेखा कल्पनीया तद्यतिरिक्ताः कल्पितरेखास्तासु काश्चि-चस्याः सकाशात् केवलिभिन्नाः स्युः काश्चिद्रिन्ना भिन्नवर्गाश्च स्युः सा रेखा तन्मिलिताश्च रेखास्तस्या वर्गो यत्क्षेत्रफलं तद्वर्गमिलित-मेंसौ मूलदराशिरित्युच्यते ।
- **१ या रे**खा तद्भिना भवति यत्क्षेत्रफलं तद्वर्गोद्भिन्नं भवति यद्भेसा-वर्गस्तत्क्षेत्रत्वस्यो भवति ते करणीशब्दवाच्या भवन्ति ।

॥ इति परिभाषा ॥

अथ प्रेथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

ब्रह्लघुप्रमाणद्वयमस्ति । तत्र ब्रहत्प्रमाणे किंचिदधिकमर्छे शोध्यं यच्छेषं तस्मात् किंचिदधिकमर्छे पुनः शोध्यमेवं मुहुः-करणेन यदन्तिमं लघुखण्डमुत्पन्नं तल्लघुराशेर्न्यूनं भविष्यति ।

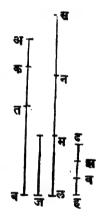
⁹ D., V. and K. omit this sentence. २ प्रमाण नि:शेषकारकं प्राप्यते तदा तानि V., D., K. ३ प्रमाणान्युच्यन्ते J. ४ अयैकेष्टरेखा J.; अयेष्ट रेखा K. ५ केवलं मिनाः J. ६ तत्क्षेत्रफलमिलितवर्गश्च D.; तत्क्षेत्रवर्गमिलितव्य B. ७ तन्मूलद J. ८ ते वर्गाः करणशब्दवाच्या भवन्ति J. ९ प्रथमक्षेत्रम् V.

यथा बृह्त्प्रमाणम् अवं किल्पतम् । लघुप्रमाणं जं किल्पतम् । पुनर्जप्रमाणस्य यावद्भुणाः कैल्प्या यथा अवादिधिका भवन्ति । ते च लससंज्ञकाः कल्प्याः । पुनः प्रत्येकं लमं मनं नसं जतुल्यं किल्पितम् । पुनर् अवात् वतं किंचिदिधिकमर्द्धे पृथकार्यम् । पुनर् अतात् किंचिदिधिकमर्द्धे तकं पृथकार्यम् । एवं मुहुः कार्यम् । यावन्तो लसे जविभागाः सन्ति तावन्त एव अवे यथा विभागा भवन्ति तावत्पर्यन्तं कार्याः । ते च वततककअसंज्ञका भवन्ति । तसा-च्छेषं कअं जाक्यूनं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अकस्य तावन्तो घाताः पूर्वतुल्या माद्याः । ते च दहसंज्ञकाः

कर्याः । तसात् दहम् अबाश्यूनं भविष्यति । कृतः । द्रमस्य अकतुल्यत्वात् । झवं कताश्यून-मस्ति । वहं तबानितान्तं न्यूनमस्ति । पुनर् अबं सल्लान्यूनमस्ति । तसात् दहं सल्लात् नितान्त-मल्पं भविष्यति । पुनर्दझसनयोनिष्पत्तिझवनमनि-ष्पत्तितुल्यास्ति वहमल्ययोनिष्पत्तेरपि तुल्यास्ति । तसात् दहसल्जनिष्पत्तिदझसननिष्पत्तितुल्या भ-विष्यति । दहं सल्लान्यूनमस्ति । तसात् दझ-तुल्यम् अकं सनतुल्यात् जान्यूनं भविष्यति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥



प्रकारान्तरम् ।

न्यूनाधिकप्रमाणयोर्मध्ये बृहत्प्रमाणात् कोऽपि विभागः शोध्यः।पुनः शेषात्तिश्रिष्पत्तिंतुल्यो विभागः शोध्यः। एतत्त-

१ प्राह्माः J., V. २ J. omits विभागः. ३ वहमळयोरपिनिष्पतेखु- ल्यास्ति J. ४ °दुल्यविभागः J., V.

च्छेषादिप । चरमाविशष्टं प्रमाणं लघुप्रमाणाच्यूनं भविष्यति । यथा गफफछयोर्निष्पत्तिः कल्पिता । पुनः सनं जतुल्यं पृथका-र्यम् । सननस्वयोर्निष्पत्तिः गफफछनिष्पत्तितुल्या कार्यो । तसात् ससं

जात् खल्पं भविष्यति । सखखनयोर्निष्पत्तिरीछक्ठफयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । पुनः खनस्य
गानन्तो भाता अबादिभिका दृहाः कल्पिताः । छ
पुनः सननमयोर्निष्पत्तिः सममलनिष्पत्तिश्च गछक्ठफनिष्पत्तितुल्या कार्यो । एवं तावत्कार्यं यावत् खननममला दृहमध्ये खनतुल्या भवन्ति ।
पुननेखखसनिष्पत्तिमननसनिष्पत्तितुल्यास्ति ।
पननेखसमनविष्यत्तिः समनमनिष्पत्तित्त्यास्ति ।

पुनर्नखमननिष्पत्तः खसनसनिष्पतितुल्यास्त।

खसश्च नसात् खल्पोस्ति । तसाम्मखं मनात् खल्पं भिवष्यति ।

एवं हि मनं लमात् खल्पं भिवष्यति । तसात् संपूर्णं खलं दृहादिषकं

भविष्यति । इदं च अबादिषकमिस्ति । तसात् संपूर्णः खलः अबादिषको भविष्यति । सलः असादत्यिषकोऽस्ति । पुनः प्रत्येकसललमनिष्पत्तिः सममननिष्पत्तिः सननखनिष्पत्तिश्च गफफछयोर्निष्पतितुल्यास्ति । अस्यां निष्पत्तौ अबात् बशं पृथकार्यम् । अशात्

शतं अतात् तकं पृथकार्यं यावत् अबविभागाः सलभागसमानासत्यामेवनिष्पत्तौ भवन्ति । तस्मात् अकअबयोर्निष्पत्तिः खससलनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । पुनः अकसखनिष्पत्तिः अबसलनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अबः सलान्यूनोऽस्ति । तसात् अकं सखान्यूनं .

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥ म्यूनाधिकप्रमाणयोर्भध्येऽधिकप्रमाणास्यूनं प्रमाणं शोध्यं

भविष्यति । तच जान्यूनमस्ति । तसात् अर्फं जानितान्तं स्वर्यं

भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

१ द्वितीयक्षेत्रम् V.

तावद्यावच्छेषं न्यूनप्रमाणात् स्वल्पमवशिष्यते । पुनर्न्यूनप्र-माणात् स्वल्पं शोध्यम् । पुनस्तच्छेषं तच्छेषाच्छोध्यम् । एवं मुहुः कार्यम् । यद्येवं निःशेषं न भवति तदा ते प्रमाणे भिन्ने स्तः ।

यथा अबजदं प्रमाणद्वयं तादृशं किल्पतम् । यद्येते प्रमाणे भिन्ने न भवतस्तदोभयोरपवर्तकस्तः किल्पतः । पुनर्जदं अबात्तावच्छोध्यं यथा अहं शेषं जदान्यूनमविशिष्यते । पुनरहं जदाच्छोध्यं शेषं जझं तच अहाच्छोध्यं शेषम् अवम् । हबम् अबार्द्यदिषिकमस्ति ।

हवं अहार्द्धादिधिकमस्ति । अनेन प्रकारेण शेषं ताच्यूनं भविष्यति । तच अवं कल्पितम् । पुनस्तः दजं निःशेषं करोति । तसात् हबमपि निःशेषं करिष्यति । अवं च पूर्वमेव निःशेषमकरोत् । तसादहमपि निःशेषं करिष्यति । इदं झदं निःशेषं करोति। जदं च पूर्वमेव निःशेषमकरोत् । तसात जझमपि निःशेषं करिष्यति । इदं हवं



निःशेषं करिष्यति । तं हवं निःशेषं करिष्यति । अहं निःशेषमक-रोत् । तसादवमपि निःशेषं करिष्यति । अवं ताच छपुरस्ति । इदम-शुद्धम् । इष्टं समीचीनम् ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

महत्प्रमाणस्य मिलितप्रमाणद्वयनिःशेषकारकस्योत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ।

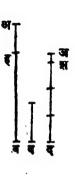
यथा अबजदप्रमाणे मिलिते कल्पिते। तसाचित लघुप्रमाणं जदम् अबं निःशेषं करोति तैदेदमेवेष्टम्। यदि न करोति तदा जदान्यूनं अहमविशिष्टं कल्पितम्। इदं जदं निःशेषं करिष्यति। अनेन प्रका-

Digitized by Google

१ तृतीयक्षेत्रम् V. २ J. inserts तत्र before महत्प्रमाणस्य. ३ तदेष- मेबे $^{\circ}$ D. ४ अनेनैव J., V.

रेण चरमं तादशप्रमाणमुत्पनं स्थातः येत् स्वीपरिस्थप्रमाणानि निःश्रेष-यिष्यति । यतो मिलितप्रमाणे स्तः । तस्मात् कल्पितं जाम आहं निःशेषं करोति । इदं महत्प्रमाणं प्रमाण-द्वयमपि निःशेषयति। यदि ईदं महत्प्रमाणं न भवति तदा वं मैहत्प्रमाणं कल्पितं यह यं निःशेषयति । तसादिवं जहं निःशेषं करिष्यति । इसमपि निः-श्चेषं करिष्यति । अबं निःशेषं करोति स । तसात आहं निःशेषं करिष्यति । झदं निःशेषं करिष्यति । जर्झ निःशेषं करिष्यति । जॅंझं वाहष्वस्ति ।

इद्मग्रद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

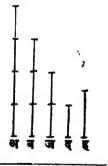


अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितं यत् प्रमाणं प्रमाणद्वयं निःशेषं करोति तत प्रमाणद्वयनिःशेषकारकं महत प्रमाणं च निःशेषयति ।

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

बेहनां मिलितप्रमाणानां निःशेषकारकं महत् प्रमाणं चि-कीर्षितमस्ति ।

यथा अबजा मिलितप्रमाणानि कल्पितानि । अबनिःशेषकारकं महत् प्रमाणं दं फल्पितम् । यदि दः जं निःशेषं करोति तदिदं महत् प्रमाणं त्रयाणामपि निः-शेषकारकमस्ति । यदिदं महत् प्रमाणं न भवति तदा हं महत् प्रमाणं कल्पितम् । तदिदम् अबं निःशेषं करिष्यति । दमपि निःशेषयति । द्धश्च रुप्तरस्ति । इदमग्रद्धम् ॥



९ बत् खोपरिप्रमाणानि D_{\bullet} , K_{\bullet} , V_{\bullet} २ महत् प्रमाणमिदं न भवति J_{\bullet} ३ द्वयोर्नि:शेवकारकं महत् प्रमाणं कल्पितम् J. ४ K. has इदं अध्वस्ति for असं सात लघ्नस्त. ५ मिलितप्रमाणनिःशेषकारकमहत् प्रमाणं J.

यदि दं जं निःशेषं न करोति तदा हं महत् प्रमाणं कल्पितम् । एतचेतद्वयं निःशेषं करोति । हः दं निःशेषयति । तदा अवमपि निःशेषं करोति । तसादिदं महत् प्रमाणमस्ति यतस्वयमपि निःशेषं करोति । । यदीदं न करोति तदा झं महत् प्रमाणं कल्पि-तम् । झम् अवो निःशेषं करिष्यति । तदा । तदा । इस्पि निःशेषं करिष्यति । तदा । सं दं जं व ज द ह सि निःशेषं करोति । तदा हमपि निःशेषं करिष्यति । इदम्य अस्पि । इदम्य । अस्पिदष्टं समीचीनम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥ मिलितयोः प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्वयोरङ्कयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा अबप्रमाणे द्वे मिलिते कल्पिते । हं प्रमाणं तृतीयं कल्पनीयं येन द्वयोरपवर्तः स्यात् । हः अं यावद्वारं निःशेषयित तत्रं लघ्वद्वः जः कल्पनीयः । हर्ममाणं बप्रमाणं यावद्वारं निःशेषयित तत्प्रमाणं दः कल्पितः । तसात् हअनिष्पत्तिः रूपजनिष्पत्ति- तुल्या भविष्यति । अहयोर्निष्पत्तिज्ञरूपयोर्निष्प- तितुल्यास्ति । हबयोर्निष्पत्तिः रूपद्योर्निष्पत्तितु- अल्यास्ति । तसात् अबयोर्निष्पत्तिज्ञद्दनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एतौ जदावद्वो स्तः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अं व ह

१ करिष्यति J., V. २ भवति K., J., V. ३ This sentence is omitted in D. and J. They read the next sentence as follows:—पुनर्दे जं झं निःशेषं करोति D. पुनर्झे दं जं निःशेषं करोति J. ४ मिलितप्रमाणयो J. ५ तत् प्रमाणं जं किल्पतं J. ६ बावद्वारं हं बं निःशेषं करोति तद्धं दं किल्पतम् J.

अथः षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

ययोर्द्धयोः प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्धयोरङ्कयोर्निष्पत्तितुल्या भ र्वेति ते मिलितप्रमाणे भवतः।

यथा अवं प्रमाणे कल्पिते । जदावद्री कल्पितौ । अवनिष्पत्ति-र्जदिनिष्पत्तितुल्या कल्पिता । तदा अबी मिलिती भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

अप्रमाणस्य जतुल्या विभागाः कल्पिताः । तसात् हप्रमाणमुखन जातम्। पुनर्हस्य दतुल्या घातामाद्याः। लब्धा-हो ईमसंज्ञोऽस्ति। तसात् अहनिष्पत्तिजीरूप-निष्पत्तितुल्या भविष्यति । हङ्गनिष्पत्तिरू-पदिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तस्मात् अझ-निष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अ-बनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति । तसात् बझौ समानौ भविष्यतः। अङ्गौ मिलितप्रमाणौ स्तः। तस्मात् अबौ मिलितप्रमाणौ भविष्यतः। इदमसदिष्टम् ॥



अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

द्वयोर्मिलितरेखावर्गयोर्निष्पत्तिर्द्वयोरङ्कवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति । यदि रेखाद्वयवर्गयोर्निष्पत्तिरङ्कवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति तदा ते रेखे मिलिते भवतः । यद्यङ्कवर्गयोर्निष्पत्ती रेखावर्गतुल्या न भवति तदा ते रेखे भिन्ने ज्ञातच्ये।

अध is omitted in V. ২ মৰিঘানি J. ২ প্ৰৱী V. ৬ প্লাৱ-ज्ञकः \mathbf{K} ., इस्तंज्ञकोऽस्ति \mathbf{V} . ५ अझे मिलितप्रमाणे \mathbf{J} . ६ ०दिष्ट समी-चीनम् J. ७ व्निष्पत्तेस्तुत्या V.

यथा अबरेलाद्वयं कल्पितम् यदि ते मिलिते रेले भवतस्तदैतबोनिव्यत्तिर्द्वयोरिक्योरिक्योरिक्येतितुस्या भविष्यति । तौ द्वावङ्कौ
जदी कल्पितां। अवयोर्वर्गयोनिव्यति । अवयोर्वर्गयोनिव्यति । अद्वर्गयोनिष्यत्ति ।
अद्दिनष्यतिवर्गो भविष्यति ।
अदिनष्यतिः अवनिष्यत्तितुः
स्यास्ति । तसाद्वयो रेला-

पुनरि अबयोर्वर्गयोर्निष्पत्तिर्जदयोर्वर्गयोर्निष्पत्तितुल्या कल्पिता।

इस्रो जदस्य भुजी कल्पिती । तसाद्रेसावर्गयो-र्निष्यत्ती रेसानिष्यत्तिवर्गतुल्या जाता । जदनिष्य-तिर्द्देसनिष्यत्तिवर्गोऽस्ति । तसाद्रेसयोर्निष्यत्तिरङ्गयो र्निष्यत्तितुल्या जाता । तसात्ते रेसे मिलिते संपैने ।

वर्गयोनिष्पत्तिर्द्वयोरऋवर्गयोनिष्पत्तित्वल्या जाता ।

T

पुनरिप रेखावर्गयोर्निष्यत्तिरङ्कद्वयवर्गनिष्यत्ति-तुल्या न भवति तदा ते रेखे भिन्ने भवतः । यदि भिन्ने न भवतत्त्वदा मिछिते कल्पिते । तैदा अनयो-र्वर्गनिष्यत्तिरङ्कद्वयवर्गनिष्यत्तितुल्या भविष्यति । इद-

জ....

₹..

₹.

मशुद्धम् । असर्विष्टं समीचीनम् ॥

अनेनेदं निश्चितं रेखे बदि मिछिते स्पातां तयोर्वगीविप मिलिती भवतः । यदि रेखावर्गी मिन्नी तदा रेखे अपि भिन्ने भवतः । अस्य विकोमता नास्ति ॥

९ °निम्मतेसुस्या V. १ J. omits तौ. ३ जाते J. ४ J. Omits त्ता. ५ °र्वगेयोनिं J. ६ J. Omits स्याताम्.

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

यानि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तेषु प्रथम-ब्रितीयौ यदि मिलितौ स्तस्तदा हतीयचतुर्थावपि मिलितौ भविष्यतः । यदा प्रथमद्वितीयौ भिन्नौ भवतस्तदा हतीयच-तुर्थावपि भिन्नौ भविष्यतः ।

यथा अवजदानै स्वारि प्रमाणानि सजातीयानि क लिपतानि । तत्र अवी यदि मिलिती स्वातां तदा ती द्वयोर इन्योनिष्यत्ती स्वाताम् । जदावप्य इयोनिष्यत्ती मन्विष्यतः । तैदा जदरेखे मिलिते भविष्यतः । यदि अवी भिन्नी जदाविष भिन्नी भविष्यतः । कुतः । यदि मिन्नी न भवतः मिलिती भवतस्तदा द्वयोर इन्योनिष्यत्ती मविष्यतः। अवावप्येताहशौ भविष्यतः। अवावप्येताहशौ भविष्यतः। अविष्यतः। अवावप्येताहशौ भविष्यतः। अविष्यतः। अवावप्येताहशौ भविष्यतः।

यदि प्रमाणानि रेखा भवन्ति तत्र अञ्चवर्गी मिलितो वा भिन्नो भवतस्तदा जदावप्येतादृशी भविष्यतः । कुतः । अनयोर्वर्गयोः स-जातीयत्वात् ॥

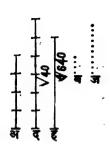
अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

तार्द्दशं रेखाद्धयमुत्पादनीयं यथेष्टरेखया प्रत्येकं भिष्नं स्यात्। तयोरेकस्या रेखाया वर्गः कल्पितरेखावर्गाद्धिष्नः स्या-त्रथा कल्पनीयो भवति।

यथा इष्टरेखा अं कल्पिता । ययोरङ्कयोर्निष्पत्तिर्वर्गनिष्पत्तितुल्या

१ यदि V. २ चत्वारः प्रमाणाः संजातीयाः कल्पिताः D., K., V. ३ This sentence is omitted in K. and V. ४ J. inserts तदा after मिन्नो. ५ इष्टमस्मत्समी ° V. ६ तादशरेखा ° J. ৬ इष्टया रेखया K., J., V.

न भवति तथा द्वावद्दी मासी । तांवद्दी बजीः किल्पती । पुनर् अवर्गदवर्गयोर्निष्पत्तित्वयोरद्दन् योर्निष्पत्तित्वयोरद्दन् योर्निष्पत्तितुत्या कार्या । तसात् दम् असंज्ञाद्विन्नं भविष्यति । कुतः । अनयोर्वर्गी द्वयोरद्दवर्गनिष्पत्ती न स्तः । अनयोर्वर्गी मिलिती भविष्यतः । कुतैः । अनयोर्वर्गनिष्पत्ति विष्यति । पुनर् अदरेखयोर्मध्ये हरेखा एकनिष्पत्ती निष्कास्य ।



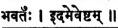
तस्गोदिमे अरेखाहरेखे भिन्ने भविष्यतः । अनयोवर्गाविष भिन्नो म-विष्यतः । कुँतः । अवर्गहवर्गयोर्निष्पत्तिः अद्दिनष्पत्तितुत्यास्ति । अद्द-निष्पत्तिः अहनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । अः दाक्किनोऽस्ति । तस्मात् अहवर्गाविष भिन्नो भविष्यतः । ययोर्वर्गो भिन्नो भवतस्तौ मित्रोऽपि भिन्नो भवतः । इँदमेवाऽस्माकिमिष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

एकप्रमाणेन यावन्ति प्रमाणानि मिलितानि सन्ति तानि मिथोऽपि मिलितानि रेयुः ।

यथा अबौ द्वे प्रमाणे जप्रमा-णेन मिलिते कल्पिते । अजप्रमा-णयोनिष्पत्तिदृहाद्वयोनिष्पत्तेस्तुल्या कल्पिता । पुनर्जबप्रमाणयोनिष्पत्ति-भवाद्वनिष्पत्तितुल्या कल्पिता ।

अस्यां निष्यत्तौ त्रयो लघ्वद्वास्त-कला प्राद्धाः । तत्र अवप्रमाणयो-निष्यत्तिस्तलाङ्कयोर्निष्यत्तितुल्या भ-विष्यति । तसावेते द्वे प्रमाणे मिलिते



९ यतः J. २ एते अहरेखे J. ३ यतः J. ४ इत्येवेष्टम् J. ५ K. inserts अन्ये here; J. has अन्यानि. ६ भवन्ति J. ७ भविष्यतः J.

अर्थेकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यदि द्वे प्रमाणे मिलिते भवतस्तदा तयोयोंगोऽपि तेन मिलितो भवंति तयोरन्तरमपि ताभ्यां मिलितं भविष्यति ।

यथा अववजे द्वे प्रमाणे मिलिते कल्पिते । अनयोरपवर्तको दः
कल्पितः । तदाँ दो ऽपि अनयोर्योगस्याप्यपवर्तको भविष्यति ।

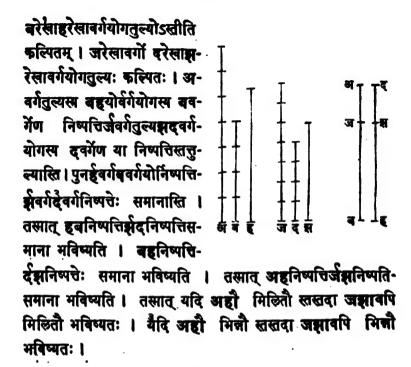
यैदि दः उमयोर्थोगमेकं प्रमाणं च निःशेषं करोति तदा द्वितीय-प्रमाणमपि निःशेषं करिष्यति । ईदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

यत्र चतस्रो रेखाः सजातीया भवन्ति तत्र यदि प्रथमरेखावर्गो द्वितीयरेखावर्गप्रथममिलितान्यरेखावर्गयोगतुल्यो
भवति तदा तृतीयरेखावर्गश्चतुर्थरेखावर्गतृतीयरेखामिलितान्यरेखावर्गयोगतुल्यो भविष्यति । यदि प्रथमरेखावर्गो
द्वितीयरेखावर्गस्य प्रथमरेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगन
तुल्यो भवति तदा तृतीयरेखावर्गोऽपि चतुर्थरेखावर्गस्य तृतीयरेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगन तुल्यो भवति ।

यथा अबजदाश्चतस्रो रेखाः सजातीयाः कल्पिताः । अरेखावर्गो

१ भविष्यति J., V. १ तदानयोगोगसापि दोऽपवर्तको भविष्यति । J. ३ यदि दः योगं निःशेषं करोति दमुभयोः (एकं) प्रमाणं च निःशेषं करोति तदा &c. J. ४ इदमेवेष्टम् J.



पुनः प्रकारान्तरम् ।

अववजदहहझाश्वतसो रेखाः किल्पताः। तत्र अववगवजवगीयोनिष्पत्तिदेहवर्गझहवर्गनिष्पत्तेस्तुत्यास्ति । तसात् अववगस्य निष्पत्तिः अववग्वजवर्गान्तरेण तथास्ति यथा
दहवर्गस्य निष्पत्तिदेहवर्गझहवर्गान्तरेणास्ति । अवस्य ज
निष्पत्तिः अववर्गवजवर्गान्तरभुजेन तथास्ति यथा दहस्य
निष्पत्तिः अववर्गवजवर्गान्तरभुजेन तथास्ति यथा दहस्य
निष्पत्तिदेहवर्गहञ्चवर्गयोरन्तरभुजेनास्ति । अवस् अववजवर्गान्तरभुजेन मिलितं भवति । तदा दहं दहवर्गहञ्चवर्गान्तरभुजेन मिलितं भविष्यति । यदि ते भिन्ना व

⁹ बहुवर्गयोगतुस्यो° J. २ °वर्गयोर्निष्पत्तेः J. ३ मिन्नी तदा भिन्नी भविष्यतः J.

अथ त्रवोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

न्यूनाधिके द्वे रेखे भवतस्तरा छघुरेखावर्गचतुर्थीशतु-स्यमेकं क्षेत्रं बृहद्रेखाखण्डोपेरि कार्यं यथा द्वितीयखण्डोपरि कृतं क्षेत्रं वर्गो भवति । तत्रेदं क्षेत्रं बृहद्रेखाया द्वे खण्डे यदि मिलिते कैरिप्यति तदा बृहद्रेखावर्गो छघुरेखावर्गस्य बृहद्रेखामिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । यदि च बृहद्रेखावर्गः पूर्वोक्तरूपो भवति तदा क्षेत्रं बृहद्रेखावा मिलिते द्वे खण्डे करिष्यति ।

बना अधिकरेला बजं कल्पिता रुघुरेला अं कल्पिता। अवर्गचतु-भीकः अन्नुदेलामा अर्धवर्गतुल्योऽस्ति । एतत्तुल्यं बजरेलालण्डो-परि क्षेत्रं कार्य यथा वितीयल-

परि क्षेत्र कार्य यथा द्वितीयस-ण्डोपरि शेषक्षेत्रं वर्गरूपं भवति । तदेयं बजरेसा दचिन्होपरि स-ण्डिता भविष्यति नैत्वर्धिता ।

यतो अरेखार्घवर्गो बजरेखार्घवर्गतो न्यूनोऽस्ति तसात् वदं महत्ख-ण्डं कल्पितम् । दहरेखाजदतुल्या प्रथकार्या । पुनर्बददज्योर्घातः अवर्गचतुर्योशतुल्योऽस्ति । अयं चतुर्गुणः अवर्गतुल्यो मवति । अ-सिन् बहवर्गश्चेद्योज्यते तदा बजवर्गसमानो मवति । तसात् बजवर्गः अवर्गबहवर्गयोर्योगतुल्यो मवति । तसाद्यदि बददजौ मिलितौ मवतस्त्रदा बहवजौ मिलितौ मविष्यतः । कुतः । बजं जदेन मिलितमस्ति । जदं जहेन मिलितमस्ति । तसात् बजं जहेन मिलितमस्ति । तसात् वजं जहेन मिलितं मविष्यति । पुनरपि यदि बजं बहेन मिलितं स्थात् तदा बदं दजेन मिलितं मविष्यति । कुतः । बजं हजेन मिलितमस्ति । हजं दजेन

^{9.} J. has यत्र in the beginning. २. कार्यम् । परं तथा कार्य यथा D., K., V. ३. करोति J. ४. अवर्गचतुर्योशतुस्यं बजरेखासण्डोपरि &c. J. ५. J. omits न त्विंवता.

Digitized by Google

मिलितं चास्ति । तसात् बर्जं दजेन मिलितं भविष्यति । तसात् बदं दजेन मिलितं भविष्यति । ईदमेवेष्टमसाकम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

द्वे रेखे न्यूनाधिके यदि भवतस्तत्र न्यूनरेखावर्गचतुर्याश-तुल्यं क्षेत्रं बृहद्रेखाखण्डोपरि तथा कार्य यथा शेषखण्डक्षेत्रं वर्गरूपमवशिष्यते । तत्क्षेत्रं यद्यधिकरेखायाः खण्डद्वयं भिन्नं करोति तदा महद्रेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य महद्रेखाभिन्नान्य-रेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । यदि महद्रेखावर्ग ईहशो भवति तदा क्षेत्रं तस्या रेखायाः खण्डद्वयं भिन्नं करिष्यति ।

उपरितनक्षेत्रेणैव निश्चितं बजरेखावर्गः अवर्गबद्धवर्गयोगत्रस्यो-ऽस्ति । यदि बदं दजादिनं भवति तदा बर्जं बहादिसं भवि-ष्यति । कुतः । यदि मिलितं स्यात् तदा बद्दजी मिलिती म-

स १६

विष्यतः । इदमशुद्धम् ।

पुनरिप यदि बजबही भिन्नी भवतस्तदा बददजाविप भिन्नी म-विष्यतः । कृतः । यदि मिलितौ भवतस्तदा बजबहौ मिलितौ भविष्यतः । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पञ्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५॥

यानि समकोणक्षेत्राणि भवन्ति तेषां भुजा यद्यक्रसं-ज्ञाही भवन्ति तदा तत्थेत्रमप्यक्रसंज्ञाही भवति ।

^{9.} J. omits असावम्. २. J. has त्रयोदशक्षेत्रोक्तद्वे रेखे. ३. चेत J. ४. भविष्यतः J. ५. भविष्यन्ति J.

यथा बजक्षेत्रं कल्पितम् । अबअजौ तस्य भुजौ कल्पितौ । अबभुजोपिर बदं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । इदमङ्गसंज्ञाई भविष्यति । क्षेत्रं चानेन
मिलितमस्ति। कुतः। अजम् अदतुत्थेन अबेन मिलितमस्ति । तसात् क्षेत्रमप्यद्वसंज्ञाई भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

यसङ्कसंज्ञाईभुजोपर्यङ्कसंज्ञाई क्षेत्रं भवति तेदा द्विती-यमुजोऽप्यङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अवभुजोपिर बजक्षेत्रं कल्पितम् । अजभुज उत्पन्नः । तत्र अबोपिर बद्दसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । तसादिदं बजक्षेत्रेण मिलितं द ज ज ज ज मिलियति । कुतः । उभयोरक्कसंज्ञाई-

त्वात्।तसात् दअम् अबतुत्यम् अजेन मिलितं भविष्यति।तसात् अजम् अ**इ**-

संज्ञाई भविष्यति । इदमस्रदिष्टम् । अस्य क्षेत्रं पूर्वोक्तवदस्ति ॥

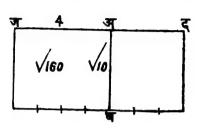
अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

यत् क्षेत्रं चतुर्भिः कोणैः समकोणमस्ति तस्य यदि भुजौ भिन्नो भवतो भुजवर्गौ च मिलितौ भवतस्तदा तत् क्षेत्रं करणीरूपं भविष्यति । तस्यैवं मध्यक्षेत्रसंज्ञा कृता । यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सापि करणीगतैव स्यात् । इयं रेखा मध्यरेखाभिधाना भवति ।

९ J. omits अस्माकम्, २ तदुत्पन्नद्वितीय J. ३ J has तस्यैव एवनै-(यवनै १) प्रीध्यक्षेत्रमिति संज्ञा.

यभा क्षेत्रं बजर । अवअजी भुजी निन्नी कल्पिती । पुनर्

अवभुजोपरि बद्समकोण-समचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । त-स्मादिदमङ्कसंज्ञाई मविष्यति कल्पितक्षेत्राद्भिजं च पतिष्यति । रेखयोभिन्नत्वात् । तस्मात् क्षेत्रं करणीरूपं भविष्यति । एवं हि



यस्या रेखाया वर्गः क्षेत्रतुल्यो भवति तदा सापि रेखा करणीरूपा भविष्यति । इदमेवेष्टम् । पूर्ववत् क्षेत्रं कार्यम् ॥

अथ मध्यरेखाः कदाचित् मिथो मिलिता भवन्ति । यथा **अव**रेखा अद्भसंज्ञाही कल्पिता । यस्य क्षेत्रस्यैक्अुजः अर्जं भवति द्वितीयम अबरेलाचतुर्यौशतुल्यो भवति ततुक्षेत्रतुल्यो यस्या रेलाया वर्गो भवति सा रेखा मध्यरेखा भवति । सैव रेखा बजधेत्रतत्यो यस्याः रेखाया वर्गो भविष्यति तया मिल्रिता भवति । कृतः । अनयो रेख-योर्वर्गी रूपस्य चतुर्णी च निष्पत्तौ भविष्यतः। रूपं चत्वारः वर्गौ स्तः। कदाचिन्मध्यरेखा भिन्ना भवन्ति मिलितवर्गाश्च भवन्ति । क्रतः । यस्या रेखाया वर्गस्ततक्षेत्रत्रत्यो भवति यस्य क्षेत्रस्यैको भुजः अजं द्वितीयश्व अबार्धवरयो भवति तदा सा रेखा मध्या भवति । अस्या वर्गस्तद्रेसावर्गमिलितो भवति यस्या रेसाया वर्गो बजक्षेत्रतुल्योऽस्ति । वतोऽनयोर्वर्गी अवर्गाष्ट्रद्रयनिष्मती स्तः । कदाचित्ता मध्वरेखा मिका तद्वर्गाश्च भिन्ना भवन्ति । कृतः । यस्या रेखाया वर्गस्तेन क्षेत्रेण तुत्यो भवति बस्य क्षेत्रसैक्भुजः अवं द्वितीयभुजः अजरेसावा भिन्नो भवति तस्य वर्गोऽइसंज्ञाही भवति सा रेखा मध्या भवति तदेखातो भिन्ना भविष्यति यस्मा रेखाया नर्गो बज्जनेत्रतुल्यो भवति । यतोऽनयोर्वर्गी भिन्नी भवतः ।

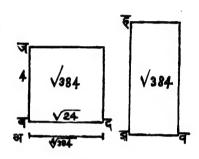
⁹ भिज़रेसात्वात् J. २ क्षेत्रं पूर्ववत् कार्यम् J. ३ वि D., K.

जयाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

अङ्कसंज्ञाहरेखोपरि क्षेत्रं कार्यम् । मध्यरेखाचर्गतुल्यं क्षेत्रं चेद्भवति तदा तदुत्पन्नभुजः करणीरूपो भवति । तस्य वर्गो-ऽङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अं मध्यरेखा कल्पिता बजम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता। जदले-

त्रम् अवर्गतुल्यं कल्पितम् । पुनर्य-स्य भुनौ भिनौ भवतोऽइसंज्ञाही वर्गौ च भवतस्तत्सेत्रं हवं क-ल्पितम् । जदहवसमानक्षेत्रयो-वकोणझकोणौ समानौ स्तः । तदा जबहृझनिष्पत्तिईववदनि-ष्पत्तितुल्या भविष्यति। जबहृझौ



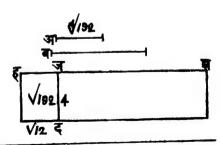
मिलितवर्गों स्तः । तसात् झवबदाविप मिलितवर्गी भविष्यतः । पुनर्ज-दक्षेत्रबदवर्गी मियो मिली स्तः । तसात् जवबदाविप मिथो मिली मविष्यतः । तसात् बदवर्ग एवाइसंज्ञाहीं जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥

मध्यरेखामिलिता रेखापि मध्या भवति ।

यथा अं मध्यरेखा कल्पिता । एतन्मिलिता बरेखा कल्पिता । अ-

इसंज्ञाईद्जरेखोपरि तदे-खाद्धयवर्गतुल्यं दहक्षेत्रं द-झक्षेत्रं कार्यम् । एते क्षेत्रे मिछिते मविष्यतः । हजं जझेन मिछितं मविष्यति । हजस्य वर्गोऽइसंज्ञाहोऽस्ति ।



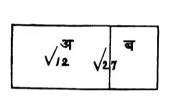
१ तके अवस्थान गेतुरनं क्षेत्रं भवति J. १ J. inserts अरेखान गेतुरनं क्षेत्रं. ३ J. omits पुनर्.

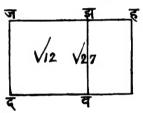
इजजदौ भिन्नौ स्तः । तसात् जझमप्येवमेव भविष्यति । तसात् दझं मध्यक्षेत्रं जातम् । इदमेवेष्टम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

द्वयोर्मध्ययोः क्षेत्रयोरन्तरं करणीरूपं भवति ।

एको मध्यः अबः कल्पितः । द्वितीयो मध्यः अः कल्पितः । अन्तरं वं कल्पितम् । जदम् अक्कसंज्ञाई कल्पितम् । अस्योपिर अब-





तुल्यं क्षेत्रं कार्यम् । अस्य द्वितीयो भुजो जहो भविष्यति । पुनर्द्वि-तीयक्षेत्रतुल्यं क्षेत्रं कार्यम् । तत्र जझं द्वितीयो भुजो भविष्यति । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । एतौ जदात् संकाञात् भिन्नो भविष्यतः । हवं केरणीरूपं भविष्यति । यदि करणीरूपं न भवति तदाइसंज्ञाहें कल्पितम् । तदुत्पन्नभुजो झहः अइसंज्ञाहों भविष्यति । अस्य वर्गो जझवर्गश्चाइसंज्ञाहोंऽस्ति । पुनर्ज-श्चाइयोर्मिन्नत्वात् जझझह्योर्घातोऽनयो रेखयोर्वर्गाद्विनो भविष्यति । तसात् जझझहवर्गो जझझह्योद्विगुणघाताद्विनो भवतः । तसात् संपूर्ण मिलितं जहवर्गतुल्यं जझझह्यक्क्षसंज्ञाहवर्गयोर्भिन्नं भविष्यति । तसात् तत्करणीरूपं भविष्यति । कल्पितं चाइसंज्ञाहम् । इदमर्श्वे-द्वम् । अस्पदिष्टं समीचीनम् ॥

⁹ $J.\ drops$ सकाशात्. २ एवं क्षेत्रान्तरं करणीरूपं भविष्यति । यदि करणीरूपं न भविति J. ३ जझाझाहयोषीतो भिन्नोऽस्ति । जझाझाहयोमीनत्वात् । तस्मात् &c. D. ४ इदमञ्जूपपन्नम् J.



अथैकंविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

तत्र तादृशमध्यरेखाद्वयोत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ययोर्भ-ध्यरेखयोः केवलं वर्गावेव मिलितौ भवत एतौ चाङ्कसं-ज्ञाईक्षेत्रभुजौ भवतः।

अथ प्रथमं द्वे रेखे अबसंज्ञे कल्पिते । अनयोर्वर्गावेव केवलमङ्कसं-ज्ञाहीं भवतः। अनयोर्मध्ये जरेखा मध्य-

निष्पत्तिरूपा कल्पिता । दरेसा चतुर्थ्य-स्यां निष्पत्तौ कल्पिता । अवधातो जवर्गतुल्यो मध्यक्षेत्रं भविष्यति । त-स्मात् जं मध्यरेसा भविष्यति । अव-

निष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुत्यास्ति । अबयोः केवलं वर्गी मिलितौ स्तः । त-सात् जदयोरिप केवलं वर्गी मिलिष्यतः । दोऽपि मध्यरेसा भवि-ध्यति । जदयोधीतो बवर्गतुत्योऽइसंज्ञाहीऽस्ति । तसात् जदाविष्टे मध्ये रेसे जाते ॥

अथ द्वार्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

ये द्वे मध्ये रेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रस्य द्वौ भुजौ भवतस्तादृशरेखाद्वयस्योत्पादनमिष्टमस्ति।

अबजास्तिस्रो रेसाः केवलवर्गमिलिताः कल्पिताः। अबयोर्मध्ये

दरेखा मध्यनिष्यत्तौ कल्पिता । अजयोर्निष्यत्तितुल्या दहनि-ष्यत्तिः कल्पिता । अदनिष्य-त्तितुल्या बदनिष्यत्तिज्ञेह-निष्यत्तितुल्या मविष्यति ।

3	V16	
ड ├──	√ 128	
अ	√8	·
ज़	<u> </u>	•
ਡ !	∜72	

अबयोर्घातो दवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् दुरेसा मध्या भविष्यति ।

[🤊] अथैकविंशं J. २ मिलितो स्तः J. ३ दं मध्यरेखा भविष्यति J.

अजी केवलवर्गमिलिती स्तः। तसात् दहाविष केवलवर्गमिलिती मवि-ष्यतः। तसात् इरेसा मध्यरेसादरेसायाः केवलवर्गमिलिता मवि-ष्यति। दहयोषीतो बजयोषीतेन तुस्योऽस्ति। तसात् दहाविष्टमध्य-रेसे मविष्यतः।

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

यस्य क्षेत्रस्य द्वी भुजौ मध्यरेखे भवतस्तयोः केवलवर्गी मिलितौ सास्तदा तत् क्षेत्रं केवलमङ्कसंज्ञाई भविष्यति वा मध्यसंज्ञकं भविष्यति ।

बजक्षेत्रस्य अबअजी हो भुजो च मध्यो कल्पितो । ह्योर्भुजयो-

रुपरि बदजही समकोण-समचतुर्भुजी कार्यो । झवरे-साइसंज्ञाही कल्पिता । तस्मा ह उपरि बदबजजहस्रेत्राणां तुल्यं वतकलमनक्षेत्रत्रयं कार्यम् । तत्र झततललना उत्पन्ना भुजा

मिविष्यन्ति । प्रत्येकं झतलनयोर्वगौं केवल्रमङ्कसंज्ञाहों सः । एतौ च मिलितरेसारूपौ सः । अवअजवर्गयोर्मिलितत्वात् । वदक्षेत्रवज्रक्षेत्रयोर्निष्यतिर्द्धअजनिष्यतितुत्यास्ति । वअअङ्योरि निष्यतितुत्यास्ति । तदा वज्रकेत्रज्ञष्टकेत्रयोरि निष्यतितुत्या मैविष्यति । तसात् वतकलमनानि त्रीणि क्षेत्राणि झततललनासिक्षो रेसान्धे-कनिष्यतौ भविष्यन्ति । झतलनयोर्घातस्तलवर्गतुत्यो भविष्यति । झतलनयोर्घाताः झतवर्गेण मिलितोऽस्ति । तसात् तलवर्गोऽङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति । यदि तलं झविमिलितं भवित तदा कलक्षेत्रतुत्यं वज्रक्षेत्रमङ्कसंज्ञाई भविष्यति । यदि तलरेसा झवरेसातो भिन्ना भवित तदा तत् मध्यक्षेत्रं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

[🤊] भिक्तिवर्गों J. २ जाता J.

अथ चतुर्विञ्चतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

तत्र ताद्दशरेखाद्वयस्योत्पादनिमष्टमिस्त ययोः केवलवर्गा-वङ्कसंज्ञाहीं मिलिती भवतोऽधिकरेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य महद्रेखामिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवेत् तथो-त्पादनिमष्टमस्ति ।

तदा द्वावद्ववर्गराशी कल्प्यो ययोरन्तरं वर्गो न भवति । तौ अब-बजी वर्गी कल्पिती । पुनर्दहरेखाइसंज्ञाही कल्पिता । अस्योपिर दझहं वृत्तार्घ कार्यम् । तत्र दहवर्गद्झव-र्गयोर्निष्पत्तिः अबअजनिष्पत्तितुल्या कल्पि-

गयानिष्पातः अवअजानिषात्तपुर्वा कार्यः। ता । तस्मात् दहदशौ इष्टरेखे भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

दशं पूर्णज्या कल्पिता । हश्गरेखा संयो-ज्या । तत्र देहवर्गदश्चवर्गयोर्निष्पत्तिर्द्वयोर-

क्यो । तत्र दहवगद्भवगयानिषात्तद्वयार-क्रयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । वर्गराश्योर्निष्पत्तौ न स्तः । तसादेतदेसाद्वयं केवलमिलितवर्गो भविष्यति । पुनर्दहरेसावर्गोऽङ्कसंज्ञाहोऽस्ति । त-सात् दश्मप्येवं भविष्यति । पुनर्दहवर्गो दश्चवर्गह्भवर्गयोगतुल्यो-ऽस्ति । तदा दहवर्गस्य ह्झवर्गेण निष्पत्तिस्तथा भविष्यति यथा अब-बजाङ्कवर्गराश्योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् ह्झं दहेन मि-लितं भविष्यति । कुतः।यतोऽनयोर्वर्गौ द्वयोरङ्कयोर्वर्गयोर्निष्पत्तौ स्तः। तसाह्ने रेसे इष्टे जाते ॥

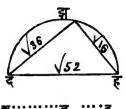
अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

तादृशरेखाद्वयस्थोत्पादनिमष्टमित यथोर्वर्गावङ्कसंज्ञाहीं भवतः पुनः केवलवर्गीं मिलिती यथा भवतः । पुनर्बृहद्देखा-वर्गो लघुरेखावर्गस्य महद्रेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति ।

१ द्हद्शवर्गयो° J. भा॰ ११

ययोर्वगराज्योयोंगो वर्गो न भवति तौ अजबजौ राज्ञी कल्पितौ।

पुनर्देहरेखा अङ्कसंज्ञार्हा कल्पिता। शेषमुपरि-तनक्षेत्रोक्तवत कार्य यथा दझरेखोत्पना भ-वति । तसात् दहदझरेखे इष्टे भविष्यतः । कुतः । अनयोर्वर्गौ अवअजाइयोर्निष्पत्तौ स्तः । सा निष्पत्तिर्वर्गनिष्पत्तिसदृशी नास्ति । तसात्ती केवलवर्गमिलिती भविष्यतः। दह्म



अइसंज्ञार्हमस्ति । तसात् दश्नवर्गोऽइसंज्ञार्हो भविष्यति । अबवज-योर्निष्पत्तिर्वर्गद्वयनिष्पत्तिनीस्ति । दहृहञ्चवर्गी तस्यां निष्पत्तौ स्तः। तसात् दहवर्गो दश्ववर्गस्य तद्रेसाभिन्नान्यरेसावर्गस्य च योगेन तु-ल्योऽस्ति।यथेष्टं कल्पितं तथा सिद्धम् । अस्य क्षेत्रमुपरितनवद्बोध्यम् ॥

अथ पहविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥

अत्र तथा मध्यरेखाद्वयोत्पादनमिष्टमस्ति ययोर्वगौं केव-लिमिलितौ मवतः। रेखे चाङ्कसंज्ञाहैंकक्षेत्रस्य भुजौ भवतः। पुनरधिकरेखावर्गी लघुरेखावर्गस्य मिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति।

अबरेखे तथा कल्पिते यथा अवर्गी बरेखावर्गस्य अरेखामिलितान्य-

रेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति । अनयो-र्मध्ये एका रेखा मध्यनिष्यती निष्कास्या। सा जरेखा कल्प्या । एताभ्योऽन्या चतुर्थी अस्यां निष्पत्तौ निष्कास्या । सा दरेखा कल्पिता । तत्र जदरेखे मध्यरेखे जाते । अनयोर्वर्गी

केवलमिलितौ भविष्यतोऽइसंज्ञाईक्षेत्रस्य च भुजौ भविष्यतः । अइसं-ज्ञाईक्षेत्रस्य च भुनौ भविष्यतः । अनयोर्जवर्गो दवर्गजमिलितरेखा-

⁹ D. inserts प्रकारेण before कार्य. २ क्षेत्रं पूर्वोक्तमेव बोध्यम् । J. ३ तत्र J.

वर्गोक्तवर्गयोगतुल्यो भविष्यति । यत एतौ अवयोर्निष्यत्तौ स्तः। इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

तत्र तथा मध्यरेखाद्वयिमष्टमित ययोर्वर्गी केवलिमिलिती स्तोऽह्सांज्ञाईक्षेत्रस्य भुजी स्तः । अधिकरेखावर्गी लघुरेखा-वर्गस्य च्हद्रेखाभिन्नरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति ।

पुनर् अबरेसे तथा कल्प्ये यथा अवर्गो बवर्गस्य अरेसाभिन्नान्य-रेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति । रोषं पूर्वोक्तवत् ज्ञेयं ॥

अथाष्टार्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

तत्र तथा मध्यरेखाद्वयोत्पादनमिष्टमस्ति यथा द्वे मध्यरेखे केवछवर्गमिछिते मध्यक्षेत्रस्य च भुजौ भवतोऽधिकरेखा-वर्गो छघुरेखावर्गस्य च महद्रेखामिछितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति।

अवजास्तिसो रेसास्तथा कल्प्या यथा अवर्गी जैवर्गस्य अरेसा-

मिलितान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो म-बति । अबमध्ये दरेसा मध्यनिष्यत्तौ क-ल्पनीया । पुनर्हरेसान्या तथा तुल्या यथा दहनिष्यत्तिः अजनिष्यत्तितुल्या भवति । तसात् दही इष्टमध्यरेसे भविष्यतः ॥

eī ⊢	√64	
द⊢	₩3072	_
₹ ⊢	√48	_
ह⊢	\$ 2268 %	1
	<u> </u>	1
ज⊢	√55	

अथोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

द्वे मध्यरेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रभुजौ यथा भवत-स्तथा कल्पनीये । पुनरधिकरेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य बृह-द्रेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुँल्यो यथा भवति ।

[?] तत्र तथा अवजास्तिक्षो रेखा कल्प्या यथा J. २ ज्ञवर्गश्चरेखामिलितरेखा-वर्गबोगतुल्यो J. ३ D. inserts the words तस्या निष्पत्तिः अरेखया तथा भविष्यति यथा अज्ञरेखयास्ति । after भवति । ४ तुल्योऽस्ति J.

अस्य प्रकारस्त्वनन्तरोक्तक्षेत्रवत् ज्ञेयः । विशेषस्तु अवर्गो जवर्गस्य अरेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्योऽस्ति ॥

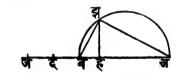
अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

ताहरारेखाद्वयोत्पादनमिष्टमस्ति ययोरेखयोर्वगौँ मिथो भिन्नौ स्तो वर्गयोगश्चाङ्कसंज्ञाहीं भवति रेखयोर्घातो द्विगुणो मध्यक्षेत्रं भवति ।

पुनर् अबबजो द्वे रेखे कल्पिते । तत्र अबवर्गो बजवर्गस्य अबरे-सामिन्नान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति । अबरेसोपरि अझब-वृत्ताद्वे कार्यम् । बजवर्गस्य चतुर्थोश्चतुल्यं क्षेत्रम् अबरेसासण्डोपरि तथा कार्ये शेषसण्डस्य क्षेत्रं यैथा वर्गरूपं भैवेत् । अस्या अबरेसाया इचिद्वोपरि विमागद्वयं भैविष्यति ।

पुनर्हिचिहात् हझलम्बो निष्कास्यः । पुनर् अझझबरेसे संयोज्ये । एते इष्टरेसे भविष्यतः । कुतः । अझझबयोर्निष्पत्तिः अहहझयो-

निष्पत्तितुल्यास्ति । हझहबयोरपि निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अझ-झबवर्गनिष्पत्तिः अहहबभिन्नरे-स्रयोर्निष्पत्तेस्तुल्यास्तीति । त-



सात् अश्रश्नवयोर्वर्गी भिन्नी भविष्यतः । अनयोर्वर्गी अवअङ्कसंज्ञा-हृवर्गेण समानी स्तः । तसादनयोर्वर्गयोगोऽप्यङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति । अहहवयोर्घातो हृश्नवर्गतुल्योऽस्ति । बद्दवर्गस्य तुल्य आसीत् । बद्दवर्गश्च बजवर्गचतुर्थाशोऽस्ति । तसात् हृश्नवर्गी बद्दवर्गसमानो भविष्यति । पुनर् अवअश्मयोर्निष्पत्तिर्श्ववश्चहयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति ।

⁹ J. has तत्र in the beginning. २ A and J. have बबा after कार्य. ३ Omitted in A and J. in which it is used before. ४ मनति A., J. ५ रेखना J. ६ करियाति D.

तसात् अझझबघातः अबबद्धाततुल्यो भविष्यति । तसात् अझ-झबद्विगुणघातः अबबजमध्यक्षेत्रेण समानो भविष्यति । इदमेवा-साकमिष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

तत्र तादृशरेखाद्वयस्योत्पादनिमृष्टं ययो रेखयोर्वगौं भिन्नौ भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भवति । तयोर्घातो द्विगुणो-ऽक्कसंज्ञाहीं भवति ।

तत्र तथा मध्यरेखे अबबजे कल्पिते। अनयोर्वर्गी केवलमिलितो।
एतावइसंज्ञाईक्षेत्रस्य भुजौ भवतः। एकस्या वर्गो द्वितीयरेखावर्गस्य
तदन्यभिन्नरेखावर्गस्य च योगेन
समानो भवति तथा कल्पनीयः।

पुनरनयो रेखयोरुपरि पूर्वोक्त-प्रकारेण तथा क्षेत्रं कार्य यथा अझझबे इष्टरेखे उत्पन्ने भवतः।

अझझबे इष्टरेखे उत्पन्ने भवतः। अनयोर्वगी अहहबभिन्नरेखावर्गनिष्पत्ते स्तर्ससाद्भिन्नो जातौ। अन-योर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रं कुतो जातम्। यतोऽनयोर्वर्गी अवमध्यवर्गयो-स्तुल्यो स्तः। अनयोद्धिगुणो घातोऽइसंज्ञार्हः कथम्। अवबज्ञघातक्षे-

त्रस्याङ्कसंज्ञीर्हस्य तुल्यत्वात् । इदमेवेष्टं । क्षेत्रमुपरितनवत् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

तत्र तादृशरेखाद्वयोत्पादनिमष्टं ययोर्वर्गी भिन्नी स्तः । तयोर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रं भवति । तयोर्द्विगुणो घातो द्विगुण-प्रथममध्यक्षेत्रं भवति । तयोद्विगुणो घातो द्विगुणप्रथममध्य-क्षेत्राद्विन्नं वा मध्यक्षेत्रं भवति ।

१ मिविष्यतः J. २ पूर्वकमप्रकारेण क्षेत्रं A. ३ व्होंऽस्ति **अववज** J. ४ व्हेंतुस्थत्वात् J.

तत्र द्वे मध्यरेखे अबबजे कल्पिते। अनयोर्वर्गी केवलमिलिती भ-वतः। रेखे च मध्यक्षेत्रस्य भुजौ भवतः। एकस्या वर्गी द्वितीयरेखा-वर्गस्य प्रथमरेखामिन्नान्यरेखाव-र्गस्य च योगेन तुल्यो भवतीति कंल्पिते। अनयोरुपरितनप्रकारे-णैव अझबझे इष्टरेखे उत्पाधे। ज दं ब ह

अनयोर्वर्गी भिन्नी भवतः । अन-

योर्योगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भैवतीति पूर्वोक्तप्रकारेणैव श्रेयः । अनयोः अश्वब्रश्योद्विगुणो घातो मध्यक्षेत्रम् । कुतः । अबब्रजघातमध्यक्षेत्रतुल्योऽस्ति । ततो मध्यक्षेत्रं प्रथममध्यक्षेत्रात् भिन्नं कुतोऽस्ति । यसा-दब्बजी भिन्नो सः । अनयोभिनत्वात् । अबवर्गः अबब्रजघातश्च भिन्नो भविष्यति । इदमेवेष्टम् । क्षेत्रं पूर्ववत् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥

ययोभिन्नरेखयोर्वगीवङ्कसंज्ञाहीं भैवतस्तयोर्योगतुल्या या रेखा सा करणीगता भविष्यति । इयं रेखा योगजारूयोच्यते ।

यथा अजरेसा अववजयोगोत्पन्ना करणीरूपा भवति । तयो-

द्विगुणघातोऽइसंज्ञाईवर्गयोगात् भिन्नो भविष्यति । अनयोर्भिन्न-

भ ब ज

त्वात् । तसात् अस्य अजस्य वर्गो द्वाम्यां वर्गाभ्यां भिन्नो भविष्यति । तसादियं करणीगता भविष्यति ॥

अथ चतुर्स्तिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

ययोर्भध्यरेखयोः केवलवर्गी मिलिती भवतोऽक्कसंज्ञाईक्षे-त्रस्य द्वी भुजी भवतस्तयो रेखयोर्योगतुल्या या रेखा भवति सा करणीरूपा भविष्यति । इयं प्रथममध्ययोगरेखोष्यते ।

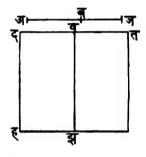
९ मिष्यतीति J. २ कल्पते A. ३ भविष्यतीति J. ४ मध्यक्षेत्ररूपो जातः । अवस्यज्ञघातरूपस्य मध्यक्षेत्रस्य तुस्यत्वात् । A. ५ J. inserts मिषः before मिष्रो. ६ भविष्यतः J. ७ १ स्थास्ति J.

यथा अवबजयोगोत्पना अजरेखा करणीरूपास्ति । अनयोर्भि-न्नत्वादनयोर्द्विगुणघातोऽप्यनयोर्वर्ग-योगात् भिन्नो भविष्यति । तसात् ज रेखावर्गो द्विगुणघाताद्विन्नो भविष्यति । तसादियं करणीरूपा भविष्यति ॥ अथ पश्चित्रं शत्मां क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

ये मध्यरेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रस्य भुजरूपे स्तस्तदा तयोर्योगतुल्या या रेखा सा करणीरूपा भविष्यति । इयं च द्वितीयमध्ययोगरेखासंज्ञा ज्ञेया ।

यभा अजरेला अवबजयोगोत्पनास्ति । दहरेलाइसंज्ञाही

किल्पता। अस्या उपिर अबवर्गबजवर्गयो-गतुल्यं दशक्षेत्रं कार्यम्। द्वयोद्धिंगुणघात-तुल्यं शतक्षेत्रं च कार्यम् । तदैते भिन्ने भविष्यतः । रेखयोभिन्नत्वात् । तसात् दववतरेले भिन्ने भविष्यतः। अनयोर्वर्गा-बद्धसंज्ञाहीं भविष्यतः। तसात् इतं योग-रेखा भविष्यति। दहम् अद्भसंज्ञाहेरेला म-



विष्यति । तसात् इतक्षेत्रं करणीरूपं भविष्यति। तसात् अजरेला क-रणीरूपा भविष्यति ।

अंथ पट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥

यदि द्वयो रेखयोर्वर्गी भिन्नो भवतो वर्गयोगश्चाङ्कसंज्ञाहीं भवति तयोद्धिगुणघातो मध्यक्षेत्रसंज्ञको भवति तद्योगतुल्या या रेखा सा करणीक्षा भविष्यति । इयमधिकरेखासंज्ञा ।

यथा अजरला अबबजयायागा-		
त्पन्ना स्यात् । अस्या विचारः क्षेत्रं च	भ ब	 স
पूर्ववत् श्रेयं ॥		

९ षद्त्रिशं J.

अथ सप्तित्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७ ॥

ययो रेखयोर्वर्गी भिन्नी भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भ-वति द्विगुणघातोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति तद्रेखाद्वययोगतुल्या या रेखा भवति सा करणीगता भविष्यति । अस्या वर्गी-ऽङ्कसंज्ञाहरेखामध्यरेखयोर्वर्गयोगतुल्योऽस्ति ।

यथा अववज्ञयोगोत्पन्ना अजरेसास्ति । अस्याः क्षेत्रं विचारश्च पूर्ववत् ज्ञेयम् ।

अथौष्टत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८॥

ययोर्वगौं भिन्नौ भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भवति तद्दिगुणितघातो मध्यक्षेत्रं भवत्यनयोर्वगयोगमध्यक्षेत्रं द्विगुणघातमध्यक्षेत्राद्विन्नं भवति तदा तयो रेखयोर्योगतुल्या या
रेखा भवति सा करणीरूपा भवति । अस्या वर्गो मध्यरेखाद्वयवर्गयोगतुल्यो भवति ।

यथा अजरेला अववजयोगोत्पन्नास्ति । अस्या विचारः क्षेत्रं च पूर्वोक्तवत् ज्ञेयम् ॥

अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥ योगरेखाया योज्यखण्डे एकचिह्ने भवतः ।

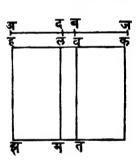
र्यं बन्यसिक्षिहे भवतस्तदा तिच्चहं दं किल्पितम् । अववज-वर्गयोगअदद्जवर्गयोगान्तरिषद्मक्कसंज्ञार्हरूपम् । द्विगुणअववज-घातिद्विगुणअदद्जघातयोरन्तरं द्व-योर्भध्ययोरन्तररूपमस्ति । तस्मादन्तर- अ दं वं जं मक्कसंज्ञार्हे करणीरूपं च भविष्यति । इदमग्रुद्धम् । इष्टं समीचीनम् ॥

९ सप्तिष्ठिशं J. २ पूर्वोक्तवत् K. ३ अथाष्टात्रिशं J. ४ °रेखा J. ५ A. inserts यथा योगरेखा अर्ज अववज्ञे खण्डे एते बन्धि एव मवतः । ६ J. has तस्युनाधिके यदि &c. ७ J. has इष्टम् for इदम्.

अथ चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४० ॥ प्रथममध्ययोगरेताया अपि योज्यत्तण्डे एकचिह्ने भवतो नान्यत्र ।

अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४१ ॥ द्वितीयमध्ययोगरेखाया योज्यखण्डे एकचिहे भवतः । यबन्यत्र सात्तदा दविहं कल्पितम् । तत्र हझरेखाइसंज्ञाही

कल्पिता । अस्या उपिर अवबजयोर्वर्ग-योगतुत्यं झवक्षेत्रं कार्यम् । अनयोद्विगुण-वाततुल्यं कतं क्षेत्रं कार्यम् । तसात् हक-रेखाया विच्होपिर द्वौ विभागौ स्तः । तसादियं योगरेखा भविष्यति । पुन-र्ह्झरेखोपिर अदद्जवर्गयोगतुल्यं झल-क्षेत्रं कार्यम् । तत्र मकक्षेत्रं द्वयोर्घातयो-

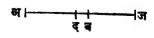


र्द्विगुणतुल्यं भविष्यति । तसात् इकरेलाया लचिहे विमागद्वयं जातम् । इयं योगरेला भविष्यति । इदमगुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ द्विचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४२ ॥

अधिकरेखाया अप्येकिचिहे एव खण्डद्वयं भविष्यति नान्यत्र।

यबन्यत्र भवति तदा दिचिहं कल्पि-तम् । पूर्वोक्तमकारेणैवात्रानुपपत्तिर्ज्ञेया ॥



अथ त्रिचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४३ ॥

अक्कसंज्ञाहरेखावर्गमध्यरेखावर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तस्या अपि योज्यखण्डे एकचिह्ने भवतः ।

यद्यन्यत्र भवतस्तदा दिचिह्नं कल्पि-तस्। पूर्वोक्तप्रकारेणात्राप्यनुपपत्तिर्ज्ञेया ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४४ ॥

द्वयोर्मध्यरेखयोर्वर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तस्या रेखाया अपि योज्यखण्डे एकचिह्ने एव भविष्यतो नान्यत्र।

अथ शेषक्षेत्राणां परिभाषा प्रथमं लिख्यते ॥

योगरेस्नाया महत्त्वण्डवर्गो छघुस्वण्डवर्गस्य बृहद्रेस्नामिलितान्यरे-स्नावर्गस्य च योगेन तुत्यो भवति पुनर्महत्स्वण्डं चेदिष्टसंज्ञाहरेस्नामिलितं भवति तदा सा प्रथमयोगरेसोच्यते ।

यदि तत्र लघुखण्डरेखावर्ग इष्टसंज्ञार्हरेखामिलितो भवति तदा सा द्वितीययोगरेखामिषा भवति ।

यदि खण्डद्वयस्य वर्गी केवलाइसंज्ञाहीं भवतस्तदा तृतीययोगरेखा-संज्ञका भवति ।

यदि महत्त्वण्डवर्गो लघुस्वण्डवर्गस्य महत्त्वण्डभिन्नान्यरेस्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति पुनर्महत्त्वण्डं चेद्द्वसंज्ञाई स्यात्तदेयं चतुर्थी योगः संज्ञा रेस्ना भवति ।

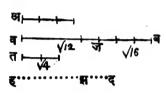
यदि च लघुसण्डमइसंज्ञाई भवति तदा पश्चमी योगसंज्ञा रेखा भवति ।

^{9.} अङ्गरंज्ञाईमध्यरेखावर्गयोगतुस्यो J.

यदि द्वे खण्डे केवलवर्गसंज्ञाहें भवतस्तदा षष्ठी योगसंज्ञा रेखा मवति ॥

अथ पश्चचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४५ ॥ तत्र प्रथमयोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।

तत्र प्रथमं अरेखा इष्टसंज्ञाही कल्प्या । पुनस्तन्मिकता बज्जरेखा कल्पिता । द्वी वर्गराश्यक्की दहदझी तथा कल्प्या यथाऽनयोरन्तरं झहं वर्गराशिर्न भवति। पुनर्बजवर्गजवन-र्गयोर्निष्पत्तिर्दह्रझहनिष्पत्तितुल्या क-ल्पिता । तसात् बवं प्रथमयोगरेखा भविष्यति ।



अस्योपपत्तिः ।

बर्जं महत्खण्डमङ्कसंज्ञार्हमिता । जवखण्डमसाद्भिनमिता । केवलं मिलितवर्गो भवति । वर्गश्चाऋसंज्ञाहोऽस्ति । बजवर्गजववर्गयोरन्तरं त्तवर्गतुल्यं भवतीति कल्पितम् । तसात् बजवर्गजवर्गयोरन्तरं तवर्ग-तुल्यं भवतीति कल्पितम् । यसात् बजवर्गतवर्गयोनिष्पत्तिदेहदश्-योर्निष्यत्तितुल्या भविष्यति । तसात् तं बजेन मिलितं भविष्यति । बजवर्गोऽपि जबवर्गतवर्गयोगत्रत्यो भविष्यति ।

अथ षदचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४६ ॥ तत्र द्वितीययोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।

प्रथमिष्टसंज्ञाही अरेखा कल्पिता । तन्मिलिता जबरेखा कल्पि-ता । द्वावद्रो पूर्ववत् कल्प्यौ । जबज-ववर्गयोर्निष्पत्तिक्रहदृहनिष्पत्तितुल्या क-ल्पिता । तसात् बवं द्वितीययोगरेसा भविष्यति ।

	
व 	जे 🗸 । ब
₹	म ···द

^{9.} कल्पिती D.

अस्मोपपत्तिः ।

जबं लघुसण्डमद्वसंज्ञाईमिस्त । वजस्य केवलवर्गोऽद्वसंज्ञाहींऽस्ति । वजमहत्सण्डस्य वर्गो जववर्गस्य वजिमिलितरेसावर्गस्य च योगेन तुस्योऽस्ति । क्षेत्रं च पूर्ववत् श्रेयम् ॥

अय सप्तचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४७ ॥

तत्र तृतीययोगरेखोत्पादनमिष्टम्।

तत्र प्रथमिष्टसंज्ञाहरेला अकल्पिता । द्वी वर्गरास्यद्वी झवझती कल्पिती । अनयोरन्तरं वर्तं यथा

कल्पितो । अनयोरन्तरं वर्तं यथा वर्गो न भवति तथा कार्यो । अन्याक्को हं कल्पितः । अयं वर्गराश्चिनीस्ति । पुनरस्य निष्पचिर्वतेन वर्गराश्योर्निष्प-चिर्न भवेचथा कल्प्या । पुनर् अरे-

वाम	YIE.	4	
q I	VIG	& VA	⊸ 3
	**		
त∵ इ⋯	•••••	'व' ''श	

सावर्गनिष्पत्तिर्वदवर्गेण तथा कल्प्या यथा हस्य निष्पत्तिकृतिनासि । बद्वर्गस्य निष्पतिर्देजवर्गेण तथास्ति यथा इतिनिष्पत्तिर्वतेनासि । तसात् बजं तृतीययोगरेसा जाता ॥

अस्योपपत्तिः ।

बजलण्डे अरेलाभिने स्तः । लण्डयोर्नगिवद्वसंज्ञाहीं स्तः । बह्वगीं दजरेलावर्गबद्देलामिछितकरेलावर्गयोगतुल्योऽस्ति । कुतः । बह्वगीः कवर्गश्च झतझवनिष्पत्तावस्ति ॥

अथाष्टचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४८ ॥ तत्र चतुर्थयोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।

प्रथमयोगरेस्रोक्तप्रकारोऽत्रापि कार्यः। विशेषस्तु दशसहौ द्वी वर्ग-

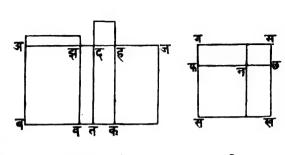
१. प्रथममङ्गरं° J.

राशी तथा कल्प्यी यथैतय	j-
र्योगो वर्गराशिन भवति । तसा	त् व ज
बजवर्गी जववर्गवरेखाभिनत	•
वर्गयोर्योगतुल्योऽस्ति । कुतः	T
यतो वजनर्गतवर्गी दहदश्रयो	
अर्थैकोनपञ्चार	गत्तमं क्षेत्रम्॥ ४९॥
तत्र पश्चमयोगरेखोत्पार	
तत्र द्वितीययोगरेखोक-	
प्रकारोऽत्र कार्यः । परं च	4
दहझहराशी चतुर्थयोगरेखो-	
कवत्कार्यो ।	€ श €
अथ पञ्चाहार	तमं क्षेत्रम्॥ ५०॥
तत्र पष्टयोगरेखोत्पादन	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	ાનદત્ત્
तत्र ब्रितीयरेसोक्तवस्र-	3
कारः कार्यः । द्वावद्वराची	
चतुर्थरेस्रोक्तवत्कार्यो । इद-	a
मेवासाकमिष्टम् ॥	ह झ द
अथैकपश्चारा	तमं क्षेत्रम् ॥ ५१ ॥
तत्रैकक्षेत्रस्यैको भुजोऽ	क्क्संज्ञाहों भवति द्वितीयभुजः
प्रथमयोगरेखा भवति तत्र	यस्या रेखाया वर्ग एतरक्षेत्रफड-
तुस्यो भवति सा योगरेखा	भवति ।
यथा बजक्षेत्रम् । एक अ	इसंज्ञार्हः अवभुकः। द्वितीयः प्रका-
योगरेला अजभुनः । अजस्म	दिनहे ही विमागी कल्पनीयी यथा
अदं महत्त्वण्डं देजं न्यूनलण्ड	इं च कल्पितं भवेत्।
पुनर्दजं इचिहेऽदितं कार्य	म् । पुनर्देष्ट्यर्गो दजवर्गचतुर्थाशतुत्यः
	15 1 12 MAN ALAN

१. **दर्ज** च न्यूनसण्डं J.

Digitized by Google

अदस्यैकसण्डो-परि तथा कार्यो यथा शेषसण्ड-क्षेत्रं वर्गतुस्यम-विशिष्यते । त-सात् अदरेसा-या अचिडोपरि



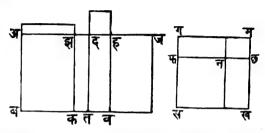
सण्डद्वयं भविष्यति । अझझदौ मिलितौ मविष्यतः । पुनर्झवदतहः करेसा अबरेसायाः समानान्तराः कार्याः । पुनर् अवसेत्रतुत्यं सन-क्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । वदक्षेत्रतुर्वं मनं समकोणसम-चतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । गखक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं संपूर्णे कार्यम्। सनसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस निष्पत्तिनगक्षेत्रेण सफफगनिष्पत्ति-रूपा फननछनिष्पचिरूपनगनमक्षेत्रनिष्पचितुत्यास्ति । तदा नगक्षेत्रं सनक्षेत्रनमक्षेत्रयोर्मध्ये एकनिष्पत्तौ पतिष्यति । तदा अववदयोर्म-ध्येऽप्येकनिष्पत्तौ पतिष्यति । तहस्रेत्रं द्वयोर्भ^{ध्}ये एकनिष्पत्तावासीत् । कुतः । अझदहनिष्यत्तिदेहझदनिष्यत्तितुल्यास्ति । तसात् नगतहौ समानी मविष्यतः । तसात् वजं गखतुल्यं भविष्यति । तसादस्य भुजो योगरेखा मविष्यति । कुतः । अझझदौ अदेन मिलिताव**इ**-संज्ञाहीं स्तः । तसात् अववदी सननमतुत्यावद्गसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् सफफगवर्गावइसंज्ञाहीं भविष्यतः । पुनर् अववदी अइ-संज्ञाहीं । तहहलमध्यक्षेत्राभ्यां भिन्नी स्तः । तसात् सननगी भिन्नी भविष्यतः । तैंसात् सफफगौ मिन्नौ भविष्यतः । तसात् बजतुल्यो बस्या रेखाया वर्गः सा सगरेखा योगरेखा भविष्यति ॥

अथ द्विपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५२ ॥ यस्य क्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयो भुजो

१. °क्षेत्रस्य J. २. °मंध्येऽप्येकनि° J. ३. °मंध्येऽप्येकनि° J. ४. तस्मात् सर्गं योगरेका मिष्यति । D., K.

हितीययोगरेखा भवति यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा प्रथममध्ययोगरेखा भविष्यति ।

यथा बजक्षेत्रम् अबम् अइसंज्ञाहीं मुजः अजं द्विती-ययोगरेखामुजश्च कल्प्यः ।



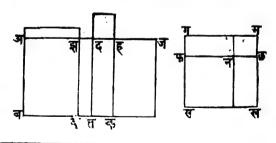
उपरितनप्रकारवत्कार्यम् । परं च अवक्षेत्रवद्क्षेत्रे मियो मिछिते मध्यक्षेत्रे भविष्यतः । अतमध्यक्षेत्रेण च मिछिते भविष्यतः । दककजी अञ्चसंज्ञाईक्षेत्रे भविष्यतः । तस्मात् सनमनौ मिछितमध्यक्षेत्रे भविष्यतः । तस्मात् सफफगौ केव-ष्यतः । नगनस्वक्षेत्रे अञ्चसंज्ञाई भविष्यतः । तस्मात् सफफगौ केव-रूमध्यमिछितवर्गी अञ्चसंज्ञाईनगक्षेत्रस्य भुजौ भविष्यतः । तस्मात् सगरेसा प्रथममध्ययोगरेसा भविष्यति ॥

अथ त्रिपश्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५३ ॥

एकक्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञार्हरेखा द्वितीयभुजश्च तृतीय-योगरेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा द्वितीयमध्ययोगरेखा भविष्यति ।

तेत्र क्षेत्रं द्वौ भुजौ चोपरितनोक्तवत्कल्प्यं तदुक्तवत्। कार्यं च।

परं च अववद-क्षेत्रे मध्यमिलिते मविष्यतः । द-ककजी च मध्यी मविष्यतः । अतं च तजाद्विसं भ-



^{9.} भविष्यति J. २. तत् क्षेत्रं J.

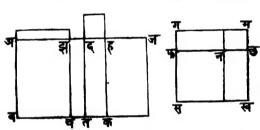
विष्यति । तसात् सवनमसेत्रे मध्यमिकिते मविष्यतः । नगमस्य-क्षेत्रे च मध्यमिने भविष्यतः । तसात् सफफगे वध्यकेवस्रवर्गमि-स्रिते भुजौ नगमध्यकेत्रस्य भविष्यतः । तसात् सगं द्वितीयमध्ययो-गरेसा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ चतुःपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५४ ॥

एकक्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहीं द्वितीयो भुजर्अंतुर्थी यो-गरेखा । अस्य वर्गतुल्यो भुजोऽधिकरेखास्ति ।

अस विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ज्ञेयम् । विशेषस्त असमदौ

भिनो भविष्यतः । अतक्षेत्रं सनब-मयोगतुस्यमद्वसं-ज्ञाई भविष्यति । तजक्षेत्ररूपो न-गनस्वयोगो मध्यो



मिनवर्गी मिनवर्गी मिनवर्गी मिनवर्गी मिनवर्गी मिनवर्गी गिनवर्गाः । द्वयोर्वर्गयो-गोऽइसंज्ञाहीं मिनव्यति । द्विगुणघातो मध्यो मिनव्यति । तस्मात् सगम् अधिकरेसा मनिष्यति ॥

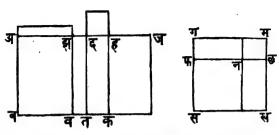
अथ पञ्चपश्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५५ ॥

क्षेत्रस्यैकमुजोऽक्कसंज्ञाहीं भविष्यति द्वितीको पश्चमयोग-रेखा भवति । ऍतत्तुल्यो यस्या रेखाया वर्गः सोऽक्कसंज्ञाई-रेखावर्गमध्यरेखावर्गयोगतुल्यो भवति ।

अस्यापि प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् छेर्यंम् । परं चात्र अशसदौ

J. drops मुजः.
 A. has चतुर्थयोगरेखा.
 अतिष्वति A., J.
 एतस्क्षेत्रतुस्यो J.
 प. विचारः J.
 इ. बोष्यम्.

भिनौ भवतः । अतस्त्रेत्ररूपः सननमयोगो मध्यो भवति । तजक्षेत्ररूपो नगनस्ययो-



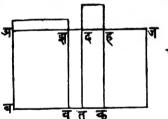
गोऽइसंज्ञाहीं भवति । तसात् सफफगौ भिन्नवर्गी भविष्यतः । अनयोर्योगो मध्यो भैवति । द्विगुणघातोऽइसंज्ञाहों भविष्यति । तसात् सगवर्गोऽइसंज्ञाईमध्ययोगतुल्यो भविष्यति ॥

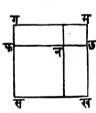
अथ पर्पञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५६ ॥

क्षेत्रस्यैकमुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयश्च पष्टी योगरेखा भवति । अस्य तुल्यो वर्गी मध्यद्वयवर्गयोगतुल्यो भवति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । अपरम् अझझदौ भिन्नौ भ-

विष्यतः । अत-क्षेत्ररूपसननमी मध्यौ भवतः । तज्ञक्षेत्ररूपनग-नस्तौ मध्यौ भ-वतः । पूर्वसात्





मध्याद्भिन्नो भवतः । तसात् सफफगौ भिन्नवर्गी भवतः । अनयो-र्वर्गयोगो मध्यो भविष्यति । द्विगुणघातो मध्यो भविष्यति । प्रथमा-द्भिनक्ष । तसात् सगवर्गो मध्यद्वययोगतुत्यो भविष्यति । ईैदमिष्टम् ॥

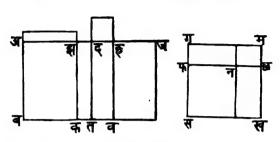
अथ सप्तपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५७ ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां योगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं भवति । तदा द्वितीयो मुजः प्रथमयोगरेखा भविष्यति ।

^{9.} मविष्यति J. २. भिन्नी वर्गी J. ३. इदमेवेष्टम् J. भा॰ १३

अबयोगरेसाया जिचेहे द्वे सण्डे कल्पनीये । पुनर्दहअइसंज्ञाई-

रेसायां अबन-गीतुल्यं हझसेत्रं कल्प्यम्।तसात् दहरेसाया द्वि-तीयो भुजः पथ-मयोगरेसा भवि-



ष्यति । अजवगां हवक्षेत्रतुत्यो जबवर्गस्तकक्षेत्रतुत्यः केल्प्यः । शेषं ल्राम् अजजबद्विगुणघाततुत्यमविश्यते । कर्म् मिन्होपि अर्द्धे कार्यम् । पुनर्दहसमानान्तरा मनरेखा कार्या । तत्र अजजववर्गयोग्गोऽइसंज्ञाहींऽस्ति । तसात् हकक्षेत्रमइसंज्ञाही अविष्यति । दकम् अइसंज्ञाहींऽस्ति । तसात् हकक्षेत्रमइसंज्ञाही अविष्यति । अजजवघातो मध्योऽस्ति । तसात् ल्र्मं मध्यो भविष्यति । कर्मं केवलवर्गाकसंज्ञाहीं भविष्यति । दहिमिन्नो भविष्यति । अजजववर्गयोगः अजजबद्धि-गुणघातादिषकोऽस्ति । तसात् दकं क्रमादिषकं भविष्यति । अजजबवर्गयोगः अजजबद्धि-ज्ञणघातादिषकोऽस्ति । तसात् दकं क्रमादिषकं भविष्यति । अजजबवर्गयोर्मध्यनिष्यति । कर्मं दववकयोर्मध्यनिष्यति । कर्मं दत्तत्कयोर्मध्यनिष्यति । कर्मं दववकयोर्मध्यनिष्यति । कर्मं दववकयोर्मध्यनिष्यति ।

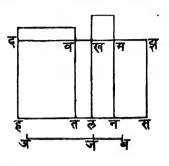
पुनर्दवकमनिष्यत्तिः कमवकनिष्यत्तितुत्यास्ति । पुनः कझवर्गच-तुर्थोशरूपः कमवर्गो दके कार्यः । तदा दकं विचिहे मिलितविमागं भवति । तसात् दकवर्गः कझवर्गस्य मिलितान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । इदिमष्टम् ।

अथाष्ट्रपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५८ ॥ अङ्कसंज्ञाहरेखायां प्रथममध्ययोगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तदा द्वितीयो भुजो द्वितीययोगरेखा भवति ।

१. कार्यः A. २. अधितं A. ३. अस्ति A. ४. संझाई भवति J.

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत् ज्ञेयः । अत्र हकं मध्यो भविष्यति । अज-

जबवर्गयोगो हवतकरूपो मध्यमिलि-तौ भवतः । कुतः । अजजवयोरङ्ग-संज्ञाहित्वात् । तसात् दकक्ष्मो के-वलवर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । क्ष्मम् अङ्कसंज्ञाहमस्ति । तसाद् दकवर्गः कक्षवर्गमिलितरेखावर्गयोगेंगतुत्यो म-विष्यति । कुतः । दववक्रयोमिलित-



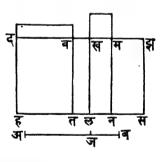
त्वात् । तसाइझं द्वितीययोगरेखा भविष्यति ॥

अथैकोनपष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ५९ ॥

अङ्कसंज्ञाईरेखायां द्वितीयमध्ययोगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्ये द्वितीयभुजस्तृतीययोगरेखा भविष्यति ।

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत्। परं हकम् अत्र मध्यो मविष्यति। यतः अज-

जबवर्गी मध्यमिलिती साः । लझं मध्यो हकाद्विनो भविष्यति । अ-जजबयोर्भिन्नत्वात् । तसात् दककझे वर्गावद्वसंज्ञाहीं भैविष्यतः । मिश्रो भिन्नो दहादपि भिन्नो भविष्यतः । दकवर्गः कझमिलितरेसावर्गयोर्थाग-तुल्यो भविष्यति । दववकयोर्मिलित-



त्वात् । तसात् दझं तृतीया योगरेसा भविष्यति ॥

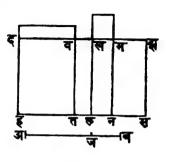
अथ षष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६० ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायामधिकरेखाया वर्गतुल्यं क्षेत्रं यद् भ-वति तदुत्पन्नो ब्रितीयभुजश्चतुर्थी योगरेखा भवति ।

^{9.} J. omits भविष्यत:.

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत्। परमत्र द्ववको भिन्नो भविष्यतः।

अजजबवर्गयोभिन्नत्वात् । इकम् अक्रसंज्ञार्हमस्ति । कृतः । अजज-वयोर्वर्गयोगस्याक्रसंज्ञार्हत्वात् । स्रझं मध्यमस्ति । तसात् दकक्रझयोर्वर्गा-वक्रसंज्ञार्ही मविष्यतः। दकम् अक्रसं-ज्ञार्हमस्ति । अस्य वर्गः क्रझवर्गदक-भिन्नरेस्नावर्गयोयोगतुल्योऽस्ति । दव-



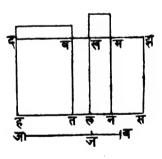
वक्तयोर्भिन्नत्वात् । तस्माह्रम् चतुर्थी योगरेला मविष्यति ॥

अथैकषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६१ ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायामङ्कसंज्ञाहरेखामध्ययोगवर्गतुल्यं क्षेत्रं यदा भवति तदा द्वितीयो भुजः पश्चमी योगरेखा भविष्यति ।

मकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परमत्र द्ववक्ती भिजी मविष्यतः।

अजजबवर्गयोर्भिन्नत्वात्। हकं मध्यो भविष्यति। अजजबवर्गयोर्भध्यत्वात्। छझ्म अङ्कसंज्ञाई भविष्यति। तसात् दकक्झयोर्वगविद्यसंज्ञाई भविष्यतः। कझ्म अङ्कसंज्ञाईमस्ति। दक्वर्गः कझ्मवर्गभिन्नरेसावर्गयोगतुत्योऽस्ति। दक्वकयोर्भिन्नत्वात्॥ तसात् द्झं पश्चमी योगरेसा भविष्यति॥



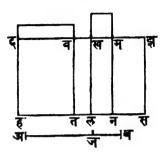
अथ द्विषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६२ ॥ अङ्कसंज्ञार्हरेखायां द्वयोर्मध्ययोर्योगवर्गतुल्यं क्षेत्रं चेत् तदा द्वितीयोत्पन्नभुजः षष्टी योगरेखा भविष्यति ।

९ अङ्गसंज्ञाहरेखामध्ययोगवर्गतुल्यं क्षेत्रमङ्गसंज्ञाहरेखायां यदा भवति J.

limiv. **of** Calgorada

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्वोक्तवद्वोध्यम् । परमत्र द्ववक्तौ भिन्नौ भवि-

ष्यतः । हकं मध्यं भविष्यति । छझं मध्यं भवति । हकात् भिन्नं च । तसात् दककझवर्गावद्वसंज्ञाहीं भवि-ष्यतः । मिथो भिन्नो भविष्यतः । दहादपि भिन्नो भविष्यतः । दकवर्गः कझवर्गभिन्नरेसावर्गयोगतुत्यो भवि-ष्यति । तसात् दझं षष्टी योगरेसा भविष्यति । इदिमिष्टम् ॥



अथ त्रिषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६३ ॥

योगरेखया या रेखा मिलितांस्ति सापि तादृश्येव योग-रेखा भवति।

यथा अवयोगरेखाया जिन्हे योज्यविभागद्वयं किल्पतम् । तिन्मि-लिता दहरेखा किल्पता । पुनर् अबदहिनष्पत्तितुल्या अजद्झिनिष्पत्तिः कैहम्या । तदा जबझही शेषी तस्यामेव

निष्पत्ती स्तः । प्रत्येकं अजजबी दश्गश्रहाभ्यां मिलिती स्तः । तथैवाङ्कसंज्ञाहीं स्तः । अथवाऽनयोर्वगीं मिलिताङ्कसंज्ञाहीं स्तः । अजजबनिष्पत्तिदृश्गश्रहनिष्पत्तितुल्यास्ति । अजजबी मिन्नी स्तः तसात्
दश्गश्रहावि मिन्नी मिन्नियतः । यदि अजवगीं जबवर्गअजमिलितरेसावर्गयोगतुल्यो भवत्यथवा जबवर्गअजमिन्नरेसावर्गयोगतुल्यो भवति
तदा दश्गवर्गी श्रह्वर्गदश्गमिलितरेसावर्गयोगतुल्यो वा श्रहवर्गदश्गमिन्नरेसावर्गयोगतुल्यो भविष्यति । तसात् अबं यादशी योगरेसा भवति
दह्मि तथैव भविष्यति ॥

९ मिलिता भवति J. २ कल्पिता A. J.

NO VIKU AMMONIJAO

अथ चतुःषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६४ ॥ मध्ययोगरेखाया या रेखा मिलिता भवति सा तादृश्येव मध्ययोगरेखा भवति ।

यथा अवं प्रथममध्ययोगरेला वा द्वितीयमध्ययोगरेलास्ति । अस्या जिन्हे द्वौ विमागी कल्प्यो । तन्मि-

िलता दहरेला कल्पिता । पुनर् अम् अबदहनिष्पत्तितुल्या अजदश्ननि- दम

ष्पत्तिः कल्प्या । जबझहनिष्पत्तिः

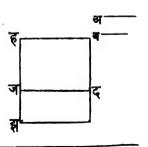
ज स द्वा

कल्प्या । प्रत्येकं अजजवे दश्शहाम्यां मिलिते भविष्यतः । तथैव मध्ये भविष्यतः । अजजवो भिन्नो स्तः । तसात् दश्शहाविष भिन्नो भविष्यतः । अजवर्गअजजवधातयोर्निष्यत्तिः अजजविन-ष्यतिरूपा इयं दश्वर्गदृश्शहघातनिष्यत्तितुल्यदृश्शहिन्ष्यति-तुल्यास्ति । पुनर् अजवर्गदृश्शवर्गयोर्निष्यत्तिः अजजवधातदृश-शृह्धातनिष्यत्तितुल्यास्ति । द्वौ वर्गी मिलितौ स्तः । तस्मात् धाता-विष मिलितौ भविष्यतः । द्वौ वर्गावद्शसंज्ञाहौँ वा मध्यौ भवतः । तदा धाताविष अद्भसंज्ञाहौँ वा मध्यौ भवतः । अवयोर्मध्ये यादशी मध्यरेसा भवति दृहमिष सैव भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्वोक्तवद्वोध्यम् ॥

प्रकारान्तरम् ॥

अरेला प्रथममध्ययोगरेला वा द्वितीयमध्यरेला कल्पिता । तन्मि-

लिता बरेसा कल्पिता । जदरेसा अइसं-ह्याई कल्पिता । अस्यां दहसेत्रम् अव-गीतुल्यं कार्यम् । देशक्षेत्रं बवर्गतुल्यं च कार्यम् । तसात् जहं द्वितीययोगरेसा वा तृतीययोगरेसा भविष्यति । जश्मम् एतन्मिलितं भविष्यति । तसात् जशमपि



९ तथैव J. २ ब्रवर्गतुस्यं द्याक्षेत्रं कार्यम् J.

तादृश्येव मविष्यति । दृश्वतुत्यो यस्य वर्गः स प्रथममध्ययोगो वा द्वितीयमध्ययोगो वा भविष्यति । यथा अम् ॥

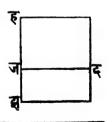
अथ पञ्चषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६५ ॥ अधिकरेखातो या मिलिता रेखा भवति साप्यधिकरेखा ।

यथा अब अधिकरेखाया जिचहे विभागद्वयं कृतम् । दहं तस्या मिलिता कल्पिता । पुनर्दहरेखायां **झचिहे** तस्यामेव निष्पत्तौ विभागद्वयं कार्यम् । तत्र अजजबनिष्यत्तिर्दश्न-

ब्रह्मनिष्पत्तित्रत्या भविष्यति । अज-जबयोर्वर्गी भिन्नी स्तः । तस्मात् दझझहयोरपि वर्गी भिन्नी भविष्यतः । अजजबयोर्वगयोर्निष्पत्तिर्देशशहवर्गनिष्पत्तित्वल्यास्ति । वर्गयोगनिष्पत्तिर्देशसहवर्गयोगनिष्पत्तिरस्ति । तसात् योगस्य योगेन तथास्ति यथैकस्य द्वितीयेन । एको द्वितीयेन मिलितोऽस्ति । योगो यो-गेन मिलितो भविष्यति । अजजबवर्गयोगोऽङ्कसंज्ञार्होऽस्ति । तसात दश्रशहवर्गयोगोऽप्यद्वसंज्ञाहीं भविष्यति । पुनरपि अजजबद्विगुणघातो मध्योऽस्ति । तैसात् दश्रश्रहघातो द्विगुणस्तेन मिलितोऽपि मध्यो भविष्यति ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अधिका रेखा अ: कल्पिता । बं मिलितरेखा कल्पिता । अनयोर्व-गीं जैदोपरि कार्यों। तसात् अवगीत् द्वितीयो जहमुजोत्पन्नो भविष्यति । इयं चतुर्थी योगरे-स्वास्ति । जझं च तन्मिलितं भविष्यति । इदमपि तथैव भविष्यति । तस्मात् या रेखा दञ्जवर्गतुल्या भवति साऽधिका भविष्यति ॥



९ तसाद द्विगुणो दशसहघातस्तेन मिलितोऽपि &c. J. २ अम् अधिका रेसा कल्पिता J. ३ अङ्गर्भश्चाईजादोपरि &c. J.

Digitized by Google

अथ ६६ क्षेत्रम् ॥

अङ्कर्संज्ञार्हमध्ययोगतुस्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तन्मिलितरेखाया अपि वर्गोऽङ्कसंज्ञार्हमध्ययोगतुस्यो भवति । तस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् अ ज व बोध्यम् ॥ द क्ष

अथ ६७ क्षेत्रम् ॥

द्वयोर्मध्ययोर्थोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गोऽस्ति तस्या मिलितरेखाया वर्गोऽपि मध्ययोगतुल्यो भवति ।

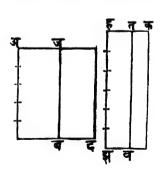
अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्वोक्तवत् अ ज ज्ञेयम् । इदमेवेष्टम् ॥ द क्र इ

अथ ६८ क्षेत्रम्॥

यस्या रेखाया वर्गोऽङ्कसंज्ञाईक्षेत्रमध्यक्षेत्रयोगसमो भ-वति सा रेखा योगरेखा वा प्रथममध्ययोगरेखाथवाऽधि-करेखा भविष्यति वा अस्या वर्गोऽङ्कसंज्ञाईमध्ययोगतुल्यो भविष्यति।

यथा अवम् अइसंज्ञाईक्षेत्रं जदं मध्यक्षेत्रं कल्पितम् । पुनईझम् अङ्कसंज्ञाईरेला कल्पिता । अस्यां रेलायां हवक्षेत्रं वकक्षेत्रं तत्केत्रद्वय-

तुल्यंकार्यम् । तसादुत्पन्नो इत्रभुजो-ऽक्कसंज्ञाहों भविष्यति । तकं केवलव-गोंऽक्कसंज्ञाहों भविष्यति । यदि इत-रेला तकादिषका भवति पुनईत-वर्गः तकवर्गहतमिछितरेलावर्गयोग-तुल्यः स्यात्तदा हकरेला प्रथमयोग-रेला भविष्यति । यसा रेलाया वर्गो झकक्षेत्रतुल्योऽस्ति सा योगरेला



⁹ भविष्यति A. १ पूर्ववत् J. ३ प्रवमसंबोगरेखा J.

Digitized by Google

भविष्यति । यदि इतवर्गः तकवर्गइतभिन्नरेस्नावर्गयोगर्तुस्यः स्यात् तदा इकरेसा चतुर्थयोगरेसा भविष्यति । यस्या वर्गो झकक्षेत्रतुस्यः स्यात् साधिकरेसा भविष्यति ।

यैदि तकरेला हतरेलाया अधिका स्यात् पुनस्तकवर्गो हतवैर्ग-तकमिछितरेलावर्गयोगर्जुल्यः स्यात् तदा हकं द्वितीययोगरेला म-विष्यति । यस्या रेलाया वर्गो झकक्षेत्रज्ञल्यः स्यात् सा प्रथममध्ययोग-रेला मविष्यति । पुनर्यदि तकवर्गो हतवर्गतकभिन्नरेलावर्गयोगर्समैः स्यात् तदा हकरेला पश्चमी योगरेला मविष्यति । यस्या वर्गो झैक-क्षेत्रसमः स्यात् तस्या वर्गोऽहसंज्ञाईमध्ययोगसमः स्यात् । इद-मेवेष्टम् ॥

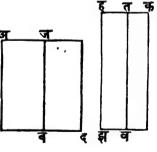
अथ ६९ क्षेत्रम्।।

यस्या रेखाया वर्गी मिथो भिन्नयोर्मध्यक्षेत्रयोर्थोगेन तुल्यो भवति तदा सा रेखा द्वितीयमध्ययोगरेखा भविष्यत्यथवा तस्या वर्गी मध्यद्वययोगतुल्यो भविष्यति ।

द्वे मध्यक्षेत्रे अवजदे कल्प्ये । झहम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता । अस्या उपरि कल्पितक्षेत्रद्वयतुल्यं हव-

स्रेतं वकसेतं च कार्यम् । तसादु-त्पन्नी हततकभुजौ मियो भिन्नौ म-विष्यतः । हृझयोरिप भिन्नौ भविष्यतः । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञाही भविष्यतः । अनयोरिषकरेस्नावर्गी छघुरेस्नावर्गस्या-धिकरेस्नामिलितरेस्नाया वा भिन्नरे-

स्राया वर्गस्य योगेन तुल्यो मविष्यति ।



१ समः J. २ एतत्क्षेत्र J. ३ पुनर्यदि J. ४ °रेखातोऽधिका मवति तकव-र्गश्च J. ५ हतरेखातकरेखामिलितरेखा ° J. ६ °तुल्यो भवति सा द्वितीय ° J. ७ J. omits रेखायाः. ८ एतत्क्षेत्र ° J. ९ मवृति J. १० J. omits पुनर्. ११ J. Omits रेखा. १२ °तुल्यो भवति तदा J. १३ एतत्क्षेत्र ° J. भा० १४

हकं तृतीययोगरेखा वा षष्ठी योगरेखा भविष्यति । तद्रेखावर्ग एतत्-क्षेत्रतुल्य उपरितनोक्तरेखयोरन्यतराया वर्गो भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्व-बद्बोध्यम् । इदमेवेष्टम् ॥

अथ ७० क्षेत्रम्॥

ये द्वे रेखे भिन्ने भवतस्तयोः केवलवर्गावङ्कसंज्ञाहीं भवत-स्तत्रैकतुल्यं यदि द्वितीयात्पृथक्रियते तदा शेषं करणीरूपं भवति । इयमेवान्तररेखोच्यते ।

यथा अबम् अजात् पृथक् कृतम्। रोषं वर्जं करणीरूपमवशिष्टम् । कुतः । एते भिन्ने स्तः । अनयोर्वगीवद्भसं-ज्ञाहीं तयोयोंगः अवअजघातद्विगुणमध्य-क्षेत्राद्भिनोऽस्ति । तस्मात् स एव वर्गः रोषात् वर्गाद्पि भिन्नो भविष्यति । तस्मात् वजवर्गः करणीरूपो भविष्यति । एवं वजमपि करणीरूपं भविष्यति ॥

अथ ७१ क्षेत्रम्॥

ययोर्मध्यरेखयोः केवलवर्गौ मिलितौ भवतोऽङ्कसंज्ञाहीं क्षेत्रभुजावनयोरेखयोरन्तरं करणीरूपं भविष्यति । इदं प्रय-ममध्यान्तराभिधानम् ॥

यथा अबम् अजात् पृथक् कृतम् तदा शेषं बजं करणीरूपमव-शिष्टम् । कुतः । अनयोर्भिन्नत्वात् । अन-योर्द्विगुणघातोऽद्वसंज्ञार्हरूपोऽनयोर्वर्गयोगाद् जा के कि मध्यरूपाद् भिन्नो भविष्यति । तसात् द्विगु-

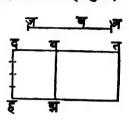
णघातः शेषबजवर्गादपि भिन्नो भविष्यति । तसात् बजं करणीरूपं भविष्यति ॥

अथ ७२ क्षेत्रम् ॥ केवलवर्गमिलिते द्वे मध्यरेखे मध्यक्षेत्रस्य भुजौ मवतस्त-

१ अबअज्ञयोभिन्नत्वात् A. J.

दाऽनयोरन्तरं करणीरूपं भविष्यति । अस्याभिधानं द्विती-यमध्यान्तररेखेति ।

यथा अवम् अजात् पृथक् कृतं शेषं बर्जं करणीरूपं स्यात्। पुनर्द-इम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता । अस्या उपरि अबअजवर्गयोगतुल्यं इतक्षेत्रं कार्यम् । अ-बअजघातद्विगुणतुल्यं हवक्षेत्रं कार्यम् । शेषं **झतक्षेत्रं बज**वर्गतुल्यमवशिष्यते । कुतः। अवअजयोर्भिन्नत्वात् । इतहवी मध्यक्षेत्रे



भिने भविष्यतः । उत्पन्नौ दतदव्भुजौ मिथो भिन्नो भविष्यतः । वर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् वतम् अन्तररेखा भविष्यति । **झतं करणीरूपमस्ति ।** तसात् बजमपि करणीरूपं भविष्यति ॥

अथ ७३ क्षेत्रम् ॥

तैयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति ययोभिन्नरेखयोर्वगीं भिन्नौ स्तो वर्गयोगोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्विगुणघातश्च मध्य-क्षेत्रतुल्यो भवति । इयं न्यूनरेखोच्यते ।

यथा अबम् अजात्पृथक् कृतम् । शेषं बजं करणीरूपमवशिष्टम् । अस्य विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् बोध्यम् ॥

अथ ७४ क्षेत्रम् ॥

द्वेयो रेखयोर्वगीं भिन्नी स्तो वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भवति द्विगुणघातश्चाङ्कसंज्ञार्ही भवति । अनयोरन्तरं करणी-रूपं भवति । इयमङ्कसंज्ञाईयोगमध्यरेखोच्यते ।

विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

९ इयं द्वितीयमध्यान्तररेखोच्यते A., J. २ J. Omits कृत:. रेखयोर्वर्गी भिन्नोस्तत्त्वयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति A., J. v. A. and J. have वयो: in the beginning and त्यो: for अनयो:.

अथ ७५ क्षेत्रम् ॥

द्वयोभिन्नवर्गरेखयोर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भवति द्विगु-णघातः प्रथममध्यक्षेत्राद्विन्नं मध्यक्षेत्रं भवति । अनयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति । इयं मध्ययोगजमध्यरेखो-च्यते ।

विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । ईदमेवेष्टम् ॥

अथ ७६ क्षेत्रम् ॥

अन्तररेखायामेकैव रेखा लगति या तस्याः पूर्वस्वरूपं करोति ।

यधेवं न भवति तदा अबरेसायां बजरेसाबदरेसे लगे । ताम्यां तस्याः पूर्वस्वरूपमेव कृतिमिति किल्पतस्याः पूर्वस्वरूपमेव कृतिमिति किल्पतम् । अजजबयोर्वगी अजजबघातदिगुणअबर्वगयोगेन जुल्यो सः । अदद्वर्वगयोगोऽपि अदद्वघातद्विगुणअबर्वगयोगेन जुल्योऽस्ति । अजजबर्वगअदद्ववर्गयोरन्तरं च द्वयोरद्वसंज्ञाईयोरन्तररूपम् । अजजबघातद्विगुणअदद्वघातद्विगुणयोरन्तरं द्वयोर्गध्ययोरन्तररूपं द्वयं समानं भविष्यति ।
इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ ७७ क्षेत्रम् ॥

प्रथममध्यान्तररेखयैकैव रेखा मिलति याँ तस्याः प्रथ-मस्वरूपं करोति ।

यद्यवं न भवति तदा अबरेखायां बजबदरेखे संलग्ने । अबस्य प्रथमखरूपं कृतम् । तदा अजजबवर्गयोः अदद्ववर्गयोश्चान्तरं द्वयोर्मध्ययोरन्तररू-

^{9.} Omitted in A. and J. २. वर्गयोगः A., J. ३. तुल्योऽस्ति A., J. ४. D. and B. have वर्गाविषः द्वाः .. ५. J. omits द्वयम् . ६. सा J.

पम् अजजबघातद्विगुणः अददबघातद्विगुणः अनयोरन्तरस्य द्वयो-रक्कसंज्ञाईयोरन्तररूपस्य समानमस्तीत्यग्रुद्धम् । इष्टं समीचीनम् । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ ७८ क्षेत्रम् ॥

द्वितीयमध्यान्तररेखामेकैव रेखा मिलिप्यति याऽस्याः पूर्वस्वरूपं करिष्यति ।

यद्येवं न भवति तदा कल्पितम् अवरेखया वजबदरेखे मिछिते

असाः पूर्वस्वरूपं कुरुतः । पुनर्हझरेसा अइसं-ज्ञाही कल्पिता । अस्यां अजजबयोर्वर्गयोगो झकक्षेत्रं कार्यम् । अववर्गतुल्यं झवक्षेत्रं च कार्यम् । शेषं तकक्षेत्रम् अजजबघातद्विगुण-तुल्यमवशिष्यते । द्वयोर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतु-ल्योऽस्ति । द्विगुणघातश्च प्रथममध्यक्षेत्राद्वितः

मध्यक्षेत्रतुल्योऽस्ति । तदा हककवरेले मिथो

भिने भविष्यतः । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञार्ही भविष्यतः । तसात् हवम् अन्तररेसा भविष्यति ।

पुनरिष ह्झरेखोपिर अदद्बवर्गयोगझलक्षेत्रं कार्यम् । तसात् तलक्षेत्रम् अदद्बघातद्विगुणतुल्यं भविष्यति । हल्लरेखालवरेखावर्गी केवलमङ्कसंज्ञाहीं भविष्यतः । ह्वमन्तररेखाखि । तसात् ह्वरेखया वक-रेखावल्लरेखे संलग्ने । आभ्यामन्तररेखा प्रथमरूपा कृतेत्यग्रुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ ७९ क्षेत्रम् ॥

न्यूनरेखायामप्येकैव रेखा छगति या तस्याः पूर्वस्वरूपं करोति।

यद्येवं न स्यात् आबरेसायां बजबदरेसे संलग्ने।पूर्वस्वरूपं कृतम्। विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत्॥

अथ ८० क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखायामेकैव रेखा लगति याऽस्याः पूर्वस्वरूपं करोति ।

यधेवं न स्यात् अबरेखायां बजरेखाबदरेखे संख्ये । आभ्यां पूर्वस्वरूपं च कृतम् । अस्य विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ज्ञेयम् ॥

अथ ८१ क्षेत्रम् ॥

मध्ययोगमध्यरेखायामप्येकैव रेखा लगति याऽस्याः पूर्व-स्वरूपं करोति ।

अवरेखायां बजबदरेखे संलग्ने पूर्वस्वरूपं कुरुतः । विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

॥ अथ शेषक्षेत्राणां परिभाषोच्यते ॥

यद्यन्तररेखयैका रेखा मिलति पूर्वस्वरूपं च करोति तत्र संपूर्णरे-स्वावर्गो लग्नरेस्वावर्गसंपूर्णरेस्वामिलितान्यरेस्वावर्गयोगेन तुल्यो भवति । संपूर्णरेसाद्वसंज्ञाहरेस्वा चेद्भवति तदान्तररेसा प्रथमान्तररेसा भवति ।

यैदि लग्गरेलाइसंज्ञाही भवति तदेयं द्वितीयान्तररेला भविष्यति । यद्यनयोः काप्यइसंज्ञाही न भवति तदेयं तृतीयान्तररेला भविष्यति ।

पुनः संपूर्णरेखावर्गो लग्नरेखावर्गसंपूर्णरेखाभिन्नान्यरेखावर्गयोगेन तुस्यो भवति ।

संपूर्णरेखा चाइसंज्ञाही भवति तदेयं चतुर्थ्यन्तररेखा स्थात् । यदि लग्गरेखाइसंज्ञाही भवति तदा पश्चम्यन्तररेखा भवति । यदि काप्यद्वसंज्ञाही न भवति तदा षष्टचन्तररेखा भवति । ॥ इति परिभाषा ॥

^{9.} पूर्वोक्तलक्षणाकान्ता यदि लगरेखा &c. J., A.

अथ ८२ क्षेत्रम् ॥

प्रथमान्तररेखोत्पादनमिष्टम् ।

प्रथमिष्टरेखाइसंज्ञाही अ: कल्पिता । तन्मिलिता बजरेखा कल्पिता । दहदझी वर्गराश्यद्री तथा कल्प्यो यथाऽनयोरन्तरं **झहं** वर्गे न भवति । पुनर्बेजवर्गजववर्गयोर्निष्यत्तिर्दह्महनिष्यत्ति-तुल्या कल्पिता । तसात् बवं प्रथमान्तर-ਰ·····ਬ·····द रेसा भविष्यति । कुँतः । बजरेसाङ्कसं-ज्ञार्होस्ति । जवरेला बजरेलया केवलवर्गमिलितास्ति । अस्या वर्गोऽइ-संज्ञाहोंऽस्ति । इयं जवरेला बजरेलातो भिनास्ति । पुनर्वजवर्गस्य जववर्गेणान्तरं तवर्गः कल्पितः । तस्मात् बजवर्गस्य तवर्गेण निष्पत्ति-**र्दहद्भ**वर्गराश्योर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तस्मात् **तं बजे**न मिलितं भवि-ष्यति । बजवर्गो जववर्गतवर्गयोगतुल्यो भविष्यति ॥

अथ ८३ क्षेत्रम् ॥

तत्र द्वितीयान्तररेखोत्पादनमिष्टम् ।

तत्राइसंज्ञार्हरेखा अं कॅल्प्या । जवरेखैतन्मिलता कल्पिता। द्वावद्दौ पूर्ववत् कल्प्यौ । पुनर्जववर्ग-बजवर्गयोर्निष्पत्ति**झंहदह**निष्पत्तितुल्या क-ल्पिता । ववं द्वितीयान्तररेखा भविष्यति । कृतः। जबसाइसंज्ञाईत्वात् । जवं केवछ-वर्गाद्वसंज्ञाहरेखास्ति । जबवर्गो जववर्गत-वर्गयोगतुल्योऽस्ति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ ८४ क्षेत्रम् ॥ तत्र तृतीयान्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

^{9 °}मिष्टमस्ति J. २ अं A., J. ३ यतो J. ४ कल्पिता A.

प्रथमाइसंज्ञाहरेला अं कल्पिता। द्वी वर्गराश्यक्की अवश्रती कल्पिती यथा तवम् अन्तरं वर्गा न भवति।
हम् अन्योऽह्रोऽवर्गराशिस्तया कल्प्यो यथा
तस्य निष्पत्तिर्वर्गद्वयनिष्पत्तितुत्या न भवति।
पुनर् अवर्गजववर्गयोर्निष्पत्तिर्हृश्वयोर्निह्मान्तिर्वर्ग कल्प्या। पुनर्वजवर्गर्वजवर्गयोर्निष्पत्तिर्श्वतत्वनिष्पत्तितुत्या कल्प्या। तसात् बदं तृतीयान्तररेला भविष्यति। कृतः। बजजदौ केवलवर्गाहरंज्ञाहीं स्तः
आद्विज्ञौ सः। बजवर्गो जदवर्गवजमिलितकवर्गयोगतुल्योऽस्ति।
यतोऽनयोर्वर्गौ झवझतनिष्पत्तौ सः।
अथ ८५ क्षेत्रम्॥
तत्र चतुर्थ्यन्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

अत्रोपरितनप्रकारवत् । परं द्वौ वर्गराशी दशस्हो तथा कल्प्यो यथेतयोयोंगो दहं वर्गराशिर्न भवति । बजवर्गो जववर्गबजभिन्नतवर्गदुल्यो अस्मामामामा भविष्यति । कृतः । बजवर्गतवर्गयोनि- बिजवर्गतवर्गयोनि- वर्म विष्यति । कृतः । बजवर्गतवर्गयोनि- वर्म विष्यति । क्षेत्रं वर्मिवत् ॥

अथ ८६ क्षेत्रम्॥

तत्र पञ्चम्यन्तररेखोत्पादनमिष्टम् ।

१ J. inserts यतः. १ J. omits न. १ A. and J. have दितीयान्तररेखोत्पादनप्रकारः.

अथ ८७ क्षेत्रम् ॥ तत्र षष्ठयन्तररेखोत्पादनमिष्टम् ॥

प्रैकारः पूर्ववत् । परं दहझहो वर्गरा- अ इयद्वौ तथा कल्प्यौ यथैतयोयोंगो वर्ग- तः राशिर्न मवति । क्षेत्रं च पूर्ववद्वोध्यम् ॥ दः

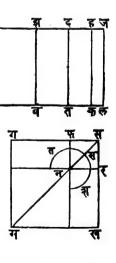
अथ ८८ क्षेत्रम् ॥

क्षेत्रस्यैको भुजोऽक्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयो भुजः प्रथ-मान्तररेखा भवति । यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सान्तररेखा भविष्यति ।

यथा बझं क्षेत्रं कल्पितम्। अङ्कसंज्ञाहरेखा अवं कल्पिता। प्रथमान्त-ररेखा अझम्। अझरेखया झजरेखा तथा योज्या यथा प्रथमरूपा मवति।

पुनर्बजक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । पुनर्झजरेखा दिचिहेऽद्विता कार्या । पुनर् अजरेखाखण्डोपरि जदवर्गतुल्यो झजवर्गस्य चतुर्थाशस्तथा

कार्यो यथा शेषसण्डक्षेत्रं वर्गतुत्यमवशिष्यते। तसात् अजरेसाया हचिहे विभागो भविष्य-ति।पुनर् अहरेसादजरेसानिष्पत्तिर्दजरेसा-जहरेसानिष्पत्तितुत्या भविष्यति । जहं च सण्डद्वयमध्ये लघुसण्डमस्ति । तसात् जहं जदाल्लघु भविष्यति । जदं च अहाल्लघु भविष्यति । पुनईचिह्दचिहाभ्यां हकरेसा-दतरेसे अबरेसासमानान्तरे कार्ये । पुनः समं समकोणसमचतुर्भुजं बहस्नेत्रतुत्यं कार्यम् । अस्य कर्णेन सनं समकोणसमच-तुर्भुजं हलक्षेत्रतुत्यं कार्यम् । पुनः स्वगक्षे-



A. and J. have तृतीयान्तररेखोत्पादनप्रकार:. २ दहद्शी A.
 ३ द्वी विभागी भविष्यत: A., J.

त्रस्य रेसाः पूर्णा कार्याः । तदा समसमकोणसमचतुर्भुजस्य निम्पत्तः समसमकोणसमचतुर्भुजनास्ति । कृतः । यत एतद्वयं गससफिनिष्पत्तौ अस्ति । तदा खफक्षेत्रं द्वयोः समकोणसमचतुर्भुजनोर्गष्ये एकनिष्पत्तौ भविष्यति । तदा बहक्षेत्रहलक्षेत्रस्य मध्येऽपि खफक्षेत्रमेकनिष्पत्तौ भविष्यति । दलक्षेत्रं बहक्षेत्रहलक्षेत्रस्य मध्येऽपि एकनिष्पत्तौ भविष्यति । दलक्षेत्रं बहक्षेत्रहलक्षेत्रस्य मध्येऽपि एकनिष्पत्तौ भविष्यति । तस्तात् दलक्षेत्रखफक्षेत्रे समाने भविष्यतः । पुनर्दवक्षेत्रं च रगक्षेत्रेण समानं भविष्यति । तस्तात् खवक्षेत्रं तसदाक्षेत्रस्य समसमकोणसमचतुर्भुजयोगेन समानं भविष्यति । पुनर्वद्वार्श्वेषक्षेत्रं नमसमकोणसमचतुर्भुजयोगेन समानं भविष्यति । पुनर्वद्वार्श्वेषक्षेत्रं नमसमकोणसमचतुर्भुजने समानमविश्वं भविष्यति । अस्य भुजः फगोऽस्ति । तस्तात् फगमन्तररेखा भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अजवगों जझवर्गस्य अजिमिलितरेखावर्गस्य च योगेन समान्तोऽस्ति । तसाधि जदवर्गतुल्यो जझवर्गस्य चतुर्याशः अजिरेखा-खण्डे तथा कार्यो यथा शेषखण्डक्षेत्रं वर्गतुल्यमविशष्यते तदा अजिरेखाया हिचिहे मिलिते द्वे खण्डे मिविष्यतः। अजिरेखा चाइसंज्ञाहीस्ति। तसात् बहक्षेत्रतुल्यं समं समकोणसमचतुर्मुजं हलक्षेत्रतुल्यं सनं समकोणसमचतुर्मुजमङ्कसंज्ञाहें भविष्यतः । तसात् गसरेखासफरिखयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । झजिरेखा अजिरेखातो भिन्नास्ति । तसात् दजिरेखा जझरेखाया मिलितापि मिलितअहरेखाअजिरेख-योर्गिन्ना भविष्यति । तसात् दलक्षेत्रतुल्यं खफक्षेत्रं बहक्षेत्रतुल्यसम-

Digitized by Google

⁹ J. has तस्मात् अज्ञह्जे मिलिते जाते । after मविष्यतः. २ J. has तस्माद्वलक्षेत्रतुस्यं जद्मक्षेत्रं वह्क्षेत्रतुस्यसमकोणसमवतुर्भुजाद्भित्रं भविष्यति । after मविष्यति.

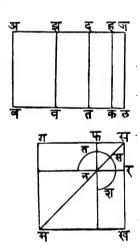
समकोणसमचतुर्भुजात् भिन्नं भविष्यति । तसात् गसरेखासफरेखे मिथो भिन्ने भविष्यतः । फगं चान्तररेखा भविष्यति । एवं यस्या रेखाया वर्गो बझक्षेत्रेण तुल्यो भवति सैवान्तररेखा भविष्यति ॥

अथ ८९ क्षेत्रम् ॥

यदि क्षेत्रस्थैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयभुजो द्वि-तीयान्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्गोऽनेन क्षेत्रेण तुल्यो भवति सा प्रथममध्यान्तररेखा भवति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हवक्षेत्रतुल्यं समसमकोण-

समचतुर्भुजं हरुक्षेत्रतुल्यं सनसमकोण-समचतुर्भुजं चैतद्वयं मिलितमध्यक्षेत्रं भवि-ध्यति । कुतः । अहहजयोर्मिलितरेला-त्वात् । पुनर्दलक्षेत्रतुल्यं खफक्षेत्रमङ्कसं-ज्ञार्हे भविष्यति । तस्मात् गसरेला सफरेला चैते मध्यरेले भविष्यतः । अन-योर्वगौ मिलितौ भविष्यतः । एतौ भुजौ अङ्कसंज्ञार्हक्षेत्रस्य भविष्यतः । तसात् फगरेला यस्या वर्गो बझक्षेत्रतुल्योऽस्ति सा प्रथममध्यान्तररेला भविष्यति ॥

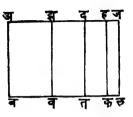


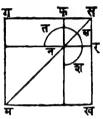
अथ ९० क्षेत्रम् ॥

यस्य क्षेत्रस्यैकभुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयभुजस्तृती-यान्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेखा भवति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हबक्षेत्रतुत्यं समसमकोणसम-

चतुर्भुजं इलक्षेत्रतुल्यं सनसमकोणसम-चतुर्भुजं चैते मिलितमध्यक्षेत्रे भवि-ध्यतः। कुतः। यतः अहहजौ मिलिते रेखे साः। झलं दलक्षेत्रतुल्यमपि खफ-क्षेत्रं मध्यक्षेत्रपूर्वक्षेत्राम्यां भिन्नं भविष्य-ति। तसात् गसरेखासफरेखे मध्यरेखे केवलवर्गमिलिते मविष्यतः। एते च मध्य-क्षेत्रस्य भुजौ भविष्यतः। तस्मात् फगरे-खावर्गो बझक्षेत्रतुल्योऽस्ति। सं च द्विती-यमध्यान्तररेखा भविष्यति॥



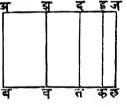


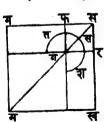
अथ ९१ क्षेत्रम् ॥

यस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहों भवति द्वितीयभुजश्चतुर्था-न्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा न्यूनरेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च अहहजरेले अपि च हब-

क्षेत्रहरुक्षेत्रतुल्ये समक्षेत्रसनक्षेत्रे भिने मिलेप्यतः । अनयोयोंगोऽङ्कसंज्ञाहों भिनिष्यति । पुनर्झरुक्षेत्रतुल्यं द्विगुणस्वफक्षेत्रं मध्यो भिनष्यति । तसात् गससफौ भिनन्वगौं भिनष्यतः । अनयोर्वगयोगोऽङ्कसं ज्ञाहों भिनष्यति । अनयोर्द्विगुणो घातो मध्यो भिनष्यति । तसात् फगरेसावगौं सङ्गक्षेत्रतुल्यो भिनष्यति ॥





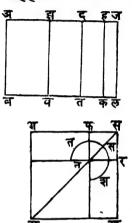
अथ ९२ क्षेत्रम् ॥

यस्य क्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञार्हो भवति द्वितीयश्च प

⁹ J. has तस्मात् for स च. २ °तुल्यो न्यूनरेस्ना भवति D.

श्रम्यन्तररेखा भवति पुनर्यद्रेखावर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा अङ्कर्भज्ञाईयुक्तमध्यरेखा भवति।

पकारः क्षेत्रं चोपैरितनक्षेत्रवत् । परं च अहहजरेले अपि च हबक्षेत्रहलक्षेत्रतुल्ये समक्षेत्रसनक्षेत्रे मिन्ने भविष्यतः । अनयोर्योगो मध्यो भवि-ष्यति । झलक्षेत्रतुल्यं द्विगुणखफक्षेत्रम-इसंज्ञाई भविष्यति । तसात् गससफौ भिन्नवर्गी भविष्यतः । अनयोर्वर्गयोगो मध्यो भविष्यति । द्विगुणघातश्चाइसंज्ञाहीं भविष्यति । तसात् फगवर्गो बझक्षेत्रतुल्यो-ऽस्ति । सोऽइसंज्ञाईयुक्तमध्यो भविष्यति ॥

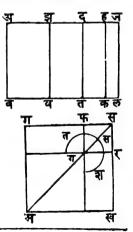


अथ ९३ क्षेत्रम् ॥

यस्यैकभुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयश्च षष्टचन्तररेखा भवति तत्र यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुरुयो भवति सा मध्ययुक्तमध्यरेखा भवति।

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत् । परं चात्र **अहह**जरेखे हवहरुक्षेत्रतुल्ये

समक्षेत्रसनक्षेत्रे च भिन्ने भविष्यतः । अनयोयोंगो मध्यो भविष्यति । प्रनर्झलक्षे-त्रतुल्यद्विगुणखफक्षेत्रं मध्यो भविष्यति प्रथममध्याद्भिन्नो भविष्यति । तसात् गस-सफी भिन्नवर्गी भविष्यतः । अनयोर्वर्ग-योगो मध्यो भविष्यति । अनयोर्द्विगुणो धातश्च मध्यो भविष्यति । प्रथममध्या-द्रिनो भवति । तसात् फगरेसावर्गी बझ-क्षेत्रतुल्योऽस्ति । सा मध्ययुक्तमध्या भवि-ष्यति । इदमेवेष्टम् ।



१ च पूर्ववत् J.

अथ ९४ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञार्हरेखायामन्तररेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तदोत्पन्नो द्वितीयभुजः प्रथमान्तररेखा भविष्यति ।

यथान्तररेखा अबं कल्प्या । यान्तररेखा अनया मिलित्वा प्रथमरूपं करोति सा बजरेखा कल्पिता । अइसंज्ञाहरेखा च दहं कल्पिता ।

पुनर्दहरेखोपरि अबन्गेतुल्यं दतक्षेत्रं कार्यम् । तसादुत्पन्नो दवभुजः मथमान्तर-रेखा भविष्यति । उपपत्तिः ।

पुनर्दहरेसायाम् अजनर्गतुस्यं दन-क्षेत्रं कार्यम् । बजनर्गतुस्यं च नझ-क्षेत्रं कार्यम् । तसात् तझक्षेत्रं द्विगुण- इ व क मझ द व क मझ इ त छ न

९ या रेखा एतां (एनां A., J.) पूर्वस्वरूपं करोति K. २ सविष्यतः A., K. ३ सविष्यति K., A., J.

अथ ९५ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां प्रथममध्यान्तररेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तदोत्पन्नो भुजो द्वितीयान्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च दनक्षेत्रनझक्षेत्रे मध्यमिलिते मविष्यतः । तसात् हुझक्षेत्रं मध्यं भवि-ष्यति । द्रश्नरेखायाः केवलवर्गोऽइसंज्ञाहीं अ भविष्यति । पुनर्झतक्षेत्रतुंल्यो द्विगुणअज-जबघातोऽइसंज्ञार्ही भविष्यति । तसात् **झवरे**सा अ**ङ्क**संज्ञाही भविष्यति । **झ**दरे-स्वावर्गी झवरेस्वावर्गस्य हदरेसामिछितरे-स्वावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति। कुतः।

दममझयोर्मिन्नितत्वात्। तसात् दवरेसा द्वितीयान्तररेसा भविष्यति॥

अथ ९६ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखोपरि द्वितीयमध्यान्तररेखावर्गतुल्यं कार्थं तदोत्पन्नभुजस्तृतीयान्तररेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हुझक्षेत्रमपि मध्यं मविष्यति । दननझयोर्मध्ये मिलितत्वात् । दझवर्गः के-

वलमङ्कसंज्ञाहीं ऽस्ति । त्रञ्गक्षेत्रमपि मध्योऽस्ति । प्रथममध्याद्भिनोऽस्ति । अजजवयोभिन-त्वात् । तस्मात् **झव**रेखापि केवछवर्गा**इ**सं-ज्ञार्हा भविष्यति । द्झाद्विना भविष्यति

दश्चवर्गो झववर्गस्य दश्चमिलितरेखावर्गयो-गेन तुल्यो भविष्यति । कुतः । दममझयो-

र्मिलितत्वात् । तसात् दवं तृतीयान्तररेखा भविष्यति ॥

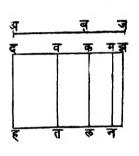
९ °तुल्य° A.

अथ ९७ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां न्यूनरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तत्री-त्पन्नभुजश्चतुर्ध्यन्तररेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । अजबजवर्गयोभिन्नत्वेन दनक्षेत्र-

नझक्षेत्रे भिन्ने भविष्यतः । दमरेखामझ-रेखे अपि भिन्ने भविष्यतः । द्वयोर्वर्गयोर्यो-गस्याद्वसंज्ञाहित्वेन हुझुक्षेत्रमप्यद्भसंज्ञाही भवि-ष्यति । दझरेखा चाङ्कसंज्ञाही भविष्यति । द्विगुणअजजबघातस्य मध्यभावित्वेन तझ-क्षेत्रमपि मध्यं भविष्यति । वझरेखापि के-वलवर्गोक्ससंज्ञाहीस्ति । दझवर्गो वझवर्गस्य



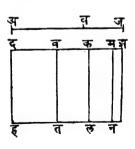
दश्मभिन्नरेस्नावर्गस्य च योगेन तुल्योऽस्ति । कुतः । दममञ्जयोर्भिन-त्वात् । तसात् दवं चतुर्थ्यन्तररेसा मविष्यति ॥

अथ ९८ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाईरेखायामङ्कसंज्ञाईरेखायुक्तमध्यरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तत्रोत्पन्भुजः पश्चम्यन्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं अजबजवर्गयोभिन्नत्वेन दनक्षेत्रनश्-क्षेत्रे भिन्ने भविष्यतः । दममझरेखापि भिन्ना भविष्यति । द्वयोर्वर्गयोर्योगस्य मध्यभावि-त्वेन दशं केवलवर्गसंज्ञाहों भविष्यति। द्विगुणअजबजघातस्याइसंज्ञाईभावित्वेन झ-वरेखा अङ्कसंज्ञाही भविष्यति । तस्मात् दश-रेखावर्गी झवरेखावर्गस्य दझरेखाभिन्नरे-

स्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति



दममझयोर्भिन्नत्वात् । दमरेखा पश्चम्यन्तररेखा भविष्यति ॥

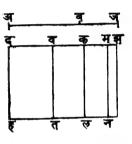
٩ च J.

अथ ९९ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां मध्ययुक्तमध्यरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तत्रोत्पन्नद्वितीयभुजः षष्टचन्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च अजबजवर्गयोर्मिनभावित्वेन

दनक्षेत्रनझक्षेत्रे भिन्ने मविष्यतः । दम-मझरेखापि भिना भविष्यति । द्वयोर्व- अ र्गयोर्थोगस्य मध्यक्षेत्रमावित्वेन तथा द्विग्-णञ्जबज्जघातस्य मध्यमावित्वेन प्रथमम-ध्याद्भिन्नत्वेन च दश्क्ष्मवरेसे केवछवर्गाइसं-ज्ञार्हे भविष्यतः । भिन्ने च भविष्यतः । केबर्जवर्मावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । दझवर्गी



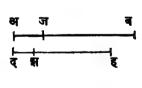
अखर्कास्य दञ्जभिन्नरेस्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । दमम-झयोर्भिनत्वात् । तसात् दवं षष्ठचम्तररेखा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ १०० क्षेत्रम् ॥

अन्तररेखामिलितरेखा ताइइयेवान्तररेखा भवति ।

यथा अजम् अन्तररेखा कल्पिता। दझं मिलितरेखा कल्प्या । पुनर् अजरेलायां जबरेला तथा युक्तों कार्या यथा पूर्वरूपं करोति। पुनर्दझरेलाझहरेलानिष्पत्तिः अजजबनिष्पत्तितुल्या कल्प्यो ।

यदि अबवर्गी बजवर्गस्य अजमिलितरेलाया अथवा भिन्न-रेखाया वर्गस्य योगतुल्यो भवति तदा दह-रेखा झहरेखे ताँहशे साः। पुनरपि प्रत्येकं अबबजो प्रत्येकदहज्ञहाम्यां मिलितत्वेन प्रत्येकमञ्चलंज्ञाहीं भवति वा वर्गाञ्चलंज्ञाहीं



⁹ J. adds मिथो. २ J. Omits this sentence. ३ J. Omits कल्प्या. ४ योज्या A., K., J. ५ कल्पिता A., K., J. ६ सहशे A., J. ७ वर्गोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति A.

मवति । तदा द्वितीयरेखापि तथैव भविष्यति । तसात् अर्ज यान्तर-रेखा भवति दञ्जमपि तथैवान्तररेखा भविष्यति ॥

अथ १०१ क्षेत्रम् ॥

मध्यान्तररेखया या मिलिता रेखा भवति सा मध्यान्तर-रेखासदृशी भवति ।

यथा अर्जं प्रथममध्यान्तररेखा वा द्वितीयमध्यान्तररेखा कल्पिता । तदेखा मिलिता दश्नरेखा कल्पिता । पुनर् अजरेखया लगा जबरेखा तथा कल्प्या में ज व व यथा सा अजरेखां पूर्वरूपां करोति । दश्न- ह शहयोर्निष्पत्तिः अजजबनिष्पत्तितुल्याख्ति । प्रत्येकम् अबजबौ दहहश्चाभ्यां मध्यखजातीयेन मिलितौ खः । या- हशो मध्यसजातीयोऽिख्त तावच्येव प्रत्येकम् अबबजयोर्मघ्योऽिख्त । अबबजौ भिन्नौ खः । तसात् दहहशाविप भिन्नौ मवेताम् । अबवर्ग- निष्पत्तिः अबबजघातेन तथािखा यथा दह्वर्गनिष्पत्तिदहहश्चातेन नािख्त । अबवर्गदहवर्गयोर्निष्पत्तिः अबबजघातदहश्चहघातिनष्पत्त्या समानािखा । अबवर्गदहवर्गी मिलितौ खः । तसात् अबबजघात- दहहश्चाताविप मिलितौ भविष्यतः ।

यदि अववज्ञघातोऽइसंज्ञाहीं भवति तदा दहहझघातोऽप्यइ-संज्ञाहीं भविष्यति । यदि अववज्ञघातो मध्यो भवति तदा दहहझ-घातोऽपि मध्यो भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

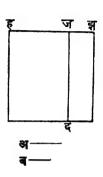
अथ १०२ क्षेत्रम्।।

न्यूनरेखया मिलिता रेखा न्यूना भवति।

यथा अं न्यूना रेखा कल्पिता । तन्मिलिता बरेखा कल्पिता । अन-

९ V. inserts द्वयोर्मच्यान्तररेखयोर्मच्येऽन्तररेखा आजं यथा भवति तवैव मध्यान्तरं दृझमपि भविष्यति.

योर्वर्गतुत्ये क्षेत्रे जदश्वसंज्ञाईरेखायां कार्ये। अवर्गतुत्यं क्षेत्रं जदरेखायां यचिहृतीयो भुजो जहं चतुर्थ्यन्तररेखा भवति । बवर्गतुत्यं क्षेत्रं जदरेखायां यत् कृतं तदुत्पन्नो जझभुजो जह-मिलितोऽस्ति । तसात् जझमिप चतुर्थ्यन्तररेखा भवति । तसायदेखावर्गो दझक्षेत्रतुत्यो भवति सा बरेखा भवति । इयं न्यूनरेखा भविष्यति ॥



अथ १०३ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखाया मिलिता रेखा भवति साप्य-ङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखा भैवति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ १०४ क्षेत्रम् ॥

मध्ययुक्तमध्यरेखया या मिलिता रेखा भवति सापि मध्य युक्तमध्यरेखा भवति ।

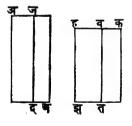
प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ १०५ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रेस्य मध्यक्षेत्रेण यदन्तरमस्ति तत्तुल्यो यस्या । रेखाया वर्गो भवति सा रेखान्तररेखा वा न्यूनरेखा भवति।

यथा अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रं अबम् कल्पितम्। मध्यक्षेत्रम् अदं कल्पितम्। अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रस्य मध्यक्षेत्रेणान्तरं जबक्षेत्रं क-

अइसज्ञाहेक्षत्रस्य मध्यक्षत्रणान्तर जबक्षत्र क-ल्पितम्। पुनहेझम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता। अस्याम् अबक्षेत्रतुल्यं झकक्षेत्रं कार्यम्। तस्या-मेव अदक्षेत्रतुल्यं झवक्षेत्रं कार्यम्। तस्यात् हकरेखा अइसंज्ञाही भविष्यति। हवरेखा च केवछवर्गाइसंज्ञाही भविष्यति। यदि हक-



९ भवेत् V. २ क्षेत्रमध्यक्षेत्रयोर्यदन्तरमस्ति K., A., J. ३ भविष्यति V.

रेलावर्गो इवरेलावर्गस्य इकरेलामिळितरेलावर्गस्य च योगेन तुल्मो भेवेत् तदा वकं प्रथमान्तररेला भविष्यति ।

यद्रेसावर्गस्तकक्षेत्रतुत्यज्ञवक्षेत्रसमानो मवति सा अन्तररेसा भवति । यदि इकरेसावर्गो इवरेसावर्गस्य इकरेसामिन्नरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति तदा वकरेसा चतुर्थी अन्तररेसा भविष्यति । पुनस्तकक्षेत्रतुस्यज्ञवक्षेत्रसमानो यद्रेसावर्गो भवति सा न्यूनरेसा भविष्यति ॥

अथ १०६ क्षेत्रम्।।

मध्यक्षेत्रस्याङ्कसंज्ञार्हक्षेत्रेणान्तरतुल्यो यद्रेसावर्गो भवति सा प्रथममध्यान्तररेखा भविष्यति वाङ्कसंज्ञार्हयुक्तमध्यरेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं त्वत्र अवं मध्यक्षेत्रं मविष्यति ।

हकरेला केवलवर्गाक्ससंज्ञाही भविष्यति । हवरेला चाक्ससंज्ञाही भविष्यति । वेकरेला द्वितीयान्तररेला वा पञ्चम्यन्तररेला भवि-ष्यति । जबक्षेत्रतुल्यो यद्रेलावर्गो भवित स प्रथममध्यान्तररेला भविष्यति वाक्सं-ज्ञाहेयुक्तमध्यरेला भविष्यति ।



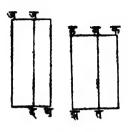
अथ १०७ क्षेत्रम् ॥

मध्यक्षेत्रति समध्यक्षेत्रान्तरतुल्यो यद्रेखावर्गे भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेखा वा मध्ययुक्तमध्यान्तररेखा भ-विष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं त्वन्न इक्नेसाहकरेसे भिक्तरेसे

१ अवित V. २ Omitted in K., A., J.

मिथो भविष्यतः । अनयोः केवल्यमाइसं-झार्ही भविष्यतः । वकं तृतीयान्तररेला तदा भविष्यति यदा हकरेलावर्गो इवरे-खावर्गस्य इकमिलितरेलावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । पुनः सैव वकरेला षष्ठचन्तररेला तदा भविष्यति यदा हकरे-



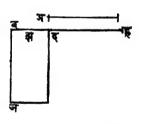
स्तावर्गो हवरेस्नावर्गस्य हकभिष्ठरेसावर्गस्य च योगेन तुस्यो भवति । तसात् यद्रेसावर्गो जबक्षेत्रतुस्यो भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेस्म दा मध्ययुक्तमध्यरेसा भविष्यति ॥

अथ १०८ क्षेत्रम् ॥

अन्तररेखा योगरेखा न भवति ।

बदि भवति तदा कस्पितम् अरेखा अन्तररेखा भवति योगरेखायि ।

बजम् अइसंज्ञाहरेला कल्पिता। अरेलावर्ग-जुल्यं क्षेत्रं बजरेलायां दजक्षेत्रं कार्यम्। तदोत्पन्नो वद्गुजः प्रथमयोगरेला मनिष्य-ति। कुतः। अरेलाया योगरेलात्वात्। स एवोत्पन्नो बद्गुजः प्रथमान्तररेला य-विष्यति। यतः अरेला अन्तररेलास्ति।



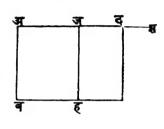
तदा कल्पितं बदरेखाया झचिहे योज्यखण्डे बझं महत्खण्डं कल्पि-तम् । इदं बझम् अद्वंसज्ञाहरेखा मविष्यति । झदं केवछवगी इसंज्ञाही रेखा मविष्यति । बदरेखया दहरेखा संख्या तथा कल्प्या यथा बद्-रेखां पूर्वे छपां करोति । तसात् बहरेखा अइसंज्ञाही रेखा मविष्यति । हदरेखा केवछवगी इसंज्ञाही खि । शेषं झहरेखा अइसंज्ञाही मविष्यति । तसात् झहरेखा झदरेख्या वा दहरेख्या सह केवछवगी इसंज्ञाही मविष्यति । तसात् दहरेखा वा दझरेखा अन्तररेखा भविष्यति । अस्या एव दहरेखाया बदझरेखाया वर्गें ऽइसंज्ञाह आसीत् । इदम-ग्रुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ १०९ क्षेत्रम् ॥

मध्यरेखातः करणीरूपा रेखा बह्नग्र उत्पत्स्यन्ते तासां मध्ये कापि द्वितीयोत्पन्ना प्रथमानुकारा न भवति ।

यथा अबरेखा अइसंज्ञाही कल्पिता । अस्यां अझरेखा लम्बरूपा

कल्पिता । अर्जं अझे मध्यरेखा कल्पिता । पुनर् अहक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । इदं अहक्षेत्रं मध्यक्षेत्रं न भविष्यति । कुतः । मध्यक्षेत्रतुल्यम् अवरेखायां क्षेत्रं यदि क्रियते तदो-त्यक्षभुजवर्गोऽइसंज्ञाहीं भवति । अ-



हक्षेत्रोत्पन्नभुजश्च मध्यरेखास्ति । पुनर्जदरेखार्वाः अहक्षेत्रतुल्यो-ऽस्तीति कल्पितम् । इयं जदरेखा अजरेखासदृशी न भवति । पुनर्दहक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । इदं दृहक्षेत्रम् अहक्षेत्रसदृशं न भविष्यति । कुतः । अहक्षेत्रस्योत्पन्नभुजो मध्योऽस्ति । दृहक्षेत्रस्योत्प-न्नभुजो जदमस्ति । पुनर्दहक्षेत्रतुल्यो यद्रेखावर्गो भवति सापि जद्-रेखासदृशी न भविष्यति । अजरेखासदृशी अपि न भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण तद्रेखातो जङ्गरेखातुल्यं पृथक्तियते क्षेत्राणि च कियन्ते तदा तादृश्यो बहुचो रेखा भविष्यन्ति परं पूर्वानुकारा न भवेयुः।

श्रीमद्राजािषराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टे द्विजेन्द्रः श्रीमत्सन्नाद् जगनाथ इति समिभारूदितेन प्रणीते । अन्येऽसिनामि रेलागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-

र्व्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति दिब्बितः संगतोऽभूत् ॥

॥ इति श्रीसम्राङ्जगन्नायविरचिते रेकागणिते दशमोऽभ्यायः संपूर्णः॥ १०॥

९ याः तुस्याः सन्ति तासां J. २ पूर्ण V. ३ पूर्ण V.

अथैकादचोऽध्यायः॥ ११॥

॥ असिन्नेकचत्वारिंशत् क्षेत्राणि सन्ति ॥

तंत्रादौ परिभाषा ॥

- १ यस्य क्षेत्रस्य दैर्ध्य विस्तारः पिण्डश्चोपलम्यते तत् घनक्षेत्रसंज्ञकं
 मवति । इदं क्षेत्रं घरातलेषु संपूर्ण भवति ।
- २ घरातले शङ्करूपा निषण्णा या रेखा भवति तन्मूलात् सँवैतो नि-स्रता रेखा यदि मूलयोगेन समकोणमुत्पादयन्ति तदा सा रेखा घरातले लम्बो भवति ।
- ६ घरातलेऽन्यधरातलं भित्तिवत् संलमं यदि भवति तद्योगतो निस्नत-रेखाम्यां यदि समकोणो भवति तदा संलमं घरातलं लम्बवद्भवति।
- श्र ये घरातले उभयतो वर्द्धिते यदि न मिल्लतस्तदा ते समानान्तरे मवतः ।
- येषां घनक्षेत्राणां घरातलानि सजातीयानि संख्यया समानानि क्षेत्रफलेनापि समानानि स्युद्धानि समानानि सजातीयानि मैवन्ति।
- यदि तेषां घरातलानां क्षेत्रफलानि समानानि न भवन्ति तैदैतानि केवलसजातीयानि भवन्ति ।
- ७ यस्य घनक्षेत्रस्य द्वे घरातले त्रिभुजे भवतस्त्रीणि घरातलानि समा-नान्तरभुजचतुर्भुजानि भवन्ति तच्छेदितघनक्षेत्रं भवति ।
- ८ व्यासोपरि सर्वतो वृत्तप्रमणेन यद् घनफलमुत्पद्यते तद् गोलक्षेत्रं भवति ।
- ९ अनेकासघरातलानिः स्तानि स्च्यमधरातलानि ययेकत्र मिलन्ति तत् क्षेत्रं स्चीफलकशङ्कघनक्षेत्रं भवति ।

Digitized by Google

⁹ Omitted in V.; J. has अत्र for तत्र. २ दैर्घ्यविस्तारिपण्डा उपलभ्यन्ते K., A., J. ३ निष्टताः सर्वतो रेसा J. ४ J. Omits भवन्ति. ५ K., J., and A. omit तेषां. ६ तदा तानि V., J. ७ K. and A. have एक for अनेकास. ८ सूचीफळकघनं क्षेत्रं D.

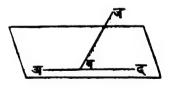
- १० समकोणचतुर्भुजक्षेत्रैक्युजैश्रमणेन बत् क्षेत्रं कूपाकारं भवति तत् समतळमस्तकपरिचिरूपं शङ्क्षचनक्षेत्रं भवति ।
- ११ अस्य क्षेत्रस्य स्थिरमुजो छम्बो मवति ।
- १२ समकोणत्रिभुजक्षेत्रस्य समकोणभुजं स्विरं कृत्वा त्रिभुजम्रमणेन यत् क्षेत्रमुत्यवते स शङ्कर्भवति ।
- १३ यदि समकोणसंबंन्धिमुजी समानी मवतस्तदा शङ्काश्वरसि स-मानकोणो मवति ।
- १ ४ यदि स्विरमुजो द्वितीयभुजादिषको भवति तदा शङ्कर्म्यूनकोणो भविष्यति ।
- १९ यदि स्विरभुजो न्यूनो भवति तदा शङ्करिककोणो भवति ।
- १६ अस्य शङ्कोः स्थिरभुज एव ढम्बो भवति ।
- १७ ज्यादिघरात्रख्योगजनितकोणो घनकोणो भवति ।
- १८ शङ्कक्षेत्रसमतलमस्तकशङ्कक्षेत्रयोः खलम्बन्यासयोर्निष्पत्तिः समाना यदि गवति तदा ते क्षेत्रे सजातीये भवतः।

॥ इति परिभाषा ॥ अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

एकस्याः सरलरेखाया एकं खण्डं धरातले एकं पिण्डे भवितुं नाईति ।

यदि भवति तदा अवर्जं सरलारेखा कल्पिता । अस्या अवसण्डं

भरातछे बजलण्डं पिण्डे कल्पितम् । धरातछे तु रेला वर्द्धयितुं शक्यते । अबरेला भरातले एव दिचह्दपर्यन्तं वर्द्धनीया । अबजरेलाअबदरेले एकरूपे भवतः । इदमशुद्धम् । अ-सादिष्टं समीचीनम् ॥



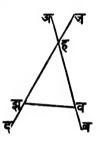
९ भुजो निषण्णो यथा भवति तद्भगणेन K., A., J. २ धरातळकोणानां योगजनितकोणो पनकोणो भवति । K., A., J. ३ प्रथमक्षेत्रम् ∇ .

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

ये द्वे सेरलरेखे मिथः संपातं कुरुतस्ते एकस्मिन् धरातले भवतः यत्रिभुजं तदप्येकस्मिन् धरातले भवति ।

यथा अवजदे द्वे रेखे इचिद्वे संगतकारिण्यो कल्पिते । पुनरनयोः

श्निव्यविद्धे कल्पिते । श्नवरेसा संस्रमा कार्या । तस्मात् हश्नवित्रभुजमेकघरातस्रे भविष्यति । यदि न भवति तदा कस्यापि भुजस्यैकं सण्डं घरातस्रे भविष्यति । द्वितीयं च पिण्डे । इदमशुद्धम् । ते कल्पिते रेसे त्रिभुजघरातस्रे स्तः । तसाचे रेसे एकस्मिन् घरातस्रे जाते । इदमेवेष्टम् ॥

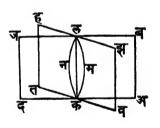


अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

द्धे घरातले यदि मिथः संपातं कुरुत एतयोः संपाते एँ-कैव सरला रेखा भवति।

यथा अबजदमेकं घरातलं हझवतं द्वितीयं घरातलम् । अद-

भुजतवभुजयोः संपातः किचिहे क-ल्पितः । बजभुजहङ्गभुजयोः संपातः छचिहे किल्पितः । यदि किचिहसंपात-छचिहसंपातयोगी रेखा लगा सा धरातलद्वयेप्येका न भवति तदैकसिन् धरातले कमलरेखा किल्पता । द्वितीय-



धरातले कनलरेखा कल्पिता । एते रेखे सरले स्तः । आभ्यां स्थान-द्वये मिथः संपातः कृतः। इदमग्रुद्धम् । तसात् कलं धरातलद्वये एकैव योज्यरेखा भविष्यति । इयमेव धरातलद्वयसंपातयोज्यरेखास्ति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

१ V. omits अथ. २ सरछे रेखे V. ३ संपातं कुरुत इति कल्पितम् J. ४ सरछेका रेखा भविष्यति J. ५ J. omits संपात. ६ सरछरेखा J. ७ J. omits अस्माकम्.

पकारान्तरम् ॥

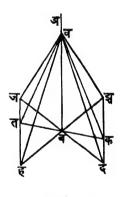
ं कचिह्नलिहि अवजद्धरातले सः । एकधरातलगतिहृद्वये एका रेखा योजयितुं शक्यते । तसात् अवजद्धरातले कलरेखा योज्या । पुनरिष कचिह्नलिहि हृझवतधरातले स्तः । असिन्निष धरातले चिह्नद्वये कलरेखा संयोजितास्ति । द्वयोश्चिह्नयोः सरला एकैव रेखा लगति। तसात् कलम् एकैव रेखा धरातल्द्वये भविष्यति॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

द्वे रेखे यद्येकिचिहे संपातं कुरुतः संपातिचिहादेको लम्बो रेखाद्वये भवति तदा यस्मिन् धरातले ते द्वे रेखे स्तस्तत्र स लम्बो लम्ब एव भवति।

यथा जदहझरेले बचिहे कृतसंपाते कल्पिते । अनयोरुपरि अब-

रेसा लम्बः किल्पतः । पुनर्बजं बहं बदं बझं समानं पृथक् कार्यम् । पुनरबलम्बोपिर विचिहं किल्पतम् । पुनर्जवं हवं झवं दवं रेसाः संयोज्याः । तत्र चत्वारि त्रिभुजानि भविष्यन्ति । तेषां भुजाः कोणाश्च मिथः समाना भविष्यन्ति । पुनर्जहरेसा दझरेसा च संयोज्या । जबहति-भुजदबझत्रिभुजयोरिप भुजौ कोणौ मिथः स-मानौ भविष्यतः । वजहत्रिभुजस्य वदझिति-भुजस्य च भुजौ कोणौ च मिथः समानौ भवि-



ण्यतः । यसिन् धरातले जदहझरेखे स्तस्तसिन् तबकरेखा बचिह-गता कार्या । पुनस्तवरेखा कवरेखा च संयोज्या । बजतित्रभुजे बदकित्रभुजे बचिह्नसंपातसन्मुखकोणयोः साम्येन बजतकोण-बदककोणयोः साम्येन च बजभुजबदभुजयोः साम्येनापि जतभुज-तबभुजो दकभुजकबभुजयोः समानौ भविष्यतः । बजतित्रभुजे वदकित्रभुजे वदवजभुजयोः समानभावित्वेन जतभुजदकभुजयो- रिष समानभावित्वेन वद्ककोणवज्ञतकोणयोः समानभावित्वेन च वत्रभुजवक्रभुजौ समानौ भविष्यतः । वक्कबित्रभुजे वत्रबित्रभुजे च मिथो भुजयोः साम्येन वबतकोणवबक्ककोणौ समानौ भविष्यतः । तसात् वबतकोणवबक्ककोणौ समकोणौ भविष्यतः ।

अनेनैव प्रकारेण तसिन्नेव धरातले बिचह्रगता रेखा कल्प्यते । अबरेखया तस्याः संपातः समकोणो भविष्यति । तसात् आबरेखा तत्र धरातले लम्बो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यासिस्रो रेखा एकस्मिन् चिहे संपातं करिष्यन्ति तत्सं-पातचिहात् यो लम्बस्तिसृषु रेखासु पतित तदा ता रेखा एकधरातले भविष्यन्ति ।

यथा बजं बदं बहं रेला बैचिहे संपातकारिण्यः कल्पिताः। अबरेला

तिसृषु रेखासु लम्बः कल्पितः । यद्येता रेखा ऍक-सिन् घरातले न भवन्ति तदा यसिन् धरातले बजबहे रेखे स्तस्तदन्यत्र घरातले बदरेखा क-ल्प्या । यसिन् धरातले अबबदरेखे स्तस्ते उभे घरातले मिथः समानान्तरे न भैवेताम् । कुँतः । बचिह्ने मिलितत्वात् । तदा बङ्गरेखानयोः सं-

म ज ज

पातरेला कल्पिता । तस्मात् अवदअवझकोणौ प्रत्येकं समकोणौ अवतः । एकं च द्विंतीयलण्डमस्ति । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समी-चीनम् ॥

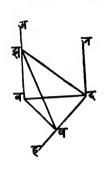
अथ षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥ यौ द्वौ लम्बावेकस्मिन् घरातले भवतस्तौ मिथः समा-नान्तरौ भवतः ।

Digitized by Google

^{9.} J. inserts तथा after समानभाषित्वेन. २. एवं तस्मिन्नेव. J. अ. विकस्पेपतिताः K., A., J. ४. एकधरातले J. ५. J. Omits मिथः.

६. स्थाताम् J. ७. J. Omits कृतः, ८. द्वितीयस्य खण्ड V., J.

यथा अबं जदम् एकत्र धरातले द्वौ लम्बौ कल्पितौ । पुनस्तस्मि-नेव धरातले बदरेसा संयोज्या । अस्यां दहलम्बः कार्यः । अवलम्बे



समानी भविष्यतः । झववकोणः समकोणोऽस्ति । तसात् झदवकोणः समकोणो भविष्यति । तसात् दहरेखा दवदझदजरेखायु लम्बो भ-विष्यति । एतास्तिस्रो रेखा एकसिन् धरातले भविष्यन्ति । बझअरेखा तसिन् धरातलेऽस्ति । तसात् अवजदे रेखे एकधरातले जाते । आम्यां वदरेखया संपातः कृतः । संपाताम्यन्तरकोणौ समकोणौ जातौ । तसात् अवजदे समानान्तरे जाते ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥

द्वाभ्यां रेखाभ्यां समानान्तराभ्यां यद्येकरेखा संपातं करोति तदेयं रेखा तयोर्द्वयोर्धरातले भविष्यति ।

यथा ह्झरेखा अवजदरेखयोः समानान्तरयोः संपातः कृतः।
तदा ह्झरेखा अवजदयोर्घरातले भिव- ज ह व
प्यति। यदि ह्झरेखा तयोर्घरातले न भवति
तदा तयोर्घरातले हवझरेखा कल्प्या ।
तसात् द्झरेखा हवझरेखे सरले वा मूल- ज इ
मिलिते जाते। इदमशुद्धम्। अस्मिदिष्टं सभीचीनम्॥

९ चैत्रक J. २ कल्पितम् J. ३ समानी J. ४ V.omits पुनर् ५ यदि न भवति J.

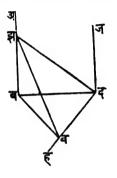
अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

द्वयोः समानान्तररेखयोरेका धरातले लम्बो भवति तदा द्वितीया रेखापि तस्मिन्नेव धरातले लम्बो भवति।

यथा अबजदरेखयोः समानान्तरयोः अबं लम्बः कल्पितः । तदा

जदोऽपि रुम्बो भविष्यति । धरातले बदरेसा संयोज्या । बदरेसायां दहलम्बद्धीनीतः । अबरेसायां झचिहं कल्पितम् । बझतुल्यं दवं प्रयक्षार्यम् । झदं झवं ववं रेसाः संयोज्याः ।

उपरितनप्रकारेण निश्चितं वद्झः समकोणो जातः । दहं द्वद्झंयोः संवन्धिघरातले लम्बो भविष्यति । अवजदयोर्धरातलेऽपि । तसात् जदं दहद्वयोर्धरातले लम्बो भवि-ष्यति । अवमप्यसिन् धरातले लम्बोऽस्ति ।



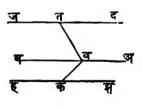
ष्यति । अवस्यस्मिन् धरातले लम्बोऽस्ति । तदा तस्मिन् धरातले जदमपि लम्बो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

र्षकया रेखया या बह्व्यो रेखाः समानान्तरा भवन्ति ताः सर्वो अपि मिथः समानान्तरा भविष्यन्ति ।

यथा जदं हझम् एते अबरेखातः समानान्तरे कल्पिते । एतास्ति-

सोऽप्येकधरातले न सन्ति । विचिद्वात् वतवको द्वौ लम्बौ निष्कासितौ । तसात् जतहकरेसे वतवकरेसयोर्धरातले लम्बौ भविष्यतः । कुतः । अबं तसिन् धरातले सम्बोऽस्ति । तत एतौ समानास्तरौ भवि-



भ्यतः । कुतः । ऍकस्मिनेव धरातले लम्बत्वात् । इदमेवेष्टम् ॥

Digitized by Google

१ V °श्च कार्यः J. २ अखं यस्मिन् घरातले G. K., A., J. ३ एका रेखा बद्दीनां रेखानां समानान्तरा भवित ता रेखा एकधरातले न भवन्ति तदा K., A., J. ४ एतस्मिभे ° K., A., J.

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

यदैककोणभुजौ तदन्यकोणभुजयोः समानान्तरौ भवतः पुनरेतौ एकधरातले न भवतस्तदेतौ कोणौ समानौ भ-विष्यतः।

यथा बकोणहकोणौ कल्पितौ । बअभुजो दहभुजस्य समाना-

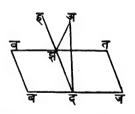
न्तरः कल्प्यः । बजभुजो हझभुजस्य समानान्तरः कल्प्यः । पुनर्बअहदौ समानौ पृथक् पृथक् कृतौ । एवं बजहसौ समानौ पृथक् कृतौ । अजं दझम् अदं बहं जझं रेखाः संयोज्याः । अदं जझं प्रत्येकं बहात् समानं समानान्तरं चास्ति । एताविष समानौ सैमानान्तरौ मविष्यतः । तदा अजदझाविष समानौ

समानान्तरौ भविष्यतः । तसात् अबजित्रभुजदहझित्रभुजयोर्भुजौ मिथः समानौ भविष्यतः । बकोणहकोणावपि समानौ भविष्यतः । ईदमेवासाकमिष्टम् ॥

अधैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

एकस्मिन् धरातले पिण्डात् लम्बनिष्कासनमिष्टमस्ति । यथा अचिद्वात् वजधरातले लम्बो निष्कासितव्यः । तत्र धरातले

बजरेसा कल्पिता। अचिहात् बजरेसायाम् अदलम्बो निष्कास्यः । दचिहात्तस्मिनेव धरातले दहलम्बो निष्कास्यः। अचिहात् दहोपरि अझलम्बो निष्कास्यः। अयं धरातले लम्बो भविष्यति। कुतः। झचिहात्



झवतरेखा तत्र धरातले बजसमानान्तरा कार्या । तसात् वजरेखा अझदत्रिभुजस्म धरातले लम्बो भविष्यति । तवमपि लम्बो भविष्यति । तदा अझं धरातले लम्बो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

९ समानान्तरितौ K., A, J. २ समानान्तरितं A., K., J. ३ समाबान्तरितौ A., K., J. ४ इदमेवेष्टम् J. ५ निष्काशन $^\circ$ J. ६ निष्काश्यः J.

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥ तत्र धरातले तत्रत्येष्टचिहात् लम्बो निष्कास्यः ।

यथा अचिहात् अबधरातले लम्बः कार्यः । पुनरन्यसात् कै-त्यितचिहात् दबलम्बो धरातले निष्कास्यः। ज द

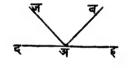
अंचिह्नात् अजं बदस्य समानान्तरकार्यम् । ईदमेवासदिष्टम् ॥

अ बद्स समामान्तरकायम् । १॥ अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥१३॥ ज

एकस्मिन् धरातले द्वौ लम्बौ एकचिह्ने न भवतः।

यथा अबअजौ लम्बौ एकसिन् चिह्ने कल्पितौ । पुनर्दहरेसा

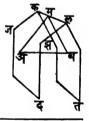
असिन् धरातले लम्बयोर्धरातले संपातयो।
गरेखा कल्पिता । तसात् बअदकोण-जअदकोणो समानौ भविष्यतः । इत्यशु-द्धम् । असिदिष्टं समीचीनम् ॥



अय चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥ एका रेखा द्वयोर्धरातलयोर्यदि लम्बरूपा भवति तदा तौ धरातलौ समानान्तरौ भवतः ।

यथा जदझतौ द्वौ धरातलौ कल्पितौ । उभयोरुपरि अवं लम्बः

किल्पतः । यदि समानान्तरौ न भवतस्तदा क-लिपतं किल्रेसायां द्वाविष मिलिष्यतः । अस्य मिन्दं किल्पतम् । पुनर्मअमबरेसे संयोज्ये । अबमित्रभुने अकोणबकोणौ प्रत्येकं समकोणौ भविष्यतः । इदमग्रद्धम् । असिदिष्टं समीचीनम् ॥



⁹ लम्बनिष्कासनं निरूप्यते A.; K. लम्बनिष्काशनं निरूप्यते J. २ कृतः D., A, J. ३ K., J. and J. have पिण्डकल्पित°. ४ निष्काश्यः J. ५ J., A., and K. insert यथ्यं लम्बः अविके पतितस्तदायं लम्बो जातः । यदि न पतित तदा after निष्कास्यः. ६ इदमेवेष्टम् J. ७ A. and K. have रेखा in place of संपातयोगरेखा.

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि द्वयोर्धरातलयोरेकस्मिन् धरातले एकचिहात् निः-स्रुते द्वे रेखे स्तर्ताद्वाद्वितीयधरातले एकचिहादेव निःस्तरे-खयोः समानान्तरे यदि भवतस्तदा ते धरातले अपि मिधः समानान्तरे भविष्यतः।

यथा बचिद्रहचिद्दे कल्पिते । बअरेखा हदरेखायाः समाना-

न्तरा बजरेखा हश्नरेखायाः समानान्तरा कल्पा।
पुनर्बनिहात् बवलम्बो हिनिहस्य घरातले निकास्यः । पुनरस्मिनेव घरातले वतरेखा हदरेखायाः समानान्तरा निकास्या । वकरेखा
हश्नरेखायाः समानान्तरा निकास्या । वतवकरेखे बजबजरेखयोः समानान्तरे भविष्यतः ।



बबरेखा वतवकरेखयोर्छम्बोऽस्ति । तसात् बअबजरेखयोरुपरि रूम्बो भविष्यति । तदा धरातल्रह्नयेऽपि रूम्बो भविष्यति । तदा ह्रे धरातले समानान्तरे भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

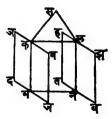
अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ये द्वे समानान्तरे घरातले एकधरातले संपातं कुरुत-स्तदा द्वे संपातरेखे समानान्तरे भविष्यतः।

यथा अवजद्धरातल्**हञ्चवत**धरातले द्वे समानान्तरे **कलमन**-धरातले संपातं कुरुत इति कल्पितम् । तस्मात्

कमसंपातरेला छनसंपातरेला एते द्वे समानान्तरे भविष्यतः । यदि न भवतस्तदा सचिहे मि-छिते कल्पिते ।

यदि एते घरातले वर्दिते सचिद्वे मिलिष्यतः। इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥ '



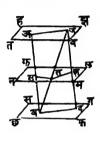
⁹ निष्काश्यः J. २ निष्काश्या J.

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

यावन्ति धरातलानि समानान्तराणि द्वयो रेखयोः संपातं कुर्वन्ति तानि रेखयोरेकनिष्पत्तौ संपातं करिष्यन्ति ॥

यथा हुझवत्रवरातलं कलमन्धरातलं सगफक्रवरातलं

तानि समानान्तराणि अबरेखाया असबचिद्वेषु जदरेखाया जशदचिद्देषु संपातं कुर्वन्तीति कस्पितानि । पुनर्बजअजबदरेखा योज्याः बजरेखा कलमनधरातले तचिहे संपातं क-रोति । पुनस्तसरेखा तद्दारेखा संयोज्या । तत्र हवकमाभ्यां अबजित्रभुजे अजतसरेखयोः सं-

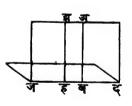


पातः कृतः । तत्र अजतसरेखे समानान्तरे भविष्यतः । एवं बदतश-रेखे समानान्तरे भविष्यतः । तसात् अससवनिष्यत्तिर्जतत्वनिष्य-त्तितुत्या जशशदनिष्पत्तितुत्या च भविष्यति । ईदमिष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

एकस्मिन् धरातले यो लम्बो भवति तत्संसक्तधरातलं तस्मिन् धरातले लम्बो भविष्यति ।

यथा अबम् एकस्मिन् धरातले लम्बोऽस्ति । अत्र एकं धरातलं संब्रमम् । उभयोर्घरातलयोर्जदसंपातरेखा उत्पन्ना । अत्र इचिहं कल्पितम् । हझल-म्बो जदरेखायाः संलग्नधरातले कार्यः । अयं प्रथमधरातले लम्बो भविष्यति । या रेखा अस्मिन् धरातले हचिह्नात् निःसता-



स्ताः सर्वी अपि प्रथमधरातले लम्बो भविष्यति । एवं यश्विहं जद-रेखायां भवति तत्रैतादृशमेव भवति । तसात् द्वयोर्धरातस्र्योः संपातः समकोणो भविष्यति ॥

१ इदमेवेष्टम् J.

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वे धरातले मियः संपातं कुरुत एकस्मिन् धरातले च लम्बरूपे भवतः। अनयोः संपातरेखापि लम्बरूपा भवि-ष्यति।

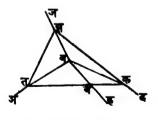
यथा अबजद्घरातछं इझवतघरातछं च अनयोः संपातरेला कछरेला कल्पिता । यस्मिन् घरातछद्वयं लम्बरू-पमस्ति तस्मिन् घरातछे यदि कछरेला लम्ब-रूपा न मवित तदा छचिहात् लमलम्बः अज्ञ-धरातछे अदसंपातरेलायां निष्कास्यः । छनल-म्बश्च तझघरातछे झयसंपातरेलायां निष्कास्यः । एते हे लमलनरेले तस्मिन् घरातछे लम्बरूपे म-विष्यतः । इदमगुद्धम् । अस्मिदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २० ॥

यदा त्रयो धरातलकोणा एकं घनकोणं वेष्टयन्ति तदा कोणद्वययोगस्तृतीयकोणादिधको भवति ।

यथा अबजकोणः अबदकोणो जबदकोणो बधनकोणं वेष्ट-

यन्ति । तदैते त्रयः कोणा यदि समाना भवन्ति तदेष्टं प्रकटमेव । यदि न्यूना- विके स्तस्तदा अवदकोणः प्रत्येकश्चेष- कोणादिषको भवतीति कल्पितम् । तत्र अबदकोणात् अबहकोणः अबज- कोणतुल्यः प्रथकार्यः । पुन्र अवभुज-



दवभुजयोरुपरि तचिहकचिहे कल्पिते । पुनस्तवकरेसा संयोज्या । पुनर्चवतुल्यं वझं प्रथकार्यम् । पुनस्तझकझरेसे संयोज्ये । एवं त्वव-

९ निष्कास्यः K., A., J. २ निष्कास्यः K., A., J. ३ इष्टं समी-चीनम् V.

शित्रमुने तबवित्रमुने च तबमुन एक एवासि । श्रवमुनववमुनौ समानौ सः । द्वयोर्भुनयोरन्तर्गतकोणोऽपि समान एव । तदा तश्च-तबौ समानौ मविष्यतः । तश्चश्क्वयोर्थोगस्तकादिभकोऽस्ति । तस्यात् शक्कं वकादिभकं मविष्यति । तस्यात् शक्ककोणो ववककोणादिभको मविष्यति । तस्यात् अवजकोणदवजकोणयोर्थोगः अवदकोणादिभको मविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

घनकोणं यावन्ति धरातलानि वेष्टयन्ति तेषां योगश्चतुः-समकोणास्यूनो भवति ।

यथा बैघनकोणं झबहकोणहववकोणझववकोणा वेष्टितं कु-वेन्ति । पुनर्हझझवहवरेखाः संयोज्याः । पुनर्हझबित्रभुजे तिचिह्नं कल्पितम् । हत-झतवतरेखाः संयोज्याः । सर्वे नवकोणा हतझित्रभुजहतवित्रभुजझतवित्रभुजेषु

नवकोणानां तेषां योगः षट्समकोणतुल्यो-

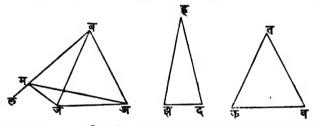
ऽस्ति । तेषु नवकोणेषु द्वौ कोणौ हचिहे द्वौ झचिहे द्वौ वचिहे स्त-स्तेषां योगो हझवत्रिभुजस्य षट्कोणा भैवन्ति ते च द्विसमकोणतुल्या भविष्यन्ति । तसात् तचिह्रस्य त्रयः कोणाश्चतुःसमकोणतुल्या भैवन्ति । षट्कोणा हबझित्रभुजहबवित्रभुजझबवित्रभुजानां ता-हशा हचिह्झिचिह्वचिद्वेम्यो भवन्ति । तेषां योगः प्रथमषट्-कोणयोगादिषको भविष्यति । तसात् बचिह्रस्य त्रयः कोणास्तचिह्न-कोणत्रयेभ्यो न्यूना भविष्यन्ति । तसात् चतुर्भ्यः समकोणेभ्यो न्यूना भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

९ तवतझौ V. २ बघनकोणो K., J. ३ °णैर्वेष्टितमस्ति । K., J. ४ तेषां नवकोणावां V. ५ मविष्यन्ति V. ६ मविष्यन्ति V. ७ तसिक्षं च चतुःसमकोणाज्य्यमस्ति । तस्मात् बिच्हं चतुःसमकोणाज्य्यमस्ति । तस्मात् बिच्हं चतुःसमकोणाज्य्यमस्ति । इदमेवेष्टम् । K., A., & J. in place of the last part.

अय द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

यदि त्रयो धरातलकोणाः समानभुजा भवन्ति तेषां प्रत्येकद्वययोगस्तृतीयादंधिकोस्ति चेत् तदा तत्कोणसम्मुख- भुजेभ्यस्त्रिभुजो भवितुमईति तत्र भुजद्वययोगो तृतीयभुजा- दिधको भविष्यति।

यथा बहतास्रयो घरातलकोणाः कल्पिताः । बअवजहदहझतव-तकाः समानभुजाः कल्पिताः । पुनर् अजदझवकतत्कोणसन्मुखभुजाः कल्पिताः । यदि सन्मुखभुजा मिथः समाना भवन्ति तदा भुजद्वय-योगस्तृतीयभुजादिषको भविष्यति । यदि न्युनािषकास्तदा वकम् अ-



भिकं किल्पतम् । जबरेसातो बिचिद्दे जबलकोणो हकोणतुत्यः कार्यः। पुनर्बमं बजतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्जमअमरेसे संयोज्ये । तसात् जमभुजो दझभुजतुल्यो भिवष्यति । अजजमयोगोऽसादिभकोऽसि । अमं वकादिभकमसि । कुतः । अबमकोणो बकोणहकोणयोगतुल्य-स्तकोणादिभकोऽसि । भुजाश्च मिथः समानाः सन्ति । तसात् अजजमयोगो वकादिभको भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

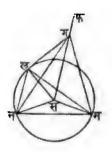
अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

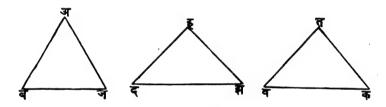
तादृशत्रयधरातलकोणेभ्यः पृथक् घनकोणचिकीर्पास्ति येषां धरातलकोणानां योगश्चतुभ्यः समकोणेभ्यो न्यूनः स्यात् प्रत्येककोणद्वययोगस्तृतीयकोणादिधकः स्यात् ।

⁹ समकोणाः समभुजा J. २ °दिधको भवति तदा V.

यथा अहतत्रयो घरातलकोणाः कल्पिताः । एषां भुजाः समानाः कार्याः । ते अवअजदहहझतवतकाः कल्पिताः । पुनरेतत्कोणस-

न्मुलभुजेम्यो बजदझवकसंज्ञेम्य एकं त्रिमुजं कार्यम् । तित्रभुजं लमनं किल्पतम् । तत्र लमभुजो बजतुल्यो मनभुजो दझभुजतुल्यो लनभुजो वकभुजतुल्यश्च किल्पतः । पुनरिसन् । त्रिमुजे लमनवृत्तं कार्यम् । अस्य केन्द्रं सिचिहं किल्पतम् । पुनः सलसमसनरेखाः संयोज्याः । बजं लमतुल्यमित । बअभुजजअभुजौ लस-





भुजसमभुजतुल्यौ मविष्यतो वा न्यूनौ वाऽधिकौ भविष्यतः । यदि समानौ स्तस्तदा अकोणो लसमकोणतुल्यो भविष्यति । एवं इकोणो मसनकोणतुल्यो भविष्यति । तकोणश्च नसलकोणतुल्यो भविष्यति । तदा त्रयाणां कोणानां योगः सकोणत्रयतुल्यो भविष्यति । तदा चतुर्भिः समकोणेस्तुल्यो भविष्यति । कल्पितं च कोणत्रययोगश्चतुर्म्यः सम-कोणेम्यो न्यूनोऽस्ति । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनर्यदि बअभुजजअभुजो लसभुजसमभुजयोर्न्यूनौ स्तो बज-भुजो लमभुजे स्थाप्यस्तदा अकोणो लसमित्रभुजान्तः पतिष्यति । तसात् अकोणो लसमकोणादिषको मिवष्यति । एवं हकोणो मसन-कोणादिषको मिवष्यति । तकोणो नसलकोणादिषको मिवष्यति । तसात् त्रयाणां कोणानां योगः समकोणचतुष्टयादिषको भविष्यति ।

तसात् प्रैत्येककोणानां भुजो व्यासाद्वीदिषको भविष्यति । पुनः सिष्ठात् सफलम्बो वृत्ते शक्कुवत् करूप्यः । पुनस्तसात् लम्बात् सगं तै। दशरेखायास्तुल्यं पृथकार्यं यस्या वर्गो लैसवर्गयुतः अववर्गतुत्यो भवेत् पुनर्गलगमगनरेखाः संयोज्याः । तसात् गघनकोण इष्टो मविष्यति । कुतः । यैतस्रयः कोणा ये घनकोणसमाश्चिष्टास्तेषां मुजा इष्टानां त्रयाणुं कोणानां भुजैः समानाः सन्ति । एतच्चयाणां सन्मुख्युजाश्च इष्टकोणत्रयसन्मुख्युजसमानाः सन्ति । तसौदेते त्रयः कोणा इष्टकोणत्रयसमाना भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ।

अय च अकोणो छसमित्रिभुजान्तः कुतः पति । यतः प्रत्येकं छसभुजमसभुजयोर्वअभुजतुल्यजअभुजतुल्यं पृथक्कियते । पुनर्छनिन्हमिन्हं केन्द्रं कृत्वा बआतुल्यजआतुल्यव्यासार्थ कृत्वा
वृत्तद्वयं कार्यम् । एते द्वे वृत्ते त्रिभुजान्तः संपातं करिष्यतः । यदि
त्रिभुजान्तः संपातं न करिष्यतस्तदा रुमभुजतुल्यवजभुजो बआभुजजअभुजयोगान्यूनो न मविष्यति । इदमशुद्धम् ।

यदि वृत्तसंपातिचा छिन्द्रमिना च रेखे संयोज्येते तदा वअ-जित्रभुजतुल्यं लसनित्रभुजान्तरेकं त्रिभुजमुत्पन्नं भविष्यति । तसा-दुत्पन्नत्रिभुजमस्तककोणः सकोणादिषको भविष्यति । मस्तककोण-सन्मुखमुजोत्पन्नी द्वौ कोणौ लकोणमकोणयोर्क्यूनौ भविष्यतः ॥

अथ चतुर्विश्वतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

समानाम्तरघरातलघनक्षेत्रसन्मुखधरातलानि समानभु-जानि भवन्ति ।

यथा धनक्षेत्रम् अवं कल्पितम् । अजहद्वधरातलब्झवतघरातले

१ प्रत्येकं A. २ तथा प्रयक्षार्य यथास्य वर्गः A., K., J. ३ अववर्गस्त्रस्व-र्गयोगेंगतुस्यो मवति A., K., J. ४-५ गकोणत्रयाणां तिस्रो भुजाः कल्पितघरा-तककोणत्रयसन्भुवभुजैः समानाः । A., J., and K. in place of the sentence marked. ६ J. omits एते. ७ तस्मादुरमत्रिभुजमस्तकको-णसन्भुवभुजोत्पत्रौ द्वी कोणी स्वकोणमकोणयोन्यूंनौ भविष्यतो मस्तककोणः स्वको-शाद्यिको भविष्यति । K., A.

सन्मुलधरातके कल्पिते । अनयोर्भुजाः समाना मविष्यन्ति । कुतः । अजहद्रधरातके झजअब-धरातक्ष्यहृद्दत्वधरातके च समानान्तरिते पति-ते सः । एवं झबह्जधरातक्ष्यतद्वअधरातके पतिते सः । तदा जअसंपातरेसाहृद्दसंपातरेसे समानान्तरे भविष्यतः । अनेनैव प्रकारेण जह-



संपातरेखाअदसंपातरेखे मिथः समानान्तरे भविष्यतः । एवं श्रवज्ञतन् संपातौ समानान्तरौ भविष्यतः । एवं श्रवज्ञतसंपातौ समानान्तरौ भविष्यतः । तसात् अजहद्धरातल्रबश्चवत्रधरातले च समानान्तर-समानमुचे मविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

समानान्तरधरातलस्य घनश्चेत्रस्य मिश्रः सन्मुखधरात-लयोर्मध्यगतसमानान्तरं घरातलं भागद्वयं चेत् करोति तदा अनयोः खण्डयोर्निष्यत्तिर्धरातलखण्डयोर्निष्यत्तिसमाना भविष्यति ।

यथा अबं घनक्षेत्रं किल्पतम् । अस्य वतअकघरातळबळमन-सन्मुखघरातळयोः समानान्तरघरातळेन जदहश्चेव खण्डद्वयं कॅंतमिति किल्पतम् । तत्र अजसण्डहब-खण्डयोर्निष्पत्तिः अश्चघरातळखण्डनहघरातळखण्डयो-निष्पत्तितुल्या मविष्यति ।

अस्योषपत्तिः ।

अमभुज उभयदिशि सगपर्यन्तं वर्द्धनीयः । हआ-दिशायां अफं फर्छं हअतुल्यं पृथकार्यम् । हमदि-श्रायां मखं खरं हमतुल्यं पृथकार्यम् । क्षेत्रं संपूर्ण

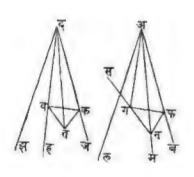
९ यतः K., A. २ घरातछं श्राज्ञख्यव्यरातल्खहृद्तघरातल्योः समानान्त-रालयोः समानान्तरेणेदं पतितमस्ति । A., K., J. ३ K., A., and J. have भूम्योः instead of धरातल्खण्डयोः. ४ कृतमस्तीति J. ५ अज्जधरातल्खण्ड-योर्निष्पत्मा तुल्या भविष्यति । K., A. ६ पूर्ण J., V.

कार्यम् । यदि संपूर्णं छङ्गम् अझयावद्धातरूपं हनयावद्धातरूपय रङ्गस्य समानं भवति तदा छजं घनक्षेत्रं अजघनक्षेत्रयावद्धातरूपं हवघनक्षेत्रयावद्धातरूपेण जरघनक्षेत्रेण समानं भविष्यति । यदि छङ्गं रङ्गाक्यूनं भवति तदा छजं घनक्षेत्रं जरघनक्षेत्राक्यूनं भविष्यति । यदि अधिकं स्यात्तदा इदमप्यधिकं भवति । तसात् अझनह-धरातलसण्डयोर्निष्पत्तिः अजहवघनक्षेत्रसण्डयोर्निष्पत्त्योः समाना भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ षड्विंशित्तितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ एकरेखैकचिह्रोपरि घनक्षेत्रकोणतुल्यकोणचिकीर्पास्ति ।

यथा अबरेखातः अचिह्ने ताहशो दघनक्षेत्रकोणतुल्यः कोणः

कर्तव्योऽस्ति । यथा जदहं ज-दशं हदशं घरातलकोणाः वेष्ट-यन्ति । तत्र दहरेखायां विचढं कल्पितम् । पुनर्वचिद्वात् जदश-कोणघरातले वतलम्बो निष्कासः । पुनस्तदरेखा योज्या । पुनर्वअरे-खाया अचिद्वे बअलकोणबअम-कोणी जदशकोणजदतकोणतुल्यो



कार्यो । पुनरमरेसाया दततुत्यम् अनं पृथकार्यम् । पुनर्निचिहात् नसलम्बो बअलकोणघरातले निष्कास्यः । पुनरसालम्बात्तवतु-स्यं नगं पृथकार्यम् । पुनर्गअरेसा संयोज्या । तसात् अघनक्षेत्र-कोणः अस्योकिमिष्टो भविष्यति ॥

अस्योपपत्तिः ।

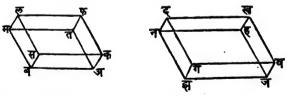
दजरेलायां कचिद्वं कल्पनीयम् । पुनर्वकरेला कतरेला संयोज्या

९ तुल्पकोणनिकीर्षास्ति K. २ असमिष्टो K., A.

पुनर् अवरेसातो दकतुल्यम् अफं पृथक्कार्यम् । पुनर्गफनफरेसे संयोज्ये । अनं दततुल्यं नगं वततुल्यमितः । अनगकोणदतव-कोणौ प्रत्येकं समकोणौ सः । तसात् अगं दवसमानं भविष्यति । पुनरि वअमकोणजदतकोणौ समानौ कृतौ सः । फअभुजअन-भुजौ कद्मुजदत्भुजयोः समानौ सः । फनमुजः कत्मुजेन समानौ भविष्यति । नगभुजतवभुजौ पूर्वं समानावास्ताम् । फनगकोणकत-वकोणौ प्रत्येकं समकोणौ सः । तसात् फणभुजः कवभुजेन समानौ जातः । फअभुजअगभुजौ कद्भुजदवभुजयोः समानावास्ताम् । त-सात् फअभुजअगभुजौ कद्भुजदवभुजयोः समानावास्ताम् । त-सात् फअभुजअगभुजौ कद्भुजदवभुजयोः समानावास्ताम् । त-सात् फअगकोणकदवकोणौ समानौ भविष्यतः । एवं निश्चीयते गअलकोणवद्भकोणौ समानौ भविष्यतः । वअलकोणजद्भकोणौ समानौ कृतावास्तां । तसात् त्रयो धरातलकोणा अधनकोणसंलमा दघनकोणनेष्टकानां त्रयाणां धरातलकोणानां समाना भविष्यन्ति । पुनर् अधनकोणो दघनकोणेन समानो भविष्यति । इदमेनेष्टम् ॥

अथ सप्तर्विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥ एकरेखायां समानान्तरघनक्षेत्रसजातीयघनक्षेत्रस्य चिकीर्षास्ति ।

यथा अबरेसायां जदैसमानान्तरधरातल्घनक्षेत्रसर्जातीयघन-क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति । पुनर् अचिद्वे जकोणतुल्यो घनकोणः कार्यः । पुन-र्जञ्जवनिष्पत्तिर्जुल्या अवअकयोनिष्पत्तिः कार्या । जञ्जक्रयो-



निष्यत्तितुत्या अवअतयोर्निष्यत्तिः कार्या । पुनस्तवधरातलं पूर्णं कार्यम् । तिचहवचिहमचिहेभ्यः तफरेसामलरेसावसरेसा अकरे-

१ ज़ब्धनक्षेत्रसजातीयधनक्षेत्रं कृतम् । K., A. २ समानजातीय° D. मा॰ १९

सया तुल्याः समानान्तराश्च कार्याः । पुनः फकफलकसलसरेखाः संयोज्याः । तसात् घनक्षेत्रमिष्टं संपूर्णं भविष्यति । इष्टघनक्षेत्रसजा-तीयं च भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रस्य मिथः सैन्मुखधरातलयोः कर्णगतधरातलमर्द्धं करोति । तच्छेदितक्षेत्रद्वयमुत्पादयति च। यथा अवघनक्षेत्रम् । तअववसनमुखधरातलयोजदकर्णह्झकर्ण-गतजदह्झभरातलेन खण्डद्वयं कृतम् । अतो जाते छेदितक्षेत्रे समाने भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

अंसिन् छेदितक्षेत्रे घनक्षेत्रसन्मुखघरातलानि वेष्टितानि सन्ति सन्मुखभूतलानि मिथः समानानि सन्ति । कर्णगतधरातलं द्वयोरेकमेबास्ति । त्रिभुजेऽपि समाने स्तः । कुतः । ये धरातले कर्णगतधरा-तलेनार्द्विते स्तस्तेषामेते त्रिभुजे अर्द्धस्तपे स्तः । तसात् उमे क्षेत्रे समाने स्तः । इदमेवेष्टम् ॥

अनेनेदं निश्चितं छेदितक्षेत्रं यदि समाना-न्तरधरातलपूर्णं क्रियते तदा छेदितघनक्षेत्रं संपूर्णघनक्षेत्रस्यार्द्धं भवति ॥

अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

एकस्मिन् धरातले समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि मुख-रेखान्तर्गतानि यावन्ति सन्ति तेषां लम्बाश्चेत्समाना भवन्ति तानि घनक्षेत्राणि समानानि भवन्ति ।

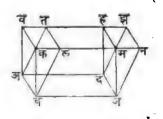
यथा बहबझे द्वे घनक्षेत्रे अबजद धरातलोपरि कल्पिते । वझ-

⁹ सन्मुखकर्णगतसन्मुखधरातलं K., A. २ D. omits मुखरेखान्त-र्गतानि.

रेखाकनरेखयोरन्तरे कल्पिते। अनयो-र्छम्बो यदि समानौ भवतस्तदेते घन-क्षेत्रे समाने भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

अलच्छेदितघनक्षेत्रं दनच्छेदितघ-नक्षेत्रं च समानमस्ति । कुतः । अवत-



त्रिभुजदह्मित्रभुजयोः समानत्वात् । बक्तलित्रभुजजमनित्रभुजे च समाने स्तः । वकलत्वधरातलं हमनझधरातलं च समानमस्ति । अबक्तवधरातलं दजमहधरातलं च समानमस्ति । अबलतधरातलं दझनजधरातलं च समानम् । एतयोः शेषं छेदितधनक्षेत्रे योज्यते । तदा द्वे घनक्षेत्रे मिथः समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

एकस्मिन् धरातले यावन्ति समानान्तरधरातलानि घन-क्षेत्राणि भवन्ति समानलम्बानि च रेखाद्वयान्तर्गतानि न भवन्ति तदैतान्यपि समानानि भवन्ति ।

यथा बहबझे द्वे घनक्षेत्रे अबजद्धरातले कल्पिते। एकस्य मुखं लहं द्वितीयस्य मुखं सझं कल्पितम्। अन-योर्लम्बो समानो स्तः। तदैतौ समानौ भवि- अव क्या म

अस्योपपत्तिः ।

कसरेला नचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया छत-रेला च मचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया । गृहरेला

विच्हपर्यन्तं वर्द्धनीया । पुनर् अमबनद्वजफरेखाः संयोज्याः । तदा ववं घनक्षेत्रमुत्पन्नं भविष्यति । अस्य मुखं नवमस्ति । इदं घनक्षेत्र-

⁹ Omitted in K., A. 3 Omitted in K., A.



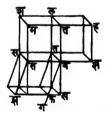
निष्टक्षेत्रद्वयेन सार्द्धमेकस्मिन् धरातलेऽस्ति । द्वयो रेखयोरन्तर्गतमस्ति । इदमुत्पन्नं घनक्षेत्रं प्रत्येकं घनक्षेत्रेण समानं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि चेत् समानधरातले भव-न्ति समानलम्बानि चेद्भवन्ति निजधरातले लम्बरूपाणि भवन्ति तदा समानानि भवन्ति ।

यथा बकझले द्वे घनक्षेत्रे अबजदघरातले हझवतघरातले स्तः । झबरेला सचिद्वपर्यन्तं वर्द्धनीया । अद्युल्यं वसं प्रयक्कार्यम् । वचिहोपरि सवगकोणो दअवकोणतुल्यः कार्यः । अबतुल्यं वफं प्रथकार्यम् । वतअनो समानलम्बौ दअवधरातले सवगघरातले स्तः ।
तसात् वकोणअकोणौ घनकोणौ समानौ भविष्यतः ।





पुनः फसघनक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम्। इदं बकघनक्षेत्रतुल्यं मविष्यति ।
पुनः सचिद्वात् समरेला तवरेलायाः समानान्तरा कार्या । इतं तथा
वर्द्धनीयं यथा मचिद्वे मिलति । तवं तथा वर्द्धनीयं यथा खचिद्वे
मिलति । पुनर्वशाखसे घनक्षेत्रे पूर्णे कार्ये । तदा खसफसघनक्षेत्रे
समाने भविष्यतः । तसात् खसबकघनक्षेत्रे समाने भविष्यतः ।
झलखसनिष्पत्तिर्वशेन तथास्ति यथा झतखसयोर्निष्पत्तिर्वमेनास्ति ।
खसफसौ समानौ स्तः । तसात् झलफसतुल्यघनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिझलबक्योर्निष्पत्तिरपि वशेन तथास्ति यथा झलफसतुल्यघनस्तिन्

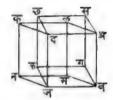
९ झलसफयोझेलबकदुल्ययोर्निष्यत्तिवेदोन तथास्ति यथा झलफसपरातस-योझेलबकधरातलयोख्यस्ययोर्निष्यत्तिवेदा° J.

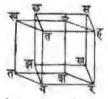
ख्योनिष्पत्तिक्रील्डबक्षधरातस्त्रयोरपि निष्पत्तिर्वश्वधरातलेनास्ति । तदैते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि समानधरातले चेन्नवन्ति पिण्डाश्च तद्धरातले लम्बरूपा न भवन्ति लम्बाश्च तुल्या भवन्ति तदैतानि समानानि भवन्ति ।

यथा वैकरखे बदरतधरातले कल्पिते । यदि असबगजफदछ-लम्ना बदभूतलात् मके भूतले चेत् निर्फास्या इसरखवझतछ-





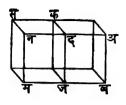
छम्बाः शस्त्रे मृतले च नि^हकास्या उमे क्षेत्रे पूर्णे कार्ये । तदा बकव-छे समाने भविष्यतः । एवं हि रखरछे समाने भविष्यतः । बछरछे समाने आस्ताम् । तसात् बकरखे अपि समाने भविष्यतः । इद-मिष्टम् ॥

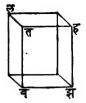
अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणां यदि लम्बाः समाना भव-न्ति तदा तेषां निष्पत्तिर्धरातलनिष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा बकझलघनक्षेत्रयोविदझते उमे धरातले कल्पिते । पुन-जीदरेखोपरि झतधरातलतुल्यजनधरातलं कार्यम् । अदनं संपूर्णा सरलेकरेखा भवति । पुनर्जसं घनक्षेत्रं पूर्ण कार्यम् । यदि जसघन-

⁹ Omitted in A., and K. २ A. K. and J. have द्वा in place of ₹ althrough. ३ A., K. and D. insert कृतः after कल्पिते; V. has also कृतः on the margin. ४ निष्कार्यन्ते J. ५ तसात् V.



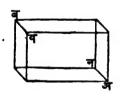


क्षेत्रे बक्षधनक्षेत्रे समानलम्बे समानधरातले च भवतः तैदा जसघन-क्षेत्रं झलघनक्षेत्रेण समानं भविष्यति । कुतः । धरातलयोर्लम्बयोश्च साम्यात् । जसघनक्षेत्रबक्षघनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्धरातलयोर्निष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवेष्टम् ॥

अथ चतुर्स्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रयोः पिण्डौ स्वस्वधरातलयोर्छ-म्बरूपौ यदि भवतो घनक्षेत्रे समाने च भवतस्तदा धरात-लयोर्निष्पत्तिर्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भवति यदि तयो-रेतैद्रूपा निष्पत्तिः स्यात्तदा ते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः।

यथा अबजद्वनक्षेत्रे अवजलयोर्धरातलयोः कल्पिते । वबिपण्ड-लद्दिपण्डौ लैम्बरूपौ यदि समानौ भवतस्तदैतयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्पत्ति-र्द्वयोर्धरातलयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । यदि घनक्षेत्रे समाने भवत-





र्स्तयोर्धरातलेऽपि समाने भविष्यतस्तदैतयोर्धरातलयोर्निष्पत्तिर्लम्ब-योर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यद्येतद्रूपानिष्पत्तिः स्यात्तदा ते

१ तस्मात् V. २ ईटशी K. and A. ३ J. drops लम्बरूपी. ४ °स्त-दातयो° J.

द्वे घरातले समाने भविष्यतः । तसात् द्वे घनक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । यदि वबलदौ लम्बौ समानौ न स्तः लैदमिषकं किल्पतम् । तसात् वबतुल्यं लगं पृथकार्यम् । लगं तसं जसं कशं ववतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्गसं खसं सशं शगं रेसाः संबोज्याः । तसात् अबं जगमुभे घनक्षेत्रे समानलम्बे मिव-ष्यतः । तदैतयोर्निष्पत्तिर्धरातलयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । यदि कद्धरातलकगधरातले जद्धनक्षेत्रजगधनक्षेत्रयोर्भूमी कल्पिते अन-योर्लम्बौ समौ भविष्यतः । जदजगयोर्निष्पत्तिः कदकगयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । समाना मविष्यति लदलगयोरिष्

यदि अबजदे घनक्षेत्रे समाने भैविष्यतस्तदैतयोर्निष्पतिर्ज्जगघनः क्षेत्रेणैकरूपा भविष्यति । इयम् अवधरातलजलधरातलयोर्निष्पति-तुल्या भविष्यति । लदरेखाया निष्पत्तिर्लगरेखया वबरेखया चैकरूपा-स्ति । इयं विलोमनिष्पत्तिर्जाता । यदि अवजलनिष्पत्तितुल्यघनक्षेत्रयोः अवजगयोर्निष्पत्तिर्जद्जगनिष्पतितुल्यलदलगयोर्निष्पत्तितुल्या भवति तदा उभे घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

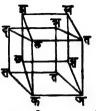
अथ पञ्चत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

समानान्तरधरातले उभे घनक्षेत्रे स्तस्तयोः पिण्डे धरा-तले लम्बरूपे न भवतस्ते द्वे घनक्षेत्रे समाने भवतस्तदा तयोधरातलयोनिंष्पत्तिर्लम्बयोविंलोमनिष्पत्तितुल्या भवति यद्येताहशोनिंष्पत्तिर्भवति तदा द्वे घनक्षेत्रे समाने भवतः।

यथा अवजदे द्वे घनक्षेत्रे अवजलयोर्धरातलयोः कल्पिते । पुन-र्धरातलयोः कोणचिह्नेभ्यः अफझखवरगहलम्बास्तथा जझकछल-झतखलम्बाः निष्कास्याः । पुनर् अरजझे द्वे घनक्षेत्रे अवजदयो-

१ J. inserts तदा. २ J. has समाने. ३ भवतः J. and V.





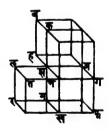
र्षनक्षेत्रयोः समाने संपूर्णे कार्ये । अरजङ्गयोः क्षेत्रयोर्निश्चयेनेष्टसिद्ध-मस्ति । तसात् अवजद्योर्घनक्षेत्रयोरि । इष्टमसाकं निश्चितं भवि-ष्यति । कुतः । धरातछ्छम्बयोः साम्यात् । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रयोः सजातीययोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति ।

यथा अबजदे वनक्षेत्रे किस्पते । तत्र अझजतयोर्निष्पत्तिः कझ-सत्तयोर्निष्पत्तितुल्या हैझवतनिष्पत्तितुल्या च किस्पता । पुनहेझरेसा वर्द्धनीया । वत्ततुल्यं झनं कार्यम् । पुनः कझरेसा वर्द्धनीया । सत्त-तुल्यं झमं कार्यम् । पुनर्गकफझस्त्रलानि घनक्षेत्राणि संपूर्णानि कार्याणि । पृषु घनक्षेत्रेषु द्वे घनक्षेत्रे क्रमेणैकैकं विहाय चेद्रुद्धेते तदा





तेऽभिमुल्खसमानान्तरधरातलेन कृतसंपाते भविष्यतः । खल्डघनक्षेत्रं जद्यनक्षेत्रस्य समानं भविष्यति । तसात् अवगकघनक्षेत्रनिष्यत्ति-र्श्वहञ्चननिष्पत्तितुल्या भविष्यति । गकफज्ञघनक्षेत्रनिष्पत्तिः कज्ञज्ञस्य-

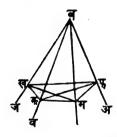
१ ह्हाचत्वोर्निष्पत्ति V. २ V. has सन्मुख for अभिमुख. ३ J.

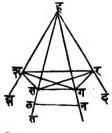
निष्पतितुत्या भविष्यति । फञ्चघनक्षेत्रजद्यनक्षेत्रतुत्यखरुघनक्षेत्रन्योर्निष्पत्तिः अञ्चञ्चलिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अञ्चजद्घनन् क्षेत्रनिष्पत्तिर्भुजयोर्निष्पत्तेर्घनतुत्यास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७ ॥

समानकोणधरातलद्वये चेन्निषणणे द्वे रेखे भवतस्तत्र भुज-द्वयरेखासंपातजनितकोणौ द्वितीयरेखाभुजद्वयसंपातजनित-कोणाभ्यां यथाक्रमं चेत्समानौ भवतः पुनर्निषण्णरेखातः कस्मादपि चिहादेको लम्बो धरातले नेयः पुनर्लम्बनिपातात् कोणपर्यन्तं रेखा कार्या तत्रास्यां रेखायां निषण्णरेखयोत्पन्नौ कोणो तदा समानौ भविष्यतः।

यथा अवजं दहशं द्वी धरातलकोणी कल्पिती। तत्र ववहते रेखे तथा निषण्णे कल्पिते यथोत्पन्नः अवयकोण उत्पन्नदहश्रकोणेन समानो भवति । एवं जववकोणो शहतकोणेन समानो भवति । पुनर्ववरेखाया हतरेखाया कचिहलचिद्वाभ्यां कमलम्बलनलम्बी अवजकोणधरातले दहश्रकोणधरातले मचिहनचिहस्थाने पतिताविति कल्पितो । पुनर्मवनहे द्वे रेखे योजिते । तसात् मववउत्पनकोण-नहतउत्पनकोणो मिथः समानो भविष्यतः।





अत्रोपपत्तिः ।

बकं हैसं तुल्यं कार्य यदि बकहली समानी न भवतः । पुनः

१ **हस**तुत्यं J.

भा॰ २०

सिवहात् सगलम्नो हनरेसायां नेयः । पुनर्मिवहगिवहाम्याम् अबरेसादहरेस्योरुपरि मफगरौ द्वौ लम्नौ नेयौ । पुनर्जवझहरेस्योरुपरि मखगरौ द्वौ लम्नौ नेयौ । पुनः फखरशकफसरकखसशरेसाः संयोज्याः । तसात् बक्वर्गः कमवर्गबमवर्गयोर्थोगेन समानो
नोऽस्ति । मबवर्गस्तु मफवर्गफबवर्गयोर्थोगेन समानो भविष्यति ।
तसात् बकवर्गः कमवर्गमफवर्गफबवर्गाणां योगेन समानो भविष्यति ।
तसात् कफम् अबे लम्बो भविष्यति । अनेनैव निश्चितं
कखं जबे लम्बो भविष्यति । सरं दहे लम्बो भविष्यति ।
सरं झहे लम्बो भविष्यति । बफकित्रमुने हरसित्रमुने बकोणहकोणौ समानौ सः । फकोणरकोणौ प्रत्येकं समकोणौ सः । बकमुजइसभुनौ मिथः समानौ सः । तदा बफं हरं तुल्यं भविष्यति ।
फकं रसतुत्यं भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण निश्चितं बसं इश्रातुल्यं भविष्यति । तसात् बफखित्रभुजे हरशित्रभुजे बकोणहकोणयोः साम्यात् कोणयो-भुजयोः साम्याच फखरशो समानौ भविष्यतः । फखरशभुजयो-रुपरितनकोणो मिथः समानौ भविष्यतः । मफखित्रभुजे गरशित्र-भुजे पूर्वकोणाः समकोणेभ्यश्चेच्छोध्यन्ते तदा द्वौ कोणौ द्वयोः को-णयोः समानाववशिष्यतः । फखरशभुजौ च समानौ स्तः । तसात् फमरगौ समानौ भविष्यतः । फकं च रस्ततुल्यमित । यदि फकवर्गरसवर्गयोः फमवर्गरगवर्गो चेच्छोध्येते तदा मकवर्गगस-वर्गो समानाववशिष्यतः । पुनर्भकवर्गगसवर्गो बकहससमानवर्गयोः शोध्येते तदा शेषं बमवर्गगहवर्गो समानाववशिष्यतः ।

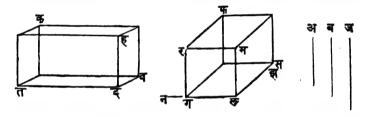
पुनर्निश्चयः कार्यः । बकमित्रिभुजे हसगित्रभुजे भुजा मिश्रः समानाः सन्ति । तसात् मबवकोणनहत्तकोणौ समानौ भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

१ पुनरेतौ वर्गी बकहस्तवर्गयोः.

अथाष्ट्रत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८॥

यदि मिथो द्वे घनक्षेत्रे समानकोणे भवत एकघनक्षेत्रस्य त्रयो भुजा एकरूपनिष्पत्तौ यदि भवन्ति द्वितीयघनक्षेत्रस्य त्रयो भुजाः प्रथमभुजत्रयमध्ये मध्येनिष्पत्तितुल्याश्चेद्भवन्ति तदा ते द्वे घनक्षेत्रे मिथः समाने भविष्यतः ।

यथा अवजास्तिस्रो रेखा एकरूपनिष्पत्तौ किल्पताः । पुनर्दहरेखा अरेखातुल्या किल्पता । पुनर्दिचिह्ने एको घनकोणः कल्प्यः । पुन-देवसुजो बतुल्यः कार्यः । दत्तभुजश्च जतुल्यः कार्यः । पुनर्दकघन-क्षेत्रं समानान्तरसुजं पूर्णं कार्यम् । पुनर्छमरेखा बतुल्या किल्पता ।



छिनिहोपरि एकघनकोणो दकोणतुत्यस्तथा कार्यो यथा मलनकोणो हदतकोणतुत्यो भवति । मलझकोणश्च हदवकोणतुत्यो भवति । झलनकोणो वदतकोणतुत्यो भवति । पुनर्लसलगौ बतुत्यो पृथक् कार्यो । पुनर्लफघनक्षेत्रं पूर्णं कार्यम् । दकं घनक्षेत्रं लफघनक्षेत्रं मिथः समानं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि द्वलसमानभुजौ पिण्डौ कल्पितौ तदा द्कं घनक्षेत्रं लफं घनक्षेत्रं हतमगघरातलयोर्निष्पत्तौ भविष्यतः । हतमगौ मिथः समानौ स्तः । कृतः । हदतकोणमलगकोणयोर्मिथः साम्यात् । दहभुजम-

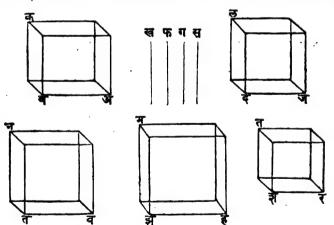
⁹⁻समानकोणे द्वे घनक्षेत्रे V., and J. २ मध्यनिष्पत्तिभुज° (मध्यभुज-निष्पत्तिः?) J.

लभुजनिष्पत्तिलेगभुजदतभुजयोः निष्पत्त्या तुल्यास्ति । तसात् द्वे धनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥

यदि द्वयो रेखयोः सजातीयसमानान्तरधरातले घनक्षेत्रे भवतोऽन्ययोर्द्वयो रेखयोः सजातीयसमानान्तरधरातले घन- क्षेत्रे यदि भवतो यद्येताश्चतस्रो रेखा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तदैतानि घनक्षेत्राण्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । यदि घनक्षे- त्राण्येकनिष्पत्तौ भवन्ति तदा रेखा अप्येकनिष्पत्तौ भवि- ष्यन्ति ।

यथा अवजदयोरुपरि अकजले द्वे घनक्षेत्रे सजातीये कल्पिते। हमवतयोरुपरि हमवने द्वे अन्ये घनक्षेत्रे कल्पिते। पुनरेताश्वतको रेखा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः। पुनरवजदनिष्पत्तितुल्या जदरेखा सरेखानिष्पत्तिः कल्पिता। सरेखागरेखयोर्निष्पत्तिः कल्पिता। हम-



वतनिष्पत्तितुत्या वतफरेसानिष्पत्तिः कल्पिता । फेरेसाखरेसयोरपि निष्पत्तिः कल्पिता। तदा अकजलघनक्षेत्रयोनिष्पत्तिः अबगरेसानिष्प-

[।] J. inserts तथेव.

त्तितुत्या भविष्यति । हमवनधनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्ह्झखरेखयोर्निष्पत्तितु-त्या भविष्यति । अवगरेखानिष्पत्तिर्ह्झखरेखानिष्पत्तितुत्यास्ति । तसादेतानि घनक्षेत्राण्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

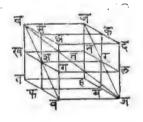
पुनरेतानि घनक्षेत्राण्येकरूपनिष्पत्तौ कल्पितानि । अबजदनिष्पति-ईझरशतुल्या कार्या । रशोपिर रतं घनक्षेत्रं वनघनक्षेत्रवत् कार्यम् । इदमपि हमघनक्षेत्रवत् भविष्यति । अकजल्योर्निष्पत्तिर्हमरतयो-निष्पत्तितुल्यास्ति । हमवनयोर्निष्पत्तितुल्यासीत् । तसात् वनरते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । सजातीये आस्ताम् । तसात् वतरेसा रशरेस्वा समाना जाता । तदैता रेखा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४० ॥

घनहस्तक्षेत्रस्य मिधः सन्मुखधरातलयोर्भुजानामर्द्धं कार्य-मर्द्धचिद्वेषु धरातलद्वयं मिथः संपातकेर्तृ घनहस्तच्छेदकं कार्यं तदा धरातलयोः संपातरेखाघनहस्तकर्णयोः संपातो भविष्यत्यर्द्धे।

यथा अबं घनहस्तः कल्पितः । दहझते द्वे सन्मुखधरातले

कल्पते । द्वयोर्धरालयोर्भुजानां कचिहल-चिह्नमचिह्नचिहेषु तथा सचिह्नगचिहफ-चिह्नखचिहेष्वद्धं कृतम् । अर्द्धचिहेषु कफ-धरातललखघरातले संमाप्ते कल्पिते । द्वयो-घरातलयोः संपातरेला रशं कल्पता । घनहस्तकर्णम् अवं कल्पितम् । तदा अब-रशरेले तचिहोपर्यद्धं संपातं करिष्यतः ।



अस्योपपत्तिः ।

जररअरेखे संयोज्ये । अरलित्रभुजे जरनत्रिभुजे लकोणनकोणी

^{9 °}कारक पी. २ अर्थे संपातो भविष्यति.

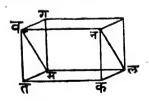
समकोणी सः । एतत्संबन्धिमुजी समानी । तदा अरमुजजरभुजी समानी मिवष्यतः । पुनर्छरअकोणनरजकोणी समानी मिवष्यतः । पुनर् अरनकोण उभयत्र योज्यते । तदा छरअकोणअरनकोण-योयींगो द्वाभ्यां समकोणाभ्यां तुल्यो नरजकोणनरअकोणयोयींगेन तुल्यो भिवष्यति । तसात् जरअसरछैकरेखा स्यात् । पुनर्वशक्यवरेखे संयोज्ये ।

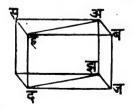
इदं निश्चितम् । अनयोर्थोगोऽपि सरलैकरेखा भविष्यति । जबअष-रेखा इतरेखायाः समाने समानान्तरे स्तः । तदा अजबबरेखे मिशः समाने समानान्तरे च भविष्यतः । अबकर्णोऽनयोर्धरातलेऽस्ति । तस्मा-दियं रेखा रशं छेत्स्यति । अरतित्रभुने बशतित्रभुने अरभुजबश-भुनौ समानौ स्तः । अनयोखिभुन्नयोः कोणावपि मिशः समानौ स्तः । तस्मात् अतं तबसमानं भविष्यति । रतं तशसमानं भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४१ ॥

यंगोरछेदितक्षेत्रयोः समानलम्बयोरेकस्य भूमिसिभु-जास्ति। द्वितीयस्य भूमी चतुर्भुजा समानान्तरभुजा पूर्वभूमे-द्विगुणास्ति। तदा ते छेदितक्षेत्रे समाने भविष्यतः।

यथा अवजदहश्रक्षेत्रं वतक्ष्यमनं द्वितीयं छेदितक्षेत्रं कल्पितस्। प्रथमस्य भूमिवदचतुर्भुजा द्वितीयस्य भूमिनकलत्रिभुजा कल्पिता।





पुनर्नेलचतुर्भुजं समानान्तरभुजं संपूर्ण कार्यम् । इदं बद्चतुर्भुज-

⁹ द्वयो° V. २ तदैते V.

समानं भविष्यति । पुनर्जसं घनक्षेत्रं कगं च संपूर्ण कार्यम् । एते द्वे घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । कुतः । मूमिलम्बानां समैत्वात् । तदै-तयोरद्धें छेदितक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

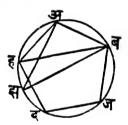
श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टे द्विजेन्द्रः सम्राड् श्रीमज्जगन्नाथ इति समिनधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नामि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्य्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति प्राप भूचन्द्रतुल्यः ॥ ॥ इति श्रीसम्राङ्जगन्नाथविरिक्तते रेखागणिते पकादशोऽध्यायः संपूर्णः॥ ११॥

१ साम्यात् J. J. drops अपि समाने।

अथ झादको ऽध्यायः ॥ १२ ॥ तंत्र पश्चदश क्षेत्राणि सन्ति ॥ १५ ॥ अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

द्वे क्षेत्रे सजातीये द्वयोर्वृत्तयोर्मध्ये यदि स्यातां तदा तयोः क्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वृत्तव्यासवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा अवजदहक्षेत्रं वतकलमक्षेत्रं च कल्पितम् । वझतनौ व्यासौ कल्पितो । पुनर् अझवनबहतमरेलाः संयोज्याः । तदा अबहित्रभुजे वतमित्रभुजे अकोणवकोणौ समानौ स्तः । कोणयोः संबन्धिभुजौ सजातीयौ स्तः । अहबकोणतुल्यअझबकोणो वतम-तुल्यवनतकोणतुल्यो भविष्यति । तसात् अझबित्रभुजवनत-



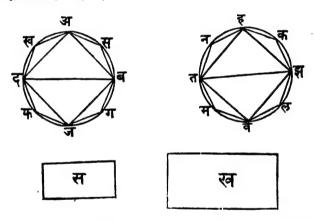


त्रिभुजे झअबकोणवनतकोणयोः साम्येन झअबकोणनवतकोणयोः समकोणभावित्वेन सजातीये भविष्यतः । अबयतभुजयोर्निष्पत्तिर्बझ-तनभुजयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । अवजदहक्षेत्रवतकलमक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः अबवतयोर्निष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । तस्मात् द्वैयोः क्षेत्रयोर्निष्पत्तिक्झतननिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तस्मात् बझतनयोर्वर्गनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तस्मात् बझतनयोर्वर्गनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अँथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥ वृत्तफल्योर्निष्पत्तिव्यसिवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

⁹ अत्र V. २ V. drops अय. ३ V. inserts तयो: ४ V. drops अय. ৭ भवति V.

यथा अजहषवृत्ते किल्पते । बद्झतौ तैत्सेत्रयोर्व्यासौ किल्पतौ । यदि बद्वर्गझतवर्गयोर्निष्पत्तिः अजवृत्तफलहषवृत्तफलयोर्निष्पत्तितुत्या न भवति तदा अजवृत्तसेत्रससेत्रनिष्पत्तितुत्या किल्पता ।
ससेत्रं प्रथमवृत्तफलाच्यूनं किल्पतम् । हववृत्तफलसक्षेत्रयोरैन्तरं
खक्षेत्रं किल्पतम् । पुनर्झहत्त्वापझवत्वापे हिचहविह्ययोरिद्धते
कार्ये । पुनर्झहहत्ततववद्भरेलाः संयोज्याः । तसात् हवक्षेत्रं हववृत्ताद्रिफलादिषकं भविष्यति । पुनश्चत्वारि चापानि किचहलचिह्नमचिह्ननिचेह्वं विद्धतानि कार्याणि । एतेषां चापानां पूर्णज्याः संयोज्याः ।
तसात् चापानां मध्ये चत्वारि त्रिभुजान्युत्पद्यन्ते । प्रत्येकं क्षेत्रं
सार्द्वादिषकं भविष्यति ।



अनेन प्रकारेण त्रिभुजानि ताबदुत्पादनीयानि यावच्छेषवृत्तख-ण्डानि खक्षेत्रात् न्यूनानि भवन्ति । तसात् बहुभुजोत्पन्नं क्षेत्रं कम-क्षेत्रं सक्षेत्रादिषकं भविष्यति । पुनर् अजवृत्ते सफक्षेत्रं कमक्षेत्र-सजातीयं कार्यम् । तसात् बदवर्गझतवर्गयोर्निष्पत्तिः सफक्षेत्रकम-क्षेत्रयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । अजवृत्तफल्लस्य सक्षेत्रफल्लस्य च

९ V. has तयोः for तत्क्षेत्रयोः २ अज्ञवृत्तफलकल्पितान्यक्षेत्रनिष्पः तितुल्या कल्पिता। तत्क्षेत्रं प्रथमवृत्तफलाञ्यूनं सक्षेत्रं कल्पितम्। K., A. ३ °रन्तरतुल्यं K., A. ४ खखण्डार्घा K., A.

निष्णतितुत्यासीत् । तसात् सफक्षेत्रकमक्षेत्रवोनिष्णतिः अज-वृत्तफलस्य सक्षेत्रफलस्य च निष्णतिसमाना भविष्यति । पुनः सफक्षेत्रअजवृत्तफलस्य निष्णतिः कमक्षेत्रसक्षेत्रनिष्णतितुत्यास्ति । कमक्षेत्रं सक्षेत्रादिषकमस्ति । तसात् सफक्षेत्रफलं अजवृत्तफलाद-षिकं भविष्यति । इदमगुद्धम् ॥

पुनर्बद्वर्गझतवर्गयोर्निष्पत्तिः अजवृत्तक्षेत्रह्ववृत्ताद्धिकान्य-क्षेत्रनिष्पत्तिमाना कल्पिता । तसात् झतबद्वर्गयोर्निष्पत्तिस्वास्ति यथा हवाद्धिकक्षेत्रस्य निष्पत्तिः अजवृत्तपत्नेनास्ति वा हैववृत्तपत्रस्य अजवृत्तपत्राक्यूनक्षेत्रेण निष्पत्तिस्तत्तुल्यास्ति ।

पूर्वप्रकारेणैवेदमप्यशुद्धं कुर्मः । तस्मादसादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

त्रयम्रिफलशङ्कोः खण्डचतुष्टयं कार्यं तत्रै पुनः खण्डद्वयं शङ्कुरूपं समानजातीयं कर्त्तव्यमस्ति । तस्यैव शङ्कोः शेषे द्वे खण्डे छेदितक्षेत्ररूपे शङ्कर्धादिषके समाने भवतस्तथा कर्त्तव्यम् ।

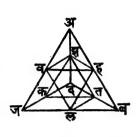
यथा अवजदशकोः अवजित्रभुजं भूमिः दं मुसं कल्पितम् । पुनस्तस्य षद् भुजा हझतवकलिचेहेष्वद्विताः कार्याः । पुनर्ह्झ्झ-वहवझततकझकतलवलरेसाः संयोज्याः । एवं कृतेऽस्मदिष्टं सिद्धं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अइवझशडोर्झतकदशडोश्च त्रयो मुजा मिथः समानाः सन्ति !

१ ह्वक्षेत्रस्य न्यूनक्षेत्रनिष्पत्या तुल्यास्ति । K., A. १ पूर्ववदेतद्प्यनुप-पन्नम् । K., A. ३ तत्र सण्डद्वयं शङ्कर्पं समानं सजातीयं कर्तव्यमस्ति । K., A., V.

कृतः । अनयोर्भुजा वृतच्छक्कोर्भुजार्द्धमिताः सन्ति । एतानि त्रिभुजानि सजातीयानि भ-विष्यन्ति । कृतः । केचित्कोणा मिलिताः सन्ति । केचित्कोणाः समानाः सन्ति । कृतः । एतेषां कोणानां भुजा बृहद्भुजेभ्यः समानान्तराः सन्ति । तसादेतौ शक्क मिथः



सजातीयौ समानौ च भविष्यतः । बृहच्छद्दोः सजातीयौ च पतिष्यतः । पुनर्बृहच्छद्दोरर्द्धे छेदितक्षेत्रे समानलम्बेऽविशिष्येते । तसादेतयोर्द्धयोरछेदितक्षेत्रयोद्भेतल्खं धरातलमेकमेव भविष्यति । पुनरेकच्छेदितक्षेत्रस्य भूमिईवल्जबचतुर्भुजं समानान्तरभुजं भविष्यति ।
द्वितीयस्य भूमिवल्जित्रिभुजं भविष्यति । इदं त्रिभुजं हवल्जबक्षेत्रस्याद्धमस्ति । तसादुभे छेदितक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । यस्य
च्छेदितक्षेत्रस्य भूमिवल्जित्रभुजमस्ति तत् अहवङ्गशङ्कोरिषकमस्ति ।
कुतः । एतयोः समभूमिसमलम्बत्वात् । असादेतच्छेदितक्षेत्रद्वयं
बृहच्छद्कोरद्वादिषकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

त्रिभुजभूमिकयोख्रिफलकयोः समानलम्बयोः शङ्कोः प्रत्येकस्य पूर्ववच्छङ्कद्वयं छेदितक्षेत्रद्वयं च क्रियते तदानयोर्भू-भ्योर्निष्पत्तिरनयोरछेदितक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

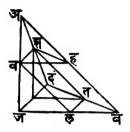
यथा अवजदमेको मनसगं द्वितीयः श्रङ्कः कल्पितः । अनयोः श्रङ्कोर्मध्ये उमौ शङ्क् द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्ववत्कार्ये । तदा अवजिन-भुजमनसित्रभुजयोर्निष्पत्तिः अवजदशङ्कोश्छेदितक्षेत्रद्वयस्य मनसग-श्रङ्कोश्छेदितक्षेत्रद्वयेन या निष्पत्तिस्तस्याः समाना भविष्यति ।

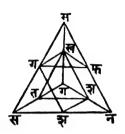
अस्योपपत्तिः ।

बजजलयोर्निष्पत्तिनेससशयोर्निष्पत्तितुल्यासि । तसात् जबज-

९ K. and A. insert समाना here. २ तसादे॰ V.

रुनिष्पत्तिवर्गतुल्या अबजत्रिभुजवरुजत्रिभुजनिष्पत्तिनससशनिष्प-त्तिवर्गतुल्यमनसत्रिभुजरसशत्रिभुजनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।





तदा अबजित्रभुजमनसित्रभुजयोर्निष्पिर्चिलजित्रभुजरशसित्रभुजयोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । इयं निष्पत्तिर्यस्य च्छेदितक्षेत्रस्य वल्ठजित्रभुजं
भूमिः पुनर्यस्य च्छेदितक्षेत्रस्य रसशित्रभुजं भूमिरनयोर्निष्पत्तिसमाना
भविष्यति । कुतः । अनयोर्छम्बसाम्यात् । प्रत्येकं छेदितक्षेत्रस्यार्द्धमस्ति । तसादिष यस्य च्छेदितघनक्षेत्रस्य भूमिर्वलजित्रभुजमस्ति पुनर्यस्य
च्छेदितघनक्षेत्रस्य भूमी रसशित्रभुजमनयोर्निष्पत्तिद्वगुणयोर्निष्पत्तिसमानास्ति । पुर्नीद्वगुणयोर्निष्पत्तिः अबजदशङ्कोद्देतिक्षेत्रद्वयस्य मनसगशङ्कोदछेदितक्षेत्रद्वयेन या निष्पत्तिस्तस्याः समानास्ति । तस्मात्
अबजदशङ्कभूमिमनसगशङ्कभूम्योर्निष्पत्तिः अबजदशङ्कोदछेदितक्षेत्रद्वयस्य मनशगशङ्कोदछेदितक्षेत्रद्वयस्य च या निष्पत्तिस्तस्याः समानास्ति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितम् । चतुर्णा शक्क्नां मध्ये प्रत्येकस्य द्वौ शक्क् द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्ववत् कार्येते । एवमुत्पन्नशक्क्नां द्वौ शक्क् द्वे छेदितक्षेत्रे कार्ये । एवमप्रेऽपि यथेच्छं कार्ये । तदा प्रत्येकशक्क्रभूमेर्नि-ष्पत्तिर्द्वितीयशक्क्रभूम्या तथा स्यात् यथा प्रथमशक्कोश्छेदितक्षेत्रयोद्विती-यशक्कोश्छेदितक्षेत्राभ्यामस्ति । एकप्रथमस्य द्वितीयेन निष्पत्तिस्तथा भवति यथा सर्वेषां प्रथमानां योगस्य द्वितीययोगेन सह यथा निष्पत्तिः

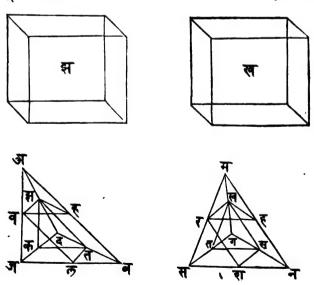
१ यतोऽनयोर्लम्बाः समानाः सन्ति । К., А.

स्यात् । तसात् अवजभूमेर्निष्पत्तिर्भनसभूस्या तथा भवति यथा प्रथमशङ्कोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य द्वितीयशङ्कोदछेदितक्षेत्रयोगेनास्ति ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

द्वौ शङ्कू त्रिभुजभूमी समानलम्बौ च यदि भवतस्तदा शङ्कोर्निष्पत्तिर्द्वयोर्भूम्योर्निष्पत्तिसमाना भवति ।

यथा अवजदमनसगी द्वौ शङ्क् किल्पतौ । यदि अवजम्मिमनसभूम्योर्निष्पत्तिः अवजदमनसगशङ्कोर्निष्पत्तिसमाना न स्यात्
तदा अवजदशङ्कुनिष्पत्तिमनसगक्षेत्रादन्यन्यूनाधिकक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या
भवतीति किल्पतम् । प्रथमं खक्षेत्रं मनसगशङ्कोर्न्यूनं किल्पतम् । मनसगशङ्कुखक्षेत्रयोरन्तरं झक्षेत्रं किल्पतम् । पुनर्मनसगशङ्कोद्वौ शङ्क् द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्वप्रकारेण कृते । प्रत्येकमुत्पन्नशङ्कृनां
द्वौ शङ्क् द्वे छेदितक्षेत्रे च कुर्मः । एवं पुनरप्युत्पन्नशङ्कृनां करणेन



यावत् छघुराङ्क्नां योगो झक्षेत्रान्यूनो भवति तावत्कार्यम् ।

⁹ कार्ये K., A.

तसात् सर्वेषां छेदितक्षेत्राणां योगः स्वक्षेत्रादिषको मिवष्यति ।
पुनर् अवजदशकोः शकु च्छेदितक्षेत्राणि तावन्ति कार्याणि यावन्ति
मनसगशकोः शकु च्छेदितक्षेत्राणि क्रतानि । तसात् अवजभूमेर्निष्पत्तिर्मनसम्म्या तथा स्यात् यथा अवजदशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिर्मनसगशको रुछेदितक्षेत्रयोगेनास्ति । पुनर्
अवजमनसम्म्योर्निष्पत्तिः अवजदशकु स्वधनक्षेत्रयोर्निष्पत्तितुत्या
कित्यतासीत् । तसात् अवजदशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिभनसगशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगेन निष्पत्तिस्तयास्ति यया अवजदशकोः स्वधनक्षेत्रेणास्ति । अवजदशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य
निष्पत्तिः अवजदशकुना तथास्ति यथा मनसगशकोः सर्वच्छेदि
तक्षेत्रयोगस्य निष्पतिः स्वधनक्षेत्रेणास्ति । तदा मनसगशकोः सर्वच्छेदि
दितक्षेत्रयोगः स्वधनक्षेत्रादिधकोऽस्ति । तसात् अवजदशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगः स्वधनक्षेत्रादिधकोऽस्ति । तसात् अवजदशकोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगः अवजदशकुतोऽभिको भविष्यति । इदमग्रद्धम् ॥

पुनः खक्षेत्रं मनसगशक्कोरिधकं कल्पितम् । तसात् मनसभूमे-निष्पत्तिः अवजभूम्या तथा भविष्यति यथा मनसगशक्कोर्निष्पत्तिः अवजदशक्कोर्न्युनक्षेत्रेणास्ति ।

उपरितनप्रकारेणैवेदैमशुद्धं करिष्यामः । तसादसादिष्टं समी-चीनम् ॥

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यत् छेदितक्षेत्रमस्ति तस्य त्रयः समानाः शङ्कवस्त्रिभुज-भूमिकाः कर्त्तुं शक्यन्ते ।

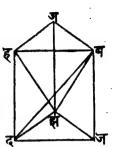
यथा अबजदह्झच्छेदितक्षेत्रं जझदभूमौ कल्पितम् । पुनर्बदब-

९ सर्वच्छेदित° K., A. २ °वेदमप्यशुद्धम् । K., A.

श्रन्तहरेलाः संयोज्याः । रेलायोगेन त्रयः स-मानाः शङ्कवश्चिभुजभूमिकाः संपद्यन्ते ।

अत्रोपपत्तिः।

यस्य शङ्कोर्भूमिर्जबद्गिभुजं मुखं झ-चिह्नं यस्य च शङ्कोर्बद्दहित्रभुजं भूमिर्भुखं झचिह्नमित्र एतौ शङ्क् समौ स्तः। छेदितक्षेत्रस्य



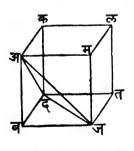
अबह्झशङ्करविशष्टः । अझं द्वितीयशङ्करमानोस्ति । कुतः । यतो बिचहमुभयोर्भुलं कल्पितम् । अनयोर्भूमिश्च अझह्ह्झद्त्रिभुजौ कल्पितौ । तसात् त्रय उत्पन्नशङ्कवः समाना जाताः ।

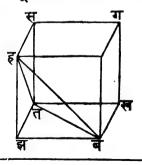
अनेन क्षेत्रेणेदमि ज्ञातं त्रिभुजभूमिकशङ्कोरछेदितक्षेत्रं संपूर्ण चेत् क्रियते तदा शङ्करछेदितक्षेत्रस्य व्यंशो भविष्यति ॥ ६ ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रं ॥ ७ ॥

त्रिश्वजभूमिको शङ्क् यदि समानौ भवतस्तदा तयोर्भू-म्योनिष्पत्तिस्तल्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यैदि तयोः शङ्कोर्भूमिनिष्पत्तिर्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भव-ति तदा तौ समानौ भवतः ।

यथा अवजदशङ्कहम्भवतशङ्कृ कल्पितौ । अनयोः शङ्कोर्द्धे घनक्षेत्रे समानान्तरधरातले बलझगे संपूर्णे कार्ये । एते द्वे घनक्षेत्रे





१ यदीहशी निष्पत्तिस्तदा तौ समानौ स्तः । К., А.

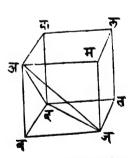
यदि समाने भवतस्तदानयोर्भूम्योर्निष्यत्तिरनयोर्कम्बविलोमनिष्यत्तेस्तुत्या भविष्यति । यदि घनक्षेत्रभूम्योर्निष्यत्तिरेतल्लम्बनिष्यतेर्विलोमतुत्या भविष्यति तदैते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । अनयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्यत्तिर्विते यथाऽनयोः षडंशस्य परस्परनिष्पत्तिरस्ति । अनयोः षडंशैः कल्पितशङ्क भवतः ।

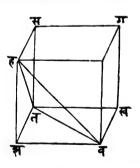
अथ घनक्षेत्रभ्रम्योर्निष्पत्तिर्भ्रम्योरर्द्धस्य निष्पतितुत्यास्ति । अनयोर्भ्रम्योरर्द्धे कल्पितशङ्कः भूमी भवतः । अनयोर्धनक्षेत्रलम्बयोर्निष्पत्तिः कल्पितशङ्कलम्बयोर्निष्पत्तिरस्ति । कृतः । यत एतत्घनक्षेत्रलम्बौ कल्पितशङ्कलम्बावेकरूपौ स्तः । तसात् द्वयोः कल्पितयोः शङ्कोर-सिद्धं स्पष्टं भविष्यति ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

त्रिभुजभूमिकौ द्वौ शक्कू यदा सजातीयौ भवतस्तदा तयोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति ।

यथा अवजदशङ्कह्मवतशङ्क् कल्पितौ । यद्यनयोर्बल्झगे द्वे घ-नक्षेत्रे पूर्णे क्रियेते तदैतयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिरनयोर्भुजनिष्पत्तिघन-





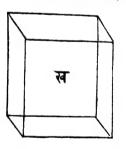
तुल्या भविष्यति । यत एतौ सजातीयौ स्तः । कल्पितशङ्क् च घनक्षेत्र-योर्निष्पत्तितुल्यौ स्तः । कल्पितशङ्कक्षेत्रस्य भुजौ द्वयोर्घनक्षेत्रभुजयो-र्निष्पत्तौ स्तः । तसादस्मिन् शङ्कद्वयेऽस्मदिष्टं सेत्स्यति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

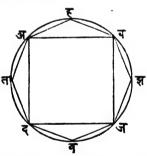
अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

समतलमस्तकपरिधेः शङ्कः समतलमस्तकपरिधितृती-यांशो भवति ।

यदि तृतीयांशो न भवति तदा तृतीयांशान्यूनः कल्पितः। तसात् समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रं त्रिगुणितशङ्कोरधिकं भविष्यति। तच खघनक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पितम्। तत्क्षेत्रस्य शङ्कोश्च भूमिः अबजदृवृतं कल्पितम्। अस्मिन् वृत्ते समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। अस्मिन् समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। अस्मिन् समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। इदं तत्क्षेत्राद्धादिधिकं भविष्यति।

पुनश्चत्वारि चापानि ह्झवतिचिहेष्वद्भितानि । तेषु पूर्णजीवाः संयोज्याः । उत्पन्नत्रिभुजेषु च्छेदितक्षेत्रं तावदेवोच्छ्तं कार्यम् । एतानि च्छेदितक्षेत्राणि समतल्लमस्तकपरिचिक्षेत्रशेषखण्डचतुष्टयेभ्योऽधिकानि भविष्यन्ति । एवं तावच्छेदितक्षेत्राणि कार्याणि यावत् समतलमस्तकपरि- धिक्षेत्रशेषसण्डानि स्वक्षेत्राच्यूनानि भवन्ति ॥





अत्रोपेपसं घनक्षेत्रं त्रिगुणितशक्कोरिधकं भविष्यति । पुनरछेदि-तक्षेत्रभूमौ ताबदेवोच्छ्तः सफलकः शङ्कयोगशङ्कः कार्यः। एवमुत्पर्सं-शङ्करछेदितक्षेत्रतुल्यो भविष्यति । एवमुत्पत्रशङ्कुक्षिगुणितः सन्

१ अत्रोत्पन्नानि घनक्षेत्राणि त्रिगुणितशक्कोरिधकानि भविष्यन्ति । K., A. २ K. and A. insert प्रत्येकं here. ३ °योगाः शक्कवः कार्याः K., A. ४ °शक्कवच्छेदितक्षेत्रतुल्या भविष्यन्ति K., A.

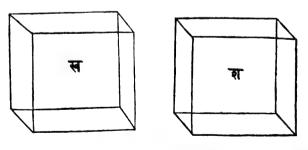
छेदितक्षेत्रयोगतुल्यो भविष्यति । तानि छेदितक्षेत्राणि कल्पितशृङ्कोः । त्रिगुणादिषकानि भवन्ति । बः उत्पन्नसफलकशङ्कः कल्पित-श्चक्कन्तस्तिष्ठति । अयंकल्पितशङ्कोरिषको भविष्यति । इदमशुद्धम् ॥

पुनः स शङ्कः समतन्नमस्तकपरिधितृतीयांशात् खघनफल्क्षेत्र-तुल्योऽधिकः कल्पितः । तसात् तेत् क्षेत्रं त्रिगुणितशङ्कोर्न्यूनं भविष्यति ।

पुनः पूर्ववत् कल्पितशङ्कन्तरनेनोच्छ्रायेण सफलकशङ्कुस्तथा कार्यो यथा शेषसण्डानि खक्षेत्राच्यूनानि भविष्यन्ति । अयं सफ-लक्षमगुणितः सन् समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रादिषको भविष्यति । सामशङ्कोर्भूमौ तावदुच्छ्रितं छेदितक्षेत्रं कार्यम्। एतानि च्छेदितक्षेत्राणि त्रिगुणितसामशङ्कुतुल्यानि भवन्ति । अयं त्रिगुणसफलकशङ्कुश्च समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रादिषकोऽस्ति । तसात् छेदितक्षेत्राण्यप्यधि-कानि भविष्यन्ति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

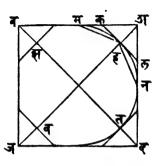
प्रकारान्तरम् ॥

यत् घनक्षेत्रं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रज्यंशान्यूनं भवति तत् क्षेत्रं शङ्कोरिप न्यूनं भविष्यत्यधिकेऽधिकं च तत् । तत्र प्रथमतः घन-क्षेत्रं न्यूनं क्षेत्रं कल्पितम् । इदं त्रिगुणितं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रात् खक्षेत्रतुल्यं न्यूनं भविष्यति ।



९ K. and A. insert अयं सफलकशहुश्च बृहत्सङ्कोरन्तरितोऽस्ति ।. १ K. and A. have समस्त्रमस्त्रकपरिधिक्षेत्रं instead of तत्क्षेत्रं.

पुनः प्रोक्तवत् समतलमस्तकपरिभिक्षेत्रान्तरछेदितक्षेत्राणि तावन्ति
तथा कार्याणि यथा तत् क्षेत्रं शेषखण्डानि खक्षेत्राक्यूनानि भवन्ति ।
एतानि छेदितक्षेत्राणि कल्पितन्यूनघनक्षेत्रात् त्रिगुणादिभकानि भविघ्यन्ति । पुनः शङ्कन्तः सफलकशङ्कः कार्यरछेदितक्षेत्रभूमौ । इदं



सफलकशकुक्षेत्रं शैद्वोर्न्यूनं भविष्यति । इदं छेदितक्षेत्राणां तत्र्यं-शेन तुल्यं भविष्यति । स च त्र्यंशो न्यूनघनक्षेत्राद्धिकोऽस्ति। कल्पितघनक्षेत्रं समतलमस्तकपरिविञ्यंशात् न्यूनमस्ति । शक्कोर्नितान्तं न्यूनं भविष्यति । पुनरप्यधिकं घनक्षेत्रं कल्पितम् । इदं त्रिगुणितं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रात् खक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पि-तम् । पुर्नेवृत्ते समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । तत्र तत्क्षेत्रोच्छ्राय-तुल्यमेकं घनक्षेत्रं कार्यम् । एतत्किल्पतघनक्षेत्रादिषकं वा भविष्यति वा न भविष्यति । यद्यधिकं भवति तदा शक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पितम् । अस्य समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रस्य चान्तरं स्वधनक्षेत्रादधिकं भविष्यति । पुनः केन्द्रे खघनक्षेत्रकोणे च रेखाः संयोज्याः । एता वृत्तस्य ह्रमवत-चिह्नेषु संपातं करिष्यन्ति । पुनः संपातचिह्नेभ्यो वृँत्तपाछिपर्यन्तं रेखा निष्कास्याः । एता रेखा तदन्तराई म्योऽधिकाः । कुतः । अवअद-रेखे मचिह्नचिह्नवृत्तपालिसंलमे कार्ये । लहकरेखा हचिह्ना कल्या । वे द्वे रेखे लचिडकचिडे कृतसंपाते कल्पिते । पुनर्हम-हनरेले संयोज्ये । तत्र अमअनरेले समाने भविष्यतः । हककमरेले समाने भविष्यतः । अकं कहादधिकमस्ति । कुतः । हस्य समकोण-

९ K. and A. insert कल्पित. २ °इत्तोपरि K., A. ३ चतुर्भुनक्षे- त्रकोणेषु K., A. ४ इत्तपालिस्पर्शे कुर्वत्यः K., A.

त्वात् । कमादप्यिषकं भविष्यति । अकहित्रभुजं कमहित्रभुजा-दिषकं भविष्यति । अलहित्रभुजं लहनित्रभुजादिषकं भविष्यति । तसात् अलकित्रभुजमन्तराद्धीदिषकं भविष्यति । एवं शेषान्तरा-द्धीत् शेषत्रिभुजमिषकं भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण तथा कार्य यथान्तरक्षेत्राणि खक्षेत्राच्यूनानि भविष्यन्ति । शेषं तथा घनक्षेत्रं भविष्यति तथा कल्पितघनक्षेत्रादिषकं न भविष्यति । इदं समतल्लमस्तकपरिधिक्षेत्रादिषकमिस्ति । पुनरस्व भूमौ ब्यंशतुल्यः सास्रशङ्कः कार्यः । क्षेत्रस्य व्यंशो भविष्यति । तसा-दयं कल्पितघनक्षेत्रादिषको न भविष्यति । अयं च सफलककल्पि-तशक्कोरिषकोऽस्ति । तसात् येद् घनक्षेत्रमिकं भवति तत्समतल-मस्तकपरिधिनृतीयांशात् तच्छक्कोरप्यिषकं भविष्यति ।

पुनर्निश्चितं यद् घनक्षेत्रं तु शङ्कतुल्यं भवति तत्समतल्लमस्तकपरि-विक्षेत्रत्र्यंशतुल्यमेव भविष्यति ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

सजातीयसमतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयस्याथवा सजातीय-शङ्कद्वयस्य च निष्पत्तिर्वृत्तयोर्व्यासनिष्पत्तेर्घनतुल्या भवति ।

यथा अवजदहझवतवृँते समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयस्य वा शङ्कद्वयस्य म्मी कल्पिते । अनयोर्व्यासो बदझतो कल्पितौ । कल-मनो लम्बौ कल्पितौ । यदि बदझतव्यासनिष्पत्तिघनतुल्या अवज-दलशङ्कार्निष्पत्तिनी भवति तदा प्रथमशङ्कानिष्पत्तिदितीयाच्य्नाधिकघनक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भवतीति कल्पितम् । प्रथमं न्यूनघनक्षेत्रं कल्पितम् । व्यासान्तरं अघनक्षेत्रम् । पुनर्वृत्तान्तः सम-

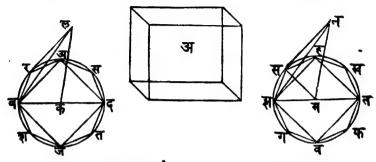
^{9 °}क्षेत्रत्रिगुणादिषकं K., A. २ समतलमस्तकपरिषित्र्यंशादिषकतत्क्षेत्र-शङ्कोरप्यिषकं भिवन्यति । K., A. ३ °श्तभूमी समतलमस्तकपरिषिक्षेत्रद्वयस्य वा शङ्कद्वयस्य कल्पिते । K., A. ४ प्रयमं न्यूनघनक्षेत्रं अधनतुस्यं कल्पितम् । K., A. ५ अस्यान्तरं V.

कोणसमचर्तुर्भुजं कार्यम् । अस्योपिर प्रथमशङ्क्ष्य्यायतुत्यः शङ्कः कल्पितः । पुनः शेषाणि चत्वारि चापान्यद्धितानि कार्याणि । तेषु पूर्णज्याः संयोज्याः । एतासु शङ्कवः कार्याः ।

. एवमनेन प्रकारेण तावच्छ**ड**वः कार्याः यावच्छेषखण्डानि अघ-नक्षेत्राच्यूनानि स्युः । तदा एभ्य एकः सास्रसफलकः श्रङ्करुत्पद्यते । हसझगवफतखं तस्य भूमिर्भविष्यति । अस्य मस्तकं कल्पितशङ्क-मस्तकं भविष्यति । अयं शक्रुः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रादिषको भविष्यति । पुनर् अबजदवृत्ते अरबराजतदसक्षेत्रमुत्पन्नशङ्कोर्भूमेः सजातीयं कल्पितम् । एतत्क्षेत्रोपरिकल्पितशङ्कतुल्यमुख एकः शङ्कः कार्यः। एतौ द्वौ शहू सजातीयौ भविष्यतः । कुतः । छक्कबदयोर्निष्पत्तिः निमञ्चतनिष्पत्तिसमानास्ति । कल्पितशङ्कोः सजातीयत्वात् । तसात् लकमननिष्पत्तिर्वक**झम**निष्पत्तितुल्या भविष्यति । **रकसम**निष्प-त्तिसमानापि भविष्यति । तसात् बक्छित्रभुजश्मनित्रभुजे सजातीये भविष्यतः । एवं रकलसमनत्रिभुजे अपि सजातीये भविष्यतः । कुतः । कमयोः समकोणत्वात् । अनयोः संबन्धिमुजौ सजातीयौ । तसात बलमनयोनिष्पत्तिः रलसनयोश्य सैव निष्पत्तिर्भविष्यति । पुनरिप बकरत्रिभुजझमसत्रिभुजे सजातीये स्तः । बकरकोणझम-सकोणयोः समानभावित्वेन । पुनस्तत्संबन्धिभुजयोः सजातीयत्वेन बरझसयोर्निष्पत्तिः सैव भविष्यति । बरलत्रिभुजझसनत्रिभुजयो-र्भुजौ मिथः सजातीयौ भविष्यतः । तसादेतत्रिभुजद्वयं सजातीयं संत्स्यति । वरकल्रशङ्कः झसमनशङ्कश्चोमौ सजातीयौ भविष्यतः । कुतः । अनयोर्वेष्टितत्रिभुजयोः सजातीयत्वात् । एवं वेष्टिताः सर्वेऽपि शद्भवः सजातीयाः पतिष्यन्ति । प्रत्येकशद्भोः स्वसजातीयशङ्कना निष्पत्तिस्तयोः सजातीयभुजयोर्वनतुल्या भविष्यति । बद्दशतयोर्नि-

K. and A. insert हझवतं.
 श्रम्भक्तंत्राम्यूनानि स्युः K., A.
 सास्रफलकशङ्करपथते K., A.
 अस्य मस्तकं न मस्तकं भविष्यति K., A.

ष्पत्तेर्घनतुत्यापि भविष्यति । तसात् बद्शतनिष्पत्तिघनतुत्या अब-



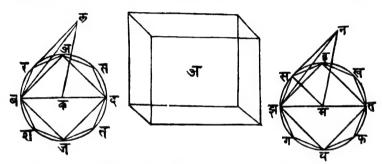
जदलशङ्कन्तःपातिसास्रोत्पर्नशङ्कहस्वतनशङ्कन्तेःपातिसास्रोत्पन-शङ्कोर्निष्पचितुल्या मविष्यति । अबजदलशङ्कन्तःपातीयसासशङ्को-निष्पचिः अबजदलशङ्कना तथा भविष्यति यथा हस्वतनान्तशङ्कोः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रेणास्ति । अयं हस्वतनान्तःपातिसासशङ्कः कल्पि-तन्यूनघनक्षेत्राधिकोऽस्ति । तसात् अबजदलान्तःपौतिसासशङ्कः अबजदलशङ्कोरिधको भविष्यति । इदमशुद्धम् ।

पुनर्बद्शतिष्णि वर्षेनतुल्या प्रथमशङ्कृद्वितीयशङ्किषकषनक्षेत्र-निष्पत्तिः कल्पिता। तदा शतबद्दनिष्पत्तिषनतुल्या हश्चवतनशङ्क-अवजद्रलशङ्कन्यूनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्भविष्यति । पूर्वरीत्या ऍनमप्यशुद्धं कुर्मः । तदेष्टमसत् सेत्स्यति । पुनः समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रेष्वपि सेत्स्यति ॥

अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रयोः समानलम्बयोर्निणत्तिस्तयो-भूमिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एवं द्वयोः शङ्कोरपि निज-भूमिनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।

क्षेत्रं पूर्ववत् कल्पनीयम् । यदि अवजदभूमिहझवतम्स्योर्निष्पत्तिर्यस्य शङ्कोर्लम्बः कल्रमस्ति यस्य च लम्बो मनमस्त्येतयोनिष्पत्तिसमा यदि न स्यात् तदा प्रथमशङ्कोर्निष्पत्तिर्द्वितीयशङ्कोर्न्यूनघनक्षेत्रेण समानास्तीति कल्पितम् । पूर्ववद्वितीयशङ्कन्तःपातिसासशङ्कः कल्पितघनक्षेत्राद्धिको भवति तथा कार्यः। प्रथमशङ्कन्तःपातिसासशङ्कः सजातीयः कार्यः। एतौ समानलम्बौ भविष्यतः। द्वयोः



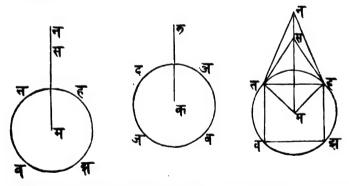
सासशङ्कोर्निष्पत्तिबेदवर्गञ्चतवर्गनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । अवज-दवृत्तहञ्चवतवृत्त्योर्निष्पत्तिसमानापि भविष्यति । कलल्लम्बस्य शङ्कोः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रनिष्पत्तेरिष समा भविष्यति । तसात् प्रथमसासस-फलकशङ्कोर्निष्पत्तिः प्रथमशङ्कना तथास्ति यथा द्वितीयसासशङ्कोर्नि-ष्पत्तिः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रेणास्ति । द्वितीयः सासशङ्कः कल्पितघनक्षे-त्रादिधकोऽस्ति । तदा प्रथमसासशङ्कः प्रथमशङ्कोरिषको भविष्यति । इदमशुद्धम् ॥

एवं सा निष्पत्तिर्यदाऽधिकघनक्षेत्रेण भवति तदा साप्यशुद्धैव भविष्यति । तसात् शङ्कद्वयेऽपीष्टमस्माकं समीचीनम् । तदा समत-क्रमस्तकपरिधिद्वयेपीष्टमुपपन्नम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥ यदि समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रे वा शङ्कद्वये वा समाने

१ निष्पत्तेः समानापि भविष्यति । V,

यथैकक्षेत्रस्य भूमिः अबजदवृत्तं कल्पिता । कलं लम्बश्च क-ल्पितः । यद्वितीयक्षेत्रभूमी ह्झवतं कल्पिता । मनं लम्बश्च क-ल्पितः । यदि द्वौ लम्बो समानो भवतो यदा भूमी समाने भविष्यतः । तदास्मिदिष्टमुत्पन्नं भविष्यति । यदि समानौ न भवतस्तदा मनलम्बः कल्ललम्बादिषकः कल्पितः । पुनर्मनलम्बात् कनतुत्यं मसं पृथकार्यम् । तदा हवभूमौ मैसलम्बतुत्यशङ्करुत्पाद्यः । प्रथमम् अबजदलशङ्क-हझवतनशङ्क् समानौ कल्पितौ । तदानयोः शङ्कोर्निष्पत्तिह्झवतः सशङ्कना एकरूपा भविष्यति । पुनरेकशङ्कोर्निष्पत्तिहृझवतस्यङ्कना तथास्ति यथा भूमेर्निष्पत्तिर्मूस्यास्ति द्वितीयशङ्कोर्निष्पत्तिर्मनलम्ब-मसलम्बनिष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् अबजदभूमिह्झवतभूस्योर्नि-ष्पत्तिमेनस्यास्ति । तसात् अबजदभूमिह्झवतभूस्योर्नि-ष्पत्तिमेनस्यास्ति । तसात् अवजदभूमिह्झवतभूस्योर्नि-ष्पत्तिमेनस्यास्ति । मनकलनिष्पत्तेत्यास्ति ।



पुर्निष्णत्तय एतद्भूगः कॅल्प्याः । तदा अवजदलशङ्कहस्रवतनश-इकोर्निष्पत्तिहस्रवतसशङ्कुना एकरूपा भविष्यति । तसादेतौ समानौ भविष्यतः । एवं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयमपि । इदमेवासदिष्टम् ॥

⁹ ईंदशी निष्पत्तिश्चेत् समानौ भविष्यतः K., A. २ °क्षेत्रस्य V. ३ मळ- छम्बे च K., A. ४ कल्पिताः K., A.

अय यैत्कथितं ह्झवतनशङ्कह्झवतसशङ्कोर्निष्यित्तर्मनमसनिन्यित्तर्वेष्त् । मनमसनिन्यित्त्रझ्तनझतसशङ्कोर्निन्यित्तर्वेष्त् । मनमसनिन्यित्त्रझ्तनझतसशङ्कोर्निन्यित्तर्वेष्त् । मनमसनिन्यित्त्रझ्तनझतसशङ्कोर्निन्यित्तर्वेष्ट्या न भवति तदा झतनशङ्कोर्न्याधिकेन केनचित् शङ्कारात्तः सासशङ्कर्यथा भवति तथा कार्यः । कंल्पितम् ॥ पुनर्झतसनशङ्कर्भमावन्यः शङ्कः कार्यः । एतयोः सासशङ्कोरन्तिक्षभुजनशङ्काः तुल्यसंख्याकाः पतिष्यन्ति तदैकस्य स्वसजातीयेन निष्यत्तिस्तया मविष्यति यथा सर्वेषां निष्यत्तिः सर्वेरिष । यथा हतमनस्य स्वसजातीयेन हतमसेन निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य व्हन्सासशङ्कोः लघुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहन्सासशङ्कोः लघुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहन्सासशङ्कोः लघुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहन्सासशङ्कोः लघुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्त्रक्षत्तनशङ्कन्यूनघनक्षेत्रनिष्यत्या तुल्या मविष्यति । तसात् वृहत्सासशङ्कोर्निष्यत्तिः स्वेष्टशङ्कना तथास्ति न्यूनसफलकशङ्कर्न्यूनघनक्षेत्रादिषकोऽस्ति । वृहच्छङ्कः स्वशङ्कोरप्यिको भविष्यति । इदमश्चस्य ॥।

एवमिकघनक्षेत्रेण या निष्पत्तिर्भविष्यति साप्यशुद्धैव । तसात् मनमसयोर्निष्पत्तिः श्रक्कोर्निष्यत्तितुल्या भविष्यति ॥

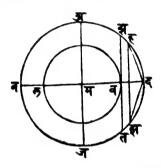
अय त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

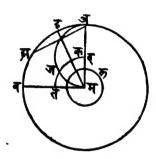
एककेन्द्रकवृत्तद्वयस्य मध्य एकं क्षेत्रं तथा कर्तुमिच्छास्ति यथास्य भुजा लघुक्षेत्रं न स्पृशन्ति ।

यथा अबजदवृत्तं लबवृत्तं मकेन्द्रं कल्पितम् । पुनरजव्यासबद-व्यासौ द्वयोर्वृत्तयोर्लम्बवत्कृतसंपातौ कल्पितौ । पुनर्विचिहात् झवतरे-खा वलवृत्तपालिलमा निष्कास्या । इयं झवतरेखा अजरेखायाः समा-नान्तरा भविष्यति । पुनर् अदचापार्द्धं कार्यम् । पुनर्द्धतं यावत्

१ च यदिदं कल्पितं K., A. इदं for अथ in V. २ न्यूनघनक्षेत्रादिषकः K., A. ३ पुनःपुनरिषेतं V.

हद्वापं श्रद्वापाष्ट्यूनं भवति । हश्चरेखा श्रतरेखायाः समानान्तरा कार्यो । इयं वलवृत्ते संपातं न करिष्यति । पुनहृद्दपूर्णज्या संयोज्या। पुनहृद्वापतुल्यानि वृत्तवापानि कार्याण्येतेषां पूर्णजीवाः च सं-योज्याः । इष्टमसाकं मविष्यति ॥





प्रकारान्तरम् ।

केन्द्रोपिर अमबसमकोणः कार्यः । पुनर् अमोपिर अजमं वृत्तार्दं कार्यम् । पुनर् अलरेखोपिर दिचिहं केल्पितम् । पुनर्मकेन्द्रे मदव्या-सार्द्धेन दजतवृत्तं कार्यम् । पुनर् अमबकोणसार्द्धे पुनः पुनस्ताव-त्कार्यं यावदर्द्धरेखा दजचापे किचिहं लगति । सा मकरेखा कल्पिता। इयं रेखा हचिह्वपर्यन्तं वद्धिता कार्या । पुनर् अहरेखा योज्या । इयं झचिह्वपर्यन्तं वद्धिता कार्या । तदास्मात् अझरेखा वलवृत्तं न लगिष्यति । कुतः । महस्य मकादिधकत्वात् । मदादप्यिक-त्वात् । मदं मलादिधकमिता । अझचापतुल्यानि वृत्तसण्डानि भवि-ष्यन्ति । यद्येषां पूर्षजीवा योज्यते तदास्माकिमष्टं सेर्तस्यति ॥

अय चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥ एककेन्द्रकयोगों ल्योर्भध्ये एँकं बहुधरातलयुक्तं घनक्षेत्रं

१ °जीवा च संयोज्या V. २ कल्पवेत् K., A. ३ आहरेका संयोज्या । इवं रेका झिविदर्गवन्तं वर्धिता कार्या K., A. ४ अविष्वति K., A. ५ K., A. insert वृहद्रोस्त्रन्तः.

तथा कर्त्तुमिच्छास्ति यथा कल्पितानि धरातलानि लघुगोर्षः न स्पृशन्ति । पुनर्यग्रन्यगोले एतत्सजातीयघनक्षेत्रमन्यत् कुर्मस्तदानयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्द्वयोर्गोलयोर्व्यासनिष्पत्तेर्घन-तुल्या भविष्यति ।

ययोगों ल्योरेकं केन्द्रमस्ति तयोः केन्द्रगतमेकं धरातलं किस्तिं तद्धरातल बहुद्वृत्तसंपाताद बजदवृत्तमुत्पन्नं कार्यम् । लघुवृत्तसंपातात् ह्झवतवृत्तं कार्यम् । द्वयोः केन्द्रं किचिहं किस्तिम् । पुनर् आजव्यास-बहुव्यासौ लम्बरूपौ कृतसंपातौ किस्ति । पुनर् अबजदवृत्तमध्ये समानबहु भुजं क्षेत्रं तथा कार्य यथा ह्झवतल घुवृत्तं न स्पृशित । तथा बमं मलं लअं भुजाः किस्पताः । पुनर्मकरेसा संयोज्या । सिचिह-पर्यन्तं विद्धिता कार्या । लकरेसा च योज्या निचहपर्यन्तं विद्धिता । किचिहादेको लम्बः अबजदवृत्तधरातले तथा पात्यो यथा वृहद्वीलं

स्पृश्चिति । स लम्बः कगं किल्पतः । पुनरेकं धरातलं लिबिह्निचिह्नगचिह्नगतं किल्पतम् । पुनरेकं छिन्दनिच्ह्निचिह्नगतं किल्पतम् । पुनरन्यद्धरातलं मगसचिह्नगतं किल्पतम् । प्रथमधरातल्बृहृद्गोलयोः संपातात् लगनम् अ-द्विबृत्तमुत्पनं किल्पतम् । द्वितीयधरातलमहृद्गोलसंपातात् मगसम् अद्विबृत्तमुत्पनं किल्पतम् । पुनर्लगचापं मगसम् अद्विबृत्तमुत्पनं किल्पतम् । पुनर्लगचापं मगसम् अद्विबृत्तस्य चतुर्थो-



शो भविष्यति । लगचापस्य लखखफफगखण्डानि कार्याणि । मगचापस्य मररशशगखण्डानि कार्याणि । एतानि समानानि कार्याणि । अबचापस्य यावन्ति खण्डानि तेषां समानानीत्यर्थः । पुनर् रखरेखाश-फरेखा च संयोज्या । पुनर् रचिद्वात् मससंपातरेखायां रतलम्बो नेयः । खचिद्वात् लनसंपातरेखायां खसलम्बो नेयः । एतौ लम्बी अबजद-

९ कियते for कुमैं: K., A. १ कल्पितम् for उत्पन्नं कार्यम् K., A. ३ बृहद्रोलाद्वहिनं गच्छति K., A. ४ खण्डसमानीलार्यः K., A. ५ कार्यः K., A.

घरातछे लम्बी भविष्यतः । एतौ च समानान्तरौ भविष्यतः समानौ च भविष्यत। कुतः। मरलुखचापयोः साम्यात् । एतौ रतखसौ रैमख-ल्रद्विगुणचापयोः पूर्णजीवयोरैर्द्धरूपौ जातौ । पुनरेतौ रतस्वसौ मतलसरेले समाने प्रथक् करिष्यतः । पुनस्तसरेला संयोज्या । इयं तसरेखा मलरेखायाः समानान्तरा भविष्यति । कुतः । कततमयो-र्निष्पत्तिः कससळयोर्निष्पत्तिसमानास्ति । तसं मलात् न्यूनं भवि-ष्यति । कुतः । एतौ कतकमयोर्निष्पत्तौ स्तः । रखरेखा तसरेखा च मिथः समानान्तरे भविष्यतः समाने च भविष्यतः । कुतः । रतरेखा खसरेखा च मिथः समाना समानान्तरा च भवति । तसात् रखलम-रेखे मिथः संमानान्तरे भविष्यतः। रखं लमान्यूनं भविष्यति। तसात् रमलस्व चतुर्भुजं एकसिन् धरातले भविष्यति । इदं चतुर्भुजं तस्य घनक्षेत्रस्यैकं फलकं भविष्यति । अनेन लैंघुवृत्तस्य गोलस्य स्पर्शो न कृतः। कुतः। अस्य रममळळखेः समैक्षिभुजैः स्पर्शो न कृतः । पुनश्चतुर्थभुजो रखम् एभ्यो न्यूनोऽस्ति । एवं निश्चीयते रश-फखनतुर्भुजमप्येकधरातले भविष्यति । लघुगोलस्परी न करिष्यति गशफत्रिभुजमपि लघुगोलस्परी न करिष्यति ।

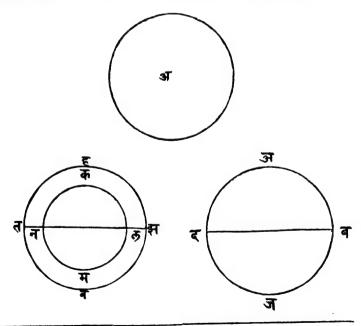
अनेनैव प्रकारेण सर्वचापेषु खण्डेषु चैतंद्र्पाण्यस्नाणि कार्याणि । तदासाकिमष्टघनक्षेत्रं पूर्ण भविष्यति । एतद्धनक्षेत्रसजातीयमन्य-सिन् गोले यदि कार्य भवेत्तदोभे घनक्षेत्रे शङ्क्नां योगेनोत्पचेते । कीदृशानां शङ्क्नाम् । येषां भूमिर्घनक्षेत्राणां फलकानि पतिष्यन्ति । शङ्क्नां मुखं च गोल्योः केन्द्रं भविष्यति । यावन्तः शङ्कव एकसिन् गोले भवन्ति तावन्त एव द्वितीयगोले भवेन्ति मिथश्च सजातीयानि भविष्यन्ति । कृतः । वेष्टितघरातलानां सजातीयत्वात् । तसादेक-गोल्स्यैकशङ्कोर्निष्यत्तिर्द्वितीयगोलस्य स्जातीयशङ्कना तथास्ति यथेषां

९ द्विगुणरमस्तळचापयोः V. २ अर्थी जातौ K., A. ३ लघुवृत्तगोलस्य V. ४ एतदूपफलकानि A. ५ भविष्यन्ति V. ६ स्वसजातीय $^\circ$ V.

सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुल्या स्यात् । एषां भुजा गोलयोर्व्यासा-द्वीमताः सन्ति । तसादनयोर्निष्पत्तिव्यीसार्द्वनिष्पत्तिघनतुल्या भवि-प्यति । व्यासार्द्वयोर्निष्पत्तिः व्यासनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् शङ्कनां निष्पत्तिगींलव्यासयोर्निष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति । यथैकशङ्को-रेकशङ्कना निष्पत्तिस्तथा सर्वयोगशङ्कोः सर्वयोगशङ्कना निष्पत्तिः । सर्वयोगशङ्कस्तु तदेव घनक्षेत्रमस्ति । तसाद्धनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्द्वयो-व्यासयोर्निष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ पञ्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

गोलस्य निष्पत्तिगोलेन व्यासयोर्निष्पत्तिघनतुल्या भवति । यथा अजगोलः कल्पितः । बदं व्यासः कल्पितः । द्वितीयो हव-गोलो झतं व्यासश्च कल्पितः । यदि बद्दशतव्यासनिष्पत्तिघनतुल्या गोलैयोर्निष्पत्तिनी भवति तदा अजगोलनिष्पत्तिईवन्यूनाधिकगोलेन



९ अजगोलह्बगोछयोर्निष्पत्तिर्न चेत् K., A.

भविष्यतीति कल्पितम् । तदा हवाक्यूनो अगोङः कल्पितः । पुन-ह्वगोलकेन्द्रे अगोलतुल्यः कमगोलः कल्पितः । पुनह्वक्षेत्रमध्ये बहुत्रयुक्तं धनक्षेत्रं तथा कार्य यथा कमगोले स्पर्ध न करोति । पुनर् अजगोलमध्ये एकं क्षेत्रं तद्धनक्षेत्रसजातीयं कल्पितम् । तसात् बद्धतिनिष्पत्तिषनतुल्या अजगोलस्य धनक्षेत्रस्य ह्वगोलस्य धनक्षे-त्रनिष्पत्तिरस्ति । बद्धतिनिष्पत्तिधनतुल्या अजगोलअगोलयोर्निष्पत्तिः कल्पितासीत् । तथा अजकमगोलयोर्निष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् अजगोलधनक्षेत्रह्वगोलधनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः अजकमगोलयोर्निष्प-तितुल्या भविष्यति । अजधनक्षेत्रस्य निष्पत्तिः अजगोलेन तथा भविष्यति यथा ह्वगोलधनक्षेत्रस्य निष्पत्तिः कमगोलधनक्षेत्र-णास्ति । कमगोलो ह्वगोलधनक्षेत्राच्यूनोऽस्ति । तसात् अजगोलः अजगोलधनक्षेत्राच्यूनो भविष्यति । इदमगुद्धम् ॥

पुनर्बद्दशतिष्यतिषमतुत्या अजगोल्रह्वगोलाधिकयोर्निष्यतिः कल्पिता । तसात् शतबद्दनिष्यतिषमतुत्या हवगोलस्य अजगोलास्य्-नगोलेन निष्यत्तिर्भविष्यति । इदमप्यशुद्धं कुर्मः । तसादसदिष्टं समीचीनम् ।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुश्चै द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राङ् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽस्मिन्नाझि रेस्नागणित इति स्रुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरतिं द्वादश्चः संगतोऽभूत् ॥ ॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

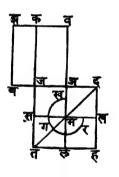
९ अजगोल्जुल्यकमगोल्योर्निष्पत्तिः K., V.

॥ अथ त्रयोदशाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १३ ॥ ॥ तत्रैकविंशतिक्षेत्राणि सन्ति ॥ २१ ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

एकस्या रेखायास्तथा खण्डद्वयं कार्य यथा संपूर्णरे-खाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन तथा स्यात् यथा महत्खण्डस्य च लघुखण्डेनास्ति । अर्द्धरेखा महत्खण्डेन युक्ता कार्या तस्या वर्गः पद्मगुणितार्द्धरेखावर्गनुस्यो भवति ।

यथा अबरेखा कल्पिता । अस्या महत्सण्डम् अजं कल्पितम् । अदं रेखार्घ कल्पितम् । अर्द्धरेखयानया अजं युतं कृतं तसात् जद-

वर्गः पद्मगुणितेन अद्वर्गेण तुल्यो भविष्यति । कुँतः । जदरेलोपिर जहं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । अल्रेरेला निष्कासनीया । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अल्रेरेला निष्कासनीया । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अल्रेरेला पिर अझं समकोणसमचतु-र्भुजं कार्यम् । तजरेला कचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनी-या । अल्रुत्या अवरेला अद्रेरेलातुल्याया अमरेलाया द्विगुणास्ति । तदा अकक्षेत्रं अस-क्षेत्राद्विगुणं भविष्यति। लक्षेत्रं अल्ल्बज्वात-



तुल्यं अजवर्गतुल्यलसक्षेत्रेण समानमस्ति । तसात् चतुर्गुणअद्व-र्गतुल्यं अझसमकोणसमचतुर्भुजं खगरक्षेत्रस्य समानं मविष्यति। यदि अद्वर्गो योज्यते तदा सर्वे जहं पश्चगुणितअद्वर्गतुल्यं मविष्यति।

९ यस्या रेखाया V., D. तथैकरेखाया खण्डद्वयिकीर्पास्त वथा संपूर्णरेखाया निष्पत्तिमंहत्खण्डेन महत्खण्डलघुखण्डयोनिष्पत्तितुल्या स्यात् तत्र रेखार्घ महत्खण्डलघुखण्डयोनिष्पत्तितुल्या स्यात् तत्र रेखार्घ महत्खण्डेन युक्तं तद्वर्गः पश्चगुणितरेखार्द्ववर्गतुल्यो भवति ॥ K., A. २ अव्म् अर्द्धरेखा कल्पिता । अनया अर्ज्ञं V. ३ अस्योपपत्तिः K., A.

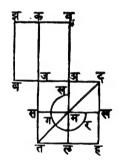
अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

पूर्वप्रकारेण अवबजवातः अजवर्गतुत्योऽस्ति । पुनर् अबअज-धात उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा अबवर्गतुत्यः अदवर्गश्चतुर्गुणः अबअजवाततुत्यद्विगुणअदअजवातअजवर्गयोगस्य तुत्यो भवि-ष्यति । पुनर् अदवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा पश्चगुणित-अदवर्गतुत्यो जदवर्गो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३॥

यस्या रेखाया न्यूनाधिके खण्डे क्रियेते तस्या रेखाया वर्गः पश्चगुणितैकखण्डवर्गसमो भवति । द्वितीये खण्डे एका रेखा तथा योज्या यथा द्विगुणप्रथमखण्डतुल्या भवति । तदा द्वितीयखण्डयोज्यरेखायाश्च निष्पत्तिद्वितीखण्डेन तथास्ति यथा द्वितीयखण्डस्य निष्पत्तियोगरेखयास्ति ।

यथा द्रजरेसा कल्पिता । अस्या वर्गो द्रअसण्डस्य पश्चगुणितवर्गतुत्यः कल्पितः । जबं योगरेसा कल्पिता । तदा अबरेसा जिन्होपरि पूर्वोक्तनिष्पत्तेभीगद्वयं प्राप्स्यति । महत्स्रण्डम् अजं भविष्यति ।



अत्रोपपत्तिः ।

क्षेत्रं पूर्ववत् पूर्णं कार्यम् । अखक्षेत्रं जहक्षेत्राच्छोध्यम् । तदा श्लेषं खगरक्षेत्रं चतुर्गुणअदवर्गतुल्यं भविष्यति । अबवर्गतुल्यं भविष्यति । अकक्षेत्रं मजक्षेत्राद्विगुणमस्ति । मजमहयोगतुल्यमप्यस्ति । श्लेषं

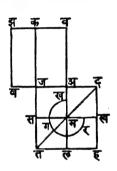
१ द्वितीयक्षेत्रम् and so in other places. V. २ प्रथमसण्ड-द्विगुणतुल्या K., A. ३ पूर्वोक्तनिष्यत्ते: is omitted in K., A.

लसक्षेत्रम् अजवर्गतुत्यं जझक्षेत्रसमानं भविष्यति । इदं अबव-जघातोऽस्ति । ततोऽस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

यदि जदवर्गीत् दअवर्गः शोध्यते तदा शेषं दअअजवातस्य द्वि-

गुणेन अबअजघाततुत्येन अजवर्गयुक्तेन तुत्यमवशिष्यते । इदं चतुर्गुणितद् अवर्गण समानं भविष्यति । अववर्गतुत्यं भविष्यति । पुनर् अवअजघातो द्वयोः शोध्यते तदा शेषः अजवर्गः अवबजघाततुत्यो भविष्यति । ततो-ऽसदिष्टं समीचीनं भविष्यति । क्षेत्रं पूर्वोक्तवत् शेयम् ॥



अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यस्या रेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन महत्खण्डलघुखण्ड-निष्पत्त्या तुल्या भवति । पुनर्महत्खण्डस्यार्द्ध लघुखण्डयुक्तं कार्यम् । तदा योगवर्गः पश्चगुणितेन महत्खण्डार्द्धवर्गेण समो भविष्यति ।

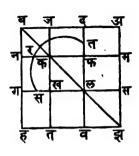
यथा अबरेखा कल्पिता। तस्या महत्स्वण्डम् अजं कल्पितम्। मह-त्स्वण्डस्याद्धे दजं कल्पितम्। तसात् दबवर्गः पञ्चगुणितज्जदवर्गसमो भविष्यति।

अस्योपपत्तिः ।

अबरेखोपरि अहं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । बझकर्णः सं-

१ तुस्यं चतुर्गुणित &c. D., V. २ पुनस्तत्रैय महत्स्वण्डस्यार्थ चेयोज्यते К., А. ३ पश्चगुणितमहस्स्वण्डार्थवर्गसमो भवति К., А. भा॰ २४

योज्यः । पुनर्दवजतरेसे अझरेसायाः समानान्तरे निष्कास्ये । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अदद्जरेसयोः समानभावित्वेन अफसेत्रजफसेत्रकगक्षेत्रगतक्षेत्राणि मिथः समानानि भविष्यन्ति । मलक्षेत्रसवक्षेत्रफखसेत्रलतक्षेत्राणि चत्वारि समकोणसमन्वर्त्तभुजक्षेत्राणि समानानि भविष्यन्ति ।



अवबजधातो जहक्षेत्रतुल्यः तरसक्षेत्रतुल्योऽपि अजनर्गस्य मतक्षे-त्रतुल्यस्य समो भविष्यति । चृतुर्गुणफखक्षेत्रतुल्योऽपि भविष्यति । पुनः फखक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । तदा दगक्षेत्रं दबवर्गतुल्यं पञ्चगुणि-तफखक्षेत्रं भविष्यति । पञ्चगुणितद्जवर्गस्यापि समानं भविष्यति ।

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

अबबजवाततुल्यः अजजबवातजबवर्गयोगोऽस्ति । अयं द्ज-जबवातो द्विगुणो जबवर्गयुतस्तेन तुल्योऽस्ति । अयं अजवर्गतु-ल्योऽस्ति चतुर्गुणद्जवर्गतुल्यो मविष्यति । पुनर्दजवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा दजजबवातो द्विगुणो दजवर्गजबवर्गयुतो दबवर्गतुल्यः पश्चगुणितद्जवर्गसमो मविष्यति । ईदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

रेखाया द्वे खण्डे तथा कार्ये यथा सर्वरेखाया महत्ख-ण्डेन निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्पत्तितुल्या भवति । पुना रेखायां महत्खण्डतुल्या रेखा योज्या । तत्र योगेनी-त्पन्नरेखाया निष्पत्तिः प्रथमरेखया तथा भवेत् यथा प्रथम-रेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेनास्ति ।

१ पूर्ण K., A. २ °थोगो द्विगुणक् जाज्ञ चारोन जाज्ञ वर्गयुरोन तुस्थो भवति K., A. ३ थॉज्यः K., A. ४ इष्टमिद्दमेन K. ५ योगोत्पक्ष B. ६ भवति B.

यथा अबरेखाया जिचेहे तथाविधे खण्डे कृते । अस्याम् अजं महत्खण्डं कल्पितम् । पुनर्भहत्खण्डतुल्या अदरेखा योजिता । त-दोत्पन्नद्वरेखाया अचिहे तादशे खण्डे भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

अबस्य निष्पत्तिः अजतुल्यअद्रेखया तथास्ति यथा अजनिष्पत्ति-जीबेनास्ति । तसात् दअअबयोर्निष्पत्तिर्बजजअनिष्पत्तितुल्या भवि-ष्यति । तसात् देवबअनिष्पत्तिर्बअअजतुल्यअद्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवासादिष्टम् ।

पुनरिप न्यूनसण्डतुल्यं महत्स्वण्डात्पृथकार्यम् । तदा महत्स्वण्डं तस्यामेव निष्पत्तौ विभागं प्राप्स्यति । न्यूनसण्डं च महत्स्वण्डं भिव-ध्यति । यथा दबरेसाया अचिहे तस्यामेव निष्पत्तौ उमे स्वण्डं क-ल्पिते । महत्स्वण्डम् असं कल्पितम् । पुनदेअरेसातुल्या अजरेसा अबरेसायाः पृथक् कृता । तसात् अबरेसाया जचिहोपिर तस्यां निष्पत्तौ द्वे स्वण्डे भविष्यतः । अजरेसा च महत्स्वण्डं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

दबअबनिष्पत्तिबं अअद्वुल्यअजनिष्पत्तिः । तसात् दअवुल्य-अजस्य अबेन निष्पत्तिजीबजअनिष्पत्तेः समाना मनिष्यति । तसात् अबअजयोर्निष्पत्तिः अजजबनिष्पत्तितुल्या भनिष्यति । इदमेनेष्टम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

यदा रेखायाः स्वमहत्खण्डेन निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुख-ण्डनिष्पत्तितुल्या भवति तदा सर्वरेखाया वर्गो लघुखण्ड-वर्गयुतः सन् त्रिगुणमहत्खण्डवर्गतुल्यो भविष्यति ।

यथा अबरेखा कल्पिता। जबन्यूनखण्डं तस्यां निष्पत्तौ कल्पितम्। तदा अबवर्गबजवर्गयोगस्त्रिगुणितअजवर्गेण तुल्यो भविष्यति।

९ वृद्धनिष्पत्तिः अवेन V., D. २ विभक्तं भविष्यति K., A. ३ निष्प-त्तिसमानास्ति । तस्मात् V. ४ यस्मा देखायाः K.,A.

अस्योपपत्तिः ।

अबवजनर्गयोगो द्विगुणअबवजघातअजनर्गयोगसमानोऽस्ति । तसात् अबवजनर्गयोगः त्रिगुणितेन अजनर्गेण तुल्यो भनिष्यति । इदमेनेष्टम् ॥

अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

या रेखाङ्कसंज्ञाही भवति तस्यास्तथा द्वे खण्डे कार्ये यथा सैर्वमहत्खण्डयोर्निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डयोर्निष्पत्ति-तुल्या भवति । तत्र प्रत्येकं खण्डमन्तररेखा भविष्यति ।

यथा अबरेला कल्पितमहत्त्वण्डं च अजं कल्पितम् । पुनर् अदरेला अबर्धितुल्या योज्या । तसात् दज्जवर्गः पश्चगुणितद् अ- वर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् दअरेला दजरेला च मिथो भिन्ना भविष्यति । अनयोर्वर्गो केवल्पक्रसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् अजम् अन्तररेला भविष्यति । पुनर्यदि अजवर्गतुल्यं अबरेलोपिर क्षेत्रं कार्ये तदोत्पन्नद्वितीयभुजो जबरेला भविष्यति । तसात् जबरेला भविष्यति । तसात् जबरेला भविष्यति । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

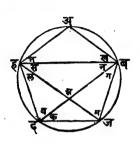
समपत्रास्रक्षेत्रमध्ये त्रयः कोणा यदि समाना भवन्ति तदा शेषा अपि कोणाः समाना भवन्ति ।

यथा अवजदहपञ्चभुनं क्षेत्रं किल्पतम् । अजदकोणाः समानाः किल्पताः । पुनर्बहबदरेखे संयोज्ये । बहुअत्रिभुने बजदित्रभुने अकोणजकोणयोः समानभावित्वेन अकोणजकोणसंबिन्धभुजानां साम्यमावित्वेन तकोणककोणौ समानौ भविष्यतः । एवं बहुबद्रभुजाविप समानौ भविष्यतः । बहुद्दकोणबद्दहकोणाविप समानौ भविष्यतः । तसात् संपूर्णो हकोणः संपूर्णदकोणतुत्यो भविष्यति ।

९ सर्वरेखामइत्स[°] V. २ कियते K., A.

पुनरेवं निश्चीयते बकोणो जकोणतुल्यो भविष्यति । पुनर्जदह-

कोणाः समानाः किल्पताः । जहरेखा च संयोज्या । तदा बदजित्रभुजे दहजित्र-भुजे जकोणदकोणयोः साम्यात् जकोण-दकोणसंबन्धिभुजयोः साम्येन च गकोण-रुकोणौ समानौ भविष्यतः । एवं बद्-जहभुजाविष समानौ भविष्यतः । वकोण-मकोणाविष समानौ भविष्यतः । तसात्



दश्जश्भुजाविष समानौ भविष्यतः । शेषौ श्रवश्चहाविष समानौ भविष्यतः । तैसात् नकोणसकोणाविष समानौ भविष्यतः । खकोण-तकोणौ समानावास्ताम् । कुतः । अवअहभुजयोः साम्यात् । त-सात् सवीं बकोणः सर्वहकोणतुल्यो जातः ।

एवं निश्चितम् अकोणो जकोणतुल्यो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥ अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

वृत्तक्षेत्रान्तः समत्रिभुजस्य भुजवर्गस्त्रिगुणितव्यासार्छ-वर्गतुल्यो भविष्यति ।

यथा अवजं समत्रिभुजं क्षेत्रं देंकेन्द्रं अवजवृत्तान्तःपाति कल्पि-

तम् । पुनर् अदहरेखा हजरेखा च संयोज्या । तसात् अजहचापं वृत्ताई भ-विष्यति। अजचापं वृत्तित्रभागो भविष्यति। जहचापं वृत्तषष्ठांशो भविष्यति । अहव-गश्चतुर्गुणितअदवर्गतुल्योऽस्ति । अह-वर्गः अजजहवर्गयोगतुल्योऽस्ति । अज-वर्गअदवर्गयोगेनापि समानो भविष्यति ।



⁹ पुन: K., A. २ जाती K., A. ३ A. and K. insert हि aftr एवम्. ४ दकेन्द्रज्ञश्तान्तः V.

तसात् अजअदवर्गयोगश्चतुर्गुण अदवर्गेण समानो भविष्यति । तसात् अदवर्ग उभयोः शोध्यः । तदा अजवर्गस्निगुणअदवर्गतुत्यो-ऽवशिष्यते । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

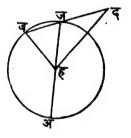
वृत्तस्यान्तः समानषड्भुजक्षेत्रमस्ति तथा समानदशभुज-मि क्षेत्रमस्ति तयोः क्षेत्रयोर्भुजयोगस्य समानषड्भुजेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा षड्भुजस्य देशभुजभुजेनास्ति ।

यथा अवजवृत्ते दशमुनस्य भुजो बजं कल्पितः । वजमुजो दिनद्वपर्यन्तं वर्द्धनीयः । षड्भुजक्षेत्रमुजतुल्यं जदं प्रेथकार्यम् । ब-दस्य जदेन निष्पत्तिद्वजनवनिष्पत्तिः ।

अस्योपपत्तिः ।

अवचापं चतुर्गुणबजचापतुत्यमित । तदा अह्बकोणश्चतुर्गुण-बहुजकोणतुत्यो भविष्यति । पुनर् अहबकोणो बजहकोणात् द्विगु-णोऽस्ति । बजहकोणो दकोणाहिगुणोऽस्ति ।

णाऽस्त । बजहकाणा दकाणाहुगुणाऽस्त । कुतः । जदजहयोः साम्यात् । तसात् अहबकोणश्चतुर्गुणितद्दकोणतुल्यो भिव-ध्यति । तसात् बहजकोणबद्दहकोणो बजहत्रिभुजे बदहित्रभुजे च समानौ भिव-ध्यतः । द्वयोखिभुजयोबिकोण एक एवास्ति । तसादुभे त्रिभुजे सजातीये भविष्यतः ।



तसात् द्वभुजस्य निष्पत्तिर्बह्भुजेन बह्भुजबज्जभुजनिष्पत्तिस-माना भविष्यति । बहुजदौ समानौ स्तः । तसात् बद्दज्ञयोनि-ष्पत्तिर्द्रजज्जबयोनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

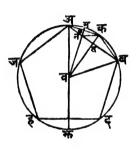
९ दशभुजेनास्ति D. २ कार्यम् । A., K. ३ °निष्पत्तितुत्या सविष्यति V.

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

वृत्तपश्चमांशस्य पूर्णजीवावर्गः षष्ठांशपूर्णज्यावर्गदशमांश-पूर्णज्यावर्गयोर्योगेन तुल्यो भवति ।

यथा अवदहजन्दतं बकेन्द्रं कल्पितम् । पश्चमांशज्या अवं क-ल्पितम् । पुनर् अवझं व्यासः कल्पितः । वबरेखा संयोज्या । पुन-

विचिद्वात् अबरेसोपिर वतकं लम्बो देयः।
पुनर् अककवरेसे संयोज्ये। अकरेसोपिर
वलमं लम्बो देयः। पुनः कनरेसा संयोज्या। तदा बमचापं सार्द्धं दशमांशोऽस्ति। बझचापं त्रिगुणदशमांशतुल्यमस्ति। तदा बवझकोणो द्विगुणबवमकोणतुल्यो भविष्यति। अयं बवझकोणो द्वि-



गुणबअवकोणतुल्योऽस्ति । कुतः । बववअभुजयोः साम्यात् । बवनित्रभुजे ववअत्रिभुजे ववनबअवकोणौ समानौ स्तः । उभयो- विबनकोण एक एवास्ति । तसादुमे त्रिभुजे सजातीये भविष्यतः । तसात् अबबवयोर्निष्पत्तिवेबबनयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् अबबनयोर्घातो बवनगेतुल्यो भविष्यति । ववं वृत्तषष्ठांशस्य पूर्णजीवास्ति ।

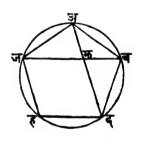
पुनरिष वलम् अके लम्बोऽस्ति । तसात् अकं लिचिहे अर्द्धे भिव-ध्यति । नअनकयोः साम्येन नकअकोणनअककोणो कनअत्रि-भुजे समानौ भिवष्यतः । एवं वकअत्रिभुजे कवअकोणकअब-कोणौ समानौ भिवष्यतः । कअवकोणो वकअत्रिभुजे कनअ-त्रिभुजे एक एवास्ति । तसादेते त्रिभुजे सजातीये भिवष्यतः । तसात् वअभुजनिष्पत्तिः अकभुजेन अकभुजअनभुजयोर्निष्पत्तिसमाना भिवष्यति । तसात् नअअवषातः अकवर्गतुल्यो भिवष्यति । अकं दशमांशस्य पूर्णजीवास्ति । अववनषातः अवअनषातयुक्तः अववर्ग- तुल्योऽस्ति । तसात् पञ्चांशपूर्णजीवावर्गः षष्ठांशपूर्णजीवावर्गदशमांश-पूर्णजीवावर्गयोर्योगतुल्यो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

वृत्तान्तः समभुजपञ्चास्रक्षेत्रस्य कोणद्वयसन्मुखजीवयोः संपातो यदि भवति तत्र पूर्णजीवाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डस्य निष्पत्तिर्रुघुखण्डेनास्ति। मह-त्खण्डं च पञ्चसमभुजक्षेत्रस्य भुजतुल्यं भविष्यति।

यथा अवदहजपञ्चसमभुजे अदपूर्णजीवाजवपूर्णजीवयोः संपातो झचिहे कल्पितः । अवझत्रिभुजवज्अत्रिभुजे सजातीये भविष्यतः ।

कुतः । बअझकोणबजअकोणयोः साम्यात् । उभयोर्बकोण एक एवास्ति । तसात् जबभुजनिष्पत्तिबेअभुजतुत्यअजभुजेन तथास्ति यथा अजभुजस्य
बझभुजेनास्ति । पुनरिष झबअकोणझअबकोणयोः समानभावित्वेन जझअकोणः
द्विगुणझअबकोणतुल्यो भविष्यति ।



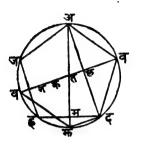
पुनरिप जहद्वापं बद्वापाद्विगुणमिस्त । तेन जअझकोणो झअब-कोणाद्विगुणो भवति । तसात् जझअकोणजअझकोणो समानो भविष्यतः । तसात् अजं झजं समानं भविष्यति । तसात् बज-जझयोनिष्पत्तिज्ञझबयोनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । झजम् अजस-मानमिस्त । एवम् अदपूर्णजीवा झचिहे एतिकष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि वृत्तव्यासोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति तदा पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेखा भविष्यति ।

यथा वृत्तं पञ्चसमभुजं च अबदहजं कल्पितम्। पुनर् अझव्यास-

बवव्यासौ निष्कास्यौ । पुनर् अदरेखा सं-योज्या । पुनस्तब चतुर्था शतुरुषं तकं पृथ-कार्यम् । तदा अलतित्र भुज अमदित्र भुजे अकोणस्यैकत्वेन लकोणमकोणयोश्य स-मानभावित्वेन सजातीये भविष्यतः । त-सात् अतस्य बततु स्यस्य निष्पि चिल्तेतेन तथास्ति यथा अदस्य दमेनास्ति । पुन-



र्बतचतुर्थीशतुल्यतकनिष्पत्तिर्छतेन तथास्ति यथा छदाईस्य दमे-नास्ति । लदार्द्धस्य दहार्द्धेनापि । पुनः कलतकयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा हदलस्य निष्पत्तिदेलेनास्ति । तसात् कलवर्गतकवर्गयोर्निष्पत्ति-**हेदलवर्गदलवर्गयोनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अदं पञ्चसम्भुजको**-णस्य पूर्णजीवास्ति । दहं पञ्चसमकोणसुजोऽस्ति । एतयोर्योगो यदि मनति तदाऽनयोर्दिचिद्दे तथा विभागौ भविष्यतो यथा सर्वयोगस्य नि-ष्पत्तिः अदेन अददहनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । हदलवर्गः पञ्चगुः णितदलवर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् कलवर्गः पश्चगुणकतवर्गः-तुत्यो भविष्यति । बकं पश्चगुणतकतुल्यमस्ति । तसात् बककतयो-निष्पत्तिरुककतनिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तसात् लकं बकतक-योर्मध्यनिष्पत्ती पतितम् । तसात् बक्तवर्गः पश्चगुणलक्तवर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् बककलवर्गी पैञ्चरूपयोर्निष्पत्तौ भविष्यतः । तैदा कि भविष्यति । एते द्वे रेखे भिन्ने भविष्यतः । अनयोर्वर्गी चाइसंज्ञाही भविष्यतः । बकम् अद्भसंज्ञाहेमस्ति । अस्य वर्गः कल-वर्गबल्लभिनरेखावर्गयोर्थोगतुल्योऽस्ति । तदा बलरेखा चतुर्थ्यन्तर-रेखा भविष्यति । बवबलघातत्त्वस्यो बअवर्गोऽस्ति । तसात् बअं न्यनरेखा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

९ पवकस्य रूपस्य च K., A. २ Omitted in K., A. भा• २५

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

द्शरेला संयोज्या। इयं रेला छतरेलाबाः समानान्तरा मविष्यति।
कृतः। अद्शस्य समकोणत्वात्। अतअश्रयोर्निष्यतिस्तळश्रद्योर्निन्यितितुल्या भविष्यति। तसात् छतं दश्लसाद्धं भविष्यति। इदं किमिति। दशसमभुजस्य क्षेत्रस्य भुजाद्धं भवति। पुनः कनं तकन्तुल्यं पृथकार्यम्। तसात् तनं षट्सममुजस्य क्षेत्रस्य भुजाद्धंतृल्यं भविष्यति। छनस्य तचिद्धं एताद्दशे लण्डे जाते छनस्य तचेन निष्यति। छनस्य तचिद्धं एताद्दशे लण्डे जाते छनस्य तचेन निष्यति। छनस्य तचिद्धं एताद्दशे लण्डे जाते छनस्य तचेन निष्यति। तसात् वक्ववर्गः पश्चिवशितगुणतक्ववर्गतुल्यो भविष्यति। पञ्चगुणलक्ववर्गेणापि तुल्यो भविष्यति। पञ्चगुणलक्ववर्गेणापि तुल्यो भविष्यति। पुनः पूर्वप्रकारेण एतामुपपत्तिं पूर्णो कुर्मः॥

अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

गोलान्तश्चतुःफलकः शङ्कस्तथा कर्त्तव्योऽस्ति यथा प्रति-फलकं त्रिभुजं समभुजं भवति । अस्य गोलस्व व्यासवर्गः शङ्कभुजस्य सार्द्धवर्गतुस्यः पतिष्यति ।

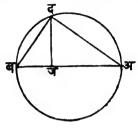
यथा गोलव्यासः अबं किल्पतः । अस्योपिर वृत्तार्द्धं कार्यम् । पुन-व्यसितृतीयांशं जबं पृथकार्यम् । जिचहात् जदलम्बो निष्कास्यः । अदरेखा संयोज्या । एकमन्यवृत्तं कार्ये यस्य व्यासार्द्धं दज्जुत्यं भवति । पुनरस्य वृत्तान्तः कल्पमं समानित्रभुजं कार्यम् । वृत्तकेन्द्रं च झं किल्पतम् । पुनरस्मात्केन्द्रात् इवलम्बो वृत्तघरातले द्वयोर्दिशोः कार्यः । जञ्जतुल्यं झनं पृथकार्यम् । पुनः कनमनलनरेखाः संयोज्याः । तस्मात् कलमनशङ्करिष्टो भविष्यति ।

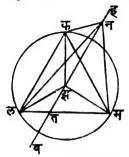
अस्योपपत्तिः ।

अबबजयोर्निष्पत्तिः अद्दजनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । अवं बजा-त्रिगुणमस्ति । तसात् अद्वर्गो दजवर्गात्रिगुणो भविष्यति । कझ-

९ व्यासात् V.

बर्गादपि त्रिगुणो भविष्यति । तस्रात् छकम् अदसमानं भविष्यति ।





अनेनेव प्रकारेण सर्वे भुजाः कार्याः । पुनरिष कश्चनित्रभुजद्ज-अत्रिभुजयोद्वीं कोणी समकोणी स्तः । कोणसंविध्युजी च समानी स्तः । तसात् कनम् अद्युल्यं भविष्यित । अनेन प्रकारेण सर्वा रेखाः समाना भविष्यिन्त । तसात् सर्वे शङ्कभुजाः समाना भविष्यिन्त । पुनर्जबद्युल्यं भविष्यित । वते वृत्तार्द्धं कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं कचिद्द-लिविद्दमचिद्देषु लिप्यित । कुतः । शक्कशल्झमलम्बा जद्युल्याः सन्ति । तसाद्यं शङ्करिष्टगोलान्तःपाती भविष्यित । अद्वर्ग-अबवर्गयोर्निष्पत्तः अज्ञअबयोर्निष्पत्ति । तसात् गोलव्यास-वर्गः शङ्कभुजस्य सार्द्धत्त्यः पतितः । इदमसाकिमष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

गोलान्तर्धनहस्तसंज्ञं क्षेत्रं केर्नुमिष्छास्ति तदा गोलव्यास-वर्गो घनइस्तभुजवर्गात्रिगुणो भवति ।

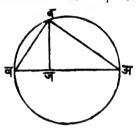
यथा अवं व्यासः कल्पितः । जिनिहेऽस्य तृतीयांशः कार्यः। अस्योपिर अदवं वृत्तार्द्धे कार्यम् । जदलम्बस्य निष्कास्यः। बदरेसा संयोज्या । बदरेसातुल्या हङ्गरेसा निष्कास्या।

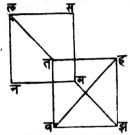
९ V. inserts पुनः here. २ कियते K., A. ३ V. omits अद्देशा संयोज्या ।.

ह्झरेस्रोपरि झतं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । पुनर्झतसमकोणसम-चतुर्भुजोपरि झरुं घनहस्तक्षेत्रं कार्यम् । इदिमष्टं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

हवरेखा सवरेखा च संयोज्या । सवरेखावर्गः सहवर्गहववर्ग-योगतुल्योऽस्ति । हववर्गो झहवर्गझववर्गयोगतुल्योऽस्ति । तस्रात्





सववर्गो हझवर्गात्रिगुणो भविष्यति । बद्दवर्गात्रिगुणोऽपि भविष्यति । अबबजयोर्निष्पत्तिः अबवर्गबद्दवर्गनिष्पत्तितुत्यास्ति । तस्मात् अब-वर्गो बद्दवर्गात्रिगुणो भविष्यति । तस्मात् अबसवौ समानौ भविष्यतः। यदि सबरेखायामर्द्धवृत्तं क्रियते तस्य चेद् श्रेमणं क्रियते तदा हचिहे छिगिष्यति । कुतः । सहवं समकोणोऽस्ति । एवं घनहस्तस्य सर्वकोणेषु छिगिष्यति । तस्मादयं घनहस्तः अबगोछान्तःपाती भविष्यति । इदमेवास्माकिमिष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

वृत्तान्तरैष्टाम्नं घनक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति येथा प्रतिफल-कघनहस्ते सर्वभुजानां समत्वात् त्रिभुजं समानभुजं प्रत्यम्नं त्रिभुजं समानभुजं पतत्यस्य गोलस्य व्यासवर्गो घनक्षेत्रभु-जवर्गाद्विगुणे पतिष्यति ।

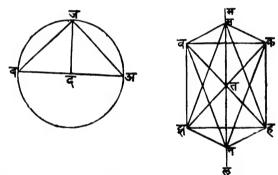
यथा अबं व्यासः कल्पितः। अयं दिचिहेऽद्वितः कार्यः। अजबम्

१ कृतम् K., A. २ आमणं V. ३ अष्टफलकघनक्षेत्रं K., A. ४ यथा पति K., A.

अर्द्ध वृत्तं कार्यम् । दजलम्बो निष्कास्यः । जबरेसा च संयोज्या । पुनर्जवतुत्या हझरेसा निष्कास्या । पुनर्हझरेसोपरि हवं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । पुनर्हवरेसा झकरेसा च संयोज्या । एते रेसे
तचिद्धे संपातं करिष्यतः । पुनस्तचिद्धात् लमलम्बः समकोणसमचतुर्भुजस्य धरातले उभयतः कार्यः । पुनर् अद्तुत्यं नतं तसं च पृथकार्यम् । पुनर्हनझनवनकनहसझसवसकसरेसाः संयोज्याः । तसात्
हनझवकसम् इष्ट्षमनेत्रेनं भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

बद्जद्समानरेसावर्गयोगतुल्यो बजवर्गोऽस्ति । बजवर्गो हम्भव-



गैतुस्योऽस्ति । हझवर्गो हतझतसमानरेखयोर्वगयोगतुस्योऽस्ति । त-सात् तहं तझं प्रत्येकं द्वतुस्यं भविष्यति । पुनस्तवं तकं द्वस-मानं भविष्यति । तनतसौ द्वतुस्यावास्ताम् । तसात् नचिहे सचिहे समकोणसमचतुर्भुजकोणेषु यावत्यो रेखा लगिष्यन्ति ताः सर्वाः समाना भविष्यन्ति । तदाष्टौ भुजाः समाना भविष्यन्ति । यदि नसरेखायाम् अवरेखातुस्यायां वृत्तार्द्धे कियते तदा तैद्धमणेन तत्सम-कोणसमचतुर्भुजकोणेषु लगिष्यति । कुतः । सर्वेषां लम्बानां द्जतु-स्यत्वात् । तसादिदं घनक्षेत्रं गोलान्तर्गतं भविष्यति । अववर्गो वज-

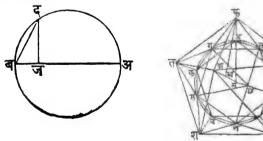
⁹ तद्भामणेन D., V. तदा तत् V., D.

वर्गोद्विगुणोऽस्ति । तदा गोलव्यासवर्गो धनक्षेत्रभुजवर्गाद्विगुणो भवि-व्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अयैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥

गोलान्तर्विशतिफलकयुतं क्षेत्रमुत्पाद्यितुं येथेष्टमस्ति प्र-तिफलकं त्रिभुजं समानभुजं यथा भवति।यदि गोलव्यासोऽ-इसंज्ञाहीं भवति तदास्य क्षेत्रस्य भुजो न्यूनरेखा पतिष्यति।

यथा अवं व्यासः किल्पतः । असात् पद्ममांशो बजं पृथक् कार्यम् । अवव्यासोपिर अदबम् अर्द्धृतं कार्यम् । पुनर्जदलम्बो निष्कास्यः । बदरेसा च संयोज्या । पुनरेकं वृत्तं कार्य यस व्यासार्द्धे बद्दुल्यं भविष्यति । तद्वृत्तं ह्झवं किल्पतम् । तद्वृत्तान्तर्ह्झतवक-पैश्चसमभुजं कार्यम् । पुनरस्य पश्चचापानां लमनसगिचिद्धेष्वर्द्धे कार्यम् । ततो दशपूर्णजीवाः संयोज्याः । प्रथमपश्चसमानभुजानां पश्चकोणम्यो वृत्तव्यासार्द्धेतुल्याः पश्च लम्बाः स्वाप्यास्ते च लम्बा हफझ-स्वतरवशकतसंज्ञकाः किल्पताः । पुनर्दशभुजकोणेषु रेसाः संयोज्याः । तसात् लमनसगपश्चसमानभुजं वृत्तेऽन्यत् क्षेत्रं भविष्यति । पुनर्दशभुजकोणेभ्यो लम्बमस्तकेषु च दशरेसाः संयोज्याः । एता रेसाः प्रत्येकं वृत्तान्तः समपश्चभुजभुजेन तुल्या भविष्यन्ति । पश्चित्रभुजानि समभुजान्युत्पन्नानि भविष्यन्ति । एषां भूमिर्वृत्तान्तः पश्चभुजस्य



९ वतान्तं K., A. २ इध्यते परंतु प्रतिफलकं &c. K., A. इष्टमस्ति । प्रतिफलकं V. ३ समानाः V.

भुजा भविष्यति । पुनिक्सभुजानां शीर्षे रेखाः संयोज्याः । एता रेखाः समानाः समानान्तरा वृत्तान्तः पश्चभुजभुजेन समानाः पतिध्यन्ति । पुनः पश्चक्षेत्राणि त्रिभुजानि भृविष्यन्ति । पुनर्वृत्तकेन्द्रं
सिचिद्दं कल्पितम्। सिचिद्दात् वृत्तोभयदिशि धरातल्योर्लम्बो निष्कासः।
ततो लम्बात् सखरेखा वृत्तषढंशस्य पूर्णजीवातुल्या पृथकार्या । वृत्तदशमांशस्य पूर्णजीवातुल्या खझरेखा पृथकार्या । एवं द्वितीयदिशि
छसं वृत्तदशमांशपूर्णजीवातुल्यं पृथकृतम् । पुनः सह्व्यासाद्धे योजनीयम् । खफरेखा सहरेखायाः समाना समानान्तरा च योज्या ।
पुनरुपरितनपश्चसमभुजकोणझिचिद्दयो रेखाः संयोज्याः । तस्मात्
पश्चित्रभुजान्यन्यान्युत्पचन्ते । पुनर्वृत्तान्तः पश्चसमभुजकोणछिचिद्दयो
रेखाः संयोज्याः । तस्मादिष्टं क्षेत्रं संपूर्णं भविष्यति । संयुक्ता रेखाः
प्रत्येकं पश्चसमभुजस्य भुजा भविष्यन्ति ।

सझरेलायाः खिचहे एताहशौ विभागौ जातौ सझरेलाया निष्पत्तिः सखरेलाया जाता यथा सखरेलाया निष्पत्तिः खझरेलयास्ति । तसात् सझरेलातुल्यछखरेलाझखरेलयोर्घातः सखरेलावर्गतुल्यो भिव्यति । तसात् खफरेला छखलझरेलयोर्घध्यनिष्पत्तौ पतिष्यति । यदि छझरेलायामर्द्धे दृत्तं कियते तदा फिचहे लगिष्यति । पुनः क्षेत्राणां सर्वेषु कोणेषु लगिष्यति । पुनः सखरेला अचिहेऽद्धीकृता । तसात् झअरेलावर्गः पञ्चगुणितखअरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । छझरेलासखरेलयोर्निष्पत्तिझ्यास्ति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । तसात् छझरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । तसात् छझरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भवष्यति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणबदरेलावर्गन्तुल्य आसीत् । कृतः । एतौ द्वौ अववर्गबदवर्गौ अववज्योर्गिष्पत्ती स्तः । तसात् छझरेला अबतुल्या भविष्यति । तसादिदं क्षेत्रं गोछान्तर्गतं भविष्यति । अस्य भुजः पञ्चसमभुजभुजतुल्योऽस्ति । तसादिस्य भुजो न्यूनरेला भविष्यति । इदिमष्टम् ।

पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेसा ततो भवति यतो वृत्तव्यासोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति । अत्र तु गोलव्यासोऽङ्कसंज्ञाहींऽस्ति । वृत्तव्यासोऽङ्कसंज्ञाहीं नास्ति । परं तु वृत्तव्यासार्द्धवर्गो गोलव्यासवर्गस्य पश्चमांशोऽस्ति ।
तदा वृत्तव्यासः केवलमङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति । यस्य वृत्तस्य व्यासोऽइसंज्ञाहीं भवत्यन्यवृत्तव्यासवर्गः केवलमङ्कसंज्ञाहीं भवति तदा प्रथमव्यासिन्ध्यतिर्द्धितीयवृत्तव्यासेन तथा भवति यथा प्रथमवृत्तान्तः पश्चसमअज्ञभुजस्य निष्धितियवृत्ते पश्चसमभुज्ञभुजेनास्ति । यदि द्वयोवर्यासयोर्वगीं मिलितौ भवतस्तदा द्वयोर्भुज्योरिष वर्गी मिलितौ मिनि
स्यतः । तस्मादस्य क्षेत्रस्य पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेस्वया केवलवर्गमिलितो भविष्यति । न्यूनरेस्वया या मिलिता रेसा स्वात् सा केवलवर्गमिलिता भविष्यति । तदा सापि न्यूनरेस्ना भवति । तस्मादस्य
क्षेत्रस्य भुजो न्यूनरेस्ना भविष्यति ॥

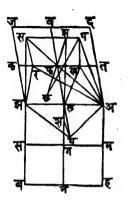
अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २० ॥

गोलस्थान्तः समभुजद्वादशफलकं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति यथा प्रत्येकं फलकः पश्चसमभुजः समानकोणो भविष्यति । अस्य क्षेत्रस्य भुजोऽन्तररेखा भविष्यति यदि व्यासोऽङ्कसं-ज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अवअजे उमे धरातले अगोलान्तर्गतघनहस्तक्षेत्रस्य कित्यते। एकं धरातलं द्वितीये धरातले लम्बन्त् किल्पतं भवति । पुनरेतद्वयो- धरातलयोः सर्वभुजानां वतकलमनसिचहेष्वद्वे कार्यम् । पुनरेतिचिहेषु मिथः संपातकारिण्यः धरातलभुजानां समानान्तरा रेखाः संयोज्याः । प्रत्येकं तफरेखाकफरेखागलरेखानां रिचहखचिहश- चिहेषु द्वाविमी तथा कार्यी यथा प्रत्येकस्य खमहत्खण्डेन तथा निष्पत्तिभवति या महत्खण्डस्य लघुखण्डेनाखि । एतासां महत्खण्डानि फरफखगशसंज्ञानि किल्पतानि । पुनः खरशचिहेम्यः

⁹ सवति K., A. २ संपातकर्त्यः V. ३ द्वौ विभागौ V.

लम्बाः फखरेखातुस्या उभयोधरातलयो-निष्कास्याः । एते लम्बाः खथरसशघाः कल्पताः । पुनर् अखअघअथंथसस-झश्चरेखाः संयोज्याः । तसात् तफवर्ग-तखवर्गयोः अतवर्गतखवर्गयोवी योगः अखवर्गतुल्यो भवति । अयं त्रिगुणख-फवर्गतुल्योऽस्ति । त्रिगुणखथवर्गस्यापि तुल्योऽस्ति । पुनर् अथवर्गश्चतुर्गुणखथव-गीतुल्योऽस्ति । तसात् अथरेखा द्विगुण-



खफरेसातुल्या भविष्यति । तदा खरतुल्या भविष्यति । यसतु-ल्यापि भविष्यति। एतत्प्रकारेण निश्चितम् अघरेला घझरेला झसरेला थसरेला समाना भविष्यन्ति । तसात् अथथससम्बद्धघर्यभुजाः भविष्यन्ति । पुनः **फश**लम्बः अजधरातले खफतुत्यः निष्कास्यः । पुनर्झललखरेले संयोज्ये । तदा फतुत्रस्यफलरेन स्राया निष्पत्तिः शघतस्यसफरेसया कीदृश्यस्ति । यादृशी अफ-रेसातुत्यसफरेसाया निष्पत्तिः शलरेसातुल्यतसरेसयास्ति । फल-रेखा शघरेखायाः समानान्तरास्ति । तदा अफरेखा छञ्चरेखायाः समानान्तरा भविष्यति । तसात् झलघं सरलैका रेखा भविष्यति । अठझं सरलैका रेलाखि तसात् अथसझघं पञ्चसम्भुजं एकधरातले भविष्यति यतो झलघरेसाअलझरेसयोर्धरातलमस्ति । तसिन् पुनद् असं अरं द्वे रेखे संयोज्ये । तररेखा फचिहे एतादृक्खण्डितास्ति यथा सर्वरेखाया महत्खण्डेन निष्पत्तिमहत्खण्डस्य लघुखण्डेन चास्ति । अस्या महत्सण्डं तफमस्ति । तसात् तरवर्गरफवर्गौ तरवर्गरसवर्ग-तुल्यो स्तः । तद्योगः तअवर्गतुल्यस्य तफवर्गत्रिगुणोऽस्ति । पुनस्त-अवर्ग उभयोयीज्यः । तसात् तरवर्गरसवर्गतवर्गाणां

⁹ अत V. २ V. has रघ aftar घथ, ३ अतसझघं V. ४ यत् V. मा॰ २६

असवर्गतुल्यचतुर्गुणतअवर्गसमानो जातः । अझवर्गस्तु चतुर्गुण-अतवर्गसम आसीत् । तसात् असरेखा अझरेखा च समा मवि-ष्यति । तसात् अझसअसझकोणो समानो भविष्यतः । एवं निश्चीयते रसझकोणस्तयोः कोणयोः समानो भविष्यति । तसात् पश्चभुजस्य कोणाः समाना जाताः । इदं पश्चभुजं क्षेत्रं घनहस्तस्मैक-भुजे पतितम् । घनहस्तस्य द्वादशभुजाः सन्ति । यदि प्रत्येकभुजे पश्च-भुजोपरि एतादशं कियते चेत्तदा क्षेत्रं पूर्ण द्वादशासं भविष्यति । प्रत्येकफलके पश्चपश्चभुजा भवन्ति ।

पुनर्शफरेसा निष्कास्या यथा घनहस्ते कर्णे छचिहे संपातं करोति । तसात् फछरेसा घनहस्तकर्णार्द्धं करिष्यति । इयं फछरेसा घनहस्तकर्णार्द्धं करिष्यति । इयं फछरेसा घनहस्तस्य अजार्द्धं प्रत्यास्त । पुनर्छसरेसायाः फिचहोपर्येताहशौ विभागौ जातौ सर्वरेसाया महत्स्वण्डेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा महत्स्वण्डस्य लघुस्वण्डेनास्ति । छझवर्गश्चफवर्गयोगः छझझथवर्गयोग् गतुल्यरुछथवर्गतुल्योऽपि त्रिगुणछफवर्गसमोऽस्ति । छफं घनहस्तस्य भुजार्द्धमस्ति । घनहस्तकर्णार्द्धं घनहस्तार्द्धस्य त्रिगुणस्य सममस्ति । या रेसार्र्छचिहात् पश्चभुजकोणपर्यन्तं निःसरिष्यन्ति ताः सर्वा अपि समाना भविष्यन्ति । तसात् घनहस्तावेष्टको गोल एतत्सेत्रावेष्टकोऽपि भविष्यति । यदि घनहस्तभुजस्योभे स्वण्डे एताहशे क्रियेते यथा सर्वभुजस्य महत्स्वण्डेन यथा निष्पत्तिभवति तथा महत्स्वण्डस्य लघु-स्वण्डेन मवति तदा पश्चभुजस्य भुजो घनहस्तभुजस्य महत्स्वण्डं भवेत् । तसादियमन्तररेसा भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

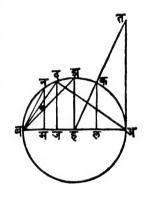
अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

एतिश्चयं कर्नुमीहामहे। किं तत्। यानि पश्चक्षेत्राणि गोलान्तर्गतान्युक्तानि यद्येतानि एकगोले भवन्ति तदेतेषां भुजा एकगोले भवितुमईन्ति नवेति विचार्यते।

१ अल in V. २ स्विहे in V.

यथा अबं गोलव्यासः किल्पतः । व्यासोपिर अझवमर्द्धवृत्तं कार्यम् । अवं इविहेऽद्धितं कार्य जिचिहे तृतीयांशः कर्तव्यः । इझजदलम्बो निष्कास्यो । पुनर्बझरेलाअदरेलाबदरेलाः संयोज्याः । तदा अदं शङ्कभुजो भविष्यति । बदं घनहस्तभुजो भविष्यति । वझं अष्टास्रघनक्षेत्रस्य भुजो भविष्यति । पुनर अतल्लम्बः अबतुल्यः अबरेलोपिर निष्कासः । तहरेला संयोज्या । पुनः कलरेला तअरेलायाः समानान्तरा निष्कास्या । तसात् तअअहयोर्निष्पत्तिः कल्लह्योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तअं अहाद्विगुणमस्ति । कलं लहाद्विगुणं भविष्यति । तअवर्गश्चतुर्गुणअहवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् कल्लवर्गश्चतुर्गुणलहवर्गतुल्यो भविष्यति । कहवर्गतुल्यो

अहवर्गः पञ्चगुणलहवर्गतुत्योऽस्ति । अ-बकलयोर्निष्पत्तिः अहलहयोर्निष्पत्तितु-ल्यास्ति । तसात् अबवर्गः पञ्चगुणकल-वर्गतुत्यो मविष्यति । तसात् कलं विश-त्यसक्षेत्रस्य व्यासार्द्ध भविष्यति । अबं वहाद्दिगुणमस्ति । अजं च वजात् द्विगु-णमस्ति । तसात् जबं जहात् द्विगुणं भविष्यति । तसात् जबं जहात् द्विगुणं



णहजातुल्यं भविष्यति । तसात् आहवर्गी नवगुणहजावर्गतुल्यो भविष्यति । पञ्चलहवर्गतुल्यश्चासीत् । तसात् लहं हजादिषकं भविष्यति । हमं लहतुल्यं पृथकार्यम् । मनलम्बो निष्कास्यः प्रत्येकं लमं मनं च लकतुल्यं भविष्यति । लअं मबतुल्यं भविष्यति । लअं मबतुल्यं भविष्यति । लअं मबतुल्यं भविष्यति । लमं विश्वतिफलकक्षेत्रवृत्तस्य व्यासार्द्वतुल्यमस्ति । प्रत्येकम् अलं मबं दशांशस्य पूर्णज्या भविष्यति । पुनर्बनरेसा संयोज्या । तदा पञ्चभुजस्य भुजो भविष्यति । अयं विश्वत्यसक्षेत्रस्य भुजो जातः । पुनर्द्वस्य सचिद्दे द्वौ विभागौ कार्यौ महत्त्वण्डं बसं कल्पितम् । तत्

द्वादशास्त्रभुजो भविष्यति । इदं प्रकटमस्ति । अदं गोलान्तर्गतराङ्कभुजोऽष्टासभुजस्य बझ्मभुजादिषकोस्ति । पुनर्बझं बद्धनहस्तमुजादिषकमस्ति । बदं विश्तस्यसभुजाद् बनादिषकमस्ति । तदा बनं
द्वादशफलकभुजात् बसादिषकं भविष्यति । कुतः । अजवर्गश्चतुर्गुणबजवर्गतुत्योऽस्ति । दबर्गिसगुणबजवर्गेण तुल्योऽस्ति ।
तसात् अजं दबादिषकं भविष्यति । अममत्यिषकं भविष्यति ।
प्रत्येकम् अमे दमे च उमे महत्स्लण्डे मलबसे सः । तसात् मलतुत्यं
मनं बसादिषकं भविष्यति । बसमत्यिकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टौ द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाय इति समिभधारूदितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाझि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति विश्वसंख्यो गतोऽयम् ॥

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

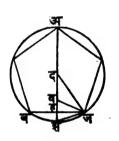
॥ अथ चतुर्दशाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १४ ॥

॥ अत्र दश क्षेत्राणि सन्ति ॥ १० ॥ अ<mark>थ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥</mark>

वृत्तकेन्द्रात् पश्चभुजस्य भुजोपरि यो लम्बो भवति स वृत्तपष्ठांशपूर्णजीवादशमांशपूर्णजीवायोगस्यार्द्धे भवति ।

यथा दकेन्द्रोपरि अवजवृत्तं वर्ज पश्चभुजस्य भुजो दहलम्बश्च

किल्पतः । अयं लम्बो झपर्यन्तं वर्द्धनीयः । जझरेसा च कार्या । इयं वृत्तदशमांशपूर्णजीवा जाता । दजं जझादिषकमितः । तसात् इझं दहान्यूनं भविष्यति । कुतः । जझस्य जदान्यूनत्वात् । पुनर्दहात् हवं हझतुल्यं पृथक् कार्यम् । जवरेसा संयोज्या । अद-



जकोणो जदशकोणाचतुर्गुणोऽस्ति । दश्गजकोणाद्विगुणोऽस्ति । जव-श्मकोणादिप द्विगुणोऽस्ति । जवश्मकोणो वदजकोणवजदकोणयोगो बदजकोणाद्विगुणोऽस्ति । तसात् वजदकोणवदजकोणो समानौ भविष्यतः । एवं वजभुजवदभुजो समानौ भविष्यतः । तसात् जशश्चस्योगो हदसमानो जातः । अयं द्विगुणो द्विगुणहदसमानो भवति । द्विगुणं हदं दशमांशपूर्णज्याषष्ठांशपूर्णज्यायोगतुल्यमस्ति । तसात् हदं षष्ठांशपूर्णज्यादशमांशपूर्णज्यायोगार्द्धं जातम् । इदमेवा-साकिमष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

पश्चसमभुजस्य भुजवर्गोऽस्य कोणसन्मुलपूर्णज्यावर्गो-ऽनयोर्योगः पञ्चगुणितव्यासार्द्धवर्गतुल्यो भवति ।

⁹ तत्र V.

यथा अबजवृत्तं बजं पश्चभुजस्य भुजः अजं तत्कोणस्य पूर्णज्या

अद्शं व्यासः कल्पितः । जश्गरेखा संयो-ज्या । इयं दशमांशपूर्णज्यास्ति । अजवर्ग-जश्गवर्गयोगः अञ्चवर्गतुल्यो दश्गवर्गाश्च-तुर्गुणोऽस्ति । पुनदृश्चवर्ग उभयोर्थोज्यः । अयं दश्गवर्गो जञ्चवर्गयुक्तो जबवर्गसमा-नोऽस्ति । तसात् अजवर्गवजवर्गयोगः पश्च-



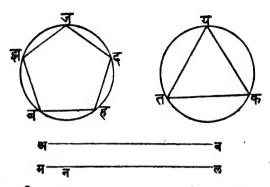
गुणितद्भवर्गसमानो जातः । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अर्थ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यद्येकगोले द्वादशफलकघनक्षेत्रमथ च विंशत्यस्रघ-नक्षेत्रं चोभे भवेतां तदा द्वादशास्त्रस्य पद्यभुजं विंशत्यस्रस्य च त्रिभुजमेते द्वे क्षेत्रे एकवृत्ते भैविष्यतः।

यथा अवं गोलस व्यासः किल्पतः । जदहवशं द्वादशासघनक्षेत्रे पश्चभुजं किल्पतम् । तयकं विंशत्यसघनक्षेत्रस्य त्रिभुजं किल्पतम् । दश्चरेखा किल्पतगोल्लघनहस्तस्य भुजः किल्पतः । लमरेखा विंशत्यन्त्रघनक्षेत्रस्य वृत्ते व्यासार्द्धे किल्पतम् । अस्या लमरेखाया निच्हे तथाविषं खण्डद्वयं कृतं यथा सर्वरेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन भवति तथा महत्खण्डस्य निष्पत्तिर्लेष्ठसण्डेन भवति । तन्महत्खण्डं लनं किल्पतम् । इदं लनं वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या भविष्यति । तयरेखान्वगों लमलनयोर्वगेगोगतुल्यो भविष्यति । लमरेखानिष्पत्तिर्लनरेखया तथास्ति यथा श्रद्दनिष्पत्तिर्जदेनास्ति । पश्चगुणितलम्बर्गरेखया तथास्ति यथा श्रद्दनिष्पत्तिर्जदेनास्ति । पश्चगुणितलम्बर्गरेखया तथास्ति यथा श्रद्दनिष्पत्तिर्जदेनास्ति । पश्चगुणितलम्बर्गरे

१ पतिष्यतः K., A.



सिगुणितझदवर्गतुल्योऽस्ति । यतो लमपञ्चवर्गा झदस त्रयो वर्गाश्च पृथक् अबवर्गतुल्याः सन्ति । तसात् लमपञ्चवर्गा लनपञ्चवर्गाश्च सर्वेषां योगतुल्यः पञ्चगुणिततयवर्गो भवति । अयं त्रिगुणझदवर्गिस्मिगुणदज्जवर्गश्चानयोयोगतुल्योऽस्ति । यसिन् वृत्ते तयकं त्रिभुजं पतित तत् व्यासार्द्धत्रिगुणवर्गतुल्यस्तयवर्गो भवति । यद्वृत्तान्तर्जद्वस्त्वम् पञ्चभुजं पतित तत्र पञ्चगुणतदव्यासार्द्धवर्गतुल्यो झददज्जवर्गयोगोऽस्ति । यद्वृत्तान्तस्तयकत्रिभुजं पति पञ्चदरागुणतद्यासार्द्धवर्गतुल्यो भवति । यद्वृत्तान्तर्जदहवञ्चपञ्चभुजं पति पञ्चदरागुणतद्यासार्द्धवर्गतुल्यः पञ्चगुणतयवर्गो भवति । यद्वृत्तान्तर्जदहवञ्चपञ्चभुजं पति पञ्चदरागुणतत्यवर्गो भवति । यद्वृत्तान्तर्जदहवञ्चपञ्चभुजं पति पञ्चदरागुणतत्यवर्गोसिगुणझददज्जवर्गयोगतुल्यो भवति । तसात् यसिन् वृत्ते तयकत्रिभुजं पति अथ च यद्वृत्ते जदहवञ्चं पञ्चभुजं पति द्वयोवर्गसार्द्धवर्गो तुल्यो भवतः । तसाद् व्यासार्द्धवर्गयोनस्तुल्यस्त्रावृत्तेऽपि तुल्ये जाते । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

द्वादशफलकघनक्षेत्रस्य पश्चभुजा यस्मिन् वृत्ते पतन्ति तद्वृत्तकेन्द्राश्चिःस्तो लम्बः पश्चभुजस्य भुजं यदा गच्छति तदा पश्चभुजस्यैकभुजलम्बयोधीतस्त्रिशद्धुणितो द्वादशफलक-घनक्षेत्रस्य संपूर्णधरातलतुल्यो भवति ।

यथा अवं तद्वतं कल्पितं यस्यान्तद्वीदशफलक्वनक्षेत्रस्य पश्चमु-

जक्षेत्रं पतितम्। पश्चभुजक्षेत्रं च अबजदहं कल्पितम् । झतं लम्बः कल्पितः । अस्य पद्म-मुजस्य पद्मत्रिभुजानि भविष्यन्ति यथैकं तेषां **झद्**जमस्ति । तसात् द्वौदशास्त्रघनक्षेत्रस्य षष्टित्रिमुजानि भविष्यन्ति । झतलम्ब एक-भुजेन गुणितस्तदा त्रिभुजद्वयक्षेत्रफलतुल्यो



भविष्यति । तसात् त्रिंशत्घाताः संपूर्णधरातल्जुल्या भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यड्तान्तर्विशत्येस्रघनक्षेत्रस्य त्रिभुजं पतति तत्केन्द्रात् लम्बस्त्रिभुजस्य भुजे यदा गच्छति तदा त्रिभुजैकभुजलम्बघा-तिसाद्वणो विंशत्यैस्रघनक्षेत्रस्य संपूर्णधरातळतुल्यो भवति।

यथा अर्ब तद्वत्तं कल्पितं यदन्तिर्विशत्र्येश्वधनक्षेत्रत्य अवज-त्रिभुजं पतितम् । दहं स्रम्बः कल्पितः । त-सादस्य त्रिभुजस्य त्रीणि त्रिभुजानि भविष्य-न्ति । तेषु यथैकं द्वजमस्ति । विशत्यस्य-नक्षेत्रस्य ईदशानि षष्टित्रिभुजानि पतिष्यन्ति । त्रिभुजस्यैकमुजेन लम्बश्चेद्रुण्यते षष्टित्रिभुजा-न्तर्गतक्षेत्रद्वयफलतुल्यो भविष्यति । तसात्



विंशदूषाताः संपूर्णधरातलतुल्या भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

द्वादशफलकघनक्षेत्रं विंशतिफलकघनक्षेत्रं च यदैकगोला-

१ द्वादशफलक ° K., A. २ K., &. A. have फलक for अस. ३ फलक K., A. ४ फलक K., A. ५ K., A. have फलक for अल.

न्तः पति । तदैतद्धरातल्योर्निष्पत्तिस्तथा भवति यथा तद्गो-लान्तर्घनहस्तभुजनिष्पत्तिविशत्यस्रघनक्षेत्रभुजेनास्ति ।

अबजं तद्वृतं कल्पितं यदन्तर्द्वयोर्घनक्षेत्रयोः पञ्चभुजं त्रिभुजं

च पतितम् । अबं त्रिभुजस्य भुजः

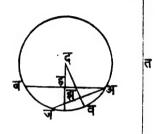
कल्पितः । अजं पश्चभुजस्य भुजः

किरपतः । तरेखा घनहस्तभुजः क-

ल्पितः। पुनर्दहलम्बः अबरेखायां नि-

ष्कांसः । दझलम्बः अजरेलायां नि-

ष्कोर्स्यः पुनरयं लम्बो वचिह्नपर्यन्तं



वर्द्धनीयः । पुनरवरेसा संयोज्या । इयं वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या मिवष्यति । तसात् दश्चं वृत्तवश्चरशमांशपूर्णजीवयोयोंगार्द्धतुल्यं भविष्यति । द्वयोः पूर्णजीवयोयोंगार्द्धस्य निष्पत्तिः षडंशजीवार्द्धेन तथास्ति यथा षडंशार्द्धजीवानिष्पत्तिर्दशमांशजीवार्द्धेनास्ति । तसात् अद्वह्योरपीदृश्येव निष्पत्तिभिविष्यति । एवं तरेसाअज्ञरेसयोरपि निष्पत्तिभिविष्यति । तसात्तरेसाअज्ञरेसानिष्पत्तिदृश्चदृहरेसानिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् अजद्भधातो दृहतरेस्वयोधीत-तुल्यो भविष्यति । पुनस्तिश्चद्धणितैकधातस्त्रिशद्धणितद्वितीयधाततुल्यो भविष्यति । पुनस्तिशद्धणितैकधातस्त्रिशद्धणितद्वितीयधाततुल्यो भविष्यति । दृश्चअज्ञधातस्त्रिशद्धणितो द्वौदशफ्लकधरातलक्षेत्रफलनुल्योऽस्ति । तसात् दृहरेसातरेस्वयोधीतस्त्रिश्चर्षणितस्तद्धरातल एवास्ति । दृश्चअज्ञधातस्त्रिशद्धणितो विंशत्यस्त्रधनक्षेत्रधरातलतुल्योऽस्ति । तसात् द्वरेसातरेस्वयोधीतस्त्रिश्चर्यातलेतुल्योऽस्ति । तसात्तरेस्वानिष्पत्तिः अवरेस्वया तथास्ति यथा द्वादशास्रधरातलक्षेत्रस्य विंशत्यस्रधरातलेनास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥ वृत्तान्तर्गतपञ्चभुजक्षेत्रकोणस्य पूर्णजीवायाः पञ्चगुणः

१-२ निष्कास्यः V. ३ द्वादशास्त्र $^\circ V$. ४ त्रिंशहुणः V.

मा० २७

षडेशः तद्वृत्तव्यासस्य त्रयश्चतुर्भागाश्चानवोर्घातः पत्रशुक-क्षेत्रफळतुस्यो भवति ।

यथा आहं वृत्तं कल्पितम् । तन्मध्ये आवकळजं पश्चमुजक्षेत्रं

कल्पितम् । सन्मुसकोणस्य बजपूर्णज्या किलिपता । अदह्व्यासः कल्पितः । दहं झचिहे
अदितं कार्यम् । तसात् अझं व्यासस्य
त्रयश्चतुर्मागा भविष्यन्ति । जतस्य जवं
तृतीयांशः पृथकार्यः । तसात् बवं बजस्य
पश्चषष्ठांशा भवन्ति । अझनिष्पत्तिः अदेन
तथास्ति यथा बतनिष्पत्तिः तवेनास्ति ।



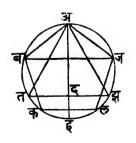
अझतवधातो बतअद्धाततुल्योऽस्ति । अयं द्विगुणितअदबक्षेत्रफ-छतुल्योऽस्ति । दझम् अदस्यार्द्धमस्ति । तदा बतअझधातः अदबत्रि-भुजस्य त्रिगुणक्षेत्रफलतुल्यो भविष्यति । तवअझधातो बतअझधा-तयुतस्तदा अझबवधातः पश्चभुजस्य क्षेत्रफलं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

द्वादशधरातलिंदातिधरातलक्षेत्रे यदि गोलमध्ये पतत-स्तदा तद्धरातलयोर्निष्पत्तिगीलान्तर्गतघनहस्तभुजिंदातिध-रातलक्षेत्रभुजयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

पश्चभुजं त्रिभुजं वृत्तं व्यासश्च पूर्वोक्तवत् कल्पनीयः । बजं घनह-

स्तस्य भुजः संयोज्यः । तस्मात् अयं व्या-सस्य त्रयश्चतुर्थीशाः भविष्यन्ति । तदा अ-यस्य बजपञ्चगुणितषष्ठांशजसस्य च घातः पञ्चभुजक्षेत्रफलतुल्योऽस्ति । तस्मात् अयसंज्ञं द्वादशगुणजसेन गुणितं अथवा दशगुणित-वजेन चेद्गुण्यते तदा द्वादशधरातलक्षेत्रस्य संपूर्णधरातलफलं भवति । अयसंज्ञं चेत्



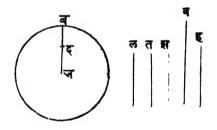
शतेन गुण्यते तदा त्रिभुजक्षेत्रफलद्विगुणं भवति । तसात् अयसंग्रं दशगुणितञ्चतेन गुण्यते तदा विंशतिधरातलक्षेत्रस्य फलं भवति । तसात् द्वयोर्धरातलयोर्निष्यत्तिजीबञ्चतनिष्यत्तितुल्या भवेत्। इदमेवेष्टम्॥

अथ नवमं क्षेत्रम्॥९॥

इष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्य यथा सर्वरेखामहत्खण्ड-योनिष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्पत्तितुल्या भवति तदा सर्वरेखावर्गमहत्खण्डवर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति पुनः सर्वरेखावर्गलघुखण्डवर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तदाऽनयोरेखयोनिष्पत्तितुल्या गोलान्तर्गतघनहस्तभु-जविशतिघरातलभुजयोनिष्पत्तिर्भवति ॥

यथा बजरेला कल्पिता। अस्या दिचिहे तथा खण्डद्वयं कृतं यथा

संपूर्णरेखा महत्खण्डयोनिष्य-तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्यत्ति-तुल्या जाता । महत्खण्डं जदं कल्पितम् । पुनर्जबव्यासार्द्धेन अबं वृत्तं कार्यम् । हरेखात्रि-भुजस्य भुजः कल्पितः । वरे-खा पञ्चभुजकोणस्य पूर्णज्या



किल्पता । झरेखा सा रेखा कल्प्या यस्या वर्गो जबवर्गजदवर्गयोग-तुल्योऽस्ति । तरेखा च सा रेखा कल्प्या यस्या वर्गो जबवर्गबद्दवर्ग-योगतुल्योऽस्ति । लरेखा च जदतुल्या किल्पता । तत्र हरेखावर्गो बजरेखावर्गात्रिगुणोऽस्ति । तरेखावर्गश्च दजरेखावर्गात्रिगुणोऽस्ति । लरेखावर्गादिपि त्रिगुणोऽस्ति । तसात् हरेखानिष्पत्तिर्बजरेखया तथा-स्ति यथा तरेखानिष्पत्तिर्लरेखयास्ति । पुनहरेखानिष्पत्तिस्तरेखया तथास्ति यथा बजरेखानिष्पत्तिर्लरेखयास्ति । यदि वरेखाया एता-ह्यां खण्डद्वयं कियते यथा संपूर्णरेखाया महत्खण्डेन निष्पत्तिर्महत्ख- ण्डलघुलण्डयोर्निष्पत्तितुत्या भवति तदास्य महत्त्वण्डं झृतुत्यं ग्रीष्यति । तसात् वरेलाझरेलयोर्निष्पत्तिर्वजरेलाळरेलयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् वरेलाहे स्वयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् वरेलाहे स्वयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम्॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

तत्रेष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्य यथा सर्वरेखानिष्पि महत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डलघुखण्डयोरस्ति। ये वे प्रकारा अस्यां रेखायां भवन्ति ते ते प्रकारा एतन्निष्पत्तिनि भागगतास्वन्यरेखासु भवन्ति।

यथा अबं जिचेहे एतिन्नष्यत्तिसहरां खण्डद्वयं किर्णतम् । पुनर्महत्सण्डं च अजं किल्पतम् । अन्या रेखा दहं किल्पता । असा
झिचेहे तिन्नष्यत्तौ खण्डद्वयं किल्पतम् । पुनर्महत्स्वण्डं द्श्नं किल्पतम् ।
अवअजनिष्पत्तिः अजजबयोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । पुनर्दहृदृश्चितिः ध्वित्रंश्चश्चहिन्ष्पत्तितुत्यास्ति । अववज्ञघातअज्ञवर्गयोर्निष्पत्तिः देहहृश्चघातदृश्चवर्गनिष्पत्तितुत्यास्ति । चतुर्गुणअववज्ञघातअजवर्गयोगनिष्पत्तिः अजवगेण तथास्ति यथा चतुर्गुणितदृहृङ्गघात- अ
दश्चवर्गयोगस्य निष्पत्तिदृश्चवर्गणास्ति । अववज्योगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति । अववज्योगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति । अवअजयोर्निष्पत्तिः यथा द्विः
गुणदृह्निष्पत्तिदृश्चेनास्ति । अवअजयोर्निष्पत्तिदृश्चेनिष्पत्तिः
तुत्यास्ति । अववजनिष्पत्तिदृहृश्चनिष्पत्तितुत्यास्ति । तसात्
अवदृश्ननिष्पत्तिः अजदृश्ननिष्पत्तितुत्यास्ति । जवहृश्चनिष्पत्तेरिष्

१ निष्पत्त्यापि V.

महत्त्वः ज्ञुल्यास्ति । तस्मात् ये प्रकारा अजजवयोर्भवन्ति ते सर्वे प्रकारा रेमालंक दहहञ्जयोर्भवन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

ते । इन यति 'इत श्रीमद्राजाधिराजप्रमुवरजयसिंहस्य तुश्रे द्विजेन्द्रः श्रीमत्सन्राद्ध् जगन्नाय इति समभिधारुदितेन प्रणीते श्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेसागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विर्रति शक्रतुल्यो गतोऽभूत्॥

॥ इति चतुर्वशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

<u>ग्डबोर</u>-

1

हुइ ह

1500 1500

Ţ. .

; ;

१ V. omits इति.

ण्डलघुसण्डयोर्निष्पत्तितुत्या भवति तदास्य महत्स्वण्डं झतुल्यं भवि-ष्यति । तसात् वरेसाझरेसयोर्निष्पत्तिर्बजरेसास्तरेसयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । हरेसात्तरेसयोरपि निष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् वरेसाहरे-स्वयोर्निष्पत्तिर्झरेसात्तरेसयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

तत्रेष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्य यथा सर्वरेखानिष्पत्ति-मेहत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डलघुखण्डयोरस्ति। ये ये प्रकारा अस्यां रेखायां भवन्ति ते ते प्रकारा एतन्निष्पत्तिवि-भागगतास्वन्यरेखासु भवन्ति।

यथा अबं जिन्हे एतिनिष्पत्तिसदृशं सण्डद्वयं किल्पितम् । पुनर्भहत्सण्डं च अजं किल्पितम् । अन्या रेसा दृष्टं किल्पिता । अस्या
झिन्हे तिन्नष्पत्तौ सण्डद्वयं किल्पितम् । पुनर्भहत्सण्डं दृशं किल्पितम् ।
अवअजिनिष्पत्तिः अजजवयोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । पुनर्दहृद्द्शनिष्पत्तिदृश्गशहृनिष्पत्तितुत्यास्ति । अववज्ञघातअजवर्गयोर्निष्पत्तिदृष्ट्हृश्ग्वातदृश्गवर्गनिष्पत्तितुत्यास्ति । चतुर्गुणअववज्ञघातअजवर्गयोगनिष्पत्तिः अजवर्गण तथास्ति यथा चतुर्गुणितदृहृङ्ग्यातदृश्गवर्गयोगस्य निष्पत्तिदृश्गवर्गणास्ति । अववज्ञयोगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति यथा दृहृङ्गयोगनिष्पत्तिदृश्गेनास्ति । तसात् द्विगुणअवनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति यथा द्विः
गुणदृहृनिष्पत्तिदृश्गेनास्ति । अवअजयोर्निष्पत्तिदृश्गेनोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । अववज्ञनिष्पत्तिदृश्गिनिष्पत्तितुत्यास्ति । तसात्
अवदृश्गिनेष्पत्तिः अजदृश्गिनिष्पत्तितुत्यास्ति । जवहृश्गिनिष्पत्तेरिष्

⁹ निष्यस्थापि V.

तुल्यास्ति । तसात् ये प्रकारा अजजवयोर्भवन्ति ते सर्वे प्रकारा दहहञ्जयोर्भवन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

श्रीमद्राजाघिराजप्रमुवरजयसिंहस्य तुष्टी द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राद्ध् जगन्नाय इति समभिधारुदितेन प्रणीते प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विर्रति शक्रतुल्यो गतोऽभूत्॥

॥ ईति चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

⁹ V. omits इति.

॥ अथ पश्चदृशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

॥ असिन्यट् क्षेत्राणि ॥ ६ ॥ ॥ अथा प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

तत्र व्यासार्ग्वस्य तथाविधे द्विसण्डे केर्त्तव्ये यथा व्यासा-र्ज्वस्य महत्सण्डे या निष्पत्तिस्तथामहत्सण्डस्य लघुसण्डेन भवति तदा वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या महत्सण्डं भवति ।

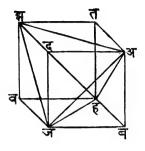
ल्यास्ति । अवबद्योर्निष्पत्तिर्वश्नश्नह्योर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अवश्नह्यातो बद्वश्नघाततुल्यो भविष्यति । अवं वहतुल्यमस्ति । तसात् वहश्नह्घातो बद्वश्नघातर्तुल्यो भविष्यति । वहश्नह्घातो वश्नवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् वश्नं बजतुल्यं बद्ततुल्यं भविष्यति । तसात् वश्नं वजतुल्यं वदतुल्यं भविष्यति । तसात् वर्जं वृत्तदश्चमांशस्य पूर्णजीवा भविष्यति । इदमेवास्माकिमृष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

घनइस्तक्षेत्रमध्ये यस्य फैलकाः समाना भवन्ति ताहराः शङ्करुत्पादनीयोऽस्ति ।

⁹ V. omits अथ. २ अपेक्षिते K., A. ३ V. notices तदा also. ४ समो K., A. ५ V. omits अथ. ६ फळकानि समानानि K., A. ७ तादशशकुनिकीशीस्ति.

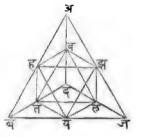
यथा बझं घनहस्तः कल्पितः । अझ-झजअजअहजहझहरेखाः संयोज्याः । तसात् अजझहमसाकिमष्टं भविष्यति । कुतः । अस्य भुजा घनहस्तभुजानां कर्णा भविष्यन्ति । इदिमष्टम् ॥



अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यस्य शङ्कोः फलकानां भुजाः समाना भैविष्यन्ति त-स्यान्तरष्टफलकक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदं शङ्कः कल्पितः । अस्य षड् अपि भुजा अद्धिताः । अद्धीचिद्वेषु रेखाः संयोज्याः । वझलयतहम् अष्टभुजक्षेत्रमुत्प-त्रं भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥



अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥ घनइस्तक्षेत्रान्तरष्टफलकक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

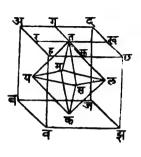
यथा अवजदहवझछं घनहस्तः कल्पितः । घनहस्तफलककर्ण-संपातचिद्वेषु रेखाः संयोज्याः । यतलकमस्अष्टफलकक्षेत्रमुत्पन्नं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

तचिद्वात् गफरेखा हअरेखायाः समानान्तरा निष्कास्या । रख-

१ V. omits अथ. २ भवन्ति V. ३ V. omits अथ.

रेखा च अदरेखा समानान्तरा निष्कास्या। अनेनैव प्रकारेण सर्वभुजेषु रेखाः संयोज्याः। तदैताः रेखाः समाना भविष्यन्ति । एता रेखास्तरसंपातचिद्वेषु तत्संबन्धिभुजयोध्य लैम्बाध्य भविष्यन्ति । एतासु द्वे द्वे रेखे समकोणसंबन्धिभुजा भविष्यन्ति । तसा-देतत्कर्णाः समाना भविष्यन्ति । एता एव क्षेत्रभुजाः सन्ति । इदमेवेष्टम् ॥



अथ पद्ममं क्षेत्रम्॥५॥

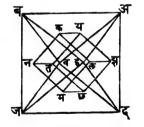
अष्टफलकक्षेत्रमध्ये एकं घनहस्तक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदहवम् अष्टफलकक्षेत्रं कल्पितम् । त्रिभुजानां केन्द्रा-ण्युत्पादनीयानि । केन्द्रेषु च रेखाः संयोज्याः । तत्र झवतयकल्पमन-मिष्टं घनहस्तक्षेत्रमुत्पन्नम् ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि केन्द्रेम्यश्चिभुजभुजेषु लम्बा निष्कास्यास्ते सर्वेऽपि लम्बाः

समाना भविष्यन्ति । ते लम्बाः समानकोण-संबन्धिभुजा भविष्यन्ति । कुतः । अष्टफल-कक्षेत्रस्य फलकद्वयसंबन्धजनितकोणाः ख-समाना भैवन्ति । समाप्तकोणस्य भुजा धन-हस्तभुजतुल्या मिथः समाना भविष्यन्ति । तेषां मध्ये चत्वारश्चत्वार एकधरातलवेष्टनं



करिष्यन्ति । यदि केन्द्रेषु कोणचिह्नेषु च रेखाः संयोज्यन्ते तदैता रेखाः समाना भविष्यन्ति । समानकोणसंगन्धिभुजा भविष्यन्ति ।

९ लम्बा भविष्यन्ति V. २ V. omits अथ. ३ भविष्यन्ति K., A.

प्रत्येकचतुर्भुजस्य कर्णाः समाना भविष्यन्ति । तसात् समचतुर्भुज-समकोणा भविष्यन्ति । तदोत्पन्नं घनहस्तक्षेत्रं भविष्यति । इदमवेष्टेम्।

अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

तत्र विशतिफलकक्षेत्रमध्ये द्वादशफलकक्षेत्रचिकीर्पास्ति । यथा अवजहद्वश्रक्ठतयकलं विशतिफलकक्षेत्रं कल्पितम् । अस्य त्रिभुजानां केन्द्राण्युत्पादनीयानि । तेषु चिह्नानि कार्याणि । तत्र रेसाः संयोज्याः । तसादुत्पनं क्षेत्रमिष्टं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि एभ्यः केन्द्रेभ्यो लम्बास्मिंभुजेषु निष्कात्यन्ते । एते लम्बाः

समाना भविष्यन्ति । समकोणसंबन्धिभुजा भविष्यन्ति । तसात् कोणसन्मुसभुजाः सं-माना भविष्यन्ति । तासु पञ्चपञ्चरेसा एकध-रातैले वेष्टनं कुर्वन्ति ।

पुनरिप यदि विंशतिफलकक्षेत्रकर्णः सन्मु-स्वकोणगतो भवति । कर्णाद्धांच पश्चित्रभुजेषु लम्बा निष्कास्याः । त्रिभुजानि तथाविधानि कार्याणि येषां कोणाः कर्णशिरःसंगैका भव-नित । एते लम्बाः समानाश्च स्यः । पुनर्यत्र

छम्बाः पतन्ति ततः कर्णोपरि छम्बा निष्कास्याः । तवैते छम्बा एकस्मिनेव चिह्ने पतिष्यन्ति । तसात् पञ्चरेस्वा याः केन्द्रसंसक्ता-स्ता एकसिनेव घरातछे भविष्यन्ति । पुनरपि त्रिमुजकेन्द्राणामन्तराणि छम्बानां संपातचिह्नात् समानानि भविष्यन्ति । प्रत्येककेन्द्रह्ययान्तर-मपि मिथः समानमस्ति । तदा पञ्चसमभुजकोणा अपि समाना भवि-

⁹ V. omits अथ. २ त्रिभुजभुजेषु निष्कास्यन्ते V. ३ V. inserts अपि. ४ °तळवेष्टनं V. ५ संसक्ता V.

ष्यन्ति । पश्चसम्भुजक्षेत्रस्य त्रयस्यः कोणाः इष्टक्षेत्रस्य कोणाः स्यः । तस्यादिष्टक्षेत्रस्य कोणा अपि समाना भविष्यन्ति । इदमेवास्य-कमिष्टम् ॥

श्रीमद्माजाधिराजमभुवरजयसिंहस्य तुष्टी द्विजेन्द्रः श्रीमत्समाङ् जगनाथ इति समिभधारुदितेन प्रणीते । अन्थेऽसिम्बामि रेसाग्रियत इति सुकोणायबोधप्रदादन-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति विश्वसंक्यो सकोऽनम् ॥

1 K., A. have-

किल्पकासीदं प्रोक्तं ब्रह्मणा विश्वकर्तने ।

पारम्पर्धवकादेतदागतं घरणीतके ॥

तद्विष्टिमं महाराजजनसिंहाहमा पुनः ।

प्रकाशितं मगा सम्यग् गणकानन्दहेतने ॥

२ V. has after this समाप्तोऽयं प्रन्थः । शुमं मूयात् । सं० १७८४.

युगबसुनगभूवर्षे ग्रुचि शुक्ते युगतियौ रवेर्वारे । व्यक्तिकाकमणिः किल समाजामात्रया पुरतम् ॥ ९ ॥

APPENDIX I.

Collation of the Ms. of the Rekhåganita in the Benares Sanskrit College Library, the one copied by Lokamani under instructions from Jayasimha.

DESIGNATED V.

Books VII., VIII., IX.

Page 1 L. 2 तत्रोनचत्वारिंशत्°.

" L. 6 सन् is omitted.

" L. 10 समानं भागद्ववं for भाषद्वयं समानं.

" L. 18 स विषमविषमः ।

Page 3 L. 5 and 12 °रपवर्शकः.

 ${f L}$. 18 अहशेषं.

Page 4 L. 8 °रपवर्तको.

.. L. 10 महदक्करूपनं कियते.

L. 17 करिप्यति for करोति.

Page 5 L. 4 चतुर्वक्षेत्रम्

"

.. L. 11-12 °रपवर्त्तनाडेन.

., L. 16 °वोंगो राशियोगस्य स एवांशो भविष्यति.

Page 7 L. 1 जम्मुमयो:.

,, L. 3 पुनः प्रकारान्तरम्.

L. 10 अयाष्ट्रमक्षेत्रम्

Page 8 L. 4 जन्मस्यांशी यथा भवतस्तथा.

, L. 6 नवमक्षेत्रम्.

Page 9 L. 2-3 याबदंशो भविष्यति.

L. 13 अधैकादशक्षेत्रम्

Page 11 L. 2 °र्निष्पत्तेर्निश्वयः.

.. L. 12 and is omitted.

.. L. 25 निष्पत्तिविनिमयः.

Page 12 L. 10-11 तसाइएं अवं.

```
Page 14 L. 2 करिपतम.
          L.
               9 अयोनविंशति°.
          L. 19-20 मं कल्पितम्.
         L. 20 सं कल्पितम्.
          L. 21 सं हं जातम्.
Page 16 L. 3 तदा वते त एवां°.
Page 17 L. 2 द्वी मिनाड्वा°.
          L. 12 मिलाको for मिली.
          L. 14-15 जं बाझदिमो भविष्यति.
Page 18 L. 22 मिन्न for मिन्नो.
Page 19 L. 9 इदमेवास्माक°.
Page 23 L. 2 तं अं.
          L. 11 निःशेषो.
          L. 17 अं वं प्रत्येकं जां निःशेषं.
Page 26 L. 3 भविष्यति.
          L. 11-12 For तन्नामक: the Ms. has हरनामक: on
                   the margin (p. 150 Ms.).
Page 28 L.
               1 प्रारभ्यते is omitted.
Page 29 L.
               5 मं बं.
          L. 18 भविष्यतः for भवतः.
Page 30 L. 1 अब चतुर्थ क्षेत्रम्.
         L. 5 तलपह:.
  ,,
          L. 8 ललपाइ:.
          L. 9 तथा is omitted.
          L. 11 लसनमभ\mathfrak{g}।°.
Page 31 L. 1 स्त्रनि:शेषकमासीत.
         L. 3-4 तस्मात् लसनमा.
  ,,
          L. 5 अथ पत्रमक्षेत्रम्.
          L. 7 भवति for भविष्यति.
Page 32 L. 6 अय सप्तमक्षेत्रम्.
         L.
              7 आवडो°.
```

Page 33 L. 3 अवनिष्पत्तिसमास्ति. Page 34 L. 2 तथा for यथा.

Digitized by COOS

Page 35 L. 4 धनस्य घनेन निष्पत्ति.

" L. 23, विष्यत्तिसमा भविष्यति.

Page 36 L. 1 वनसतगफकएते.

" L. 18 इदमेवास्माकमिष्टम् after करिष्वति.

L. 22 पन्नदशं क्षेत्रम्.

Page 37 L. 1 जः भुजः कल्पितः.

" L. 7 करिष्यति for करोति.

Page 38 L. 6 इदमेवास्मदिष्टम्.

,, L. 20 अनयोर्निष्मत्तिः कमिन्यतितुल्या आसीत् । जझिनिष्मत्ति-तुल्याप्यासीत् । कृतः । हं कमाभ्यां गुणितौ अनो जातौ । पुनः सबिनिष्मत्तिम्छिनिष्मतितुल्यास्ति । जझ-निष्मत्तित्त्याप्यस्ति । &c.

" L. 23 इदमेवास्मदिष्टम्.

Page 39 L. 5 करोति । हः जं झतुस्यं निःशेषं करोति इति कल्पितम् । पुनर्दः जं बतुल्यं निःशेषं करोति । हः वं खतुल्यं निःशेषं करोति । हः वं खतुल्यं निःशेषं करोति । &c.

L. 6 अबी सजातीयी घाती.

Page 40 L. 1 हतचातः कलचातत्रस्यः.

 ${f L}$. 7 एकरूपनिष्पत्ती.

Page 41 L. 15 इदमेवास्मदिष्टम्.

Page 42 L. 14 मनिष्यत: for भनत:.

Page 43 after L. 13 and before अस्योपपत्ति: L. 14 the Ms. has यथा आबी घनफलाड़ी सजातीयों कल्पिती। एती द्वयोर्घनयोर्निष्यती भविष्यतः।

" L. 25 समाप्तः is omitted.

Page 44 L. 3 तत्र प्रथमक्षेत्रम्.

,, L. 12 अथ द्वितीयक्षेत्रम्.

L. 24 अथ तृतीयक्षेत्रम्.

Page 45 L. 8 अथ चतुर्थक्षेत्रम्.

L. 1 = — मं क्षेत्रम्.

Page 46

क्षेत्रम्.

इ: for योगाइ:.

वर्गो भविष्यति, the Ms. has यतो रूप-





निष्पत्तिः बेन तथास्ति वथा बनिष्यत्तिः बेुनास्ति । अने-नैव प्रकारेण श्रुः वर्गे भविष्यति । शुवकाः घनोऽस्ति ।

Page 47 L. 15 दशमं क्षेत्रम्.

L. 17 'बेदवर्गी भवति for 'बेह्नगै न अवति.

" L. 22-3 अवनिष्यत्तिसमास्ति ।

Page 48 L. 24-5 हुआ जारी कमेण तुल्यं निःशेषं करिष्यतः.

Page 49 L. 2 हः वं निःशेषं करिष्यति.

Page 50 L. 10 हुद्दं कल्पित:.

Page 51 L. 3 इष्टमस्मत्समीचीनम्।

" L. 14-15 तस्य दशस्य वर्णस दहहश्चषातो द्विगुणः दहवर्थ-हश्चर्ययोगतुल्यस्थास्ति ।

Page 52 L. 15 अथैकोनविंशं केन्नम्.

Page 53 L. 1 विंशतितमं क्षेत्रम्.

L. 14 एकविंशतितमं क्षेत्रम.

Page 54 L. 5 विषमतुत्वा विषमाद्धाः

Page 55 L. 17 अष्टाविंशतितमं क्षेत्रम्.

Page 57 L. 10 प्रकटमेवास्ति.

,, L. 15 पत्रत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्.

Page 59 L. 18-19 कहुयोगेन तुल्या अधिव्यतिः

Page 60 L. 18 The Ms. omits start:.

APPENDIX II.

The Variae Lectiones of the Ms. of the work in charge of the Anandas'rama, Poona, as compared with the text. The Ms. was received for collation through Prof. S. R. Bhandarakar.

Page 1 L. 2 The Ms. drops श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः ॥

,, L. 3-4 For the first verse गणाधिपं—the Ms. has two verses गजाननं गणाधिपं—as found in K.

Page 2 L. 5 तदुच्छिमं for तद्विच्छिमं.

Page 3 L. 1 प्रारम्यते is dropped.

Page 3 L. 2 अत्र for तत्रासिन्,

, ,, सन्ति after पश्चदशाध्यायाः.

,, , , शक्लानि for क्षेत्रापि.

,, L. 3 The Ms. omits the sentence तत्र प्रथमा°— प्रदर्शन्ते.

 ${f L}$. ${f 5}$ बिन्दुर्वाच्यः for बिन्दुशन्दवाच्यः.

L. 7 विस्तारदैर्ध्ययोर्थक्रियते for यच विस्तारदैर्ध्याभ्यां भियते.

" ,, त**र्धरातलं** तदेष क्षेत्रम् for त**रातलक्षेत्र**संत्रं भवति.

,, ,, After भवति the Ms. inserts तद्भिविधम्। एकं जल्बत् समं द्वितीवं विषयम्.

,, L. 8 एका वका अन्या सस्ला for एका सरला धन्या वका.

" L. 10-11 विन्दुनाच्छायन्ते for विन्दुनाच्छादिता इव हर्यन्ते.

L. 11 नेया is omitted.

" L. 12-13 धरातस्मिप समं विषमं च क्रेयम् । समं यथा । यत्र विन्दून् for अथ धरातल°—विन्दून्.

L. 14 अवित for सात्.

L. 15 अन्यथा विषमम् is dropped.

" L. 17 या सूच्यु° for सूच्यु° and स for सैव.

,, L. 18 समकोणः विषमकोणश for समो विषसथः

, ,, After विवयकोषण the Ms. inserts अग्र समकोण-विवयकोषणस्थास्

```
3 L. 19 भवत: for स्त:.
Page
        4 L. 4 समकोणस्त for इह समकोण:.
Page
                सरलक्रटिलरेखाभ्यां is dropped.
                8 तत्र is dropped.
                 उच्यते for भवति.
          L. 9 तच is dropped.
         L. 12 The Ms. agrees with D. for तसादेव &c.
  "
                    in place of चकाकारा &c.
         L. 14 वृत्तं क्षेत्रं for वृत्तक्षेत्रं.
        5 L. 1 मध्यविन्दु for बिन्दु:.
Page
          L. 2 Hald for Kuld.
          L. 4 केन्द्रगा न भवति for केन्द्रगा न स्थात.
          L. 11 तत् त्रिअणं for तत्.
          L. 12 यत्रको for यस्यको .
                  न्यूनकोणी for न्यूनी.
                 स्तः is dropped.
                  अधिककोणं त्रिभुजं for अधिककोणत्रिभुजं.
   ,,
                1 ₹ is dropped.
        6 L.
                  न्युनकोणं भवेत् for न्युनकोणत्रिभुजं स्यात्,
                3 अथ च after समानं.
   ••
                  यद्यपि for अपि.
                5 अथ च after समानं.
                  मियः is dropped.
                6 आयतं च क्रेयम् for आयतसंक्रम्.
           L.
                7 समं for च समं
   23
                  विषमकोणं सम<sup>°</sup> for विषमकोणसम<sup>°</sup>.
Page
                2 च before ज्ञेयम्.
         7 L.
                6 The Ms. agrees with D. and K. in its
   "
                     omission.
                8 यावतः for यावन्तः.
        8 L.
           L. 11 तस्य for तत्र.
          {
m L}. 13 यत्राल्प{
m ^\circ} for यत्र च स्वल्प{
m ^\circ}.
                   The Ms. inserts wash after "-at.
```

Page 8 L. 14 'रेसाद्वयसंयोगं for 'रेसाद्वयसंयोगः.

" L. 19 प्रथमक्षेत्रम् for प्रथमं क्षेत्रम्.

" L. 20 तत्र is dropped.

L. 21 ₹ is dropped.

Page 9 L. 2 बकेन्द्रं.

,,

" , द्वितीयं is dropped.

,, L. 4 ततः for तत्र.

, L. 5 जातं समानित्रभुजम्

" L. 7 अतो for यतो.

" L. 8 The Ms. inserts कृत: before अजदूत स्य.

 ${f L}$. ${f 11}$ अथ द्वितीयक्षेत्रम्.

" L. 12 तत्र is dropped.

" L. 14 कल्पितम् is dropped.

" L. 17-18 तदेव for **दव.**

" L. 18 ₹ is dropped.

" L. 19 पुनर् is dropped.

Page 10 L. 1 दशरेका समानास्ति।

L. 2 तत्र and अस्ति are dropped.

" L. 3 ₹ is dropped.

" " पुनर् is dropped.

,, , , च and अस्ति are dropped.

L. 5 $^{\circ}$ समाना जातास्तीति.

Page 10 L. 6 अथ तृतीयक्षेत्रम्.

L. 8 इति चेत् is dropped.

.. L. 10 निष्कासनीया.

Hereafter only material changes are noted, as the Ms. is found to agree mostly with D.

Page 14 L. 6 इसी तु for इसी ती.

Page 15 L. 10 कार्यम् for कृतम्.

Page 25 L. 15 °द्धिको भवति for °द्धिको भवतीति निरूप्यते.

Page 35 L. 7 The Ms. inserts तस्मादुक्तमेव सिद्धम् after इदमञ्जपनम्.

Page 60 L. 2 यथान्येष्ट° for यथेष्ट°.

Page 62 L. 13 After 'जोस्त, the Ms. reads as under:—
यदा अवं अजं तुल्यं भविष्यति तदा त्विहं खिवहं
भविष्यति द्तजं सरकं कारेखा भविष्यति। यदा अवं अजादिघकं स्यात् तदाथवा त्विहं खिवहं न भविष्यति अथवा
अन्यचिहं भविष्यति। तिचहं झखरेखोपरि पतिष्यति वा झखरेखाया बहिः पतिष्यति। क्षेत्रज्ञवेऽपि &c-

Page 82 L. 5-6 खण्डद्वयं समानं कार्यमध्या खण्डद्वयं च न्यूनाधिकं कार्ये तदा खण्डद्वयधात &c.

Page 108 L. 13-16 व्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितः वृत्तान्तर्गतकोणः सर-लरेखोत्पनेभ्यः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्योऽधिको भवति । लम्बवृत्तपालिसंपातजनितः कोणः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्यो न्यूनो भवति ॥

Page 124 L. 17-18 तत्र वृत्ताद्वहिर्द्रस्थितैकिचहादेका रेखा कर्णानुकारा वृत्त-पालिमात्रलमा कार्या &c.

Page 134 L. 19 बकोणः संपूर्णसण्डद्भययोगतुत्यद्कोणतुत्योऽस्ति for ब कोण उभयोरेक एवास्ति । शेषम् is dropped.

Page 144 L. 5 महान् गुणगुणितलघुतुल्यो भवति is dropped.

,, L. 7 लघोर्याबद्धाततुल्यं भवति महान् गुणगुणितलघुतुल्यं भवति तत्रेको राशिद्वितीयराक्षे &c.

Page 147 L. 16 द्वितीये for तृतीयगुणनफले.

Page 199 L. 3-4 पुनस्तगं तनतुत्यं पृत्रक् कार्यम् । मसं स्त्रमतुत्यं

L. 8 मगक्षेत्रं for सबक्षेत्रं.

" L. 9 **हस**क्षेत्रं for सफ्रमक्षेत्रं.

" L. 10 ह्वलण्डोपरि for अहलण्डोपरि.

" " हसक्षेत्रं for अफक्षेत्रं.

" L. 11 आहद्भितीय° for हबद्भितीय°.

,, ,, मसक्षेत्रं for हसक्षेत्रं

Page 201 L. 20 झहवर्गणा° for दहवर्गणा°.

Vol. II.

Page 5 L. 6 भवन्ति for भवति.

" L. 15-16 तदानयोर्थोगः राशियोगस्य एवांशो भविष्यति for तदा तयोर्थोगो राशिर्भविष्यति ।

Page 69 L. 19 कल्पनीया भवति for कल्पनीयो भवति.

NOTES.

BOOK VII.

DEFINITIONS.

A number.

हृहदक्को गुणगुणितसञ्बद्धतुस्योऽस्ति=The greater number is a multiple (lit. equal to the less number repeated a number of times) of the less number.

समाङ्क=An even number.
विषमाङ्क=An odd number.
छडिश्व=A quotient.
प्रथमाङ्क=A prime number.
बोगाङ्क=A composite number.
मिकितसंज्ञो=Commensurable.
इर=A divisor.

भित्राह्म=Incommensurable. समसम=Evenly even. चात=A product.

A समसम number is defined as one which, when divided by an even number, gives an even quotient. This is not a very accurate definition. 24 when divided by 8 gives 3 as its quotient, and when divided by 6 gives 4 as its quotient. Is 24 then समसम according to definition 6 of समिषिका according to definition 8? To make the definitions 6 and 8 accurate, therefore, we should understand समेन to be equal to बाक्समेन, i. c., all even numbers.

A समसम number is thus equal to that which all even numbers which measure it measure it by even numbers; and a समस्मि number is one which all even numbers which measure it measure it by odd numbers.

A qui or perfect number is one which is equal to the sum of

its measures. Thus the numbers that measure 6 are 1, 2, and 3 and their sum (1+2+3) is 6. The numbers that measure 28 are 1, 2, 4, 7 and 14 and their sum (1+2+4+7+14) is 28. A list of such numbers is given in the Introduction to Vol. I. *Vide* Intro. p. 12 foot note.

Prop. I.

अपवर्षनाङ=A common measure.

Prop. IV.

A small number or quantity is a part of a large number or of its multiple.

Prop. VI.

वावदंशः=Parts.

Bil.'s def. of parts is as under:-

When a less number does not measure a greater one, the less is parts of the greater.

The enunciation of Prop. VI. is-

If two numbers are the same parts of two other numbers, then the surr of the first two shall be the same parts of the sum of the second two.

6 and 8 are the same parts of 9 and 12, therefore 14 is the same parts of 21.

Prop. XI.

निष्यति=Ratio.

Prop. XXVIII.

The latter part of the definition seems faulty. 'तदा तावकूगविष मित्री अविष्यतः' should be the reading in place of 'तदा तदकूवोगवो-रम्तरमपि मित्रं अविष्यति।'

Prop. XXXVII.

If one number measures another number, the quotient is a part called by that name (i. e. by the name of the divisor).

Bil.'s enunciation of it is as under:-

'If a number measure any number, the number measured shall have a part after the denomination, of the number measuring.

The Prop. means that if 3 measure any number, that number

has a third part, if 4 measure any number, that number has a fourth part and so fourth.

Prop. XXXVIII.

Bil.'s enunciation of it is:-

'If a number have any part, the number whereof the part taketh its denomination shall measure it.'

BOOK VIII.

Prop. XVI.

If between two like superficial numbers there is a mean proportional number, then the ratio of the products shall be equal to the square of the ratio of their sides of like proportion.

सञातीयधातफडाङ्की=Products of two numbers which are their sides (भुजी) are called धातफडाङ्की and when the sides are in the same ratio, the products are said to be like or similar.

6 and 24 have 2 and 3 and 4 and 6 respectively as their sides and 2 and 3 are in the same ratio as are 4 and 6. 6 and 24 are their like superficial or plain numbers.

Prop. XVII.

:

:35.

समातिष्यमक्ते=Solid numbers are those which are products of three numbers. Like solid numbers, 30 and 240, have 2, 3 and 5, and 4, 6 and 10 as their sides and these sides are in the same ratio. Therefore 30 and 240 are similar solid numbers.

BOOK IX.

Prop. XIL

Page 49 कव्यितम् in L. 3 seems to be improper. It should be जातम्.

Prop. XXVIL

Page 55 L 15. It should be होष: अर्ज जदम् instead of होष:

Prop. XXXVII.

If in a certain series of numbers which are in the same ratio a number equal to the second be taken from the first and also from the last, then the ratio of the first remainder to the first

number shall be equal to that of the second remainder to the sum of all the terms in the series except the last.

अवायक्रयोगेन is the reading of all the Mss. It is equal to the sum of all the terms beginning with अन्य except the last. Prop. XXXVIII.

This Prop. pertains to a perfect number. In a certain series of numbers beginning with unity, in which each succeeding number is double of the preceding one and the terms are in a duplicate ratio, if the sum of the terms be a prime number, then the product of this sum and the last number shall be a perfect number.

1, 2, 4, 8, 16—The sum of this series is 31, a prime number. Then the product of 16 and 31, which is 496, is a perfect number.

BOOK X.

Definitions

मिकितप्रमाणानि=Commensurable magnitudes (lines, superficies and solids).

भिषयमाणानि=Incommensurable magnitudes.

मिकितवर्गाभिषा रेखा:=Lines commensurable in power.

भिषयगांभिषा रेखा=Lines incommensurable in power.

मुख्युराचि:=Rational. It comprehends

- 1 The line first supposed and set forth,
- 2 Lines commensurable to it,
- 3 The square on it,
- 4 Such superficies as are commensurable to the square.

Surds or irrational. It comprehends

- 1. The line which is incommensurable to the first line supposed and set forth,
- 2. The superficies which is incommensurable to the square described on the rational line first supposed and set forth,
- 3. The line the square of which shall be equal to the above superficies.

करणी or रज्जकरणी originally meant a cord of reeds used by

the sacrificial priest to measure the side of a square altar. It then came to mean the side of a square and lastly the square root of a number which cannot be worked out exact, but which can be represented only graphically. *Vide* Dr. Thebaut's Article on the *S'ulva Sūtras* in the Journal of the Asiatic Society of Bengal 1875, pp. 274-5.

Prop. XV.

If the sides containing a rectangle be rational, the rectangle shall also be rational.

अक्रसंज्ञाई=rational.

Prop. XVII.

It teaches what a medial superficies and a medial line are. A rectangle which has its sides commensurable in power only and not in length shall be irrational and is called a medial superficies; and the line the square of which is equal to this figure is irrational and is called a medial line.

Prop. XXXIV.

It teaches the formation of the first bi-medial line. If two medial lines commensurable in power only and containing a rational superficies be added together the line thus formed shall be irrational and is called the first bi-medial line.

Prop. XXXV.

It teaches the formation of the second bi-medial line. If two medial lines commensurable in power only and containing a medial superficies be added together, the whole line is irrational and is called the second bi-medial line.

Prop. XXXVI.

अधिकरेला=A greater line.

If two lines be incommensurable in power, the sum of their squares be rational and twice their rectangle be a medial superficies, then the whole line formed by these two lines shall be irrational and is called a greater line.

Second definitions p. 90.

प्रथमयोगरेका=The first binominal line.

This and other lines are all explained in the Intro. to Vol. I. pp. 15-19.

Prop. LII.

प्रथममञ्ज्योगरेला=The first bimedial line.

Prop. LXX.

अन्तररेखा=A residual line.

Prop. LXXIII.

न्यूनरेला=A less line.

Third Definitions (p. 110).

प्रथमान्तररेखा=The first residual line.

Prop. LXXXIX.

प्रथममञ्जानतररेबा=The first medial residual line.

BOOK XI.

Definitions.

पिण्ड:=Depth.

धनक्षेत्रम्=A solid body.

शंक:=A cone or a pyramid.

छेदितवनक्षेत्रम्=A prism.

गोडक्षेत्रम्=A sphere.

स्चीफककशकूषनक्षेत्रम्=A pyramid.

समतकमस्तकपरिधिरूपं शङ्कुघनक्षेत्रम् or समतकमस्तकशङ्कुक्षेत्रम्=A

cylinder.

वनकोण:=A solid angle.

Prop. XIX.

संपातरेखा=Common section.

Prop. XXIV.

समानान्तरधरातकघनक्षेत्रम्=A parallelepiped.

Prop. XL.

धनहस्तक्षेत्रम्=A parallelepiped.

BOOK XII.

Prop. III.

त्र्यसम्बद्धः=A pyramid having a triangle as its base.

Every pyramid having a triangle as its base may be divided

into four parts of which two are pyramids equal and like to one another and the other two are equal prisms greater than half the whole pyramid.

Prop. IV.

If two pyramids of equal altitudes having triangles as their bases be each divided into two pyramids and two prisms as in the preceding proposition, then the ratio of their bases shall be equal to that of the prisms.

Prop. IX.

A cone (शक्क) is a third part of a cylinder (समतकमस्तकपरिधि) having the selfsame base (तक) and altitude (मस्तकपरिधि) with it.

Prop. XIV.

Two concentric spheres being given, it is required to inscribe in the greater sphere a solid figure of many sides (*i. e.* a polyhedron), the superficies of which shall not touch the less sphere and if a similar polyhedron be inscribed in another sphere, these two polyhedrons shall be in treble ratio of that in which the diameters of the spheres are.

BOOK XIII.

Prop. II.

No enunciation is given for this Prop. and it simply seems to be an alternative proof of the 1st Prop. Prop. IV.

For this also no enunciation is given and the Prop. seems to be an alternative proof of Prop. III.

ERRATA.

Page.	Line.	Incorrect	Correct.
2	21	पुत	पुतत्
3	8	कृतवान्	कृतव त्
24	21	°मन्यां कं	[°] मन्बा क ू °
85	19	द्वाविंशतितमं	द्वात्रिंशत्तमं

RETURN TO the circulation desk of any University of California Library or to the NORTHERN REGIONAL LIBRARY FACILITY Bldg. 400, Richmond Field Station University of California Richmond, CA 94804-4698

ALL BOOKS MAY BE RECALLED AFTER 7 DAYS

- 2-month loans may be renewed by calling (510) 642-6753
- 1-year loans may be recharged by bringing books to NRLF
- Renewals and recharges may be made
 4 days prior to due date

DUE AS STAMPED BELOW	
NOV 2 6 2003	
DD20 15M 4-02	

